द्वितीय भाग

विराट, उद्योग, भीष्म, और द्रोणपर्व सहित

स्वर्गवासि श्री महाराजाधिराज श्रीउदितनारायण
काशिराजकी आज्ञानुकूल

श्री गोकुलनाथ प्रभृति कवीश्वरोने संस्कृतका सारांश
यथावस्थितले अतिपरिश्रमसे भाषा, वर्ण, मात्रा
वृत्तमें अतिरुचिर रचना किया और उक्त काशीनरेश
ने कलकत्ता महानगरके शास्त्रप्रकाश मुद्रायन्त्रमें श्री
पण्डित लक्ष्मीनारायण से शुद्धकराय संवत् १८८६
में मुद्रित कराया था

सम्पूर्ण विद्यानुरागियोंके अनुरागार्थ और पौराणिक
ऐतिहासाकांक्षियो के पठन पाठनार्थ
वाजपेयि पण्डित रामरत्न के प्रबन्ध से

तीसरीबार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
अगस्त सन् १८९१ ई०

महाभारत वार्त्तिक की भिन्न २ पर्वं ॥

आदिपर्व ॥

इस पर्वमें महाभारतकी प्रशंसा व कथा श्रवणफल व अक्षौहिणी संख्या व सृष्टिविस्तार और पौरववंशके राजाओं की कथा सविस्तर वर्णित है ॥

सभापर्व ॥

मयदानवकरके पाण्डवोंकेहित अद्भुतसभा की रचना व नारदकृत पाण्डवप्रति सभावर्णन श्रीकृष्णके उपदेश से युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ करनेके लिये जरासन्धवध व पाण्डवोंप्राति चारो दिशाओंकी विजय व युधिष्ठिर और शकुनी से जुआ होना और द्रौपदी सहित सब धन हारना और दुश्शासन करके द्रौपदीवस्त्राकर्षणादि कथाये वर्णित हैं ॥

वनपर्व ॥

पाण्डवो का वनबास सूर्यार्चन से ताम्रपात्र युधिष्ठिर को प्राप्तहोना अर्जुन को स्वर्गजाकर इन्द्रसे मिलाप करना भीमसेनकरके किर्मीर राक्षस वध राजा नलकीकथा लोपामुद्रासे अगस्त्यजी का विवाह राजा भगीरथ को गंगाजीके दर्शनार्थ तपकरना व गंगाजीसे व शिवजीसे वर प्राप्तहोना किरातरूप महादेव व अर्जुनकायुद्ध व रामायणकी कथा वर्णित है ॥

बिराटपर्व ॥

इस पर्वमे युधिष्ठिरादि पाण्डवों का दुर्योधनसे जुयेमेंहारके राजाबिराटके यहां गुप्तबास और वहांही द्रौपदीमें आसक्त कीचकका भाइयोंसहित भीमसेन के हाथसे मरण पुनि दुर्योधनादि कौरवो को राजाबिराटकी गौवें हरना वहां गुप्तवेष अर्जुनसेयुद्ध पश्चात् बिराटको अपनी पुत्री उत्तरा को अर्जुनके पुत्र अभिमन्यु को बिवाहिदेना ॥

उद्योगपर्व ॥

राजा नहुषकी कथा, संजय, बिदुर, धृतराष्ट्र और श्रीकृष्णजीका अनेक

सूचीपत्र ॥

कर्णपर्व ॥

शल्यपर्व सूचीपत्र ॥

गदापर्वसूचीपत्र ॥

शान्तिपर्वआपद्धर्म्मसूचीपत्र ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्म्मसूचीपत्र ॥

इतिशान्तिपर्ब मोक्षधर्मसूचीपत्रसमाप्तम् ॥

महाभारतदर्पणो ।

कर्णपर्वदर्पण ॥

दोहा ॥ करिप्रणाम नारायणहि नर नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि नौमि भारतरचत भाषा बिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथभये सारथि परमअनूप । ते सारथ रचिदेहि यहभारतभाषारूप ॥ सोरठा ॥ सुमिरि उच्छलनि अक्ष उदधि उलघन समयकी । भारत समुद्र प्रतक्षभाषा करि चाहततरचो ॥ बन्दों कपिबरबीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ बर ॥ निर्मल करण अनन्दि जासु नाम ह्वै कर्णगत । करनजोरितेहि बन्दि करण पर्व भाषा करत ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ रोला ॥ द्रोणगे जेहिदिवस बधि तेहिरजनि डेरनजाय । शोकग्रस्त महीप तो सुत सहितनृप समुदाय ॥ द्रोणसुत पै जाय बहुसमुझाय डेरन आय । भूत प्राप्त भविष्य शोचत रजनि तौन बिताय ॥ सैनपतिकरि सूतजहि ह्वै बाहननि आरूढ । पाण्डवनसो जूटिक्रमसो युद्धकीन्हे गूढ ॥ दोयदिन लरिपाण्डवनसो मारिबहुरणधीर । पार्थके बर बाणसो बधिगयोकर्णसुबीर ॥ कर्णकोबधदेखिसंजय तुरंगचढि दौराय । जायकै धृतराष्ट्रनृपसो दयोखबरिसुनाय ॥ कह्यौ बैश-

म्पायनिमुनि यहबचनसो सुनिशोचि । कह्यौ जनमेजय महीपति चावचितको दोचि ॥ जायसंजयभूपसो जबकह्यौ ऐसीबात । कह्योंकैसेवृद्धनृपसो कुलिशकैसोपात ॥ मरेभीषम द्रोणआदिक सुहित सुभट अनेक । पुत्र कितक पउत्र कितने मरेलरिगहि टेक ॥ कर्णसो प्रिय कर्णनृपके मरोसुनि सो सर्ब । मरोनहि धृतराष्ट्र नृप किमिसह्यो शोकअखर्ब ॥ कह्यो बैशम्पानिमुनिसो समयके अनुरूप । कर्णको सुनिमरण तेहिक्षण भयोजैसोभूप ॥ कहे बैशम्पानि सजय जायनृपकेपास । कियोनृपहि प्रणामगदगद गरे लेत उसास ॥ जानिब्याकुल सूतजहि धृतराष्ट्र अति दुखपाय । धीरधरि इमिकहे संजय कहोमोहिबुझाय ॥ द्रोणको बधदेखि कैसे भये ममभटबीर । कियोका ममपुत्र धीरज दयो को रणधीर ॥ भूपको सुनिबचन संजयकह्यो सुनु क्षितिकन्त । दये साहस त्यागि तो भट द्रोणको लखि अन्त ॥ भूपतो सुत धीरधरि तवभटन धीर धराय । कर्ण कहँ सैनेश करिकै लरो ओजबढाय ॥ दोयदिनकरि घोरसंगर कर्णधीर धुरीन । पार्थके शरघातसो मरिगयो सुरपुर ईन ॥ करणगत भो करण भट के मरणको आह्वान । भूप त्योंही गिरो ह्वै गतचेत मनु गतप्रान ॥ भयो हाहाकार अन्त सदनमे तेहियाम । रुदन धुनिसो भयो पूरित भूमि गगन अठाम ॥ विदुर सजयसींचि जलसो स्वस्थ कीन्हे ताहि । चेति नृपगहि शोच चुपह्वै रहो चहुदिशि चाहि ॥ ऊबि ऊबि उसासलै निज सुतहि निन्दि सडोर । सूत सुत सों कह्यो अनरथहोत भो केहितोर ॥ कहे संजयपुत्र सह बधिगयो कर्ण अधर्ष । भीम दुश्शासनहि बधिकै पियो रुधिर सहर्ष । फेरि भूपति सूत सुतसो कहे गोइ न राखु । सुभट मम जेगये जिनको बधे सोसब भाखु ॥ सूत.सुत तब कह्यो जितने प्रगट भट बलओक । पाण्डवनके वधे तनतजिगये ऊरधलोक ॥ रोला ॥
वैशम्पायनउवाच ॥ वृद्धनृपके बचन सुनिकै कह्यो संजयधीर । सुनो

भूपति मरेजे तुवओरके बरबीर ॥ दिवस दश कहियुद्ध भीष्म मारि अगणित सैन। भिदित सब तन मृतकसमहै करत शर पर शैन ॥ मारि सुभट असख्य अति दिन पांचकरि रण कार्य्य। द्रुपदसुत सैनेशके कर मरो द्रोणाचार्य्य ॥ नृप बिंशित मरो बाधि आनत्त अगणित बीर। बिन्द अरु अनुबिन्द बधिगे युद्धकरि गम्भीर ॥ सिन्धुपति नृपभट जयद्रथ बधे अर्जुन ताहि। बध्यो लक्ष्मण कुंवरको अभिमन्यु जय यश चाहि ॥ सुत दुशासनको बध्यो तेहि द्रौपदेय प्रचारि। एकलब्य किरातपति दिव गयो तन इत डारि ॥ पार्थके शरघातसों भिदि मरो नृप भगदत्त। तथा तासो गयोबधि जु श्रुतायु भूप प्रमत्त ॥ बधि असंख्यन शत्रुपक्षिन नृप सुदक्षिण बीर। मरो दक्षिण पार्थको लहि गात तीक्षणतीर ॥ कुशल धनुधर कोशलाधिप बध्यो तेहि अभिमन्यु। शल्यकोसुत बध्योभट अभिमन्यु करिअतिमन्यु ॥ कर्णको सुत कर्ण दुस्तर युद्ध जो वृषसेन। करिप्रतिज्ञा बध्यो ताकहँ पार्थभट जगजेन ॥ नृप श्रुतायू बिदितभट तेहि बध्यो धनुधर पार्थ। वृहत्क्षत्र भगीरथौ बधिगये सुनहु यथार्थ ॥ रुक्मरथ जो शल्यसुत तेहि बध्योभट सहदेव। कृतप्रज्ञसुत भगदत्तको तेहिबध्यो नकुल सुभेव ॥ पितामह तो बिदितभट बाह्लीक जो नरनाह। सहितसेना बध्यो ताकहँ भीम दीरघबाह ॥ जरासन्धमहीपकोसुत जयत्सेनउदण्ड। बध्यो तेहि अभिमन्यु योधा मारि शायकचण्ड ॥ बीरधीर कलिंगपतिजे उभय योधा पर्म। बधेगे तो अर्थ तेऊ कठिन करि रणकर्म ॥ सचिव तो वृषबर्म नामक बिदित योधा जौन। बध्यो ताकहँ भीमकर्मा भीम बिक्रमभौन ॥ अयुतगजबलभूप पौरवबध्योअर्जुनताहि। सूरसेन महीप ताकहँ बध्यो पारथ चाहि ॥ दोयसहस बसात योधा गये बधि रणधीर। शिवयसककालिग अगणित मरे मालब बीर ॥ अभीषाह असख्य अगणित सुभटश्रेणय तौन। सुभट संसप्तक

असंख्यन बध्यो पारथ जौन ॥ सुभट वृषकाचल नृपति तो सखा जो बलवान । बध्यो ताकहँ पार्थ हनि हनि बज्रसम बर बान ॥ बिदितधनुधर बीरबरणो शाल्व भू भरतार । बध्यो ताकहँ भीम जो सब जगतको जेतार ॥ ओघवन्त वृहन्तदोऊ नृपतिभे गतप्रान । क्षेमधूर्त्तिहि बध्यो गदया भीमसेन अमान ॥ सुभटजो जलसन्ध ताकहँ बध्यो सात्यकिटेरि । बध्योभूरिश्रवहि सो अरु सोमदत्तहिहेरि ॥ राक्षसाधिप भटअलम्बुष रहोजो अति चण्ड । ताहि मारथो भटघटोत्कच चपलकरि दोर्दण्ड ॥ सूतसुत राधेयहे ते गये बाधि रणमांह । कैकेय सुभट समस्त मारथो पार्थ दीरघबाह ॥ द्रबिडमद्र ललिस्थ क्षुद्रक तुण्डकेशी जूह । साबित्र अरु माबेल्लपुत्रक मरेसुभटसमूह ॥ सुभटप्राचि प्रतीचिदक्षिण अरु उदीची बाल । तुरगसादी अरु पदाती सुरथ द्विरदबिशाल ॥ मरेअगणित लाख ममदिशि कहैंकबलौ भूप । भयोकारज प्रगटजो तुवमंत्रके अनुरूप ॥ बिकर्ण दुर्मुख सल दुशासन दुसह दुर्बिषजौन । दुर्बिजयदुर्मुखन दुर्जय सुवन तो बलभौन ॥ और तो बहुपुत्र मारथो भीमसेन प्रचारि । पियोरुधिर दुशासनै को मारिछाती फारि ॥ कर्ण अर्जुन को भयो नृप महादारुण युद्ध । बध्योकर्णहि करिसुदुष्करकर्म पारथक्रुद्ध ॥ बध्यो वृत्रहि इन्द्रजिमि अरु रावणहि जिमि राम । तथा नरकासुरहि मारथो कृष्ण महिमा धाम ॥ कार्तबीर्य्यहि यथा भार्गव अन्धकहि त्रिपुरारि । स्वामिकार्त्तिक महिष राक्षस बध्यो जिमि परचारि ॥ बध्यो कर्णहि पार्थ तिमि करिद्वन्द्वयुद्ध महान । बन्धु पुत्र सबर्ग मारथो ब्ररषि अबिरल बान ॥ नृपति जीतो पुत्र ताकी आश जयकी जौन । कर्ण सँग तेहि मारिडारथो पार्थ बिक्रम भौन ॥ होहि सिगरे भूमिकेपति पुत्र मम बलऐन । रही ऐसी बुद्धि जो तो हियेकरणि अचैन ॥ भयो यह फलतासु प्रगटित और ह्वैहै भूप । भीष्म ब्यासादिकनकोमत ध्वंसके अनुरूप ॥

दोहा ॥ संजयसो यह सुनि कह्यो नृपले ऊबिउसास । कहु सजय जे उतमरे करिकै युद्ध बिलास ॥ यह सुनिकै सजयकह्यो महाराज सुनु तौन । मरेउतैके सुभटजे महापराक्रम भौन ॥ नारायणगण अगिन अरु बालभद्र गणभूरि । भीष्म असख्यन भट बध्यो जाल शरनको पूरि ॥ चौपाई ॥ नृपति सत्यजित रण सो रात्यो । द्रोणाचारय ताहिनिपात्यो ॥ जेपाचाल सुभट भयबारे । तिन कहँ द्रोणाचारय मारे ॥ मत्सभूपके अगणित योधा । बध्यो द्रोणभटकरि अवरोधा ॥ द्रुपद बिराट शंख नरनायक । मार्‍यो तिन्हँद्रोण दृढघायक ॥ तिनके रहे बन्धुसुत जेते । तिन्है बध्यो द्विजजययशहेते ॥ बध्यो उत्तरहि शल्य महीपा । श्वेतहिबध्यो भीष्मकुलदीपा ॥ एकरथी अभिमन्युहि लहिकै । षटसुरथीमिलि घेरिउमहिकै ॥ बधबिचारि अतिबिक्रम करिकरि । बिरथबिधनुतेहि कीन्हेलरिलरि ॥ बध्यो दुशासनके सुतताही । महापराक्रम नद अवगाही ॥ नृप अम्बष्टकोसुत बलभारो । लक्ष्मण कुँवर ताहिलरि मारो ॥ वर्षत शायक करषि शरासन । बध्यो बृहन्तहि बीर दुशासन ॥ नृप मणिमानहि द्रोणनिपात्यो । दंडधरहि बधि आनँद रात्यो ॥ अंशुमाननृप योधाआरज । तेहि मार्‍योलरिद्रोणाचारज ॥ चित्रसेन सहसुत भट चीन्हे । तासु समुद्रसेन बधकीन्हे ॥ नील भूप कहँ अश्वत्थामा । मार्‍यो महाबीर जयकामा ॥ व्याघ्रदत्त अरुभट चित्रायुध । नृपति चित्रयोधी बर आयुध ॥ तिन्है बिकर्णबध्यो अतिरणकै । बधिअगणितभट अटपट मनकै ॥ तौदिशि कैकय नृपसहसाजा । सो कैकेयहि मार्‍योराजा ॥ जनमेजय पार्वती नरेशा । तेहिमार्‍यो दुर्मुखभट बेशा । रोचमान युगबन्धुरहेहे । महापराक्रम तहागहे हे ॥ करिअतियुद्धद्रोणतेहिमार्‍यो । तासुसैनमे प्रलयपसार्‍यो ॥ पुरजित कुंतिभोज दोउभाई । मार्‍योतिन्है द्रोणदृढधाई ॥ अभिभू काशिराज बलभार्‍यो । तेहि बसुदान भूपसुत मार्‍यो ॥

नृपति मित्रबर्मा रणचारी । क्षत्रधर्म भूपति धनुधारी ॥ इन पाञ्चालन बधिबधि बरधो । द्रोण बिप्र तो सुतजय सरधो ॥ सुवन शिखण्डीको अतिबरधित । क्षत्रदेव होजययश सरधित ॥ बध्योताहि तो पौत्र अमाना । लक्ष्मण कुंवर बिदित बलवाना ॥ जौन सुचित्र भूप बलरासू । सुभट चित्रबर्मा सुततासू ॥ मारयो तिन्है द्रोण अति तुरमे । हनिहनि चोखेशायक उरमे ॥ मरयो बार्भक्षेमी नरनाहू । अरु अमितौजादीरघबाहू ॥ सेनाबिन्दनृपति को बेटो । शस्त्रवानहो बिरद लपेटो ॥ तेहिमारयो बाह्लीक प्रचारी । मारिअसंख्यन भटरणचारी ॥ दोहा ॥ धृष्टकेतु शिशुपालसुत अरु सुकेतु बरबीर । घोरयुद्धकरि करि मरे बधि अगणित रण धीर ॥ सेनाबिन्दु महीप अरु शास्त्रवान नरनाह । मरे द्रोणके शरनसो करि सुयुद्ध रणमांह ॥ भूप सत्यब्रत बीरअरु अरु मदिराश्वनरेश । सूर्यदत्तकहँ बधतभो द्रोण भयानकभेश ॥ श्रेयमानबसुदाननृपकरिकरियुद्धअघात । मरेद्रोणकेशरनकोपाय बज्रकोपात ॥ इन्है आदि अगणित सुभट मरे सुनोक्षितिपाल । कहै कहांलो सकल अब दारुणदशा कराल ॥ सोरठा ॥ यह सुनि बृद्धनरेश सजयसो इमिकहतभे । कहुसजय तेहिदेश बचे रहे जे सुभटमम ॥ भीषम द्रोण अमान मरे परोमरि कर्णसुनि । हम मानत गतप्रान जे जीवत तिन सकल कहँ ॥ सजयउवाच ॥ चायकरी ॥ सुनो भूप जे भट तो ओर । है जीवत करता रणघोर ॥ अश्वत्थामा बीर उदार । बिधिवत धनुर्वेद ज्ञातार ॥ अरु आनर्त्त हृषिकसुतजौन । नृपकृतबर्मा बिक्रमभौन ॥ अरु आर्त्ताइन सहित नरेश । शल्यमद्रपति बली बिशेश ॥ सैधव अरु काबोज नदीज । भट धाबती शत्रुदुखबीज ॥ सुभट बनायुज लीन्हेसंग । लसै शकुनि नृप भरो उमंग ॥ कृपाचार्य्य अतिरण करतार । अरु कैकय नृपपुत्र उदार ॥ चित्रायुत श्रुतबर्मा भूप । सलदुस्सल सहसैन अनूप ॥ कैतब्यन को पतिसहसैन । बीर श्रुतायू

अरिदलजैन ॥ चित्रसेन चित्राङ्गदजौन। भूप घृतायू बिक्रम भौन ॥ लीन्हे सैन संग हतशेष। भरे अमर्षगहे जयरेष ॥ तो सुत नृपके सग सडौर। लसत गहे अति गुरुता गौर ॥ तिन मधि नृप तो पुत्र अमान। लसत मेघमधि सूर समान ॥ कृश दल मध्य लसत क्षितिपाल। यथा अधूमज्वाल को जाल ॥ हय गजरथ पैदर सहभूप। सुन्दर लसत पुरन्दर रूप ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्रमहीप। महा मोह बशभो कुलदीप ॥ कहतभयो इमिसाहित बिवेक। सजय मौनरहो क्षण एक ॥ सुनि अति अप्रियदशा कठोर। भो अतिशै ब्याकुल मनमोर ॥ इमिकहि समुझि हारिको हेत। भयो भ्रान्ति बश ह्वै हतचेत ॥ सूतउवाच ॥ दोहा ॥ यह सुनि जनमेजय नृपति कहे कहो मुनितौन। तदनन्तर धृतराष्ट्रनृप कियो वारता जौन ॥ सुनि बैशम्पायन कहे सुनो भूमि भरतार। तदनुचेति धृतराष्ट्रकहि हाय हाय बहुबार ॥ कर्ण बीरको मरणसो मेरु चलनसम जानि। जानि सूखिबो सिन्धुको रबि निपतन सममानि ॥ अर्जुनको अद्भुत करम गुणिलै ऊबिउसास। शोकागिनिसो दहतभो जानि सुतनको नास॥ रोला ॥ करणको गुण कथन करि करि कियोभूरि प्रलाप। सुनो जनमेजय नृपति जोसुनो चाहत आप ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ बली वृषभ समान जाको ग्रीवउन्नत पुष्ट। मत्त मैगलसरिस उन्नतकाय शोभनसुष्ट॥ सिंह सम बलवान जो गज नृपन मध्य बिभात। युद्ध मध्य महेंद्र सो जो जगत मध्य बिख्यात ॥ जासु ज्यातल शब्द नहि सहि सकत हेनर नाग। बज्र बरषासेग जाको बाणबेग सराग॥ जासुभुजबलकेभरोसे पुत्रमम क्षितिपाल। युद्ध ठानव पाण्डवनसो जानि बिजय अकाल ॥ श्रेष्ठ सब अति रथिनसो सो कर्णबीर बिशाल। बधोगो किमि पार्थसो अरिबृन्द दलको काल ॥ कृष्ण पारथ बृष्णिगण कहु गुणतहो नाहि जौन। सोइ धनु गाण्डीव धनुषहि गुनतहो लघुजौन ॥ एकरथ हमबधब पार्थहि मारिसिगरी सैन।

कहतहो मलपुत्रसो जो सकल धरणी जैन ॥ अंगबंग कलिंग कोशल काशिशक गान्धार । मद्रमत्स्यादिकन जीत्यो जौन बीर उदार ॥ बृद्धिहित मम पुत्रके जो जित्यो नृपति अनेक । शत्रुबश ह्वै मऱ्यो किमिसो कर्ण जय यश टेक ॥ सुरनमे बरइन्द्र तैसे भटनमे बरकर्ण । अहिनको खगराज तैसे अरिनको मदहर्ण ॥ युद्धकरि मगधेश जासो भयो अति सन्तुष्ट । गहतभो मित्रत्व-भावप्रभाव गुणि अतिपुष्ट ॥ परमहित ममपुत्रकोभट कर्णताको घात । सुन्यो तौलौ शोकमे ममजीव बूड़त जात ॥ बज्रते अति कठिन सजय हृदय मेरो मानु । फटत नहि लहिशोक ऐसोदु ख दुसह अमानु ॥ संजयउवाच ॥ अति प्रशंसित सुकुलमे उत्पन्न तुम मतिमान । यशी जाहिर जगतमे युतश्री ययाति समान ॥ ऋषिनके शुभबचन बहुदिन सुने सहित बिधान । बिषादनदमे बोरिमनमति गहो दुख अतिमान ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ संजय भावी प्रबलहै पुरुष पराक्रमव्यर्थ । देखि कर्णको मरणध्रुवजानि परो यहअर्थ ॥ बर्षिबाण सब पाण्डवन मोहित करि रणधीर । मारिअसंख्यनभटन किमि बधोगयो बरबीर ॥ शोकसिन्धुको पारअब देखिपरत नहि मोहि । अतिहित सूतजको मरणबिजय ब्यर्थको जोहि ॥ मम आयुर्बल दीर्घ अति कियो बिधाता पूर्ब । जाते ममहिय सहत दुखकर्ण मरणको गर्ब ॥ भीष्मद्रोण अरु कर्णको बधसुनि जान्योयेहु । औशिमरैगे सुभटमम सब जीवत जेतेहु ॥ जयकरी ॥ सब गुरुजनको बचन अनूप । नहि मान्योशठ मोसुत भूप ॥ गहै न औषध पथ्य महान । यथा कुरोगी जो म्रियमान ॥ शरशय्या गत भीषमतात । जबमागे पानी अवदात ॥ तबशर हनि महिते जलधार । काढिदयोजल पार्थउदार ॥ सोलखिकै भीषम मतिमान । ममसुतसो बोले सबिधान ॥ अबहू तातकुहठ तजिदेहु । पांडवसो सम्मत करिलेहु ॥ रहैकुशलहित बन्धु बिभात । होय युद्ध मम अन्त बिख्यात ॥ दुर्योधन नहि

मान्योतौन । संजय होय न अनरथ कौन ॥ जिमि पक्षिहि गहि पक्ष उचारि । बालक क्रीडत महिपर डारि ॥ तेहि प्रकारह्वै पक्ष बिहीन । औशिहोब हम शत्रुअधीन ॥ नृप धृतराष्ट्र भरे परि-ताप । यहि प्रकार करि भूरि प्रलाप ॥ संजयसो इमिकहै सशोक । संजय नहिं भावी को रोक ॥ जेहि क्षण करिकै युद्ध महान । म-रोकर्ण रणधीर अमान ॥ केके तहाँलरे रहिसंग । केके भगेत्यागि रणरंग ॥ यथा शिखण्डिहि आगे राखि । भीष्महि बधे पार्थ नयनाखि ॥ द्रोणहि यथा निरायुध देखि । धृष्टद्युम्न मारयो अ-वरेखि ॥ तैसे कर्णहि मारयोपार्थ । कैकिमि सो बिधि कहो यथार्थ ॥ बिरथ बिधनु करि भीमहि जौन । कीन्होहास कर्ण बलभौन ॥ तेहिप्रकार सहदेवहि जीति । नहि मारयो गुणि बचन सुनीति ॥ बध्यो घटोत्कर्च असुरहि जौन । केहिबिधि बधो गयोभटतौन ॥ दोहा ॥ धनु करषतबर्षत बिशिख कर्णहिमारतकौन । भयोउपद्रव कछूतब मारिगयो बलभौन ॥ भिन्नभयो धनुतासुकै महीग्रस्यो रथचक्र । अस्त्रतासुभे नष्टकै भये कालचख बक्र ॥ तासु नाश को नाहि रह्यो कारण और समर्म । पार्थहि बधिबेकोरह्यो जोकीन्हे प्रणपर्म ॥ सभामध्य सब पाण्डवन शण्डकह्योजो बीर । मरो कौनबिधि कर्णसो जगजेता रणधीर ॥ दुश्शासन अरु कर्णको अति अनरथ बधदेखि । शोकाकुल ममपुत्र नृप कियेकहा अव-रेखि ॥ बधोदेखि निज भ्रातरन सैन पराजित देखि । शोकाकुल ममपुत्र नृप कियो कहा अवरेखि ॥ द्यूत बिरचि निरमित कियो यहि अनरथ करिफन्द । देखिकर्णबध शकुनिसो कहाकियो म-तिमन्द ॥ रोला ॥ कर्णकोबलबुद्धि बिक्रमबरणि बारंबार । कहे अबकहु भयोकैसे कर्णको सहार ॥ शोकग्रस्त महीपइमि कहि किये भूरि प्रलाप । कठिन मेरोहियो संजय सहत ऐसो ताप ॥ कर्णको सुनि मर्ण सुतकी हारि निश्चल जानि । हाय नहि मम हियो फाटत सहत दारुण ग्लानि ॥ पुत्र दुश्शासन परम प्रिय

भरोंकिमिकरि युद्ध । लरे किमितेहि समय तहँ कृपआदि बीर सक्रुद्ध ॥ रह्यो पार्थहि बधनको प्रणकिये जोगहि गर्ब । गयो बधि केहिभांति सोवह कर्ण बीर अखर्ब ॥ दोहा ॥ यहसुनि संजय नृपतिसों बोल्योबचन प्रशस्त । सुनौ शोकतजि धीर धरि सो बृत्तान्त समस्त ॥ तेहिदिनके निशिमधि बिकल दुर्योधन क्षितिरौन । कहे कृपादिक भटनसों सुनो बुद्धिबल भौन ॥ अतिदुखदा दारुण दुसह मंददशा यहपाय । अबजैसो करतव्यसो कहौमंत्र सुखदाय ॥ यहसुनि बोलो द्रोणसुत भूपति शोच बिहाय । कर्णहि करि सेनाधिपति करौयुद्ध गहिचाय ॥ सोरठा ॥ द्विजबर के ये बैन सुनिदुर्योधन चैनलहि । जानि बुद्धिबलऐन किये प्रशंसा कर्णकी ॥ जयकरी ॥ हेहे कर्ण मित्र रणधीर । तू ममहित रत अनुपम बीर ॥ हमलहि तो सम्मत यहिदेश । कियेभीष्म द्रोणहि सैनेश ॥ तिनकहँ रक्षणीय हो पार्थ । ताते बधेनगुणिममस्वार्थ ॥ लरिदशपांच दिवस मनलाय । परे मरे ह्वै बेधित काय ॥ तुवकर जय लहिबे की आश । निति सों बसत हमारे पास ॥ ताते ह्वै सेनापति तात । सादर देहु बिजय अवदात ॥ कीन्हें पूर्ब प्रतिज्ञा जौन । सानँद शोचकरो अब तौन ॥ तुम्हैं देखि सैनेश बिशाल । तिमि ह्वैहैं पाण्डव पांचाल ॥ जिमि चक्रायुध बिष्णुहि देखि । दानव दितिज होत भय भेखि ॥ सुनि भूपति के बचन नवीन । बोलो सूतज धीर धुरीन ॥ नृपहम ह्वै सेनापति अत्र । लेब बिजय रचि संगर शत्र ॥ यह सुनि भूपति मोद बसाय । किये साबिधि अभिषेकसचाय ॥ चारुकनकके कुम्भ भराय । तेहि बिधिवत मंत्रितकरवाय ॥ तेहिसपुण्य जलमधि सनिबन्ध । करिमिश्रित शुभ औषधि गन्ध ॥ द्विरिद दन्तको पात्रअनूप । खड्गश्रृंगके शुचि अति रूप ॥ तेहिजल पूरणकरि करि ताहि । दुर्योधन आदिक नृपचाहि ॥ बिधिवत कियेतासु अभिषेक । द्विज गण पढ़त मंत्र सबिबेक ॥ औडम्बर आसन

आसीन । करिकीन्हें अभिषेक अहीन ॥ पढ़िस्वस्त्ययनविप्रसमुदाय । आशिष दीन्हें ओज बढ़ाय ॥ सहित गोबिन्द पारथहि जीति । जीतौपाञ्चालन जयप्रीति ॥ सूरउदय जिमिहोतउलूक । तिमितो शत्रुहोहिहैंमूक ॥ सुनिस्वस्त्ययन कर्ण मतिमान । भणि हय गो बसु दीन्होंदान ॥ कौरव दलमधिलसो उदार । सुरसेना मधि यथाकुमार ॥ कर्णहिं करि सेनापति भूप । तौसुत भयो कृतारथरूप ॥ मरे द्रोण भीषम सो देखि । दुर्योधन कर्णहिइमि भेखि ॥ बिजयचहतहतिशत्रु अमान । भूपहोतिआशाबलवान ॥

इतिमहाभारतदर्पणकर्णपर्वणिकर्णाभिषेकोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ जयकरी ॥ लहि अभिषेक पूरिअतिचैन । कियो कहातब कर्ण ससैन ॥ सूतकह्यो तब कर्ण सुभेश । सैन सजन को दियो निदेश ॥ नृपतेहि शेष रजनि मधि भूरि । साजहु सजहु शब्दगो पूरि ॥ निरखि भोरकरि कृत्य प्रशस्त । चढ़े बाहनन सुभट समस्त ॥ दोहा ॥ कर्ण तहां बिरचत भयो मकर ब्यूह अति चण्ड । इबिधि राखि सबअंगमें धनुधर सुभट उदण्ड ॥ कर्णभयो मुखचषभये शकुनि उलूक ससैन । शीश द्रोण सुत ग्रीवभे सबतौ सुत बलऐन ॥ दुर्योधनसेनासहित रहोतासु मधि देश । कृतबर्मा भो बामपद सदल भयानक भेश ॥ द्वितिय बामपदशल्य भो सेह त्रिगर्त्त भटगोल । दक्षिण पद भो सैनसह गौतमबीरअडोल ॥ रथसहस्र त्रयशतद्विरद सहसुषेणनरनाह । भो द्वितीयदक्षिणचरण बरणोद्वीरघबाह ॥ चित्रसेनअरुचित्रनृप भ्राता सदल सगर्ब । पुच्छदेशपै थिरत भे धारेआयुध सर्ब ॥ यहलखि धर्म महीपको शासन लहि भट पार्थ । अर्द्धचन्द्र बर ब्यूह भो रचत जानि निज स्वार्थ ॥ बामपार्श्वमें रहतभो भीमसेन रणधीर । दक्षिण दिशिमें रहतभो धृष्टद्युम्न बरबीर ॥ मध्य देशमें रहतभे पारथ अरु नृपधर्म । पृष्ठरक्ष तिनके रहे सहदेव नकुल अभर्म ॥ उत्तमौजा नरनाह अरु युधामन्यु पाञ्चाल ।

चक्ररेक्ष हेसँगलये चौविधि दलविकराल ॥ यहिविधि शेषमहीप सब लैसँग सुभट समूह । यथाभाग रहि रहि रहे रक्षत सेना व्यूह ॥ सोरठा ॥ दुन्दुभि आदिक भूरिलगेबजन बाजनघने । सुभट बीर रसपूरि बढ़िबढ़ि भिरिलागे लरन ॥ भिरि भिरि भट तेहिकाल घोरयुद्ध लागे करन । मढ़ो शरनको जाल दुहूंओर अबिरल भयद ॥ चौपाई ॥ रथी पदाती भट हय सादी । बीर गजस्थ अशङ्क प्रमादी ॥ तोमर शक्ति भल्ल भयधारे । भिंदिपाल पट्टिश अनियारे ॥ बाणपरश्वध बर्षनलागे । परदलजीतन के प्रणपागे ॥ लगे लरन बढ़ि बढ़ि डटि डटिकै । मारो मरो मारु रटि रटिकै ॥ लागे गिरन शीश भुज कटि कटि । भरे रुधिर अनिशोभा अटि अटि ॥ गजते गिरन लगे भटतैसे । शिलागिरैं गिरि शिरतेजैसे ॥ यहिबिधि भयो युद्ध धुनि धुनिकै । सात्यकि भीम शिखण्डी गुनिकै ॥ द्राविड़ कांची मागधदेशी । अरुअभद्र भट उग्र निदेशी ॥ रथी गजी पैदर हयसादी । आयुध बर्षत बिदित प्रमादी ॥ धृष्टद्युम्न आदिक भटजूहा । दलमांधि धसन चहे करि हूहा ॥ तिनमें भीम गजस्थ सुहायो । बर्षत बाणबेग सों आयो ॥ तेहिलखि क्षेमधूर्त्ति रणचारी । गजबढ़ाइ भो भिरत प्रचारी ॥ भिरिदोऊ भट गौरव लीन्हे । अतिशै तुमुलयुद्ध तहँ कीन्हे ॥ अगणितबाण परस्परमारे । अगणित शायक गजन प्रहारे ॥ दोऊ दुहुन बाण हनिडारे । दोउ दोउनके धनु कटिडारे ॥ दोऊ कोपि धनुष गहिकरषे । बिबिध भांतिके शायक बरषे ॥ ह्वै बेधित अति भयसोंपागो । क्षेमधूर्त्ति नृपको गजभागो ॥ फेरि गजहि सों नृप रण करकस । बर्षत भयोबाण बहु तरकस ॥ दोहा ॥ बज्र समान सुबाण बर कुम्भन मध्य प्रहारि । भीमसेनके गजहि बधि दीन्हो महिपै डारि ॥ कूदि द्विरदते भीमतब गहि गुरुगदा प्रचारि । क्षेमधूर्त्ति नृपके गजहि डारिदेत भो मारि ॥ क्षेमधूर्त्ति तब गजहि तजि चलो खड्गगहि चण्ड । ताहिबध्यो

हनि गुरुगदा पाण्डव बीरउदण्ड ॥ सोरठा ॥ ताकहँ गिरत नि-रेखि भगेतासु भटधीरतजि । पाण्डव जयअवरेखि प्रबल भये अति चावसों ॥ चौपाई ॥ सो दल बिचलत लखि तेहि क्षनमें । कर्णसेनपति रिसंकरि मनमें ॥ करषि शरासन गौरवलीन्हो । परदल मधि अति शरझरिकीन्हो ॥ सोलखि कोपि नकुल रण चारी । सूत सुवनसोंभिरो प्रचारी ॥ भीमसेन रथचढ़ि बढ़िउत सों । लागो लरन द्रोणके सुतसों ॥ नृपति बिन्द अनुबिन्द सु-धीरा । तिनसों भिरो सात्यकी बीरा ॥ श्रुतिकर्मासों अभिरो हर-षत । चित्रसेन भूपति शर बरषत ॥ दुर्योधन अति रिससों मढ़ि कै । भिरोधर्म भूपतिसों बढ़िकै ॥ बढ़ि बढ़ि संसप्तक गणरूरे । भिरे पार्थसों अमरषपूरे ॥ कृपाचार्य्य गौतम धनुधारी । धृष्टद्युम्न सों भिरो बिचारी ॥ भिरो शिखण्डीसों कृतबर्मा । श्रुतिकीरति सों शल्य अभर्मा । सहदेवसों भिरिबीर दुशासन । बरषोशायक करषि शरासन ॥ यहिप्रकार इतउतके योधा । लरतभये करि करि अवरोधा ॥ भिरिसात्यकि केकय दोउभाई । नृपकीन्हे अति तुमुललराई ॥ अतिवर्षा बाणनकीकीन्हे । दुहुं दिशि अंधकार मढ़िदीन्हे ॥ अगणित बाण परस्पर मारे । अगणित बाण शर-नसों वारे ॥ कैयक धनुष परस्पर काटे । फिरिधनुगहि गहिधनु विधिठाटे ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार अति युद्ध करि सात्यकि धीर धुरीन । हनि क्षुरप्र अनुबिन्दको काटि दियोशिर पीन ॥ सहित चारु कुण्डल मुकुट गिरत बंधु शिर देखि । हन्यो सात्यकिहि साठिशर बिंदभूप अति तेखि ॥ सोरठा ॥ अबनभागु इमि भाषि हन्यो सात्यकिहि बीसशर । सात्यकि जय अभिलाषि बिन्दहि मारेउ तीसशर ॥ चौपाई ॥ दोऊ विविध भांतिसों चरिचरि । बिरथ बिधनुष परस्पर करिकरि ॥ सादर खड्ग चर्म गहिगहि कै । अबमति भागु आउ कहिकहिकै ॥ लरेशक्र वृत्रासुर जैसे । फिरि फिरि लरत भये तहँ तैसे ॥ तहँ सात्यकि अति बिक्रम

कीन्हों। बधि बिन्दहि अनुपमजय लीन्हों॥ बिन्दभूप कहँबधि चरिपथपै। चढ़िगो युधा मन्यु के रथपै॥ फेरि और रथवर पहँ चढ़िकै। कैकय दलमर्द्दत भो बढ़िकै॥ चित्रसेन श्रुतिकर्मा भिरिकै। घोर युद्ध कीन्हें तहँ थिरिकै॥ बलिबासव समयोधा दोऊ। कीन्हें युद्ध लखे सबकोऊ॥ श्रुतिकर्मा बरशायक तुरमें। मारेउ चित्रसेनके उरमें॥ लगे बाण बेधित ह्वै नरपति। मूर्च्छित भयो भूलि सब धनुगति॥ तेहिक्षणमें श्रुतिकर्मा राजा। बरषो अबिरल बिशिख समाजा॥ चित्रसेन फिरिचेतित ह्वै कै। मारि भल्ल कात्यो धनु ज्वैकै॥ श्रुतिकरमा गहि और शरासन। बर्षत भयो बाण अरिनासन॥ दोऊ बधिबेको पणलीन्हे। दुहूं ओर शर पंजर कीन्हे॥ मत्त मतंग सरिस रणबनमें। घोरयुद्ध कीन्हें तेहि क्षनमें॥ बाण उपलकर धनुसों गहिगहि। किये प्रहार भागु मति कहिकहि॥ दोहा॥ श्रुतिकरमा अतिबेगसों युग क्षुरप्र शरमारि। काटि धनुष तेहि नृपतिको काटेउ शीश प्रचारि॥ चित्रसेनको शीशसह मुकुट गिरत तेहिकाल। जानिपरे मनु सूर शशि लपटि गिरे महिपाल॥ सोरठा॥ श्रुतिकरमा रणधीर चित्रसेन भूपतिहि बधि। बरषत बाण गँभीर चमू तासु मर्द्दत भयो॥ सोदल मर्द्दित देखिचलोइतैसों चित्रभट। तासों भिरो निरेखि बढ़ि उतसों प्रति बिन्ध्यभट॥ बसुकला॥ ते सुभट शुद्ध। करि घोर युद्ध॥ भरिरुधिर गात। भे अति बिभात॥ बढ़ि डाटि डाटि। धनु काटि काटि॥ धनु धारि धारि। शर मारि मारि॥ जय ऊटि ऊटि। हटि टूटि टूटि॥ थिरुटेरि टेरि। रथ फेरि फेरि॥ तन चाहि चाहि। शर बाहिबाहि॥ कीन्हे अमान। संगर महान॥ दोहा॥ बहु घंटा युत शक्ति बर चित्र नृपति लै पानि। तजत भयो तौ पौत्र पहँ दपटि ब्यामभरितानि॥ तोमर॥ तेहि निराखि उलका रूप। प्रतिबिंध्य योधा भूप॥ बर बाण तीक्षण बाहि। मग काटि दीन्हें ताहि॥ तब चित्रनृप बल

मेलि। वरगदा मारेउ झेलि ॥ सो बध्यो अश्वन लागि। प्रति-बिंध्यतव रिस पागि ॥ भो शक्ति बाहत बेश। तेहि पकरि चित्र नरेश ॥ प्रतिबिंद भटहि प्रचारि। भो तजत नाश बिचारि ॥ प्रतिबिंध्य सहिसो शक्ति। भो तजत शायक पंक्ति ॥ दोहा ॥ अति बिक्रम तेहि ठौर करि मारि बज्र सम बान। चित्र नरपतिहि बधत भो भट प्रतिबिंध्य अमान ॥ यहि प्रकार पाण्डव सुभट बधि बधि भट समुदाय। किये पराजित सैन मम भल्ल शक्ति शरछाय ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण धीरधुरीन द्रोणतनय भिरि भीमसों। कियोयुद्ध अति पीनजाहि प्रशंसे सुमन गण॥ चौपाई॥ करिकरलाघव भीमअमाना। द्विजहि हन्यो अतितीक्षणबाना ॥ द्विजभट हनतभयो तेहि क्षनमें। नब्बे बाण भीमके तनमें ॥ सहसनबाण बिप्रके ऊपर। डार्‍यो भीम सारथी दूपर ॥ बाणन बाण अनगिने काटत। चरत चक्रसम बढ़िबढ़ि डाटत ॥ दोऊ अगणितशर अनियारे। तकितकि दोउनके तनमारे ॥ दोऊबिबिध भांतिके घातन। कियेयुद्ध समता कहिजातन ॥ चापपाणि नखसमशर सोऊ। रणबनलरे सिंहसमदोऊ ॥ करि बिक्रमगुणि बिधि बधिबेकी। गहे भावना जय साधिबेकी ॥ दोऊ परमपराक्रम करिकरि। रथ पहँ चपल चक्रसम चरिचरि ॥ अतिशय घोर युद्ध तहँकीन्हें। जो लखि सुरगण बिस्मयलीन्हें ॥ द्रोणतनय बरमंत्र घटितकै। गरजो दिव्य अस्त्र प्रगटितकै ॥ सोई यतन भीम बिस्तारो। दिव्यअस्त्र अस्त्रनसों वारो ॥ करि करि दिव्य शरनकी बर्षा। लरे उभय भट गाहि उतकर्षा ॥ दोऊ बिदित बीर बर चीन्हे। नभ महि बाणनसों मढ़िदीन्हे ॥ दोउनके हयसूत सोहाये। भरे रुधिरसों अति छबिछाये ॥ दक्षिण बाम भाग फिरि फिरिकै। लरे बिबिधबिधिसों भिरिभिरिकै ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार अति युद्धकरि क्षत्री बिप्र अमान। दोऊ दोउन कहँ हने अगणित तीक्षण बान ॥ दोउनके शरवरन सों बेधित ह्वै ह्वै धीर।

मूर्च्छित ह्वैह्वै गिरतभे दोऊ अनुपम बीर ॥ सोरठा ॥ तिन्हैं अचेत निरेखि चतुर सारथी दुहुनके । सारथिबिधि अवरेखि रथलै निजनिज दिशि गये ॥ तोमर ॥ भट पार्थ यश जय ऊटि । संसप्तकनसों जूटि ॥ बर बाण सबथर पूरि । बधिडारि योधाभूरि ॥ हय द्विरद अगणितमारि । भो देतमहिपै डारि ॥ पग शीशभुज कटिकाटि । महि दियो रुण्डनपाटि । धनुध्वजा शायक पक्ति । असि गदा पट्टिश शक्ति ॥ संसप्तकनके भूरि । करि खण्ड खण्ड अदूरि ॥ भो बधत योधा यूह । सरसेत साजि समूह ॥ शररुधिर को उमँगाय । भो लसतओज बढ़ाय ॥ अति प्रलयकालसमान । सो समय करि बलवान ॥ प्रभु रुद्रसम लेहिकाल । भो लसत बीर बिशाल ॥ यह देखि सुमन बिनोदि । भे सुमनबर्षत मोदि । इमि कहतभे बहुबार । यह हरतहैं महिभार ॥ दोहा ॥ नर नारायण एक रथ चढ़े युद्ध पथ दीह्नि । अकथ तासु करतब्र समथ कौन लहैं जय ईह्नि ॥ तोमर ॥ सो द्रोणसुवन निहारि । अति कोपि धनु टंकारि ॥ गहि गरब्र गरजि प्रचारि । भोकहत रिसि बिस्तारि ॥ हेपार्थ उनसों छूटि । लरु आइ मोसों जूटि ॥ दरशाउ धनुब्रिधि तौन । फिरि सिखे इत उत जौन ॥ इमि भाषि तुरताधारि । भो हनत शायक चारि ॥ भोहनत जय अवरेखि । शर साठि कृष्णहिं देखि ॥ तब पार्थ हनि शर तीन । धनुतासु काट्योपीन ॥ धनु और तुरितचढ़ाय । द्विज दयो शायक छाय ॥ शततीन तीक्षण बान । हनि केशवहि सविधान ॥ फिरि पार्थभटके गात । करि सहस शायक पात ॥ फिरि कइक अर्बुद पत्र । सो बीर बर सो तत्र ॥ कर शीश उर प्रति अङ्ग । धनु ध्वजा रथसों सङ्ग ॥ कढ़ि शरनके समुदाय । तहँ दये जाल बनाय ॥ यह ब्रह्ममंत्र प्रसाद । ताकि लहै नृप अहलाद ॥ शरजालमधि परिपार्थ । नहिंसको करि निज स्वार्थ ॥ दोहा ॥ बाण जालमधि पारथहि करि गरजो मतिमान । सोसुनि केशवसों कह्यो पारथ बीर अमान ॥ दुष्टविप्र

ममबध समुझि हर्षिकरतआह्वान । लखोताहि मैं करतहौं क्षण में मृतक समान ॥ सोरठा ॥ इमि कहि पार्थ अमान कर्षि शरासन बर्षि शर । द्विजके सिगरेबान काटि गिरायो भूमिपै ॥ चौपाई ॥ द्विजके बाण निहार समाना । दुरे सूर समपार्थ अमाना ॥ द्विज द्विजराजहि हतरवि करिकै । बाणजाल भरिआतप भरिकै ॥ संसप्तकवन प्रतापितकीन्हों । बहुभटशर जीवन बिन कीन्हों ॥ बहुरि बिप्र करिभट विधिपालन । लायो तेहिशर घनकेजालन ॥ फेरि बिप्र भटसों भिरि पारथ । बर्षोबिशिखजाल गुणिस्वारथ ॥ तेयुग धनुधर बीर बड़ेरे । शिष्यपुत्र आचारज केरे ॥ घोरयुद्ध कीन्हे तेहि पलमें । प्रलयपूर पारे दुहुदलमें ॥ काटि असंख्यन शर महिपाटे । महिदिव लों शरपंजर ठाटे ॥ अर्जुन मारिबाण अति चोखो । काटि द्रोणसुतको धनुनोखो ॥ अतिशय करला-घव बिधिधरिकै । द्विजहि शरनमधि गोपित करिकै ॥ फिरिसंस-प्तकगणसों भिरिकै । बरषोशर जिमि घनजल थिरिकै ॥ अग-णित हय गज भट बधिडारो । अगणितरथ धनुध्वजा बिदारो॥ अगणित अंगद मुकुट धनीके । अगणितकियो मारिशरनीके ॥ तौलगि द्रोणतनय धनुगहिकै । काटि पार्थकेशर फिरुकहिकै ॥ कृष्ण पार्थ तुरगनके तनमें । हन्यो असंख्यन शर तेहिक्षनमें ॥ पार्थ ताहि अगणित शर हनिकै । बर्षोबिशिख रुद्रसमबनिकै ॥ दोहा ॥ फिरतचक्रसम सुरथपहँ घूमि सुचक्र समान । धनुषम-ण्डलाकार करिबरषि असंख्यन बान ॥ मदिघनसम सबदिशन में अन्धकार अतिपूरि । बधतभयो ममसयनकेहय गज योधा भूरि ॥ गहत तजत शर ताहिलखि सको न कोऊ तत्र । गुणौ पार्थ इत तजतशर गिरैं भूरिभट यत्र ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण बिप्र सुबीर पांचबाण कृष्णहिंहन्यो । पांच अनूपम तीर हन्योसव्य-शाचीभटहि ॥ तहँकेशव मतिमानकहे पार्थसोंविप्रयह । अयतन ब्याधि समान पीड़ित तेहि जीतो सबिधि ॥ चौपाई ॥ यहसुनि

पार्थ द्रोणसुत पाहीं । शरबर्षो कहि बाचत नाहीं ॥ काटिकाटि सब द्विजके शायक । धनुधर पार्थ बिदित भटनायक ॥ कर भुज उर शिर पगन अदोखे । हन्यो अनगिणे शायक चोखे ॥ रसी काटि घोरन के तनमें । मारो बाण युगुति गुणि मनमें ॥ बेधित कै हय भयसोंपागे । तजि सन्मुख पथ रथलै भागे ॥ तुरगन मोरि बिप्रभट दीहा । तजि अर्जुन सों रणकी ईहा ॥ सादरगयो करणके दलमें । पार्थ बध्यो बहुभट तेहिपलमें ॥ तेहिक्षण पांडव दलमधिघोरा । हाहाधुनि भो उत्तरओरा ॥ सुनिकेशव अर्जुन सों भाष्यो । उत मगधेश बिजय अभिलाष्यो ॥ दण्डनाम भूपति रणधीरा । है भगदत्त सदृश बरबीरा ॥ गजारूढ़ सो नृप जगजेना । मर्दतबधत चतुर बिधिसेना ॥ उतचलि ताहिमारि मुद्भरिकै । संसप्तकन बधहु फिरिलरिकै ॥ इमिकहि कृष्ण हांकि सब घोरे । गे मगधेशभूपके धोरे ॥ पार्थहि लखि मगधेश अमाना । भयो प्रहारत द्वादशबाना ॥ कृष्णहि षोड़श शायक हनि कै । हयनहन्यो त्रयत्रय शर गनिकै ॥ बाणबारि बूंदनकी बर्षा । कियो जलदसम गहि उतकर्षा ॥ दोहा ॥ काटिअसंख्यन तासु शर पारथ धीरधुरीन । छेदिधनुष गजवानकहँ बध्यो मारिशर पीन ॥ तब नरपति तोमरतज़त अगरो गजहिबढ़ाय॥हनिक्षुरप्र शर तासुशिर काट्यो पार्थ सचाय ॥ तोमर ॥ फिरि मारि अगणित बान। तेहि गजहि करि गतप्रान ॥ जिमि मारि वृत्रहिशक्र। तिमिलसो योधा बक्र ॥ तब बन्धु तासु अमान । धनुकरषि बर्षत बान ॥ अतिप्रबल योधागूढ़ । बढ़िभिरो द्विरदारूढ़ ॥ वर तीनि तोमर तीर । भोहनत कृष्णहि बीर ॥ शर पांच पार्थहि मारि भो हनत धनु टंकारि ॥ तब शर क्षुरप्र प्रहारि । भटपार्थ ताकहँ मारि ॥ बधिगजहि महिपैडारि । भो लसत जिमित्रिपुरारि ॥ मम भटन बधि बिचलाय । निजभटन धीरधराय ॥ फिरिबधत भट समुदाय । संसप्तकन पहँजाय ॥ भो प्रलयपारत बीर । तो बन्धु

सुत रणधीर ॥ भट द्विरद बाजि समूह । भो बधत तजिशर जूह॥ महिरुण्ड मुण्डन पाटि । भोनदत धनुबिधि ठाटि ॥ जे बिदित बीरसगर्ब । संसप्तकनकेसर्ब ॥ मृगयूथ दावाबीच । जिमिलसे लहिनिज मीच ॥ जे भये सन्मुख तासु । ते होत भे गतत्र्प्रासु॥ बड़वागि मुखपरिनाव । जिमिहोत है तेहि भाव ॥ तहँकहेकृष्ण बिचारि । यहसेन सादरमारि ॥ भट सूतसुतहै यत्र । तहँ चलो बर्षत पत्र ॥ भटपार्थ सुनि यह नीति । संसप्तकन कहँ जीति ॥ गांडीव धनु टंकारि । इमिकह्यो प्रभुहि निहारि ॥ दोहा ॥ अब प्रभुसादर हांकिरथ चलो कर्ण है तत्र । सो सुनिकै केशव चले रहो सूतसुत यत्र ॥ मगमें लखिरणभूमि प्रभु बोले बचनअनूप । लखो पार्थ रणभूमि यह महा भयानक रूप ॥ रोला ॥ हेममणि-मय रजत बिरचित धनुषके समुदाय । कहूं करमें भटनके बहु-परे भटन बिहाय ॥ कटेकरमें किते कितने कटेकै बहुकाय । परे कितने सहितज्याबहु बिगतज्या छबिछाय ॥ स्वर्णपुंख अनेक शरके भेद भूपरभूरि । परेलोहित सांपसे सबगात शोणितपूरि॥ चर्मपट्टिश गदायष्टी परिघ शक्ति अनेक । भिन्दिपाल भुशुण्डि आदिक कहें और कितेक ॥ भरेशोणित परे महिपै सकल आ-युध भेद । धसेकितने भटनके तन देतदेखत खेद ॥ पाणि में निजअस्त्र प्रबिशे गातमें परअस्त्र । मरेकितने सुभटमानों तजन चाहत शस्त्र ॥ ध्वजाईवा चक्रजूवा छत्र चामरजूह । कटे फूटेफटे टूटे परे सुरथसमूह ॥ शक्तिशर असिआयुधनसों कटेकर शिर-पाय । लखो पारथपरे गज हय नरनके समुदाय ॥ बहतिशोणित धारतनते सहित मज्जामेद । डकरि डकरि खबीस पीवत गहत नहिं निरवेद ॥ सहितअंगद आदिभूषण परेअगणितबाहु । गहेधनुषा लसतमानों लरन चाहतराहु ॥ पाणिदक्षिण परेअग-णित सहित अंगुलित्रान । पांचफणके व्यालमानहुं सुपत हैं मनमान ॥ लसतशोणित मध्यदेखो चारुबदन अछाम । भारतीमें

मनोकानन कमलको अभिराम ॥ कवित्त ॥ केतेकरपग केते धर बिना करपग मणिनसों भूषे जगमगता तनोतहैं । कुण्डलकिरीटसों ललितशीश भूपनके परे जहां तहां करे सुषमा उदोतहैं । केतेअधोमुख केतेउरधकियेहैं रुखकेते अधमरे दुखभरे भू करो तहैं । केतेबातबश मारोमरो मारुमारुटेरि हेरि इतउत फेरिकालबश होतहैं ॥ अपर ॥ केतेशर शूल भल्ल पट्टिशके लगेमरेत्रिकुटी भृकुटी अवैलोवक करैहें।सुरनके शीशकेते चूरन गदाकेलगे पूरण शशंकसांभू समय कैसे धरैहैं । एक करकटे केते युगकर कटे केते उदरके फटेडांट शत्रुनसों डरे हैं । घोरनके झुण्डमुण्ड बिना शुण्डके बितुण्ड कटे कौच कुण्डकेतेरुण्डमुण्डपरे हैं ॥ दोहा ॥ गृध्रश्येन अरु काकगण ऊर्ध चलतगहिभ्रांति । नभनापतहैंखग मनहुं गहि जरीबकी पांति ॥ यहिप्रकार कै मेदिनी भई भयावनि पर्म । दुर्योधन मति भरमके पाप करमके कर्म ॥ परिघ गदा अगणित परेकटे कठिनको दण्ड। अंगदादि भूषणभरे कटेपटे दोर्दण्ड ॥ दण्डपरिघ उदण्डदंदरिघ अखण्डडाटिडटि । चण्डउच्चल सुउमण्ड बलदोर्दण्ड कटिकटि ॥ भण्डधर दोर्दण्ड कटिबर भण्ड धरिधरि । मण्डच्छबि सुबितण्ड तजिछल छण्डतपरिपरि ॥ अपर ॥ खरधरषित अगणित परे मारेडरे तुरंग । अंगभंग अगणित परेसहित सवारमतंग ॥ तंम परणिअशङ्क धरणि अरंक गतिवही । पङ्कभरणि भ्रूक कराणि ध्रुकगतिलही ॥ लककट नीच्छु रकड़ डटनी शशङ्क शरवर । रागाच्छरणी बैराग्य करणी बिभागा बर धर॥ अपर॥ युत जमाति अगणित लसै जम्बुकादिके झुण्ड।गृध्रश्येन काकादि द्विजबिलसत सामिषतुण्ड॥तुण्डतरल बितुण्डपरलबिसुण्डबहुगज।शुण्डकटि हय झुण्ड मुरिपरितुण्ड ददातिसज ॥ रुण्डबरयुत मुण्डधर बहुलुंढढादितउत । मुण्डबहुत बितुण्डड बहुशिरकुण्ड बरयुत॥ अपर ॥मनुजभरी भीषम महा लखिन जाति दे अच्छ । मेदमांस मज्जा रुधिर कीचमई महि

अच्छ ॥ नृप जेहि लच्छम्भट रहिर रक्षदनुक्षिन । पक्ष सहित समच्छज्जहित बिलच्छ दे दहिदिन ॥ दक्षधनुधर म्लेच्छगण तन तच्छि तिमिगनु । मच्छबर अरु कच्छपर सति कक्षम्मधि-मनु ॥ कलंशाछप्पे ॥ घायल किते अबोलपरे प्रतिद्वंदहि हेरत। कितनेभये अडोल बैठि प्रतिबादिहि टेरत ॥ शेषप्राण भट कितेपरे प्रतिद्वंदिनि गाहिगहि। किते पालि भट रेखपरे प्रतियोधहि जहि जहि ॥ लखुपारथ कितने प्रबलभट प्रतिद्वंदिन गाहिगहि भिरत। लरि लपटि लपटि दटि दपटि रटि रपटि रपटि लटि गिरत ॥ दोहा ॥ गृध्रश्येनबायसबिहग ऊर्द्धचलतगाहिभांति। नभ नापत हैं खगमनहुं गाहि जरीबकी पांति ॥ यहि प्रकारते मेदिनी भई भयावनि पर्म। दुर्योधन मति भरमके पाय करमकेमर्म ॥ तोमर॥ इमि करत बार्त्ता बीर। गे करण दलके तीर॥ तहँ पार्थरिसि वि-स्तारि। गाण्डीव धनु टङ्कारि ॥ तकि भूपको दल चण्ड। बढ़ि भिरेभट उद्दण्ड ॥ लखि घनो घन जेहिभाय। चलि भिरेमारुत धाय ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण पांड्य महीप भट अर्जुन सम रणधीर। शर बर्षत मम सैनमधि धसत भयो रणधीर ॥ सब कुन्तल बा-ह्लीक गण भोज पुलिन्द निषाद। आदि भटनमर्दत चलोजहँ हो कर्ण सुनाद॥ शर बर्षत मर्दत भटन पांड्यहिजात निरेखि। द्रोणतनय बढ़ि आड़ि इमि कहत भयो अवरेखि ॥ बज्र सदृश मम शरनकी बर्षासहि यहिकाल। थिरि भिरिमोसों युद्धकरु जात कहां क्षितिपाल ॥ सोरठा ॥ यहसुनि भूप सगर्ब कियो बिप्रपहँ बाण झरि। सहि बराय सो सर्ब बिप्रताहि बहुशर हन्यो ॥ चौपाई ॥ पांड्य सुबाण क्षुरप्र प्रहारी। काटौ तासु धनुष अतिभारी॥ तुरित चढ़ाय धनुष अभिरामा। शायक बर्षा अश्वत्थामा॥ अति कर-कश कर लाघव लीन्हों। नभ बाणनसों पूरित कीन्हों ॥ तहां पांड्यअति तुरिता धरिकै।मंडल सरिस शरासन करिकै॥ शर सों काटि असंख्यन शायक। द्विजहि प्रचारि विदित भट नाय-

क ॥ युगभटतासु चक्र रखवारे । तिन्हैं तीनिशत बाण प्रहारे ॥
लखि नृपको करलाघव ऐसो । द्रोण तनय करि बदन अनैसो ॥
आठ आठ वृषभन से बाहित । आठ सकत आयुध चितचाहि-
त ॥ दोयघरी महँनृप पहँ बरसो । जलद समान बाणप्रद सरसो ॥
पांडय भूपसो लखिगुणि मनमें । तजि बायव्य अस्त्रतेहि क्षनमें ॥
सिगरे बाण बिप्रकेडारे । सबके लखत व्यर्थकरि डारे ॥ सोलखि
कोपिबिप्र धनु करष्यो । नृपको धनुष काटिशर बरष्यो ॥ चारि
बाणसों तुरगन हतिकै । सूतहि बध्यो जीतिसों रतिकै ॥ करि
सबखंड रथहि अतिरोखो । काट्यो केतु मारिशर चोखो ॥ बध्यो
न नृपहि राखिरण ईहा । द्रोण कुमार बिदित भट दीहा ॥ भूप
तुरित तेहि रथसों कढ़िकै । भिरोमत्त मैगल पर चढ़िकै ॥ दोहा ॥
जृम्भा शक्र समानतहँ भिरेते सुभट अमान । घोरयुद्ध कीन्हें
महा बर्षि असंख्यन बान ॥ शरन बारि शरमारि शर गरजि प्र-
चारि प्रचारि । भरे रुधिर शोभित भये बाण प्रहारि प्रहारि ॥
सोरठा ॥ तेहिक्षण बीर अचार्य्य प्रगट अचारयपणो करि । गुनि
अपनो रणकार्य्य गजहि बध्यो बहु बाणहनि ॥ युगबर बाण प्र-
हारि युगभुज काटे नृपति के । हनिशर चौदह चारि हते नृपति
के अनुज सब ॥ फिरि क्षुरप्र शर मारि काटि शीश नृप पांडय
को ॥ दीन्हों महिपैडारि शोभित कुण्डलमुकुट सह ॥ गुरुतोमर ॥ जिमि
काठ मृतक जरायकै । जन पाणिजल भरि पायकै ॥ बुझिजात
अनल समानकै ॥ जिमि पांडयनृप वरसानको ॥ बहुबाजि गजभट
मारिकै । दलमध्य प्रलय पसारिकै ॥ भट बिप्रके शर धार सों
बधिगयो बीर अपारसों ॥ मंहिखरी ॥ तहँदेखि बध निज सुपति
को भट तासु सब अति भय पगे । करिघोर हाहाकार धुनि रण
त्यागि निज दल दिशिभगे ॥ सोदेखि अर्जुन भीम सात्यकि
आदि भट अमरष भरे । करि घोर बिक्रम जूटि इतके भटनसों
अतिरणकरे ॥ तिमि कर्ण कृप द्विज तनय शल्यहि आदिइतके

भटघने । भिरि पांडवन के भटन सोंअतियुद्धकीन्हे रिससने ॥ तहँ मारु मारो मरो मारो मारु धुनि नभ भरिरही । जो लखेहम तेहि गैरसो सब जातनाहिं यहिथर कही ॥ दोहा ॥ तोमर पट्टिश शक्तिशर भल्ल परश्वध औरं । खड्ग आदि आयुध मढ़े देखि परे तेहिठौर ॥ रथ हयते अरु गजनते गिरत सुभट गत प्रान । गज हय पैदर कटिगिरत देखि परे नहिं आन ॥ सोरठा ॥ राम राम सियराम कहि गहिसिगरे सुभट तहँ । चाहि अपूरब धाम किये घोर संग्राम भिरि ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेकर्णपर्वणिद्वितियोऽध्यायः २ ॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ दोहा ॥ पांड्यनृपतिको देखिबध कोपि लरेकिमि पार्थ । सो सुनिबो हम चहतहैं संजयभाषु यथार्थ ॥ संजयउवाच ॥ सुनो भूपतेहि क्षण तहां कर्ण धनुर्द्धर धीर । बाण बर्षि पर सैन मधि पारो प्रलय गँभीर ॥ चौपाई ॥ रथी पंचदश बिक्रम अतिके । बधत भयो पाञ्चाल नृपतिके ॥ अगणित हय गज भट बधि पलमें । रुधिरधार ढारो परदलमें ॥ लखि सहदेव नकुल धनुधारी । सात्यकि द्रौपदेय रणचारी ॥ धृष्टद्युम्न भट सेनानायक । चले कर्ण पहँ बरषत शायक ॥ सोलखि इतके प्रबल सुयोधा । बढ़ि तिनको कीन्हे अवरोधा ॥ माचो घोरयुद्ध तहँ तिनसों । पृथक् पृथक् कहि निबरै किनसों ॥ तोमर भल्लशक्ति शररूरे । भिन्दिपाल चलि दुहुंदिशि पूरे ॥ मूशल गदा भुशुण्डी आदी । आयुध छांड़न लगे प्रमादी ॥ अशनि सरिस अहिबाहनलागे । बाधि शत्रुनजय चाहन लागे ॥ लागेगिरन भूरिभट भिदि भिदि । गिरैं उठैं कितने महि छिदि छिदि ॥ हयगज रथते योधा मरिमरि । लागे गिरन रुधिर सों भरि भरि ॥ मारण मरण लगे भट बाढ़ि बाढ़ि । मारोमरो मारुधरु पाढ़ि पाढ़ि ॥ मारैं रथी रथिनसों भिरि भिरि । लरैं पदाति पदाती थिरि थिरि ॥ गजीगजी तेहि बिधि हयसादी । लागेमारण मरण

प्रमोदी ॥ दुर्योधनको लहि अनुशासन । अंगबंग मागध अरि नाशन ॥ मेकल कोशलनाथ निषाधा । गजदल सहित अमंद अबाधा ॥ शरजल बर्षतघनसम फैले । धृष्टद्युम्न पहँ चले उतैले ॥ तिन्हैं देखि सेनापति कोपो । बधिबिडारि जययश कहँ चोपो ॥ दशदश आठआठ अनियारे । शायकप्रति मैंगलन प्रहारे ॥ किरणि समान बाण सहिताके । गजगजस्थ भट अतिममताके ॥ घन सम बढ़िगुणि जययश ओपन । चाहेताहि सूर ममलोपन ॥ कितने द्विरदमानवन धरिधरि । मर्दतभये चरण तरकरिकरि ॥ कितने गज दांतन सोंमारैं । कितने गहिऊरध उलभारैं ॥ कितने शुण्डन सों करि गहिगहि । मारैं भटनसामने लहि लहि ॥ कितने शर पीड़ित भयभारैं । मुखमें कर कुण्डल करिडारैं ॥ कितने शीश उकाढ़े करिकै । ठाढ़ेरहे क्रोधसों भरिकै ॥ अति अंकुश अँगुठाके प्रेरे । अगरि जाहिं परभटकेनेरे ॥ तिमि गजस्थ भट आयुध बरषैं । प्रतिबादिन बधि बधि अति हरषैं ॥ कितने प्रतिबादिनके मारे । गिरैं यथातरुतेफल मारे ॥ तेहिक्षण नकुल सात्यकी बीरा । द्रौपदेय सहदेव सुधीरा ॥ चेकितानअरु सुभट शिखण्डी । शर बर्षत सहसेना चण्डी ॥ प्रबल बायु बारिदसों जैसे । भिरैंभिरे गजदलसों तैसे ॥ दोहा ॥ शरझर कीन्हे गजन पहँ यहिबिधि ते रणधीर । उमड़ि घुमड़ि जिमि गिरिनपहँ नीरद बरषैनीर ॥ गजबढ़ाय अति बेगसों अंगदेशको भूप । सात्यकि के सन्मुखभयो बर्षतबाण अनूप ॥ सोरठा ॥ सात्यकिबीर अमान हन्यो द्विरदके मर्मथल । शायक बज्रसमान तासोंभिदि गज गिरतभो ॥ चौपाई ॥ गजहि गिरत गुणिभूप अमाना । कूदन चहो मारिबरबाना ॥ तौलागि सात्यकि शर अनियारो । अंग भूपके उरमधि मारो ॥ बेधित ह्वैसो भूपति मरिकै । शोभितभयो भूमिपै परिकै ॥ पुंड्रभूप तिमि गजबर भेव्रहि ॥ चलो बढ़ाय निरखिसहदेवहि ॥ तब सहदेव बर्षिबर बानहि । ध्वजकाट्यो

बधिकै गजबानहि ॥ तऊ अंग नृपसुत दृढ़ घायक । माद्री सुत पहँ बर्षो शायक ॥ तेहि क्षण आय नकुल तहँ आसू । शतशर सों बेध्यो गज तासू ॥ सो शर सहस नकुल पहँ डारो । नकुल ताहि बाणन सों बारो ॥ ताज क्षुरप्र शायक धनु बरसों । दीन्हों काटि तासु शिर धरसों ॥ शर हनि काटिदयो शिर तासू । महि पै गिस्यो बीर नृप आसू ॥ यमन जनक सुत नृपको मरिबो । लखि सबभट गुनि अनरथ करिबो ॥ मेकल उतकलपति नरनाहू । अरु निषाद नृप दीरघबाहू ॥ बली ताम्रलिप्तक भट गाढ़े । अरु कलिंग भट सिंहउ काढ़े ॥ नकुल बीरसों भिरे प्रचारी । बर्षत बाण बितरि अँधियारी ॥ सोलखि पांडव भट रिसि पूरे । तिनसों भिरे बर्षिशर रूरे ॥ सोमक अरु पांचाल प्रबीरा । बढ़ि बढ़ि भिरे बिदित रणधीरा ॥ रथी गजस्थनसों तेहि पलमें । माचो घोर युद्ध वहि थलमें ॥ सात्यकि आदि बीर सब उतके । बर्षि बर्षि शर अति अय युतके ॥ इतके शरन काटि बिरु बकि बकि । हनिहनि बाण मर्मथल तकि तकि ॥ कर पग उरधर कुम्भ बिदारी । बधे असंख्यन गज रणचारी ॥ मारि असंख्यन भट बल ओकन । भेजिदेत भे उरध लोकन ॥ प्रलय पूरपूरितकरि छाजे । काल करालसरिस तहँ राजे ॥ बधि बिचलाय द्विरददल भारी । मर्दन लगे सैन रणचारी ॥ बर्षा नदी कूलजिमि तोरति । जल प्रबाहसों तृणबन बोरति ॥ दो॰॥ ममदल मर्दत प्रबल अति भल्लशक्तिधर छाय । चले कर्णपहँ बेगसों पांडव भट समुदाय ॥ निजदल दाहत देखिकै सहदेवहि तेहि काल । रथबढ़ायकै भिरतभो दुश्शासन दलपाल ॥ सोरठा॥ बलसों धनु टंकारि बढ़ि अविरल शरसेतुरचि । अति तीक्षण शरचारि सहदेवहि मारत भयो ॥ तामर ॥ तब गरजि भट सहदेव । बढ़ि प्रगट करि भट भेव ॥ तो सवन भटके गात । हनि साठिशर अवदात ॥ शरतीनि सूतहि मार । भानदत्त धनु टंकारि ॥ तो तनय धनुविधिडाटि ।

धनु तासु शरसों काटि ॥ करि सन्निधि शर सन्धान । भो हनत सत्तरि बान ॥ तब खड्गगहि धनु त्यागि । सहदेव अरि बधलागि ॥ तकि बेगसों तेहि झेलि । बरबीर बिधिसों केलि ॥ तो पुत्र को कोदण्ड । करि देतभो युगखण्ड ॥ दोहा ॥ काटि धनुषफिरि धनुष गहि हन्यो बज्रसम बान । सो शर काट्यो खड्गसों तासुतबीर अमान ॥ बाण काटि तजि खड्गसों गहिधनु करि सन्धान । दुश्शासन सहदेव पहँ डार्यो चौंसठिबान ॥ सोरठा ॥ एक एकमें बान पांच पांचहनि निमिषमें । भट सहदेव अमान काटि गिरायो भूमिपै ॥ चौपाई ॥ बाणकाटि तुरता बिस्तार्यो । अगणित शरसों सुतपहँ डार्यो ॥ तीनि तीनि शरसों सबशायक । काटिदयो तो सुतभट नायक ॥ सबशर काटि बाण नव गनिकै । गरजो तासु सारथिहि हनिकै ॥ तब पाण्डव अतिशै रिसिधार्यो । कालदण्ड समबाण प्रहार्यो ॥ बेधि कवच कढ़ि महि मधि धसिकै । सोशर लसो उरगसम बसिकै ॥ अति बेधितह्वै हाधुनि करिकै ॥ रथपहँपरो मोहसों भरिकै ॥ नृप तो सुतहि अचेत निहारी । रथलै भगो सरस रथचारी ॥ इबिधि दुशासन सों जय लहिकै । भट सहदेव प्रबलता गहिकै ॥ सुरथ बढ़ाय बीर रसपागो । सैनकौरवी मर्दनलागो ॥ भयो तहां अति तेखी तेखा । नकुल कर्णसों देखीदेखा ॥ सुरथ बढ़ायसु धनु टंकारी । नकुल कर्णसों कह्यो प्रचारी ॥ बैर कलह अनरथ करमूला । तूशठपाप बुद्धि अनुकूला ॥ तो मतको फल लहि कछु दिनमें । कौरव नशत बसत तूजिनमें ॥ अब बधितोहिं भेजियमलोकहि । करिहौं दूरिहियेके शोकहि ॥ यहसुनि सूत सुवन हँसिभाष्यो । राजपुत्र नीको अभिलाष्यो ॥ अब लखाउ निज पौरुषमोहीं । जातेसुभट गुणौंमैं तोहीं ॥ लरि करिबिक्रम लहि मम समता । तब इमि बचन भाषु गहिममता ॥ बीर करै बिक्रम नाहिंभाषै । कादर जलपि बिजय अभिलाषै ॥ इमिकहि

सूतसुवनं बलवाना। नकुलहि हन्यो तिहंत्तरि बाना॥ तहां नकुल अति तुरता लीन्हो। असी सुबाण तासु तनदीन्हो॥ काटिनकुलको धनुतेहि क्षणमें। सूतजहन्यो तीसशर तनमें॥ तुरितहि नकुल और धनुगहिकै। सत्तरि बाणहन्यो थिरुकरिकै॥ सूतहि तीनि सुबाण प्रहारी। काट्यो धनुषमारि शरभारी॥ दोहा॥ धनुषकाटि शरतीनि शत कर्णहि हन्यो प्रचारि। तुरित कर्ण धनुओर गहि ताहिहन्यों शरचारि॥ नकुल तानि शरसात हनि फिरिकाट्यो कोदण्ड। तुरितकर्ण धनु आनगहि बरष्यो बाण उदण्ड॥ सोरठा॥ तिमि पाण्डव बलवान बरसोशायककर्ण पहँ। दोऊबिदित अमान गगन शरन छादित कियो॥ चौपाई॥ दोऊ बाण ब्रर्षितेहिथरमें। दोउन कियो बाणकेघरमें॥ दोऊसुभटभरे अतिरिसमें। अगणित सैन बधे दुहुदिशिमें॥ दोऊ बिबिध भांति सों चरिकै। सुरन किये बिस्मित अतिलरिकै॥ दिव्य अस्त्रके बिदित विशारद। दोऊ शत्रु सैनके भारद॥ दिव्य अस्त्र छादित करिदीन्हे। दिव्य अस्त्र सों वारण कीन्हे॥ तहांकर्ण अतिधनुविधिठाट्यो। शरहनि धनुष नकुल को काट्यो॥ फिरि हनिबाण सारथिहि हतिकै। तुरगन बध्यो चपलता अतिकै॥ तब पाण्डव गुरु गदा चलायो। ताहिकाटि सूतज भट गायो॥ शरसों काटिअंग सबरथके। बध्योचक्र रक्षक रणमथके॥ तबगहि खड्ग चर्म रथ तजिकै। नकुल कर्ण पहँ चलो गराजिकै॥ बर्षि बाण सूतज प्रणधरिकै। खड्ग चर्मयुग शतधा करिकै॥ अगणित बाण नकुलके तनमें। हन्योननकुल गुन्योकछु मनमें॥ सिंहचलै मैगलपै जैसे। बलसों चलोकर्णपै तैसे॥ सोलखिकर्ण बारबहु हँसिकै। रथसों कूदि बेगसोंगसिकै॥ जाय नकुल के ढिगअति बलसों। डार्यो धनुषग्रीवमें कलसों॥ यथा गारडू मंत्रन नहिकै। गहै कुपित व्यालहि थिर रहिकै॥ दोहा॥ धनुष मध्य इमि कर्णको आनन भयो बिभात। यथा बि-

षम परिवेष मधि पूरणशशि अवदात ॥ धनुपिंजर मधि डारि गहि नकुल केहरी बीर । हँसि हँसि सूतज हनतभो बचन शक्ति गंभीर ॥ लघु बिक्रम तू मोहबश कत मम सम्मुख आय । ह्वै गाहक जय अलभको नाहकभयोसहाय ॥ सोरठा ॥ अबमैं बधतन तोहि तोजननीको बचनगुणि । निजसमयोधाजोहि लरेहु मानि सिखजाहुफिरि ॥ श्रुती ॥ इमिभाखिकै । प्रणराखिकै ॥ तेहि त्यागिकै । मुद पागिकै ॥ फिरि आइकै । छबिछाइकै ॥ सुत सूतको । हित धूतको ॥ दोहा ॥ कर्णफेरि चढ़ि सुरथपै कर्षि कठिनकोदण्ड । मर्दत भो पांचालदल वर्षिबाण यमदण्ड ॥ मंत्रितह्वै रहि कुम्भ मधि निछुटो उरग समान । ब्रीड़ित निजदल बिवरमधि गयो नकुल बलवान ॥ भुजंगप्रयात ॥ बलीबीर बीरानमें बीरबाको । धरे धीर धीरानमें जासुसाको ॥ चलोजीति माद्रीसुतै भूरिभेखो । जितै आलपञ्चालको जालदेखो ॥ डरैडारि टंकार कोदण्डभारी । लगोबाण डारैबिडारैबिचारी ॥ ननर्दै लगो यूथमर्दै निदर्दी । यथा चालिबर्दै भुअर्दै कपर्दी ॥ सोरठा ॥ तब युयुत्सु कहँ देखि निज दल मर्दत तेहिसमय । भटउलूक अतितेखि भिरत भयो वर्षतबिशिख ॥ चौपाई ॥ बढ़ियुयुत्सु तेहिबहु शरमारो । सोकढ़ि तेहिबहुबाण प्रहारो ॥ तहँउलूक करलाघव करिकै । काटचोतासु धनुष प्रण धरिकै ॥ तुरित युयुत्सु और धनु गहिकै । हन्यो साठि शर थिरु थिरु कहिकै ॥ हन्यो उलूकबीस शर ताही । सो तेहि हन्यो पांच शर चाही ॥ यहि प्रकार ते युगभट भिरिकै । घोरयुद्धकीन्हे तहँथिरिकै ॥ तहँउलूक अतितुरतालीन्हो । तासु सारथीको बधकीन्हो ॥ तुरगन बध्योमारि बहु शायक । तबरथ त्यागिभगो नरनायक ॥ इबिधि युयुत्सुहि जीति ननर्दत । भयो उलूक शत्रुदल मर्दत ॥ शतानीक सोंभिरितेहि थर्मा । महाराज तो सुत श्रुतिकर्मा ॥ काटिधनुष सब तुरगन हतिकै । बर्षोबिशिख पराक्रम अतिकै ॥ ह्वै तहँ बिरथ सुतनय नकुलको । तज्यो

गदा नाशन अरिकुलको ॥ तो सुतके रथपै सो परिकै । तुरग सूतरथ भस्मित करिकै ॥ राजतभई भूमिपै तैसे । पन्नगराज बमत बिषजैसे ॥ तब श्रुतिकर्मा चरिमहिमाहीं । गयो बिबिंशत के रथपाहीं ॥ गो प्रतिबिंध्य भूपकेरथपै । शतानीक योधा चरि पथपै ॥ भूपति यहिप्रकार सब थलमें । माचोघोरयुद्ध तेहिपल में ॥ दोहा ॥ गर्जिगर्जि भिरि शकुनि अरु बिदित बीर सुतसोम। इबिधि लरैं जो लखिभये खरे सुरनके रोम ॥ बर्षि बर्षि शायक निकर काटिदये शरजाल । अगणित शर दोउन हने दोऊ बीर बिशाल ॥ सोरठा ॥ अति लाघव करितत्र नृप मामा तो सुतन को । मारि अनगिने पत्र तासु सूत तुरगन बध्यो ॥ गुरुते मर ॥ सुत सोमओज बढ़ायकै । रथत्यागि महिपै आइकै ॥ अतिचपलता गहिचावसों। चरिदक्षताके छावसों ॥ जिमि जलद जलगिरि देश पै । तिमिबाण शकुनि नरेशपै ॥ नृपभयोबर्षत टेरिकै । सुरमुदित भेसो हेरिकै॥ तब शकुनि ताहि प्रचारिकै। बरभल्लबाणप्रहारिकै॥ सुत सोमको धनु काटिकै । भो लसत धनुबिधि ठाटिकै ॥ सुत सोमसो धनु डारिकै । असिचर्म अनुपम धारिकै ॥ गहिपै तरे सब ठौर के । जे गौरताके डौरके ॥ भो काटि देत सुभेशके । सबबाण शकुनि नरेशके ॥ नृप शकुनिसों गति चाहिकै । बरशर क्षुरप्रहि बाहिकै ॥ भोकाटि देत सुभूपकी । सो खड्ग अद्भुतरूप की ॥ तबभूप अतिबलमेलिकै । अरध असिसों झेलिकै ॥ धनु काटि शकुनि अमानको । गहिडौर सुभट बिधानको ॥ शतकीर्त्ति के रथ जायकै । भोलसत ओज बढ़ायकै ॥ तेहि समय नृपपर सैनसे । शर शकुनि के रणऐनमें ॥ भेलसत जिमि बनचारिको । बहुबुंद बर्षित बारिको ॥ दोहा ॥ कृपाचार्य्य सोंभिरतभो धृष्टद्युम्न सैनेश । अति बिक्रमतहँ करतभो कृपाचार्य्य भटवेश ॥ कृपाचार्य्यके शरन सों ह्वै छादित भिदगात । लघुबिक्रमह्वै जातभो सुभट मषान लजात ॥ भुजंगप्रयात ॥ कृपाचार्य्यको देखि

के तेजपूरो । यथा कालकल्पांतको क्रुद्धकूरो ॥ इतैके सबैबीर आनंद आने । बलीधृष्टद्युम्नै बध प्रायजाने ॥ गहे द्रोणके घात को क्रोध भारी । लसो आर्य्य आचार्य्य आचार्य्य कारी ॥ न-मारे बिना आजु तौ ताहि छाड़े । बलीको उतै बीरजो याहि आड़े ॥ दोहा ॥ इबिधि परस्पर कहतभे इतके सिगरे बीर । धृष्टद्युम्न कहँ बधतहैं आजु बिप्र रणधीर ॥ मोहित निज स्वा-मिहि निरखि बोलो सूतबिचारि । शिथिलपराक्रम होइकत ल-हनचहतहौ हारि ॥ धृष्टद्युम्न सों सुनिकह्यो लहिद्विजको शर पात । हम न पराक्रम करिसकत बेधितह्वै सबगात ॥ ताते धीरेफेरिरथ चलोभीम जेहिठौर । सुनत सूतरथहांकिगो जहां भीम भटमौर ॥ कृतबर्मा क्षितिपाल अरुसुभट शिखण्डीजूटि । घोर युद्ध कीन्हें तहां सुजय परस्परऊटि ॥ सोरठा ॥ दोऊ सुभट अमान बर्षि बनदसम बाणबन । किये कठिन घमसान भूप न कहिबे योगसो ॥ दोऊ बेधितगात शोणितके धारनभरे । रथ-पहँभये बिभात सजल कुम्भ बहु छिद्रजिमि ॥ चौपाई ॥ बज्रस-मान बाणबरपर्मा । हन्यो शिखण्डिहि नृपकृतबर्मा ॥ तासों बेधितह्वै तेहि क्षणमें । भयो अचेत शिखण्डी रणमें ॥ सो लखिसूत शोचसों पागो । तुरगण फेरि सुरथ लै भागो ॥ इनयुग बंधुन बिचलतदेखी । बिकलभये पर भट अवरेखी ॥ भूपतिसुनो पार्थतेहि पलमें । प्रलय पसारतभो ममदलमें ॥ सो लखि इतके नृपअरिजेना । भिरतभये बढ़ि बढ़ि सहसेना ॥ स-त्यसेन अरु सौ श्रुतिराजा । चित्रसेन नृप सहित समाजा ॥ नृपति मित्रबर्मा रणचारी । मित्रदेव भूपति धनुधारी ॥ नृपति सुतंजय दीरघबाहू । चन्द्रदेव बरणो नरनाहू ॥ शिव पत्रिगर्त शाल्वप्रपण्रूरे । अरुसंसप्तक अमरषपूरे ॥ बर्षतबाणपार्थसोंतैसे । भिरे असुर सुरपति सों जैसे ॥ तहांपार्थ अतिधनु बिधिठाट्यो । सबके बाण असंख्यन काट्यो ॥ सबके गातबाण बहुमारयो ।

अगणित भटन भूमिपै डारयो ॥ शत्रुंजय कहँ यमपुर दीन्हो। सो श्रुतिको धर बिनुशिर कीन्हो॥बध्यो चन्द्रदेवहि हनिशायक। धीरधुरीण पार्थ दृढ़घायक ॥ पांचपांच शायक अनियारे। हनि हनि इतर नृपन कहँमारे ॥ दोहा ॥ सत्यसेन क्षितिपाल तहँ करि लाघव तेहिकाल। कृष्णचन्द्रके भुजनमें तोमर हन्यो बिशाल ॥ बांहबेधिसो कढ़िगयो करते गिरोप्रतोद। सो लखिबोले पार्थइमि पूरित बीरबिनोद ॥ सोरठा ॥ गहिप्रतोदरथहांकि सत्यसेनपहँचलहुप्रभु। देतशरनसों फांकि तासु शीशसरदा सरिस ॥ चौपाई ॥ इमिकहि पारथ सत्यपरनको। करिअबिरल सन्धान शरनको ॥ काट्यो सत्यसेनके शीशहि। व्यथितकियो तो सुतश्रवनीशहि ॥ बहुरिमारि शायकबररूपहि। बध्यो मित्रबर्मा बर भूपहि ॥ मण्डलसदृश धनुष करिचरिकै। मित्रसेन कहँ बिरथीकरिकै ॥ सहसन संसप्तक भटहतिकै। बिलसतभयोजीति सोरतिकै ॥ अस्त्रऐन्द्रहि प्रगटित कीन्हों। प्रलयकाल रोपित करिदीन्हों ॥ राजपुत्र क्षत्रिनके धरसों। पाट्यो भूमिकाटिशरबरसों ॥ कुण्डल अंगद हार अदूषण। मणिमय मुकुट आदि बरभूषण ॥ सहितपरे कर शिरधरसूरे। रुधिरभरे अति सुखमा पूरे ॥ लसत भये तहँ मणिगण तैसे। अरुण गगन मधि उडुगण जैसे ॥ धनुरथ ध्वज तुरगनकी राजी। काट्योप्रगटि धनुष बिधि ताजी ॥ अगणित गज बधिहरि महिभारा। प्रगटित कियो रुधिरकी धारा ॥ शक्ति बाण असि भल्लगदादिक। आयुधजितने तजेप्रमादिक ॥ सोसबकाटि पार्थरणधीरा। पलमें बंध्यो असंख्यन बीरा ॥ बाणजाल सबरथ मढ़ि दीन्हों। प्रलय काल आरोपित कीन्हों ॥ बाण धनुषसों जे जहँलाये। ते तहँभयेकालकेखाये ॥ शरधनु सहित गिरेकर तिनके। गिरेंगदा सहबाहु अमिनके ॥ सोलखि एकहि बचत न जाने। तजिसाहस हतशेष पराने ॥ तिनकहँ जीतिपांडु हरिशावक। लस्यो बिधूम

लसैं जिमिपावक ॥ तेहिक्षणधर्म भूपतिहिदेखी। दुर्योधनभूपति अवरेखी ॥ बर्षत बाण धनुष टंकारत । चलो युधिष्ठिर नृपहि प्रचारत ॥ सो लखिहरषि धर्म नरनायक । भिरो भूपसों बर्षत शायक ॥ प्रबलधनुर्द्धर दोऊभाई । नृपकीन्हें तहँ तुमुललराई॥ नवशायक अतिशय अनियारे । दुर्योधननृप धर्महि मारे ॥ दोहा॥ अतिक्रोधित ह्वै धर्मनृप तकि तकि तेरहबान । चारिबाण सों बधत भो चारोंतुरग अमान ॥ रथिसूतहि ध्वज काटिफिरि काटि धनुष तरवारि । दुर्योधनके तनहन्यो शायक पांच प्रचारि ॥ सोरठा ॥ त्वरितत्यागि रथतौन भूपखरो भो भूमिपै । सो लखिकरि तहँ गौन घेरिलये कृप आदि भट ॥ उत भीमादिक बीर घेरि युधिष्ठिर भूपतिहि । बर्षनलागे तीर इत इतके उत शर घने ॥ भुजंगप्रयात ॥ किते शक्ति मारैं किते भल्ल डारैं । किते बाण धारैं चहूंओर ढारैं ॥ किते तोमरैं औ गदायष्टि ढालैं । किते पट्टिशै औतजैं भिण्डिपालैं ॥ भिरैंनामलैलै तजैंबाणरूरे । घनेआयुधै के घनेजालपूरे ॥ रथी अश्वसादी गजी अश्वसादी । भिरे त्यों रथी औ रथी औ प्रमादी ॥ भिरे हांक दैदै पदाती पदाती । कहूं अश्वसादी पदाती बिघाती ॥ महाघोर संग्राम ताठौर जूटो । परो जानि कल्पान्तको काल टूटो ॥ दोहा ॥ गत वाहनह्वै भटकिते लरे पयादे टूटि । किते निरायुधह्वै किये बाहुयुद्ध तहँजूटि ॥ महा युद्ध करि तहँ भये मोहित सुभट अमान। निजपर हय गज रथ तुरग रहो न काहुहि ज्ञान ॥ यह सुनि ऊबि उसासलै कह्योवृद्ध क्षितिपाल । बिरथीह्वै मम तनय नृप कहा कियो त्यहि काल ॥ यह सुनिकै संजय कह्यो क्रोधित नृपति अचैन । और सुरथपै त्वरित चढ़ि कहै सूत सों बैन ॥ सोरठा ॥ मोरथ शीघ्रबढ़ाय धर्म नृपतिके निकटचलु । सोसुनि सूतसचाय चलोयुधिष्ठिरकेनिकट॥ भूपहि आवत देखि रथ बढ़ाय अतिबेग सों। नृपति युधिष्ठिर लेखि भूप सुयोधन सों भिरो ॥ चौपाई ॥ दोऊबन्धु बिदित धनु

धारी। दोऊ राज्यहेतु रणचारी ॥ दोऊ गहे क्रोध उतकर्षा। दुहुँ दिशि किये शरनकी बर्षा ॥ नृप दुर्योधन तुरत ठाट्यो। शर हनि तासुशरासन काट्यो॥ धर्मनृपति धनुगहि गुणिमनमें। काट्योतासु धनुष ध्वज क्षनमें ॥ त्वरित धनुषगहि भूपसुयोधन। कियो धर्मनृपको अवरोधन ॥ पुरुषसिंह दोऊ भट आरज। लरे सिंहसम महि करि कारज ॥ धर्मभूप तौ सुत के उरमें। मारयो तीनि बाण अति तुरमें ॥ तबतौ पुत्र शक्ति बर गहिकै। तज्यो धर्म पहँ थिरुथिरु कहिकै॥ सो त्यहि काटि तीनि शर हनिकै। भूपहि हन्यो पांच शर गनिकै॥ तब तौसुत नवशर अनियारे। नृपति युधिष्ठिरके तनमारे॥ तेहिक्षण धर्मभूप अलि रोखो। मारयो नृपहि बाण अति चोखो॥ सो शर नृप तौ सुतकेगातहि। बेधिकढ़ो कंटक जिमिपातहि॥ तबतौ तनय गदागहि भारी। चलो धर्म भूपतिहि प्रचारी॥ गदा गहे तौपुत्रहि देखी। मारयो शक्तिधर्म्मनृप तेखी॥ तासों बेधितकै नरनाहू। मूर्च्छित भयो शिथिल करि बाहू॥ फिरि नहिं हन्यो भीमसों सुनिकै। तुम न बधो यहि मम पण गुनिकै॥ दोहा॥ भूपहि मूर्च्छित देखिकै कृतबर्मा क्षितिपाल। बढ़ि आड़तभो परभटन बर्षि शरनकेजाल॥ भोतहँ चौथे पहरमें यहि बिधिको संग्राम। गदरानो तौ कुमति तरु को फल दुखदा नाम॥ सोरठा॥ कर्ण आदि रणधीर भिरि भीमादिक भटनसों। किये युद्ध गम्भीर मारुमारु धरु रटनकरि॥ चौपाई॥ माचत भयो भूप तेहि पलमें। अतिशय घोरयुद्ध तेहि थलमें॥ पट्टिश भल्ल शक्तिशर क्रूरे। आयुध विविध दुहूं दिशि पूरे॥ दिव्य शरनकी बर्षा करि करि। लरे सुभट बहुबिधि सों चरि चरि॥ ह्वै बिनुभट बहुहयगज घायल। इतउत फिरनलगे ह्वै चायल॥ ह्वै बिनु बाहन योधा केते। महिगत लरनलगे जय हेते॥ भये बिमुण्ड बितुण्ड घनेरे। अगणित भटन पाणि बिनु हेरे॥ बिना मुण्डके अगणित योधा। आयुध गहे करें अव-

रोधा ॥ कितने परे धरणिपे लोटैं । मारुमारु कहिभूमि खसोटैं ॥ कितने खरे अधमरे भूमैं । घायल किते रोषसों घूमैं ॥ कितने निरथ निरायुध ह्वैकै । करैंमल्लरण रिसिसों ग्वैकै ॥ शिरधर भुजसह बसन बिभूषण । परे रुधिरमें लसैं अदूषण ॥ टूटिफूटि जिमि तरु छबि धरिकै । दहकत दावानल मधि परिकै ॥ कितने लरिगिरि उठिगिरि गिरिकै । महिपैपरे लरैं भिरि भिरिकै ॥ चामर छत्र किरीट पताका । हौदा पाखर अंकुश चाका ॥ अंगभंग हय गजभट मरिमरि । शोभित भये भूमिपै परिपरि ॥ रुण्डमुंड शोणितसों धरणी । भई भयानकरूप बिवरणी ॥ दोहा ॥ अस्त्र शस्त्र तनुत्राण शरके मिलान भवशब्द । धनु टंकार प्रचारधुनि सों पूरितभो अब्द ॥ मचो घोर संगर तहां निकट सात्यकी पाय । कर्ण कर्षि कोदण्डवर बहुशर हन्यो सचाय ॥ सूततुरग कर्णहिं हन्यो सात्यकि अगणित बान । यहि प्रकार दोऊसुभट किये घोर घमसान ॥ सोरठा ॥ लखिकर्णहि त्यहि काल छादित सात्यकिके शरन । भटसुषेण क्षितिपाल सदल गयोतहँ बेगसों ॥ तोमर ॥ तहँजात ताकहँ देखि । पर सेनपति अति तेखि ॥ करि चपलकरि कोदण्ड । बढ़ि भिरो बीर उदण्ड ॥ तहँ पार्थभट रण धीर । ममसैन जगपहँ बीर ॥ भो लसत सत्त्व समुद्र । कल्पान्त कैसो रुद्र ॥ सोदेखि तोसुत भूप । करि बदन भीषम रूप ॥ शर बर्षि धनुटंकारि । बढ़ि भिरो ताहि प्रचारि ॥ तेहिदेखि पार्थ अमान । भोतजत आठ सुबान ॥ तकि तुरगचारों मारि । भोदेत महिपै डारि ॥ दोहा ॥ पंचम शरसों काटि धनु छठयें सों बधि सूत । द्वै शर सों काटत भयो छत्रकेतु मजबूत ॥ फिरि अमोघ शर तजत भो बधबिचारिकै तासु । ताकहँ काट्यो द्रोणसुत मारि सातशर आसु ॥ सोरठा ॥ करिअतिरिस हनिबान काटि धनुष द्विज तनयको । तुरगन बध्योअमान पार्थधनुर्द्धर बिदित भट ॥ चौपाई ॥ ढिग कृप कृतबर्माकहँ तकिकै । काट्यो धनुष भागुम-

तिबकिके ॥ करि दुश्शासन को धनु छेदन । चलो कर्णपहँ पर दलभेदन ॥ सो लखिकर्ण सात्यकिहि तजिके । पार्थ बीर पहँ चलो गरजिके ॥ तीनि बाण अर्जुनकहँ हनिके । कृष्णहिं हन्यो बीसशर गनिके ॥ सात्यकि तहां जायतेहि क्षनमें । शतशरहन्यो कर्णके तनमें ॥ तुरितजाइ तहँ अगणितयोधा । कियेकर्णभटको अवरोधा ॥ युधामन्यु उतमौजाराजा ॥ सुभट शिखण्डीसहितसमाजा ॥ द्रौपदेय अरुनकुल सुबीरा । सहदेव धृष्टद्युम्न रणधीरा ॥ सदल धर्मभूपति धनुधुनिके । भिरेसूतसुतको बधगुनिके ॥ तहां कर्ण अति लाघवकीन्हों । सबपहँ बाणजाल रचिदीन्हों ॥ काटि तहां सबके बहु शायक । सबकहँ हन्यो बाणदृढ़ घायक ॥ दिव्य शरनकी बर्षा करिके । सबकहँ व्यथित कियो प्रणधरिके ॥ सो लखि कोपिपार्थ धनुधारी । बर्षि दिव्य शायकरणचारी ॥ शस्त्र शस्त्रसों वारणकरिके । बर्षो बिशिख चक्रसमचरिके ॥ तिमिचरि कर्ण पार्थसोंभिरिके । कीन्होघोरयुद्ध तहँथिरिके ॥ दोऊभूरि बिक्रमीगाये । दुहुंदिशिबाण बनद समछाये ॥ दोहा ॥ दिव्यअस्त्रमें कुशल अति दोऊबरबाणैत । घोरयुद्धकीन्हेतहांदोऊधीरघैरेत ॥ यहिबिधिभिरिभिरि सकलथल दुहुंदिशिकेभटउद्ध । अतिबिक्रम करिकरि करे भीषम अद्भुत युद्ध ॥ महिहरी ॥ तहँ मचो भीषम युद्धसिगरे सुभटअति बिक्रमकरे । गजतुरग भट समुदायबाधि बाधि रुधिरमण्डन महिभरे ॥ इमिहोत संगर घोरसोदिननितो रबि अथवत भये । अब युद्धतजि सबभूप निज निज सैन सह डेरनगये ॥ जुरिभूतगृध्र पिशाच जम्बुक हरषितहँ बिहरनलगे । भटजाय डेरन कियेसब करतव्य शोचित श्रमपगे ॥ जो भयोपूर्व कुमंत्र तासों इतकअनरथ लखिखरो । अबकहतनहिं कछु बनत नृपसों समुझि अरिआवतगरो ॥ दोहा ॥ कर्णपर्वके प्रथम दिन इमिरणभोक्षितिपाल । रामकृष्णजोचहतसोअवशिहोतसबकाल ॥
इतिमहाभारतदर्पणेकर्णपर्वणिप्रथमदिनयुद्धसमाप्तिर्नामतृतीयोऽध्यायः ३

वैश्यपायनउवाच॥ दोहा ॥कर्णपर्वके प्रथमदिन कोसुनि युद्धबिहार। इमिबोले धृतराष्ट्रनृप गहे शोच अधिकार॥ रोला॥ सुनोसंजय होत सोई चहत ईश्वर जौन। सकै पार्थहिजीति ऐसोभयो योधा कौन॥ बिपिन खांडव पार्थ जारचो जीति शक्रहि एक। एकपार्थ निबात कवचिन बध्योगहि रणटेक॥ एकपारथ लयोजय गन्धर्व गणसों जूटि। एक पार्थ बिराटपुरमें लयोजययशलूटि॥ एक पारथलरो शिवसों लियो पशुपति अस्त्र। एकपारथ दिगपतिन सों लह्यो सिगरे शस्त्र॥ तिहूंपुरके जीतिबेको योगपारथ बीर। बालसो परसिद्ध जानत कहतसब रणधीर॥ भरो अतिदुख स-दल ममसुत तीन रजनि बिताय। कर्णसहचढ़ि लरोकैसे कहो सो समुझाय॥ भूपके ये बचन सुनिकै कह्यो संजय बैन। भोर सूतजजाय नृपपै देखि नृपहि अचैन॥ कह्यो भूपति शोचतजि मुदगहो ममप्रण जोहि। बधौंगोमें पार्थकहँ कैपार्थ बधिहै मोहि। आजु पार्थहि बधेबिनु नहिं आइहौं तो पास। शोचै इतक न पूर्व आयो निकट ममगहि त्रास॥ अस्त्र बिक्रम शस्त्र धनुके गुननमें सबिधान। शूरतामें तुल्यहैं हम पार्थभट नहिंआन॥ बिजय नामक धनुष बिरच्यो बिश्वकर्मा पूर्व। जीति दैत्यन इन्द्रदीन्हों भार्गवहि सोगूर्ब॥ बारयकइस सकल क्षत्रिनजीति तासोंराम। मोहिंदीन्हों धनुष सोई बिजय जाको नाम॥ धनुष सो गांडीवतासों अधिकसो अवधारि। भूपतोकहँ बिजय देहौं जीति पार्थहिमारि॥ यथाअग्निनिहि सकतनाहिं साहिवृक्ष तेहि बधिपार्थ। आड़िसहिनहिं सकैगोमम बाणवृष्टि पदार्थ॥ एक मैं हमपार्थसों हैं हीनकहियतुतौन। पार्थकोहै सारथीयदुबीरसब गुणभौन॥ नहींतासम सारथीममशोचइतनोभूप। शल्यसारथि पनोजानतकृष्णके अनुरूप॥होइजो ममसारथीनृपशल्यधीरधु-रीन।जीतिपार्थहिभूपतो तेहिदेउँजययश पीन॥पार्थकेहैंदिव्यरथ हयअक्षयअक्षतुणीर। तासुहितममसंगराखहुसुरथतर्कसभीर॥

अरुव हृदयसुमंत्र जानतकृष्ण जिमितिमि शल्य । शल्यं होइसु सारथी तौकरौंतोहिं अशल्य॥ शल्यअधिकी कृष्णसोंहम पार्थ सोंसबठौर । अवशिजय हमलेब नृपजोसधै ऐसोडौर ॥ कर्णके ये बचन सुनितोतनय नृपतजिशोचा शल्यके ढिगजाय साबिनयकर हृतभो निजरोच॥सत्यब्रतनृपसिंह परदल दलनधीर धुरीन। मद्र पतिसो करो जोमैं कहतहौं ह्वै दीन ॥ कृष्णके समकर्णको नहिं सारथी परबीनातुम्हैं तेहिसम पाइसूतज भयोचाहतपीन॥जोरि कर करिविनय ताते कहतहौं हेभूप। कृपाकरिकेकरोसारथिपनो निज अनुरूप ॥ कियो सारथिपनो विधि जिमि शम्भुको तेहि रीति । सूतसुतको सूत ह्वै नृप मोहिं दीजै जीति॥ कृष्ण रक्षक पारथहि तिमि पाहिकर्णहि आप । जीति शत्रुन मेटियेममहिये को परिताप ॥ दोहा ॥ यथा अरुणसह भानुकढ़ि नाशि देततम जूह । तिमि तुमसहलरिके बिधिहि सूतज शत्रु समूह ॥ भीष्म द्रोणको बधकिये वेकरि छल व्यापार । कर्ण बधैगो उनहिं लहि तव सहाय आधार ॥ जिमि मम हित रत कर्ण तिमि आपु महारथ बीर । सारथिपन स्वीकार करि मोहिं दीजिये धीर ॥ रोला ॥ भूप के ये बचन सुनिके लोचननि करि लाल । बंक करि भृकुटीन बोलो शल्य बीर बिशाल ॥ भूमिपति कत भूमि ऐसो कहत बचन अनीक । बाहुबल मम बिदित तामें चहत लावन लीक ॥ जानि मोसोंअधिक कर्णहिं कहत हूजैसूत । मैंनमानत सूतजहि निज सदृश भट मजबूत ॥ प्रबलआति परसैन में जो ताहि देहु बताय । ताहि बधिके जाबहम निजदेश शंख ब-जाय ॥ कहौ सबसों लरन जो तौ लखौ बिक्रम मोर । प्रलय पारत शत्रु दलमें सरस शरको जोर ॥ धनुष रथहय गदालखि ममदेखि बाहु उदण्ड । भूप बोलो बचन जो नहिं होइ लायक दण्ड ॥ भये कबहूं सूतक्षत्री सूतको कहुतौन । सूतह्वैवे सूतको तुम मोहिं भाषत जौन ॥ सूतसुत अधरथी ताको सारथी अब

होन। भूपमोको कहब तुमहो उचित तुमको सोन॥ भूप अभि-
षेकित बिदितहम मद्रपति रणधीर। सूतसुतको सूतह्वै कहत
तेहि निजतीर॥ पाइइमि अपमान अबहम रहबनाहिं यहिदेश।
जाब निजपुर अवशि शासन शीघ्रदेहु नरेश॥ दोहा॥ इमिकहि
शल्य महीपउठि चलोक्रोधसों पूरि। गहि तोसुत लागोकहन
बचन बिनयभरि भूरि॥ मम हियकी सिगरी ब्यथा जानतहौ
क्षितिपाल। ताते सोई करहु जेहि बिनशै ब्यथा बिशाल॥ यथा
यज्ञकरि करिदये भूरि दक्षिणा तात। तिमि रणमख मधि देहु
मोहिं बिजय द्रब्य अवदात॥ शल्य सदृश तुम शत्रु के ताते
शल्य बिख्यात। करि सारथिपन मोहिं अब करो अशल्य बि-
गात॥ सोरठा॥ कर्णनतुमसों श्रेष्ठ उभय सैनमें श्रेष्ठतुम। ताते
इतोयथेष्ठमांगत दीजैआपुसो॥ जयकरी॥ तुमकहँ अधिककृष्ण
सों जानि। जयहित यहमांगत अनुमानि॥ अमरषत्यागिबूझि
ममभाव। मांगतहौंसो देहु सचाव॥ यहसुनि शल्य क्रोधकरि
दूरि। कहत भये अनुकम्पापूरि॥ एवमस्तुनृप तोजयहेत। सा-
रथिपनोमानि हमलेत॥ पैइतनो कहिलेत सचैन। सबथरक-
हब रुचिहि जोबैन॥ यहसुनि भूप कर्णताजिदंड। कहे रुचिहि
सो कहेहु सुछंद॥ नृपतदनन्तर तोसुतभूप। कह्यो शल्य सों
बचन अनूप॥ मार्कण्डेय सुमुनि तपरास। ममपितुसों अनुपम
इतिहास॥ कहे पूर्ब जो सो यहिठौर। हमकहियतु तुम सुनोस-
गौर॥ देवनसों असुरनसोंपूर्ब। भयोतारकामयरणगूर्ब॥ लरि
असुरनको करिसंहार। लहेसुजयसुरराजउदार॥ तारककोसुत
होताराक्ष। बिद्युन्मालीअरुकमलाक्ष॥ अतितपकिये धीर धरि
ध्यान। तबबिधिदेनकहेबरदान॥ तबतेंकहेपरमयशलेहु।हेबिधि
हमहिंअमरकरिदेहु॥ कहतभयेबेधाअवदात। नहिंसब अमर
होतहैतात॥ मांगौऔरचहौबरजौन। यहसुनिबोलेतेबलभौन॥
दोहा॥ सुनोतातहमतीनिपुर बिरचितहैंतेहिजौन। बेधैत कहनि

एकशर हमैं बधै सुरतौन ॥ एवमस्तु कहिकै मुदित बेधागे निज धाम । तेसब मयसों कहतभे रच्यो नगर अभिराम ॥ सोरठा ॥ बिश्वकर्मा गुणग्राम दैतनको मय अतुरबर । रच्यो तीनि पुर आम शतशत योजन बिस्तरित ॥ सुबरणमयो ललाम तारकाक्ष को नगरभो । रजतमयो अभिराम बनो नगर कमलाक्षको ॥ आयसमयो कठोर बिद्युन्मालीको नगर । हीसबके चहुंओर प-रिखा नीर गँभीरयुत ॥ दोहा ॥ ऊरधहो कांचन नगर मधि में राजत रूह । महिपे आयसमय बसे सबथल असुर समूह ॥ कैयक अर्बुद असुरपति कैकैते असुरेश । तीनिलोक पीड़ित किये जीति सुरन सबदेश ॥ तारकाक्षको सुवनभो हरिनामक बलधाम । सो तपकरि बिधिसों लयो बरदायक जयकाम ॥ र-च्यो एकहम बावली तामधि डारैंल्याय । बध्योअस्त्रको असुर सो जिये तुरित गहिचाय ॥ रोला ॥ पाइइमि बरदानकै अतिप्र-बल राक्षस सर्ब । लगे बांधन लोग सिगरे गहे अतिशय गर्ब ॥ क्रोधि सुरगण सहित तेहि पुरजाय लरि सुर राज । हारि करि अनुमान बिधि पहँ गये सहित समाज ॥ बिनय करिकै भयेब्रू-भत वधनको उपचार । कहे बिधि हम पूर्बतिन कहँ दये सुबर सुठार ॥ एकशरसों कठिन तीनोंदुर्ग बेधैजोन । तारकाक्षहिआदि असुरन बधै रणमें तौन ॥ औरसों नहिं सधैगो यहपरम दुस्तर कर्म । बेधिहैं शर एकसों सबदुर्ग शंभुअभर्म ॥ बचन यहसुनि बिधिहि आगे राखि सुरसमुदाय । जाय शिवपहँ भये अस्तुति करत प्रेम बढ़ाय ॥ नमः शंकर शंभुशिव ईशान प्रभुभगवान । प्रजापतिके यज्ञ हन्ता प्रजापति परधान ॥ नमोहर प्रणतार्तिहर त्रय ताप हर बरदेव । नमो रुद्र सुनीलकंठ उदार अनुपमभेव ॥ नमो शूली शंभुत्र्यंबक बिभु पिनाकीनाम । बनस्पतिपति परम परमा नमो दायक काम ॥ नमो पशुपति भूतपति परमेष्ठि गौरी नाथ । नमो औढर ढरन आपद हरण करण सनाथ ॥ सुनो

अस्तुति सुरनकीह्वै भूतनाथ प्रसन्न । कहेसो सबकहो जेहिहित भयेआइ प्रपन्न ॥ बचन सुनि बिधि कहे असुरन दये हमबर-दान । तौन करिसहिं तिन्हैं बधिबे योग कोऊ आन ॥ आपुतिन कहँबधौ करिकै दुसह युद्ध बिनोद । होइकल्मष हीनमहि सब सुमन पावैमोद ॥ कहे शिवनाहिं तिन्हैं मारणचहत लरिहमएक । अर्धबलममपाय ममसँग लरौ सबगहिटेक ॥ कहे सुरबलआप कौ हम सकब नहिं सहिनाथ । आपुसबको अर्धबल लैमारि करहु सनाथ ॥ शम्भु कीन्हे ग्रहण सबको अर्धबल तेहिकाल । कहैगे तेहि दिवसशंकर महादेव बिशाल ॥ सुमनगण करिमंत्र शंभुहिबरणिकैतेहिदेश । बिश्वकर्मासोंकरायो सुरथ रचनाबेश ॥ बिष्णुपावक सोममयभे रचत अनुपमबान । सुरथ भूमि नक्षत्र ईषा अक्ष गिरिसबिधान ॥ चारुकूबर बासुकीऋषि सप्तमण्डल पूर । युवाकृतके युगतुमारुतचक्रभे शशिसूर ॥ मेरुभोध्वजयष्टि संबतशरधनुषअभिराम । देबिसाबित्री प्रत्यचाभइअद्भुतदाम ॥ जलदताड़िता सहपताका पाश्वरक्षकबेद । देबिगायत्री सुरथकी शिखाबन्दअखेद ॥ अक्षबन्धनपास सागरलसोसरस समान । अयस्करभे सुरथके गिरिबिन्ध्यअरु हिमवान ॥ सिंधुगंगाभार-तीमयधुराअतिरमणीय । चारिफलकोरचतभेरथतुल्यअतिकम-नीय ॥ औषधी अरुवृक्षसिगरेभयेघंटाभूरि । रात्रि दिनभे पूर्व परअस्थानपरमापूरि ॥ तुरगमानसरज्जुभेकरकोटकादिकनाग । पलाकाष्ठा मास तिथि भे कील गहि अनुराग ॥ इबिधिबिरचित बिश्वमय रथनिरखि शंकर ईन । सुर ऋषिनसों सुनतअस्तुति होतभे आसीन ॥ राजि शिवतेहि सुरथपै हँसि सुरनकी दिशि हेरि । कहे अबउत्कृष्ट मोसों सूत ल्यावहुघेरि ॥ बचनयहसुनि सुमनबिधि सों कहे चाहिअनन्द । आपहूजेसारथी तौमिटै सब कोदण्ड ॥ यदपिबेधारहे शिवसों अधिक तदपि बिचारि । नहीं मान्योनेकु अनुचित देवकार्य्य निहारि ॥ किये सारथिपनो रथ

चढ़ि हांकि तुरगअखर्ब। करतअस्तुति चलेशिवके संग सुमन ससर्ब॥ दोहा॥ भांति भांतिके बिशदधुनि बाजन भेद समूह। चले बजावत अर्बुदन गन्धर्बनकेयूह॥ संगअसंख्यनगण चले बलकत हँसत सगर्ब। तेहिक्षणकी छबि बरणिको सकै भूप यहि पर्ब॥ चौपाई॥ तेहिक्षण शिवसुखमासों भेखे। त्रिपुर नाशको पण अवरेखे॥ विधिसों कहे चलो तहँ रथले। जहां असुर सबगर्व अकथले॥ तहांलखौमम बिक्रम भारी। क्षणमें बधन असुरपण धारी॥ बेधा सुनत तुरित सब बाजिन। कीन्हें चपल बातगति साजिन॥ चले बाजिबर नभ पीवतसे। पग सूचिन मगपट सीवतसे॥ पुरढिग जाय वृषभभो गरजत। सुनिभो असुरनको हिय लरंजत॥ तेहिक्षणभये त्रिपुरमधि असगुण। प्रभु प्रगटित कीन्हें तामस गुण॥ असुर असंख्यन पुरतेकढ़िकै। लरिबे को सम्मुख भे बढ़िकै॥ तेहि क्षण शंभु क्रोधअति लीन्हें। रूपभ-यंकर प्रगटित कीन्हें॥ अयुतादित्य तेजगहि राजे। महिदिवलों अति सुखमा साजे॥ गहि त्रिशूल घनबर सम गरजे। असुर समूहनके हिय दरजे॥ धुनि सुनि भे सभीत जय बादिक। सुर गण सोमसूर अनलादिक॥ रथह्वैगयो शिथिल धुनि सुनिकै। सोलखि तहां बिष्णु प्रभु गुनिकै॥ शरते निकसि वृषभ वपुशहि कै। सुरथ शीशपै लयेउमाहिकै॥ वृषभ शीश हयपीठि परसपै। धुर लखि मनदे उग्र करसपै॥ वृषके खुरन द्विधा करिदीन्हें। तुरगन कहँ बिनुअस्तन कीन्हें॥ तबते वृषभ द्विधा खुर जोहे। अस्तन हीन तुरग सब सोहे॥ तब महेश त्रयपुरहि निहारे। रिस गहि धनु चढ़ायटंकारे॥ तेहि क्षण प्रभु प्रताप तेग्वैगे। त्रैपुर सिमिटि एकते ह्वैगे॥ एकै भे तीनौ पुर जबहीं। सुरगण गहेमोदअतितबहीं॥ सिद्धमहर्षि जयतिजय कहिकहि। अस्तुति करनलगे मुद गहिगहि॥ प्रभु त्रयलोक्य सारमय शरगहि। धनु सों योजित कीन्हें जयचहि॥ पशुपति अस्त्र घटित करितामय।

कर्षै धनुष सरुष ममतामय ॥ तेजस सरसि सरस शरछाँड़े । सोत्रयपुर मधिप्रविशो चाँड़े ॥ उग्रप्रभाव उग्रता धरिकै । पुर सह असुरन भस्मित करिकै ॥ पश्चिम समुद्रमध्य करिमंजन । प्रगटित भयो सुरन मन रंजन ॥ त्रिपुर सहित असुरन करि भस्मित । लखि निज तेज शम्भुह्वै सस्मित ॥ अब मतिलोक भस्म करु ईना । इमि कहि किये आपुमें लीना ॥ ऋषिगन्धर्ब सुमन मुद लीन्हें । प्रभु स्वयम्भुकी अस्तुति कीन्हें ॥ दोहा ॥ सुनि अस्तुति शिव मुदितह्वै बेधहि सुरन समेत । करिसुबिदा तब आपुगे निज गिरि शुभद निकेत ॥ रोला ॥ कियो जिमि सारत्थ्य शिवको जगतकृत बिधि तत्र । कर्णको सारत्थ्य तेहि बिधि आपु कीजै अत्र ॥ पाइ बिधिहि सहायकृत जिमि रुद्र त्रिपुरहि जारि । किये शक्रहिसुचित कै यक खर्ब दैयतमारि ॥ तथा तुमहिं सहायकृत लहि कर्ण परदल नाशि । करि अकंटकराज्य देहैं मोहिं सरस सुपाशि ॥ कर्ण हममम राज्य जययश भूप तौ आधीन । कृष्ण समसारत्थ्यकरिकै देहुआनँदपीन ॥ असुरगण को नाश करिबे हेत श्री भृगुराम । अस्त्रअनघ अमोघ शिवसों लहे दायककाम ॥ दयेसो सब शस्त्रकर्णहिं रामगुणि निजभक्त । कर्ण धीर धुरीण क्षात्रसुधर्म मय अनुरक्त ॥ सूतकुल मैं जात नहिं यह देवपुत्र महान । कवच कुण्डल सहित प्रगटित भयो बीरअसान ॥ मृगीब्याघ्रहि जनति नहिं नृप लखो करि अनुमान । कर्णकोलघुगुणहु मानिहै कर्ण पुरुषप्रधान ॥ दोहा ॥ तजि अमरषक्षै सारथी देहु मोहिं जयदान । बिधि अरुकृष्ण समान तुम जानत अश्व विधान ॥ जयकरी ॥ पूरुबको इतिहासअनूप । मनदै सुनो मद्रपति भूप ॥ सीखनको सुरशस्त्र ललाम । सेयो शिवहिजाय भृगुराम ॥ तपलखि प्रगटिकृपाके भौन । कहेमांगु बर चाहत जौन ॥ सुनि भृगुपति इमि कहे प्रशस्त । हमैं देहु प्रभु अस्त्र समस्त ॥ सो सुनि शंभुपात्र गुणिताहि । दीन्हें अस्त्र

शस्त्र हितचाहि ॥ तेहि युगमें है असुरअमान । देवन दये खेद मनमान ॥ तबऋषि सुमन शंभु पहँजाय । कहे बराधि देयतसमुदाय ॥ देत हमैं दुखदारुण घोर । तिन्हैं बधो गहि धनुषकठोर ॥ सोसुनि शम्भु कृपाकरि भूरि । कहेरामसों आनँद पूरि ॥ असुरन जाय बधो करियुद्ध । लहो सुरन मधि जययशशुद्ध ॥ सोसुनि लहि आनँद भृगुराम । बन्दि शम्भुके पद अभिराम ॥ जायसुरन सहधनु टंकारि । असुरवृन्दसों लरे प्रचारि ॥ करि शिव शीक्षित अस्त्र प्रयोग । बर्षिशस्त्र नाहिं सहिबे योग ॥ बधे जितक हेअसुरसगर्ब । अस्तुतिकिये सुमनगन्धर्ब ॥ सोईअस्त्र अमोघ समस्त । कर्णहिं दीन्हे रामप्रशस्त ॥ होतकर्ण में किल बिषछाम । तौ नहिं अस्त्रदेत भृगुराम ॥ दोहा ॥ हरणशस्त्र धनु कर्णके करिकर सम दोर्दण्ड । हित हर्षण कर्षण कठिन बिजय नाम कोदण्ड ॥ परम शिष्यभृगुराम को प्राकृत पुरुष न येहु । कर्णहिं लघुजानो न नृप यहमम सम्मत लेहु ॥ अधिकरथीसों सारथी होतसधत तबकाज । श्रेष्ठआप ह्वै सारथी नृप साधो ममराज ॥ लघुतोमर ॥ जब सुयोधन महिपाल । इमिकह्यो बचन बिशाल ॥ नृपशल्यतबलहि चैन । इमिकह्योभावतबैन ॥ दोहा ॥ होबकर्ण के सूत हम पै यहकहत निदान । जो कदाचि पार्थहि बधिहि कर्णबीर बलवान ॥ गदाचक्र गहिकृष्णतब बधिहैंतुम्हैं ससैन । आड़ि सकैजो कृष्णकहँ ऐसो कोऊहैन ॥ चौपाई ॥ शल्य भूप के बचन सुबोधन । सुनि बोलतभो नृपति सुयोधन ॥ कर्ण समान बीरको जगमें । हैभट कर्ण पराक्रम अगमें । धनुर्वेदको पारग जाहिर । सबशास्त्रज्ञ शस्त्र बिद माहिर ॥ जासुधनुष की ज्याधुनि सुनिकै । भगत शत्रु भटबधध्रुव गुनि कै ॥ बिरथ बिधनु करि भीमहिंजोई । मूर्च्छितकियो बीररसु भोई ॥ धनुषकोटि मधि करिअभिमानी । भाष्योदुसह शक्तिसम बानी ॥ तेहिबिधि महिगत नकुलहि करिकै । अहिसम धनुष पात्रमधि धरिकै ॥

बचन पालि जीयत तजि दीन्हों । तिमि सात्यकिहि मारिजय लीन्हों ॥ भीमतनय असुराधिप योधा । ताहि बध्यो जो करि अवरोधा ॥ जाके डररहि शंकित पारथ । सम्मुखहवै न करत पुरुषारथ ॥ धृष्टद्युम्नआदिक पांचालन । जीतत जौन कर्णअरि घालन ॥ तेहि कर्णहिंको जीतन लायक । सहित वरुणयमशक्र सहायक ॥ तेहि प्रकारतुम बिदितपराक्रम । हौअजेय जेतारण आश्रम ॥ तीनि लोकमें ऐसो को है । जो नहिं तौ सम्मुखहवै मोहै ॥ कृष्ण न अधिक बिक्रमी तुमते । नाहिं त्वकसार अधिक दृढ़ द्रुमते ॥ केशव यथा पांडवी दलमें । आपु तथाम्म सेना थलमें ॥ दोहा ॥ करि हैं केशव चक्रगहि जेहि बिधिको रण कर्म । शरधनु गहि ताते अधिक तुम करिहौ गुणि मर्म ॥ दुर्योधनके बचनये सुनि लहि आनँद भूरि । शल्य भूमिपतिं कहत भो गरबि बीररसपूरि ॥ निज पर सुभटनते अधिक अरु प्रभु कृष्णसमान । मोहिं कहतक्षितिपाल तुम निजहित मानिमहान॥ सोरठा ॥ भूपति तौ जयहेत होब कर्णको सारथी । पै इतनोकहि लेत जब जो भाइहि सो कहब ॥ कर्ण सकै सहि तौन मोहिं सारथी तौकरै । यह बिचारि क्षितिरौन कह्यो कर्णसों बूझिकै॥ जयकरी॥ यहसुनि हर्षि कर्णअरुभूप । कहे शल्यसों बचन अनूप ॥ नृप जो रुचिहि कहहुसो बैन । अबह्वै सूत देहुमोहिं चैन ॥ यहसुनि शल्य भूमि भरतार । सारथिपनो कियो स्वीकार ॥ तब दुर्योधन नृप अति मोदि । कर्णबीरसों कहे बिनोदि ॥ शल्यहि पाय सूत अवदात । बधिमम अरिन अऋण होतात ॥ कर्णकहे नहिं शल्यनरेश । सहरष कहत बदन करिबेश ॥ ताते फेरि कहो समुझाय । जाते लसै सुरथपै जाय ॥ यह सुनिकै दुर्योधन राय । शल्य भूपसों कहे बुझाय ॥ बेगि सहाय करो क्षितिपाल । सूतजलरो चहत यहिकाल ॥ बधि अगणित परदल के बीर । पार्थहि बधनचहत रणधीर ॥ ताते निज जय हित करजोरि ।

याचत तुम्हैं बहोरि बहोरि ॥ पार्थहि रक्षतकृष्ण यथैव । तुम पालेहु सूतजहि तथैव ॥ यहसुनि शल्य नृपहि भरि अंक । कहतभयो कुलकुमुद सशंक ॥ गर्व त्यागिहैं कुरुकुलराज । सूत होत हमतौ हितकाज ॥ शल्य भूपके सुनि ये बैन । बोलो कर्ण बीर बलऐन ॥ बिधि अरु कृष्णसदृश तुमदक्ष । रक्षण करनहार ममपक्ष ॥ शल्यउवाच ॥ दोहा ॥ आपनि अस्तुति कथन अरु परनिन्दाको जाप । निजमुखकरत न सतपुरुष कियेहोत परिताप ॥ इतै प्रयोजन वश कछू कहियतु निज ब्यवसाय । मातलि समहमशक्रको करिबेयोग सहाय ॥ बिना प्रमाद प्रयोग अरुबिद्याज्ञान बिचार । करिकरिसन्नथर करबहम बिधिवत रथ संचार ॥ शोचत्यागि अब पार्थसों करो युद्धब्यापार । क्रुद्धउद्द बरभंजनबधि होहु कीर्त्ति कर्त्तार ॥ दुर्योधनउवाच ॥ चोपाई ॥ हेहे मित्र कर्ण धनुधारी । शल्य भूपभो तुव रथचारी ॥ अधिक कृष्ण ते ये रथचालक । अश्व हृदय ज्ञाता हित पालक ॥ शल्यहि तुम्हहिं एकथल देखी । ह्वैहै बिकल शत्रु भय भेखी ॥ लेहु बिजय अब संशय नाहीं । पार्थहि जीति लसौ महिमाहीं ॥ इबिधि कर्णसों कहि हितबानी । कह्योशल्यसों नृपअभिमानी ॥ कर्णबीरको तुरगसमाजा । तीक्षणकरौ युद्ध में राजा ॥ कर्ण आपकहँ पाय सहायक । भयो पारथहि जीतन लायक ॥ यहसुनि कह्योशल्य अनुमानी । सांच कहेतुम भूपतिज्ञानी ॥ सोसुनि कर्णमोद अति लीन्हों । सुमना सूतहि शासनदीन्हों ॥ ममरथ कल्पितकराउतायल । नाधो प्रबलबाजि हति पायल ॥ आयुधभेद धरो सबबिधिके । जे अमोघ रणकारज सिधिके ॥ सोसुनि सुरथ साजि अनुगामी । कीन्हों अरज सिद्धरथ स्वामी ॥ जाहि ब्रह्मबिद बिप्र पुरोहित । मंत्रितकरि कीन्हें अति सोहित । तेहिक्षण कर्णदानदै सानँद । सुभटन सों सुबचन कहि मानद ॥ रथजयत्रकहँ करि सुप्रदक्षिण । करि नियमित निज रक्षक पक्षिण ॥ सादर कह्यो

शल्यसों हँसिकै । चढ़ो सुरथपै हरिसम लसिकै ॥ दोहा ॥ यहसुनि सानँद शल्यनृप रघुबर-रामहिं ध्याय । हय शीक्षण ढिग सुरथपै लसो शूरसमजाय ॥ चढ़ो सुरथपै कर्ण तब ध्यायइष्ट गुरुदेव। घनेबजे बाजन तहां गहे युद्ध जयभेव ॥ भुजगप्रयात ॥ तहांतौत-नय भूप आनंदपूरे । दये कर्णके कर्ण ये बर्णरूरे ॥ किये भीष्म औ द्रोणजो कर्मनाहीं । करोआजु सो कर्म यायुद्ध माहीं ॥ गहो श्रेष्ठको ज्येष्ठजो पांचमोहे । बधौचारिको है इहै हेतमोहे ॥ बधो धृष्टद्युम्नादिजे युद्धकर्मा । बधौ सात्यकैजो महाभर्म भर्मा ॥ सोरठा ॥ इमिकहि तौ सुतभूप चढ़ो सुरथपै नृपनसह । द्विजगण मंगल रूप पठनलगे स्वस्त्ययन शुभ ॥ तेहिक्षण शल्यमहीप बिहँसि कर्णसों कहतभो । अरेसूत कुलदीप निज बिक्रमदरशाउअब ॥ दोहा ॥ कर्ण धनुर्द्धर कर्षिधनु बर्षिबज्रसम बान । भीमपार्थआ-दिकन पहँ करु बिक्रम मनमान ॥ धर्मराज कहँ पकरिले बधु पार्थहि सहसैन । देअपूर्व जय कुरुपतिहि हो प्रसिद्धजग जैन ॥ सोरठा ॥ यहसुनि कर्ण सगर्ब शल्य भूपसों कहतभो । बेगिहांकि हयसर्ब चलो पाण्डवी सैनपहँ ॥ चौपाई ॥ पार्थहि आदि सुभट सबउतके । जेबरणे अति बिक्रम युतके ॥ तेसिगरे मम बिक्रम जोहें । अबतेयुद्ध तजें करिसोहें ॥ आजुप्रलय परदलमें पारत। महारथिन बधिमहिमधि डारत॥लखोमोहिं मारुत समलागत। परदललखो जलदसम भागत॥उतअति प्रबलसुभटअसकोहे। जो मम निकट आइ नहिंमोहे ॥ यहसुनि शल्य नयनकरि राते। बोलत भये बचन अतिताते ॥ सूतसुवननहिं निजबल तोलत। कत पांडवन निदरि इमि बोलत ॥ जौलगि सुनत न दायकदुख की । श्रुतिकटु धुनिगाण्डीव धनुखकी ॥ तौलगि जिमिभावैतिमि बोलो॥निजबिक्रमकीपदवी खोलो॥जौलगि भीमहि गदाप्रहारत। लखतन मैंलग यूथसँहारत ॥ सहदेव नकुल युधिष्ठिर राजहि । जौलगि करन शरनकेकाजहि ॥ लखतनतौलगि होंइमि भाषत।

लखेनबनहि धीरताराखत ॥ धृष्टद्युम्न सात्यकिहि निरेखी। इबिधि न कहतबानिहि अवरेखी ॥ ऐसे बचन शल्यके सुनिकै। सूतज रह्यो अश्रुति सम गुनिकै ॥ कह्यो पालिसारथि पनभालि- ये। सादर अरिदल के ढिग चलिये ॥ सोसुनि शल्य हांकिरथ धीरे। चलो महाअमरषं भरि हीरे ॥ धनुटङ्कारत नृपतौदलकै। चले सदल बढ़िजे अतिबलकै ॥ दुन्दुभिआदि बाद्यतेहिक्षनमें। बजेअसंख्यन सैनसदनमें ॥ दोहा ॥ होतभयो दिगदाह अरु भे अति उल्कापात। महि कम्पादिक अपशकुन भेकरता उतपात॥ चले सैनके बामहै मृगपक्षी समुदाय। यहिप्रकार प्रगटित भये बहु अशकुन दुखदाय ॥ सोरठा ॥ तेहि क्षण कर्ण सटेक कहत भयो नृप शल्यसों। मोहिंन संशय नेक युद्धोत्सुक सुरपतिहु लखि ॥ चौपाई ॥ बिष्णु महेंद्रसदृश रणचारी। बिदितपिना- की सम धनुधारी ॥ भीषम द्रोण तिन्हैं उनमारे। तदपि न हम कछु संशय भारे ॥ आजु पांडवन बधिजय लैहौं। कै जहँ द्रोण गयोतहँ जैहौं ॥ दुर्योधनको कारज करिबो। मोहिं उचित कै रणमांधि मरिबो ॥ आजुमहाधनु बिधि प्रगटितकै। दुसहश- रनके जाल घटित कै ॥ बधिहौं पार्थहि सहित सहाई। बचिहि न शक्रहुके ढिगजाई ॥ यहसुनि कह्योसत्य क्षिति नायक। झूठ कहत नहिं तुमयहि लायक ॥ मौन रहो मतियहि बिधिभाषौ। मति रबि शशिहिगहन अभिलाषौ ॥ जब कुरुपतिहि गन्ध्रबन लीन्ह्यो। तहांनतुम सबबिक्रम कीन्ह्यो ॥ गये बिराटनगरमें जा- दिन। पारथ कियो पराक्रम तादिन ॥ सोभुलाय अबयहिबिधि भाखत। मनकरि सुरतरु के फलचाखत ॥ बासुदेवसों रक्षितपा- रथ। कोतेहिजीतिसकै गुणिस्वारथ ॥ यहनरबर पारथभटआ- रज। कहँ तुम पुरुषाधम नरजारज ॥ जौन भागिजैहौ वहिक्षन में। तौतौ बध निरमित यहि दिनमें ॥ ऐसेबचन शल्यके सुनिकै। उत्तर दयोकर्ण इमि गुनिकै॥कपटत्यागि सारथिपन कीजो। मम

करंतव बिक्रम लखिलीजो॥ अब रहिमौन चपल करि घोरे।सा-
दरचलो पार्थके घेरे॥ दोहा ॥ शल्य भूपसों भाषिइमि सुभटन
की दिशिहेरि। कर्णबीर सगरब ब्रचनकहत भयोइमिटेरि॥ नृप
के हितरत सुभट जो पार्थहिदेइदेखाय। ताहि शकटभरिदेउँगो
रत्नमोद सरसाय॥ कांस्यदोहिनीधेनुशत अयुत तुरगशतग्राम।
षटशत देहौं द्विरदबर शत इस्त्री छबिधाम॥ दासी दासनकेनिकर
रथ भूषण समुदाय। देहौं ताकहँ आजुजो पार्थहिदेइदेखाय॥
सोरठा॥ पार्थ केशवहि मारिहरिहरितिनको सोजसब। देहौंताहि
बिचारि पार्थहि देइ देखाइजो॥ सूतज के ये बैन सुनि कौरव
मोदित भये। ह्वै सगर्ब सहसैन बजवाये दुंदुभि घने॥ जयक ॥
सुनि सूतजके ऐसेबैन। बोलोशल्यभूप बलऐन॥ सूतज धनुष
रचत जेहि काज। आपुहिह्वैहै सो तुव राज॥ बालबुद्धि गहि
खरचतदाम। बिनुधन दये सधी यहकाम॥ तौबध कर्णजानि
निजस्वार्थ। आपुहि तौढिग आइहि पार्थ॥ कृष्णपार्थकहँ बधन
सहर्ष। जोतुम कहतगहे उत्कर्ष॥ अबलों सुन्योन ऐसोचार।
सिंहहि बधै द्विरद मतवार॥ बांधि कंठ मे शिला अक्षुद्र।
चाहत पैरन क्षीरसमुद्र॥ गिरिते गिरन हेत उमदात। नाहिं
पारथके सम्मुखजात॥ गनेगने सुभटन लैसंग। करोपार्थ
सों भिरि रणरंग॥ जो चाहौ निज जीवनलाहु। तौमतिज्वलत
ज्वलनमधि जाहु॥ नृपति सुयोधनको हितजानि। यहतुमसों
कहियतु अनुमानि॥ ऐसे दुसह बचन सुनि बीर। बोलो कर्ण
बिदितरणधीर॥ निजभुजदण्डनके बलशुद्ध। चाहतकियो पार्थ
सों युद्ध॥ मित्रसही परशत्रु समान। तुमउपजावत भीतिमहान॥
आवै बज्रपाणि रणहेत। तऊन रणते मोरबचेत॥ सुनि ऐसे
सूतजके बैन। बोले शल्य अरुण करिनैन॥ कुपित ब्यालके
मुखढिग पानि। चाहतकियो मरण बिधिठानि॥ दोहा ॥ दिब्य
धनुषसो कढ़तलखि आवतबज्रसमान। पारथके शरनिरखि नाहिं

रहिहि तोहिं धनु ज्ञान ॥ शिशु जननीके गोद रहि शशिहि पसारत पानि । तिमि रथ पै रहि पारथहि बधन चहत प्रण ठानि ॥ पार्त्थ सिंह को जूठ धन आमिष पाय मोटाय । चहत पार्थ सों लरन अब जम्बुक सम उमदाय ॥ भयो कालबश उरग सम पार्थ गरुड़ पहँ जान । चहत पार्थअहि क्षुधितसों दर्दुर सम लपटान ॥ जेहिविधि सेवित शशनसों बनमें बड़ो शृगाल । आपुहि जानत सिंह बिनु लखे सिंह बिकराल ॥ तिमि तुम सेवित भटनसों आपुहि धनुधरबीर । जानत जौलगि सिंह सम पार्थहि लहत नतीर ॥ सोरठा ॥ जबपारथ ढिगआय बर्षिहि शायक बज्रसम । तबतुम धीर भुलाय रण तजिहौ कापुरुषसम ॥ अखुते यथा बिडाल अरु शृगालते सिंह जिमि । तिमितुम ते सबकाल अधिक पराक्रम पार्थभट ॥ चौपाई ॥ शल्य भूपकीसुनि यह बानी । बोलतभयो कर्ण अभिमानी ॥ जानत गुणी सुगुण गुणियनके । नहिंजानत जेनिर्गुण मनके ॥ तूगुणहीन कहा गुण जानै । सबहीको निर्गुण करिमानै ॥ अर्जुनको बिक्रमधनु शायक । अरु केशवके गुणजेहि लायक ॥ सो सब हम जानतहैं जेतो । क्षितिपति तुमनहिं जानत तेतो ॥ अरु अमोघनिज बिक्रम जानत । ममशायक गिरिभेदन ठानत ॥ तिनके बलकेशव पारथसों । लरन चहत करि रति स्वारथसों ॥ भीरुनके भयदायक दोऊ । रणमें मोहिं हरषप्रद ओऊ ॥ मूढ़ सभीत न युद्ध बिशारद । तुमताते सुहितहि भयभारद ॥ अपटु कुदेशजे शठअबिचारी । अनुक्षण उन्हें कहत भटभारी ॥ करि तिनको बधतोबध करिहौं । मद्रदेशमें प्रलयपसरिहौं ॥ हितह्वैअरिसम अरिहि सराहत । अजयहमारतासुजयचाहत ॥ आवैंसहस कृष्णशतपारथ । तौहम एक बधबगुणि स्वारथ ॥ कैवे हमैं मारि जय लैहैं । धर्म भूपतिहि आनँददैहैं ॥ उभै प्रकार क्षत्रियहिनीको । भीतभस्त जो कादर जीको ॥ दोहा ॥ सबदेशन में नीचअति मद्रदेश बि-

ख्यात । मित्रद्रोह करिकै जहां पुरुष न नेकु लजात ॥ अनाचार को चारजहँ नेकु न बरण बिचार । नात गोतको भेदकछु गुणत न करत बिहार ॥ अति प्रमत्त जेहि देशकी युवतीकरि मधुपान । बसन त्यागि निरतहिं हँसहिं करहिं सुरति सुखगान ॥ सदारहत मैथुन चहत तिन युवतिनके पुत्र । किमि मित्रनकोहित गहैंकरैं धर्मसों सुत्र ॥ पापकर्म जितनोकरत तितनो तहँनरनारि । पृथक् पृथक् अवगुण सकल कबलोंकहैं बिचारि ॥ सोरठा । जेहि देशिनको साथ बरजत हैं सब शास्त्र बिद । तेहि कुदेशको नाथ कृतनहिं जल्पै भांतियहि ॥ जो यहि विधिकेबैन फेरि कहैगो मद्रपति । तौ हनि गदा सचैन तोशीशहि चूरणकरौं ॥ इमिकहि कर्ण सक्रुद्ध शल्य भूप सों फिरि कह्यो । कपट त्यागि ह्वै शुद्ध चलो पार्थपहँ भीतितजि ॥ रोला ॥ सुनोनृप सुनिसूत सुतके बचन ऐसे ग्राम । कहत भो फिरि बचन ऐसे शल्य नृप बलधाम ॥ यज्ञकरता धर्मरत नृपबंशमें हमजात । मद्यपेयी मत्तसम तुम कहत ऐसीबात ॥ बिसम सम अरु बलाबल अरु सगुण कुसगुण नेत । सुनो जानत भलेहम इमि कहतहैं तेहिहेत ॥ पुरुष को है धर्म रक्षण मित्र को सबयाम । बूझिसोतो बचनहितहम कहे बचन ललाम ॥ नींबिसम ममबचन तुमकहँ लगोकरकस तात । लगो नाहिं गुरु सदृशप्रिय तेहिहेतु इमिबतरात ॥ सुनो तातै काकको अरुहंसको इतिहास । कहत अबहम सुनोहै जो वृद्धजनके पास ॥ सिंधुकेतट भूप धर्म प्रधानको नृपग्राम । बसत होतहैं बैश्यएक धनाढ्य अति अभिराम ॥ रहोतासु कुमारसो करिप्रेमपाल्यो काग । नामतासु उछिष्ट भृत सोरहोपूरितभाग ॥ दैवबशयक दिवसमें चक्रांग आदिक हंस । चलेताके निकट ह्वै है विदित जासुप्रशंस ॥ देखिहंसन कागसों इमिकह्यो बैश्य सचेत । त्याज्य सबपक्षीन में है कागसो केहिहेत ॥ सत्यहो यह बचनयद्यपि तदपिकाग रिसाय । मूर्खतासों कहतभो इमिनांघि

निज ब्यवसाय ॥ परम गुरुता उड़ब है पक्षीनको नहिंआन ।
उड़ैंभेरे संगजो ये गहैं कछुअभिमान ॥ बचन यहसुनि कहत
भो चक्रांगहंस उदार । उड़ोगे ममसंग किमि तुम कहोसो उप-
चार ॥ खायजूठोपुष्टगर्बित कागसुनि ये बैन । कह्यो जानत
उड़नकी शतरीति हमबलऐन ॥ उड्डीन अरु अवडीन अरुप्र-
ड्डीन अरु नीडीन । संडीन तिर्य्यग्डीन अरु बीडीन अरु परि
डीन ॥ पराडीन सुडीन अरु अतिडीन अरुश्वाडीन । डीनअरु
संडीनडनिक महाडीन अडीन ॥ इन्हें आदिप्रकार शतहैं उड़न
केतेसर्ब । भलीविधि हम सिखे ताते गहत इतनोगर्ब ॥ जौन
गतिकीं कियेहोहु अभ्यास तुमगति तौन । गहन करिकै उड़ो
ममसँग सकोजोकरिगौन ॥ कागके ये बचन सुनिकै कह्यो हंस
सुजान । एकगति सब विहँगकी तुमकाग शतगतिमान ॥ एक
बिधिसों उड़बहम तुम यथारुचित सुबंस । बांधियहिबिधि ब-
हस लागे उड़न बायसहंस ॥ बैठिवृक्षन उड़िततक्षण चलो
काग सडौर । उड़त बोलत फिरत इतउत गहे गुरुता गौर ॥
देखिऐसी तासुगतिभे मुदित सिगरे काग । हंससिगरेलगेविहँ-
सन जानि तासु अभाग ॥ इबिधि एक मुहूर्त उड़िभो कहत हैं-
सहिटेरि । प्रगट करिये कला निज ममकला इतनी हेरि ॥ हंस
सुनि हँसि चलो पश्चिमओर सागरयत्र । चलोताके संगबायस
चपलकीन्हेपत्र ॥ उदधिपैकछुदूरिलों बढ़िजायथाकोकाग । वृक्ष
टापू लखे बिनुतजि धीर डरपन लाग ॥ शिथिल ह्वैगे पक्ष तब
गिरिपरो सागरमाह । देखिसोहँसिखरो ह्वैभो कहत हंसजनाह ॥
पालि व्रत करि शीघ्र मज्जन चलो बायस कन्त । एकशतयोजन
इहांते उदधि कोहै अन्त ॥ कहो शतमें उड़नकी यह चारुविधि
है कौन । बारिमें परतुण्ड बोरत कढ़तहो रहिमौन ॥ बचन यह
सुनि नीचबायस कह्यो आरतबैन । देखि निजदिशि क्षमाकरि
अब मोहिं दीजे चैन ॥ कुमतिबश हमकह्यो कुत्सित बचन सो

करिदूरि। मोहिं जलतेकरौबाहर दया हियमैं पूरि॥ सुनो सूतज कागके सुनिबचन हंस अमन्द। पकरि पगसों ल्याय थलपै दयो डारि स्वछन्द॥ बैश्यकेघर खायजूठो पुष्टह्वै जिमिकाग। हंस सों करि बहस प्रगटित कियो अपनो दाग॥ तथा तुम धृतराष्ट्र के घर खाइ बाढ़ि मोटाय। पार्थसों लरि कागके सम चहत होन हँसाय॥ द्रोण कृपतुम भीष्म आदिक भटन जीत्यो पार्थ। एकतुम तेहि जीति चाहत कियो नृपको स्वार्थ॥ दोहा॥ सूर्य्य चन्द्र सम बिदितहैं पारथ कृष्ण अमान। तिनकी सरबरि जनि करो तुम खद्योत समान॥ बर प्रभाव हरि पार्थको पूर्व कह्यो बलराम। सो भुलाय कत मोहबश लरन चहत जयकाम॥ सोरठा॥ ऐसे बचन अमन्द सुनेशल्य क्षितिपालके। बोलेबचन स्वछन्द करणशुद्ध मतिक्रुद्धतजि॥ जयकरी॥ कृष्णपार्थके सुगुण अमन्द। हमजानत नहिं आनतदन्द॥ पैममहियेएक यहदाह। सोहमकहत सुनोकरिचाह॥ पूरबहम भृगुपति पहँजाय। धनु बिधि सीख्यो जाति छपाय॥ मम ऊरूपै धरि शिरआम। एक दिवस सोये भृगुराम॥ तहँ मम अहित हेत मति बक्र। आयो कीट रूप धरि शक्र॥ अधसों ममऊरू अभिराम। बेधनलगो कुटिल तेहि याम॥ गुरु सोवत हैं गुणि गहि टेक। हम नहिं टार्योऊरूनेक॥ अधसों बेधिउरू सुनुभूप। ऊपर कढ़ो भया-नक रूप॥ तासों कढ़ी रुधिरकीधार। तबजागे भृगुराम उदा-र॥ लखि शोणित बूझे सोभेद। हम बतायदीन्हों तजिखेद॥ गुणि ममधीर कहे बलभौन। नहिंतू बिप्र सत्यकहु कौन॥ यह सुनि शाप भीति उरल्याय। हमक्षत्री इमिदयो बताय॥ सो सुनि कोपि तपस्वी बिप्र। भूपति शापदयो मोहिं क्षिप्र॥ मोसों लहे अस्त्रतुम जौन। कार्य्य कालमें सिगरे तौन॥ रहिहैं नहीं उपस्थित तोहि। प्रबल शत्रु जबऐहै कोहि॥ यहसुनि मोहिं न जानेहु हीन। अगणित अस्त्र लहे फिरि पीन॥ दोहा॥ तिन

अस्त्रनकहँ बार्षि पर दलमधि प्रलय पसारि। प्रबल धनुर्द्धर पार्थ तेहि देहौं महिपे डारि॥ सुर मानुष असुरनहुको जीतन हार अडोल। पारथ तेहि शरबरनसों करिहौं आजु अबोल॥ सत्य कहत तुम जगतको जेता पार्थ सटेक। ताहि जीतिबे योग म्वहिं रच्यो बिधाता एक॥ सोरठा॥ तू अधीर मतिमन्द मित्र द्रोहकर क्षुद्रनर। कियो चहतहै बन्द ममबिक्रम ये बचन कहि॥ चौपाई॥ इन्द्र कुबेर बरुण यमराजा। जोचढ़ि आवहिं सहित समाजा॥ तबहुं न कछू भीति मोमनमें। कहा पार्थ ममसम्मुख रनमें॥ मोहिं न लगत भीति जेहिकारन। सो सुनु शल्य भूप भयभारन॥ हमहैं बाण चलावत वनमें। लगो बाण गोसुतके तनमें॥ होत धेनुसुतको बधदेखी। दीन्हों शाप बिप्रअतितेखी॥ मचो एकदिन युद्ध ठिहारे। पतित होहिंगे चक्र तिहारे॥ सो सुनि हम अतिशय भयलीन्हे। षटशत वृषभसहस गोदीन्हे॥ चौदहसहस धेनुदै आतुर। दासी दास दये शतचातुर॥ फिरि सबगेह देन तेहि लागे। तब मुनिराज दयासों पागे॥कहेउकहेहु मतिमिथ्या कबहूं। परमधर्म यहअबहूंतबहूं॥हिंसापातक तोहिं न ह्वैहै। लहि उतकृष्ण सुगतिमुदग्वैहै॥ इमि कहिगये सुमुनि छबिछाये। शोचत्यागि हमनिज घरआये॥ हमहैं शुद्धहृदय यह ताते। तुमसोंकह्यो सुहितके नाते॥ काममम निकट पार्थ धनु-धारी। बधिहौं बन्धुनसहित प्रचारी॥ शक्रहि मैंन गनत कछु मनमें। तेहिभयदेत पार्थसों रनमें॥ जो इमि कहत और भट कोऊ। अबलों जात कालपुरसोऊ॥ नृपको मित्रसखा ममआ-रज। अबलों किये मित्रके कारज॥ कहिबेहेत बचनकटुचीन्हें। प्रथमहिं तुम निबन्ध करिलीन्हें॥ ताते बचोजात सुनि लीजे। अब यहिबिधि मति सरबर कीजे॥ निज भुजबल हम पार्थहि जीतब। नहिं तुम बिनु बिक्रम सों रीतब॥ दोहा॥ सूतजके ये बचनसुनि कह्यो शल्य क्षितिनाथ। तरुणि न सुख पावति

परशि निज उरोज निजहाथ ॥ निजमुख निज बिक्रमकहे तिमि न मिलहि यशतोहिं। कत जल्पत बिनुकाज इमि निज अजान गनिमोहिं ॥ सोरठा ॥ शल्यभूपके बैन सुनिसूतज इमि कहतभो। सुनुभूपति अगऐन समाचार निजदेशको ॥ इमि कहि कर्ण सक्रुद्ध पृथक् पृथक् सब कहतभो । जो सुनिरहो अशुद्ध रहनि मद्रदेशीनकी ॥ रोला ॥ पूर्बनृप धृतराष्ट्रके ढिगआय ब्राह्मण एक। कह्यो जो तहँ सुने हम सो कहत सहित विवेक ॥ परम पण्डित वृद्धब्राह्मण कह्यो सुनियेभूप। त्याज्य कुगति कुदेशजगमें मद्रकुत्सित रूप ॥ सुरसरित सरस्वती यमुना परमपावन जौन। तीर्थजो कुरुक्षेत्र तासों दूरअतिअथभौन ॥ पांचनद अरु सिंधु छठवों बसत तिनकेबीच। अशुधि अनयी अरु अधर्मी बसत जहँ जननीच ॥ बटगोबर्द्धन नाम चत्वर जहँ सुभद्रक नाम। राजकुलके द्वारपै हमसुनत नितिसों आम ॥ नगर शाकल अजल सरिता मद्रये अपवित्र। वृत्तिइनकी परम निन्दित रहनि गहनि विचित्र ॥ मद्रदेशी अपटु आसव पियत गोपलखात। शाकलहसुन पाकखोजत काकसम हरषात ॥ हँसति नृत्यति जहां युवती मत्तकरि मधुपान। ऊंटखरके सरिस स्वरसों करति सबक्षणगान ॥ सदा मैथुनमें रहतरत नहींनेकु अघात। टेरिपुरुषहिं मिलत तरुणी कियेपुलकितगात ॥ आत्म अरु परपुरुषको जहँनहीं बर्ण बिचार। देतगारी परस्पर करि कलह हास बिहार ॥ बकत ऐसोरहत युवती पुरुषजहँ सबयाम। आत्मपरतिय पुरुषको जुबिचार करत निकाम ॥ बाराह कुक्कुट मांस गोपल रसभ मांसनखात। मद्यपान न करतताको जन्म निष्फलजात ॥ भाषिइमि द्विजकह्यो नृपसों पञ्चनदके नाम ॥ चन्द्रभागाअरु शतद्रू अरु बिपासा आम॥ इरावततबहेंबितस्ता सिंध छठवोंतासु। मध्यमें ते बसतपूरब पापसंचय जासु ॥ ग्रहण करत न दत्त तिनको पितर ब्राह्मण देव। जानिकुत्सित कर्मरत

अरु महाकुत्सित भेव॥ भक्ष्य और अभक्ष्य गम्यागम्यको जेहि देश। नहींनेकुबिचार जहँतहँ धर्मकोकहँलेश॥ दोहा॥बश प्रस्थ-ल गान्धार अरुमद्र और आरट्ट। येसबकुत्सितदेश अतिकुत्सित जनको ठट्ट॥ हैं मनुष्यको म्लेच्छमल देशनको मलमद्र। मल सिगरे याचकनको क्षात्र पुरोहित भद्र॥ यहि प्रकार तोदेशकी कहि बार्त्ता मतिमान। गयो बिप्रनिज आशरम सो हम सुने बिधान॥ सोरठा॥ कसन कहौ अस बैन तू पतिह्वै तेहिदेशको। बधब तोहिं सह सैन जोऐसो फिरि कहौगे॥ महिखरी॥ सुनिसूत सुतके वचन ऐसेशल्यभूपति इमिकहे। परदोष निरखत रहत जेनरहोत सब दूषण नहे॥ द्विज वैश्य क्षत्री शूद्रकहँ नहिंहोत मूरख पटसुनो। अरु धर्म पातक कर्म कहँ नहिं होत निजमन मधिगुनो॥ तुम अधिप अंग कुदेशके तहँ आतुरनत्यागतसुने। इमि दोष अरुगुण होत सबमें पोतमणिगण सबबुने॥ ममदेश को कथिदोषमति तुमपारथहि जीतनचहो। जिमि रहे इतउत लरत तेहि बिधि लरनको पणफिरिगहो॥ दोहा॥ इतनेमें नृपसु-वन तुव दुर्योधन क्षितिपाल। उभयभटन कीन्हों क्षमित कहि कहि बचन रसाल॥ नहिं उत्तर दीन्हों करण शल्य न बोल्यो फेरि। हँसिसूतज इमि कहतभो चलोपार्थ पहँहेरि॥

महाभारतदर्पणेकर्णपर्वणिद्वि० दिनयुद्धेकर्णशल्यसंबादोनामचतुर्थोध्यायः

संजयउवाच॥ दोहा॥ इमि सम्भाषण करि तहां कर्णशल्य रणधीर। सदलशत्रुदलपहँ चलेगहेओज गम्भीर॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ केहि प्रकारको व्यूहरचि चलोपार्थ भटचण्ड। सदलपार्थ किमि बढ़ि भिरो करषि कठिन कोदण्ड॥ यहसुनिकै संजयकह्यो सुनोयथा रचिब्यूह। उभय सैनपति बढ़िभिरे बर्षत शस्त्र समूह॥ कृप कृतवरमा शाल्व तब अरु मागध नृपदक्ष। हँसपक्ष ममसैनके रक्षक दक्षिण पक्ष॥ रहे तासु प्रतिपक्षनृप शकुनि उलूकससैन। बजवावत दुन्दुभिघने बिदितशत्रु दलजैन॥ पार्बतीय गान्धार

अरु संसप्तकगणसर्ब । चौबिस सहसरथीरहे बामपक्ष गहिगर्ब ॥
सक कांबोज ससान अरु यवनसमूह समस्त । रहे तासुप्रतिपक्ष
करि जीतिलेनको कस्त ॥ मध्य सैनमुखमें रहोकर्णबीर सैनेश ।
रहे ताहि रक्षत सबै तौसुत सदल सुबेश ॥ दुश्शासन चढ़िद्वि-
रदपहँ सुभट सहित सहचैन । पृष्ठरक्ष मम सैनकोरहो बीरबल
ऐन॥रहोताहि रक्षतसदल तौसुतभूपबिशाल । तिमिअश्वत्थामा
प्रभृतरहे सबै दलपाल ॥ इबिधि ब्यूहरचि सूतजहि ब्यूहबदन
में देखि । धर्म भूमिपति पार्थसों कहतभयो अवरेखि ॥ ब्यूह
बिरचि आवत करण तासों सहित विधान । लरौ सुजय हित
यतनसों गहिरणरीति महान ॥ धर्मभूपके बचनसुनि पार्थकह्यो
करजोरि । अनुशासन जिमिदेहु तिमि युद्धकरैं शरजोरि ॥ कहे
धर्म तुम कर्णसों लरो करषि कोदंड । नृपदुर्योधनसों भिरै भीम
बर्षिशरचंड ॥ नकुल लरैंवृषसेनसों सौबलसों सहदेव । दुश्शा-
सनसों भिरिलरैं शतानीक बरभेव ॥ कृतबर्मासों भिरिलरैंसा-
त्यकि अनुपमबीर । अश्वत्थामासों भिरैं पांडच्यभूपरणधीर ॥
सोरठा ॥ सहित शिखंडी बीर सुवन द्रौपदीके सबै । शायकदाय-
कपीर बर्षि सोदरनसों लरैं ॥ कृपाचार्यसों जूटिकरषि शरासन
हमलरब । धृष्टद्युम्न जय ऊटि दलरक्षत सबसोंलरि हि ॥दोहा ॥
इबिधिरचना ब्यूहकी सुनि कह्यो वृद्ध महीप । कहो फिरि किमि
लरेबढ़िबढ़ि उभयनृप कुलदीप ॥ कहेसंजय सुनो भूपतिसाबिधि
ब्यूह बनाय । सूतसुत पहँ चलोपारथ दुन्दुभी बजवाय ॥ घने
बाजन बजन लागे मढ़ी धुनि अतिघोर । लगे सनसन ठनन
घनघन चलन अस्त्र अथोर ॥ देखि आवनि पार्थकी घनजलद
सम भयदानि । कर्णसों इमि कहतभो नृपमद्रपति अनुमानि ॥
सूत सुत जेहि पार्थकहँ तुमरहे हेरततौन । चलो आवत काल
समअब करो करतबजौन ॥ होतयहिक्षण अपशकुन बहुआजु
पारथ बीर । बधिहै इतके बहुत हयगज सुभट नृप रण धीर ॥

दोहा॥ लखो होत भूकम्प अरु सम्मुख डोलत पौन। कूजत हैं क्रव्याद मृग करत बामह्वै गौन॥ केतु भयानक रूपह्वै तिष्ठत रबि ढिगजाय। काग गृध्र चहुंदिशि जुरे बोलत सम्मुख आय॥ ध्वज कम्पत बिपरीतिगति तुरगनके चषबारि। होत भयद उलका पतन अरुण भये दिशिचारि॥ अवशि असंख्यन भूमिपति मरि लसिहैं भूबीच। लसत भटनको शीशचढ़ि कालसंगलै मीच॥ चौपाई॥ शंख भेरि आदिक बहु बाजन। की धुनि आवतहै भयछाजन॥ बाणशब्द अरु धनु टंकारनि। गज गरजनि अतिशयभय भारनि॥ हय हींसनि रथनेमि भयानक। औभट टेरनि पूर पयानक॥ दोहा॥ सुनो कर्ण अति घोरधुनि पूरत गगन समस्त। आवत अर्जुन बनदतोहिं करन सूर समअस्त॥ चौपाई॥ दामिनिसरिस ध्वजाछबि छाजत। छत्रबलाक हंससम राजत॥ देखुकर्ण अर्जुन धनुधारी। आवतशक्रसरिस रण चारी॥ पाञ्चालन के बिशद पताका। चहुंदिशि सोहत मनुशशिराका॥ लखु अर्जुनके ध्वज पहँ सोहत। बानर जाहि देखि मनमोहत॥ देखो चक्र गदाधर स्वामी। करत सूतपन केशव नामी॥ कौस्तुभमणि सोहत उर जाके। पीत बसन तन अति परभाके॥ श्वेततुरग अर्जुनके रथके। देखुकर्ण मर्दनमहि पथके॥ लखु गांडीव धनुषकी कर्षनि। लखु अमोघ अबिरल शर बर्षनि॥ हय गज भट बधि बधि महि डारत। लखु पार्थहिं आवत भयभारत॥ पारथके बाणनसों आकुल। लखो कौरवी सेना ब्याकुल॥ मृग समूहमें केहरि राजत। तिमि अर्जुनमम दल मधि गाजत॥ जेहि देखन हित हेधन खरचत। सो आवत बाणन दल अरजत॥ एक रथस्थ पुरुष बरदोऊ। जिन समनहिं तिहुंपुर मधिकोऊ॥ नर नारायण अर्जुन केशव। बरणि न सकै जासु गुण शेशव॥ आवत हय गज भट बधि डारत। अबिरल यूथप यूथबिडारत॥ कृष्ण सारथी अर्जुन सुरथी।

तासों लरै कौन जय अरथी ॥ सञ्जयउवाच ॥ दोहा ॥ शल्य भूपकेबचन सुनिकरि अति राते नैन । कर्ण दयो टंकारिधनु निज सुभटन कहँ चैन ॥ सुनु भूपति तेहि क्षण तहां संसप्तक गण ऊटि । सहसन भटलागेलरन एकपार्थसों जूटि ॥ संसप्तकगणपार्थ पहँ बर्षि शस्त्र समुदाय । क्षणमें दये अदृश्य करि लाघवता दरशाय ॥ निःशिपालिकाछन्द ॥ तौनलखि मोदि अति सूतसूत शल्यसों । आनि हिय गर्बअतिखर्ब कौशल्यसों ॥ मानिअतिकर्म रणधर्मतिनसर्ब को । बैन सचिचैन सति ऐन करि गर्बको ॥ दोहा ॥ कह्यो कर्ण लखु मद्रपति पार्थहि बाणनछाय । संसप्तक चाहत बधन अबन सकत इतआय ॥ यहसुनिबोल्यो मद्रपति सूतजकहु अनुमानि । कौनसुभट जोपार्थकहँ बधै जंगजति ठानि ॥ इंधन डारेहोतनहिं समित आगि गुणतौन । बधैअसंख्यन भटनकहँ पारथ बिक्रम भौन ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ लयेसंगदे बाणलै युद्धनीतै । कुबक्रोभये जाहि शक्रो न जीतै ॥ बधैताहिको काहिको बीरकूजो । लखो अर्जुनै अर्जुनैसो न दूजो ॥ लखो धर्मराजै गहेबर्मराजै । युवा सूरसो तेजकी लेजछाजै ॥ लखो भीमसेनै महाजंगजेनै । लखा शत्रुसेनै बलीजोनसेनै ॥ महाबीर माद्री तनय दोउ देखो । न जानो इन्हैं बाल ये काल लेखो ॥ लखो सात्यकै धृष्टद्युम्नादि योधै । अहैको सहैआशु जो तासु क्रोधै ॥ लखो पार्थके बाण कोजाल जैसो । नहीं कालके गालको शाल ऐसो ॥ दोहा ॥ शल्य कर्ण ते इमिकह्यो जौलगि बचन गँभीर । तौलगि संसप्तकन सो लरिपारथ रणधीर ॥ शस्त्र समूह बिदारि सब बरबाणन बानैत । बधि बिचलाय चलाजितै रह्यो करण धाकैत ॥ सोरठा ॥ भूपसुनो तेहिकाल तुमुल युद्ध सब ठौरमें । होतभयो बिकराल पृथक् पृथक् कबलौंकहैं ॥ यह सुनि वृद्ध महीप कह्यो कर्णतहँ किमि-लरो । सोकहु हेकुलदीप यथालरे ममपुत्र सब ॥ चौपाई ॥ सुनि-धृतराष्ट्र भूपकीबानी । कहतभयो संजय अनुमानी ॥ धृष्टद्युम्न

आदिक पांचालन। देखिसूतसुत अरिदल घालन॥ गरुड़चले अहिगणपै जैसे। तिनपहँ चलोबेगसों तैसे॥ कर्णहिंलखिते सबभट नायक। भिरे बेगसों बर्षतशायक॥ दुन्दुभि शंखआदि सबबाजे। तेहिक्षण तहां दुहूंदिशि साजे॥ बढ़िबढ़ि सुभटप्रचारन लागे। आयुधघने प्रहारनलागे॥ करिअतिशै बिक्रम तेहि पलमें। सूतजपैठि पाण्डवीदलमें॥ क्षणमेंबध्यो प्रभद्रक दलके। सतहत्तरि योधाबरबलके॥ भटपचीस अतिरथी गनाये। पांचालन यमलोक पठाये॥ चेदि नृपतिके अगणित योधन। बधत भयो करिधनु बिधिशोधन॥ लाघव करत बर्षिशरनीके। काटि असंख्यन शरसबहीके॥ भानुदेव कहँ यमपुर दीन्हों। चित्रसेन कहँ बिनुशर कीन्हों॥ सेना बिन्दहि बधिअति रोखो। तबनहिं बध्यो मारिशर चोखो॥ बधि भट सूरसेन कुल दीपहि। व्यथित कियो पांचाल महीपहि॥ सोलखि कोपि रथीदश टूटे। बर्षत बिशिष कर्णसों जूटे॥ हनि दशबाण तिन्हेंबधि क्षणमें। बिलसो कर्ण कालसम रणमें॥ दोहा॥ सत्यसेन बलवान अरु भट सुषेन रणधीर। सुवन कर्णके तेरहे युगदिशि रक्षकबीर॥ पृष्ठरक्षजेठो सुवन होवृष सुवन अमान। नेताधनु सन्धान सब ज्ञाता शस्त्र बिधान॥ सोरठा॥ निजदल मर्दतदेखि उतके भीमादिक सुभट। बधकरिबो अवरेखि भिरे आयअति बेगसों॥ चौपाई॥ तिनकहँ देखि धनुष टंकारी। भीमहिबीर सुषेणप्रहारी॥ भल्ल प्रचारि काटिधनु तासू। मारतभयो सातशरआसू॥ तुरतहि भीम और धनुगाहिके। शरहनिकाटि धनुषथिरु काहिके॥ दशशर तासुगात में हनिके। कर्णहि हन्यो तिहत्तरि गनिके॥ बध्यो भानुसेनहि हनिशायक। भीमाबिदित सुभटनको नायक॥ अगणित भटन भूमिपै डारयो। दुश्शासनहि तीनिशरमारयो॥ कृपकृतबर्मा के धनुनोखे। काटिहन्यो बहुशायकचोखे॥ षटशर सौबलके तन दीन्हों। बिरथ उलूक पतत्रिहि कीन्हों॥ भानुसेन सुतको बध

देखी । शोकाकुल ह्वैकर्णबिशेखी ॥ काटिभीमको धनुअतिगाढ़ो। हन्योतीनिशर कहि रहुठाढ़ो ॥ तुरितहि भीम औरधनु लीन्हों। हन्यो सुषेणहि शरबरचीन्हों ॥ भिरि सुषेणको काटि शरासन। बरषो बिशिष भीमअरिनाशन ॥ सुवन सुषेणहि अर्दितलखिकै। कर्णकोपि रक्षण अभिलषिकै ॥ करषिकठिन कोदण्ड अधीमहिं। मार्यो बाण तिहत्तरि भीमहिं ॥ धनुगहि बीरसुषेण अवरजो। नकुलहि पांच बाणहनि गरजो ॥ ताकहँ बीस बाण अनियारे। हन्योनकुल गिरिबेधनहारे ॥ तहँसुषेण थिरुथिरु थिरु भनिकै। बाण इग्यारह नकुलहि हनिकै ॥ अर्द्धचन्द्र शायकहनि आसू। दीन्हों काटि शरासनतासू ॥ तुरित नकुल गहि और शरासन। हन्यो सुषेणहि नवशर नाशन ॥ फिरि सुषेणके सूतहि हतिकै। धनुकाट्यो करलाघव अतिकै ॥ तबसुषेण धनु और सुधार्यो। शायकसाठि नकुलकहँ मार्यो ॥ सहदेवहि षटशर हनिहरषो। तथा नकुल तापहँ शरबरषो ॥ करलाघव करिकरि धनुकर्षे। दोऊदोउनपै शरबर्षे ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार अति युद्धतहँ कीन्हों नकुल सुषेन। तिमि बढ़ि सात्यकिसों भिरे बलीबीर वृषसेन। बाणबर्षि वृषसेनके सूतहि बधि तेहिठौर। धनुध्वज काटिबध्यो हयन सात्यकि भटशिरमौर ॥ सोरठा ॥ तुरित तौन रथ त्यागि चलोखड्गगहि कर्णसुत। मारिबाण पणपागि सात्यकिकाट्यो खड्गसों ॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनु वृषसेनहिं देखी। दुश्शासन अनरथ अवरेखी ॥ सादर तेहि निजरथ पहँलेकै। गयोअनत चलि मननिरभैकै ॥ फिरि वृषसेन सुरथपहँ चढ़िकै। भीमहि हन्यो साठिशर बढ़िकै ॥ हन्यो द्रौपदेयनके तनमें। तीक्षणबाण तिहत्तरि क्षणमें ॥ पांचबाण सहदेवहि हनिकै। नकुलहि हन्यो तीसशर गनिकै ॥ शतानीककहँ सातसुशायक। हन्योशिखण्डि-हि दश दृढ़घायक ॥ धर्म भूपतिहि शतशर मार्यो। इतरनृपन बहुबाण प्रहार्यो ॥ धनुकर्षत घन सदृश ननर्दत। भो वृष

सेनशत्रुदल मर्दत ॥ सात्यकि दुश्शासनसों भिरिकै । शायक बरषि चक्रसम फिरिकै ॥ क्षणमें विरथ बिधनुकरि तरजो। भ्रू मधि तीनिबाण हनिगरजो ॥ सुरथऔरपैचढ़िदुश्शासन। शर बर्षतभो करषि शरासन ॥ तोहिक्षणधृष्टद्युम्न रणचारी। कर्णहिं दशशर हन्यो प्रचारी ॥ भमिनकुलसहदेव शिखंडी। शतानीक सात्यकि अरिदंडी॥ द्रौपदेय अरुधर्ममहीपति। औरअनेकरथी अवनीपति ॥ करलाघवकरिकरि धनुकरषे । बाणसमूह कर्ण पहँ बरषे ॥ तहां कर्ण अति बिक्रमकीन्हों। सबके तन दशदश शरदीन्हों ॥ दोहा ॥ मंडलसम कोदंड करि अनुपम बिधि दरशाय। दियो पांडवी सैनमधि अबिरल शायक छाय ॥ मोहित करि अगणित भटन रथी तीनिशतमारि। धर्म भूपपहँ चलत भो अचले सुभटनटारि ॥ सोरठा ॥ इतके भटतेहिकाल कर्णहिं रक्षत चलतभे। उतके सुभटकराल धर्महिंरक्षत भिरतभे॥ धर्म भूपपहँजात कर्णहिं इमिआड़ेसुभट। औषधमंत्र बिभातब्याधिहि रोकतभांति जेहि ॥ तोमर ॥ फिरि कर्ण भटदृढ़ घाय। शरसेत अबिरलछाय॥ सब पांडवनबिचलाय। तिमिचढ़ोदीरघ काय ॥ जिमिरोग कर्मज आय। नहिंघटत औषधपाय॥ फिरि भीमि आदिकबीर। धनुकर्षि बढ़ि धरिधीर ॥ लरिभये आड़त ताहि। इमिपरो गुणिसों चाहि। प्रभुकृपाते जेहि भाय। दुख कर्म जो घटिजाय ॥ करि कर्ण बहु ब्यवसाय। नाहिं सको धर्महिंपाय ॥ जिमि योग बिदको प्रान। नाहिंलहतकालअमान ॥ तेहि ठौर नृप तेहि काल। भोयुद्ध अति बिकराल ॥ दुहुं ओर के भट जूटि। सब बिजय निज निज ऊटि ॥ तिमि लरे बिक्रम भौन। नहिं बनत भाषत जौन ॥ तहँ निकट कर्णहिंहेरि। नृप धर्म भाष्योटेरि ॥ तूगहत जेहिबलगर्ब। अबप्रगट करुसोसर्ब॥ तुदुष्टताको धाम। बहुकिये कुत्सितकाम ॥ अब दर्प तेरोतूरि। में देतहों करि दूरि॥ इमि भाषि धर्म नरेश। मोहनत दशशर

बेशं ॥ तब भूपतिहि दशबान । भोहनत कर्ण अमान ॥ तेहि पल युधिष्ठिर भूप । भोकुपित रुद्रस्वरूप ॥ दोहा ॥ धनुष कर्षि उरमाधि हन्यो शायक बज्रसमान । तासोंबेधितह्वैभयो मूर्च्छित कर्ण अमान ॥ तेहिक्षणममदल मधिगई हाहाधुनि अधिकाय । तुरित चेति सूतजलगो बर्षन शरसमुदाय ॥ सोरठा ॥ चक्ररक्ष हेतासु चन्द्रदेव अरुदंडधर । तिन्हैं बधतभो आसु शर क्षुरप्र सों काटि शिर ॥ चौपाई ॥ भूपति हनतभयो तेहिक्षनमें । शायक तीस कर्णके तनमें ॥ शायक तीनि सुषेणहिं मार्‌यो ॥ सत्य सेन कहँ तीनिप्रहार्‌यो ॥ नब्बेबाणशल्यकहँ हनिके । कर्णहिंहनो तिहत्तरि गनिके । जितनेरहे कर्णके रक्षक । सबकहँ हन्यो तीनिशरदक्षक॥सोलखि बिहँसिकर्ण धनुधारी । हन्यो साठिशर नृपहि प्रचारी॥यहनिरेखिउतके भटरूरे । भिरेकर्णसोंअमरषपूरे ॥ सात्यकि चेकितान नरनायक । पांडुयुयुत्सुशिखंडीचायक ॥ भीम नकुल सहदेव ससाजा । द्रौपदेय जन्मेजय राजा ॥ बर्षत भये कर्ण पहँ शायक । अरुबाराहकर्ण दृढ़घायक॥तहांकर्ण अतिगौरव लीन्हों। ब्रह्म अस्त्रबर प्रगटित कीन्हों ॥ तासों कढ़िकढ़ि बाणहजारन । लगेपांडवी सैन सँहारन ॥ हनि क्षुरप्रशरधर्म नृपतिको । काट्यो धनुष हेममणि अतिको ॥ हनि नब्बेशायक बर पणको । काट्यो कवच भूपके तनको ॥ तब अति रिस करि नृप रणचारी । मार्‌यो शक्ति बज्र समभारी ॥ सूत सुवन तबधनु बिधि ठाट्यो । तामधि सातबाण हनि काट्यो ॥ भूपतिचारिबाण अनियारे । तासुहियेभूभुज मधिमारे ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण सूतज धनुषधरकरि अद्भुत सन्धान । नृपति युधिष्ठिर पहँभयो बर्षत अबिरल बान ॥ काटि धनुषध्वज क्षत्रअरु तिलमित करिरथसर्व । भूपतिके तन हनत भो तीनिबाण गहि गर्ब ॥ तेहिक्षण भूपति बिकलह्वै और सुरथपे जाय । युद्धत्यागि फिरि चलतभो चपल हयन हँकवाय ॥ सोरठा ॥ कर्ण सुरथ बढ़वाय पकरनचाह्यो भूपतिहि । सोलखि शल्यसचाय

कह्योकर्ण माति नृपहिगहु ॥ चौपाई ॥ पाणि लगेहौ नृपकेतनमें तौभस्मितकरिहै यहिक्षनमें ॥ यहसुनि कर्णत्यागि मनभावत ॥ भोयहि बिधि के बचन सुनावत । धीरधरम क्षत्रिनको तजिकै । भगोजात कत फिरतन लजिकै ॥ अबमतिकबहुं आइममसन्मुख । हूजो युद्धकरण कहँ उन्मुख ॥ इमिकहि नृपहि त्यागि पण गुनिकै । लागो दलमर्दन धनु धुनिकै ॥ धर्म भूपतिहि बिचलत देखी । भगे सुभट अनरथ अवरेखी ॥ इतके सुभट मोदि शर छावत । अगरि चले दुन्दुभि बजवावत ॥ इतनेमें भूपति थिरि ज्वैकै । अतिरिस गहि अमरषसों ग्वैकै ॥ चढ़ि रथपै श्रुतिकीर्त्ति नृपतिकै। बोलोबचन पराक्रमआतिकै ॥ फिरिफिरि लरि अरिदल बधिसादर । जययश लेहु भयेकत कादर ॥ धर्म भूपकी सुनि यह बानी । फिरिफिरि उतकेभट अभिमानी ॥ तोमर भल्लशक्तिशर बरषत । दरशत अरिन बीररस सरसत ॥ भिरतभये ममदलसों तैसे । मारुत भिरै मेघसों जैसे ॥ नृपतेहिसमय भयोरणगाढ़ो । जैसे लगै बिपिन में डाढ़ो ॥ हयगज पैदर रथी सोहाये । करतभये बिक्रम मनभाये ॥ नाम गोत बिक्रम कहिकहिकै । भेभट लरत ओज गहिगहिकै ॥ दोहा ॥ ह्वै बेधित तनत्यागि कै चले सुभट समुदाय । जोहि तिन्हैंलै अप्सरा यानन पै बैठाय ॥ यह प्रतक्षलखिलखि सुभट मरिबोई अभिलाषि । अति बिक्रमकरि करिलरे भागु नबचत न भाषि ॥ भीषम सरिता रुधिरकीउमँगि चली तेहिकाल । रुण्डमुण्ड करपगलसे जिमिजलजंतुकराल ॥ सोरठा ॥ सुनुभूपति बलऐन भीमादिक परभटनसों । मर्दितह्वै मम सैन भईपराजित तेहिसमय ॥ बसुकला ॥ निजदल बिशेखि । बिचलत निरेखि ॥ तोसुवन भूप । ह्वै बिगत रूप ॥ बहुभांति टेरि । फिरि चलो फेरि ॥ तब सूतसून । करि क्रोधदून ॥ नृप शल्य ताहि । इमिकह्यो चाहि ॥ जहँभीमबीर । तहँचलो धीर ॥ यहसुनिनरेश । हयहांकि बेश ॥ जहँरहो भीम । तहँगो अधीम ॥

सूतजहि देखि । भटभीम तेखि ॥ निज सूत ताहि । इमि कह्यो चाहि ॥ शल्यहि निहारि । चरिओ बिचारि ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न अरु सात्यकी सों फिरि कह्यो बिचारि । तुमरहियो रक्षत सदा धर्मनृपहि पणधारि ॥ आवत मोपहँकर्ण मैं तासोंभिरि करियुद्ध । आजु याहिवधि करतहौं निज जयकी बिधि शुद्ध ॥ सोरठा ॥ इमि कहि धनुटंकारि घन सम गरजत सुभट मणि । बर्षत बिशिष प्रचारि चलो सूतसुतके निकट ॥ चौपाई ॥ भीमहिं आवत लखि अनुमानी । शल्य कर्णसों कह्यो सुबानी ॥ देखुकर्ण आवत यहि पलमें । बर्षत बिशिष भीम ममदलमें ॥ काल कराल सदृशभय भारत । गनेभटनको धीरजटारत ॥ अबलों तासुरूप यहिबिधि को । लख्यो न जगतजीतकी सिधिको ॥ आवत तोबधको पण कीन्हे । लेहु बाचिबेकी बिधिलीन्हे ॥ सुनियह बचन कर्णहँसि बोलो । भूपकहे तुम बचन अतोलो ॥ हैअतिबली वृकोदर भू-पर । हैअति गहेक्रोध ममऊपर ॥ यहरहि गुप्तकीचकहि आदि-क । बध्यो धीरबहुबीर प्रमादिक ॥ हैयह प्रबलबीर हम जानत । पैनिज निकट तृणे सममानत ॥ यहिकरि बिरथ बिमुखकरि देहौं । तब अर्जुनहिं मारि जय लेहौं ॥ इमिकहि कह्योचपल करिघोरे । सादरचलो भीमके धोरे ॥ यह सुनिशल्य प्रतोद उठायो । करि अति चपल तुरंग बढ़ायो ॥ धनु टंकारत बढ़िसहसेना । बज-वावत दुन्दुभि जगजेना ॥ भटराधेय प्रमेय बिशारद । अति अजेय परदल भयभारद ॥ शर बर्षत घन सदृश ननर्दत । गो जहँ रहोभीम दलमर्दत ॥ तेहिबिधि भीमसेन धनुकरषत । भिरो सैनसह बढ़िशर बरषत ॥ दोऊ बिदित बीरधनुधारी । दोऊ महाप्रबल रणचारी ॥ अद्भुत भांति शरासनकरषे । दोऊ दोउ नपे शरबरषे ॥ काटिकर्णके अगणितशायक । नवशर हन्योभीम दृढ़घायक ॥ काटि भीमको धनुष अनोखो । मार्यो कर्ण बाण अति चोखो ॥ ग्रहिधनु और भीमरणचारी । मार्योताहिबाण

भिरो प्रचारी ॥ दोहा ॥ कर्ण भीमअति भीमभट भूपति भिरितेहि ठौर । घोरयुद्ध कीन्होंमहा गहिअति गुरुतागौर ॥ दोऊदोउन पैदये बिरचि शरनको जाल । दोऊकाटे दुहुनकीभूरि शरनकी माल ॥ सोरठा ॥ करि करलाघव तत्र कर्णहन्यो तनभीमके । अति तीक्षण नवपत्र भीम सातशर तेहिहन्यो ॥ चौपाई ॥ कर्णतहांअति तुरता करिकै । बर्षो बिशिष चक्रसम चरिकै ॥ तेहिबिधि भीम शरासन करषो । बाण समूह कर्णपैबरषो ॥ अति करलाघवकरि दृढ़घायक । भीमहिं कर्ण हन्यो दशशायक ॥ घनसम गरजिसिंह सम डाट्यो । भल्लप्रहारि शरासन काट्यो ॥ तजिसो धनुभट भीम अदूषित । झेल्यो परिघ हेम मणि भूषित ॥ अशनिसमान देखि तेहि आवत । कर्णकाटि भो मगहि गिरावत ॥ तबगहि धनुष भीमरण करकस । बर्षत भयो बिशिष बहुतरकस ॥ भो अति घोरयुद्ध तेहिक्षनमें । देखिसुमन बिस्मित भेमनमें ॥ भीमहिं कर्णतीनि शरमारो । तहां भीम अति बिक्रमधारो ॥ बज्रसमान बाणअति तुरमें । मारतभयो कर्णके उरमें ॥ भिदितासों क्षणमोहित रहिकै । बरष्यो बिशिष भागुमति कहिकै ॥ केतुकाटि अतिरिससोंरात्यो । धनुषकाटि सारथिहि निपात्यो ॥ भीमबिरथ ह्वै सोरथ तजिकै । चलतभयो गहिगदा गरजिकै ॥ जायबेगसों द्विरदगरट में । बधनलगो हनिगदा करटमें ॥ सहसारोह सात शत हाथी । बधिशत रथिनबध्यो सहसाथी ॥ सहसन पैदरयूथ सँहारो । क्षण मैं तेहि हथप्रलय पसारो ॥ दोहा ॥ भीम भानुसों तपितह्वै सुनो भूप ममसैन । चरम सरिस सिकुरत भई त्यागि बीर रसचैन ॥ सोदल बिचलत देखि बढ़िरथी पांचशतधीर । लगेवृकोदर बीरपहँबर्षत अबिरलतीर ॥ चपलचक्रसमचरितहां गरुई गदाप्रहारि । भीमनिमिषमें बधितिन्हैं दयो भूमिपैडारि ॥ सोरठा ॥ सोलाखि शकुनि नरेश भयो बढ़ावत भीम पहँ । तीनिहजारसुबेश तुरगसवार उदारभट ॥ गुरुतोमर ॥ अतिबेगसों

तेजायकै। भेलरत शायकछायकै॥ सबपैतरनपै घूमिकै। भटभीम सबसों भूमिकै॥ चरिगरजि गरजि प्रचारिकै। अति गुरुगदाहि प्रहारिकै॥ पगपाणि अगणित तोरिकै। उरशीश अगणितफोरि कै॥ सबतुरग सादिन मारिकै। अरुघने सुभटन टारिकै॥ फिरि और रथपै राजिकै। भोबाण बर्षत गाजिकै॥ भटकर्ण तौलगि ऊटिकै। बढ़िधर्मनृपसों जूटिकै॥ अति कठिन शायक बाहिकै। भोबधत सूतहिचाहिकै॥ सोसुभट उतकेदेखिकै। बाढ़िभिरे अतिशय तेखिकै॥ भट भीमसों गति हेरिकै। कितजात फिरुइतटेरि कै॥ चरिचक्रके सम नाँचिकै। बरबाण बर्षोयाचिकै॥ तबकर्ण सबकहँ त्यागिकै। फिरि महा रिससों पागिकै॥ कै चपल सुरथ अधीमपै। भोबाण बर्षत भीमपै॥ सोदेखि सात्यकि कोपिकै। भोबाण बर्षत चोपिकै॥ तिमिधृष्टद्युम्नहिं आदिकै। बढ़ि भिरे परमप्रमादिकै॥ इत तनयतोभदि औतमौ। हार्दिक्य सौबल गौतमौ॥ वृषसेन आदिक बीरहे। तेकिये युद्ध गँभीरहे॥ बर शक्ति तोमर बाणकी। अरु गदाभल्ल कृपाणकी॥ अरु परिघ पट्टिश आदिकी। झरि किये युक्ति अनादिकी॥ तेहि समय संगर घोरभो। थिरु मारु मारयो शोरभो॥ महि गगन आयुध पूरिगे। मरि सुभट अगणित दूरिगे॥ भुजगप्रयात॥ बही शोणितोदा नदी ह्वै गहीरी। गहे बेगगाढ़ी नहीं नेकुधीरी॥ बहैं रुण्ड मुण्डैं कटेपाणि शुण्डैं। सुबेधे हियके मरेतासु भुण्डैं॥ लसैं जाइ सेते बसे भारतीके। खसे केतुसेते तु सेतारतीके॥ बहैंबाण भल्लैं गदा भिन्दिपालैं। मनो कालके गालके खालचालैं॥ दोहा॥ बढ़ि२ भट दुहु दलनके मिलियुग समुद समान। अति बिक्रम करि करि तहां किये घोर घमसान॥ तेहि क्षण भानु न लखिपरे शर शक्तिनकी छाँह। रहो मारिबोई जगत सबहीके मन माहँ॥ भुजगप्रयात॥ किते आपने नाम औगोत बोलैं। हनैंवो हनैं बाहनैं हांकि ओलैं॥ सहैंशेल सूधे धँसे शेलह

झेलैं । महा लाल से काल से युद्ध केलैं ॥ कटे मुण्ड केते अड़े रुण्ड लोटैं । गिरैं औ उठैंको उठैंभूख रोटैं ॥ अमन्दीभये यो सुछन्दी बिहारैं । अदन्दी अदन्दी न द्वन्दीन मारैं ॥ जुरे भूत पीशाचके यूथ हेलैं । चहूंघा चढ़े चाय चौगान खेलैं ॥ पियैं शोणितै औ भषैं मांस मेदैं । बली निर्बली औ भली भांतिखेदैं ॥ हँसे फेरि आनैं तिते रंग ठानैं । खुशीह्वै खबीसैं करैंखानपानैं ॥ खसेउद्ध यो युद्ध ताठौर जैसो । लख्योना सुन्यो आजुलों और ऐसो ॥ सोरठा ॥ भूपमध्यदिन पाय यहिविधिको संग्रामभो । जो न सबिधिकहिजाय कहोचाहिकबलों कहैं ॥ मांहबरी ॥ उतजीति संसप्तकन पारथ कर्णकीदिशि जबचलो । तबफेरिसंसप्तक सकल भिरि करत भे बिक्रम भलो ॥ भटनृप सुशर्माहिं आदि चौदह •सहस अतिअनुपम गने । गुनि पूर्बको निजबैर तापहँ भये बर्षत शरघने ॥ शर काटि अगणित पार्थ अगणित भटन बिनु करपग करे । गत प्राण अगणित भटन करिकरि रुण्डमुंडन महिभरे ॥ गज बाजि अगणितं मारिमहिपर डारि महि भीषमकियो । फिरि शंखध्वनि करि कर्णकी दिशिचलनगति मनमधि लियो ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण संसप्तक सकल जीवन आशात्यागि । बधिबेके बधि जाइबे कै प्रणसों मनपागि ॥ फिरि पारथ सोंभिरि करे शायक बृष्टि प्रशस्त । घोर युद्धतेहि क्षणभयो कहत न बनत समस्त ॥
इतिमहाभारतेकर्णप०द्वितीय दिनयुद्धेयुगयामसमाप्तिर्नामपंचमोऽध्यायः॥
बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ इबिधि ब्यवस्था युद्ध की सुनिधृतराष्ट्रनरेश । संजयसों बूझतभये संजय कहो बिशेश ॥ पारथसों जेहि बिधि कियो संसप्तक गण युद्ध । यह सुनिकै संजय कह्यो नृप सुनिये सो शुद्ध ॥ चौपाई ॥ नारायण अरु कोशलबीरा । अरु संसप्तकभट रणधीरा ॥ जीवन की आशा तजि दीन्हें । भिरि अर्जुनसों अतिरण कीन्हें ॥ बध बिचारिहियमें अति हर्षै । चहूं ओरसों शायक बर्षै ॥ तहँ पारथ सब सुभटन डाटत । शक्ति श-

रासन शरअसि काटत ॥ बली सुशर्मा नृपसों भिरिकै। बहुभट बध्यो चक्रसम फिरिकै॥ तहां सुशर्मानृप धनुधारी। करतभयो बिक्रम अतिभारी॥ दशशरहन्यो पार्थकेतनमें। कृष्णहिं तीनिहन्यो गुणि मनमें॥ अति तीक्षण गुरु भल्ल सुधारयो। सोध्वजस्थ कपिके तन मारयो॥ लागेबाण कोपिकपि गरज्यो। सोसुनि सुभटन को हियदरज्यो॥ भीति पूरिभट मोहित ह्वैगे। सबकेचेत पराक्रम ज्वैगे॥ अचल भये भट पुष्पितबनसे। रहे मुहूर्त युद्धन हिं मनसे॥ ह्वै सहचेत लरन फिरि लागे। मरणमारिबेके अणपागे॥ अगणित भट चहुंदिशितेभुकिकै। बाणन भिदितरहे नहिं रुकिकै॥ रज्जु धुराअरु ईर्षा गहिगहि। गेरथपैधरि बांधोकहि कहि॥ किते कृष्णके भुजन लपटिगे। कितेपार्थके गात चपटिगे॥ कितनेभट तुरगन कहँधरिकै। कीन्हेंशोर मोद हियभरिकै॥ दोहा॥ केशव भुज उलभ्हारि तब सबकहँ दये गिराय। पार्थ गिराये सबनकहँ करिअतिशय व्यवसाय॥ कृष्ण प्रतोदउठायकै कीन्हेंचपल तुरंग। तहँसंसप्तक सुभटसब होतभये बदरंग॥ लघुपातन शरवृष्टिकरि तहँ पारथ रणधीर। बांधिडारयो अगणित सुभट कर्तायुद्ध गँभीर॥ सोरठा॥ अगणित भटन भजाय कहतभयो इमि कृष्णसों। इमिरथ धृतह्वैजाय छूटोनकोउआजु लौं॥ प्रभुतोप्रभुता पूरिनिज बिक्रम परसादते। इबिधि छूटिरहिं दूरिलखो बधतसब शत्रुभट॥ चामर॥ योंसुभाषि पार्थशंखदेवदत्त लै भले। कृष्णचन्द्र पांचजन्य शंखबाद्यके भले॥ सैन ऐनमें अचैनता महान पूरिकै। पार्थ चापखैंचि ऐंचि बाणवृष्टि भूरिकै॥ मारि डारिदये बीर धीरतीर जेरहे। तीर घात पीरपूरि भूरि दूरिले रहे॥ फेरि फेरि टेरि टेरि हेरि हेरि ते थिरैं। घेरि घेरि भेरिकै निशान सानसों भिरैं॥ दोहा॥ नागअस्त्रतजि पार्थ तहँ दीन्हें सबकहँ बांधि। पादबन्धह्वै सुभटसब सके न धनुबिधि साधि॥ पादबन्ध करि पार्थतहँ बध्यो असंख्यन बीर। देखि

सुशर्मा नृपतितब कीन्होंक्रोध गँभीर ॥ सोरठा ॥ गारुड़अस्त्रमहान तजतभयो अनुमानि तहँ । लखिगरुड़न दुखदान नागभगे भट छुटतभे ॥ चौपाई ॥ नागबन्धते छुटिसब योधा । लरनलगे फिरि करि अवरोधा ॥ पट्टिश भल्ल शक्ति अनियारे । भिंदिपालतो-मरशरमारे ॥ गदापरश्वधवर्षनलागे । मारोधरो रटतप्रणपागे ॥ तहँपारथअति धनुबिधि डाट्यो । तिनकेशास्त्र अनेकनकाट्यो ॥ अगणित भटन कालबश कीन्हों । अगणित भट बिनुकर करि दीन्हों ॥ अगणित भटन कियो बिनु बाहन । अगणित भटन बध्यो जय चाहन ॥ अगणित भटन शीश तकि मार्‍यो । अग-णितके उर उदर बिदार्‍यो ॥ अगणित धनुध्वज छेदनकरिकै । अगणित भटन बध्यो पण धरिकै ॥ अगणित योधन कियोपरा-जित । अगणित धर करि पग बिनु राजित ॥ काट्यो शीशक शीश बिचक्षण । अगणित बध्यो धनुर्द्धर दक्षण ॥ तेहिक्षण नृप ति सुशर्मा तुरमें । मार्‍यो बाण पार्थके उरमें ॥ फिरि अति ती-क्षण तीनि सुशायक । हन्यो पारथहि नृपदृढ़ घायक ॥ तिनबा-णन बेधितह्वै पारथ । मूर्च्छितभयोभूलि चरितारथ ॥ सोलखि के अति आनँद लहि लहि । पारथबध्यो गयो इमि कहिकहि ॥ इतके सुभट शोर अति कीन्हे । बाणन नभछादित करिदीन्हे ॥ भेरीशंख तूर बजवाये । कहे आजु अनुपम जयपाये ॥ दोहा ॥ तुरित चेति पारथ तहां करिशर धनुष संयोग । ऐन्द्र अस्त्र को करतभो अतिशय प्रबलप्रयोग ॥ सहसन शर तासों प्रगटि महाभयानक रूह । ह्वै पूरित सब सैनमधि मारे सुभटसमूह ॥ शस्त्र चलावनको भटन लह्योन फिरि अवकाश । द्वै मुहूर्त्त मों होतभो अयुत भटनको नाश ॥ तोमर ॥ बधि अयुत सुभट म-हान । भोसमित अस्त्रअमान ॥ तररहे जेहतशेष । लेबर्षिशस्त्र बिशेष ॥ ते किये अति घमसान । नहिं चहे राखनप्रान ॥ दश सहस सुरथगूढ़ । त्रय सहस द्विरदारूढ़ ॥ अति किये संगर

तत्र। नहिं बनत भाषतअत्र॥ तहँ पाण्डुनन्दन बीर। अति कियोयुद्ध गँभीर॥ तौ सुवनसो सुधि पाय। बहु सुभट के समुदाय॥ तहँ भयो भेजत भूप। जे प्रबल भीषम रूप॥ दोहा॥ नृप तेहि क्षणसब सैनमधि भोअति दारुण युद्ध। मारु मारु मार्‍यो मरो रहीपूरि धुनिउद्ध॥ भुजगप्रयात॥ भयो घोर संग्राम सुग्रास तेहां। लरो पार्थ संसप्त कार्यार्थ जेहां॥ लरो कर्णसेना एवा भर्ण तैसो। लरेभीमजै बर्ण लैपर्ण ऐसो॥ तथा कृत्तबर्मादि शर्म्मा सुशर्म्मा। अभर्म्मा महाघोर कर्म्मा सुधर्म्मा॥ भरे बीर पर्म्मा सहैं बाण धर्म्मा। गहैं शस्त्रकर्म्मा करैं गात बर्म्मा॥ सोरठा॥ यहि बिधिको संग्राम भयोतीसरेयामतहँ॥ शोणितनदी अक्षाम बहीफेण मेदावती॥ दोहा॥ नृपबीततयुग यामतहँ कृप आदिक रणधीर। भिरि भीमादिक भटनसों कियेयुद्ध गंभीर॥ चौपाई॥ कृपहि निरेखि शिखण्डी योधा। शरबर्षत कीन्हों अवरोधा॥ गौतमता पहँ शर झरिकरिकै। दशशर हनतभयोप्रण धरिकै॥ शायकबर्षि शिखण्डी क्षनमें। हन्यो सातशरकृपकेतन में॥ तेहि क्षणकृपाचार्य्य अति रिसिकै। द्रुपद तनय पहँबाण बरसिकै॥ पलमें बिरथ बिधनु करि दीन्हों। तब असिचर्म शिखण्डी लीन्हों॥ करतपैतरेअसि फरकावत। चलोविप्र पहँओज बढ़ावत॥ कृपतजि सहसनशरपग पगमें। बाणजालरचिदीन्हों मगमें॥ सोलखि धृष्टद्युम्न रणचारी। चलो बेगसों कृपहि प्रचारी॥ कृपपहँ जात करत शरछाजा। लखि आड्योकृतबर्म्मा राजा॥ तब सहसेन धर्म्मनृप तक्षण। कृपपहँ चलो शिखण्डिहि रक्षण॥ कृपपहँ जात भूपतिहि देखी। आड्यो द्रोण तनय अवरेखी॥ तब सहदेव नकुल तहँ डगरे।तेहि आड़्यो तोसुतगण अगरे॥ सोलखिचलो भीमदृढ़ घायक। रोंक्यो ताहि कर्णभट नायक॥ चित्रकेतुको सुतरणचारी। भूपसुकेतु बिदितधनुधारी॥ जायतहां गौतमहिं प्रचारो। शायक बर्षि बाण बहुमारो॥ तब

क्षणघाय शिखण्डी भागो । गो निज दलमधि भयसों पागो ॥ दोहा ॥ नृपसुकेतु गौतमहिं हनि तीक्षण सत्तरिबान । धनुषकाटि सूतहि हन्यो शायक बज्रसमान ॥ तबकृपरिस करि धनुषगहि तासबाण तेहिमारि । शरक्षुरप्रसों काटिशिर दियो भूमिपैडारि ॥ सोरठा ॥ कृतबर्म्मा क्षितिपाल धृष्टद्युम्नये भिरि तहां । कीन्हें युद्ध कराल घने शरनके जाल रचि ॥ चामर ॥ धृष्टद्युम्न आठ बाण हारदिक्यको हन्यो । हारदिक्य ताहिबाण जालमें किये बन्यो ॥ धृष्टद्युम्न काटिबाण जाल यादवार्य्यके । शोरके अथोरबाणमारि घोर कार्यके ॥ बाणमारि सूततासु डारिभूमिपैदये । अश्वभीत पूरिभागि दूरिजान लैगये ॥ धृष्टद्युम्न जीति ताहि कौरवी दलै दल्यो । बाणजाल कालगाल शाल शोच लैचल्यो ॥ चौपाई ॥ सदलधर्म भूपतिसों भिरिकै । रथपर बिप्र चक्रसम फिरिकै ॥ बाण जालसों गोपितकीन्हों । प्रलयकाल रोपित करिदीन्हों । सात्यकि आदि बिदित भटएकौ । नहिंकरि सके पराक्रम नेकौ ॥ सबके काटि अनगिने शायक । बध्यो असंख्यन भट दृढ़घायक ॥ तब ते सबगहि अति उतकर्षा । कियेद्रोण सुतपैशरबर्षा ॥ सात्यकि बत्तिस बाण प्रहार्‍यो । धर्म नृपति सत्तरि शर मार्‍यो ॥ तीनि बाण मारो श्रुतकर्म्मा । सातहन्यो श्रुतकीर्त्ति सुधर्म्मा ॥ तब द्विजकरि बाणनको दुर्दिन । सबकहँ हनत भयोशर अनगिन ॥ अबिरल बाण बर्षि पणधरिकै । सबसुभटन कहँमोहित करिकै ॥ अगणित हय गज भट बधिडार्‍यो । परसेनामें प्रलयपसार्‍यो ॥ धनुष बेद बिधिके मदमात्यो । सात्यकिके सारथिहि निपात्यो ॥ सोलखि धर्मभूपभय आन्यो । द्विजसो काहुहि बचत न जान्यो ॥ अरुणनयन करि बदन अनैसो । भाषत भयो बिप्रसों ऐसो ॥ रेद्विज पुत्र त्यागि निज कारज । परगुणगाहिकत होतअनारज ॥ मम सुभटन सब कौरवगनसों । देअब लरन उचित गुनि मन सों ॥ तुम मम बंधुबंधुताराखे । करोयुद्धमम जय अभिलाखे ॥

यह सुनिद्विजसुत हँसिचुप रहिकै । लरनलगो कछुअरजुतागहि कै ॥ दोहा ॥ तजि सम्मुख द्विजपुत्रको धर्मभूप सहसैन । ममसेना मर्दन लगो बिदित बुद्धि बलऐन ॥ सृंजयअरुपांचालदल मधि धँसि कर्ण कराल । प्रलयकाल रोपितकियो बरणो बीरबिशाल ॥ तुवसेनामधि भीमधँसि बासिलासि रुद्रसमान । संसप्तकमधिपार्थ तिमि कियेघोर घमसान ॥ दलमर्दत माद्रीसुतनलखि दुर्योधन भूप । अतिबिक्रम करिलरितिन्हैं करतभयो गतरूप ॥ सोरठा ॥ अर्दित तिन्हैं निरेखि धृष्टद्युम्न सेनाधिपति । शर बर्षतअवरेखि भिरो सुयोधन नृपतिसों ॥ चौपाई ॥ ते युगबीर घनेशर बाहक । जीतिन शीलयशी जय चाहक ॥ भूरिपराक्रमके बल सागर । भीषम युद्ध किये भटनागर ॥ बारअनेक भयेधनुकाटत । शायक काटिभये महिपाटत ॥ गातनमें शर भूरिहने ताकि । भागुनभागु नबांचत योंबकि ॥ दोहा ॥ अति बिक्रम करिद्रुपदसुत शायक बर्षि अनेक । धनुष काटितोसुत नृपहि बिरथकियो गहिटेक ॥ नृपहि बिरथ लखि दंडधर निजरथपर बेठाय । अनतजाय पर भटनसों लरतभयो शरछाय ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण सूतजबीरधँसि पांचालन भटन मधि । बधतभयो रणधीर षोड़श वरणे अति रथिन ॥ चौपाई ॥ अगणित बध्यो तुरग असवारन । अगणित बध्यो भटन सह बारन ॥ अगणित पैदर यूथ सँहास्यो । अग-णित ध्वजरथ रथिन बिदास्यो ॥ जिमि दावानल बिलसैबनमें । तिमितहँ कर्ण लसतभो रनमें ॥ जे गहिगर्ब सामने आये । ते सबभये कालके खाये ॥ महाराज सुनिये तेहिपलमें । हाहाकार मच्यो परदलमें ॥ लखि अर्दित पांचाली सेना । सदल धर्मभूपति जगजेना ॥ द्रौपदेय जन्मेजय राजा । सहदेव नकुल सपुत्रस-साजा ॥ धृष्टद्युम्न येसिगरे योधा । किये सूत सुतको अवरोधा ॥ भोअति घोर युद्ध तेहिठाईं । अबसब कहत न बनतगोसाईं ॥ यथाकर्ण परदलमधि धँसिकै । पाच्यो प्रलय रुद्रसम लसिकै ॥

तिमि ममदल मधि धँसिरण कर्कश । पारचो प्रलय भीमकरि सर्कश ॥ बधि अगणित हय रथ गज गामी । रच्यो रुधिर को नद जयकामी ॥ तिमि कृतबर्मा सात्यकि आदिक । दुहुंदिशिके सबसुभट प्रमादिक ॥ रोपेप्रलय दुहूंदिशि माहीं । सोबिधिवत कहि निबरत नाहीं ॥ संसप्तकन जीति उतपारथ । कह्यो कृष्णसों गुणि निज स्वारथ ॥ सूत सुवन ममसैन सँहारत । सादर तहां चलो भयभारत ॥ संसप्तक हतशेष पराने । अब न सकत फिरि अतिभय साने ॥ दोहा ॥ यह सुनिकै केशवकहे मर्दिकौरवीसैन । फेरि चलेहु राधेयपहँ सुनो शत्रुदल जैन ॥ इमि कहिकै ममसैन मधि चपल सुरथ लैजाय । सारथिपन की कुशलता करतभये गहिचाय ॥ सोरठा ॥ धँसि ममदल मधिबीर भटकपि केतु कि-रीटधर । बधि अगणित रणधीर अर्पिदयो अपसरन कहँ ॥ चौपाई ॥ महाराज तो सुत तेहिक्षनमें । गुणि निजहारि बिकलह्वै मनमें ॥ संसप्तकन दयो अनुशासन । तेसिगरे फिरि कर्षि शरा-सन ॥ चौदह सहस सुभट हय सादी । सहस रथीबर बीर प्र-मादी ॥ द्वैशत सहस सुबीर पदाती । द्वैशत गजारोह अरिघाती ॥ घेरि पारथहिं आयुधबरसे । घेरेरबिहि जलदसम दरसे ॥ पारथ बर्षिबाण बर फबके । काटि असंख्यन आयुध सबके ॥ अङ्गभङ्ग अगणित भटकीन्हों । बहुभट बिरथ बिधनु करिदीन्हों ॥ नृपति सुदक्षिण को लघुभाई । बध्यो ताहि अति ओज बढ़ाई ॥ दश हजार योधाबधि पलमें । पारतभयो प्रलय ममदलमें ॥ हाहा धुनितेहि थलमें सुनिकै । सुवन द्रोणको अनरथ गुनिकै ॥ सुरथ बढ़ाय सिंहसम हेरत । पार्थ आउ ममढिग इमि टेरत ॥ आइ भिरो पारथसों तैसे । करिवर भिरै द्विरदसों जैसे ॥ धनु बिधि सिखे द्रोणसों दोऊ । जिन्हैं समान और नहिं कोऊ ॥ तेयुग सु-भटभिरे जब राजा । बिस्मितभोतब सुमन समाजा ॥ दक्षिणबाम भागफिरि फिरिकै । टेरि टरि सन्मुख थिरिथिरिकै ॥ दोऊ सुभट

गहे उतकर्षा । करतभये बाणन की बर्षा ॥ दोहा ॥ द्रोण तनय तेहिक्षण कियो अतिबिक्रम क्षितिपाल । जैसो बिक्रम नहिं कियो द्रोणौं काहूकाल ॥ करिअद्भुत बिधिबाणझरि ह्वै अति भीषम रूप । करलाघवता पार्थकी दयो शिथिल करिभूप ॥ सोरठा ॥ कृष्ण पारथहि तत्र गोपितलखि शरजाल मधि । अतिआनँद भोअत्र सुर समूह शंकित भये ॥ रतीछंद ॥ तहँ केशव बिप्रको बिक्रम देखि । अरु पारथ की ऋजुता अवरेखि ॥ इमिभाषतभे करि लोचन लाल । कत बिक्रम हीन भये यहिकाल ॥ भुजबेधि गयेकै गयो धनुटूटि । केहिहेत गयो तुव धीरज छूटि॥ गुरुकोसुत जानिधौंगौरव देत।गुरुबिक्रमकै जेहि जीति नलेत॥दोहा॥केशवके येबचन सुनि पारथ धनुटंकारि। कुपित रुद्रसम ह्वै ।बिशिखबर्षो सुजय बिचारि ॥ बाणजाल सब काटि अरु चारु शरासनकाटि। बज्र सरिसशर बिप्रके उरमधि मार्‍यो डाटि ॥ बेधित ह्वै गत चेतद्विज रहो ध्वजासों लागि । सो निरेखिकै सारथी गयो सुरथलै भागि ॥ सोरठा ॥ इमि बिप्रहि बिचलाय पार्थभयो मर्दत सयन । प्रगट होतभो आय भूपति फलतो कुमतिको ॥ चौपाई ॥ पार्थहि निजदल मर्दत लखिकै। दुर्योधन क्षितिपाल बिलखिकै ॥ कह्योकर्णसों ह्वै अति आरत । आजुपार्थ मम सबदल मारत ॥ मद्रमहीप आदिसब राजा । सुनो बचन मम सहित समाजा ॥ बड़ेभाग क्षत्री धनुधारी । ऐसोयुद्ध लहत हितकारी ॥ बधिपाण्डवन भरो सुख उरमैं । कै बधि जाय बसौ सुरपुरमैं ॥ उभय प्रकार धर्मबिधि साधन । करो महाबिक्रम अवराधन॥यहसुनि सबयोधा सुखपाये। ह्वैसरोष दुंदुभिबजवाये॥सोसुनिअश्वत्थामा नागर।कह तभयोबर बचन उजागर ॥धृष्टद्युम्न अधरम रण करिकै । ममजन कहिमारो प्रणधरिकै ॥ अवशि आजु ताको बध करिहौं । परसेना मधिबिपदा भरिहौं ॥ सो सुनिकैसब योधा हरषे । शत्रु सेन माधि आयुध बरषे ॥ तेहिक्षण भयो युद्धअतिभारी ।मरेअसंख्यन भट

रणचारी ॥ करपग रुएड मुएड मय धरणी। रुधिर धारसोंभई बिबरणी ॥ जयकरी ॥ उत अपार मम सेना जीति। पार्थ कृष्ण सोंकहे सनीति ॥ लखो दिवस को तीजो भाग। बीतन चहत सुनो बरभाग ॥ भूपहि लखे बिना मन मोर। है चिन्तित ताते वहि ओर ॥ चलो शीघ्र भूपतिहि निरेखि। लख कर्णसों जय अवरेखि ॥ यह सुनि सुरथ हांकि कुलदीप। चले रहो जहँधर्म महीप ॥ कर पग रुएड मुएड मयभूमि। उठत गिरत घायल भट घूमि ॥ देखत जायधर्मके पास। लखि भूपहि लहि परम सुपास॥ लगो लरन मम दलसों जूटि। बधिसुभटन जय लीबो ऊटि ॥ तेहिक्षण भयो घोर संग्राम। कटे असंख्यन भट बलधाम ॥ ससयन धृष्टद्युम्न भटउद्ध। लागो करन कर्णसों युद्ध॥हनि क्षुरप्र शरसूतज आसु। दीन्हों काटि शरासन तासु ॥ धनुष काटि मास्यो नव बान। तौलगि सो भट गहि धनुआन ॥ मारत भयो कर्णके गात। सत्तरि शायक अतिअवदात ॥ रण महिकी भीषमता देखि। कहे कृष्ण हिय करुणा भेखि॥ पार्थलखो रण महिको रूप। महा भयानक भई अनूप ॥ मरेपरे कहुँ द्विरद अठाम। मरे असंख्यन हय छबिधाम ॥ करपग रुएड मुएड मयभूमि। गिरत उठत घायल भट घूमि॥घायल किते करत जलपान। किते पियतजल त्यागत प्रान ॥ कितने मारुमारु रटलाय। रहे बातबश ह्वैहत चाय ॥ कितने बैरि परस्पर टूटि। रहे मारिमार महिपरि जूटि ॥ कितने आयुध कियेउदाव। भिदि गिरिपरे गहे रणभाव॥ पट्टिश भल्ल गदाके घात।कितने मरे पाय शरपात ॥ कितने परे करिनके शुंड। परे अनगिने मरे बितुंड ॥ तुरगन सहित तुरँग असवार। अगणित मरेपरे सरदार॥दोहा॥ चन्दन चर्चित मणिन के भूषण भूषित भूरि। दोर्दंड आयुधन सह परे सुपरमा पूरि॥ सुलिका ॥ परे शोणितोदा नदी में लसैं गात। भरे भूरिभासो चहैं धाडरे ख्यात ॥ मनो भारतीमें पटेहैं कटे काठ। दरेजान केहैं

खरेतें ध्वजा लाठ॥ परे पंक्ति शक्तीनके भूरि हैं भात। गदा भ-
ल्लयष्टी अनष्टी लखो तात॥ परे तोमरें भिंदिपालें किते बान।
परे सांप सेचापहूं तापके थान॥ दोहा॥कटे चक्र बाजी मरे रथपरि
शोणित बीच। लसै मनोलटिफटिपरी नाव भारती कीच॥ कर
णधारधर सारथी बह्योरुधिरकीधार। रथी बिकल लहिगहि रह्यो
ध्वजा यष्टि गुणदार॥ भुजंगप्रयात॥ किते रुण्ड बैठे लहें तो
न भेलें। कितेशत्रुके मुंडले कुंडमेलें॥ किते औरके मुंडले मुंड
लावें। किते खड्गलीन्हें चहूंओर धावें॥ किते रुण्डके पाणि
औ पाय डोलें। किते क्रुद्धबाहें किये ऊर्द्ध ओलें॥ किते युद्धकी
शुद्धिके रुन्धि बैठें। जुपैठे चहेंसे गहें ऐड़ि ऐंठें॥ किते रुण्डहैं
केतुसे क्रूरकारे। कितेशक्रके चापसे बक्रडारे॥ किते मुंडहैं राहुसे
राजनी पें। किते खंड मार्तण्ड से चंडदी पें॥ किते मुण्ड हैं कु-
ण्डलौ कुण्डधारे। किते कुण्डलौ कुण्डके भुण्डडारे॥ किते मुण्ड
के तापसे आख हैगे। किते आल है लाल है भाल हैगे॥ दोहा॥
गदा यष्टि तोमर खडग भल्लपरश्वध बान। शक्तिआदि आयु-
ध अखिल परे अमन्द अमान॥ कवित्त॥ केते मेद मज्जा मांस
शोणितके कीचपरे डरे दावानल बीच दारुसे लखात हैं। केते
नके गातचलें ऊरध रुधिरधार रगबारि भार से फुहारे से बि-
भात हैं। केते भटकत पटकत गात मरेजात जैसे चटकत जे
उपल आगिपात हैं। कितने सुफब परे शोणित में ऊबि ऊबि
ढवढव करिकेबेढव डूबिजातहैं॥ दोहा॥ मणिमय भूषण नृपन
केपरे किरीट अनेक। लखोपरे अगणित डरे मरेनृपतिगहिटेक॥
सोरठा॥ यहिप्रकार रणभूमि दरशावत प्रभुपारथहि। चपलहय
नकरिघूमि गयेधर्मनृपके निकट॥ दोधक॥ देखिमहीपति आनँद
ओले। पारथसों प्रभुयों हँसिबोले॥ पारथधर्म महीपहिदेखो।
हैअतिपूरित कोपबिशेखो॥ लै दल हयदल पैदलभारी। जात
चलो नृपजूह निहारी॥ सात्यकि आदिगणेमम योधा। तेसँग

जात कियेअवरोधा ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्न आदिकभटन लखोकरत अतियुद्ध । बढ़िबढ़ि दुहुंदिशिकेसुभट लरतमरत अतिक्रुद्ध ॥ तोटक ॥ लखुपारथ भीमउदय रविसो । परसैनदिशा दिवमेंप्रबिसो ॥ तमतोम सुबीरन नाशतहैं । दुर्योधन चोरहि शासतहैं ॥ भटयूथ कुमोदिनको दुखदे । निजसैनिक कोलनको सुखदे ॥ गज सागर जीवनशोषतहैं । जयबारिसकी बिधिपोषतहैं ॥ दोहा ॥ लखुपारथ सूतज प्रबल गरजतमेघ समान । शृंजयपांचालन बधत बरषि बारिसम बान ॥ देखोपारथ द्रोणसुत टंकारतकोदण्ड । पांचालनपहँ जातहै मारतण्डकोचण्ड ॥ जयकरी ॥यहिबिधि कहत सुनोअभिराम । केशव अर्जुन सुखमाधाम ॥ जाय धर्म भूपतिकेपास । लहि भूपहि लहिपरम सुपास ॥ लगेलरन मम दलसों जूटि । बांधि सुभटन जयलीबोऊटि ॥ तेहिक्षण भयोघोर संग्राम । कटे असंख्यन भट बलधाम ॥ ससयन धृष्टद्युम्न भट उद्द । लागो करन कर्णसों युद्ध ॥ दोऊ गणे बिदित बाणैत । दोऊ धीर धुरीन धकैत ॥ दोऊ बरषि दुहुनपैबान । कीन्हें तहां कठिन घमसान ॥ हनिक्षुरप्रशर सूतज आसु । दीन्हों काटि शरासन तासु ॥ धनुषकाटि मारयो नवबान । धृष्टद्युम्न तबगहि धनुआन ॥ मारतभयो कर्णकेगात । सत्तरि शायक अति अवदात ॥ तापहँ कर्णदयो शरछाय । बरषो बिशिख तीन दृढ़घाय ॥ करिताके बधको अनुमान । कर्ण चलायो बाण अमान ॥ बज्र समान जात लखिताहि । सात्यकि काटिदियो शरबाहि ॥ दोहा ॥ निज अमोघ शरब्यर्थलखि अतिरिसगहि राधेय । भयोसात्यकि सुभटपहँ वर्षतबाण अमेय॥तिमिसात्यकिभटकर्णपहँ बरषोबाण अथोर । यहिप्रकार दोऊसुभट कियेयुद्धअतिघोर ॥ सोरठा ॥ इतनेमेंतहँआय अश्वत्थामा बिदितभट। देतभयो शरछायधृष्टद्युम्न सैनेशपहँ ॥ चौपाई ॥ शरबर्षत इमिटेरिसुनायो । आजुकालतो सम्मुखआयो ॥ जोक्षणएक थिरतममघोरे । तौयमलोक जात

मनमोरे ॥ भागिबचैके पार्थबचावै । नातरु द्विजबधको फलपा-
वै ॥ सुनि अश्वत्थामाकी बानी । बोलोधृष्टद्युम्न अभिमानी ॥ द्रो-
णहिं बध्यो बजाइ सुभेरी । तोकहँ बधतमोहिं का देरी ॥ इमि
कहि धृष्टद्युम्न दलनायक । भयो बिप्रपहँ बर्षत शायक ॥ इमिभे
उभयबीरशर बर्षत । कोऊभयो न नभदिशि दर्शत ॥ बिबिध
भांतिसों धनु बिधिठाटे । अगणित शस्त्र शस्त्र सोंकाटे ॥ करि
लाघव क्षत्री अरिनाशन । दियोबिप्रको काटिशरासन ॥ तुरतहि
बिप्र औरधनु गहिके । बर्षोबिशिख भागुमति कहिकै ॥ मारि
क्षुरप्रबाण अतिचोखो । काट्यो तासुधनुष अतिनोखो ॥धृष्टद्युम्न
तबगदाचलायो । बिप्रबीचही काटिगिरायो ॥ तुरगनमारि काल
बशकीन्हों । सूतहिबधि यमपुर पथदीन्हों ॥ धृष्टद्युम्नतब सोरथ
तजिकै । खड्गचर्म गहिचलो गरजिकै ॥ तबशरबर्षि बिप्रधनु
धारी । काट्यो खड्गचर्म रणचारी ॥ फिरि अगणित शायकतेहि
हनिकै । मोहित समकरिबिलसो बनिकै ॥ दोहा ॥ करितेहि मोहित
धनुषतजिगहि तीक्षणतरवारि । कूदिसुरथतेचलतभोबधिबोतासु
बिचारि ॥ यहलखि केशव पार्थ सों कहेबिप्र जयचाहि । द्रुपद
सुतहि मारन चहत बेगि बचावो ताहि ॥ इमिकहि केशव बेग
सों गये सुरथलै तत्र । पार्थ बिप्रके गातमें हन्यो अनेगनिपत्र ॥
अर्जुनके बरशरनसों ह्वै बेधित द्विजबीर । फिरि रथपैचढ़ि धनुष
गहि बर्षन लागो तीर ॥ सोरठा ॥ तहां बेगसोंजाय भटसहदेइ
उदारमति । रथपैलये चढ़ाय धृष्टद्युम्न रणधीर कहँ ॥ चौपाई ॥
गहिअति क्रोध बिप्र उतकर्षो । अबिरल बाण पार्थपहँ बर्षो ॥
बहुशर काटि पार्थ तहँ तुरमें । बरशर हन्यो बिप्रके उरमें ॥ ह्वै
बेधित मूर्च्छासों पगिकै । द्विजभटरहो ध्वजासों लगिकै ॥ सोलखि
सूतसुरथ लैभागो । पारथ सुभटन मर्दनलागो ॥ भूपति सुनो
भीमतेहि पलमें । अति बिक्रम कीन्हों ममदलमें ॥ बध्यो असं-
ख्यन गज मतवारे । अगणित करभुज शीश बिदारे ॥ अगणित

भटनबिरथ करिनाश्यो । अगणित पैदर यूथसँहाश्यो ॥ अगणित तुरगतुरग असवारन । बध्योमारिशर शिलाबिदारन ॥ येरणकर्म भीमकेगाढ़े । देखिकृष्णपारथ रहिठाढ़े ॥ अनुपम सुभट जानि मुद्लीन्हें । केशव बहुत प्रशंसाकीन्हें ॥ इमि निजदल मधिभी-महिंगाजित । देखिदेखि निजसैनपराजित ॥ करिअतिक्रोधकर्ण धनुकर्षत । चलो भीमपहँ शायक बर्षत ॥ सोलखि उतके भट रणचारी । बढ़ि सूतजसों भिरेप्रचारी ॥ धृष्टद्युम्न सात्यकि भट नागर । जन्मेजय भूपति बलसागर ॥ सुभटशिखण्डी अमर-षपूरे । और प्रभद्रक योधारूरे ॥ तिमि यहिदिशिते योधाबढ़ि बाढ़ि । तिनसोंभिरे क्रोधसोंमढ़िमढ़ि ॥ दोहा ॥ भिरोशिखण्डी कर्ण सोंभिरेनकुल वृषसेन । चित्रसेनसों भिरतभे धर्मभूप जयलेन ॥ भिरोदुशासनसों गरजि धृष्टद्युम्न रणधीर । भिरिउलूक सहदेव येकियेयुद्ध गंभीर ॥ सोरठा ॥ सात्यकि शकुनिनरेश अति संगर कीन्हेतहां । युधामन्यु भटवेश गौतमसों भिरि लरतभो ॥ चौपाई ॥ उतमौजा कृतबर्मा भिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हेतहँ थिरिकै ॥ भीम सेन बिचरत कुरुगणमें । रह्योप्रलय पूरित तेहिक्षणमें ॥ कर्णतहां अतितुरतालीन्हो । बिरथबिधनुष शिखण्डिहि कीन्हो ॥ करिअ-तियुद्ध अरथधनुह्वैकै । भगोशिखण्डी बचब न ज्वैकै ॥ बिमुख शिखण्डिहि करिजगजेना । सूतजभो मर्दत परसेना ॥ भटउलूक अतिबिक्रम करिकै । भिरिसहदेव सुभटसों लरिकै ॥ बिरथबिधनु ह्वै रणतजि भागो । और सुरथ चढ़ि बिचरन लागो ॥ शकुनि सात्यकी भिरि तेहिठाईं । अति संगर कीन्हें सुनुसाईं ॥ लरितासों बजवावतबाजा । भगो बिरथह्वै सौबल राजा ॥ तासुत भूपभीम अतिबलसों । करिअतियुद्ध भगो तेहिथलसों ॥ कृपाचार्य्यबरणों भटतासों । युधामन्यु नृपलरि पुरतासों ॥ ह्वैकै बिधनु बिकलह्वै लजिकै । गोनिजदलमधि सम्मुख तजिकै ॥ उतमौजा भूपति कृत बर्मा । घोरयुद्ध कीन्हें त्यहिथर्मा ॥ कृतबर्माके शरसों भिदिकै । सोनृप

मूर्च्छिरहो ध्वज छिदिकै॥ भागो सूत सुरथलै सादर। गोलिंज दल माधिकै मनकादर॥ दोहा॥ महाराज यहिविधि भयो घोर युद्ध तेहियाम। सुनतरहे जिमि पूर्वभो देवासुर संग्राम॥ ऐसो भीषमयुद्ध लखि शकुनि दुशासन बीर। गजानीक सहगर्जिकै चले भीमके तीर॥ सोरठा॥ तोसुत भूप अधीस त्यहिक्षण तासों लरतहो। तेहिभगाय भटभीम गर्जिचलो गजसैनपहँ॥ तोमर॥ तहँ भीमधनु टंकारि। बहु दिव्य अस्त्र प्रहारि॥ गजसैनमें तेहि काल। भो करत कर्म कराल॥ बहुकिये कर पग क्षीन। बहुकिये दशन बिहीन॥ बहुबधे ग्रीवाफारि। बहुबधे कुम्भ बिदारि॥ शरबज्र सरिस बिचारि। बहु गजनके उरमारि॥ गतप्राणकरि पणधारि। भो देत महिपै डारि॥ बधि गजारूढ़ अनेक। भो डारिदेत सटेक॥ गहि भूरि भयको भार। गज करतभे चिक्कार॥ धुनि महा आरत छाय। भागिचले गज समुदाय॥ बहु बमत शोणित नीर। तहँखरे पूरित पीर॥ मनु कढ़त सानु अगार। बहु भारतीकी धार॥ तहँ भीम योधा पर्म। नृप कियो जो रण कर्म॥ नहिंजात भाषो तौन। मन चहत रहिबो मौन॥ तेहि समय पार्थ अमान। भो करत अति घमसान॥ गज वाजि सुभट समूह। भो बधत ताजि शरजूह॥ तेहि ठौर भू भरतार। भो महा हाहाकार॥ दोहा॥ भीम पार्थको निरखिकै अति रण कर्म कराल। सदल धर्मनृप पहँ चलो दुर्योधन क्षितिपाल॥ धर्मनृपति पहँ भीर लखि सदल नकुल सहदेव। भिरे भूपकी सैनसों धृष्टद्युम्न बरभेव॥ सोरठा॥ धर्मभूप पहँ जात अर्धसैन सह नृपहि लखि। भीम सुभट अवदात गयो प्रचारत ठौरतेहि॥ चौपाई॥ एक क्षोहिणी सेना परकी। नृप पहँ आवत लखि बल बरकी॥ शायक बर्षि कर्ण धनु धुनिकै। आड़त भो सबकोबध गुनिकै॥ दुर्योधन भूपतिसों भिरिकै। भट सहदेव चक्रसम फिरिकै॥ तीस बाण भूपतिके तनमें। मार्‍यो नृपको बध गुणिमनमें॥

रुधिरभरो भूपतिहि निरेखी । कर्णवीर अनरथ अवरेखी ॥ करि अबिरल शर झरि सब थलमें । बध्यो असंख्यन भटपर दल में ॥ जेहि बिधि दावानल लपटन सों । दाहै बिपिनजाल झप टनसों ॥ तथा कर्ण शरझरिके झारण । बध्यो असंख्यन नर हय बारण ॥ दशदिशि बाण जालसों मढ़िकै । चलोधर्म भूपति पै बढ़िकै ॥ धर्मभूप तेहि देखि प्रचारे । तीक्षणबाण पचास प्रहारे ॥ अगणित बाण बर्षि ताऊपर । दिये डारि बहुभट बधि भूपर ॥ तब सूतज अतिबल बिस्तार्‌यो । अगणित बाण भूपतिहि मार्‌यो ॥ तिनबाणनसों बेधित ह्वैकै । नृपति युधिष्ठिर धीरज ग्वैकै ॥ कहे सारथीसों मनभाई । सुरथ चलाइ अनत चलु भाई ॥ यहसुनि सूत सुरथ लैभागो । कर्ण शत्रुदल मर्दन लागो ॥ धरु धरुजान न पावै बकि बकि । इतके सुभट चले तेहि तकितकि ॥ दोहा ॥ सात सहस कैकय सुभट अरुपांचाल अनेक । आड़े तिन मम भटन कहँ गहि जीतनकी टेक ॥ अतिकर लाघवकरि तहांकर्ण पराक्रम ओक । कैकय भटबधि पांचशत भो भेजत यमलोक ॥ सोरठा ॥ लखिमर्दत निज सैन धर्मनकुल सहदेव फिरि । शरबर्षत बलऐन भिरे सूतके सुवनसों ॥ तहँ सूतज जयऊटि बर्षिबाण चरि चक्रसम । धर्म नकुलसों जूटि बिरथ बिधनु करि देतभो ॥ चौपाई ॥ बिरथ बिधनु ह्वै ते चरिपथपै । गे सहदेव सुभट के रथपै ॥ तिन्हैं बिरथ लखि शल्य महीपति । कह्यो कर्णसों बाणी दीपति ॥ अति सुकुमार भूपसों भिरिकै । सूतज कहा लरत इत थिरि कै ॥ जासु जीतिबेको करि शोधन । पाल्यो तोहिं महीप सुयोधन ॥ तेहि पारथ सों भिरि लरुभाई । प्रगट होय जहँ तो मनुसाई ॥ कुन्तिहिबर दीन्हेंसो तजिकै । भूपहि चाहत बधन गरजिकै ॥ भीम सुयोधन नृपसों लरिकै । चाहत बधन कालसम चरिकै ॥ बेगि बचाउ नृपहिं तहँ चलिकै । भीम पराक्रम नदमें हलिकै ॥ यह सुनि कर्णकह्यो उत चलिये । गोतहँ शल्य गहेगति भलिये ॥

कर्णकाल के मुखसों कढ़िके। भूपति महाशोचसों मढ़ि के॥ तीक्षण शर घातनसों पीड़ित। जायसुडेरामधि अतिब्रीड़ित॥ रथसों उतरिसेजपहँ परिके। कह्योनकुलसों धीरजधरिके॥ गयो भीमपहँ कर्णअकादर। तुमयुगबन्धु जाहुतहँसादर॥ यहसुनि ओर सुरथपै चढ़िचढ़ि। तेगहिगर्ब गयेतहँ बढ़िबढ़ि॥ भट अश्वत्थामा तेहिक्षनमें। भिरिपारथसों गर्बितमनमें॥ दिव्य शरनकी बर्षाकरिकै। अतिरणकियो क्रोधसों भरिकै॥ दोहा॥ अक्षशरासनपक्षमें दक्षउभय रणधीर।लक्षपरस्पर करिभयेबर्षत अबिरलतीर॥ अतिबिक्रमकरि फाल्गुन काटिशरनके जाल। द्रोणतनय भटसिंहको काट्यो धनुष बिशाल॥ सोरठा॥ नृपतब बिप्रअमान अतिरिसकरि गहि औरधनु। अस्त्रअइन्द्र महान तजतभयो भटपार्थपहँ॥ चौपाई॥ तेहिक्षणपार्थ सुभटबलभारो। अतिकर लाघवता बिस्तारो॥ सानँद अस्त्रअइन्द्रहि त्यागो। अस्त्रअइन्द्र बारिमुदपागो॥ त्याग्योजौन अस्त्र द्विजनायक। तजिसोअस्त्र पार्थदृढ़घायक॥ कीन्होंतौन अस्त्रको बारण। पार्थ सुभट बरव्यूह बिदारण॥यहिप्रकार दोऊपणधरिकै।दिव्यशरन की बर्षा करि के॥ महा युद्ध कीन्हें तेहि क्षनमें। जो लखि सुर बिस्मितभे मनमें॥ करिकर लाघव अश्वत्थामा। शायक तीनि परम अभिरामा॥ हन्यो कृष्ण के दक्षिण भुजमें। लखि पारथ अति अघगुणि द्विजमें॥ बर्षिबाण तुरगन बधिडार्‍यो। गुरुसुत जानि न तेहिशर मार्‍यो॥ बर्षि असंख्यन अबिरल बाणन। बध्यो अनेगन सुभट अमानन॥ रथी सारथी भट हयसादी। अगणित बध्यो गजस्थ प्रमादी॥ तौलगि बिप्र हयन करि यो- जित। धनु टंकारि बर्षिशर ओजित॥ भिरो पार्थसों गरजि प्रचारत।जय लीबोबहु भांति बिचारत॥ शायक अक्ष बक्षमधि मार्‍यो। तहँ पारथ अति रिसि बिस्तार्‍यो॥ शायक बर्षि मा- रिशर चोखो। काट्यो द्विजको धनुष अनोखो॥ तब द्विजतज्यो

परिघ अतिभारी । काट्यो ताहि पार्थ धनुधारी ॥ तबद्विज और शरासन करष्यो । अबिरल बाण पार्थ पहँ बरष्यो ॥ शतशर केशवके तन मारे । पारथ कहँ त्रयशत अनियारे ॥ तहँ पारथ अति कोपित ह्वैकै । बध्यो तासु सूतहि बिधि ज्वैकै ॥ नृप तेहि समय द्रोणसुत योधा । आपुहयनको करि अवरोधा ॥ पार्थ कृ-ष्णपै शरको बर्षा । करत भयो गहि अति उतकर्षा ॥ सो लखि सबभट अचरजमाने । द्रोणसुतहि बहुबार बखाने ॥ सोलखि हँसिपारथ रणचारी । काटिदयो बरबाग बिचारी ॥ ह्वैअबन्ध हय रथलैभागे । भगेअसंख्यन भटभयपागे ॥ तेहिक्षण पार्थ बर्षिशरक्रूरे । अगणित भटनमारि महिपूरे ॥ हाहाकार मचो ममदलमें । कोऊथिर नरह्यो निजथलमें ॥ तिमिपांचाल भटन केमारे । नृपममसुभट भगेभयभारे ॥ सोलखि दुर्योधन नृप आरज । कह्योकर्णसों निजजय कारज ॥ ममदल भगतदेखि यहिरनमें । तुमनाहिंकानि गहत कछुमनमें ॥ यहसुनि कर्णमद्र रणपतिसों ॥ कहतभयो इमिगौरवअतिसों । हेनृपपुरुषसिंहमुद लीजै । अबतुरगन अतिचञ्चल कीजै ॥ धँसिपरदलमें ओज बढ़ाई । लखोमोरि बिक्रमप्रभुताई ॥ इमिकहि बिजयनाम धनु करष्यो । शत्रुसैनपर शायकबरष्यो ॥ दोहा ॥ भार्गव अस्त्रअ-मोघको करिप्रयोग तेहिकाल । भोबर्षत अरिसैनपै कोटिनशर बिकराल ॥ कैयकअर्बुद बिशिषबरशत्रुसैनमाधिडारि । अगणित हयगजभटनबाधि दीन्होंमहिपैडारि ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षणहाहाकार भयो पाण्डवी सैनमधि । बही रुधिर की धार रुण्ड मुण्ड जल जन्तुयुत ॥ रोला ॥ घोर धुनि निजसैन माधि सुनि पार्थधीर धुरीन। कहे केशवकर्ण के ढिग चलो रथलैपीन ॥ कहे केशव सूत सुतके शरनसों अति पीड़ि।युद्धतजि नृपधर्म डेरन गयोमनमेंब्रीड़ि॥ शीघ्रतहँ चलि देखिभूपहि बहुरि दलमेंआय । कर्णको बधकरो तीक्षण शरनकी झरिलाय ॥ बचन यहसुनि कहे पारथ अवशि

चलिये तत्र । तुरित रथलै कृष्णगेहो भीम बिलसत यत्र ॥ दे-
खि भीमहिंकहे पारथकहां धर्म महीप । सैनमधि नहिं परतलखि
कमनीय कुरुकुलदीप ॥ भीम बोले सूत सुतके शरनसों भिदि
भूप । त्यागिधीरज बिकल डेरनगयेहैं गतरूप ॥ कहे अर्जुन
भूपतिहि बिनु लखेमोहिं न चैन । जातहैं हम भूपढिग इतरहो
तुम बलऐन ॥ क्षत्र धर्म निधान सब बिधि प्रबल तुमजगजैन ।
रहोगे तुम तहांनृप जय अवशि संशय हैन ॥ भीमसों इमिभाषि
पारथ शीघ्रडेरन जाय । उतरिरथसों धर्म नृपके गहे कोमल
पाय ॥ कृष्ण पार्थहि देखि भूपति बधो कर्णहिजानि । परम आ-
नँद भरे बोलतभये जय अनुमानि ॥ परम दुर्जय शत्रु जगत
प्रसिद्ध धनुधर एक। कालसम मम सैनको जो नाशकरनसटेक ॥
शिष्यजो भृगुरामको सबदिव्यअस्त्र निधान । रहोतेरहवर्ष मम
हिय जासुभय परधान ॥ तासुबधकरि आयतुम मोहिंदये आ-
नँद पर्म । आजुबेधितभयो ममअरिभूपको हियमर्म ॥ नकुल
सात्यकि धृष्टद्युम्नहिं आदिभट बलभौन । लखततिनके मोहिं
कीन्हों व्यर्थ बलनिधि जौन ॥ बिरथकरिकै कह्योबहु दुर्बचन
कठिन कठोर । जाहि सुधिकरि ग्लानित्यागन करतनहिं मन
मोर ॥ सहितकेशव पार्थकहँ हमबधब रचिशरजाल । कहतहो
जोगर्बगहि रणधीर बीरबिशाल ॥ द्रौपदिहि दुर्बचन बहु जो
कह्योगहि अतिगर्ब । बध्योतुम तेहिकर्णकहँ किमियुद्धकरिइमि
पर्ब ॥ त्रातारजो निजसैन परदलपारको गन्तार । अपारबिक्रम
चारजो ममसैनको हन्तार ॥ शक्रसमबलवानजो यमतुल्यपरम
अमान । बध्योकिमि तेहिसूतजहि तुमकहो तौनबिधान ॥ शक्र
बरुण कुबेरसम जोयुद्धबिद बिख्यात । ताहिकर्णहिं बध्योकिमि
तुमकहोसो अवदात ॥ कर्णहन्ता पार्थको इमिकहतहैं जेहिसर्ब ।
बध्योतुम केहिभांतितेहि किमिगिरोसो तजिगर्ब ॥ इबिधिकेसुनि
बचनधर्म महीपके तेहिकाल । चिन्तिमननें फालगुन इमिकहे

बचन रसाल॥ रहे हम संसप्तकन सों लरत रचि शरसेत। आय मोसों भिरोतहँ सुत द्रोणको जयहेत ॥ जीति तेहि बधि सुभट अगणित रुधिरनद उमँगाय। युद्धभार समर्पिभीमहिं बाणशर समुदाय ॥ आइइत अबदेखि आपुहि कुशलफिरि इत जाय। आजु कर्णहिं बधब त्यागौशोच कुरु कुल राय ॥ कर्णके बरशरनबेधित धर्मभूप अचैन। बचन यह सुनि महारिसि गहिकहे ऐसे बैन ॥ पेखिबिक्रम कर्णको निजसैन बिचलत देखि। युद्ध तजि तुम इतैआये बाचिबो अवरेखि ॥ बृथाही तुम किये यहि जग पृथाके उरबास। जौन कर्णहिं बध्यो कीन्हें ब्यर्थ धनुष अभ्यास ॥ द्वैत बनमें कहे कर्णहि बधब लरिहम एक। तौन तुम अब छोड़ि भीमहि भजेतजि निज टेक ॥ कर्णसों नहिं सकबहम लरि भाषते जो पूर्व। तौन बनते आइहम इतरचित संगर गूर्ब ॥ रही चौदह बर्ष तो बल जीतिबेकी आस। आजु सो कढ़ि भई बाहर पूरि ममहिय त्रास ॥ युद्धकरि नाहिंसके तो गाण्डीवधनु जो ताहि। कृष्णको दै डारते तौ कृष्ण बधते ताहि ॥ जन्मते तो सातयें दिन गगन बाणी पर्म। सुन्यो कुन्ते भयो तो सुत भरो क्षात्र सुधर्म ॥ नागनर गन्धर्ब असुरन जीतिबेके योग। भयो रबि सम तेज याको करिहि महिपै भोग ॥ धनुर्द्धर नहिं भयो ऐसो नहीं ह्वैहै और। तिहूं पुरके धनुर्द्धर को होयगो शिरमौर ॥ देवतनको बचन सोऊ परो झूठो जानि। युद्धतजि तुमबिचलिआये कर्ण को भयमानि ॥ आजु धिक् तव बाहुबल को शरनको धिक्भूरि। धनुषबर गांडीवको धिक् तूरिडारो दूरि ॥

दोहा ॥ धर्मभूपके बचनये सुनिअर्जुन अनखाय। पाणिधरे तरवारिपहँ महाक्रोधसों छाय ॥ करलाघव तरवारिपहँ देखिकृष्ण अनुमानि। कहेसमयबिनु खड्गकत गहत कहा अनुमानि ॥

सोरठा ॥ युद्धकरनकेहेत नाहिंकोऊ सन्नधइतै। करिकरतलपैदेत कहोपार्थ कारणकहा ॥ जयकरी ॥ कृष्णचन्द्रके सुनियेबैन। कहत

भये पारथबलऐन ॥ हमहैंकिये प्रतिज्ञापूर्व । जोनिरदी ममबि-क्रमगूर्ब ॥ धनुगांडीवहि निदरि अलेन । जोकोउभाषिहि और हिदेन ॥ ताकोबध हमकरबसटेक । करब न अनुचित उचितबिबे-क ॥ सो सबकियेधर्म क्षितिपाल । हमअबइन्हें बधबयहिकाल ॥ यहसुनिकहे कृष्णअवदात । अर्जुन करनचहत उतपात ॥ जानि परतसुनि बचन असिद्ध । नहिंसेये पटुपण्डितवृद्ध ॥ जोनहिंकबहूं कहिबे योग । चाहत कीन्हों तौन प्रयोग ॥ मिथ्या आदिक जिते अनिष्ट । हिंसा तिनसों अधिक गरिष्ट ॥ सो तुम चाहत कियो अचाय । बधिबो धर्मनृपति सो भाय ॥ यह नाहिं सत्यव्रता हे तात । होइहि अपकीरति बिख्यात ॥ कौन काज करिबो यहि द्यौस । गहत कहा करिबेको हौस ॥ तुमकहँ उचित न कहिबो एहु । अरिदल नाशनको प्रणलेहु ॥ कर्णहिं बधिबेको प्रणजौन । कीन्हेंकरो सत्य अबतौन ॥ ब्यासहि आदिक वृद्ध महान । यहि बिधि भाषत धर्म बिधान ॥ पांचठौर जनि मिथ्या भाषि । लहत न पाप पुण्य अभिलाषि ॥ दोहा ॥ सांचकहे जेहि ठौरमें जीव जानको योग । अरु सर्बस हरिजानको लागत जहां प्रयोग ॥ अरु बिवाहके कार्य्यमें अरु रतिसमय सुवेश । बिप्रहेत मिथ्या कहे होत न अघको लेश ॥ जेठो भूपति धर्ममय तासु जीवको घात । चहत मूढ़सम नाहिं चहत लीबो सर्बस जात ॥ जयकरी ॥ पार्थसुनो जेजन मतिमान । तेसब करत काज अनुमान ॥ हिंस हु किये पुण्य कहुं होत । सत्यकरत कहुं पाप उदोत ॥ निमि दोऊकरि ब्याध बलाक । लह्यो पुण्य पातक परिपाक ॥ यहसुनि पार्थ कह्यो तजि गास । कहो प्रगटकरि यह इतिहास ॥ कृष्णउवाच ॥ ब्याध बलाक नामहो एक । सो मृगहिंसक हो गहि टेक ॥ एक दिवस मृग मिलो न ताहि । जलढिग श्वान अरिहिसों चाहि ॥ बध्यो मरत ताके तेहि ठौर । भयो दिब्य पुष्पनको झौर ॥ दिन लहि देहत्यागि मतिरास । पायो ब्याध स्वर्गको बास ॥ करिदिव

भोग भूमिपै आय । भो द्विज कौशिक गोत सचाय ॥ नदीतीर बनमें बसि तौन । रहो करततप आनँद मौन ॥ एक दिवस तस्कर भयपाय । ताढिग दुरे सधनजन आय ॥ तेहि दिनमें तस्कर समुदाय । आये हरिबेमें मनलाय ॥ बूझे बिप्रहिकहँ जन जूह । दियो बताय बिप्रकरि ऊह ॥ सत्य कहनको राखे टेक ॥ गुण्यो न धर्म अधर्म बिबेक ॥ साति वकता द्विजसों लहि भेद । गे तहँ तस्करगण तजि खेद ॥ बध्यो तिन्हैं धन लिये छुड़ाय । बिप्र लह्यो पातक अधिकाय ॥ तन तजि लह्यो नर्क अतिघोर । ब्यर्थभयो तपधर्म अथोर ॥ दोहा ॥ हिंसाकरि वहगति लह्यो सत्य कहे गतिएहु । इमिबिधि दान असतिहिदये पाप होत गुणिलेहु । पारथधर्म अधर्मको सूक्षम गति परधान । ताते तहँ अनुमान करितजोबचनअभिमान ॥ चौपाई ॥ कृष्णचन्द्रकी सुनियहबानी । अर्जुन कहतभये अनुमानी ॥ प्रभुजो आपुकह्योसो सहिये । पै अबइतो बूझिकै कहिये ॥ जातेरहै प्रतिज्ञासोऊ । मोकहँ अधम कहैनाहिंकोऊ ॥ यहसुनि कृष्णकहे सुनिलेहू ॥ ऋषिअंगिर को सम्मतएहू ॥ मानभंग मानिनको करिबो । सोबध समपातकको भरिबो ॥ तातेनिदरिबोलि क्षितिपालहि । पालहु बचन प्रतिज्ञा आलहि । ह्वैकैबिदा शीघ्रअबचलहू । सूतसुवनकेगातहिदलहू ॥ ऐसेबचन कृष्णके सुनिकै । अर्जुनकोप लोपकरि गुनिकै ॥ तुम मति भूपकहो इमिबानी । रहोमौन बिक्रमअनुमानी ॥ रहतकोश भरिरणते न्यारे । यहिबिधि बोलतबिना बिचारे ॥ ऐसोभीमकहै तौसोहै । जोगजयूथ मर्दिदलमोहै ॥ जौनभीम बधि अगणित राजा । भेज्यो यमपुर सहितसमाजा ॥ तुमकीन्हेका बिक्रमरनमें । निदरतहमैं कहागुणिमनमें ॥ तोहितलागि दिशासब जीते । सो तुवजुआँ खेलिफिरिरीते ॥ तोहित हमदुखसहेघनेरे ॥ सोतुमकहे बचनबिषमेरे ॥ हयगजनृप भटबधे अलेखे । सो समकाज न तुम अवरेखे ॥ दोहा ॥ धर्मनृपति सों भाषि इमि पारथ आनि

गलानि । निजबध करिबोचहतमे जीवनअनुचित जानि ॥ सो लखिकेशव नीतिकहि कियेनिवारण तौन । पार्थ आत्मबध भ्रात बध तुल्य पापको भौन ॥ तब पारथ नृपसों कहे उचित बचन अवराध । पिता सरिस गुरु बन्धुनृप गुणोन ममअपराध ॥ इत-नेमें उठिसेजते रिसकरि धर्मनरेश । कहे पार्थ ममसंगतुम लहे न सुखको लेश ॥ अब हम बनको जातहैं तुम भीमहिकरि भूप । लहोमोद मनमान निति निज बिक्रम अनुरूप ॥ यहसुनि केशव नृपतिकहँ सबिधि मरम समुझाय । बैठाये शुचिसेजपहँ दारुण दुखहि दुराय ॥ सजल नयन पारथगहे धर्म नृपतिके पाँय । स-जल नयन नृप पारथहि हियसों लये लगाय ॥ इमिमिलि भूपति कर्णको दीन्हो कर्म सुनाय । मिटिहि कर्णको बधसुने दुख इमि कहे बुझाय ॥ सोसुनि पारथ कर्णके बधको करिपण पर्म । धर्म नृपहि मोहित किये पालक क्षत्रीधर्म ॥ यह सुनि केशव नृपति सों पार्थहि बिदाकराय । दारुकसों सजवायरथ चढ़े सुशंख ब-जाय ॥ बिप्रन सों स्वस्त्ययन सुनि सगुण लखतह्वै तुष्ट । चले कर्ण के बधनकी करत प्रतिज्ञा पुष्ट ॥ अतिबर बिक्रम पार्थको वर्णत श्री यदुराय । चले कर्ण के बधन की दृढ़ता करत सचा-य ॥ चौपाई ॥ पारथएक बीरतूजगमें । तोबिक्रम सागरसमअग में ॥ तुम जेहिजीति बधे रणमाहीं । जीतनयोग ताहि कोउनाहीं ॥ नृपश्रुतायु अयुतायु प्रमादिक । भीषम अरुभगदत्तहि आदिक ॥ बधेअसंख्यन नृपतुम रनमें । जेहिगुणि उपजतबिस्मय मनमें ॥ तुमबहुबार द्रोणकहँ जीते । शल्यहि जीतेसुजय पिरीते ॥ बिन्दा बिन्द सुदक्षिण राजा । बधेतिन्हैंतुम्ह सहितसमाजा ॥ दूरिपात बेधन करलाघव । अरुनिशङ्कबल हैजिमि राघव ॥ हैंतवदिव्य अस्त्रअति घातिके । परमअमोघ जीतिकी जातिके ॥ सुरगन्धर्ब असुरके जेता । हौतुमपारथ धनुबिधिबेता ॥ यहगाण्डीव दिव्य धनुसारथ । जेहिगाहि युद्धकरत तुमपारथ ॥ देवनहूमें धनुधर

तोसम । नहिंहमलखत यथातुम अनुपम ॥ तुमअजेय जेतासब
हीके । भरेबीररस पूरणसीके ॥ पारथतो धनुकी धुनिसुनतें ।
शत्रुनबनत हारिनिज गुनतें ॥ तोशरधारि होत अरिमोहित ।
जिमि बड़वानल मुख परिवोहित ॥ तो रथघोष सुनत जग
जेना । केहिअतिबल जे सकुचितमेना ॥ तुम अतिचण्ड सूर
समसोहत । अरिदल द्रविउलूकसम मोहत ॥ दोहा ॥ पारथ तो
सम जगत में है सूतज भटएक । कुंतीबली सब अस्त्रबिद गहे
जीतिकीटेक ॥ तेज बाणमें अग्निसम क्रोधेकाल समान । पुरुष
सिंह अतिशूरभट अभिमानी बलवान ॥ दुर्योधनको परमहित
तुवबैरी अतिमान । हैअबध्य सुर असुरते जेतातासु न आन ॥
सोरठा ॥ ताके बधिबे योग हो पारथ तुम बिदित भट । करिअति
अस्त्र प्रयोग लरि सटेक कर्णहि बधो ॥ मनोरमा ॥ इमि पारथसों
कहि केशव मानद । फिरि भाषतभे गहिकैअति आनँद ॥ दिन
सत्रह आजुभयो इतयोधन । नरबारण बाजिनको बधशोधन ॥
अति क्षीण भयो दुर्योधन को दल । तिमि क्षीण भयोदल तो
परके बल ॥ नहिं जीवनआश गहे भटएकव । गहि आयुध
को भयआनत नेकव ॥ दोहा ॥ दुर्योधन को प्रबलदल को भट
जीतनहार । बिनु पाण्डव बिनु द्विरदको सहै द्विरदको भार ॥
तुमते रक्षित द्रुपदसुत दोऊबन्धु अमान । भीष्म द्रोणको बध
किये जोनसाध्य यहिमान ॥ चौपाई ॥ कृपकृतवर्मा द्रोणाचारज ।
शल्य शकुनि वृषसेन अनारज ॥ कर्ण सुयोधन अश्वत्थामा ।
दुश्शासनहिं आदिबलधामा ॥ तिन्हैंजीति बरब्यूह बिदारत । को
भटप्रबल सैंबवहिमारत ॥ तुमऐसो अद्भुतरणकरता ॥ परभटरुधिर
धार महि भरता ॥ दरदतुषारस यमन समाठर । दार्बमि सार-
अंध अरुपाठर ॥ भटपुलिन्द पार्वतीप्रबीरा । अरु अनूपवासी
रणधीरा ॥ म्लेच्छकलिंग किरातहि आदिक । दक्षयुद्धमें परम
प्रमादिक ॥ बिनुपाण्डव तिन्हकहँ कोजीते । दुर्योधन दलसुभट

नरीतै ॥ दशहजार बरयोधनहतिकै । भटअभिमन्यु मरयोरण अतिकै ॥ लरिदशदिवस पुरुषपञ्चानन । भीषम बधिलाखन भटबानन ॥ भिदिसब गातशरनपरपरिकै । राजतयुगुति योगकी धरिकै ॥ द्रोणाचार्य्य पांचदिनलरिकै । मारिअसंख्यन भटपण करिकै ॥ लरिनिशि मध्यमहा रिसलीन्हें । दिव्य अस्त्रकी बर्षा कीन्हें ॥ द्रुपद बिराट आदि बहुराजन । बध्योसहित सामन्त समाजन ॥ मरो पांचये दिन थिर रहिकै । धृष्टद्युम्न के कर बध लहिकै ॥ तथाआजु सूतज धनुकर्षत । तीक्षण तरलघने शर बर्षत ॥ सृंजयअरु पांचालन बधिकै । ग्रसतकालसम लसत बरधिकै ॥ तथा भीम शर गदा प्रहारत । नर हय बारण बधि महि डारत ॥ तिमिसात्यकि आदिक भटरूरे । भटनबधत अतिअ-मरषपूरे ॥ धृष्टद्युम्नगुरु धनु टङ्कारत । रथीपदातिन बधिमहि डारत ॥ द्रौपदेय अरु सुभट शिखण्डी । बधत भटन गहि धनु बिधि चण्डी ॥ सहदेव नकुल करत रणकरकस । बधत शत्रुभट परम अधरकस ॥ युधामन्यु उतमौजा राजा । चक्र-रक्ष तुव सहित समाजा ॥ रक्षत तुम्हैं रहत अरिपरखत । अ-बिरल शायक बिधि बल बरषत ॥ दुर्योधन आदिक भट उत-के । ममदल मर्दत बिक्रम युतके ॥ अब उत चलिकरि सुजय निरेखन । बधुपर सुभटबली हत शेषन ॥ पांचमहा रथहैं उत बाचे । अति धनुधर अति गर्वित सांचे ॥ अश्वत्थामा कृप कृत बर्मा । कर्ण शल्य पूरित अति पर्मा ॥ तिन्हैं मारि लहि विजय अनूपहि । बधि सबन्धु दुर्योधन भूपहि ॥ भौगोभूमिस-मुक्तक बसिकै । पांचौपांचशूर समलसिकै ॥ जोगुरुसुत गुणि अश्वत्थामहिं । गुरूजानिगौतमबलधामहिं ॥ गुणि निजमातुल शल्यनरेशहि । यदुबंशी हार्दिक्य सुबेशहि ॥ जो करि कृपा न बधअनुमानो । तौ ममबचन परमहित मानो ॥ कुमती क्षुद्रकुटिल अभिमानी । अनरथमूलजासु अघबानी ॥ कर्णताहि बधुआजु

शरनसों । होउतीर्ण निजपूर्ब परनसों ॥ परमकाज यह तो कहँ पारथ । है जयकारण गुणो यथारथ ॥ दोहा ॥ जोगर्बित निसक-हत हैं बैठिसभा आगार । मैं बधिहों सब पाण्डवन बर्षि शरन कीधार ॥ जेहिसूतजके बलगहे दुर्योधन जयआश । पार्थमारु तेहि सूतजहि करिआति युद्धप्रकाश ॥ सुन्दरी ॥ सूतजजे अपराध किये तब । दाहतही सुधि आवत ते जब ॥ शण्डभये पति तो बिगरे सब । दासिनसंग बसो तुमहैं अब ॥ तू दुर्योधनकी तिय ह्वै रहु । बैन महा कटु या बिधिके कहु ॥ भूपति पाण्डवकी म-हिषी तेहि । भाषतभो यह बेगि बधो यहि ॥ दोहा ॥ धनुष काटि अभिमन्यु कहँ बधवायो यहँ मूढ़ । अब यहिबधि लोपित करो निज हियको दुख गूढ़ ॥ कर्ण शरनको सेत रचि काल समान बिभात । बधत असंख्यन भटनकहँ देखि दहतममगात ॥ तुम्हैं बिना यहि सैनमधि नाहिं ऐसो भटऔर । जो सन्मुख लरिकर्ण सों कुशल फिरै गहि गौर ॥ सोरठा ॥ बधिकर्णहिं यहिकाल डारु दारुसम भूमिमधि । बायसगृध्र शृगाल तासुभेद मांसहिभखैं ॥ कर्णहिं भूगत देखि भगि जैहैं दल कौरवी । लेहु बिजय अव-रेखि बधि सबन्धु दुर्योधनहिं ॥ तोटक ॥ सुनि माधवके सुगिरा रुचिरा । हिय पारथके अतिमोद थिरा ॥ भटसूतज के बधको पनलै । इमि बोलत भो प्रभुको मनलै ॥ तुमनाथ करो सुकृपा जेहिपै । सर्बथा जय श्री निबसै तेहिपै ॥ प्रभु आपुसदा मम गोहन ते । नहिं नेकुटरो अति छोहन ते ॥ दोहा ॥ तुव सहायते नाथहम तीनिलोक जेतार । कहा कर्णको बध करनहै ममकरन अपार ॥ लखोनाथ पांचालदल द्रवत कर्णकेभीत । लखो कर्ण बिचरत बिरचि रणजगजीत अजीत ॥ लखोकर्ण प्रेरित लसत भार्गव अस्त्र अमन्द । ज्वलत दवानल सरिसबाढ़ि लखिनल-हत कोदन्द ॥ सोरठा ॥ हनि अमोघ शरचण्ड आजु बधब हम सूतजहि । कीरति अमल अखण्ड मण्डित रहि है भूमिमित ॥

तारक ॥ धृतराष्ट्रनरेश महादुखपैहैं । दुर्योधनहारि कहूंबहिजैहैं ॥ सहबन्धु सपुत्र समित्र सस्वामी । यहि आजुकरौं बधि ऊरध गामी ॥ निजबन्धु महीपहि मोदितकैकै । सब भूभरतार करौंपन लैकै ॥ शिरछेदन सूतजको करिकैहैं । दलकौरवको बधिहौं लरिकैहैं ॥ दोहा ॥ शोधहिं करत अपुत्र अरु दुर्योधनहिं अमित्र । रथीहीन शल्यहि करत वृषसेनहिं हत पित्र ॥ चौपाई ॥ आजुबर्षि तीक्षण शरस्वरे । गृध्रपक्ष युत सुबरण पूरे ॥ बधि शत्रुन अभिमन्यु कुंवरके । करब भूमिगत योधापरके ॥ धार्तराष्ट्र बिनु अब महि होइहि । कैनिराजुंन महिअरि जोइहि ॥ कृष्ण आजु धनुधरकी गतिसों । मैं ह्वैहौं उत्रिनबलअतिसों ॥ तेरहवर्ष सह्यो दुखभारी । आजु मेटिहौंसोपणधारी ॥ बध्योसंबरहि मघवा जैसे । बधिहौं आजुकर्णकहँ तैसे ॥ बाधिकर्णहिं देहौंसुख सीमाहिं । सहदेव नकुल सात्विकी भीमाहिं ॥ लखत कर्ण के बाधि वृषसेनहिं । करिहौं प्रगट दुष्टकेऐनहिं ॥ कर्णहिंबांधि शरनकेजालन । बधिहौं मारिबाण अरिघालन ॥ धृष्टद्युम्नआदिक पाञ्चालन । देहौंआजु मोद हियलालन ॥ आजुलखै मम बिक्रम योधा । बधत कर्णको करि अवरोधा ॥ अस्त्रशस्त्रज्ञाता जगमाहीं । ममसमान धनुधर कोउनाहीं ॥ धनुगाण्डीव मुक्तशर झरिकौआजुकौरवन बधिहौं लरिकै ॥ निजनामांकित शरके घातन । करिहौं आजु कर्ण को पातन ॥ कृपकृतबर्मा अश्वत्थामा । आदिजिते योधाबलधामा ॥ करिहौं तिन्हें विकल यहि दिनमें । अगणित भटनमारिहौं क्षन में ॥ सोरठा ॥ इबिधि करत सम्बाद कृष्णपार्थ दल मधि गये । अति उतकर्ष प्रमाद मढ़ो उभय दलमधि लखे ॥ संजय के ये बैन सुनिबोले धृतराष्ट्रनृप । कहुसंजय बलऐन तेहिक्षण किमि संगर भयो ॥ चौपाई ॥ यहसुनिकै संजय गुणि मनमें । कहे सुनो भूपति तेहि क्षनमें ॥ संसप्तकन सहित दुश्शासन । भीमलरत हे कपिशरासन ॥ लरत शिखण्डी कृपसों भिरि कै । सात्यकि

दुर्योधन भिरि थिरिकै ॥ भटयुयुधान बिदित धनुधारी । अरु वृषसेन बिशद रणचारी ॥ नकुल सुबीर भूप कृतबर्मा । हे तहँ लरत अमानुष कर्मा ॥ धृष्टद्युम्न सूतज अति धरकस । हे तहँ लरत उभै रण करकस ॥ भिरि सुषेन उत मौजा राजा । रहे लरत तहँ सहित समाजा ॥ उतमौजा अति तुरंता ठाट्यो । भट सुषेन के शीशहि काट्यो ॥ सुत सुषेन को मरिबो देखी । कर्णभूपको बध अवरेखी ॥ बाणनकी बर्षा बिस्तार्यो । तुरगन मारि भूमिपे डार्यो ॥ तहँ उतमौजा अनरथ कीन्हों । कृपके सूतहि यमपुर दीन्हों ॥ कृपके युगसूतन बधि पथ पै । गयो शिखण्डी भटके रथपै ॥ सोलखि द्रोणतनय तहँ आयो । बढ़ि आगेलरि कृपहिबचायो ॥ यहिबिधि मचो युद्ध अतिघोरा । रुधिरधार धांई चहुँओरा ॥ तेहिक्षण भीम जीति अभिलाषे । आदर सहित सूतसों भाषे ॥ रथ लै चलो शत्रुदल माहीं । लखौ गमन सुभटनकी नाहीं ॥ दोहा ॥ कहो किते मम सुरथमधि आयुधभेद समस्त । यह सुनि सूत बिशोक इमि बोलो बचनप्रशस्त ॥ मार्गण साठिहजारहैं भल्लौ साठिहजार । रथ पै साठिहजारहैं बरशायक क्षुरधार ॥ दोयहजार नराचहैं प्रदर सहसहैंतीनि । दोयशकटहैं खड्गसबकहैं कहालोंगीनि ॥ काल दण्डसमहैं सहस गदासुनो रणधीर । परशुशक्ति मुद्गरघने अगणित तोमरतीर ॥ आयुधकमतर होनकी शंकाकरौननेक । लरोअरिणसों जिमिचहो आयुधलजो सटेक ॥ यहसुनि भीम कहैबहुरिक्रोधभरे ममनयन । निजपरनाहिं चीन्हतकछू यहिक्षण सुनुबुधि अयन ॥ तातेतुम ममभटनके चीन्हत चिह्नसमस्त । रहेहुबचाय तिन्हहिंमम आयुध चलतप्रशस्त ॥ शोचबड़ोनृप ढिगगयो पारथफिरो न तौन । कर्णशरन पीड़ितगयो नृपतिभई गतिकौन ॥ सोरठा ॥ भीमसेनअवरेखि इमिकहि फिरि चहुंओर लखि । ममदल बिचलतदेखि बिहँसिसूतसों कहतभो ॥ बिकल

शत्रुदलसर्ब हाहाधुनि अतिसुनिपरत । बरणेभट तजिगर्ब इत उत बिचलत लखिपरत ॥ जानिपरत ओहिओर आयोपारथ रिपुदलन । करिअबिरल शरजोर अरिदलमधि पूरत प्रलय ॥ यहसुनि सारथि स्वस्थ कह्योप्रगट गाण्डीवधुनि । कपिबरबीर ध्वजस्थ उदय सूरसमलखिपरत ॥ यहसुनि चौदहग्राम शत दासी अरुबीसरथ । देनकह्यो अभिराम सूतहिभीम प्रसन्नह्वै ॥ जयकरी ॥ सुनि ममसेनमध्य अतिशोर । धनुटंकार बाद्यधुनिघोर ॥ सुभटनकीगरजनिअतिचण्ड।गजहयहींसनि महाउमण्ड ॥ मारु मारु मारयो धुनिभूरि । सुनिपारथ अति अमरषपूरि ॥ कहेकृष्ण करिचपल तुरंग।परदल चलो मध्यसउमंग॥सुनि केशवकरि हृ-यन अधीम । चले लरतहो जेहिदिशि भीम ॥शंखन्नरण घोरन की दौर । धनुटंकारि नेमिधुनि गौर ॥ बाणवृष्टिकी सृष्टिमहान । पूरतचलो पार्थ बलवान ॥ जृम्भहि हनत हेत जिमि पूर्ब्ब । चलो बज्रधर गहिरिसि गूर्ब्ब ॥ बधतरथी हयहाथी जूह । बधत पदाती सुभट समूह ॥ पुरुष सिंह ईछत जयपर्म । अरिद्विरदन को मर्दतमर्म ॥ यहि बिधि देखि पार्थकहँ जात । क्षत्री यूथयूथ बिख्यात ॥ हयगजरथ भट जूह बढ़ाय । भिरे पार्थसों शाब्दक छाय ॥ भल्लशक्ति तोमर बरबाण । गदा परश्वध यष्टि कृपाण ॥ आयुध भिंदिपालदे आदि।बर्षणलगे प्रमादि प्रमादि ॥ तेहिक्षण भयो तहाँ अति युद्ध । लसो कालसम पारथ क्रुद्ध ॥ बधत अ-संख्यन भटनप्रचारि । लसोसूर जिमि जलदहि टारि ॥ दोहा ॥ छत्रधनुष ध्वजरथ तुरग द्विरदसारथी जूह । रथीपदाती भटब-ध्यो काटलशस्त्र समूह ॥ शरक्षुरप्र अरुअर्धशशिकी बरषाकरि भूरि । चलोपार्थ जहँ कर्णमहि रुण्डन मुण्डनपूरि ॥ चौपाई ॥ दलमर्दत तेहिअगरतदेखी । अगणित सुभटभिरे अतितेखी ॥ रथी गजी हयसादी योधा । चहुंदिशिते कीन्हेंअवरोधा ॥ मारो धरिबांधो बकिबकिके । चहुंदिशितेबोले तकितकिके ॥ पट्टिश

मल्लत शक्ति शर भेलैं। एकबार सहसनभटरेलैं॥ तिन्हैंपार्थशर झरिकेघातन। क्षणमेंकरे भूमिपरपातन॥ मण्डलसमकोदण्ड-हि करिकै। रथपर चारुचक्रसम चरिकै॥ अगणित नर बारण बलश्रोकन। भेजिदेतभो ऊरधलोकन॥ तहँके पारथकेशरपी-ड़ित। हाहाकरत भगेभट ब्रीड़ित॥ चिघरतभगे द्विरदसतवारे। हींसतभगे तुरगभयभारे॥ तेहिक्षणभयो शोरअतिभारी। यम सम लसोपार्थ रणचारी॥ सोदलजीति पार्थशरबर्षत। चलो कर्णके दलपहँ हर्षत॥ पार्थहिदेखि लसैभटलैसे। गरुड़हिदेखि होहिंअहिजैसे॥ भट तजि तजि जीवनकीआशा। करैंपार्थसों युद्धविलाशा॥ होहिं पार्थकेसन्मुख जेते। तुरतेहोहिं कालबश तेते॥ तहांपार्थ अनरथ सरिदीन्हो। भीषमरूप मेदिनिहि कीन्हो॥ तथानरे बिक्रम अति मितिके। सात्यकि कर्ण आदि उतइतके॥ दोहा॥ महाघोर संग्रामभो भूपसुनो तेहियाम। अगणित हयगज सुभटमरि जायबसे यमधाम॥ पार्थ लरततहँ शोरसुनि भीमसेन बलधाम। ह्वैप्रसन्न अति गर्बगहि कियोघोर संग्राम॥ भुजगप्रयात॥ महा भीमता भीमता गैर लीन्हो। महा उद्धके तौरको युद्ध कीन्हो॥ महा पौनसो पौनजा पौनबेगी। शुभा भौनहै कौनता जौनसेगी॥ कियो गौरता डौरकोपाणि लाधो। मृगापैयथाना करैदौरबाधो॥ युधै नीतिकी जीतिकी साध साधै। बधै भूरियोधा प्रलय नाथ नाधै॥ दोहा॥ भीम पराक्रम सरित शर बर्षाभौर महान। मथिपरि भ्रमि ब्याकुलभयो ममदल नाव समान॥ सीर बहरसम सुवनतुव तिन्हैं उबारण हेत। पठयो बोहित ललिसबहु यूथप साहस देत॥ तोमर॥ तेतुरग द्विरद स-वार। अरु रथी सुभटउदार॥ भटभीमसेनहिघेरि। भेलरतबचन तहेरि॥ तहँ लसो भीम अबध्य। जिमि सोम तारनमध्य॥ तेघेरि बर्षतअस्त्र। गुरु गदा मूशलशस्त्र॥ अरु भल्लशक्तिअनेक। कीकिये झरि गहिटेक॥ तहँ भीमयोधा चण्ड। अति चपलकरि कोदण्ड॥

करि चक्रसम कोदण्ड। भरिबाण वृष्टि अखण्ड॥ बधिडारि अगणित बीर। बिचलाय अगणित भीर॥ इमिकढ़ोव्यूहबिदारि। जिमि मीन जालहि फारि॥ तिमि ब्यूह बाहर आय। भो बधत भट समुदाय॥ द्वैसहस द्विरदसवार। बधि द्विरदकइकहजार॥ बधि पाँचसहस महान। भटगजारोह अमान॥ शतरथी योधामारि। भोदेत महिपै डारि॥ बर रुधिर सरितातारि। भोलसतजिमि त्रिपुरारि॥ रथचक्रतहँ आवर्त्त। गिरिभिरे हौदागर्त्त॥ हयद्विरद ग्राहअनूपातहँ लसतभीषमरूप॥ दोहा॥ भुजधर ऊरुनसुरनके बिलसतमीन समान। धनुध्वजयष्टी अरुगदा करिकरनाग महान॥ लसातिक्षीण पाठीनसम पराशक्तिअसिजौन। पीनमीनसमलसतिहै परीशतघ्नीतौन॥ मेदफेन आलारसर केशसेवारबिधान। चरमकच्छ अरुछत्रहै हंसचरत बिनुप्रान॥ सारगरूपकछन्द॥ याडौ लकोदेखिकै घोरसंग्राम। जोभीमसेनैकियो अद्भुतैकाम॥ तोपुत्रकै व्याकुलै आकुलिच्छाम। योसौबलैसों कह्यो कैवलैग्राम॥ लैसंग सेनाबध्यो याहियायाम। तूतौविजयमोहिंदेहै ममामाम॥ है काल सोंजौनपूरे प्रलयकाल। याकेमरे हालऐहै बिजय चाल॥ दोहा॥ यह सुनिशकुनि महीपमणि रणदुंदुभि बजवाय। सैनसहित बढ़ि भीमसों भिरोबाण झरिलाय॥ तोमरछंद॥ भटभीम ताकहँदेखि। बढ़िभिरो बध अवरेखि॥ करिपाणि लाघव घोर। भोतजत बाण अथोर॥ नृप शकुनि सुरथ बढ़ाय। तहँ बर्षिशर समुदाय॥ तकि भीम भटको गात। भोकरत बहुशरपात॥ लखि बामपारश तासु। शरहन्यो तीक्षण आसु॥ लगिअस्थिली करिगौन। भो बसत शायकतौन॥ तब भीमकै अतिचण्ड। भो तजत बाण उदण्ड॥ तिहि मध्यहानि शरबेश। भो काटिदेत नरेश॥ तबभीम ताहि प्रचारि। शरअर्द्ध शशिसम मारि॥ बरधनुष नृपकोकाटि। बहुबाणमारयो डाटि॥ तब शकुनि नृपति सडौर। गहितुरित धनुषा और॥ द्वै सारथीके गात। शरहन्यो भीमहिं सात॥ ध्वज

काटि हनिशर एक । फिरिकाटि छत्र सटेक ॥ शरचारि तुरगन मारि । भोनदत धनुटंकारि ॥ तबभीम सुभट बिशाल । भोतजत शक्तिकराल ॥ नृपशक्तिसो गहिफेरि । भोहनत भीमाहिटेरि ॥ भुजबाम बेधततासु । वहगईमहिपै आसु ॥ भिदिभीम तासों तत्र । करिक्रोधबरषोपत्र ॥ हयशकुनिके सबमारि । भोदेतमहि पैडारि ॥ दोहा ॥ बधिसूतहि काटयोध्वजा तब रथतजिसोभूप । महिपैठाढ़ो ह्वै लगो बर्षणबाण अनूप ॥ भीमसेन तब मारिशर काटिकठिन कोदण्ड । सौबलनृपके तनहन्यो शायक अतिशय चण्ड ॥ तासोंभिदि भूपतिगिरो महिपै ह्वै गतचेत । ताहिडारि रथपहँभगे तौसुतहाहालेत ॥ अनुगीता ॥ नृपशकुनि की यहदशा देख । तौ सुवन नृपअनरथ परेखि ॥ बरतुरग चढ़िभागो उ-ताल । लखिभगे सिगरेसुभट माल ॥ ढिगकर्णकेगे बचबचौ-हि । सबअकत सूतजपाहि पाहि ॥ बलभीमको सागरअपार । तहँपरेममभट बिनुअधार ॥ त्यहिभयोद्वीप सूतजअमान । करि पाणि लाघवबर्षिबान ॥ नृपमचो त्यहिक्षण घोरयुद्ध । अतिकियो बिक्रमभीमक्रुद्ध ॥ दैभटन साहससूतपुत्र । फिरि युद्धमगलायो ससुत्र ॥ भिरिउभयादिशिके सुभटसर्व । अतियुद्धतहँकीन्हों स-गर्व ॥ दोहा ॥ यहसुनिकैधृतराष्ट्रनृप मनकरिमहामलीन।कहेतदनु किमिरणभयो कहुसूतज परवीन ॥ यहसुनिकै संजय कह्यो तेहि क्षण कर्णअमान । कह्योशल्यसों चलहुजहँ भटपाञ्चालमहान ॥ सोरठा ॥ यहसुनि शल्यनरेश रथचलाय अतिबेगसों । चलो शत्रु दलदेश तकिसेना पांचालकी ॥ चौपाई ॥ सूत सुतहिनिज दल मधि आवत । लखि सहदेव नकुल भटभावत ॥ सुवन द्रौपदी के रणधीरा । धृष्टद्युम्न सेनापति बीरा ॥ भीम शिखण्डी सात्यकि योधा । बढ़िताको कीन्हें अवरोधा ॥ करलाघव करिकरि धनु-कर्षे । अबिरलबाण कर्णपहँबर्षे ॥ सात्यकि तेहिशर बीसप्रहारे । बाणपचीस शिखण्डीमारे ॥ पांचबाणमारयो दलनायक । द्रौप-

देयसब चौंसठि शायक ॥ शतशर हन्यो नकुल बरबीरा । नब्बे हन्यो भीम रणधीरा ॥ तेहिक्षण सूतसुवन बलवाना । कियोअ-मानुष कर्ममहाना ॥ सबपै जाल शरनकैठाटे । सबके बाण अ-नगिने काटे ॥ सबके बाण अनगिने सहिसहि । सबकहँ आउ खड़ोरहु कहिकहि ॥ सात्यकिकोकरि धनुध्वज छेदन । हन्योबाण नवद्दायक बेदन ॥ भीमहिं देखि क्रोधअति कीन्हों । बाण तीनि शत हनिमुद लीन्हों ॥ बिरथकियो द्रुपदीके बारन । क्षणमेंबर्ष्यो बाण हजारन ॥ भीम आदि सब सुभटन क्षनमें । व्याकुलकरि मोदित भै मनमें ॥ सबकहँ बाण अनगिने हनिहनि । सब कहँ कियो पराजित गनिगनि ॥ मृगगण मध्य सिंहसम चरिकै । ब-रणै भटनपराजित करिकै ॥ मर्दतभयो शत्रुदल तैसे । तरुवन दहै दवानल जैसे ॥ रुण्डमुण्ड करपगशुण्डनसों । भरयोभूमि बाधि हय भुशुण्डनसों ॥ कर्ण महा बिक्रम करिराजा । बध्यो अ-संख्यन सुभट समाजा ॥ प्रति सन्धान अनागिने योधन । बधे कर्ण करि धनु बिधि शोधन ॥ सृंजय अरुपाञ्चाल सुयोधा । बढ़ि बढ़ि तासुकरैं अवरोधा॥तिनमाधि लसै सूत सुततैसो। द्वि-रदन मध्य केहरीजैसो ॥ भटपाञ्चाल शूरता जोरे । लरिमरिबे तेनाहिं मन मोरे ॥ धनुध्वजसूतरथी हयहाथी । मारिअसंख्यन करण प्रमाथी ॥ भीषमरूप मेदिनिहि करिकै । कालसरिस बि-लसो पणधरिकै ॥ भीम आदि योधा सब फिरिफिरि । कीन्हेंयुद्ध कर्णसों भिरि भिरि ॥ तेहिक्षणभयो युद्धअति भूरित । भईघोर धुनि नभमधि पूरित ॥ तिमि कृप कृतबर्माबलधामा । दुश्शासन अरु अश्वत्थामा ॥ बरणै शत्रुभटनसों भिरि भिरि । घोरयुद्ध कीन्हें तहँ थिरि थिरि ॥ उत अर्जुन इत निजदल माहीं । सुनि हाहाधुनि गुनि मनमाहीं ॥ यदुपति सों बोल्यो बलसागर । उत लै सुरथ चलो नय नागर ॥ दोहा ॥ सूतज मर्दत सैन मम मृगगण सिंह समान । ताते सादर चलहु उत लखो युद्ध मन

मान ॥ यह सुनिकै केशव चले सूतसुवन हो यत्र । धनु कर्षत पारथचलो बर्षत अबिरलपत्र ॥ आवतदेखि कपिध्वजहि शल्य भूप अनुमानि । सूतसुवनसों कहतभो वचन भयानक सानि ॥ सोरठा ॥ आवत पारथ बीर देखु सूतसुत अधरथी । शोणित सरितगँभीर उमगावत वहिओरते ॥ बिकल करत सब सैन आवत तोपहँ चाहि बध । अब धरिधीर सचैन बढ़िआगे भिरु पार्थ सों ॥ रोला ॥ सभा माधि तुम पाण्डवन कहँ कहे अनुचित जौन । आजु धर्म्महिं बेधि बाणन बिकल कीन्हें तौन ॥ भीम आदिक भटनकहँ करि बिमुख अद्भुत कर्म । करत तुम यहि समय मनमें गुणत तौन अभर्म ॥ कालसदृश कराल बर्षत दंड शर यहिकाल । क्षीणबल जलमीन सुभटन ग्रसत रचि शरजाल ॥ तुम्हें बधिबे हेत आवत बधत भट समुदाय । कौन ऐसो सुभट जो अब तासु सन्मुख जाय ॥ तुम्हें बिनु नहिं और भट जो लरै तासों जूटि । ताहि बधिबेयोग कुरुपति तुमहिं जानत ऊटि ॥ पार्थ आवत लरो अबतुम करो पणप्रतिपाल । पार्थसम तुमसुभट भीषम द्रोणसम बिकराल ॥ पार्थ धीर धुरीण आवत सकत तेहिसहि कौन । चहत हे तुमभयो सोअबकरो करतब जौन ॥ बचन यहसुनि कर्णबोल्योशंक त्यागो भूप । आजुपार्थहि बधबहम करियुद्धकर्म अनूप ॥ मोहिंपारथ बाधिहि कैजय अजयरण गतिदाय । लखनृपहित चाहि होनीहोयजो सो होय ॥ कर्ण केये बचन सुनि कै शल्यनृप मतिमान । कहेजगमें पार्थके सम कौन सुभट अमान ॥ भाषियहि बिधि कह्यो क्रमसों जौन पार्थ सगर्ब । कियेहे खांडीव दाहन आदि कर्म अखर्ब ॥ शम्भु आदिक लोकपालन दये शस्त्र अनेक । भाषिसो सब पार्थ के गुण कहे सहित बिबेक ॥ शल्यके ये बचन सुनिकै कह्यो कर्णसडौर । बंदिजन सम भूपबरणत पार्थ के गुणगौर ॥ पार्थकोबल धनुप धरता शस्त्रसंचन भेद । सकलजानत भूप हमपै गहत नहिंभय

खेद ॥ शल्यनृपसोंभाषि यहिबिधि कर्णधीर धुरीन । नृपति तो सुत भूपसों इमि कहत भो परबीन ॥ भोजकृप गान्धार पति गुरु तनय ये सहसैन। घेरि पार्थहि युद्धकरिके करैं समितऋचैन ॥ तदनु हम लरिबधब तेहि यह बचन सुनिभटसर्ब। सेन सह बढ़ि घेरि पार्थहि लगे लरन सगर्ब॥ सव्यसाची पार्थ तेहि क्षण कियो बिक्रमघोर। देतभो प्रतिभटन पहँरचि चावसों शर जोर ॥ द्रोणसुत कृप आदि सुभटन व्यर्थकरि अवलोक। मारि अगणित भटन दीन्हों भेजिऊरधलोक ॥ तोमर ॥ ह्वैबिरथ चढ़ि रथ ओर। फिरि लरे भट शिरमौर ॥ करिबाणबर्षा घेरि । नहिं बचत अब इमि टेरि ॥ शर भल्ल पट्टिश आदि। भे तजत आयुध नादि ॥ तहँ पार्थ धीर धुरीन। चरि चक्र सरिस अहीन ॥ अतिबाणकी झरिठाटि। सबदेत आयुध काटि ॥ भोहनत सब कहँ बाण। दश बीस शत परमाण ॥ तहँ द्रोणसुत सहजोर । करि पाणि लाघव घोर ॥ दशबाण पार्थहि मारि। फिरि हन्यो कृष्णहिं चारि ॥ शरचारि कपिहि प्रहारि। भोनदत धनुटंकारि॥ तहँपार्थ ताकहँडाटि। धनु ध्वजा द्विजको काटि ॥ बधि सारथी कहँ आसु। बधि तुरगचारों तासु ॥ बहुबाण मार्योताहि। डरि दशा ताकी चाहि ॥ कृप आदि सब रणधीर। करि सुरथपै तेहि बीर ॥ बहुकिये बलपरकाश। नहिंलहतभे अवकाश ॥ परिपार्थ शरके घात। भे बिकल बेधितगात ॥ तिमिलसो पार्थ प्रचारि। जिमि जलद बर्षत बारि ॥ दोहा ॥ कृतबर्मा दुश्शासनहिं आदि भटनके गात। अगणित शायक हनतभो पार्थबीर बिख्यात ॥ बर्षा पूरत शरन जिमि रचि जलधार अपार। तिमि पूर्योमम सेन सब पार्थ शरन के धार ॥ तो सुत आदिक भटन करि बिरथ बिधनु तेहि ठौर। दक्षिण दिशिकै कर्णपहँ चलो सुभट शिरमौर ॥ सोरठा ॥ नकुल शिखण्डी बीर सहदेव सात्यकि तेहि समय। बर्षत अबिरल तीर भये तीर भटपार्थ के॥ सहसृंजय

कुरुबीर बढ़िबढ़ि तिनसों भिरतभे । नीरद बर्षतनीर भई बृष्टि तिमि शरन की ॥ चौपाई ॥ छादित भई उभय दिशि बानन । निरखे पेखिपरे कछु आनन ॥ निशिसम अन्धकार तहँ छायो । मनु हिमन्तघर पावस आयो ॥ तेहिक्षण पार्थ शत्रुदल जेना । मर्दतभयो कर्णकी सेना ॥ भल्ल क्षुरप्र अर्द्धशशि शायक । अबिरल बर्षि धनुषधर नायक ॥ रथी सारथिहि पारथ मारे । रथलैभगे तुरग भयभारे ॥ मरे सुभट कितने हयदौरे । बहुभट किये तुरग बिनु बौरे ॥ अंगभंग कितने रथकीन्हें । अगणित रथिन्ह कालबश कीन्हें ॥ अगणित चामर छत्रपताका । काट्यो अगणित रथ के चाका ॥ अगणित शस्त्र सुभट जेभेलत । काटि तिन्हें निज शायक रेलत ॥ कर पग शिरकटि धनुध्वज काटत । बधिगज बाजि भयो महि पाटत ॥ अगणित हयगज रथबिनु योधन । करतलसो करिधनु बिधिशोधन ॥ बहुरथअंगभंगकरिडारत । बहुबितुण्डके शुण्डबिदारत ॥ शोणितकी सरिता उमगावत । चलोकर्णपहँ ओजबढ़ावत ॥ तहँकृतबर्मानृप केप्रेरे । भटद्विरदरथ चारिशतघेरे ॥ क्षणमेंद्विरद द्विरदअसवारन । बधतभयो पारथशर धारन ॥ भूपतिसुनो पार्थतेहिक्षणमें । कालसमान चरतभो रणमें ॥ जानिपरो गांडीवहिकर्षत । पारथ शक्रबज्रशरबर्षत ॥ बनमेंलगे दवानलजैसे । होहिंमृगासमभवमें तैसे ॥ बिनुकरिया मारुतबशपरिकै । बोहितहोय कूलसोंटरिकै ॥ तिमिपारथशर भरिकेघातन । ममदल करतभयो सहत्रातन ॥ दल बिचलायबीररसभीजो । चलतभयोकुंतीसुततीजो ॥ दोहा ॥ जायभीम के निकटकहि नृपति कुशल करि मंत्र । फेरिचलतभो कर्णपहँ पारथबीर स्वतंत्र ॥ दुश्शासन दशरथिनसह फिरि घेरतभो ताहि । दशशरसों तिनके शिरन पारथ काट्यो चाहि ॥ इमि गार्बित कुरुसुभट जे भये सामने तासु । बिरथ बिधनु ह्वै शरन भिदि तेगेयमपुर आसु ॥ सोरठा ॥ बिनुकर पगबिनु शीश

हसदै तिन भटन कहँ कर्ण धनुर्द्धर धीर । मर्दतभो पांचालदल बर्षिअसंख्यन तीर ॥ चौपाई ॥ शतानीक श्रुतिसीमहि बानन । छादित कियो पुरुष पंचानन ॥ धृष्टद्युम्नके घोरन बधिकै । सात्यकि के हयबध्यो बराधि कै ॥ केकय पतिके पुत्रहि हतिकै । बिलसत भयो पराक्रम अतिकै ॥ लखिकुमारकोमरण अचायक । बढ़िशर बरषि तासु दलनायक ॥ नाम उग्रकर्मा रणचारी । भिरो कर्णके सुतहि प्रचारी ॥ सुतप्रसेन कहँ ताड़ित देखी । कर्ण धनुर्द्धर अतिशय तेखी ॥ अर्द्ध चन्द्र बरबाण प्रहारयो । काटि तासु शिर महिपै डारयो ॥ तब प्रसेन सात्यकि सों भिरिकै । घोरयुद्धकीन्हों तहँ थिरिकै ॥ तहँ सात्यकि अति गौरव कीन्हों । कर्णसुतहि बधियमपुर दीन्हों ॥ सोलखि कर्णक्रोधसों पागो । कालसरिस रणबिचरन लागो ॥ अतिअमोघ शायक मनभायो । भटसात्यकिपहँ टेरिचलायो ॥ सुभटशिखण्डी अमरष सानिकै । काट्योताहि तीनिशरहानिकै ॥ सोलखि कर्णमारि शरचोखो । काट्योतासु धनुषअति नोखो ॥ धृष्टद्युम्नको सुत बधिडारयो । शत्रुसैनमाधि प्रलयपसारयो ॥ सोलखि कृष्णकहे सुनुपारथ।चलहुकर्णपहँ गुणि बधस्वारथ॥यहसुनि पार्थशरासन कर्षत । चलोकर्णपहँ शायकबर्षत ॥ दोहा ॥ नभ छादित करि शरनसों अन्धकार अतिपूरि । चलोबीर पारथबधत हय गज योधाभूरि ॥ तासुपीठिरक्षक चलोभीम सुभटशिरताज । मण्डल समकोदण्डकरि मर्दत सेनसमाज ॥ त्यहिक्षण उतमौजा नृपति युधामन्यु रणधीर । धृष्टद्युम्न भ्राताउभय जनमेजययेबीर ॥ बढ़ि बढ़ि सूतजसोंभिरे तिन्हेंकर्ण दृढ़घाय । बिरथबिधनुकरि निमिष में देतभयो बिचलाय ॥ सोरठा ॥ भूपसुनो त्यहिकाल सुवनद्रौपदी के सकल । सात्यकिबीर बिशाल भिरेसूतके सुवनसों ॥ वसुकला ॥ तेसुभटशुद्ध । अति कियेयुद्ध ॥ शर शक्तिघोर । बर्षे अथोर ॥ तिमि सकल ठौर । भोयुद्ध भौर ॥ बहुरुण्ड मुण्ड । पगपाणि

शुण्ड ॥ ध्वज धनुषबान । पाखरमहान ॥ हौदाअलान । अंकुश कृपान ॥ रथअंगभंग । हयकेटसंग ॥ करगहेचर्म । तनसहित बर्म ॥ मणिमुकुट जूह । भूषण समूह ॥ सब शस्त्रभेद । घायल सुखेद ॥मथि रुधिरधार ।निरखे अपार ॥ जिमि उदधिपूर । जल जन्तुभूर॥महिभईभूपाअति भयदरूप॥भोदिनकराल।जगनाश काल ॥ तबकरि कुमंत्र । अबसुनो तंत्र ॥ यहिसमय जौन । भो अनर्थ तौन ॥दोहा॥ तोसुत दुश्शासनप्रबल कर्षिकठिन कोदण्ड । भीमसेनसों भिरतभो बर्षतशायक चण्ड ॥ काटिधनुष षटशर हन्यो सूतहि गर्जि प्रचारि । नवशर मार्‍यो भीमकहँ अतिकर लाघव धारि ॥ सोरठा ॥ भीमसेन त्यहिकाल शक्तिचलायो अश-निसम । हानिदशबाण बिशाल काटिदयो तोसुवनत्यहि ॥ चौपाई ॥ तबगहि कठिनधनुष अतिभारी ॥ भीमसेन अनुपम रणचारी ॥ दुश्शासनपहँ शायकबरष्यो । जोलाखे हियोभटनको धरष्यो ॥ तिमितोसुत बाणनकीबर्षा । करतभयो गाहिअति उतकर्षा ॥ द्वैअतिचपल प्रचारि प्रचारी । भल्लक्षुरप्र प्रहारिप्रहारी॥ दोऊ सुभट प्रबल अति धरकस । कीन्हें तहांयुद्ध अतिकरकस ॥ अगणित बाणशरनके ठाटन । वारणकिये कियेबहु काटन ॥ बहु शरपात गातपहँ सहिसहि । अबमतिभागु खरोरहु कहिकहि ॥ कीन्हें घोरयुद्धतहँ दोऊ। जिमि नहिंकिये असुर सुरकोऊ ॥ तहँ तोसुत अति धनुबिधि ठाट्यो । शरसोंधनुष भीमको काट्यो ॥ धनुषकाटि अतितुरता धार्‍यो । तीक्षणबाण तासुतन मार्‍यो ॥ सोधनुत्यागि भीमबलभार्‍यो । गहिगुरु गदा सुधारिप्रचार्‍यो ॥ तोशरकठिन सह्यउँमैं भाई । अबतूसहु ममदुसह गदाई॥ इतो कहत तोसुत क्षणपायो ॥ बज्रसरिस बरशक्ति चलायो ॥ सो धसिगई भीमकेतनमें । भीमनकियो खेदकलुमनमें ॥ तनतेकाढ़ि शक्तिगहि सोई । तज्यो दुशासनकोतन जोई ॥ फिरिप्रचारिवह गदा प्रहार्‍यो । शक्रबज्रजिमि गिरिपहँ डार्‍यो ॥ दोहा ॥ गदा

लगे तोसुतगिरो दशधनु पछिजाय। हयतसहित चूरणभये रथ
ध्वज धनुसमुदाय ॥ भईचूर्णित कवचकी कटीसकल अभिराम ।
मूर्च्छितह्वै गतप्राणसम परोवीरबलधाम ॥ त्यहिक्षण अतिआ-
नँदगहे उतकेभट समुदाय । पंसरो महाविषादइत नृपसों कह्यो
न जाय॥ दुश्शासनहिंअचेतलखि भीम सुवीर अभर्म । रथताजि
गोतहँवेगसों समुझि सभाके कर्म ॥छन्द॥ तहँजाय ताकहँ लखि
अचेत । भटभीम इमि उरआनिनेत ॥ भोगुणत यहशठम्तक
प्राय । किमिपियो शोणित भेदिकाय ॥ बिनुचेत यहकिमिलखिहि
तौन । हमकहे शोणित पियन जौन ॥ कटिबसनले जीवनबना-
य । त्यहिकियो चेत न मरुतछाय ॥दोहा॥ करिसचेत दुश्शास-
नहिं भीमसगर्ब सचाय । धरिछाती परलात इमि बोलोभुजाउ-
ठाय ॥ कृपकृतबर्मा अधिरथिहि आदिक सबसुनिलेहु । बधत
याहिहम सुभटसों रक्षण करहुसनेहु ॥ यहसुनि कोऊकरिसक्यो
नाहिं रक्षण गहिगर्ब । पार्थआदिकजकेशरन हैंछाजितभटसर्ब ॥
सोरठा ॥ इमि सुभटनसोंटेरि भीमपराक्रम भीमभट । दुश्शासन
तनहेरि कहतभयोअमरषभरो ॥ तबतो शोणितपान करनकह्यो
हम मधिसभा । सोअबकरत सचान सकतत्राणकरि कौनभट ॥
चौपाई ॥ नृप यहसुनि तो सुत रणधीरा । कहतभयो इमि वचन
गँभीरा ॥ ये ममकर करि कुंभ बिदारन । देनहार गोबाजिहजा-
रन ॥ इनके बलतुम सर्बस हारे । बर्ष त्रयोदश बिपिनबिहारे ॥
शरपंजर बिरचन बलभारे । पीन पयोधर मर्दनहारे ॥ अतिसु-
कुमार सुगन्धनि भीजे । राजसूयके जलसों भीजे ॥ केशद्रोपदी
को त्यहि कर्षण । कर्णहार ममभुज अरिधर्षण ॥ तुम सबलखत
रहे त्यहि क्षनमें । तब न रह्योकछु बिक्रम तनमें ॥ अब हमपरे
समरमें ऐसे । मनमें रुचै करोसो तैसे ॥ शोणित पियन कहत
तुम सोऊ । करोमोहिं नहिं अमरषकोऊ ॥ क्षात्रधर्म पालनकरि
रणमें । हम इमिपरे सरेभट गणमें ॥ काकशृगाल पियें समशो-

णित।केतुम पियो करणकरिद्रोणित॥ यहसुनि भीमक्रोधअति गाहिके। फिरि वहि भांति भटनसों कहिकै॥ गहि तो सुत को भुजाउपाऱ्यो। सोई तासुगात पहँमाऱ्यो॥ चरण दबाय कण्ठ पहँ धरिकै। असिसों बक्षफारि मुदभरिकै॥ लागोपियनरुधिर कछुताता। बीरबिभत्स रौद्ररसराता॥ पियेबारिग्रीषमकोप्यासो। तिमि सोरुधिर पियत तहँभासो॥ दोहा॥ गोरस ऊख मयूष के रसआदिक जे पेय। तिन सबते यारुधिर में है अतिस्वाद अ-मेय॥ इबिधिसराहि सराहि त्यहि करत सुशोणितपान। लखि सबजाने असुर यह नहिंमनुष्य बलवान॥ भरिअंजलि पीवत रुधिर उमगिगातपैजात। गिराधारधर शिलासम लसोभीमको गात॥ कुम्भकरणसम गरजिकै फिरिसब भटनप्रचारि। कंठ काटिपीवनलगो शोणितकर्मबिचारि॥ कहिकहिकहि ताकेकिये कर्म आदितेसर्ब। डकरि डकरि पीवतभयो शोणितभीम सगर्ब॥ महिखरी॥ इमिपियत शोणितदेखि भीमहिंभीति इतकेभटकहे। यहप्रबलराक्षस रहतहो नरवेशअबलों छपिगहे॥ अब आज प्रकटितकरतभो निजरूपगुण लहिक्षणभलो। तजिराजपुत्रहि चहतभक्षण सबहिनातरु भजिचलो॥ सुनुभूपतहँ तोसुवन द-शतिनि देखि बन्धुहि रिसिभरे। बढ़िमोहबशतजि जीविताशा भीमभटसों भिरिलरे॥ तबभीमतजि दुश्शासनहिं चढ़िसुरथपै आनँदभरो। दशबाणसों बधि तिन्हैं सबनिज बन्धुभट मोदित करो॥ दोहा॥ त्यहिक्षण हाहाकारकरि भूपभगी ममसैन। दुर्यो-धनकृप कर्णसब मोहितभये अचैन॥ श्रीयदुपति श्रीकृष्णको कह्योकियो नहिंजौन। भूपतासुफल प्रकटभो बारिसकैतेहिकौन॥ सोरठा॥ अब धरि धीरज भूप रामकृष्ण सुमिरणकरो। राम कृष्ण नररूप परब्रह्म परमातमा॥

इतिमहाभारतदर्पणेकर्णपर्बणिद्वि दिनयुद्धेदुश्शासनबधोनामषष्ठोऽध्यायः

६ दोहा॥ बाधिबन्धुहि शोणितपियत लखिअति अनरथऊटि।

सहिनसके तोसुवनदश लरेभीमसोंजूटि ॥ दण्डधारसह धनुगहे बातवेगबलवान । कवचीपाशीखड्गअरु आसोलुपमतिमान ॥ सुभटसुबर्चस पुत्रतुव निपुण निषंगावीर । कर्षिकर्षि धनु वर्षि शर कियेयुद्ध गम्भीर ॥ वसुकला ॥ भटभीम कोपि । तहँ प्रलय रोपि ॥ हनिअतिउदण्ड । दशबिशिखचण्ड ॥ तिनभटनमारि । गहिदियोडारि ॥ सोनिरखिवीर । भेविगतधीर ॥ दोहा ॥ दुश्शासनको बधभये कर्णहिनिरखि अचैन । शल्यभूमिपति कर्णसों कहतभयो इमिबैन ॥ जयकरी ॥ सूतसुवन कतभये अचैन । तजो शोचकछु संशयहैन ॥ रणमेंचढ़िकरि युद्धबिनोद । क्षत्रिहिमरिबो मंगलमोद ॥ जयकै अजय युद्धमेंहोत । तुमलरिबेमें करो न ओत ॥ पारथआदिसुभटरणधीर । आवततुमपहँबर्षततीर ॥ तो सुतभट वृषसेनअमान । बढ़िशत्रुनपहँ बर्षतबान ॥ करोयुद्ध तुम शोचाबिहाय । नृपकेशोकहि देहुदुराय ॥ तुमपहँधरोयुद्धको भार । चलोपार्थपहँ रचिशरधार ॥ जीते सुयश मरेसुरलोक । लरोत्यागिनृप सुतकोशोक । सुनियहबचन सूतसुतदक्ष । लरिलागो मर्दनपरपक्ष ॥ तिमिवृषसेन बाणझरिलाय । भयोबधत अरिभट समुदाय ॥ सोलखिनकुल सुबीरउदण्ड । तासोंभिरो कर्षिकोदण्ड ॥ दोयक्षुरप्र बाण हनिआसु । ध्वजाकाटि धनुकाट्योतासु ॥ तुरित और धनुगहि रणधीर । कर्णपुत्रतेहि मारयो तीर ॥ तापहँनकुल नकुलपहँ तौन । बर्षबाण सुबिक्रम भौन ॥ कर्णतनय रणधीर बिशाल । अतिकरलाघव करितेहिकाल ॥ बध्योनकुलके रथ के सर्ब । तुरगबनायुज चपल अखर्ब ॥ दोहा ॥ नकुलतुरतसो सुरथतजि गहिसुचर्म तरवारि । गहिखगगतिह्वै सहसभट दयो भूमिपैडारि ॥ इमिविधिकरत अद्भुतकरम नकुल सुभटकेगात । करतभयो वृषसेनभट अगणित शायकपात ॥ काटिशरन सों चर्मअसि कियोअनगनटूक । गयोभीमकेसुरथपहँ तबभटनकुल अचूक ॥ सोरठा ॥ कर्णपुत्र रणधीर गर्जिगर्जिबढ़ि कर्षिधनु ।

बर्षो अगणिततीर तिनयुगबन्धुन भटनपहँ॥ चौपाई॥ सोलखि अंजनिसुत रणधीरा। बीरबांकुरो अनुपमबीरा॥ साहिनसक्यो हियअमरष राष्यो। यहिप्रकार पारथसों भाष्यो॥ कर्णतनय घन सदृश नर्द्दत। माद्रीसुतहि शरनसों मर्द्दत॥ तापहँ बेगिचले शर बाहत। अजदतासु निजजययश चाहत॥ यहसुनि पार्थ शरासन कर्षत। चलोकर्णसुतपै शरबर्षत॥ सोलखि इतके सुभट सग्रामे। अमरथहोन चहत अनुमाने॥ कृपकृतबर्मा अश्वत्थामा। शकुनि सुयोधन नृपबलधामा॥ शकुनितनय वृकक्राथ अमाना। दृढ़नाम योधाबलवाना॥ बर्षतबाण मंत्रपढ़ि पढ़िके। आड़तभये ताहिबढ़ि बढ़िके॥ सोलखि उतके योधारूरे। तिनसोंभिरे गर्ब सों पूरे॥ सात्यकि धृष्टद्युम्न सेनेशा। द्रौपदेय भटभीषम भेशा॥ भईतहां अतितुमुल लराई। पृथक् पृथक् सबकही न जाई॥ नृप कुलिन्दकोसुत रणचारी। कृपाचार्यसों भिरोप्रचारी॥ कृपाचार्य अति गौरवलीन्हों। द्विरद सहिततताकोबध कीन्हों॥ सोलखि तासु अनुज रणचारी। चलोबिप्रपहँ धनुटंकारी॥ तबगान्धार भूप प्रणधरिकै। काट्यो तासुशीश शरझरिकै॥ नृपकुलिन्दको सुत धनु कर्षत। द्विरदबढ़ाय चलो शरबर्षत॥ तासोंभिरो क्राथरथ चारी। क्राथहि बध्यो तौन धनुधारी॥ तबवृकशरण तासु गज अरद्यो। गजपगसों त्यहिरथसह मरद्यो॥ बृकहिमारि नृपसुत दृढ़घायक। चलोशकुनिपहँ बर्षतशायक॥ बध्योताहि गान्धार महीपति। बाणनकीबर्षा करिदीपति॥ शतानीक नाकुलि त्यहि पलमें। बध्योअसंख्यन भटममदलमें॥ यहिप्रकार दुहुंदिशिके योधा। बढ़िबढ़िभिरि करिकरिअवरोधा॥ कीन्हेतुमुल युद्धबल भारे। अगणितमरि सुरलोक सिधारे॥ दोहा॥ कर्णपुत्र त्यहि क्षणकियो बिक्रम कठिनकठोर। भीमनकुल कृष्णाहिंहन्यो तीक्ष्णबाण अथोर॥ सो लखिपारथ बर्षिशर नृपमम योधनटारि। भोसन्मुख वृषसेनके भटनभूरिभयभारि॥ सोरठा॥ पार्थहिनिकट

निरेखि कर्णपुत्रको दण्डधर । शायकबर्षत तेखिचलो नमुचि जिमिशक्रपहँ ॥ त्यहिक्षण अद्भुतकर्म करतभयो धनुधरमुकुट । अगणित शरताकिममें हन्योपार्थहिबर्षिशर ॥ चौपाई ॥ अतिकर लाघवकरिपण धरिकै । मण्डलसरिस शरासन करिकै ॥ अगणितबाणकाटि पारथके । करता तासु सरिस स्वारथके ॥ बाहुमूलमधि बाण प्रहारयो । तीक्षण नवशर कृष्णहि मारयो ॥ फिरि दशबाण पार्थके तनमें । मारतभयो गर्बगहि मनमें ॥ तबपारथ अतिरिसि बिस्तारयो । कर्णतनयको नाशबिचारयो॥करित्रिशाख भृकुटीअलि भीषम । भोजिमितरणिदुसह लहिग्रीषम ॥ कर्णहि टेरिकह्यो इमिभाजा । लहिअकेल तुमसहित समाजा ॥ ममपुत्रहिबधि आनँदलीन्हें । धर्मत्यागिअधरम रणकीन्हें ॥ दुर्योधन सह तुम्हरेदेखत । हमतोसुतहि बधन अवरेखत ॥ सँगलै नृप कृप आदिक दक्षण । जोकरिसको करोतोरक्षण ॥ शकुनिदुशासन तू दुर्योधन । अनरथमूल प्रलय बिधि शोधन ॥ क्रमसोंतुम सब नभपथलैहौ । गयो दुशासन जहँतहँजैहौ ॥ इमिकहि पार्थ धनुषधर नायक । कर्णसुतहि मारयो दशशायक ॥ फिरिप्रहारि शायक अलिचोखो । काट्योतासु शरासन नोखो ॥ फिरिप्रहारि युगशर अनियारे । काट्योतासु भुजाबलभारे ॥ तबक्षुरप्र शर टेरिचलायो । काट्योतासु शीशमनभायो ॥ दोहा ॥ बिभुजाबिशिर ह्वै कर्णसुत गिरोसुरथतेभूप । यथाबायुबश शिखरते पुष्पितवृक्ष अनूप ॥ बधलखिसुत बृषसेनकर सूतजहवै हलचेत । धरिधीरजफिरि पार्थपहँ चलोअजय जयहेत ॥ यह लखिकै केशव कहे आवतकर्ण सखेद । बेगिकरोअब तासुबध गुणिअद्भुत धनुर्बेद ॥ यहसुनिकै पारथकह्यो तो अनुकम्पापाय । यहिदिनमेंहम सूतजहि बधबदिब्य शरछाय ॥ सोरठा ॥ इमिकहि पार्थ अमान करषि कठिन गाण्डीवधनु । बर्षणलागोबाण सूतसुवन रणधीर पहँ ॥ तिमिसूतज बलवान बिजय धनुष टङ्कारिबढ़ि । करिअ-

द्भुत सन्धान बरषो शायक पार्थपहँ ॥ रोला ॥ टेरि टेरिप्रचारि दोउअबिदित बीरबिशाल । भयेबर्षत दुहूंदिशिसों दिव्यशायक जाल ॥ दुहुनकेरथ व्याघ्रचर्मनि रचितपरमअनूप । दुहुनकेरथ श्वेतघोरन सहितराजितभूप ॥ द्विरदध्वजरथ कर्णको अरुपार्थकोकपिकेतु । दुहुनरथपैदयेदोउ बिरचिशायकसेतु ॥ दुहुनके दिशि घनेबाजन लगेबाजनतत्र । दुहुनकेसँग सुभट दुहुंदिशि लगेबर्षण पत्र ॥ सुनोन्टप तेहिसमय दुहुंदिशिदुहुनके भटपक्ष । गुणे निज निज सुजय निश्चल शत्रुनाश समक्ष ॥ धनुषबिधिमें सदृशदोऊसुभट भिरि तेहिकाल । कियेअद्भुतकर्म दुहुंदिशिबर्षि शायकमाल ॥ शक्रसंबर सरिसअतिशय प्रबलदोऊबीर । किये जैसो युद्ध सो सबकहत छूटतधीर ॥ सिद्ध सुर गन्धर्व किन्नर यक्ष आदि समस्त । भयेचाहत फालगुणको बिशद बिजयप्रशस्त ॥ असुर गुह्यक यातुधान पिशाच आदिक सर्ब । भयेचाहत सूत सुतको बिजय बिरद अखर्ब ॥ भानुभाषे पारथहिबधि लहै कर्ण सुजीति । कह्योमघवा बधैकर्णहि पार्थपालकनीति ॥ कह्योबिधि सों शक्रतेहिक्षण आपुभाष्योपूर्व । कृष्णजेहि दिशिरहैगोसो लहैगोजयगूर्ब ॥ कहौफिरि अबलहैगो कोसुजयशत्रुहिमारि । नाथ निश्चय भाषिसोमम देहुसंशय टारि ॥ बचनयहसुनिकह्यो बेधा लहैगो जयपार्थ । कृष्णजाकेसुरथपै नितिसधिहि ताकोस्वार्थ ॥ बचनयहसुनि भयेमोदित सुमनके समुदाय । असुरपक्षी कर्णके सबदये मोदबिहाय ॥ कह्योतेहिक्षण शल्यसों इमि कर्णपालक धर्म । पार्थहमको बधैतौतुम करौकैसोकर्म ॥ शल्यबोल्यो पार्थ तुमकहँ बधैतौहमएक । बधबसिगरे पांडवनकहँ बराषिशरगहि टेक ॥ दोहा ॥ पारथबूझे कृष्णसों कर्णबधै जोमोहिं । तौप्रभु तुम करिहौकहा सूतसुवनकहजोहिं ॥ कहेकृष्णतोकर्णको करिसगर्ब संहार । क्षणमेंबधि सबकौरवन पूरबप्रलय पसार ॥ कहेपार्थ प्रभु इमिकरत जापैपूरपियार । सोहमक्षणमें सूतजहि बधब नसंशय

चार ॥ सुमनसिद्ध गन्धर्व ऋषि किन्नर अप्सरसुद्द । रहेप्रगट रहि तहँलखत कर्णार्जुनको युद्ध ॥ सोरठा ॥ अतिशय संगरघोर होतभयो तेहिक्षणतहां । शस्त्रप्राणधनचोर पूरिरहे रणगेहमधि ॥ चौपाई ॥ पार्थकर्णके शायकरूरे । बारिबुन्दसम दुहुंदिशि पूरे ॥ दोऊअति धनुबिधि बिस्तारे । अगणितहय गज भटबधिडारे ॥ सोलखि पांचसुभट इतकेरे । शरधनुधर बीरबड़ेरे ॥ दुर्योधन कृपशकुनि सोहाये । भोजभूप द्विजसुत भट गाये ॥ बढ़िबढ़ि कृष्ण पार्थहि तकि तकि । बरषे बिशिख भागुमति बकि बकि ॥ तेहिक्षण पार्थचक्रसमचरिकै । भल्लअर्ध शशिकी झरिकरिकै ॥ सबके हय सारथिन सँहारे । ध्वज धनुकाटि भूरिशरमारे ॥ लखि तिनकी यहदशाप्रमादी । शतसुरथी शतहय गजसादी ॥ सक- तुषार यमनकांबोजा । भिरेपार्थसों गहि अति ओजा ॥ बर्षि क्षुरप्र पार्थतेहिक्षणमें । तिन्हैं काटिडारो सबगणमें ॥ सोलखि सुरगण अति मुदपाये । साधुसाधुकहि तूरबजाये ॥ बरषेसुमन पार्थके ऊपर । व्यथितभयेसब तासुतभूपर ॥ द्रोणतनय सुर बाणी सुनिकै । सुमनदृष्टिलखि मनमेंगुनिकै ॥ दुर्योधन नृपको करगहिकै । यहिबिधि कहतभयो थिररहिकै ॥ नृपप्रसन्नह्वै मम सिखधरहू । बन्धुबिरोध दोष परिहरहू ॥ पांडवअजौ सोम्यता चाहत । जनबिनाशलखि हियेकराहत ॥ दोहा ॥ तुमबिरोध तजि धर्मनृपसों मिलभायपुलेहु । देहुभागकरि भूमिसम मिटैसकल संदेहु ॥ भूपसमणहत शेषसब निजनिज गेहनजाहिं । मिटमहा अनरथ नृपति औरमंत्र अबनाहिं ॥ निजमरिबेकी शङ्ककरिहि- मनकहत यहबैन । हममम मातुलअमरहैं यहकछु गोपितहैन ॥ बन्धुबर्ग समुदाय सह तुम अरु नृपति समस्त । गुणि सबको कल्याणहम बोलत बचनप्रशस्त ॥ तुममानौ तौ समितकरि कर्ण पार्थकोयुद्ध । धर्महि तुम्हहिं मिलाइहमकरैंहिताईशुद्ध ॥ चौपाई ॥ द्रोणतनयके सुनियेबैन । कहतभयो तो सुत बलऐन ॥ तुमजो

कहेन अनुचित तौन । तुम्हेंसमानमोरहित कौन ॥ पैहमकहत तौन सुनिलेहु । नाहिं ममहियमें प्रबिशतयेहु ॥ सिंहसमान भीम बलवान । गहिममबन्धुहि द्विरद समान ॥ बक्षफारि शोणित करिपान । गर्बितबोलो बचन अमान ॥ सोमोहिंलगो कुलिशको पात । किमिअब मेलकरें हमतात ॥ हमकीन्हे उन्हकोअपकार । सोकिमि भूलिहि उन्हेंसवार ॥ ताते गहौंनसंशयनेक । कर्णपार्थ कहँ बधिहि सटेक ॥ दोहा ॥ यहसुनिकै चुपकैरहो द्रोणतनय मति शुद्ध । होतभयो तेहिक्षण महा कर्णार्जुनकोयुद्ध ॥ चौपाई ॥ यहि बिधि लरतभये तेभिरिकै । लरतमनों युगबारिद थिरिकै ॥ दोऊ शक्र सरिस तहँहरषे । बज्रसमानघनेशर बरषे ॥ मण्डलसरिस शरासन लीन्हे । दोऊनभशर छादितकीन्हे ॥ पक्षीजूह बृक्षपहँ जैसे । बासहेतु निपततहैं तैसे ॥ दोउनकेशर दोउनऊपर । परें परैजिमि पाहनभूपर ॥ दोऊ दोउनकेशरक्रूरे । बाणनकाटियुद्ध महिपूरे ॥ दशदशबाण दुहुनकेतनमें । दोऊहनतभये तेहि क्षन में ॥ पार्थतहांअति अमरषपाग्यो । अस्त्राग्नेय कर्णपहँत्याग्यो ॥ तेहिक्षणसुरथ कर्णकोराजित । भोअतिज्वाल जालसोंछादित ॥ सबकेबसन बरनतहँलागे । कैअतिबिकल सुभटसबभागे ॥ सो लखिकर्ण धनुषधरदारुण । छाँड़तभयो अस्त्रबरवारुण ॥ तासों ज्वालजाल भो लोपित । भयोजलदसों महिनभ गोपित ॥ तब बायव्य अस्त्रतजिपारथ । ताहिबिदारि करतभोस्वारथ ॥ दाइत अस्त्रकियो बिस्तारा । तासोंकढ़ी शरनकीधारा ॥ हयन सहित सूतजके गातहि । तेबेधे कण्टकजिमि पातहि ॥ तब अतिरिस करि कर्ण अमाना । छांड्यो भार्गव अस्त्रमहाना ॥ दोहा ॥ अस्त्र अस्त्रसों समितकरि बर्षिबाण पगधारि । बधिअगणित पांचाल भट दयोभूमिपैडारि ॥ भुजंगप्रयात ॥ बलीकर्ण बैकर्णके शत्रुसेना । गुन्यो तो सुतै आशिजे जीतिदेना ॥ कियोपार्थपै बाणकी बृष्टि कैसे । नजैशैलपै बारिमेघालि जैसे ॥ करेपार्थके अस्त्रको व्यर्थ

तसे । यथा ईतिकी भीतिको भूपनसे ॥ किये चण्डको दण्ड को द्रण्डभारी । लसोकालजैसो प्रलयकालकारी ॥ दोहा ॥ तेहिक्षण इलकेभटगुणे कर्णपारथहिमारि । देनचहत कुरुपतिहिजय धनु बिधि सिधि निरधारि ॥ तथापार्थ गाण्डीवधनु किये मण्डला कार । बर्षौसूतजपैबिशिख यथामेघजलधार ॥ धारिपार्थकोबाण सब बास पार्थपहँछाय । कर्णबधतभो शरनसों हयगजभटसमु-दाय ॥ सोरठा ॥ सोलखि पवनकुमार बिक्रमनिधि अमरषभरो । कशिनेजसुप्रण बिचार पाणिपाणिसों मलतभो ॥ जयकरी ॥ भीम-सेन अतिरिसिबिस्तारि । पारथसों इमिकह्यो बिचारि ॥ तुम गन्धर्बन जीत्यो पूर्ब । कियो शम्भुसों संगरगूर्ब ॥ इन्द्रहिजीति कियोबनदाह । असुरनसों जयलह्योसचाह ॥ अबकत शिथिल भयेहौतात । सहतकर्णको आयुधपात ॥ सुधिकरिपूर्ब कियेप्र्प्र-पकर्म । शीघ्रबधौ यहिगुणि निजधर्म ॥ यहसुनिकै केशव हित मानि । पारथसों बोले अनुमानि ॥ सूतजप्रबल परोयहिकाल । तुमकतगहत शिथिलताचाल ॥ यहिबिधिलहौ जीतियहियाम । भोगौ भूरिभूमि अभिराम ॥ यहसुनिपार्थ क्रोधबिस्तारि । त्याग्यो ब्रह्मअस्त्र प्रणधारि ॥ तजितेहि प्रतिम अस्त्रकरिगौर । कीन्ह्यो ब्यर्थ कर्णतेहि ठौर ॥ सोलखि कह्योभीम अनखाय । अस्त्रभेद तुमदये भुलाय । शायकत्रर्षि बधौयहितात ॥ शिथिलभये दिन बीतोजात ॥ तबपारथ अमरषसों पूरि । सूतजपहँ बर्ष्यो शर भूरि ॥ ममसेनामधि शायकछाय । बध्योअसंख्यनभट समुदाय ॥ शरगाण्डीव धनुषसोंमुक्त । भेजिमि किरणि प्रलयकेउक्त ॥ तपि सहसांशु सरिस जगजैन। भस्मित करतभयो ममसैन ॥ दोहा ॥ तेहिबिधिसूतज प्रबलभट बर्षिबाण उरदण्ड । भीम कृष्णपार्थहि हन्यो तीनितीनि शरचण्ड ॥ कृष्णहि शरताड़ित निरखि पार्थ क्रोधबिस्तारि । शल्यभूपके गातमें मार्‍यो शायकचारि ॥ मारि केतुमें एकशर करिअद्भुत सन्धान । तीनि चारि बसु दश हन्यो

सूतजकेतन बान ॥ तीनि आठद्वै चारि दशतीक्षणशायक भूप। फिरिक्रमसों कर्णहिंहन्यो करिशरवृष्टि अनूप ॥ सोरठा ॥ जलद झरत जिमि बारि तेहिबिधि शायकबरषि तहँ । बधेद्विरद शत चारि रथीआठशत बधतभो ॥ सहसतुरग असवार पैदरआठ हजारबधि । बरषिघनोशरधार कर्णहिदयो अदृश्यकरि ॥ चौपाई ॥ भूपतिसुनो कर्णतेहिक्षनमें । मण्डलसम धनुकरि गुणिमनमें ॥ करि करि अगणित परस्परछेदन । बध्योअसंख्यन भट अरि खेदन ॥ सुवनअश्विनीके मनभाये । तेहिक्षण धर्मभूपपहँआये ॥ औषधिकरि शरव्यथा दुराये । धर्मभूप अति आनँदपाये ॥ रथ चँढ़िकै आयो निजदलमें । सुभटन मुदितकियो तेहिपलमें ॥ कर्णसिंह तेहिक्षण रणबनमें । शतशरहन्यो पार्थकेतनमें ॥ साठि सुबाण केशवहि मार्‍यो । अनिल नन्दनहिं अयुत प्रहार्‍यो ॥ छकोबीररस प्रबलप्रमादित । अरिदल कियोशरनसों छादित ॥ तिमि पारथधनु कर्षण करिकै । रथपर चपलचक्रसम चरिकै । बाणनअन्धकार करिदीन्हो । जातेपरो न हयगज चीन्हो ॥ तीक्ष-णदश शर शल्यहि हनिकै । कर्णहिं मार्‍यो द्वादश गनिकै ॥ फेरि सात शायक अतिचोखे । मारतभयो तेजसोंपोखे ॥ शायकबर्षि कर्णधनुधारी । हन्यो ताहि शरतीनि प्रचारी॥कृष्णहि हन्यो पांच बरशायक । कर्णसुबीर बिदित भटनायक ॥ पार्थ केशवहि बेधित देखी। बर्षोबिशिख नाश अवरेखी ॥ दोयसहस सूतजके अंगी । बधिकीन्हे यमपुर गतसंगी ॥ दोहा ॥ तजिकर्णहि तेहिक्षणभगे तो सुतभट समुदाय । जिमि ब्याधहि लखि सुतरु तजि भगत बिहँग भयपाय ॥ पार्थअधरथीके बधनको प्रणपूरणधारि । पार्थ लसो जिमि त्रिपुरदले मध्यलसो त्रिपुरारि ॥ सोरठा ॥ तिमि सू-तज रणधीर प्रलयभर्‍यो परसैनमधि । दोऊतुलबलबीर कीन्हे अद्भुतयुद्ध तहँ ॥ भुजंगप्रयात ॥ महाबीरदोऊ धनुर्वेदचारी । दुहूं ओरकेबाणकी वृष्टिभारी ॥ किये घोरसंग्राम ताठौरदोऊ । नहीं

सामुहेभेदुहूंओर कोऊ ॥ गयेदूरिजेते भयेमौनऐसे । गयेसामने तेभये नाभएसे ॥ दुहू ओरके योंकहे याचिबेको । नहीं आजुतो योगहै बाचिबेको ॥ दोहा ॥ कर्णहि बधिदल कौरवी बधिहिपार्थ बलऐन । कैपार्थहि बधिकैकरण बधतपाण्डवीसैन ॥ चौपाई ॥ दोऊ गगन शरनभरि दीन्हे । अन्धकार आरोपितकीन्हे ॥ दोउन केअति बिक्रमदेखी । विस्मितभये सुवनअवरेखी ॥ दोऊक्षात्रधर्म अवतंसे । इमिकहि कहिसुर दुहुंन प्रशंसे ॥ दोउनके करकरि करभारी । रहेजात लखि काननचारी ॥ कबहुंपार्थ बढ़ि बिक्रमकीन्हों । कबहुँ सूतसुत गुरुतालीन्हों ॥ रह्यो न थिरघटि बढ़ि पद कोऊ । अतिशय प्रबल धनुषधर दोऊ ॥ भूप किये तहँ तुमुल लराई । पृथक् पृथक् सबकही न जाई ॥ नृप तेहिसमय भई कछुलीला । सोहम कहे सुनो श्रुतिशीला ॥ नागराज को सुत रिसिपागो । जोखाण्डव सुबिपिनते भागो ॥ मातबधनको अघगाहिहारे । सोतेहि समो समय लहिनीरे ॥ पार्थहि बधन हेतु अतिधरकस । प्रविशत भयो कर्णके तरकस ॥ गहिशररूप रहोछवि सानो । काल कराल पार्थको मानो ॥ ऐरावत सुतमुख सो शायक । योजित कियो कर्ण भटनायक ॥ लखिसो बाणकाल समनाचत । शक्रकह्यो नहिं ममसुत बाचत ॥ कहे बिरंचि शोच मति करहू । मरिहिन तो सुत साहस धरहू । चाहिपार्थको शीश अनोखो । कर्ण तज्योसो शायक चोखो ॥ दोहा ॥ निरखि तासु ऊरध सुगति केशवरथहि दबाय । कछुमहिमधि प्रविशित कियो चारुचक्रगहिचाय ॥ भूमिचक्र प्रविशित भये चारोंहय तेहिमान । जानुमोरिमहिपहँधरे हरिइच्छा बलवान ॥ इन्द्रदत्त शुचिमुकुट माधिलगोबाण करिगौन । कटिकिरीट महिमाधिगिरो व्यर्थभयोशर तौन ॥ श्लोक ॥ गोकर्णासुमुखीकृतेनइषुणागोपुत्रसंप्रेषिता गोशब्दात्मजभूषणंसुविहितंसुव्यक्तगोसुश्रमं । दृष्ट्वागोगतकंजहार मुकुटंगोशब्दगापूरिवे गोकर्णाशनमर्दनइवनतयानप्राप्यमृत्यो

वेशम्॥ दोहा ॥ उग्रबाण बपुनागवह बहुरिकर्ण पहँजाय। कह्यो कृष्णाकीकृपाते बच्योपार्थकोकाय॥ फेरितजोमोहिं पार्थपहँ अब के बचीनतौन। शक्रहुकेरक्षणकरे करिहिकाल पुरगौन॥ सोरठा॥ सूतजसुनि यहबैन कह्योनागसों कौनतुम। सोसुनिनागसचैन पूर्व कथा सबकहतभो॥ तोमर॥ सुनि सूतसुत बलवान। इमि कह्योकरि अनुमान॥ हमऔरकोबलपाय। नहिंचहतजयसुख दाय॥ तुमजाहु निजअस्थान। हम बधबहानि निजबान॥ फिरि चलोसो अहिएक। गहिपार्थ बधको टेक॥ तेहिदेखि हरिगहि खेद। कहिदये पार्थहिभेद॥ तेहिपार्थ हनिषटपत्र। करिदयो षटधातत्र॥ फिरिबर्षि शायकधार। शतरथिनको संहार॥ भो करत पारथबीर। भटविदित अतिरणधीर॥ भटकर्ण तेहिक्षण भूप। ह्वैदुसह शूरस्वरूप॥ बरशरनकी झरिलाय। दशहन्यो ताकेकाय॥ तब पार्थ रिसकरिचाहि। शरहन्यो द्वादशताहि॥ तबकर्ण पार्थहिटेरि। शरहन्यो नब्बे फेरि॥ फिरिवासुदेवहि हेरि। शरहन्यो द्वादश घेरि॥ तकि गरजि गरजि सहास। शर हनतभो गुणिनास॥ शरबर्षि पारथ आसु। नहिं सह्यो गरजनि तासु॥ तकिकर्ण भटको गात। भो करत बहुशरपात॥ दोहा॥ करलाघव करि बर्षिशर टेरिटेरि गहिटेक। चारु कर्णकेकर्णको कुण्डल काट्योएक॥ अतिरिस करि तेहितीनिशर मार्यो कर्ण कराल। परित्रिदोष बश पुरुषसम पार्थभयो तेहिकाल॥ धनु गाण्डीवहि कर्षित्यहि पार्थहन्यो बहुबान। लसोकर्ण बर्षा समय गैरिक शृंगसमान॥ सोरठा॥ सुनोभूप तेहिठौर दोऊबरणे धनुष धर। कियेयुद्ध यहि डौर जोलखि बिस्मित सुमनभे॥ चौपाई॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें। कर्णगह्यो अति गौरव मनमें॥ अतितीक्षण बरबाणअधीरे। मारतभयोपार्थकेहीरे॥ तासोंभिदि मोहित ह्वैपारथ। नहिं करिसक्यो धनुषचारितारथ॥ सोलखि कर्णधर्मबिद आरज। थिरह्वैरहो त्यागि धनुकारज॥ कृष्ण पार-

थहि मोहित ज्वैकै । कहतभये अति दोचित ह्वैकै ॥ पार्थ धार
धरिशायक बरषो । प्रबल शत्रुकोबधकरि हरषो ॥ पार्थकृष्णकी
बाणीसुनिकै । लगो बिशिख बर्षण धनुधुनिकै ॥ तथा कर्णअति
अमस्ब पागो । करिलाघव शरबर्षण लागो ॥ दोऊधनुधर गौरव
लीन्हो । अतिशयकठिन युद्धतहँकीन्हो ॥ नृपतेहिसमय समुभि
निजबानो । कालकर्णके ढिगनगिचानो ॥ परशुरामको शापसो-
हायो । अरुद्विजशाप समयलखि आयो ॥ रथकोबाम चक्रबर
बरणी । गाढ़ेग्रसतभई तबधरणी ॥ शल्य यतन करि बिस्मय
भारे । बली तुरग सबबल करिहारे ॥ यह अनरथ लखि कर्ण
बिचार्यो । महिकेहिहेतु सुरथ ममधार्यो ॥ मैनाकियो अधरम
निजजानत । दानमान दायक सबमानत ॥ धर्म धर्म करतहि
नितिरक्षत । अबममधर्म भयोकित गच्छत ॥ दोहा ॥ इमिकहि
सुमिरत निजधरम धरमधुरंधर धीर । पारथके बाणन भयो
बिकलकर्ण रणधीर ॥ कर्षिधनुष कृष्णहि हन्यो तीक्षण तीनि
सुबान । हन्योअर्जुनहि सातशर करिअद्भुत सन्धान ॥ अति
तीक्षण सत्रहबिशिख कर्णहि मार्योपार्थ । गातबेधि ते कढ़िगये
भूपतिसुनो यथार्थ ॥ सोरठा ॥ कर्णसाहसीधीर तजतभयोब्रह्मा-
स्त्रतब । सो लखिपारथबीर इन्द्रअस्त्र छांड़तभयो ॥ इन्द्रअस्त्र
बरतासु व्यर्थभयो ब्रह्मास्त्रसों । सोलखिपारथआसु तजतभयो
ब्रह्मास्त्र तहँ ॥ चौपाई ॥ तुल्यप्रभाव अस्त्रते भिरिकै । नृप सुनु
शमितभयो तहँ थिरिकै ॥ तहां कर्णअति तुरता गहिकै । पारथ
अबअन बचत इमि कहिकै ॥ कर्णबीर अतिधनु बिधि ठाट्यो ।
ताधनुको सुप्रत्यंचाकाट्यो ॥ पार्थ प्रत्यंचा और चढ़ायो । का-
ट्यो सोउकर्ण भटभायो ॥ तीसरि चउथि पांचई छठई । ज्या
काटतभो सतई अठई ॥ कटत प्रत्यंचा पार्थ चढ़ावै । कर्णकोटि
तेहिओज बढ़ावै ॥ पार्थ धनुषकी ज्यागुण अगरी । कीन्होंकर्ण
भाण्डकी पगरी ॥ क्रमसों पारथके धनकेरी । शतज्या काटिदये

शत्रुबैरी ॥ तहँ पारथ अतिगौरव लीन्हों। नृप अचरजकर लाघव कीन्हों॥ कटत चढ़ावत बर्षत बानहिं। नेकु न भेदपरो लखि आनहिं ॥ रथबिनु चले कर्ण तेहि क्षनमें। समयदेखि ह्वैब्याकुल मनमें॥ धनुरथपै धरिबीर उतरिकै। चारुचक्र युत करसोंधरिकै॥ लगो उठावन सुनु महि साईं। अचरज कियो कर्ण तेहिठाईं॥ गिरिसागर काननसह धरणी। रथकेसँग तेहि पूरण परणी॥ अंगुल चारि प्रमाण उठायो। सुरगणकेमन बिस्मयछायो॥ छुटो न रथतब कर्ण बिलखिकै। सजलनयनभो इतउत लखिकै॥ करिशरवृष्टि पार्थतेहिक्षनमें। बहुशरहन्यो कर्णकेतनमें॥ तिनसोंकर्ण महादुखपायो। पारथको इमि टेरसुनायो॥ हे हे पार्थ कहा अघधारो। बाणवृष्टि क्षणएक निवारो॥ ग्रसितचक्र धरणी ते जबलों। मैं काढ़ोंतू थिररहु तबलों। बिनाशस्त्रपहँ तजिबो शायक। उचितनतुम्हैं बिदित भटनायक ॥ दोहा ॥ नहिंकृष्णहि नहिंतुमहिंहम भीतिकहत येबैन। तुमसेक्षत्रिहि धर्मको तजिबो सोहतहैन ॥ जौलगिचक्र छोड़ाइहम नाहिंपकरैंधनुबान। पारथ तौलगि करिक्षमा बहुरिलरो मनमान॥ जयकरी ॥ तहाँ कर्णके सुनिये बैन। कहतभये केशव मतिऐन॥ तुम दुर्योधन शकुनि कराल। कबकीन्हे सुधर्म प्रतिपाल ॥ भीमसेन कहँजहरखवाय। सांपनसों दीन्हे कटवाय॥ करिकै मंत्रनाश अभिलाखि। इनकहँ लाक्षागृहमें राखि॥ निशिमेंदाह करायोपूर्ब। तबकित रह्यो धर्म ब्रतगर्ब ॥ कियेसभामें कुकरमजौन। अबनाहिं कहत बनत सबतौन ॥ तेरहँबर्ष बांटिमहि लेन। कियेकरार न चाहेदेन॥ तब कितगयो धरमकोकाम। अबलखि परोधरम अभिराम॥ बिरथ बिधनुष अकेलोबार। पार्थसुतहि बधिषटधनुधार॥ अतिआनँद लहि भयेअभर्म। अबचाहत करवावोधर्म ॥ अबतोबध करिबो यहियाम। हे पारथको धर्म ललाम॥ केशवके येबचन अनूप। सुनि सूतजकै लज्जित भूप ॥ फिरि रथपहँ चढ़ि गहिकोदण्ड। बर्षण

लागोबाण उदण्ड ॥ भरो क्रोध लाघव सरसाय । दयो पार्थपहँ शायकछाय ॥ सोलखिकै केशव अनुमानि । कहेपार्थसों अवसर जानि ॥ दिव्य शरनसों बेधि सडोर । अब यहि शीघ्र बधौकरि गोर ॥ दोहा ॥ केशवके येबचन सुनि पारथ धनुटंकारि । बर्षण लागो कर्णपहँ दिव्य अस्त्र प्रणधारि ॥ करतभयो ब्रह्मास्त्रको तेहि क्षण कर्ण प्रयोग । पारथतजि ब्रह्मास्त्र तेहि शमित कियो करि योग ॥ ताहिशमितकरि तजतभो दहत अस्त्रसों बीर । बारुणास्त्र सों तेहि शमित कियोकर्ण रणधीर ॥ घनतमसों छादित दिशा देखि पार्थकरिकोप । कियो अस्त्रबायव्यसों बारुणास्त्रकोलोप ॥ सोरठा ॥ सो लखि कर्ण अमान परम दिब्यशर गहतभो । करि अद्भुत सन्धान तज्यो देखि डरपे सुमन ॥ बज्रसरिस सो बाण तासु भुजातर मधिलगो । भिदि तासों बलवान मोहितभो अर्जुन सुभट ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहिक्षनमें । रथतेउतरिकर्णगुणि मनमें ॥ हर्ष बिषाद क्रोधसों पागो । बलकरि सुरथ उठावनलागो ॥ कृष्णचंद्र सोसमय निरेखी । पारथसों बोलेअवरेखी ॥ रथ चढ़ि गहेधनुष शरजौलौं । कर्णहि पार्थ बधौ तुमतौलौं ॥ कृष्ण चन्द्रकी बाणीसुनिकै । पारथ मंत्रयथारथ गुनिकै ॥ तीक्षणशर क्षुरप्र करलीन्हो । तासोंकेतुकाटि द्वैकीन्हो ॥ फिरि अमोघआंजालिक सुशायक । गह्योपार्थ भटधनुधर नायक ॥ चक्रत्रिशूल बज्रसम घोरा । कालदण्डसम कठिन कठोरा ॥ प्रलय कालके भानुसमाना । वायुअग्नि समदुसह महाना ॥ भरिआंगिरसमंत्र कीपुरता । करिअति अगणित गौरव गुरता ॥ सबदिशि हेरि क्रोधसों राता । बोलोपार्थ बीररसमाता ॥ अबहानि यहशरगौरव भेखो । कर्णहि बधिडारत शरदेखो ॥ इमिकहि पारथ तेहिशर बरसों । काट्यो शीशकरण केधरसों ॥ मारतण्डसम परमप्रभाको । महिपै गिरो शीशकटिताको ॥ तदनु गिरोधर तजि बलगारो । सरस सुखोचित सुखमाभारो ॥ मणिमय भूरिभूषणनि छाजित ।

महिपरभयो कर्णभट राजित ॥ दोहा ॥ सबके देखत तहँभयो अद्भुत अति अमलीन। तेजकर्णकी देहसों कढ़िभो रबिमें ली-न ॥ इविधि कर्णको बध निरखि केशवपांडव सर्ब। लगेबजावन शंखअति आनँदभरे सगर्ब ॥ गरजि गरजि सोमकसकल अरु पांचाल समस्त। सानँद बजवावनलगे जय दुन्दुभी प्रशस्त ॥ नृपतहँ ममदल मथिमढ़ो हाहाधुनि गम्भीर। भागिचले भट बिकलह्वै तजिबल गौरव धीर ॥ सोरठा ॥ कर्ण अग्निकी शान्ति युद्धयज्ञके अन्तलखि। आवतभयो अकान्ति सरथशल्य रितुज बिकल ॥ दुर्योधन क्षितिपाल कर्णसखाको बध निरखि। तजत नयन जलजाल महाराज अतिबिकलभो ॥ पूरितमोदमहानकरि करि धनुटंकार अति। भीमसेन बलवान गरजि गरजि निरतत भयो ॥ शल्य नृपति पहँआय सकलब्यवस्था कहतभो। सुनितो सुतक्षितिराय रुदनकियो अति दीनह्वै ॥ चौपाई ॥ नृपधृतराष्ट्र बचनयहसुनिकै। संजयसों बूझै शिरधुनिकै ॥ संजयकह्यो दशा लहिऐसी। ममसुतभूप गह्योगति कैसी ॥ संजयकह्यो सुनोनर-नायक। तेहिपलतोभट भये अचायक ॥ पार्थ धनुर्द्धर कर्णहि बधिकै ॥ अबहम सबकहँ बधी बरधिकै ॥ भीमसेन बिनुबधे न छांड़िहि। कोअससुभट ताहिजो आड़िहि ॥ यहबिचारि अति शय भयपागे। साहस छोड़ि भूरि भटभागे ॥ नृपतेहिक्षण मम भटभे तैसे। बूड़ेनाव बणिकजन जैसे ॥ लखियहदशाभूप दुर्यो-धन। निजचष जलको करि अवरोधन ॥ गुणि दुखगहेहारि य-हिक्षनमें। तोसुतभूप धीर धरिमनमें ॥ बिचले भटनटेरि अन-खायो। क्षात्रधर्म बहुभांति सुनायो ॥ सोसुनि तेसबफिरे नकैसे। रुकै न बहुत सरितजलजैसे ॥ सोलखि तोसुत सुभटअतोलो। सुहित सारथीसों इमिबोलो ॥ संशयत्यागि चपलकरि घोरे। सादरचलो पार्थके धोरे ॥ मैंरणरच्यो सुभुजबलभाई। बिचलि जाहिं सबसुभट सहाई ॥ कहाभीमका केशव पारथ। हमबधि

इन्हैं करब निजस्वारथ॥ येनाहिं आइसकल ममनीरे। ममबिक्रम गुणिडरपितहारे॥ यहिबिधि तोसुत नृपसों सुनिकै। धीरेचलो सारथी गुनिकै॥ सहसपचीस बीरभट बांके। बर्षतबिशिख चले सँगताके॥ सोलखि गर्बिउतैके योधा। बढ़ितिनको कीन्हेंअव-रोधा॥ सात्यकि भीम नकुल दोउभाई। धृष्टद्युम्न अति ओज बढ़ाई॥ कीन्हेंघोरयुद्ध तहँराजा। बधेअसंख्यन सैनसमाजा॥ तिमिइतके योधापण धरिकै। बधेअसंख्यन भट शरझरिकै॥ दोहा॥ गर्जि २ भटभीमतहँ गहिगुरुगदा अमान। बधतभयो केएकसहस हयगज भटपरधान॥ अति ब्याकुलह्वै तेहि समय इतकेभट हतशेष। भगेनृपहि तजित्याग करिक्षात्रधर्मकी रेष॥ सोरठा॥ सुनुभूपति तेहिकाल तोसुत नृपधनुधर मुकुट। बर्षिशरन कोजाल घोरपराक्रमकरतभो॥ एकसुभट रणधीर भिरिअगणित पुरभटनसों। कियो युद्ध गंभीर पूरिभूरि शर दिशनमें॥ रोला॥ शल्यनृप तेहिसमय भूपहिभरो अमरषदेखि। सैनबिचलितदेखि नृपसों कहतभो अवरेखि॥ युद्ध करि तनत्यागिक्षत्री लहै ऊरध लोक। युद्धमें तनत्यागि क्षत्रिहि श्रेष्ठत्यागौ शोक॥ करणदुःशा-सनहिं आदिक परेतो प्रियपर्म। लहेउत्तमलोकरणमें पालिक्षत्रिय धर्म॥ भीम सूतज द्रोणसुतवृषसेन सात्यकि पार्थ। मेदमय करि मेदिनी अब कियेफेरि यथार्थ॥ देखि दुःशासन करण वृषसेन भटको नास। भगेभट फिरिसकत नाहिंलरिभरे अतिशयत्रास॥ भूमिपति अब युद्धत्यागो देशकाल बिचारि। चलो डेरन कर्ण बधको शोक हियसोंटारि॥ शल्यके सुनिबचन भूपति युद्धत्यागि बिचारि। लगो रोदनकरन ब्याकुल कर्ण कर्ण पुकारि॥ शल्य नृप तेहिसमय बहुबिधि भूपतिहि समुझाय। चलेडेरनओरलैरथ युगुति सों करवाय॥ द्रोणसुत कृप शकुनि कृतबर्म्मादि सुभट समस्त। गहे अति दुखचले डेरनहोत सूरजअस्त॥ गये निज निजठौर सुर गन्धर्ब ऋषि समुदाय। सदल पाण्डवगये डेरन

दुन्दुभी बजवाय ॥ कृष्णपारथ मुदित पूरित शंखध्वनि कम-
णीय । गयेडेरन जय प्रशंसा सुनत अति रमणीय ॥ कहेकेशव
पूर्व वृत्तहिबध्यो शक्रअमान । आजुतासमकर्ण कहँतुमबध्योहानि
बरबान ॥ दोहा ॥ बहुदिनसों इच्छित रहे धर्मनृपति यहकाल ।
चलितासों बध कर्णको कहो सुबचन रसाल ॥ कृष्णपार्थ कहँ
देखिनृप जानिकर्णकोनास । उठिसप्रेम उरलाय बसिबूझेकुशल
सुपास ॥ सोरठा ॥ तहँअर्जुन यदुराय धर्मनृपतिको बचनसुनि ।
क्रमसों दये सुनाय जेहि प्रकार भोकर्णबध ॥ माहिखरी ॥ सुनि
प्रबलअरि भटकरणको बधधरम अति आनँदभरे । बहुभांति
हरिहि प्रशंसि प्रभुता कृपाकी बर्णनकरे ॥ फिरि कृष्ण पारथ
भटनसह चढ़िसुरथपै मोदितमहा । गेधर्म भूपतिकर्णभटमणि
परोहो जेहि थलतहा ॥ तहँ सहित सुत मरिपरो कर्णहि देखि
अति आनँदगहे । तुव कृपासों ममसुजय सबथर इबिधिकेशव
सों कहे ॥ बहुजरत चारुमसाल संगउमंग सों सबदेखिकै । नृप
धर्म डेरन गयेफिरि निज सुजय ध्रुवअवरेखिकै ॥ दोहा ॥ करत
प्रशंसा कृष्णअरु पारथकी सबबीर । गे निजनिज डेरन लहत
आनँद सिन्धु गँभीर ॥ भूपति कियो कुमंत्रतुम करता इतोअन
र्थ । प्रलयकाल आरोपिअब शोचकरतहौव्यर्थ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
इबिधि कर्णको मरण सुनि दम्पति वृद्धनरेश । मोहितह्वै गिरि
परतभे त्यागि चेतकोलेश ॥ भूपहिगहि संजय बिदुर गन्धारिहि
कुरुनारि । चेतित कीन्हे यतनकरि धीरजधरो पुकारि ॥ कर्णपर्ब
में होतभो यहिबिधि युद्धबिनोद । रामकृष्ण कहँ जपतसो लहत
सदा जयमोद ॥ सोरठा ॥ रामभक्त कपिबीर बिलसो जासु ध्वज-
स्थह्वै । कृष्णबसे जातीर किमि नलहै जय पार्थसो ॥

इतिगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाबिरचितेभाषायांमहा
भारतदर्पणेकर्णपर्बणिकर्णबधोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

कर्णपर्बसमाप्तः ॥

महाभारत दर्पण ॥

शल्यपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥ जेहि रघुबर प्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि नौमि भारत रचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परम अनूप । ते सारथि रचिदेहिं यह भारतभाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौंकपि बर-बीर राम परमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वरथ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधिउलंघन समयकी । भारत समुद प्रत्यक्ष भाषाकरि चाहत तस्यो ॥ दोहा ॥ दाशरथी नृपरामप्रभु बिश्वयोनि भगवान । जासुपरम प्रभुता परशि जल मधितरे पषान ॥ जेहि प्रभुकी लहि कलकृपा सुरगण भये अशल्य । शल्यपर्व भाषा रचत सुमिरि तासु कौशल्य ॥ जनमे-जयउवाच ॥ दोहा ॥ हे द्विजबर यह चरित सुनि ममभन गहत न तोष । कहो कर्णबध परलरे किमियुग नृपति सरोष ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ दोहा ॥ सुनो भूपलखि कर्णको बध दुर्योधन राय । कर्ण कर्ण कहिकहि बिकल रोदन कियो अचाय ॥ करिरोदन सब भटनसह नृप दुर्योधनराय । गुणिभाविहि बलवानधरि धीरभेरि बजवाय ॥ करिशल्यहि सेनाधिपति सह नृपभट हतशेख । कियो युद्ध पाण्डवन सों गहि क्षत्रिनकीरेख ॥ शल्य नृपति पाण्डवन

सों करि सुयुद्ध युगयाम। धर्म नृपतिके शरनभिदि तनतजि गो सुरधाम ॥ शल्य भूपको बध निरखि लहि मरिबेकी त्रास। दुर्योधन ह्रदमधि दुरो गहि बचिबेकी आस ॥ तहां जाय टेरतभयो भीमकढ़ा तबभूप। गदायुद्धकरि तेहिबध्यो भीम भयानकरूप ॥ रोला ॥ नृपतिको बध देखि संजय पूरिशोक महान। गयो पुरमें भयो अनरथ करतयहँ आह्वान ॥ सुनत नृपबध बचन पुरजन मोहदुख बिस्तारि। हाय हाकहि लगे रोदन करन सब नरनारि ॥ गये संजय रहेजहँ धृतराष्ट्र बिदुर समेत। पुत्र बधुन समेतही गान्धारजा गतचेत ॥ करत रोदन बिकलसंजय भूपके ढिगजाय। शल्य अरु नृपसुतनको बधदयो सबिधि सुनाय ॥ गयेबधि तो सुवन सब अरु नृपनके समुदाय। धृष्टद्युम्नहिं आदि उत सब मरे बंधित काय ॥ सात सुरथी बचे उत इत तीनि भटतजि खेत। कृष्ण सात्यकि पांच पाण्डव उतै जययश लेत ॥ इतै कृतवर्मा महीपति द्रोणसुत कृपवीर। और सबबधिगये इतउत रहेजे रणधीर ॥ बचन यह सुनि मूर्च्छि महिपै गिरेहे जेतत्र। राज योषित बिदुर नृपमनु लगो तीक्षण पत्र ॥ घरिकमें नृपचेत लहि उठिबैठ धीरजधारि। बिदुरसों इमि कह्यो भावी होति अवशि बिचारि ॥ बिदुरमोहिं अनाथकहँ अबरही तो गति एक। भाषि इमि फिरि गिरो महिपर रहो चेत न नेक ॥ सींचि जलसों व्यजनकरि तब कियो चेतित लोग। चेति बैठो भूप पूरित पुत्र शोक कुरोग ॥ ऊबि ऊबि उसांस लैलै चेति क्षणक्षण मोहि। घरिकमें इमि बिदुरसों नृपकहो कुसमय जोहि ॥ जाहिं गांधारी तियनसह गेहमें यहि काल। बचन यह सुनि गई तिय सबकरत रुदन कराल ॥ और जन जेरहे तिनहिं बिसर्जि वृद्धनरेश। करन रुदन प्रलापलागे त्यागि धीरज लेश ॥ दारु लोह पषाणसों मम हृदय कठिन असान। फटत नहिं लहि शोक ऐसो बज्रपात समान ॥ महाराज धिराज नरपति भूमिको मघवान। अन्ध वृद्ध

सुपितहि तजि कित गये तजि पणठान ॥ तात हे हे महाराज पुकारि सानँद जोहि । मधुर बाणी परम प्रिय न सुनाइहौ अब मोहि ॥ सहित बन्धुन करत हे तुम बाल कौतुक जौन । दयो अति सुखपूर्ब अब ममहियो दाहत तौन ॥ पुत्र तव ऐश्वर्य बिक्रम फौजसौज उदण्ड । समुझि परचलहियो ममगुणि तेज दुसह अखण्ड ॥ द्रोण भीषम कर्ण कृप भगदत्त अश्वत्थाम । शकुनि कृतबर्मा अलम्बुष शल्य बल बुधि धाम ॥ बिन्द अरु अनुबिन्द भूरिश्रवा आदि नरेश । यमनसक काम्बोज संसप्तक दलन अरिदेश ॥ दल एकादश क्षौहिणी नृपरहे सेवत जाहि । मरे सो तुम हाय यह मम कर्मको फल आहि ॥ बिकल कहिकहि इबिधिके बहुबचन भूप अडौर । महारोदन कियो नहिं सबजात कहि यहिठौर ॥ रोय इमि चिरकाललों फिरि मोहबश ह्वैभूप । धीरधारि इमि कह्यो हामैं खन्यो दुखदा कूप ॥ कहो संजय भयो किमि रण कर्ण बधके भोर । मद्रपति किमि मरो किमि मम पुत्र नृप शिरमोर ॥ धृष्टद्युम्नहिं आदि उत किमि मरे लरि कहुतौन । भाषुसो जिमिमरे लरि इत शकुनि आदिक जौन ॥ नृपकोसुनि बचन संजय कहतभो गुणिमर्म । कर्ण बधके ऊर्द्धभूपति कियो बिक्रम पर्म ॥ कृपाचारय तहां बहुबिधि भाषि नृपहि बुझाय । कह्यो मिलिबो पाण्डवनसों देन महि बिलगाय ॥ भूप कृप के बचन सुनिकै मर्म कहि समुझाय । नहीं मान्यो बचनसो फिरि लरतभो शरछाय ॥ तदनु कृतबर्मा शकुनि अरु शल्य सांझ लखाय । गये डेरन नृपहिलै सहसेन धीरधराय ॥ जाय डेरन नृपशोचित धीरधारि अचाय । द्रोणसुतसों भयो बूझत मन्त्र बिबिधिमनाय ॥ दोहा ॥ तुम सर्ब्बज्ञ अचार्य्यसुत मम हित बिस्वे बीश । कहौ शत्रुसों किमि लरें केहि करि सेनाधीश ॥ यह सुनि कह्यो अचार्य्य सुत शल्यहि करि सैनेश । लरो शत्रु सों धीरधरि त्यागि शोचको लेश ॥ द्रोणतनयके बचनसुनि नृप

शल्यहि करजोरि । सबिधि प्रशंसा करिकह्यो तुवकर कीरति मोरि ॥ जयकरी ॥ तोसुतनृपको बचनललाम । सुनिबोलोभूपति बलधाम ॥ कुरुपतिसुनो तुम्हारे अर्थ । राज्यप्राण दीबो नाहिं ब्यर्थ ॥ तुमजो कहो करैं हमतौन । तुवहित करब उचित नाहिं कौन ॥ यह सुनिकै दुर्योधनभूप । कह्यो सेनपति होहुअनूप ॥ सुरनदेत जयजिमि अस्कन्द । देहुमोहिंतिमि सुजय असन्द ॥ यहसुनिकह्यो शल्यमहिहौस । हमसैनेशहोब घहिचौस ॥ कृष्ण पार्थनहिंमोहिंसमान । सात्यकिभीम कौनभटमान ॥ बधिपाण्ड-वन लहतयुगयाम । देहौंतोहिंसुजय अभिराम ॥ यहसुनिदुर्यो-धन महिटेक । कियोतासु बिधिवत अभिषेक ॥ बजवायेदुन्दुभि समुदाय । मोदितभये सुभट उमदाय ॥ पढ़िस्वस्त्ययन मंत्रमुद देत । द्विजनदयो आशिष जयहेत ॥ लहिअभिषेक शल्यक्षिति-पाल । कहतभयो इमिबचन बिशाल । कालिहलखौ ममबिक्रम सर्ब । क्षणमेंशत्रुन करत अगर्ब ॥ बधिपाण्डवन लेबजयपर्म । कैबधिजाब पालि निजधर्म ॥ मारि पराजित करि अरि सैन । अगणित भटन देब यमऐन ॥ जयहित शोच तजो सबलोग । जय लहि भूप करो महि भोग ॥ दोहा ॥ लखि शल्यहि सेनाधि पति सुनि सुनि मर्बित बैन । कर्ण मरणको शोच तजि ममभट भये सचैन ॥ शल्यहि सुनि सेनाधिपति धर्म भूप अनुमानि । कृष्णचन्द्रसों कहतभे जययश दुस्तरजानि ॥ चौपाई ॥ सुनोनाथ दुर्योधन राजा । आजु मन्त्रकरि सहित समाजा ॥ शल्य नृपहि सेनापति कीन्हे । भटन सहित अति आनँद लीन्हे ॥ अब तासों जयकी बिधि कहिये । कृष्ण कह्यो मति संशय गहिये ॥ भीष्म द्रोण कर्ण सम भारथ । हैनृपशल्य युद्धके कारथ ॥ ताके बधन योग यहि दलमें । हौतुम एक बिदित सब थलमें ॥ ताते तुम बदि तुरता लीजो । कौरवमारि तासु बधकीजो ॥ मातुल जानि दया मति धरियो । क्षत्रधर्म्म पदवी अनुसरियो ॥ इमि कहि

केशव सिविर पधारे । निज निज डेरन सुभट बिहारे ॥ दुर्योधन नृप अमरष छाये । रजनि बिताय सेन सजवाये ॥ शल्य सेनपति कहँ करि आगे । चले शत्रु पहँ अमरष पागे ॥ तिमि पांडव दल साजि सुहाये । बढ़ि मम दलके सम्मुख आये ॥ बढ़ि बढ़िलरे सुभट दुहुंदिशिके । जे दिनमणि अति संगर निशिके ॥ सुनिधृतराष्ट्र कह्यो तेहि दिनमें । किमि लरिमरो शल्य नृपतिनमें ॥ किमिममसुवन भूपरणधीरा । किमिइतउतके सुभट सुबीरा ॥ सोसब पृथक् पृथक् कहुमोसों । जोबिधिअकथकथावततोसों ॥ यहसुनिकै संजय अनुमानी । कहतभयो सुनुभूपति ज्ञानी ॥ दोहा ॥ भीष्मद्रोण अरुकर्णको बधलखितो सुतभूप । करिशल्यहि सेनाधिपति चाह्योसुजय अनूप ॥ आशाबशसब जगतनृप आशा अति बलवान । आशालाशा बिहगमन जो लगि घटसोंप्रान ॥ सोरठा ॥ ब्यूहसर्ब्बतोभद्र बिरचिचलो पाण्डवनपहँ । भूपति पालकमद्र निजदलसह रहिब्यूहमुख ॥ चौपाई ॥ सहित त्रिगर्त्तननृपकृतबर्मा । रह्योबामदिशि पूरितपर्मा ॥ सहित यमनगणकृप धनुधारी । दहिनीओर रह्योभटभारी ॥ काम्बोजन सह अश्वत्थामा । रह्योपृष्ठ रक्षक बलधामा ॥ कुरुन सहित दुर्योधन राजा । रह्यो मध्यमें सहित समाजा ॥ हयसादिन सह शकुनि नरेशा । ह्योदल रक्षत भीषमभेशा । पाण्डव बिरचि ब्यूह रणभूपर । रचिदल तीनिचले ममऊपर ॥ धृष्टद्युम्न अरु सुभट शिखण्डी । भेरि भेरि सहसेना चण्डी ॥ भिरे शल्यकी सेना अतिसों । कीरतिचाहि जीति कीरतिसों ॥ धर्म महीप शल्यनरपतिसों । भिरतभयो सुभटनकी जतिसों ॥ अर्जुन बाण वृष्टिकरि प्रणसों । भिरतभयो संसप्तकगणसों ॥ अरुकृतबर्मा नृपहि प्रचारत । आवतभयो भूरिभयभारत ॥ सहित सोमकन भीमसुबीरा । कृपाचार्यसों भिरोसधीरा ॥ सहदेव नकुल मारु धरुधुनिसों । आभिरतभये उलूक शकुनिसों ॥ इबिधि अनेक

सुभटइतउतके । भिरिभिरि लड़नलगे बलयुतके ॥ यहसुनिवृद्ध नृपति गुणिकारय । कहतभयो कहुसंजय आरय ॥ सत्रहदिवस कालके नाचे । दुहुंदिशिरहे कितेभट बाचे ॥ दोहा ॥ यहसुनिके संजयकह्यो नृपतेहिदिन ममओर । दशहजारअरुसातसे रहे द्विरदसहजोर ॥ सहसइग्यारह रथिरहेतीनिकोटि पदचार । दोय लाख घोरेरहे सहितबीर असवार ॥ रहेउतै षटसहसरथ तिते द्विरदमतवार । रहेकोटिपैदर सुभट घोरेदशैहजार ॥ सोरठा ॥ यहि मिति भटदुहुंओर बढ़िबढ़ि भिरिलागेकरन । मचोयुद्ध अतिघोर उमगिचली शोणितनदी ॥ चौपाई ॥ शोणितबारि भौंररथभाये । धनुष स्रोत ध्वज वृक्षसोहाये ॥ करपगग्राह बाणअसिमीना । चर्म परेतहँ कच्छपपीना ॥ मज्जामेद फेणसम राजे । मुखबारिजसम सुखमासाजे ॥ चामरकेश सेवारअहीने । छत्रमनोपक्षीअमलीने ॥ द्विरदगिरे मनु गिरतकरारे । सुभटलसे मनु मज्जाहारे ॥ शूर द्विजनकहँ सुखदातारा । म्लेच्छकादरन भयदअपारा ॥ यहिबिधि मचो घोररणराजा । कटेअसंख्यन सेनसमाजा ॥ यहिबिधि मचो युद्ध अतिभारी । अर्जुन भीम बिदित रणचारी ॥ बाणवृष्टिको दुर्दिन कीन्हे । ममसुभटन मोहित करिदीन्हे ॥ ममसुभटनकहँ मोहित करिके । शङ्खबजावतभे पणधरिके ॥ धृष्टद्युम्न युगबन्धु अमाना । सोधुनिके करिकरि अनुमाना ॥ नृपतियुधिष्ठिर कहँ करिआगे । चलेशल्यनृपपहँ भयत्यागे ॥ तेहिबिधि माद्रीसुतधनु धुनिधुनि । ममदलदाबिलये जय गुनिगुनि ॥ महाराज सुनिये मसदलमें । हाहाकारमचो तेहिपलमें ॥ भगेसुभटतजि सुत पितु संगी । नहिंकाहू निरख्यो निजअंगी ॥ करत चिघार द्विरद मतवारे । भागिचले बाणनके मारे ॥ दोहा ॥ दलबिचलत लखि सूतसों कह्योशल्य सैनेश । धर्मनृपतिपहँ शीघ्रचलु लैमम सुरथ सुभेश ॥ नृपशासन सुनिसारथी हांक्यो तुरँग चलांक । जलद बारितिमि शल्यशर बर्षतचलो निशांक ॥ तेहिक्षण उतकेसुभट

सब भिरेशल्यसों टूटि । बाणजाल सब पहँरच्यो शल्य भूपजय ऊटि ॥ बेलासम परदलउदधि आड़त नृपहिं निहारि । फिरत भये इतकेसुभट मरिबोभलो बिचारि ॥ सोरठा ॥ महाघोर संग्राम भूपति तेहिक्षण मचतभो । तनतजिगे सुरधाम अगणित हय गज भट घने ॥ पद्धरी ॥ नृपसुनो त्यहिक्षण नकुल तत्र । लखि चित्रसेनहि बरषिपत्र ॥ भे भिरत ते युगभट अमान । भे करत अतिसंगर महान ॥ करि चित्रसेन लाघव कराल । रचि दियो ता पहँ बाण जाल ॥ धनुकाटि तुरगन दयो डारि । फिरि बध्यो सूतहि बाणमारि ॥ तब नकुल असि अरु चर्म धारि । रथत्यागि ताको बध बिचारि ॥ भोचलत सो लखि चित्रसेन । भो बाण बर्षत सुजय लेन ॥ तब नकुल करि पैंतरे आसु । सब काटि दीन्हेंबिशिख तासु ॥ अति बेगसों तानिकटआय । फिरिकूदि रथ पै चढ़ोजाय ॥ दोहा ॥ देखत इतकेभटनके बाहिबिशद तरवारि । चित्रसेनको काटि शिरदियो भूमिपेडारि ॥ कर्ण पुत्रको बध निरखिभो इतहाहाकार । उत मोदितभे सुभटसब लखि अतिबिक्रम चार ॥ निज भ्राताको बध निरखि सत्यसेन रणधीर । अरु सुषेन ये नकुल पहँ बरषनलागे तीर ॥ सोरठा ॥ तौलगि सूत सुधीर रथलैआयोबेगसों । चढ़ितापै रणधीर नकुललगो इनसोंलरन॥ चौपाई ॥ चारिबाण हनि अति अनियारे । सत्यसेनके हय बधि डारे ॥ धनुषकाटि बहु बाण प्रहारयो । अबन बचत यहि भांति पुकारयो ॥ सत्यसेन तब सो रथ तजिकै । और सुरथपै चढ़ो गरजिकै ॥ गहिधनु और गह्यो उत कर्षा । करतभयो बाणनकी बर्षा ॥ तहँसुषेन अति रिसगहि मनमें । हनि क्षुरप्र शायकतेहि क्षनमें ॥ गुरुकोदण्ड नकुलको काटयो । बाण बरषि न बचत कहि डाटयो ॥ तुरतहि नकुल और धनु गहिकै । हन्यो पांचशर थिरु थिरु कहिकै ॥ माद्रीसुत युग भटसों भिरिकै । कीन्ह्यो घोर युद्धतहँ थिरिकै ॥ अशनिसमान शक्ति हनि उरमें । बध्योसत्य

सेनहिं अतितुरमें ॥ नृपतेहिसमय सुषेन सुबीरा । अतिबिक्रमकी न्ह्योंरणधीरा ॥ करिशरजोर नकुलतेहिबधिकै । ममदलमर्दतभयो बराधिकै ॥ तहँशरबरषि मद्रपति तक्षण । करतभयो निजदल को रक्षण ॥ शल्यहिघेरि सुभट सबइतके । धर्मभूपतिहि योधा तितके ॥ अतिबिक्रम कीन्हेंतेहिपलमें । भोअति घोरयुद्धतेहि थलमें ॥ भटकपिकेतु बिदित धनुधारी । बाधि संसप्तक भटन प्रचारी ॥ बर्षत बिशिख क्रोधसोंपागो । सैनकौरवी मर्दनलागो ॥ दोहा ॥ तिमि भीमादिक शत्रुभट कृपआदिक ममबीर । उभय ओरपारे प्रलय बरषि शक्तिशरतीर ॥ महाघोर संगरभयो तेहि क्षण सुनियेभूप । ममसेना अति बिकलह्वै होतभई गतरूप ॥ दलव्याकुल लखिमद्रपति गहि अनुपम कोदण्ड । भो बर्षत पाण्डवनपहँ अबिरल शायकचण्ड ॥ सोरठा ॥ नृपतेहिक्षण तेहिं ठौर अगणित अशकुन होतभे । मृगगहि अशकुन डौर चलत भयेममबामह्वै ॥ चौपाई ॥ शल्यभूप अमरष करिमनमें । अतिकर लाघवकरितेहिक्षनमें ॥ सात्यकि भीमनकुल सहदेवहि । द्रौपदेय नृपधर्म सुभेवहि ॥ धृष्टद्युम्न युग बन्धुन तकि तकि । दशदश बाणहन्यो जयबकि बकि ॥ बारिदकरत बारिकीबर्षा । तिमिशर बरषो गहिउतकर्षा ॥ अगणित हयगज भटबधि डारयो । शत्रु सैनमधि प्रलय पसारयो ॥ तहां बिचलिपर भटचलिचाड़े । गयेधर्म भूपतिके आड़े ॥ सोलखि धर्मभूप धनु धुनिकै । भिरो शल्य नृपसों जयगुनिकै ॥ अतिरण करनलगेतहँदोऊ । जेहि सम कबहुं लरेनाहिं कोऊ ॥ सो लखि उतकेयोधा राजिरजि । चले शल्यपहँ सुभटन तजि तजि ॥ तबइतके भटइत फिरुपढ़ि पढ़ि । भिरत भये तिन सबसों बढ़ि बढ़ि ॥ भिरयो भीमसों नृप कृतबर्मा । द्रौपदेय सों शकुनि सुपर्मा ॥ माद्री सुतनदेखिअभि-रामा । भिरत भयो भटअश्वत्थामा ॥ क्रोधभरोदुर्योधनराजा । भिरयो पार्थसों सहित समाजा ॥ यहि बिधि तहां द्वन्दशतजूटे ।

भरे बीररस आनँद लूटे ॥ कृतबर्मा बाणनकी झरिकै। बध्यो भीमके तुरगन लरिकै ॥ तबगहिगदा भीम रथतजिकै। गजन बधतभो गरजि गरजिकै ॥ दोहा ॥ लखि सम्मुख सहदेव कहँ शल्य चारि शरमारि। बधिरथके चारो तुरगदयो भूमिपैडारि॥ सो रथतजि सहदेव तब गहि तीक्षण तरबारि। शल्य भूपके सुवनको काट्योशीशप्रचारि॥ सोरठा॥ कृपाचार्य्यरणधीर धृष्टद्युम्नसों भिरि तहां। कियोयुद्ध गंभीर बाणजाल रचि दिशनमें॥ तोमरछन्द ॥ तेहिसमय शल्यअमान। करिबाणवृष्टि महान॥लकि धर्मनृपहि सगौर। भोकरत ब्यथित सठौर॥ वहदेखि बिक्रम भीम। तहँभयो चलतअधीम ॥ तेहिशल्य आवत देखि। भो हनत तोमरलेखि॥ गहिभीम तोमरतौन। करिसारथीको दौन॥ फिरिगुरू गदहि प्रहारि। बधिदियो तुरगन डारि ॥ तब गदा गहिनृपशल्य। भिरिकरतभो कौशल्य॥ भिरिउभय योधा शुद्ध। तहँकियो अद्भुतयुद्ध॥ दोहा ॥ अगणित बिधिके पैंतरे करतफिरत जिमिचक्र। गदायुद्धते करतभे गहिगति सूधीबक्र॥ कबहुं बाम दक्षिण कबहुं कबहुं ऊर्ध्व अधलाय। अतिचापलता करिकरयो गदायुद्ध दृढ़ घाय॥ सिंह सिंहभिरि जिमिलरैं द्विरद द्विरदमतवार। मत्तवृषभसम भिरिलरे शल्य भीम तजिप्यार॥ गदागदाके लगनसों कढ़ैंफुलिंग अपार। तक्षक बासुकि लरतमनु अबिरल बमतअँगार॥ सोरठा॥ गदायुद्ध अतिघोर करिसब अँगशोणित भरे। मोहितह्वै तेहिठौर भीम शल्यदोऊगिरे॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहिपलमें। भोहाहाधुनि दोऊदलमें॥ कृपशल्यहि निज रथपर धरिकै। सादर अनतजातभो टरिकै॥ क्षणमेंचेति भीम नर बारन। शल्यभूपकहँ लगोप्रचारन। सुनिइतकेभट अमरष पागे। अतिबिक्रमकरि बिचरन लागे ॥ तेहिप्रकार उतकेभट रूरे। लरतभये करिबिक्रम पूरे ॥ तेहिक्षण दुर्योधन धनुधारी। बज्रसमान सुबाण प्रहारी ॥ चेकितान नृपको बधकीन्हों।

पुरदलमांधि अति दुखभरिदीन्हों ॥ चेकितानको बधलखि उत
के । योधा प्रबल युद्ध बिदयुतके ॥ तोमर शक्ति भल्ल शर आ-
दिक । अस्त्रलगे बर्षन जयबादिक ॥ कृप कृतबर्मा सौबल राजा ।
शल्यभूप सह सहित समाजा ॥ भिरे धर्म नृपसों तेहि क्षणमें ।
पूरि दये शर पाण्डव गणमें ॥ द्रोणाचारयको बधकरता । धृष्ट-
द्युम्न अद्भुत धनुधरता ॥ तासों दुर्योधन नृप भिरिकै । घोरयुद्ध
तहँ कीन्ह्यों थिरिकै ॥ त्रिसहस रथिन सहित धनुकर्षत । अश्व-
त्थामा शायक बर्षत ॥ भिरो बिजय भूपतिसों हर्षत । सुयशपाइ-
बेकी गति पर्षत ॥ सरमधि धसैं हंस गण जैसे । दुहुं दल लसे
सुभट सब तैसे ॥ दोहा ॥ कटे सुरथ हय गजकटे हयगज योधा
भूरि । मारु मारु धरु मारु धुनि रही गगनमें पूरि ॥ शल्य
भूप तेहि क्षणहन्यो धर्म भूपतिहि बान । चौदहशर शल्यहि
हन्यो धर्मभूप बलवान ॥ सोरठा ॥ अतिरिसकरि तेहिकाल श-
ल्यभूप धनुधर बिदित । गहि अति लाघवचाल नृपहिहन्यो
अगणित बिशिख ॥ चौपाई ॥ तेहिक्षण धर्मभूपधनुधुनिकै । शल्य
भूपतिहिको बधगुनिकै ॥ चन्द्रसेन द्रुमसेनहि हतिकै । नृपहि
हन्यो बहुशर रिस अतिकै ॥ चक्र रक्षकनको बधदेखी । शल्य
धनुषधर अतिशय तेखी ॥ धर्महिहन्योपांचशर चोखे । तेहिक्षण
धर्मभूपअतिरोखे ॥ भल्लप्रहारिदीह ध्वजकाट्यो । तकिसहास
ह्वै शल्यहि डाट्यो ॥ तब अतिकोपि शल्य उतकर्ष्यो । धर्मभूप
पहँ शायकबर्ष्यो ॥ सहदेव नकुल सात्यकीभीमहि । मार्योपांच
पांच शरहीमहि ॥ बाणजाल रचि गौरवलीन्हो । धर्मभूपतिहि
ब्याकुलकीन्हो ॥ धर्म भूपतिहि ब्याकुलजानी । सात्यकि भीम।
नकुल अनुमानी ॥ अरु सहदेव मद्रपतिघेरी । बरषे बाणन बा-
चतटेरी ॥ भीमसेन अति कोपित मनमें । हन्यो सातशर नृपके
तनमें ॥ सात्यकि शतशर हन्यो प्रचारी । पांच २ युगबंधु सु-
खारी ॥ तेहिक्षण शल्य महारिस करिकै । चक्रसमान सुरथपर

चरिकै ॥ बाणपचीस सात्यकिहि मार्‌यो । भीमहि सत्तरि बाण प्रहार्‌यो ॥ नकुलहि सातबाण हनिगर्जो । मानोशक्र बज्रगहि तर्जो । धनुष काटि सहदेव सुभटको । हन्यो तीन शायक गुणि षटको ॥दोहा॥ तबसहदेव प्रचारितेहि गहिकठोर धनुपीन। शल्य हिमार्‌यो पांचशर फिरिमार्‌योशरतीन॥ भीमहि सत्तरिशरहन्यो नवसात्यकिके गात। धनुकाट्यो नृपधर्मको शल्यबीर बिख्यात ॥ सोरठा ॥ तुरत औरकोदण्ड गहि नृपधर्म उदण्डभट । छायदयो शरचण्ड सदलशल्य क्षितिपाल पहँ ॥ तोटकछन्द ॥ नृपमातुलबाणन छादितहै । गहि कोपिकराल प्रमादितहै ॥ दशपाण्डवनाथहि बाणहन्यो । फिरिबाणनकी झरिकौन गन्यो ॥ लखिसात्यकि सोअति कोपगहा । हनिशायक पांचबचाउकहा ॥ तबशल्य महीपति कोपकियो । भटसात्यकिको धनुकाटिदियो॥ दोहा ॥भीम नकुल सहदेवके अगणित शायक बारि । मेघनाद सम नद भो तीनि तीनि शरमारि ॥ तेहिक्षण डार्‌यो शल्यपहँ सात्यकि तोमप्रचंड । नकुलशक्ति तानुजगदा भीमबाण उद्दंड ॥ तज्योशतघ्नीधर्मनृपसो सब्रअस्त्रअमान। बीचहिकाट्यो शल्यनृप मारि अनगिनेबान ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण शल्यनरेश दुसहपराक्रम करतभो ॥ त्यागिशोचको लेश दुर्योधन नृप मुदितभो ॥ चौपाई ॥ शल्यभूप गहिपाणि अतुरता । करतभयो अतिबिक्रमगुरुता ॥ परदल पूरि शरनसों दीन्हों । भीमादिकन बिकल अतिकीन्हों ॥ करिबाणनसों नभ अवरोधन । कियोकाल बश अगणित योधन। अगणित भटन पराजित करिकै ॥ रुद्रसमान लसोपण धरिकै ॥ तेहिक्षण सुमन सिद्धनभचारी । निरखि शल्यको बिक्रमभारी ॥ अति मोदितह्वै कियेप्रशंसा । तोसुततज्यो अजय की संसा ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षणमें । अर्जुन सिंह सरिस चरिरणमें ॥ द्रोणतनय भट माणिसों भिरिकै। कीन्हो समरचक्र समाफिरिकै ॥ करिकर लाघव धनु बिधि ठाट्यो । अगणितभ-

टन मारिमहि पाट्यो ॥ तीनिबाण द्विजसुतहि प्रहाऱ्यो । दोय दोयशर सुभटन माऱ्यो ॥ महाराज सुनिये त्यहि क्षनमें । द्विज-सुत आदि सुभट गुणि मनमें ॥ घेरि पारथहि अमरष पागे । अबिरल शायक बर्षनलागे ॥ तेहिक्षण पार्थ पराक्रमसागर । सकलशस्त्र शिक्षक मणिनागर ॥ बर्षिहेममय शरवरफबके ॥ काटि असंख्यन शायक सबके ॥ द्विज दलमाधि बाणनकोदुर्दिन। करिभोबधत सुयोधा अनगिन ॥ पूरिरुण्ड मुण्डनसों धरणी । करपग शुण्डनकियो बिवरणी ॥ दोहा ॥ बारिदानसमलसिबरषि बाणबारि भरिमीच । पूरिदयो रणभूमिमाधि मांसरुधिरकीकीच ॥ सुरथी दोयहजारबधि निर्मलअग्निसमान । लसतभयो पारथ तहांअसह अदेख अमान ॥ दावानलसम पारथहि दलबन जारत देखि। भिरोद्रोणसुत बनदसम शरबन बर्षततेखि ॥ सोरठा ॥ क्षत्री बिप्रअमान दोऊधनुधर मुकुटमणि। कियेघोर घमसान करि करि दुर्दिन शरनको ॥ चौपाई ॥ द्रोणतनय अति लाघवधरिकै । शायक बर्षि चक्रसम चरिकै ॥ द्वादश बाण पारथहिमाऱ्यो । दश शायक यदुपतिहि प्रहाऱ्यो ॥ तहँपारथ अतिरिससों भिरिकै । गुरुसुतको गुणिबो परिहरिकै ॥ तुरगनमारि सारथिहि बधिकै। बर्षोबिशिख क्रोधगहि अधिकै ॥ अतिरथ द्रोणतनय तेहिक्षन में । भरोक्रोध अनरथगुणिमनमें । महाभयानक मुशल चलायो । शरनकाटि तेहिपार्थ गिरायो॥ तब द्विजतनय परिघबर गहिकै । भयो चलावत थिररहुकहिकै ॥ तेहि लखिअर्जुन तुरतालीन्हों । हनि शर पांच पांच करि दीन्हों ॥ परिघ काटि पारथ धनु धुनिकै। तीनि भल्ल माऱ्यो बध गुनिकै ॥ भिदि भल्लन सों ब्राह्मणयोधा। कछु भर दबो ब्याल सम क्रोधा ॥ गहि कोदण्ड लगो शर बर्षण । गणे गणे भट बधन अमर्षण ॥ सुरथी सुरथनाम तेहिक्षन में । भिरो बिप्र सों गर्बित मनमें ॥ सो पांचाल सुभट बर बीरा । बर्षो बिशिख जालप्रद पीरा ॥ तेहि लखि बिप्रबीर रणधीरा ।

दै रद छद पहँ सुरदन हीरा ॥ बध्यो ताहि हनि शायक चोखो । रथसों गिरो सुरथभट नोखो ॥ तेहि बधि द्रोणतनय भट बढ़िकै । सादर तासु सुरथपै चढ़िकै ॥ निज अनुरूप सूत करि थापित । लगो पार्थसों लड़न प्रतापित ॥ अगणित संसप्तक गण फिरिकै । लगो लड़न पारथ सों भिरिकै ॥ तहँ पारथ अति लाघव लीन्हो । सबपहँ बाणजाल रचि दीन्हो ॥ लरो शक्र दैत्यन सों जैसे । तिनसों लरो फाल्गुन तैसे ॥ दोहा ॥ मचो घोर संगर तहां दिनप्रविशो युगयाम । अगणित हयगजभटकटे पायेऊरधधाम ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशल्यपर्बणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दोहा ॥ दुर्योधन बन्धुन सहित धृष्टद्युम्नसों जूटि । घोर युद्ध तहँ करतभो बध बिचारि जयऊटि ॥ सहित प्रभद्रक भटनबढ़ि सुभटशिखण्डीबीर । कृप कृतबर्मासों अभिरि किये युद्धगंभीर ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें । शल्यनरेश सुजय गुणि मनमें ॥ परदल मध्य शरन की झरिकै । अगणित भटन बध्यो प्रण धरिकै ॥ करि तीक्षण बाणनसों आकुल । कीन्हों धर्म महीपहि ब्याकुल ॥ सोलखि नकुल ओज बिस्तारत । शल्य नृपति सों भिरो प्रचारत ॥ अगणित बाण बर्षि अति तुरमें । दशशर हन्यो शल्यके उरमें ॥ तेहिक्षण शल्य महीप प्रमादित । नकुलहि कियो शरनसों छादित ॥ लखि माद्रीसुत पहँ शर छाजा । सात्यकि भीम युधिष्ठिर राजा ॥ अरु सहदेव शरासन कर्षत । भिरे शल्य नृपसों शर बर्षत ॥ आड़्यो तिन्हैं शल्य नृप तैसे । बेला लहरि उदधि की जैसे ॥ भीमहिं पांचबाण अनियारे । हनिनृप धर्महिं तीनि प्रहारे ॥ तीनि बाण सहदेवहि हनिकै । हन्यो सात्यकिहि शतशर गनिकै ॥ हनि क्षुरप्र शायक अति पुलको । काट्यो धनुष सुबीर नकुलको ॥ तुरतहि नकुल और धनु गहिकै । बर्षो बिशिख खरोरहु कहिकै ॥ तहँ सहदेव धर्मनरनायक । हते भूपतिहि दश दश शायक ॥ शायक साठि वृकोदरमार्‌यो ।

तिमि सात्यकि दशबाण प्रहार्‍यो ॥ तेहि क्षण कोपि मद्र नृप धानुष । करतभयो तहँ काज अमानुष ॥ दोहा ॥ हनिनव शायक सात्यकिहि फिरि हनि सत्तरि बान । मारि अर्ध शशि बाणवर काट्यो धनुष महान ॥ चारिबाणहनि हयनबधि करितहँ बिरथ बिहाल । अगणित शायक सात्यकिहि हन्यो मद्र क्षितिपाल ॥ धर्म नकुल सहदेव अरु भीमसेनके गात । दश दश शायक हनतभो करि अबिरल शरपात ॥ सोरठा ॥ परम प्रसिद्ध अमान इन सुभटन कहँ बिकल करि । बिलसो रुद्र समान शल्य भूप अति प्रबल भट ॥ चौपाई ॥ सात्यकि और सुरथपर चढ़िके । बर्षत बिशिख बेगसों बाढ़िके ॥ चलो शल्य नरपतिहि प्रचारत । तापहँ चलो शल्य शर डारत ॥ दोऊ दुहुन प्रचारि प्रचारी । निज निज सुजय बिचारि बिचारी ॥ अतिशय तुमुल युद्ध तहँ कीन्हे । नभ बाणन पूरित करि दीन्हे ॥ बन्धुन सहित धर्म धनु धुनिके । शल्य महीपति को बध गुनिके ॥ बर्षत भये बिशिख प्रण धरिकै । तेहि क्षण शल्य चक्रसम चरिकै ॥ सबके बाण असंख्यन काटत । सबपहँ भयो बाणझरि ठाटत ॥ शल्य महीप बीररस छायो । तहँ अद्भुत बिक्रम दरशायो ॥ शल्य नृपति के बाणन पीड़ित । उतकेघने भटन लखि ब्रीड़ित ॥ इतके सुभट बिजय गुणि मनमें । अति बिक्रम कीन्हे तेहि क्षनमें ॥ मर्दित किये शत्रुदल तैसे । मन्दरवारि उदधिको जैसे ॥ सोलखि अर्जुन बीर अमर्षो । कृप कृतबर्मा पहँ शरबर्षो ॥ सहदेवभिरो शकुनिसोंहर्षत । नकुल शल्यपहँहो शरबर्षत ॥ द्रौपदेय सबगहि उतकर्षा । नृपगण पहँ कीन्हे शर बर्षा ॥ द्रोण तनयसों भिरो शिखण्डी । गहे चढ़ाव चपलता चण्डी ॥ गदापाणि बरबीर वृकोदर । गयो रहो जहँ नृपति सहोदर ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिर सैनसह शल्य नृपतिसों जूटि । लरत भयो शरजाल रचि बध बिचारि जय ऊटि ॥ नृप तेहि क्षण तेहि थर मच्यो महा-

घोर संग्राम । कटे असंख्यन भट बही शोणित नदी अछाम ॥ सोरठा ॥ मद्रदेशपति भूप मण्डल सम कोदण्डकरि । भोअति भीषम रूप घोरपराक्रम करि तहां ॥ रोला ॥ सोमसम नृप धर्म के ढिगजाय शनिसम भूप । जननपीड़ित कियो उत रचि बाण जाल अनूप ॥ एकभट बहुभटन बधि बिचलाय अगणितधीर । भीमकहँ लखितीर नृपके चलो बर्षत तीर ॥ धीरधरिकै तासुस-म्मुख भयेजे अरिबीर । भीरसुरपुर मध्यकीन्हें बीरतेगतिभीर ॥ मद्रपति की चपलताअरु बीरता इमि देखि । धर्म भूपतिटेरि ऐसे करतभो अति तेखि ॥ सुनो केशव सुनो सब ममबन्धु भट समुदाय । आजु प्रणकरि कहतहौं मैं वचनसत्य सचाय ॥ द्रोण आदिक धनुषधर जे दुसह बीर बिख्यात । गये कुरुपति हेतजहँ तहँ आजु मातुलजात ॥ सुवन माद्रीके प्रबल जिमि शक्रअरु उपशक्र । रहहु रक्षत चक्र मम निज मातुलहि गुणिबक्र ॥ क-हत हम तिमि और योधा रहो अब ममसंग । रहो दक्षिणओर सात्यकि बिदित बीर अभंग ॥ रहो रक्षत बामदिशि भट धृष्ट-द्युम्न अमान । पृष्ठरक्षत रहो पारथ बीरबर्षत बान ॥ अग्रगामी रहो अब मम भीमसेन सडौर । बधब हम नृप मातुलहि नहिं बचिहि काहू ठौर ॥ भूप के सुनि बचन परभट शंक तजि गहि मोद । भरणलागे हांक अतिरण करणयुद्ध बिनोद ॥ ठानिइमि प्रणसदलभूपति दुन्दुभीबजवाय । मद्रपतिपहँ चलोतीक्ष्ण शा-रनसों नभछाय ॥ भिरे बढ़ि बढ़िभूप तिनसों सुभट इतकेतत्र । शक्तितोमरभल्लबर्षत घनेतीक्ष्णपत्र ॥ शल्यभूपतिभयो बर्षत बाण धर्महिहेरि । भिरेताकिताकि प्रबलयोधा प्रबल योधनटेरि । नृपसुयोधन भीमसों भिरि करतभो घमसान । प्रकट करि द्विज द्रोणसों जो लहेधनुष बिधान ॥ प्रबलयोधा बन्धुदोऊ धनुषधर मणिदक्ष । समर महिशर सरसको बर शरन पूरे कक्ष ॥ दोहा ॥ अतिकर लाघव करि तहां तौ सुत भूप बिचारि । केतुकाटिभट

भीमको काट्योधनुषप्रचारि ॥ अति रिसकरिभटभीमतब शक्ति चलायोचाहि । भिदितासोंमोहितभयो तौसुतभूपकराहि ॥ सोरठा ॥ भूपहि मोहित देखि भीमसेन सूतहिबध्यो । सूतमरण अवरेखि तुरग भगेसो सुरथलै ॥ चौपाई ॥ महाराज सुनिये तेहि पलमें । हाहाकार मचो ममदलमें ॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्मा । नृपरक्षण कीन्हें तेहि धर्मा ॥ धनु गाण्डीव कर्षि तहँ पारथ । बधिअगणित भटकीन्होंस्वारथ ॥ शल्यसेनसों भिरितेहिठाईं । अति रणकियो धर्मनरसाईं ॥ अबिरल बाणजालरचि दीन्हों । अगणितभटन कालबश कीन्हों ॥ शल्यनिरखि मर्दित निजसेना । नृपहिप्रचारि भिरो जगजेना ॥ दोऊ अतितुरता गहि गहिकै । अमरषभरे बैन कहिकहिकै ॥ बरबाणनकी बर्षाकरि करि । अगणित बाणगातपर धरि धरि ॥ भरेरुधिरतन दोऊ राजे । पुष्पित किंशुकतरु समसाजे ॥ यहिबिधि लरतभये तहँ दोऊ । जोलखि गुणितभये सबकोऊ ॥ एकहिएक बधत यहि क्षणमें । नहिंदोऊ बाचतयहि रणमें ॥ तहां शल्यभूपति करि तुरता । काट्यो तासुधनुष गहिगुरता ॥ तेहिक्षण धर्मक्रोधसों दहिकै । तुरतहि और शरासन गहिकै ॥ शल्यहि मारि तीनि शत शायक । काटतभयो धनुपदृढ़घायक ॥ चारोंतुरग सुरथके बधिकै । उभयसारथिन बध्यो बराधिकै ॥ काट्योकेतु भल्ल शर हनिकै । धर्ममहीप रुद्रसम बनिकै ॥ दोहा ॥ कालकराल समानलखि धर्मनृपति तेहिकाल । बिचलिचले तिमि अचल भट जेनचले जेहिचाल ॥ द्रोणतनय अति बेगसों बर्षत शर समुदाय । जायशल्य क्षितिराय कहँरथपरलयो चढ़ाय ॥ और सुरथपर तुरित चढ़ि धनुगहि मद्रनरेश । भूपयुधिष्ठिर पहँ भयो बर्षत बाण बिशेश ॥ सोरठा ॥ बरषि असंख्यन बान हन्यो सात्यकिहि बाणदश । करि अद्भुत सन्धान तीनिबाण भीमहि हन्यो ॥ चौपाई ॥ अगणित हयगज सुभटसँहारचो । अंग भंग

करि महि मधि डारयो॥ अति कराल बिक्रम बिस्तारयो। शत्रु सेनमधि प्रलयपसारयो॥ महाराज सुनिये तेहिक्षनमें। पाण्डव अति अमरष करि मनमें॥ भीम नकुल सहदेव सुबीरा। अरु अनगिने सुभट रणधीरा॥ गरजि गरजि गहिगहि उतकर्षा। किये मद्रपति पहँ शरबर्षा॥ तिमि इतके योधा शरतक्षक। भे तहँ शल्यमहीपहि रक्षक॥ भो अतिघोर युद्ध तहँ राजा। कटे असंख्यन सैन समाजा॥ शल्यधर्म भिरि गोरवलीन्हें। अतिशय तुमुल युद्ध तहँ कीन्हें॥ अगणित बाण परस्पर वारे। अगणित बाण परस्पर मारे॥ शल्य युधिष्ठिर को धनु काटयो। धनु गहि धर्म बाण झरि ठाटयो॥ बाण शल्यनृप के हिय मारयो। मोहित ह्वै फिरि भूप सिहारयो॥ हन्योधर्म भूपहिं बहु शायक। तिमि शल्यहि नृप धर्म सचायक॥ द्वै शर मारि शल्य रणचारी। काटयो तासु धनुष अतिभारी॥ तुरतहि धर्म ओर धनुधारी। शल्यहि नवशरहन्यो प्रचारी॥ फिरि नृपशल्य मारि शरचोखो। काटयो तासु धनुष अतिनोखो॥ नृप षटबाण मारि अनियारे। बधि सारथिहि भूमिपर डारे॥ दोहा॥ शल्य भूप तब कर्षिधनु चारोंतुरगन मारि। धर्मभूप तिहि बिरथकरि बर्षोबिशिख प्रचारि॥ भीमसेनतहँ शल्यके दीरघधनुषहि काटि। बधिसूतहि तुरगनबध्यो अद्भुतधनु बिधिठाटि॥ तौलगि चढ़िरथ ओर पर धर्म महीप अमान। नृपबर्षतभो शल्य पहँ अबिरल तीक्षणबान॥ सोरठा॥ तेहिक्षण शल्यनरेश खड्गचर्म गहित्यागिरथ। सिंहसमान सुभेश चलोधर्म क्षितिपाल पहँ॥ चमुंकला॥ तेहिनिकट देखि। भट नकुल तेखि॥ भोहनतबान। तब नृपअमान॥ रथकाटि तासु। फिरि चलोआसु॥ तहँशत्रु ओर। अतिभयो शोर॥ दोहा॥ भीम शिखण्डी सात्यकी धृष्टद्युम्न रणधीर। द्रौपद्रेय ये शल्यपहँ बरषे अबिरलतीर॥ भीम तहां नवबाणहनि काटिचर्मतरवारि। निजसुभटनमोदितकियो

तक्षण । बध्योतासुहय सूतसपक्षण॥बिरथदेखि कृतबर्माराजहि।
कृपबिडारि अरिसैनसमाजहि ॥ जायचढ़ाय ताहिनिजरथपै ।
चंचल चरणलगो रणपथपै ॥ देखिदशा यह कृतबर्म्माकी ।
भगीफौज नृपगतधर्म्माकी॥ दल बिचलेत लखितोसुत राजा॥
भिरोपाण्डवनसों सहसाजा॥ कृतबर्मा निजरथपरचढ़िकै। गयो
तहां शरबर्षत बढ़िकै ॥ देखिताहि तहँधर्म नरेशा। बधत भयो
सबतुरग सुभेशा ॥ बधिकृतबर्माके हयतोखे । हन्योकृपहिं षट
शायक चोखे ॥ द्रोणतनय तहँ तुरता कीन्हों । कृतबर्म्महि
निज रथपर लीन्हों ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें । रथी सात
शत प्रणधरि मनमें ॥ संगी शल्य महीपति केरे । भिरे पाण्ड-
वनसों चलिनेरे ॥ गजचढ़ि दुर्योधन भयसाने । मनाकिये नहिं
तेसबमाने ॥ दोहा ॥ शल्य भूपको मरणलखि निज मरिबो बर
जानि । रथीमद्र क्षितिपालके लड़नलगे प्रणठानि ॥ बाणनपूरे
शत्रुदल धनुधुनिसों नभसर्ब । सुरथी शल्य महीपके अरिदल
जेत सगर्ब ॥ सोरठा ॥ पारथ आयो तत्र सुनि तेहिक्षण तहँ तु-
मुलधुनि । बर्षत तीक्षण पत्र पूरत धनु गाण्डीव धुनि ॥ चौपाई ॥
सानुज धृष्टद्युम्न धनुधारी। सात्यकि द्रौपदेय रणचारी ॥ संजय
सोमक अरु पांचाला । गने धनुषधर बीर बिशाला ॥ बरषि
शक्ति शायक रिसिपागे। घेरि मद्रदल मर्दन लागे ॥ प्रबलमद्र
भूपतिके योधा। तिन सबको कीन्हें अवरोधा॥ प्रति योधन बि-
रचे शरसेतू । अगणित भटन बधे जयहेतू ॥ मथै सिन्धु जिमि
मकर समूहा। अरिदल मधि तिमि लसैसजूहा॥प्रबलशत्रुसुभट-
नकेमारे। तहँइमितिनकीदशानिहारे॥ केते अंगभंगभे जबहूं ।
गर्जतचलेशत्रुदिशितबहूं ॥ बिरथभयेकितनेसरदारे। शत्रु सैन
मधिप्रलयपसारे॥बिरथ बिधनु बेधिततन केते। मारुमारु टेरत
जय हेते॥ भिद्धि कितने योधा बल धरिकै। मरैंजाय अरिरथ
पर परिकै॥ किते कबन्ध प्रचारत देखे। धावतलरत अनगिने

पेखे ॥ किते गिरैं उठिगिरि महि चूमैं । गिरि उठि किते खरेरहि भूमैं ॥ लखियहदशा मद्रदल माहीं । शकुनि महीप सकोसहि नाहीं ॥ कहतभयो तौ सुतनरपतिसों । कततुमखरे निठुरताअति सों ॥ मद्र रथिनको मरिबो देखत । नहिं सहाय करिबो अवरेखत ॥ सुनि बोल्लो कुरुपति नरसाईं । हम इनकहँ बरजो बहु दाईं ॥ नहिंमाने ममबचन अतोल्लो । लरन मरन अब देहु न बोल्लो ॥ यह सुनिकह्यो शकुनिनरनायक । भूपति तुम्हें न ऐसो लायक ॥ जय हित शूर युद्धलगि बढ़िकै । फेरे कहूं फिरत रण चढ़िकै ॥ दोहा ॥ क्रोध त्यागि बढ़ि सैनसह सादर करोसहाय । निजकरदीबो अरिहिजय नहिं नृपनीति सचाय ॥ यहसुनि दुर्योधन नृपति पटहभेरि बजवाय । चलत भयेतहँ सैनसह जिमि घन उलद सबाय ॥ सोरठा ॥ नृप जौलगि यहसैन जायतहाँ तौं लगि उतै । पाण्डवभट बलऐन किये अशेषितमद्रदल ॥ तोमर छन्द ॥ दलि मद्रपति की सैन । अरिप्रबलबल बधि ऐन ॥ जय दुन्दुभी बजवाय । इतबढ़े शायक छाय ॥ शरभल्ल तोमरभूरि इत दये अबिरल पूरि ॥ जिमिरुद्र बासव काल । तिमिपरेदेखि कराल ॥ इनबध्यो ऐसोऊटि । नहिं सकेकोऊ जूटि ॥ भजिचली सेना सर्व । तजिबीरता को गर्ब ॥ नहिं फिरैंफेरे एक । नहिंथिरैं हेरैंएक ॥ जिमि निरखि केहरि जूह । भजिचलैं द्विरद समूह ॥ दोहा ॥ रथी पदाती अनगिने अगणित तुरँगसवार । भागिचले भयपूरि भट द्विरदी दोय हजार ॥ तेहिक्षण पाण्डव प्रबलह्वै किये अमानुष कर्म । बधि अगणितहय द्विरदभट बिचरनलगे अभर्म ॥ भीष्म द्रोण अरु कर्णके जूझे ममभट भूप । भये अधीर सभीत नहिं शल्य मरन अनुरूप ॥ नौका डूबे होत जिमिव्याकुल उतरनहार । मरे शल्यके तिमिभयो ममदल बिगत अधार ॥ भूपतितेहि क्षण उदित भो धर्मनृपतिको धर्म । कहे सबै फल लहत जो किये सुयोधन कर्म ॥ सोरठा ॥ निजदल

बिचलत देखि नृपतिसुयोधन धीरधरि। कह्योसूतसों तेखिअरि सन्मुख लैसुरथचलु ॥ चौपाई ॥ नृपति सुयोधनसों इमिसुनिकै। सारथिचलो सुरथलै गुनिकै ॥ इकइस सहस सुभट थिरिरण में। चले भूपके सँग त्यहि क्षणमें ॥ पाण्डव बढ़िबढ़ि तिनसों भिरिकै। लागेकरन युद्ध तहँ थिरिकै ॥ रथते उतरि भीम बल पागो। गदापाणि ह्वै बिचरण लागो ॥ धसि तौ सुतके पैदर दलमें। प्रलय पसारतभो तेहि थलमें ॥ जंघा जानु बाहु कटि तोरत। शीशहदीस कुम्भसम फोरत ॥ बिलसत भयो भीम तहँ तैसे। मृगगण मध्य केहरी जैसे ॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें। भटहत शेष भगे गुणिमनमें ॥ धर्म आदि पाण्डव धनुधारी। दुर्योधन पहँ चले प्रचारी ॥ तिन्हें देखि नहिं तौसुत धरषो। कै यक सहस भल्ल शर बरषो ॥ यहि बिधि निज सुभटनसों भाष्यो। भागि अमरता तुम अभिलाष्यो ॥ अमर होत नर रण में मरिकै। नहिं जे मरत रोगबश परिकै ॥ ताते पलटि लरो भय तजिकै। हानि लाभमें आनँद साजिकै ॥ जयलहि लहत सुयश को टीको। रणमें मरेहु क्षत्रियहि नीको ॥ और एकहै सुनिये सोऊ। इनसों भागि बचिहि नहिं कोऊ ॥ यह सुनि चेति फिरे सब योधा। किये पाण्डुदलको अवरोधा ॥ दोहा ॥ शाल्वम्लेच्छ पति तेहि समय मत्त द्विरदपर बैठि। शत्रुसैनसों भिरतभो म्लन मोक्षनको ऐंठि ॥ कालराज महिषस्थ सम शत्रुसैनसों जूटि। भयो भगावत बिकलकरि दण्ड शरनसों कूटि ॥ सोरठा ॥ निज दल बिचलत देखि धृष्टद्युम्न सेनाधिपति। शर बर्षत अतितोखि चलो शाल्व क्षितिपालपहँ ॥ चौपाई ॥ ताहि देखि आवत शर छावत। शाल्व भूपभो द्विरद चलावत ॥ धृष्टद्युम्न तहँ तुरता धारयो। बसुशर कुम्भन बीच प्रहारयो ॥ लागे बाण द्विरद दबि पिछलो। मनु रणबन्धु गोदसों बिछलो ॥ बहुरि चलायो नृप रिसिपागो। धृष्टद्युम्नके-बधहित लागो ॥ धृष्टद्युम्न तब घनसम

गर्जो । गहि गुरु गदा त्यागि रथ तर्जो ॥ मत्त मतंग नेकु नहिं अटक्यो । सुरथउठाय भूमिपै पटक्यो ॥ शाल्वभूप अति तुरता धारयो । अगणित भटन शरनसों मारयो ॥ सात्यकि भीम शि-खण्डी तौलों । आये सजे द्विरद रथ जौलों ॥ पुरुषसिंह सेना पति धरकस । गजके कुम्भ गदाहनि करकस ॥ बध्यो चिघरि सो गज मतवारा । गिरो बमत शोणित की धारा ॥ सात्यकिमा-रि बाणगति अतिको । काट्यो शीश शाल्व नरपतिको ॥ ढिग लखि क्षेमधूर्त्ति अवनीशहि । शर हनि काटि गिरायो शीशहि ॥ नृप यहि बिधि को अनरथ लखिकै । मम भट हाहा किये बिल खिकै ॥ सो लखिकै भूपति कृतबर्मा । भिरो सात्यकीसों बर पर्मा ॥ दोऊ एकबंश भवनागर । दोऊ बिदित पराक्रम सागर ॥ अगणित भांतिनकी गतिलीन्हे । बाणनको दुर्दिन रचिदीन्हे ॥ दोहा ॥ अगणित शायक परसपर काटि काटि गति ठाटि । हने परस्पर बाण बहु डाटि डाटि शर पाटि ॥ कृतबर्मा शर अर्द्ध शशि हनि काट्यो धनु तासु । सात्यकि काट्यो तासु धनु गहि कठोर धनुआसु ॥ बधि सूतहि घोड़न बध्यो काट्यो ध्वजा अ-नूप । शूल चलायो और रथचढ़ि कृतबर्मा भूप ॥ सोरठा ॥ काटि शरनसोंताहि करिकरलाघव सात्यकी । फेरि बधतभो चाहि तुरँ ग सूत हार्दिक्यके ॥ इबिधि बिरथ करि फेरि भल्ल हन्यो हिय मध्यतकि । इमि कृतबर्महिं हेरि कृप बाढ़ि निज रथपर लयो ॥ नृप यह दशा निहारि ममदल बिचलो धीर तजि । सदालहत फलचारि राम कृष्ण जेहि हिय बसत ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबंदीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपी नाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकविनाविरचितेभाषायांमहाभारत दर्पणेशल्यपर्वणिशल्यबधोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

दोहा ॥ बारबार बिचलत सयन लखि दुर्योधन भूप। अति रिस गहि परभटनसों भिरो भयानक रूप॥ और सुरथपरचढ़ि तहां कृतबर्मा क्षितिपाल। जातभयो बर्षत बिशिख बिक्रम करत कराल॥ चौपाई॥ महाराज सुनिये तेहि क्षनमें। दुर्योधन अनरथ गुणि मनमें॥ अतिशय दुसह पराक्रम कीन्हों। बाणजाल पूरित करिदीन्हों॥ शतशर हन्यो युधिष्ठिर राजहि। सत्तरिशर भटभीम दराजहि॥ चौंसठि बाण नकुलकहँ मार्‍यो। तीनिबाण सात्यकिहि प्रहार्‍यो॥ धनुसहदेव सुभटको काट्यो। यहिबिधि सबपहँ शरझरि ठाट्यो॥ तब सहदेव और धनु गहिकै। दश शर हन्यों खरोरहु कहिकै॥ नकुल हने नव बाण सुहाये। द्रौपदेय सत्तरि छबिछाये॥ मार्‍यो धर्म पांचशर चोखे। भीम असीशर हन्यो अनोखे॥ इतनेमें इतके भटरूरे। गये तहां अति अमरष पूरे॥ भिरो भीमसों अश्वत्थामा। नकुल उलूक भिरे बलधामा॥ भिरि सात्यकिसों नृप कृतबर्मा। कियो घोर रण अद्भुत कर्मा॥ शकुनि धर्म भूपति सों भिरिकै। घोर युद्ध कीन्हों तहँ थिरिकै॥ भूपहि शकुनि बिरथकरि दीन्हों। नकुल तुरित निज रथपर लीन्हों॥ रथचढ़ि धर्मभूप धनुधारी। लरे शकुनि सों बल बिस्तारी॥ धृष्टद्युम्न अरु नृप दुर्योधन। भिरि कीन्हें अद्भुत धनुशोधन॥ द्रौपदेय अरु बिप्र अचारय। घोर युद्ध कीन्हें जयकारय॥ दोहा॥ यहि प्रकार भिरिभट तहां किये द्वन्द संग्राम। भूप अब्द शब्दन भरो रुण्डमुण्ड रणधाम॥ अति बिक्रम करिकरि लरे सुभट प्रचारि प्रचारि। तोमर पट्टिश शक्ति शर भूरि प्रहारि प्रहारि॥ सोरठा॥ अतिशय अद्भुत युद्ध भूप भयो तेहिक्षण तहां। पाण्डव योधा उद्ध बिचलित कीन्हें सैन तुव॥ चौपाई॥ दल बिचलित लखि नृप दुर्योधन। फिरि फेर्‍यो करि बहुबिधि ओधन॥ होत भई तहँ तुमुल लराई। लरेसुभट अति ओज बढ़ाई॥ नृपति युधिष्ठिर थिररहु भनिकै। शायक

तीनि गोत महिं हनिकै ॥ कृतबर्माके घोरन हतिकै । बर्षो बिशिख पराक्रम अतिकै ॥ तहां द्रोणसुत तुरता कीन्हों । कृतबर्माहिं निज रथपर लीन्हों ॥ तब दुर्योधन गर्बी तेजो । रथी सातशत नृप पहँ भेजो ॥ ते बढ़ि बर्षि बाण नृप ऊपर । गोपित करिदीन्हें रण भूपर ॥ तिनमधि सब पाण्डव भट धसिकै । मृगगण मध्य सिंह सम लसिकै ॥ क्षणमें बधे सातशतबीरण । भये पराजित करत अधीरण ॥ बहुबिधिके अशकुन वहिथलमें । भूपति होतभये तेहिपलमें ॥ फेरिशकुनि बहुसुभट पठायो । तेहिपाण्डव यमलोक लगायो ॥ तब सौबल जयपै मनदैकै । दशहजार हय सादीलै-कै ॥ घूमि गहे घातैं कलबलकै । गयो पीठिपै पाण्डव दलकै ॥ दुर्योधनके जयरति पागो । भल्ल बर्षि दलमर्दन लागो ॥ मर्दित ह्वै भागेभट तितके । प्रबलपरे सबयोधा इतके ॥ हाहाकारमचो तेहिठाईं । मुदित भयो कुरुपति नरसाईं ॥ दोहा ॥ सोलखिकै सह-देवसों कह्यो युधिष्ठिरराय । द्रौपदेय सहसैनलै दलरक्षो तहँजा-य ॥ गज सवार शतसात अरु पैदरतीनि हजार । पांच सहस सहदेव सँग दयोतुरँग असवार ॥ सोरठा ॥ जायतहां सहदेवभिरे शकुनिकी सैनसों । द्रौपदेय बर भेव भिरे भिरे ह्वै सरित ज्यों ॥ चौपाई ॥ आयुध बाहिबाहि बरबादी । लरे अश्वसादी हय सादी ॥ पट्टिश शक्ति गदा शररूरे । हनैं परस्पर अमरष पूरे ॥ किते जात इत आउ प्रचारैं । यष्टिशूल बरभल्ल प्रहारैं ॥ तुरँग तु-रँगसों भिरैभिरैकै । हनैं खड्ग थिरु धिरैधिरैकै ॥ कितने खड्ग चर्मपैलेहीं । बधि बादिहि महिगत करि देहीं ॥ किते परस्पर महिपै गिरिगिरि । बाहुयुद्ध बितरैं फिरि भिरिभिरि ॥ कटेशीश असि भुजा उठाई । कितने फिरैं तुरँग दौराई ॥ मरेकिते पायर में अटकै । लसे धूम पाणीसम लटकै ॥ किते परस्पर बाहि कटारी । मरिमिलि परे यथा पियप्यारी ॥ कितने तुरँग सवार बराधिकै । गरजैंद्विरद सवारन बाधिकै ॥ कितेगजरथ धनुषधर

नीके। बधें तुरग भटशकुनि अनीके ॥ कितने पैदर सुभट अ-
नोखे। बधे तुरँग भट अरिके पोखे ॥ किते अश्वसादी जब
लीन्हें। अगणित पैदर यमबश कीन्हें ॥ यहिबिधि घोर युद्धभो
राजा। तौ कुमन्त्र तरुको फल ताजा ॥ तहां न बचत जानिमति
पुरको। शकुनि भूप निजदललै मुरको ॥ षटहजार भट शोणित
छाये। तुरगन सह घायल बचि आये ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नके ढिग
गये द्रौपदेय सहसैन। गोसगर्ब नृपधर्मपहँ भट सहदेव सचैन ॥
शकुनि भूप फिरि मध्यमें धृष्टद्युम्न दल देखि। भिरत भयो
अति बेगसों नाशकरब अवरेखि ॥ सोरठा ॥ तिनसों भट पांचाल
भिरत भये अतिओजसों। महाराज तेहिकाल भयो तहां अति
घोररण ॥ भुजगप्रयात ॥ भिरेहेरिकै टेरिकै फेरि बीरै। लगेडारने
डाटि पट्टीशतीरै ॥ गदा शक्ति भल्लै भलीभांति झेलें। खरे
खड्गकी खेलमें खड्ग खेलें ॥ अरे आडुरे आडुरे टेरि टूटैं।
बनी लोहकी यष्टिसों शीश कूटैं ॥ किते खड्ग टूटे कटारीनबाहैं।
कटे हाथ केते भरेरोष चाहैं ॥ भिदे गात केते खरे गात भेदैं।
किते जातके घात देमासु मेदैं ॥ कटे शीश केते अटे कोप घूमैं।
कटे गात केते लटे भूमि चूमैं ॥ बिना बीरके ह्वै किते अश्वधावैं।
बने बातके पोतसे भूरि भावैं ॥ तजैं संगही आयुधै बीरकेते।
मरैं संगही संगही जात चेते ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार तहँ होतभो
युद्ध भयानक वेष। त्रासितभये भट शकुनिके बचेरहे जेशेष ॥
पाण्डव भटदल शकुनिको घेरि तहां क्षितिनाथ। मर्दतभे आयुध
बरषि अति आतुर करिहाथ ॥ सोरठा ॥ सुभट शकुनि के सर्ब
अति बलकरि तिनसों लरे। पसरो सर्ब अखर्ब भूपति तीजे
याम तहँ ॥ निजदल बचत न जानि शकुनि भूपकढ़ि युगुति
सों। गोनृपपहँ अनुमानि बचे सुभट शतसात सह ॥ चौपाई ॥
जाइ सुयोधन नृपके नेरे। कहत भयो मन मानो मेरे ॥ योधन
सहित शत्रुदलमाहीं। पैठि लरो कछु संशय नाहीं ॥ सुजयलेहु

आपद अरिमधिकै । हयदल पैदल गजरथ बधिकै ॥ यह सुनि दुर्योधन करि भावत । चलत भयो दुन्दुभि बजवावत ॥ शंख बजाय सुभटअरिदलके । बढ़िभे भिरतगणे बरबलके ॥ मचो घोरसंगर तेहिपलमें । पूरिदये आयुध सबथलमें ॥ मारु मारु धरु मारु रटनकी । अरु ज्योंशब्द सुबाण अटनकी ॥ भूपति पूरिजातभो नभमें । भयोबीररस पूरण सबमें ॥ धीरधुरीणपार्थ तेहि क्षनमें । कह्यो कृष्ण प्रभुसों गुणिमनमें ॥ अरिदल मध्य चलो रथलैकै । आजुबिनाशकरौं परलैकै ॥ भीषम बिदुर आपु हितशोधन । कह्यो न मान्योमूढ़ सुयोधन ॥ भीषम द्रोण आदि भटसूरे । गिरे रहे जे बरबलपूरे ॥ जूझे कर्ण शल्य भटजबहूं । चेतोनहीं मूढ़शठ तबहूं ॥ मरेअनेक सहोदरभाई । तबहूंकरत न चेत अदाई ॥ बिदुरबुझाय कह्योयहमोसों । सोमैंआजुकहत प्रभुतोसों ॥ रहिहिप्राण याकेघट जौलों । तुम्हैंभाग देइहिनाहिं तौलों ॥ दोहा ॥ याकेजन्मत घोरधुनि रोदनकिये शृगाल । यासों बिनशी जगतसब यह क्षत्रिनको काल ॥ सबक्षत्रिनसह याहि बिधि सुनोकृष्ण यहबात । शोकाकुल बन्धुनसहित करबअवशि निजघात ॥ सोरठा ॥ तातेसुरथ बढ़ाय चलो शत्रुकेसैनढिग । यह सुनि कृष्ण सचाय रथलैआये सैनढिग ॥ चौपाई ॥ भटकपि केतु महारिसिपागो । भूपयहांशर बर्षणलागो ॥ बज्रसमान प्राणहर सूरे । शरगाण्डीव धनुषप्रद पूरे ॥ दावादहै गहन बन जैसे । मर्दतभो कौरवदलतैसे ॥ प्रतियोधन बाणनकीधारा । पूरिदयो रणधीर अपारा ॥ रथधनुध्वजा तुरग भटबारन । अंगभंगकरि लागो डारन ॥ बहुविधिके बाणनकीबर्षा । करतभयो गहिअति उत्कर्षा ॥ पारथदवा बाणझरिलपटैं । ममदल लताजूहलखि झपटैं ॥ कितनेभगैं प्राणहर ज्वैकै । कितेमरैंबाढ़ि सन्मुखह्वैकै ॥ भागे बंधु पुत्र तजिकेते । बहुभगि पलटिलरैं जयदेते ॥ किते भागिकरि हयआरुबासन । आयलरैं फिरिकर्षि शरासन ॥ तुरग

द्विरदरथ बिनुह्वैकेतें । भगेबिकलह्वै जीवनचेते ॥ कितने अंग भंगह्वैभागे । चेतिपलटि मरिबे कहँलागे ॥ बहुभगिबारि पान करिफिरिके । पार्थशरण सोंभूमेंथिरिके ॥ कितेभभरि भगिचलैं अनेरे । फिर पलटैं तो सुतके फेरे ॥ घायलपरे कितेभट ऊबैं । कितने मरे रुधिरमें डूबैं ॥ पारथ कै जय यशको चोपित । यहि बिधि कियो प्रलय आरोपित ॥ दोहा ॥ महाराज सुनु तेहि समय दुर्योधन क्षितिपाल । धृष्टद्युम्नसों भिरतभो करषत धनुषकराल ॥ दोऊ धनुधर प्रबलभट बराषिबाण समुदाय । घोर युद्धतहँकरत भे लाघव ओज बढ़ाय ॥ सोरठा ॥ तोसुत भूपअमान बध्यो तासु चारो तुरग । हन्यो भुजनि द्वैबान हन्यो हियेमें एकशर ॥चौपाई॥ धृष्टद्युम्न अति अमरष छायो । बधि भूपति के तुरग गिरायो ॥ फेरि प्रचारि सिंहसम डाट्यो । शरसों शीश सूतके काट्यो ॥ तब दुर्योधन हयपर चढ़िकै । हो जहँ शकुनि गयोतहँ कढ़िकै ॥ तीनिहजार द्विरदलैटेरत । भोबढ़ि पांच पाण्डवन घेरत ॥ तेतहँ लसे जलद मधि जैसे । रबि गुरुशुक्र चन्द्रबुध तैसे ॥ तब गहि गदा भीमरथतजिकै । बली सिंहसम चलो गरजिकै ॥ गज कुम्भनपै लगो प्रहारन । गज बधि लगो सानुसम डारन ॥ अगणित द्विरद भयो बधि डारत । डरि अगणित भागिचले चिघारत ॥ लखि गज यूथ क्रोधसों छायो । सादर धृष्टद्युम्न तहँआयो ॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्मा । लख्यो न तहँ भूपतिबर पर्मा ॥ ह्वैअति दुचित क्षत्रियन बूझै । गये कहां भूपति के जूझै ॥ तेसबकहे सुनो यहजतिसों । भूपतिहारि शत्रु दलपतिसों ॥ हय चढ़िगोजहँ सौबलराजा । तहांलरतहै सहित समाजा ॥ करिहो कहा नृपतिलै भाई । अब लरिबोई नेहसगाई ॥ सोसुनि भये सुचित तेनाहीं । सादरगये भूमिपति पाहीं ॥ गर्बित धृष्टद्युम्न भटभायो । सेनासहित तहांचलिआयो ॥ निरखिताहि ममसुभट सकाने । ह्वै बिबरण अति अनरथजाने ॥ अर्जुनके शरघातन

पीड़ित। हे सबसुभट हारिलहि बीड़ित॥ लरेबिना नाहिं लहि अवकाशा। हम तेहिक्षण तजि जीवनआशा॥ सबसुभटनसह धीरज धरिकै। तासोंभिरत भयेप्रण धरिकै॥ धृष्टद्युम्न करकश रणकारी। तेहिथल अगणित सुभट सँहारी॥ बाणप्रहारिभटन करिमोहित। गयोअन्त पाण्डव नृपकोहित॥ तहँआयो सात्यकिधनुकर्षत। रथीचारिशत सहशर बर्षत॥ एकमुहूर्त्त युद्धभो तासों। बधिममदल सात्यकि भरिभासों॥ कैमोहित ताके शर घातन। हमगिरिपरे भूपकहिं जातन॥ तबसो मोहिंडारि निज रथपै। गयोबाण बर्षत रणपथपै॥ भूपहिलखेबिना तेहिक्षणमें। अन्तकसम भीमहिं लखि रणमें॥ हेहत शेष सुवनतो जेते। नृप बधजानि बिकल भेतेते॥ दोहा॥ दुर्बिमोच दुर्भर्षण दुर्बिष भूरिश्रुतान्त। जयत्सेन रवि जैत्र अरु बाल सुजात सुकान्त॥ सुभट श्रुतर्बा धनुषधर दुःप्रधर्ष बरबीर। भिरे भीमसों मोहबश बर्षत तीक्षण तीर॥ लखि तिनकहँ भट भीमचढ़ि रथपैधनु टंकारि। क्रमसों तिनके काटिशिर दयोभूमिपर डारि॥ चौपाई॥ सब बंधुन को मरण निरेखी। सुभट श्रुतर्बा अतिशय तेखी॥ भीमहिं कै यकबार प्रचारी। हनत भयो अगणित शरभारी॥ काटिभीम के अगणित शायक। काटतभयो धनुषदृढ़घायक॥ तुरतहि भीम और धनुगहिकै। बरषोबिशिष भागुमति कहिकै॥ अगणितबाण बारिकैताके। हन्यो श्रुतर्बाशर बरभाके॥ तहँ दोऊ अति लाघव लीन्हे। बाणननभ छादित करिदीन्हे॥ भीम मारि बहुशायक चोखे। बध्यो श्रुतर्बा के हयरोखे॥ बधिसूतहि अगणित शर मार्यो। तबतो सुवनचर्म असिधार्यो॥ तब भटभीम कराषधनु आसू। हनिक्षुरप्र काट्यो शिरतासू॥ इमितो पुत्रनको बधलखिकै। ममभटअगरे बध अभिलखिकै॥ घेरिचहूं दिशिसोंधनुकरषो। भीमसेनपहँ शायकबरषो॥ भीमसेनगाति अति उतकर्षा। तिनपहँ बिरचि बाणकीबर्षा॥ शरन

पांचशत रथीसँहाऱ्यो। सुभट सातशतगज बधिडाऱ्यो॥ बध्यो लाख पैदर धनुधुनिकै। बसुशत द्विरदबध्यो जयगुनिकै॥ तब हतशेष सुभट सब इतके। चले बिचलि बलबीर्य अमितके॥ इमि बिचलाय कौरवी सेना। तालदेतभो भटजगजेना॥ दोहा॥ यहिप्रकारतो सुवनबधि भीमबीर उद्दण्ड। आपुहिमान्यों धन्य अति गुणिपूरण पणचण्ड॥ नृपतेहिदिन तेहिक्षणरह्यो तोदल किंचितशेष। तबहूं तोसुतभूपनहिं मान्योकछु बिशेष॥ सोरठा॥ युगदलशेष निहारि कृष्ण कह्यो इमि पार्थसों। यहिदिन सुजय बिचारि पार्थबधौ सबशत्रुदल॥ चौपाई॥ सात्यकि परदल मधि जय लहिकै। लैआयो संजय कहँ गहिकै॥ ब्यूहबनाय किये अवरोधन। हयदल मध्य खरो दुर्योधन॥ कृपकृतवर्मा अश्व-त्थामा। नृपसों दूरि खरेबलधामा॥ हैं अति समित सुभट दुहुं दिशिकै। लरतरोजके जागे निशिकै॥ अबतुम निजधनु बिधि अवराधौ। बधिशत्रुहि नृपकारज साधौ॥ नाथ आपु यह कहत यथारथ। यह सुनि कह्यो कृष्णसों पारथ॥ भीमतासु सबबन्धु सँहारे। हैं द्वैतीनि जातते मारे॥ भीषम द्रोण कर्ण हैं आदिक। मरे असंख्यन सुभट प्रमादिक॥ बचे पांचशत भट हय सादी। शकुनि भूपके जय धुनि नादी॥ द्वैशत बचे रथी कुरुपतिके। शतगज गजारोह बलअतिके॥ तीनिहजार पयादे बाचे। तेमम बाणनकी भयराचे॥ अश्वत्थामा कृपकृतबर्म्मा। अरु त्रिगर्त्तपति भूप सुशर्म्मा॥ शकुनि उलूक शेषदल एतो। ताको बधब पराक्रम केतो॥ नृप न भागि हैं रणतजि जेते। मम बाणन बधि जैहैं तेते॥ जीत्यो शकुनि रल अधरमकै। सो हम आजु लेत सुधरमकै॥ यह सुनि कृष्ण चपलकरि घोरे। चलत भये मम दलके धोरे॥ दोहा॥ चले पार्थके संगतहँ भीम नकुल सहदेव। टङ्कारत कोदण्डबर बर्षत बाण सुभेव॥ तिन कहँ आवत देखि नृप शकुनि सुशर्म्मा भूप। बढ़ि पारथसों भिरतभे

बर्षत बाण अनूप ॥ सुभट सुदर्शन सुवन तुव भिरो भीमसों बीर । भिरतभयो सहदेवसों दुर्योधन रणधीर ॥ प्रासहन्यो सहदेवको शीश हयस्थ नरेश । ह्वै मोहित फिरि चेदिसो बर्षोबाण सुभेश ॥ चौपाई ॥ बर्षिबाण पारथ धनुधारी । बध्यो समस्त सुभट हयचारी ॥ रथिन मध्य फिरि प्रलय पसारयो । अगणित रथिन भूमिपे डारयो ॥ बाण क्षुरप्र प्रचारि प्रहारयो । सत्यकर्म को शीश बिदारयो ॥ मृगगण मध्य सिंहज्यों भूषो । लस्योलसो तिमि पार्थ अदूषो ॥ रथीसुशर्म्माके सबबधिकै । बध्यो सुशर्महिं पार्थ बरधिकै ॥ रहे सुशर्म्माके सुत जेते । तिनकहँ बध्योमारि शरतेते ॥ बधि त्रिगर्त्तदल भट छबिछायो । शेष कौरवी दलपै आयो ॥ तोसुत सुभट सुदर्शन चीन्हों । भीमसेन ताको बध कीन्हों ॥ लखि बध तासु तासु अनुगामी । भिरे भीम दलसों बधकामी ॥ तिनकहँ बध्यो भीम क्षणमाही । लखि सबगुणे बचत कोउ नाहीं ॥ तो सुतको सेनापति जोहो । भिरो शत्रुदल सों सोकोहो ॥ रथिन सहित अरिदलसों भिरिकै । सो अतियुद्ध कियो तहँ थिरिकै ॥ हन्यो उलूक बाण दश भीमहि । शकुनि तीनि शर हन्यो अधीमहि ॥ भट सहदेव जीति कीरतिसों । भो तहँभिरत शकुनि नरपतिसों ॥ शकुनिताहि नब्बेशर मारयो । सोभूपहि बहुबाण प्रहारयो ॥ तेसबसुभटतहां सुनुराजा । करत भये बाणनको छाजा ॥ दोहा ॥ इमिदुहुंदिशिके सुभटसब भिरि भिरिओजबढ़ाय । तोमर पट्टिश शक्तिशर दियेदुहूंदिशि छाय ॥ रुंड मुंड भुजजानुसों भईभयानक भूमि । बायस जम्बुक गृध्रजुरि शोणित पीवत घूमि ॥ सोरठा ॥ सौबलबीर अमान प्रास हन्यो सहदेवशर । भोमूर्छितबलवान भटसहदेव उदारमति ॥ चौपाई ॥ सोलखि भीमशरासनकरष्यो । शकुनिआदिकहँ शायकबरष्यो ॥ घनसमानगर्जो प्रणधरिकै । सोसुनिभगे सुभट अति डरिकै ॥ सिंहगर्ज सुनिभागे कर्णी । तिमि ममसेना भई बिबर्णी ॥ दल

बिचलतलखि नृपदुर्योधन। इमिकहिकै कीन्हें अवरोधन॥ फिरौ फिरौ सबसंशय तजिकै। नरकलहौगे रणसोंभजिकै॥ सुनिते फिरे रोषसों पागे। तजि जियक्षोभ लरनतहँ लागे॥ सहदेव चेति शरासन लीन्हें। दशशरगात शकुनिके दीन्हें॥ तीनिबाण तुरगनकहँ हनिकै। काट्योधनुष खरोरहु भनिकै॥ तुरितहिशकुनि और धनुधारी। नकुलहिहन्यो साठिशर भारी॥ हन्योउलूक साठिशर भीमहि। सत्तरिशर सहदेव अधीमहि॥ भीम उलूकहि नवशर मारयो। शकुनिहि चौसठि बाण प्रहारयो॥ हनिसुभल्ल सहदेवनभटको। काट्योशीश उलूक सुभटको॥ शकुनिपुत्रकोमरिबो लखिकै। बाक्यबिदुरको समुझिबिलखिकै॥ दृगजल पूरिभूरि दुखभरिकै। चिन्तिमुहूर्त्त हियोदृढ़ करिकै॥ तज्योतीनिशर पाण्डव ऊपर। तेहिसहदेव गिरायोभूपर॥ तकि सहदेव सौबलहि डाट्यो। बाणअर्द्ध शशि हानिधनु काट्यो॥ तबगहि खड्ग शकुनि रणखेलत। भैसहदेवबीरपहँ झेलत॥ भटसहदेव बाणहनि चीन्हों। बीचहि खड्गकाटि द्वैकीन्हों॥ दोहा॥ तबसौबलगहि गुरुगदा गर्जिचलायोआसु। ताहिकाटि सहदेवभट ब्यर्थकियो बलतासु॥ शक्तिचलायो शकुनितबतेहि काट्यो सहदेव। शकुनिभूपतब बिचलिगो भभरित्यागि निज भेव॥ सोरठा॥ शकुनिहि बिचलतदेखि बिचलिचले हतशेषभट। तबसहदेव बिशेखिचले प्रचारत सौबलहि॥ चौपाई॥ अब कहँ भगे जातहौ मामा। तजिपुंसत्व भये जिमि बामा॥ कुरुकुल अगिनिपलटि लरु भिरिकै। कियेकर्म को फललहु थिरिकै॥ आजु काटि तो शीशसोहायो। लेतजुवाको बैरबनायो॥ इमि कहि शकुनिहि दशशर मारयो। चारिबाण तुरगनपहँ डारयो॥ फिरि हनि छत्र ध्वजाध्वज काट्यो। धनुष काटि लाघ वता ठाट्यो॥ तब अतिकोपि शकुनि रणचारी। चह्यो चलावन प्राससुभारी॥ तब हनि तीनिभल्ल अरिनन्दन। काट्यो भुजा

पाण्डु नृपनन्दन ॥ फिरिहनि भल्लकाटि शिरताको । दियोडारि अतिभरो प्रभाको ॥ गिरो कबन्ध शकुनिको रथते । मानोंकेतु गिरोनभपथते ॥ शकुनिहि मरो देखिभट उतके । शंखबजाये आनँदयुतके ॥ तबभट सौबलके अनुगामी । भिरपाण्डवनसों नभकामी ॥ अर्जुनभीम बर्षिशर तिनपै । दीन्होंभेजि शकुनिगो जिनपै ॥ तबअतिकोपि सुयोधन राजा । बचेरहे जे सुभटसमा-जा ॥ तिनसोंकह्यो पाण्डवन हतिकै । आवोशीघ्र पराक्रमअति कै ॥ सोसुनिते सबअमरष साने । मरिसुर संगहेत उमदाने ॥ चले पांडवनपहँ धनुकर्षत । पट्टिश शक्ति शूल शरबर्षत ॥ देखि तिन्हैंभट पांडवदलके । बढ़ि बढ़िभिरे गणेबरबलके ॥ दोहा ॥ नृपमुहूर्त्तभरि होतभो तहांघोरसंग्राम । पांडवकिये अशेष बधि सबतोसैन ललाम ॥ एकादश अक्षौहिणी नृपतोसुतकी सैन । तेहिक्षण सिगरी बधिगई भावीहोति टरैन ॥ एक सुयोधन भूप बचि इतउत चखन चलाय । निजदिशि सूनीमेदिनी लखिभो महाअचाय ॥ धनुटंकारत पाण्डवन लखिकछुसैन समेत । मोहिं चेति भगिजानको भूपगहतभोनेत ॥ सोरठा ॥ यहसुनिवृद्धनरेश संजयसों बूझतभयो । कहुसंजय तेहिदेश बचेकिते पाण्डवसु-भट ॥ जनमेजयउवाच ॥ जयकरी ॥ सोसुनिकै संजयमतिमान । कहत भयो सुनुभूपसुजान ॥ द्वैहजार रथ गजशत सात । पांचहजार अश्वअवदात ॥ दशहजार पैदर बलऐन । इतनीबची पाण्डवी सैन ॥ लखिनर्द्दत परयोधाचंड । चालनकरत कठिनकोदण्ड ॥ मरोतुरँगतेउतरि सदन्द । भागिचलो दुर्योधनमन्द ॥ एकादश क्षोहिणिको नाथ । चलोपयादे नहिंकोउसाथ ॥ गदापाणिअति जबसों जाय । दूरतभयो शरनीरेपाय ॥ गुणताबिदुरको बचन प्रशस्त । शरमधिभयो सूरसम अस्त ॥ उतसात्यकिके रथपर मोहि । धृष्टद्युम्न सेनापतिजोहि ॥ हँसिबोलो सात्यकिसों बैन । राखेइन्हैं नफाकछुहैन ॥ यहसुनिकै सात्यकि करिचेत । करमें

खड्गलियो बधहेत ॥ तेहिक्षण तहांआइ मुनिव्यास । कह्यौन याहि बधौमति रास ॥ व्यासबचन सुनि बीरबिशाल । दीन्ह्यों मोहिंछोड़ि तेहिकाल ॥ व्याससुमुनिकी कृपाप्रसाद । हम बचि चलेतजे अहलाद ॥ नृपति कोशभरि तहँसों आय । सरमधि भूपहिलख्यो अचाय ॥ नृपलखि मोहिंबारि भरिनैन । रहोमोह बश घरिक अचैन ॥ दोहा ॥ चेति भूपफिरि कहतभो कहुसंजय मतिमान । मम सुहितनमें एकतुम बचेन कोऊआन ॥ यहसुनि हम नृपसोंकहो बचेतीनि भटऔर । कृप कृतबर्मा द्रोणसुत बिदित भटनको मौर ॥ तबमोसों नृपकहतभो कहेहु पितासोंजाय। तो सुत दुर्योधनबचो ह्रदमें पैठिअचाय ॥ पुत्रबन्धुहित वर्गबिनु कहाजियें अबमोहिं । कह्योराज्य पाण्डवसबल किमि जीवे सो जोहि ॥ इमि कहिमोकहँ बिदाकरि दुरोबारिमधिभूप । कृपकृतबर्मा द्रोणसुत तहँआये हतरूप ॥ महिखरी ॥ तेआय मोसोंभये बूझतकहो भूपति कितगयो । हैबचो कैलरिमरो तबहमरहोन्नृप तहँकहिदयो ॥ तेरोय तेहिथर शोकभरि फिरिमोहिं रथपरकरिलये । रथहांकिआये सिविरमधि तेहि समय रबि अथवतभये॥ तेहिसमय रोदन शब्दआरत सकलसिविरन भरतभो ॥ हातात सुतपितु बन्धुस्वामी शब्दयहसुनि परतभो ॥ सबदाररक्षकन्नृपनकी तियरथन करिलै चलतभो । भागिचले सेवकसौज लै लै शोकदावन जलतभो ॥ उरशीशताड़त करतरोदनचलीं योषित दुखभरीं । सबआय हस्तिन नगरमधि नृपठौरठौरन गिरिपरीं॥ उत बिदाकीन्होंधर्म नृपति युयुत्सुकहँ उरलायकै। रथहांकि सो दृग भरेजल नृपनगर देख्योआयकै ॥ नृपद्वारछत्ता मिलेताहि प्रणाम करिसो थिररहो । सुतभाग्य बशतुम बचेआये नृपति बिनुतिन इमिकहो ॥ तबकह्यो सबवृत्तांत बेश्यापुत्रजिमि आवत भयो । सुनिसमुझि भावीकह्यो बिधिगति बिदुर सतगुण मतिमयो ॥ दोहा ॥ निशिभरि रहिनिजगेह सुतभोरधर्मकेपास । जा-

यहु इमिकहितेहि बिदा कियोबिदुर मतिरास ॥ ताहि बिदाकरि दुखितअति बिदुरचले तुवपास । बेश्यासुत निजगेहगो गुणि प्रभु चरितप्रकास॥रामराम सियरामजपि कृष्णचन्द्रकहँध्याय। शल्यपर्ब दर्पणरच्यो हनुमत कृपासहाय ॥

इतिभणिदेवकविविरचितेमहाभारतशल्यपर्बणितृतीयोध्यायः३ ॥

इतिशल्यपर्बसमाप्तम् ॥

महाभारत दर्पणे ॥

गदापर्बदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहिनौमि । बन्दि गिरा व्यासहिरचत भारतभाषा सौमि ॥ भूकृत भृभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भणत यह भाषाभारत महान ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परम अनूप । तेसारथ रचि देहिंयह भारत भाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबरबीर राम परमप्रिय पारषद । मंगल मूरतिधीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थबर॥ सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत तरयो ॥ जनगदंग जनहेत गहत गदा कौमोदकी । तेहिगहि हिये निकेत गदापर्ब्ब भाषारचत ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ जयकरी ॥ शल्यपर्वकी कथा ललाम । कहिबोले संजय बलधाम ॥ महाराज दुर्योधन भूप । जब हृदमध्य दुरोगतरूप ॥ भरो सिविर मधि शोकअपार । भगेलोगकरि हाहाकार ॥ द्रोण तनय अरु कृप अनखाय । कृतबर्मा कछु रजनिबिताय ॥ शरपर जाय दुखित अतिमान । कह्योभूप सों करि आह्वान ॥ नृपहम तीनि महारथ चण्ड । तोजय यशहित धुनिकोदण्ड ॥ चाहत फेरि कियो संग्राम । ताते चलौ लरैं यहियाम ॥ बधिहत शेष पाण्डवीसैन । लेहु बिजय बधि अरिबल ऐन ॥ कै बधिजायबसौ सुरलोक । उभय प्रकार सुयशको ओक ॥ यहसुनि दुर्योधन क्षि-

तिपाल । बोलेबचन पूरि दुखआल ॥ तुम त्रयबीर बचेहो जौन । मम सुभाग्यकी पुरता तौन ॥ नाहिं यहिक्षण लरिबेके योग । हैं हम महाशमित लहिभोग ॥ कै गतश्रम यह रजनि बिताय । तुम सह करब युद्ध गहिचाय ॥ नृपतेहि समय दैव आधीन । भीमसेनको चाकर पीन ॥ बधिक एककै शमित महान । आयोतहां करन जलपान ॥ सोसुनियह बार्ता सबिधान । मनमें भयो करत अनुमान ॥ है यहि सर मधि कुरुकुल राय । जाय भीमकहँ देउं बताय ॥ तौमोहिं बहुधन देहैंभीम । यह बिचारि सोचलो अधीम ॥ बिजयपाय उत धर्म नरेश । बन्धुसखन सह मुदित सुभेश॥ मिलोन दुर्योधन नरनाह । तातेअति चिन्तित मनमाह ॥ चारण कहँ कहि बहुधन देन । सबदिशि भेजिदयो सुधिलेन ॥ तेसब जाय दूरिलों हेरि । आय भूपसों भाषेटेरि॥ हेर्यो बहुतभूप शिर ताज । नहिंकहुंमिलो सुयोधन राज ॥ जानिपरै लरिमरो सगर्ब। क्षात्र धर्मयुतबीर अखर्ब ॥ इतनेमें वह ब्याध सचैन । जाय भीमसों बोलो बैन ॥ जो द्वैपायनसर अभिराम । तामधिदुरो भूपकै छाम ॥ इमिकहि कहत भयो सबतौन । सुनीरहे तहँबार्ता जौन॥ भीम ताहिदै धनसुखपाय । सबिधि कह्यो भूपतिसों जाय ॥ सो सुनि धर्मभूप लहि मोद । सदल सकृष्णचले तेहि कोद ॥ तेहिक्षण भयो किलकिला शब्द । शंखशब्द सों पूरो अब्द ॥ कृप कृतबर्मा अश्वत्थाम । सुनि सो शब्द पूरि दुखधाम ॥ कह्यो सुयोधनसों वहिओर । परत सुनाइ शब्द अतिघोर ॥ जानिपरत नृपधर्म ससैन । यहि दिशि आवत पूरित चैन ॥ दोहा॥ अबइतसों टरिजात हैं हम सब अनत अलेष । जाते तुम यहिमधि नइमि पांडव गुणे बिशेष ॥ यहसुनि तिनको करि बिदा दुर्योधन क्षितिपाल । जलथम्भन करि तालमधि दुरत भयो तेहिकाल ॥ तेत्रय योधा बेगसों दूरिजाय तेहि याम । बैठिरहे बटवृक्ष लहि महाशोचसों छाम ॥ सोरठा ॥ धर्मभूप तेहिठौर बन्धु सखन सहजायनृप।

दुर्योधनको डौर देखि कृष्णसों कहतभे ॥ रोला ॥ लखो दुर्योधन नृपतिको महामाया कर्म । बारिथम्भन करि दुरोशर मध्यपरम अभर्म ॥ नरन कहँनहिं प्राप्य अब यह जाइ बधि केहिभांति । मरोदेखें याहि जबतब मिटे दुखकी पांति ॥ बचन यहसुनि कह्यो केशव कहत नृपतुम सांच । युक्तिसों बधिजायगो यह सुकृतकी लहिआंच॥युक्तिसों बधिगये क्रमते असुरपति सबपूर्ब । युक्तिसों बधि जायगो यह किये मायागूर्ब ॥ बचन यहसुनि नृप युधिष्ठिर हियेकरि अनुमान। भूमिनाथ जलस्थसोंइमिकह्यो करिआह्वान॥ नृप सुयोधन गर्बतजि अबगह्यो कैसोकर्म।क्षत्रबंश बिनाशि अब किमितजतक्षात्र सुधर्म॥बन्धुसम्बन्धी सखासुत समरमें मरवाय। आपुजीवनआश गहिअब छिपेजलमें जाय ॥ गहेअनुपम शूरता तबकहेबचन सगर्ब । गर्बबिक्रम शूरतानिज करत मिथ्या सर्ब ॥ जानिऐसो परतपरबलकहे गरबितबैन। परेनिजपर भीर रणतजिकिये अबजलशैन । शूरतादरशाय सबसंसार नाश कराय। भागिजलमें दुरेइमि निजबंश बिरदभुलाय॥ धारिधीरज कढ़ोजलते लरोभिरि मनमान । उचित नाहिं कुरुबंश जनकहँ जीवक्षोभ मलान ॥ सुनिसुयोधन धर्मनृपके परमतीक्षण बैन । बारिमधिरहि कह्योमोकहँ जीवकी कछुभैन ॥ बिरथ बिधनु अभृत्यह्वै हमभये शमितमहान । हेततेंहियहि बारिमधि धसिकरत शैननआन ॥ सहितअनुगण सोयतुमहूं बितयरण श्रमलेहु । भोरलहि हमलरब तुमसों राखिजयसों नेहु ॥ कह्योतब नृपधर्म हम सबबिगत श्रमहैंभूप । बारिते कढ़िलरो यहिक्षण बीरता अनुरूप ॥ मारिहमकहँ करोअबकै भोगभूमि समस्त । देहतजिकै जाय बिलसौसुमन लोकप्रशस्त ॥ नृपसुयोधन कह्यो जिन सुत भ्रातरनहित राज्य। चहत ते सब मरे अबसोंभये हम कहँ त्याज्य ॥ क्षीण रत्नाहीनक्षत्री भूमिरुच तिनमोहिं । युवति बिधवा सरिससो तजिदेत अबहमतोहिं ॥ अबहुं तुमकहँ मारि-

बेको मोहिंहैउत्साह । पैनजीवतबन्धुसुत तोहिहैतत्यागत चाह ॥ जायबनमेंबसब अबहम अजिन अम्बरधारि । देततुमकहँभूमि भोगोसकल संशयटारि ॥ बचनयह सलिलस्थ नृपको सुनत धर्मनरेश । कह्यो अबकतकहत इमिरहि गुप्तपाय सुदेश ॥ सुई अग्रनदयेतब अबदेत सिगरी भूमि । सुबुधियहतो हिये आई कह्योकितसों घूमि ॥ भूमिदीबेयोग जोतुम अजौंलोंहेतात । तौन हमतो सुमुखदीन्हीं लेबमहि अवदात ॥ वंशरक्षण हेत तब हम रहेमांगत आपु । दयेनहिंतबभयो तातेबंशक्षयकृत तापु ॥ बधे बिनु अबतुम्हें नाहिं महिलेब जानोएहु।गुरुनको नहिंबचनमानेहु तासुफल तुमलेहु ॥ भागिरणते बारिमधि दुरिदेतहौ महिदान । दानमें अरु युद्धमेंभो कौनतुम्हहिं समान ॥ जानियतुहौ मूर्ख जीयतभूमि शत्रुहि देत । सुई अग्र न दये तबअब इतोधीरज-लेत ॥ नहीं जौलगि मरिहि हम तुमदोयमें ते एक । कालतौलगि गहे रहि है जगत क्षयको टेक ॥ सुनो ताते बारितेकढ़ि लरो डरबिसराय । शूरता तजि गहत कादरपनो लाजबिहाय ॥ बचन यह सुनि कहतभे धृतराष्ट्र भूप अचैन । कहो ममसुतसह्यो कैसे महाकटु ये बैन ॥ जासु हे चषकोर निरखत नृपनके समुदाय । तौन ममसुत सह्योकैसे बचन ऐसेहाय ॥ दोहा ॥ वृद्धनृपतिको बचन सुनि कह्यो सूतसुत दक्ष । नृपके दारुण बचन ये सुनि तो सुवन अपक्ष ॥ करतलसों करतलहि हनि महाक्रोधसों पूरि । सहि न सको नृप धर्मके बचन भरे बलभूरि ॥ कह्यो भूप तुम सकलहौ सरथ सधनुष ससैन । अरथ अधनु हम एक किमि तुमसोंलरैं सचैन ॥ एक एक क्रमसों करौ गदायुद्ध जोजूटि । तौहम कढ़ि तुमसोंलरैं बध बिचारि जयऊटि ॥ भीष्मद्रोण कर्णादिसों अनृण होब यहियाम । बधि सिगरे पाण्डवनकहँ करि सुगदा संग्राम ॥ धर्मयुद्ध जो करहु तुम जूटि एकसों एक । तौ सूची मुखमहि अजौं दुर्लभ तुम्हैं सटेक॥ सोरठा ॥ दुर्योधनके बैन

सुनि मोदित ह्वै धर्मनृप । बोले अचरजहैन होतुम ऐसे सुभट मणि ॥ क्षात्रधर्म बरजोन अजौं गहेतुम दैवबश। परम शूरताजौन भूप गहेसो दैवबश ॥ चौपाई ॥ इमि कहि कह्यो धर्म नरनायक। आपकहेसो करिबे लायक ॥ लरि हि एक कहिहौ जेहि आरज। और खरे लखिहैं तो कारज ॥ यह सुनि भूप सुयोधन गरबी । कह्यो गहे सुगदा अय दरबी ॥ महामत्त मैंगल सम बलते । गदापाणि नृप निकरो जलते ॥ पूरित क्रोध अरुण अति ईक्षण। भृकुटी करे यथाअसि तीक्षण ॥ गदापाणि बिलसो अरित्रासक। मनहुं दण्डधर सब जगनाशक॥गरुई गदा लोहकी भारी। गहे लसोमनु त्रिपुर सँहारी ॥ नृपहि अकेलो लखि तहँ थरपे। हँसे सुभट करदैदै करपे ॥ हास करत लखि भूप सुयोधन। अति रिस पूरि कह्यो जयशोधन ॥ सब यहि हँसिबेको फल लहिकै। यमपुर जैहौ नभपथ गहिकै ॥ यह सुनि उतके योधा रूरे। कुपितभये अति अमरष पूरे ॥ कीलित अहिसम नृप तेहि क्षन में। बोलत भयो शंकि रिसि मनमें ॥ भूपति कहत पुकारे तोसों। करो धर्म संगर अब मोसों। बिरथ बिधनुष कवच नहिं तनमें। हे सम एक प्रबल भटगनमे ॥ भूप सुयोधनकी सुनि बानी । कह्यो युधिष्ठिर नृप अनुमानी ॥ जब अभिमन्युहि बधि जय लीन्हे। तब तुम तहाँ धर्मनहिं चीन्हे ॥ अब याहि समय धर्म तुमजाने। यदपि कहत तुमसो हममाने ॥ हो तुम कवच हीन अबताते। देत कवचहम पूरितभाते ॥ इमिकहि धर्मकवचबर दीन्हे। ताहि सुयोधन धारणकीन्हे ॥ बर शिरत्राण धारि बल सागर। कहतभयो तोसुत भटनागर ॥ दोहा ॥ पांच पाण्डवनमों रुचै जाहिगदा गहितौन। गदायुद्ध हमसोंकरे और लखैं रहि मौन ॥ गदायुद्धमें मोहिं सम कौनभूमि तलमाह। न्याय युद्ध करि जो लहैमोसों जय नरनाह ॥ सोरठा ॥ इमिकहि बारम्बार गर्जितदेखि सुयोधनहि। केशवजानि बिकार नृपतियुधिष्ठिरसों

कह्यो ॥ जयकरी ॥ तुमभूपहि दीन्हों बरदान । लरिहिएक तुमसों सबिधान ॥ तेहिबिधि लहौराज्यतुमभूप।इमि कहिदीन्ह्यों बचन अनूप । नहिंऐसो साहस होयोग । अरिसों उचित न धर्मप्रयोग ॥ वेकेहिबिधि करिकरि अन्याय । लीन्ह्यो राज्यरत्नसमुदाय ॥ तुम फिरि गहत धर्म यहिठौर । हैं कछुभोग भोगिबे और ॥ गदा युद्धमें जीतैयाहि । ऐसोकहै कौनकोचाहि ॥ भीमहुसों संशयपरधान । यह जीतैधौंभीम अमान ॥ जो यहभीमहि बधै सचाय । तौ फिरिबसौ बिपिनिमें जाय ॥ जानिपरो यहराज्यउदार । नहिं तो भाग्य लिख्यो करतार ॥ धर्मसहित रहिगदा सुयुद्ध । यासों करिहि मरिहि सोशुद्ध ॥ यह सुनि भीमसेन बलवान । कह्यो कृष्णसों करि अनुमान । कृष्णचन्द्र मतिकरो बिषाद । हमयहि बधबगहौ अहलाद ॥ हम सबबिधिहैं यासोंश्रेष्ठ । भूप पाइ है बिजय यथेष्ठ ॥ यह सुनिकृष्ण प्रशंसेताहि । कह्यो बधोयहि सुगदाबाहि ॥ सात्यकि धर्मभूप कुलदीप । तासुप्रशंसाकियोमहीप ॥ सुनि सुप्रशंसाभीम अभर्म । कियोतासु बधको पणपर्म ॥ दोहा ॥ दुर्योधनके बधनकी करत प्रतिज्ञाचण्ड॥भीमउतरिरथसों चलो गहिगुरुगदा उदण्ड ॥ लखिभीमहि गर्वित बचन कहत सुयोधनभूप । गदा उकादत बढ़िचलो बलीसिंह अनुरूप ॥ दोऊ दोउनके बधन को पणकरत सपर्म । दोऊ दोउनसों कहत निज निज बिक्रममर्म ॥ सोरठा ॥ दोऊसुभट निशङ्क मत्तमतंग समसरिसबढ़ि । दोऊगहि गतिबङ्क गर्जि गरजिलागे लरन ॥ चौपाई ॥ महाराज तेहिक्षण मनभायो । अति अभिराम राम तहँआयो ॥ रामहिदेखि कृष्णउठिपूजे । बूझेकुशलकुशलनिज कूजे ॥ भाइन सहित युधिष्ठिरराजा । धृष्टद्युम्न सात्यकि सुख साजा ॥ क्रमसोंमिले मोदअति गहि गहि । आजुसुदिन तुम आये कहिकहि ॥ सुखासीन करि धर्ममहीपति । कह्यो रामसों बाणी दीपति ॥ येयुग बीरबन्धु रणचारी । भरेगर्ब गुरुगदाप्र-

हारी ॥ परम बिचक्षण शिष्य तुम्हारे । लरत आजु अतिश्रम-रषभारे ॥ ह्वै मध्यस्थ कृष्ण तुम मानद । देखौ गदायुद्ध यह सानद ॥ सुनि बलराम कह्यो गुणि चितसों । हम हेगयेपुष्य में इतसों ॥ एकपुष्य रहि अनत बिताये । दूजीश्रवणमध्य इत आये ॥ आइबयालिस दिनपैलेखो । चाहतगदायुद्ध यहदेखो॥ रामहिबन्दि बन्दि तहँ तक्षण । लगेलरन युगबन्धुबिचक्षण ॥ यह सुनि जनमेजय गुणि धुनिसों । बूझै बैशम्पायन मुनिसों ॥ मुनि सुयुद्ध आरम्भन क्षनमें । रामगये कितको गुणि मनमें ॥ आयेतहां कहाका करिकै । सोसब सुमुनिकहो मुदधरिकै ॥ यह सुनि बैशम्पायन भाषै । सुनोभूप तुमजो अभिलाषै ॥ दोहा ॥ करिब्यतीत निज कुदिनसब सुदिन पाय नृपधर्म । जब भेज्यो धृतराष्ट्रपहँ कृष्णहिं ज्ञापनकर्म ॥ जायतहां करि बार्ता कृष्ण चन्द्रफिरि आय । कहि उतको वृत्तान्त सब युद्धमंत्र ठहराय ॥ दल बिभाग लागेकरन तेहि क्षणमें बलराम । कृष्णचन्द्रसोंक-हतभे सुबचन अतिअभिराम ॥ सोरठा ॥ उनकोसंग सहाय करिबो हमको उचितहै । सोसुनिकै यदुराय मन न दयो तेहि बचनपै॥ रोला ॥ कृष्ण मान्यो बचननाहिं तब क्रोधगहि बलराम । तीर्थ यात्रा करन को भोजात बलबुधिधाम ॥ भोजआदिक सकल यादवगये कुरुपति ओर।सहित सात्यकि पाण्डवनादिशिकृष्ण पालकमोर ॥ चलतउत बलराम भृत्यन देइचारु निदेश । द्वारिकासों सौजसब मँगवाइ यात्रादेश ॥ बाजिकुंजर बसन सुबरणधेनु भूषणभूरि । ऋत्विजन अरु द्विजन दीनन दये आनँद पूरि ॥ ठौर ठौर कराय भोजन द्विजनके समुदाय । दयेदक्षिणा हेमभूषण बसन प्रीतिबढ़ाय ॥ तीर्थ सारस्वतीकरि यहिभांति सों बलराम । जातभे कुरुक्षेत्रमधि तेहि रजनिमें तेहियाम ॥ भूप जनमेजय सुमुनिके बचन ये सुनिभूप । कह्योसारस्वतीको अबकहो महिमारूप ॥ बचन यहसुनि कह्यो मुनिनृप सुनहुसो

इतिहास । गये हैं यदुभूप उत जहँ परमतीर्थ प्रभास ॥ छुटो जेहिथल चन्द्रमाको महायक्ष्मा रोग । परशि जेहिकै बिगति किल्विष करत रजनीभोग ॥ भूपयहसुनि फेरि बोलेकहो मुनि शिरताज । रोगभोकिमि शशिहिछूटो किये कौनसुकाज॥सुमुनि यहसुनि कह्यो भूपति सुनोसो मनलाय । सुता सत्ताइस प्रजापति दक्षके शुचिकाय ॥ हैं नक्षत्र सताइसौ ते दक्ष तिनहिं सचैन । दये सानँद रजनिपतिकहँ भाषिउचित सुबैन ॥ रजनिपति अतिचारु तिनमें रोहिणी को देखि । त्यागि औरन लगोतासों रमणमोद बिशेखि ॥ कछु दिनमें दुखितह्वै सब तरुणिते अनखाय । कह्यो यहवृत्तान्त बिधिवत दक्षके ढिगजाय ॥ दक्षसो सुनि चन्द्रमासों कह्यो निजढिग पाय । रमौसम सब तियन सों यह उचित धर्म सुन्याय॥दक्ष शशिसों भाषि इमि फिरि कह्यो दुहितनपास । जाहु शशिपै बचन ममगुणि करिहि पूरण आस ॥ गईते शशिगेह शशिनाहिं रमो तिनसों फेरि । विकलते फिरिआइ पितुसों कह्यो निजदुख टेरि । दक्षफिरि समुझाय शशिसोंकह्यो सहित बिधान । रमत नाहिं सम तियनसों सो लहतपाप महान॥ रमौ क्रमसों सबनसों इमिभाषि शशिहि बुझाय । कह्यो दुहितन जाहु पतिपहँरमिहि क्रमसों आय ॥ मोहबश नाहिं फेरितिनसों रमोनिशिपति मूढ़ । फेरितेसबजाय पितुसोंकह्यो निजदुखगूढ़ ॥ बचनतो नाहिंसुनत शशिनाहिंरमत हमसोंतात । जातनहिंअब सहो हमसों मदनको उतपात ॥ बचनयहसुनि दक्षकरिकै महा दारुणकोप । कह्यो यक्ष्माजाय शशिकोंकरो बिक्रमलोप ॥ त्वरित यक्ष्माजाय प्रविशो रजनिपतिके गात । चन्द्रछीजन लगो दिन दिन तासुलहि उतपात ॥ कियेऔषध यतनबहु नहिंलगो एकउपाय । भयो अति बलक्षीण शशिह्वै महादुर्बलकाय ॥ देखि शशिकीदशा सुरगण जाय बूझेहेत । कह्यो सोसब रजनिपति जिमि लह्यो शापअचेत ॥ सुमनगण तबदक्षके ढिगजाय करि

अवराध। कहे हेप्रभुक्षमो अबनिशिनाथको अपराध॥ चन्द्रमा के नशे बिनशिहि बीज औषध सर्ब। नशिहि ताते जगतसब सुर असुर ऋषि गन्धर्ब॥ सुरनकेसुनि बचनबोले दक्ष नीति बिचारि। रमै समसब तियनसों शशिगहैब्रत प्रणधारि॥ जाय तो सुरसतीके मधिपैठिकरि अस्नान। होयगोफिरि पूर्बवत् शशि बिगतरोग अमान॥ क्षीणह्वैहै मासआधे बढ़िहि आधेमास। कियेमज्जन सुरसतीमें ह्वायगो नहिंनास॥ भयो पश्चिम समुद में सुरसती संगमयत्र। चारुतीरथ प्रभासो शशिकरौ मज्जन तत्र॥ जायतहँ शशिकियो मज्जन लह्योपूरबरूप। तीर्थसारस्व-ती सोनृप परमफलद अनूप॥ दोहा॥ जायतहां बलराम करि मज्जनरहि निशिएक। भूरि दक्षिणा द्विजनकहँ दीन्हें सहित बि-बेक॥ फेरितहां ते रामचलि गयेकूपकोआप। जेहिमधि रहिद्विज सोमलहि दियोबन्धुकहँ शाप॥ यहसुनि जनमेजय कह्यो कहो विप्रहितचाहि। किमितहँ पायोसोमद्विज शापदयो कततांहि॥ सोरठा॥ सोसुनिकै मुनिराज कहतभये क्षितिपालसों। सुनोभूप शिरताज कथा पुरातन द्विजनकी॥ दोहा॥ रहेपूर्बयुगमें नृपति ब्राह्मणभ्राता तीन। तेजसदनसब सूरसम कर्त्तातप मखपीन॥ कछुदिनमें तिनकेहिये भईभावना भूप। करिसुयज्ञ लहिपूर्णहम पीवैसोम अनूप॥ यहबिचारते याचकन पूजिमोदसों छाय। गे प्रभास शुभतीर्थतट लीन्हें पशुसमुदाय॥ त्रितनामक कछुपशु लये होबाढ़ि आगेजात। और दोयपीछूरहे लीन्हेंपशुअवदात॥ वै द्वै पीछू गुणिकछू टेरेत्रितहि सडौर। सोसुनि त्रितफिरिचलत भो गुणिकछु कारजगौर॥ तहांआइ घेरयो त्रितहि वृक तब भाग्यो बिप्र। भीतातुरसों भागिचलो गिरो कूपमधि क्षिप्र॥ ताहिकूपमधि गिरोगुणि वृकनदेखितेदोय। भागिचले सबपशुन लै महाभीतसों भोय॥ परितेहि निरजल कूपमधि कीन्हों बिप्र बिचार। मरेइहां अब किमिमिलै पावनसोम उदार॥ इतनेमें

द्विजकूपमाधि लम्बित बीरुधदेखि । तपबलसों प्रगटित कियो बिमलबारि अवरेखि ॥ अग्निहोत्रकी अग्निकहँ करिप्रज्वलित महान । लगोकरनमख पढ़िऋचा ब्राह्मण तेजनिधान ॥ तासु बेदधुनि जीवसुनि कह्योसुमनसों तत्र । जाहुसुमनसब शीघ्रतहँ त्रितमखपूरत यत्र ॥ करिहिकोप वहबिप्रतो निजतपबलकेभेव । ताहीथल प्रगटित करिहि नूतन सिगरेदेव ॥ यहसुनि सुमनस आयतहँ केहेबिप्रसों बैन । हमसबआये भागहित देहुबिप्रगहि चैन ॥ सुरनदेखि द्विज मुदितह्वै दयोयथाबिधि भाग । बरमांगो द्विजसुरकह्यो पूर्णभयो तुवयाग ॥ सोसुनि मांग्यो विप्रबर जो परशै यहकूप । सोमपान कृतकीलहै गतिसो दिव्य स्वरूप ॥ एवमस्तुकहि सुमनसब जातभये निजधाम । कूपमध्य पूरितभई सरस्वती अभिराम ॥ सोरठा ॥ भरोतेज अतिमान द्विज कढ़िकै बाहेरभयो । निजगृहआइ सुजान शापदयो युगद्विजन कहँ ॥ दन्तिनकहँ भयपाय भगेमूढ़ तुमहमहिंतजि । तातेअबतोकाय प्रगटै गुरुलांगूल कपि ॥ कछुदिनमें क्षितिपाल कह्योबिप्र जो सोभयो । यहइतिहास रसाल सुनोब्यास तपधामसों ॥ दोहा ॥ जायतहां तेहिकूपको परशि बारिबलराम । सुबरणमणि बिप्रन दये भूषण बसन ललाम ॥ जयकरी ॥ फिरि तहँसोंचलिकै बल-राम । गयेसुभूमिक थलअभिराम ॥ शूद्रअभीरणको भयमानि । गुप्तभई जहँगिरासुजानि ॥ जहांरमैंअप्सर गन्धर्ब । किन्नरयक्ष सुमुनि सुरसर्ब ॥ तहांजायकरिकै अस्नान । बिप्रनदियो तृप्तकरि दान ॥ फिरि गन्धर्ब तीर्थमेंजाय । करिमज्जन दैधनअधिकाय ॥ फिरिगो गर्गतीर्थपै भूप । सरस्वतीको सुतट अनूप ॥ कीन्हों तहां तपस्यागर्ग । तबसों गर्गतीर्थ प्रदस्वर्ग ॥ तहांजाय करिकैअस्ना-न । बिप्रनदीन्हो दानमहान ॥ फिरिगो शंखतीर्थ मतिमान । जहँबर शंखसुमेरु समान ॥ सरस्वतीके तटपै जौन । श्वेत शैल सम सुखमा भौन ॥ जहँबिलसैं सुर अप्सर यक्ष । नहिं मनुष्य

को गमन अतक्ष ॥ तहँदैधेनु बसनं मणि भूरि। गयो द्वैत बन आनँदपूरि ॥ पूजि मुनिनतहँ अतिसुख पाय। बिप्रनकहँ भोजन करवाय ॥ देसुबरण मणि हलधरबीर । जायसुरसती दक्षिण तीर ॥ गयो नागधन्वा थलदक्ष। दानशील हलधर सहपक्ष ॥ जेहिथल बासुकि पन्नगराज । कहँ अभिषेक्यो सुमन समाज ॥ चौदह सहस बसत वहि यत्र । नहीं व्यालको भय कछु तत्र ॥ तहँदै द्विजन दान अधिकार। चलेपूर्वदिशि रामउदार ॥ अगणित तीर्थकरत तेहि ओर । देत द्विजनकहँ दान अथोर ॥ दर्शन करत मुनिनको पर्म । गयो तहांलों सुमति सधर्म ॥ जहां जाय सुरसती असेग। पश्चिम मुख फिरिभई सबेग ॥ सो लखि बिस्मितह्वै बलराम। आयोनैमिषार तपधाम ॥ यहसुनि जनमेजय क्षितिपाल । कीन्ह्योंप्रश्न सुनो नरपाल ॥ सबिधि बुझाय कह्योसो बिप्र। कत फिरि चलिसुरसती सुक्षिप्र ॥ कतबिस्मित भो यदुकुलचन्द। सोसुनि कह्यो मुनीयअमन्द ॥ महाराज कृतयुगमें पूर्ब। नैमिषारके मुनितपगूर्ब ॥ होतदोयदश बार्षिकयज्ञ। तेहिमधिजाय सुतप सर्वज्ञ ॥ भयेयज्ञ पूरणफिरि आय। सुरसतिके दक्षिण दिशिजाय ॥ अग्निहोत्र ब्रत धरि रमणीय। सोमितकिये कूलकमनीय ॥ तेहि सिमन्त पञ्चकमधि चाहि। कीन्हेतपमख बरब्रतगाहि ॥ तिनकेहित पश्चिमदिशि आय। गई पूर्बाफिरि गिरासचाय ॥ तहँकरि बिप्रनको सत्कार। बिधिवत् तृप्तकियो बहुबार ॥ दोहा ॥ फेरितहांते रामचलि निरखतमुनिन अमन्द। सप्तसारस्वत तीर्थमधि जातभयो कुलचन्द ॥ जहां मंजुमंकनक मुनि करत तपस्यातात। यह सुनिजनमेजय नृपति कियेप्रश्न अवदात ॥ तीर्थसप्त सारस्वतीभो केहिहेतललाम। तपनिधिको मंकनकमुनि कहो सुमुनि तपधाम ॥ सोरठा ॥ बैशम्पानिमुनीश यहसुनिकै नृपसोंकह्यो। जनमेजय अवनीश सुनो प्रश्न जोतुमकिये ॥ रोला ॥ सुप्रभाअरु कांचनाक्षी अरुबिशाला

मंजु । अरु सुरेण मनोरमा बिमलोदका कृतरंजु ॥ ओघवति यें नाम तिनके सुनो भूभरतार । सुनो अबसो कहतहौं जिमिभई प्रगट उदार ॥ किये पुष्करक्षेत्र पै बिधियज्ञ अति अभिराम । किये बिधितहँ सुरसतीको स्मर्ण आनँद धाम ॥ भई तेहि थर प्रगट भूपति सुरसतीकीधार । नामताको सुप्रभा भो चारिफल दातार ॥ सुनो नैमिष बिपिनमें बसि ऋषिनको समुदाय । सुरसतीको कियो सुमिरण ध्यानधरि चितलाय ॥ तेजतपनिधि मुनिनके उपकारहेत अनूप । कांचनाक्षी सुरसतीतहँ भईप्रगटित भूप ॥ ऋषिनसहगये भूपकीन्हों परमपावनशत्र । नृपबिशाला नाम सुरसति भई प्रगटित तत्र ॥ कियो उद्दालक परमतपसुरसतीको चाहि । भईप्रगटित तहांकहत मनोरमा सबताहि ॥ भूप कुरु कुरुक्षेत्रमें नृपकियो अनुपम यज्ञ । भई प्रगटित सुरसती तहँ ओघवति सर्बज्ञ ॥ दक्ष कीन्हें यज्ञगंगाद्वार पै साबिधान । सुरसती तहँ भई प्रगट सुरेणुनाम महान ॥ किये हिमवत निकट ब्रह्मा परमउत्तमयाग । तहां बिमलोदा सुरसती कढ़ीपूरण भाग ॥ भई एकीभूत तेहिथल देवि सातौ रूप । सप्तसारस्वत भयोसोतीर्थ परमअनूप ॥ सुनोअब क्षितिपाल मुनिमंकनकको इतिहास । आपगामधि रहोमज्जन करतसो तपरास ॥ एकतरुणि दिगम्बरा तहँकरतही अस्नान । देखिताको गिरोमुनिको रेतपरम अमान ॥ तुरितमुनि मंकनकलीन्हों कलशमें सोरेत । सप्तधाकै कलशमें सोपरोभूप सहेत ॥ तुरित प्रगटित भयेतासों सातमरुत महान । बायुवेग सुबायुबल अरुबायुहो बलवान ॥ बायुमण्डल बायुज्वाला बायुरेत प्रवीन । बायुचक्र कुमारसतयों भयो अतिशयपीन ॥ भूपऔरोसुनो मुनिकीकथा अतिरमणीय । कियोचारु कुशाग्रसों क्षतपाणिमें कमनीय ॥ गिरनक्षतसों लगो अनुपम साकरस तेहिकाल । देखिसो द्विजलगो निर्त्तन गहेमोद बिशाल ॥ ताहिनिर्त्तन तासुतपबल पायनृप तेहिठौराथावरो अरु

जंगमो सबन्हे निर्तनदौर ॥ तिन्हैं निर्तत देखि सुरऋषि महा अनरथजानि । जायशिव सों कहे ताकहँ समितकीबो मानि ॥ आयतहँ शिवकह्यो द्विजतुम नचतहौ केहिकाज । शम्भुसोंतब कह्यो द्विजनिज साकरसको राज ॥ कह्यो शिवतब विप्रसों यह कौनअचरजसाज । भाषि इविधिअगुष्ठ निजमें कियोक्षतगिरि-राज ॥ गिरन तासों लगोहिमसो देखिद्विज गहिलाज । कियो अस्तुति शम्भुकी ह्वै नाचिबेसो बाज ॥ तेजनिधि भंकनक इमितेहि तृप्तकरिबलराम । द्विजनदै बहुदक्षिणा फिरिचलोवर-चसधाम ॥ फेरिउशनस तीर्थगे बलगहे मोदमहान । नामजासु कपाल मोचनअर्थ नामप्रधान ॥ पूर्व जेहिथल कियेहोतपशुक्र महिमा भौन । किये मज्जन दानदीन्हे रामकरि तहँगौन ॥ भू-मिपति इतिहास यह सुनि प्रश्नकीन्हों फेरि । नाम तासुकपाल-मोचन भयो किमि कहुनेरि ॥ प्रश्न यहसुनि भूमिपतिसों कह्यो मुनि अनुमानि । भूप हमसों कहतहौ तुमसुनो आनँद आनि ॥ जाय दण्डक विपिन में जब कोशलापति राम । दूषणादिक असुर गणको कियोबध जयकाम ॥ शीश काहू असुरको तब एक उड़िकै जाय । हो महोदर विप्रताको ग्रस्यो जंघा काय ॥ भयो आरत विप्रवह तब छूटिबे के हेत । लगो तीरथ करन फिरि फिरि गहे बुधिबल चेत ॥ दोहा ॥ उशन तीर्थमें जायसो सरस्वतीके बीच । करनलगो अस्नान तहँ छूटिपरो शिर नीच ॥ गतपीड़ाके विप्रवह मोदि द्विजन पहँ जाय । उशनतीर्थकी निज दशा विधिवत दयो सुनाय ॥ तेहि कपालमोचन कह्यो सोसुनि मुनि समुदाय । सो कपालमोचन भयो ताते सुनोसचाय ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेगदापर्वणिबलरामतीर्थयात्रावर्णनोनामप्रथमोऽध्याय

दोहा ॥ नृपकपालमोचन विमल तीरथमधि बलराम । मुनिन संग निवसतभये एक रजनि अभिराम ॥ सोरठा ॥ तहँ बहुधनदै रामद्विजनपूजि अतिमोदसों । अंगारक तपधाम मुनिकेआश्रम

आतभे ॥ नृपसुतबिश्वामित्र जहँ तपकरि ब्राह्मण्यलहि। कीन्हे कला बिचित्र सप्तऋषिनके सरिसकै ॥ जयकरी॥ तहँदै द्विजन दान अधिकाय। गेबकआश्रममें छबिछाय ॥ जहँदालभ्यकियो तपपर्म। तहँपूज्यो बिप्रनगुणि धर्म ॥ मुनि दालभ्य परमतप-रास। सुनोएक ताकोइतिहास ॥ मखहित मांगन पशुबहुरास। गेधृतराष्ट्र भूपकेपास ॥ मुनि दालभ्यकह्यो नृपअक्ष। मखहित बहुपशुदेहु प्रतक्ष ॥ सुनिनृपबोलो त्यागिउछाहु। मिलैं मृतक पशुसोलैजाहु ॥ सोसुनि मुनिगुणि अति अपमान। गेआश्रम गहिक्रोध महान ॥ नृपको नगर बिनाशन चाहि। पशुहोमन लागे पणपाहि ॥ छीजनलगो भूपकोग्राम। तबचिन्तितकै नृप अभिराम ॥ बिप्रन बूझोताको हेत। कह्यो हेततें बिप्रसचेत ॥ तबधृतराष्ट्र भूरिभयमानि। गेदालभ्यपास अनुमानि ॥ पग गहि कीन्हों बिनयमहान। कृपाकियो तबबिप्र सुजान ॥ नृपके नगरवृद्धके काज। कियोहवन तब द्विजशिरताज ॥ बहुपशु दै आयो नृपगूर्ब। बरधितभयो नगर जिमिपूर्ब ॥ तेहिमुनिके आ-श्रम बलिराम। सरस्वतीकेतट अभिराम ॥ बिप्रनबहु धनदेस-बंज्ञ। गेजहँ सुर गुरुकीन्होंयज्ञ ॥ असुरनाश सुरगणकीवृद्धि। चाहिमांसहोमे साचि सिद्धि ॥ गज हय बसन अन्नदै तत्र। गे ययाति कीन्हों मख यत्र ॥ तहँदै बिप्रन सुबरण भूरि। गे बशिष्ठ आश्रम मुद पूरि ॥ बिश्वामित्र सुरसलिहि शाप। दयो जहां भो शोणित आप ॥ सुनि जनमेजय कह्यो बिचारि। यह इतिहास कहो बिस्तारि ॥ वैशम्पायन सुनि यह बैन। कहत भये नृपसुनो सचैन ॥ सरस्वती सरिताके तीर। स्थानु किये हे तप गम्भीर ॥ स्थानु तीर्थभो ताको नाम। तबसों सुनो भूप मतिधाम ॥ तेहि थरमें जुरि सुमन अनेक। अस्कन्दहि कीन्हें अभिषेक ॥ तहां तपत हे सुमुनि बशिष्ठ। तत्व बिचारन मध्य प्रबिष्ठ ॥ कछु दूरपै बिश्वामित्र। रहे करत तप परम बिचित्र ॥ ते युगऋषिहियभरे

बिरोध। ईर्षाधरे करततप शोध॥ लखि वशिष्ठ को तेज अमान। कौशिक अमरष गहे महान। करि आवाहन ओज बढ़ाय। सरस्वती कहँ निकट बोलाय॥ कह्यो गिरा मम शासन मानि। निज प्रबाह मधिकरि अनुमानि॥ल्याउ वशिष्ठहि ममढिग ताहि।बधो चहतहम निज जय चाहि॥ दोहा॥ दिव्य सरूपा सरितसो सुनि यह मुनिकी बात। कहि न सकी कछु थिररही ह्वै अति कंपित गात॥ सोलखिकरि रातेनयन कौशिक कह्यो सटेक। शीघ्र बशिष्ठहिल्याउअब करु बिलम्ब मतिनेक॥ यहसुनि सोयुग मुनिनको गुणि तपतेज प्रभाउ।गई बशिष्ठ मुनीशपहँ बिकल दूरिकरि चाउ॥ कह्योजौन कौशिक कही मुनिबशिष्ठ सों तौन। सुनि वशिष्ठ तासोंकह्यो करौ तौनभय कौन॥ सोरठा॥ जो न तासु यह बैन करिहौ देहैं शापतौ। यह सुनि सुरति सचैन निज प्रबाह मधि धँसिगई॥ रोला॥ समयलहि करिकूलकर्षण सरित मुनि पणमानि। धारमधि करि मुनिबशिष्ठहि चलीलै अनुमानि॥ धारमधि धरिचले मुनिवर करत अस्तुति तासु। गई सरिता मुनिहि कौशिक के निकटलै आसु॥ लखि बशिष्ठहि निकट कौशिक चले बधन उताल। ब्रह्महत्या बूझि सरिता भरीभीत बिशाल॥ तब बशिष्ठहि पूर्बदिशिकहँ दई शीघ्र बहाइ। देखि कौशिक दियो ताकहं शाप अति अनखाइ॥ ठगो मोकहं होय ताते रुधिर तेरो बारि। भयो शोणित धारताको शाप मुनिको धारि॥ तहां आइ पिशाच राक्षस गहे मोद महान। नचत किलकत बसत तेहिथल करत शोणित पान॥ कछू दिन में तहां आये तीर्थ यात्रा हेत। बिप्र अगणित बेदमारग परमतेज निकेत॥ तहां बिहरत राक्षसनलखि देखि सरितारूप। बोलि सरितहि भयेबूझत तासुकारण भूप। कही सरिता तौनसो सुनि दुखित ह्वै सब बिप्र। लगेकरन उपायजाते शाप छूटै क्षिप्र॥ लगे तप मख करन शिवहि अराधि रहि ब्रतयुक्त। कछूदिनमें

भई सरिता शाप अघसों मुक्त ॥ होय दुखित पिशाच तेसब बन्दि द्विजन सडौर । कहे अब हम कहां भोजन करब भ्रमि सबठौर ॥ पिता, गुरु गुरुबन्धु आदिक गुरुनको अपमान। किये होत पिशाच सो सब करब अबका पान ॥ कहे द्विजन उछिष्ट भोजन लहैं भूप पिशाच । पान कचजल रुदन जल अरु शौम्बको जो बाच। भाषि यहिबिधि कह्यो बिप्रन सरितसों यहिभांति । इन्हें तारो सरितबर तुम परम पूरणकांति ॥ जानि मुनिमत कियो सरिता अरुण अपनोबारि । न्हाइ तामधि गये राक्षस स्वर्ग शुचि बपुधारि। परम अनुपम तीर्थगुणिसोन्हाइ तहँ सुरराज । ब्रह्मबध अतिपापसों छुटि लसत सहितसमाज॥ भूप कीन्हों प्रश्न इमिफिरि सुनो तेजसभौन । ब्रह्महत्या लह्यो कैसे शक्र कहियेतौन ॥ कह्यो मुनिवर शक्रके भयभागिनमुचि बिचारि । दुरोरश्मिन मध्य रबिके तहांशक्र निहारि ॥ करतभो तब नमुचिसों हठि मित्रता सम्बन्ध । नमुचि तब सुरराजसों इमि भयो करत निबन्ध ॥ दिवसमें मतिरातिमें मति अस्त्रगण के धार । बधौ मातितुम मोहिसो सुनिशक्रकरि स्वीकार ॥ समय हेरतरहो कबहूं परत कुहिराचाहि । आपनिधिको फेण गहिकै बधो बलसों ताहि ॥ शीश काटिकै नमुचिको लागि चलो पाछू तासु । भगे सुरपति लोकसब नहिंलह्यो कलहुँ सुपासु ॥ गये बिधिके पासतब बिधिदयो तेहि उपदेश । जायसादर सुरसती में गिरोत्यागि अँदेश ॥ शक्रसो सुनिआय सादरपरे अरुणा-धार। ब्रह्मकुल भवमित्र बधको छुटोपातक चार ॥ नमुचि को शिरतहां परिकैलह्यो उत्तमलोक। परमपावन करनसोवह तीर्थ महिमा ओक ॥ जाय तहँ बलराम करि अस्नान दै बहु दान। सोम के बरतीर्थ माधिओ जातधीर अमान॥ राजसूय महान मखजहँ कियो सोमउदार । अत्रिमुनि जहंभयेहोता बेदपार्ग अपार ॥ राजसूय सुयज्ञके जेहिभयेके परभाव । युद्ध तारकमयो

पीछू भयो अनघ अठाव ॥ सेनपतिको आसुमधि अस्कन्दकहँ अभिषेक । सहित सुर ऋषि किये सुरपति बेदबिधि सबिबेक । कथायहसुनि कह्यो जनमेजय महीभरतार । अस्कन्दको अभि-षेकभो किमिकहो सुमुनि उदार ॥ प्रश्न यहसुनि कह्यो मुनिबर सुनो भूपति तौन ॥ यथालहि अभिषेक शिवसुत कियो बिक्रम जौन ॥ प्रथम अब अस्कन्द प्रभुकोजन्म सुनिये भूप । फेरिक्रम सोंसुनो ताकोचरित चारुअनूप ॥ दोहा ॥ तेजशम्भुप्रभुको परो अग्निमध्य सुनुभूप। पावकसो नहिंसहिसको बरचसपरमअनूप॥ तज्यो सुरसरित मध्यसो गर्बपरम अभिराम । सहिनसकी सो सुरसरित गर्बतेज तपधाम ॥ गंगागिरि हिमवानपर तज्योगर्ब अतिचण्ड । तहँबर्द्धितभो गर्बसो तेजपुंज उद्दण्ड ॥ शरस्तम्भ पर ज्वलितलखि मारतण्डसम गर्ब । धीरधारि धारतभई धा-मिनि कृतिकासर्ब ॥ पुत्रार्थिन षटकीर्तिकनको गुणिप्रभवमहान । षटमुखह्वै स्कन्दप्रभु कीन्हों अस्तन पान ॥ कार्तिकेयह्वै शैलपहँ बर्द्धितह्वै भगवान । मुनिगन्धर्बनसों सुनत प्रियअस्तुति अति-मान ॥ जातकर्म सुरगुरुकियो तासुआइ तेहिठौर । धनुर्बेदअरु वेद सब प्राप्त भये गहि गौर ॥ उमा उमापति गणन सह तहँ आये तपधाम । सुमन रुद्र आदित्य अहि खग दानव अभि-राम ॥ ब्रह्मा आये सुतनसह विष्णु शक्र सब ओर । चढ़ि बि-मान आये तहां गहे मोहको डोर ॥ तेजपुंज वह बाल प्रभु चलो शम्भुके पास । तदनु चले सब देवता निरखत प्रभा प्रकास ॥ तेहिक्षण गंगा अरु उमा पावकके भो मान । यह काको सुत प्रथम अब कापहँ जात सुजान ॥ तिनके मनकी समुझि सो बाल चारि बपुधारि । गयो चारि पहँ चावसों चारु सुचार बि-चारि ॥ स्कन्द रूपगे शम्भु पहँ बिशख उमाकेगोद । शाखअ-ग्निपहँ सुर सरित नैग्नेय प्रदमोद ॥ सो लखिके ब्रह्मादि सब अतिबिस्मित भे भूप । तब बिरंचिसों शिव कहे बिश्चित बचन

अनूप। सबिधि देहु यहि बालकहँ आधिपत्य अनुमानि । सुनि बिचारकरि बिधि कियो सेनापति सुखदानि ॥ करि सम्मत अभिषेकको बिधि हरि हर सुरसर्ब । किन्नर अप्सर यक्ष ऋषि सब दिग्पति गन्धर्ब ॥ हैमवती पावनि परम सरस्वतीकेतीर । सरंजाम अभिषेकको सह सुर गुरु ऋषिभीर ॥ तहँ सुर गुरु प्रभु हवनकरि किये सबिधि अभिषेक । सुमणिमाल हिमवान तहँ स्कन्दहि दीन्हे एक ॥ विष्णु इन्द्र आदित्य रबि रुद्र पितर बसुसर्प । सिद्ध साध्यलोकप सकल कीन्हें आशिष अर्प ॥ मित्र पितामह प्रजापति पुलह आदि ऋषि सर्ब। नारदादि मुनिदिशप सब मंगल बदे अखर्ब ॥ सर्बलोक अरु सिन्धु सब सब गिरिसरिता सर्ब। सर्बनाग सम्बत सकलभे मोदित सबपर्ब ॥ सबदेवी अरु वेदसब सब ब्रह्माण्डज रूप । मुदितभये स्कन्दको लखि अभिषेक अनूप ॥ अभिषेकित स्कन्दकहँ चतुरानन त्रिपुरारि। चारि चारि अनुचर दये प्रबल प्रचण्ड बिचारि ॥ शक्रसूर्य यम बरुण हरि अनुचर दीन्हे भूरि। बिन्ध्य मेरु हिमवान ये दीन्हें आनँद पूरि ॥ विशुकर्मा अरुदस्र अरु धाता पूषामित्र । मरुत सिन्धु गिरियादये पार्षद करत अचित्र ॥ यहिबिधिसब कोऊ दये अगणित पार्षदताहि । दिव्यअस्त्रयुत दिव्यबपु दिव्य पराक्रमच्चाहि ॥ और असंख्यन सुभटगण कार्तिकेयके भूप । कुमुद पद्म आदिकगहे बिबिधभांतिके रूप ॥ एकमुण्ड बहुमुण्डयुग करपगबहु पगपानि । त्रिविधभांतिके पदनके कहँ कहां लौं आनि ॥ बिबिधभांति के अस्त्रधर प्रबलप्रचण्ड अखेद। बिबिधभांति के बेषधर शोभित भेदाभेद ॥ तथा असंख्यन मातृगण तासु सैनिकाभूप । बिबिध भांति आयुधगहे बिबिध भांतिको रूप ॥ सोरठा ॥ शक्ति अमोघ अमन्द अरुण पताका अमल अरु । शम्भुसुवन स्कन्दकहँदीन्हें सुरराजतहँ ॥ दीन्हें आपु इशान भूरिभूतगणकीचमू । दीन्हें बिष्णुमहान बैजयन्ति

को माल बर ॥ दीन्हें गरुड़ मयूर बसन बिरजसी गिरि सुता। अमृत धारसोंपूर दयो कमण्डलु सुरसरित ॥ ताम्रचूड़ अभिराम बारुणास्त्र दीन्हेंबरुण। कृष्ण अजिन गुणग्राम कार्तिकेय कहँ बिधिदयो ॥ चौपाई ॥ यहिबिधि सेनापति पदलहिकै। अभयहोहु सुरगणसों कहिकै॥ साजिसेन अति बलसों चढ़िकै। भिरो असुर सेनासों बढ़िकै ॥ कार्तिकेय अतिगर्बित मनमें। कोटिन असुर बध्योतेहि रनमें ॥ राक्षस लाखसहित भटभारी। तारताहिभो बधत प्रचारी ॥ आठपद्म सेनाको नायक। माहिष ताहि बध्यो दृढ़ घायक ॥ भटशत अयुतसेन सहचारी। होत्रि पाद तेहि बध्यो प्रचारी ॥ असुर खर्बपतिबीर सहोदर। सदल बध्यो तेहि सुमिरि दमोदर ॥ कार्तिकेय अतुलित बलभार्‍यो। इबिधि असंख्यन असुरसंहार्‍यो। बलिको सुवन बाणरणतजिकै। दुरोक्रौंच गिरिवर मधिभजिकै ॥ स्कन्दशक्तिगिरिशिर तब मार्‍यो। उन्नत शृंगभस्मकरि डार्‍यो ॥ तहँ हतशेष असुरभय भरिकै। भगेसमर तजि हाहा करिकै। कार्तिकेय अति महिमा छायो। घने बिजय दुन्दुभि बजवायो॥ मोदि सुमनगण पूजन कीन्हें। करि सुप्रशंसा आशिष दीन्हें ॥ नृपयहिबिधि अभिषेक सुहावन। कार्तिकेयकोभो मनभावन ॥ लहिअभिषेक कियोजो कारय। सो हम तुम्हें सुनायो आरय ॥ यहइतिहास चारिफल दायक। बर्द्धित करनतेज चित चायक ॥ दोहा ॥ तैजस नाम सुतीर्थसो सुनोभूप तपधाम। भयोजहां स्कन्दप्रभु को अभिषेक ललाम ॥ पूर्बसुमनसबऋषिनसह तेहिथल सहितबिबेक। सर्बसमुदपाति बरुणकहँ कीन्हें करिअभिषेक ॥ सुनो भूपतहँ एक निशि रहिदैबिप्रनदान। अग्नितीर्थं बलरामगे आनँदभरेमहान ॥ सुनोभूप जहँ पूर्बभे गुप्त अग्नि भगवान। कीन्हों प्रगट बिरंचिफिरि करिकै यत्न महान ॥ यहसुनि जनमेजयकह्यो कहो बिप्रमतिभौन। भयेअग्निकिमि गुप्ततहँ प्रगटभये किमितौन॥

पूर्वअग्निभृगुशाप भयदुरे शमीमधिजाय। प्रगटकियेबिधिजाय तहँ भृगुकोशाप दुराय॥ जयकरी ॥ तहांजाय करिकैस्नान। दैबि प्रन कहँ बिधिवतदान॥ गो कौबेर तीर्थ बलराम। पूरत बिप्रन को मनकाम ॥ जहँ कुबेरकरि तप सबिबेक। भये धनद लहिकै अभिषेक॥ करिसो तीर्थराम मतिमान। गये बदरपाचन अ- स्थान॥ भरद्वाजकी सुतासकाम। श्रुतावतीनामा अभिराम॥ इन्द्रहोहिं ममपति यहिहेत। जहां उग्रतप कियोसचेत॥ लखि अतिभक्ति इन्द्रतेहि ठौर। बनि बशिष्ठआये गहिगौर॥ लखि महर्षिकहँ बिप्र कुमारि। बोलत भईजोरि युगबारि॥ शासन करौदेहिं हमतोन। हम चाहतहैं शक्रहिरौन। यह सुनिकै सुर पति द्विजरूप। कहत भये यह बचन अनूप॥ तप करि देह त्यागकरि सर्ब। पावतहै सुरलोक अखर्ब॥ तुमकहँ पांच बदर हमदेत। तिन्हैंकरौ परिपाकसनेत॥ इमिकहि इन्द्रबदरदैताहि। इन्द्रतीर्थ मधिबैठेचाहि॥ अग्नि बारिसों तरुणि सुजानि। प- चवनलगी बदरहित जानि॥ ईंधन सञ्चितहो सबजौन। सो सब जरौन पाकोतौन॥ तब तिय महा शोचसों छाय। देत भई निजचरण लगाय॥ चरणपरे तबहूंगहिटेक। नहिंसो तियरुख मोर्यो नेक॥ तबकरिकृपा धारिनिजरूप। आयेतहां शक्रसुनु भूप॥ कहेकियोतुम तपजेहिकाज। पूरणभयो तौनतौराज॥ ममपुरचलो त्यागिसन्देह। ममसँगभोगो पूरितनेह॥ इमिकहि शक्रपूर्व इतिहास। तासोंकहे सुनोमतिरास॥ इत अरुन्धती कहँ तजिपूर्ब। गेहिमवन्त सप्तऋषिगूर्ब॥ द्वादशवार्षिकको तेहि काल। अनावृष्टिभो महाकराल॥ अरुन्धती इतबरब्रतधारि। रहीकरततप सुखद बिचारि॥ तहँशिवगहि द्विजरूप प्रशस्त। आये दायक सुफल समस्त॥ मुनिपत्नीसों भाषेएहु। हे ब्रत धारिणि भोजनदेहु॥ अरुन्धतीबोली सुनिबैन। बिप्रअन्नआ- श्रम मधिहै न॥ करौबदर भोजन सुनिएहु। बोलेशम्भु चुरै

यहदेहु ॥ सोलागी चुरवन करिढंग । कहनलगे शिवकथाप्र-
संग ॥ ताहिचुरत बीतोदिन भूरि । बरषेजलद गयोमुदपूरि ॥
इतनेमें ऋषितेज अतूल । आयेतहां गहे फलमूल ॥ तिनसों
कहे शंभुलखि धर्म । तुमसबसोंयाको तपपर्म ॥ दोहा ॥इमि कहि
कै करिअतिकृपा निजबपुगइ ईशान । अरुन्धतीसों कहतभे
सुतामांगु बरदान ॥ यहसुनिकह्यो अरुन्धतीदेहु परमबरसर्ब ।
याहि बदरपाचन कहैं तीर्थसुमन ऋषिसर्ब ॥ यहि थलमें बसि
तीनिदिन करैसुब्रत तपजौन । द्वादशवार्षिक तपकिये कोफल
पावैतौन ॥ सोरठा ॥ एवमस्तुकहिचाहि शंभुगये निजलोकप्रति ।
भयेप्रशंसततताहि सप्तऋषीश्वर मुदित ह्वै ॥ तुमअति दुस्तर
कर्म कीन्हें इततातेसुनो । रहिनिशिएक सधर्म अबसोफललहि
हैं सुजन ॥ यहसुनिसोतजि देह चाढ़िबिमान गहि दिब्यतन ।
गईशक्रके गेह सुमनवृष्टि कीन्हें सुमन ॥ रोला ॥ भूपयह इति-
हास सुनिकै कियेप्रश्न प्रपन्न । सुताभारद्वाजकी सोभई किमि
उत्पन्न ॥ प्रश्नयह सुनिकह्योमुनिसो सुनहुनृप मतिमान । लखि
घृताचिहि अत्रिसुतको गिरोरेत महान ॥ पत्रपुटमें लियो मुनि
सो सुता प्रगटीचित्र । श्रुतावतिमुनि तासुराख्यो नाम परम
पवित्र ॥ बदरपाचन तीर्थमाधि तपिगईसो सुरधाम । तहां सो
चलि इन्द्रतीरथगये श्रीबलराम ॥ जहां अगणित यज्ञ करिकै
इन्द्र शतक्रतु ख्यात । तहांसो बलरामगे जहँरामतीर्थ बिभात ॥
जीतिमहि बहुबार जेहिथलजाय श्रीभृगुराम । अश्वमेध सुयज्ञ
अगणितकियो पूरणकाम । तहांसों बलराम यमुनातीर्थ आये
भूप । बरुण प्रभुजेहिठौर कीन्हें राजसूय अनूप ॥ भयोदेवासुर
महारण जासुमखके भेव । लहे अतिशयखेद दानव असुरसि-
गरे देव ॥ पूजि बिप्रन तहांश्रीबलराम पूरणमोद । जातभे आ-
दित्य तीरथ करत परम बिनोद ॥ जहांमखकरि अग्नि प्रभुभे
ज्योतिपति रुचिधाम । पूर्बमधुकैटभहि जेहिथल बध्यो बिष्णु

तेहि ठौर । सुमनऋषि गन्धर्ब अस्तुति किये गहिगहि गौर ॥ तौनपावक तीर्थ मधिरहि एकनिशिबलराम । द्विजनदै बहुदान गेजहँ सोमतीर्थ ललाम ॥ तहांसों फिरिगयो जेहिथल कियो सुतपदधीच । जासुसारस्वत सुवनजोभयो सुरसतिबीच ॥ बचन यहसुनि प्रश्नकीन्हों भूप आनँद भौन । भयो जेहिबिधि जन्म ताको सुमुनि कहियेतौन ॥ दोहा ॥ बैशम्पायन प्रश्नसुनि बोले बचन रसाल । लखि दधीचिको तपमहा भीतिभरे सुरपाल ॥ जोअलंबुषा अप्सरा तासोंकहे सटेक । मुनिदधीचिको तपकरो भंगकला करिनेक ॥ रहेदेव तर्पणकरत सुरसति मध्यदधीच । मुनिमनमोहनि अप्सरा आई तहां न भीच ॥ देखि अप्सरहि गिरतभो मुनि दधीचिकोरेत । सोगहिलीन्हीं सुरसती मुनिहित करणि सचेत ॥ सोरठा ॥ गर्भउदरमें धारि भयोप्रसव तब पुत्र लै । मुनिपहँजाय बिचारि कहतभई अतिमोदसों ॥ यहतोपुत्र शुक्रांत लेहुगोदमें प्रेमगहि । इमिकहिसो वृत्तान्त कह्यो लह्यो मुनिरेत जिमि ॥ चौपाई ॥ सो सुनिमुनि अति आनँद लहिकै । पुत्रहिलियो गोदमें गहिकै ॥ मूर्द्ध संघिअति आनँदलीन्हों । सुर सतिकहँ बहुआशिष दीन्हों ॥ फिरि यहिबिधि सुरसतिसों भाष्यो । तुममम संभव सुत अभिलाष्यो ॥ ताते सुत सारस्वत नामी । होयतुम्हार नाम अनुगामी ॥ सुरसति ऐसीबाणी सुनि कै । गईसुतहिलै निजसुत गुणिकै ॥ कछुदिनमें सुरअसुर उमँगिकै । लरनलगे अति बलसों पगिकै ॥ तहँ सुरपति नहिंजय बिधिदेख्यो । बिधिहिमंत्रि तब इमि अवरेख्यो ॥ अस्थि दधीचि सुमुनिकोपावै । ताहिल्यायबर अस्त्रबनावै ॥ तौताकहँ गहि बिक्रम अतिकै । बिजयलहैसब असुरनहतिकै ॥ यहगुणिशक्र आय मुदपागे । हाड़ दधीचि सुमुनिसों मांगे ॥ सुनि दधीचि अति उत्तमजानें । परउपकार हेतअनुमाने ॥ सयतनहाड़ शक्र कहँदैकै । अक्षय लोकगयो यशलैकै ॥ लैसो अस्थि शक्र मन

भाये। बज्रशक्र गुरुगदा बनाये॥ तिन्हैंप्रहारि असुरदलजीते। तीनलोक पति भयेअभीते॥ कछु दिनगये सुनो अरिधर्षण। बारहवार्षिकभयो अवर्षण॥ तबसुरसति तटकेद्विजरूरे। बिना अहार शोचसों पूरे॥ दोहा॥ पढ़े रहे हे बेदजो सो सबगयो भुलाय। समयपायते फिरिपढ़े सारस्वत तहँ जाय॥ द्विजबर साठि हजार कहँ बेदपढ़ायो तौन। सुवन सरस्वति को भयो यहिबिधि महिमा भौन॥ तहँ करिके अस्नान दे हेमरजत मणिभूरि। गये कुमारी जहँकरी तप अतिआनँद पूरि॥ सोरठा॥ यहसुनि भू भर्त्तार किये सुमुनि सों प्रश्न फिरि। कहौ तौनजेहिचार कियो कुमारी परमतप॥ जयकरी॥ सुनियह प्रश्न सुमुनि मुदधारि। जनमेजय सों कहेबिचारि॥ होमुनिगर्ग सुमुनि तपभौन। सुतामानसिक जायोतौन॥ कछु दिनमें मुनिकरितन त्याग। गयोस्वर्ग अति पूरण भाग॥ बिप्रसुता सो पूरणरूप। अति तपतहां कियो सुनुभूप॥ नहिं इच्छा सुखदायक नाह। ऊरध लोकचाहि मनमाह॥ तपकरिदीन्ही जन्म बिताय। भई वृद्धजीरण सबकाय॥ तन तजिबेको कीन्होंडोर। आय कह्यो नारद मुनिमोर॥ संस्कारबिनु हेतपओक। कन्यहि मिलतन ऊरधलोक॥ यह सुनिसो अति गही गलानि। कौनगहै अब मेरोपानि॥ सो सुनिप्राकशृंग तपधाम। तासों बोलो बचनललाम॥ एक निबन्ध करौ जो मानि। तौहमगहैं तिहारोपानि॥ रमव एकनिशि भरिभरिप्रेम। फेरिनकबहुं रमौयहनेम॥ यह निबन्ध करि मुनि सुखदानि। गह्यो बेद बिधि ताको पानि॥ निशिलहिसो वृद्धाअवदात। भईयुवाकै महाबिभात॥ भूषण बसन धारिछबिछाय। रमीबिप्रसँग लाजबिहाय॥ गुणिनिबन्ध रतिसुख द्विजनाह। अतिपछितात भयोमनमाह॥ निशिबिताय करिकै अस्नान। मुनिसोंकहि निबन्धकोठान॥ कैकैबिदा त्यागि तनतौन। ऊरधलोक गईकरिगौन॥ तुमकीन्हेंजो प्रश्नप्रकास।

है ताको ऐसो इतिहास ॥ नृपताही थलमें बलराम। सुन्यो शल्यकोबध अति आम ॥ तजिसुमन्त पंचकको द्वार। कह्यो मुनिनसों रामउदार ॥ कुरुक्षेत्रको फलहैजौन। सानँद सुमुनि कहो सबतौन ॥ यहसुनिके बोलो द्विजराज। सुनोरामसों स-हित समाज ॥ हैसमन्त पंचक यह पूर्ब। विधिकी उत्तर बेदी गूर्ब ॥ कियो दिवौकस इत बहुसत्र। फिरि कुरुभूप राजऋषि अत्र ॥करिअतिकष्ट साधितप पर्म। इतकरप्यो सबतीरथधर्म ॥ तब अनुमानि शक्रइत आय। भूपतिसों बूझेहर्षाय॥ हेराजर्षि कहो केहिकाज। होकर्षत सबभूमि समाज ॥ तबनृपकह्यो सुनो यहिहेत। हमकर्षत सबतीर्थ सनेत॥ मरैंइहांजे बिना प्रयास। ते सबकरैं स्वर्गकोबास॥ यहसुनि सुरपतिकरि अनुमान। कह्यो भूपसों सुनोसुजान ॥ व्रतकरिजो इततजे शरीर।कैरणमध्य मरै जोधीर॥ लहै स्वर्ग सोगहि अह्लाद।राखब उचितइतोमर्य्याद ॥ दोहा॥ स्नानदान तपमखवरत करैजितो इतआय । तासुसहस गुणको लहै फल अमोघ अधिकाय ॥ परिसमीरबश जायउड़ि कुरुक्षेत्रकीधूरि। जेहिपरसै सोऊलहै उत्तमगति मुदपूरि॥ इमि कहि कुरुराजर्षिसों शक्रगये निजधाम । कुरुक्षेत्रको परमफल कहैंकह्योरोराम॥ यह सुनिकै बलराम तहँ दै बिप्रन बहुदान। चलितहँसों फिरि लखतभे आश्रम सुभग महान॥ सोरठा ॥ सो आश्रम बलराम देखिकहतभे मुनिनसों । यह आश्रम अभि राम कहोकौन तपधामको ॥ जयकरी ॥यह सुनिकै मुनि तपनिधि बोले। सुनोभूप इतिहास अतोले॥ पूर्बबिष्णुइतबरतपकीन्हें। तपप्रभाव कहँ गरिमादीन्हें ॥ ऋषिशांडिल्य विप्रकीतनया। ही श्रीमती नाम अतिसनया ॥ ब्रह्मचारिणी सोइतरहिकै। करितप पर्म धर्म व्रत गहिकै ॥ तन तजिगई स्वर्ग मतिधामा। यहता को आश्रम अभिरामा ॥ फिरितहँसों चलिकै हलधारी। गेसर स्वतितट तीरथचारी ॥ तहँ अन्हाय सन्ध्यादिक करिकै। मुनि

न संग बैठेमुद धरिकै ॥ तेहिक्षणमें तहँ नारद आये । बिधिवत पूजिराम बैठाये ॥ भे मुनिसों बूझतगुणि मनकी । कहौदशा कुरुपाण्डव रनकी ॥ यहसुनिकै बोलेमुनि नारद । बधिगे अगणित युद्ध बिशारद ॥ कहैंकहांलों चलिसब देखो ।भावीअवशिहोत अवरेखो ॥ यहिक्षण भीमसुयोधन भिरिकै । गदायुद्ध बितरतहैं थिरिकै ॥ अबगुरुता युग शिष्यन केरी । चलिकै लखौकरौमतिदेरी ॥ सुनिबलभये बिदामुनिगनसों ।जाहुद्वारिका कहि निज जनसों ॥ गिरितें उतरि सुरथ परचढ़िकै । चले युद्धथल बनते काढ़िकै ॥ सरस्वति सरितहि हिये सराहत । गे-जहँरहे कृष्णरणचाहत ॥ दोहा ॥ गयेउहां बलरामतब जोवार्त्ता भो भूप। सोसिगरो प्रथमहिं कह्यो संजयबचन अनूप ॥

इतिमहाभारतेगदापर्वणिबलरामतीर्थयात्रावर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ संजयके मुख रामको सुनि आगम तेहिठौर। कहतभये धृतराष्ट्रनृप गहेमोहकोडौर॥संजयजबरण भूमिमधि आये श्रीबलराम। भीम सुयोधन किमिलरे तबसो कहु मतिधाम ॥ चौपाई ॥ सुनि धृतराष्ट्रभूपकी बानी। कहतभये संजय अनुमानी॥ नृपते उभयबीर रणचारी। गदापाणि गिरिवर समभारी॥ सिंहसमान सरस बलभारे। गर्जतजिमि मतंग मतवारे॥ दोऊदोउनके बधिबेकी। करतप्रतिज्ञा जय सधिबेकी॥ बढ़िबढ़िलागे गदाप्रहारण। प्रबल प्रचण्ड प्रभाव प्रचारण॥ फिरि अप्सब्य सब्यगति गहि गहि। मारुबचाउनबाचा कहिकहि॥ मारैंगदा चपलकर करिकरि। टारैंगदागदापरधरि धरि॥ दोऊगदा गातपर सहि सहि। बाहैं गदा क्रोधसों दहि दहि॥ कूदि दूरिहय फिरिफिरि झपटैं। गदाप्रहारण करिकरि दपटैं। गदाप्रहारि हैकपगहटिहटि। दोऊगदा प्रहारैंदटिदटि॥ दोऊचपल प्रबलअरु घायल। युद्धछबीले अतिछरकायल॥ गदायुद्ध हलधरसों सीखे। गदायुद्ध बिदमें गुरुलीखे॥ दोऊ

दोउनको बध ईछे । लरत गहे अतिसौंह तिरीछे ॥ दोऊ गदा गातमधि मारैं । दोऊ गदागदासों टारैं ॥ लगेदुहुनके गदागदा सों। कढ़ेउतंग फुलंगअदासों ॥ भरेरुधिरतन दोऊकोहे । पुष्पि-त किंशुक तरुसमसोहे ॥ दोहा ॥ यहिप्रकार लरिकैतहां कैअति शमित नरेश । दोऊयोधा दूरिह्वै खरेभये हरिभेश ॥ रहिमुहूर्त फिरि बढ़िभिरे दोऊसिंहसमान । गदायुद्धकी घातसों लागेलरन अमान ॥ गदायुद्धकेमार्गजे तिनमार्गनके डौर । लरतभयेदोऊ सुभटगहि अति गुरुतागौर ॥ गतप्रत्यागत आदिकरि मण्डल बिबिध विचित्र । घोरयुद्धतहँ करतभे दोऊसुभट अमित्र ॥ परि मोक्ष प्रहारण परिवारण अति चण्ड । अभिद्रवण आक्षेप अरु अवस्थान उद्दण्ड ॥ उपन्यस्त अपन्यस्त अरु संबिग्रहदै आदि। गदायुद्ध अस्थानसों करिकरिलरे प्रमादि॥ रोला ॥ भयेतहँ अति करत बिक्रम उभययोधाधीर। सहिपरस्पर गदागरुई गनत नेकुन पीर ॥ गरजि गरजि अखंड गतिगहि उभयबीर उदण्ड । करत चालन दोरदण्डन चपल अतिशयचण्ड ॥ सब्यकोउ अपसब्य फिरिजो सब्यसो अपसब्य । फिरत बाहत गदागरुईबीर भाभ-रि भव्य ॥ शब्दसों भरिदये अब्दहि स्तब्दभे नहिंनेक । टूटि टूटि अचूक बाहतगहे बधकीटेक ॥ वृत्र बासव सरिसदोऊ लरे नृप तेहिठौर । बज्रसम बर गदाबाहत गहेअनुपमडौर ॥ भीम भारीगदा माख्यो तौनसहि तौपुत्र । गदा मारयो भीमके शिर राखि जयसोंसुत्र ॥ गदालागे शीशमों भो नेकुब्यथित न भीम। तजतभो तौतनय नृपपहँ गदापरम अधीम ॥ ताहिदीन्हों ब्यर्थ करि तौतनय तजिअस्थान। गरजिमारयो भीमकेउर गदापरम अमान ॥ देखिऐसी चपलता तौतनयकी तेहिकाल । भयेपाण्डव ब्यथित मनमें सहितसब पांचाल ॥ दोहा ॥ नृप तेहिक्षण अति क्रोधकरि गर्जि भीमभट चण्ड । तौसुतके बखिआनमाधि मारयो गदा उदण्ड ॥ गदालगे ह्वै मोहबश धरिपृथ्वीपर जानु । रह्यो

अचलकै सुवनतो जिमि गिरिके गिरि शानु ॥ सोरठा ॥ यहिबिधि भूपहिदेखि हँसतभये पांचाल सब । चेति सुयोधन तेखि भिरो भीमसों गरजिकै ॥ चौपाई ॥ गराजि गराजि फिरि दोऊभिरिकै । घोरयुद्ध कीन्हेतहँ थिरिकै ॥ चक्रसमान चपलकै गातिसों । दोऊ लरे भिरे रिस अतिसों ॥ दोऊ प्रबलप्रचण्ड उकाढ़े । हनिहनि हनत गदा अति गाढ़े ॥ बिबिध भांतिसों गात बचावैं । करैं कुघात घातजहँ पावैं ॥ भीमगदा तोसुतके उरमें । समय ताड़ि ताड़ितभो तुरमें ॥ लागेगदा गिरोनृप तैसे । पुष्पितसाल बायु बशजैसे॥लखि सबपाण्डवगण अति हरषे । मोदितसुमन सुमन तहँ बरषे ॥ तुरित चेतिभूपतिभो ठाढ़ो । सरलेंउठै द्विरद जिमि बाढ़ो ॥ भिरोवृकोदरसों फिरि राजा । भो अति चिन्तित शत्रुसमाजा ॥ भूपतहां अति तुरिता धारचो । गदा भीमके उरमाधि मारचो ॥ गिरोभीम तबमोहित ह्वैकै । अति पीड़ितभे पाण्डव ज्वैकै ॥ चेतिभीम फिरि जयसों रतिकै । भिरो भीमसों विक्रम अतिकै ॥ नृपतियुधिष्ठिर गुणिकै मनमें । केशवसों बूझै तेहि क्षनमें ॥ इनमें न्यून अधिकको कहिये । यहसुनि कृष्णकहे जो सहिये ॥ हैउपदेश तुल्ययुग जनको । बलमें अधिक भीम सब गनको ॥ गदायुद्धके दीहजतनमें । अधिक सुयोधनशत्रु हतन में ॥ दोहा ॥ भीमलरैजो न्यायतजि बधैयाहि तोभूप । नातरु भीमहि बधिहि यहभूप भयानकरूप ॥ प्रबलशत्रुसों मिलतजय करिमाया तजिन्याय । लह्योवृत्रसों शक्रजय मायाबल अधिकाय ॥ यहिबिधिके शठशत्रुसों यहिप्रकार जयपाय । भूपति कोऊ करतहै द्वन्द्वयुद्ध गहिन्याय ॥ सोरठा ॥ कह्योसभामें जौन ऊरूतोरण भूपकी । भीमकरै अबतौन नहिंअधरम पालवबचन ॥ चौपाई ॥ ऐसेबचन कृष्णके सुनिकै । बीरधनंजय मनमेंगुनि कै ॥ तकिरहि जुरैडीठि पणधरिकै । कह्योभीमसों संज्ञा करि कै ॥ बामउरूमें गदाप्रहारो । बधिसुयोधनहि बिजयसुधारो ॥

संज्ञाजानि भीमपणलैकै । लरतभयो बधमेंमनदैके ॥ गदायुद्ध में परम बिचक्षण । लरतसुयोधन करि निजरक्षण ॥ खेलत खरे खिलारीदोऊ । देखत खेलखरे सबकोऊ ॥ बिबिधभांतिकी घातें करि करि । लरेअनेक भांतिसों चरिचरि ॥ गगनगदन गर्जनि की धुनिसों । पूरितहोत भयोदश गुनिसों ॥ लागे गदागातपर तड़तड़ । बोलै बड़ीकवचकी कड़कड़ ॥ करिअरस्थानभेद चरि अड़दै । मारैं गदा गदापर धड़दै ॥ कबहूंलरैं चक्रसम फिरिकै । कबहूंगहैं बक्रगति भिरिकै ॥ कबहूं गरजि उछलिकै ऊरध । गदा प्रहार करैंतकि मूरध ॥ परमनिशाक हांकदै दैकै । हनैंबचावैंगतिलै लैकै ॥ दोऊदोउनको बधचाहत । अतुलपराक्रम नद अवगाहत ॥ कर्दम भरेमहिष युगजैसे । लरैंलसे तहँयुग भटतैसे ॥ सिंह सिंह वृष वृष गजगज सों । लरैं लरे तिमि युगभट सजसों ॥ दोहा ॥ यहि प्रकारलरि शमितकै छूटि घरिक फिरिजूटि । गर्जिगर्जि लागे लरन उभय सुभटजय ऊटि ॥ गदा चलायो भीमतेहि टरितो तनय बचाय । हन्यो भीमके गातमें गदासिंह सोजाय ॥ लगे गदा कछुमोह गहि कीन्हे गदाउकाढ़ । डीठिडीठिकै नीठि कै भीमगयो रहिठाढ़ ॥ तो सुत जान्योहै गहेगदा हननकीघात । ताते नाहिं मारयोरह्यो तकत गदाको पात ॥ सोरठा ॥ क्षण में चेति अमान भीमगदा बाहतभयो । किये कठिन घमसान यहि प्रकार दोऊ सुभट ॥ रोला ॥ भीम बिक्रमभीम तेसोभीम बिक्रम भूप । करि समण्डललरे वृत्रासुर अखण्डलरूप ॥ कूदिचाह्यो भूप मारन गदाताकेगात । भीमतौलों गदामारयो जांघमेंलहि घात ॥ बज्रसमसो गदालागतगई ऊरूटूटि । गिरोमहिपर भूप मूर्छितगयो धीरजछूटि ॥ भयेउल्कापात तेहिक्षण कह्योभीषम बात । भयेबर्षत पांशु शोणित करन अति उत्पात ॥ यक्षभूत पिशाच राक्षस किये नभमेंशोर । गृध्रबायस आदि पक्षी किये भीषमरोर ॥ देखि अशकुन महा शङ्कित होतभे तेहि काल ।

जानि कछु भवितव्य पाण्डव सकल अरु पांचाल ॥ सुमन ऋषिगंधर्व किन्नरगये निजनिजधाम।कहतपरम बिचित्रभारत युद्धभो अभिराम ॥ भीम दुर्योधन नृपतिको युद्ध वर्णत भूरि। सिद्ध किन्नर आदि सुरगण गये आनँदपूरि ॥ केहरीको बधो मत्तमतंग समतेहि ठौर । परोभूपति भीमतासों कहत भो यहि डौर ॥ सभामें धन जीति कीन्हे हास्य जो बहुबार । द्रौपदीको कियो अति दुर्दशा अंशुक हार ॥ आजु ताको लहौ फल तुम भीमयहि बिधि भाखि । कहतभो इमिबाम पदतलशीश उरपर राखि ॥ सभामें सहबन्धु तोकहँ बधत भाख्योजौन । मारिक्रम सों आजुपूरण कियो हमसो तौन ॥ भूमिपतिके शीशपहँ तेहि चरणराखेदेखि । भीमअनुचित करत भाष्योधर्म भूपतिलेखि ॥ बन्धुभूपति परममानी परो बिगत सहाय । महापातक करत राखत तासु शिरपरपाँय ॥ जियतलों है बैर बैर नमरेकरत सु-जान । करन हमकहँ परी इनकी क्रिया सहित बिधान ॥ भाषि यहिबिधि धर्म भूपति तजत चषसोंबारि । नृप सुयोधनसोंकहत भेशोच अतिशय धारि ।.भूमि धनको लोभगहि परिमोहबश तुमतात । किये अनुचित कर्मताते लहे इमि महिपात ॥ गये तातेबधे सुतहित बंधु साथीसर्ब । एकतुम रहिपरे यहि बिधि खोइ बिक्रमगर्ब ॥ बड़ो दुख नहिं तुम्हें तुमतौ भये तनतजि पार । हमें भोगनपरो अब यह शोक निरय अपार ॥ भूरिबिध-वनके रुदनको सुनब मेरेभाल । लिखेहौ कर्तार तिनको सुनब शाप कराल ॥ ऊबि ऊबि उसांसलैलै भाषि इमि क्षितिपाल । रुदतभे चिरकाल लों तहँगहे शोकबिशाल ॥ कहे नृपधृतराष्ट्र तेहिक्षण रहेतहँ बलराम । भीमकोलखि युद्धअधरम कह्योकछु बलधाम ॥ कहे संजय रामसों लखि क्रोधकरि अतिमान । भये धृष्ठतभीम कहँ कहिबचन सहित बिधान ॥ गदायुद्ध बिशालको है शास्त्रमें यहलेख । गदामारब उचितनाहिंअध अंगमाधि सबि-

शेख ॥ भाषि इमिहल पाणिमधिलै चलेमारन ताहि । कृष्ण वारणकिये तबकहि बचन ऐसेचाहि ॥ मित्रआपन मित्रकोजो मित्र मिति अरिजौन । तिन्हैं मानव मित्रअरि निजवृद्ध हित मतिभौन ॥ पितृ भगिनीपुत्र अप्रिय मित्रमम अवदात । मित्र इनको मित्रमम अरि शत्रुममहेतात ॥ सभामधिहो भीमकीन्हे बर प्रतिज्ञाएक । तोरिहौं मैं जांघतेरी गदामारि सटेक ॥ भीम पाल्यो बचननिज नहिंकियो अधरमनेक । बचन पालनकरब क्षत्रिहि परमधर्म बिबेक ॥ दियेहो मैत्रेय इनकहँ शापऐसोपूर्ब। भीमऊरू तोरि हैं तौ गदाहनि अतिगूर्ब ॥ भयो सो तुमतजो रिससुनि क्रोधताजि बलराम । बिदा ह्वै चढ़ि सुरथपरगे द्वारका मतिधाम ॥ कृष्ण चिन्तित देखि धर्महिं कहे करि अनुमान । भूप चिन्तितहोत कतलहि हर्षदिन मतिमान ॥ धर्मबोले कृष्ण हम गुणिदयेशोच बिहाय । भीमगुणि कृतकर्म ताकोधरयोशिर परपाँय ॥ भीम भूपहि सोमलखि ढिगजाय युगकरजोरि । कह्यो शत्रुहि बध्यो हम जो दीहऊरूतोरि ॥ भूप सो तौ भाग्यको अरु धर्मको अधिकार । लहि अकण्टकभूमिको अबकरौभोगउदार॥ नृप युधिष्ठिर कह्योकेशव जासुसंग सहाय । अवशिपावै बिजय सो इतकौन अचरजभाय ॥ दोहा ॥ यहसुनिकै फिरि कहतभो शोकाकुल क्षितिपाल । नृपबध लखिका करतभे सबशृंजय पांचाल ॥ यहसुनिकैसंजयकह्यो सुनोभूप तेहिकाल । बिहँसिबि-हँसिबलकतभयेसबशृंजयपांचाल ॥ कितनेटङ्कारतधनुषबोलत गर्बित बैन । किते बजावत शंखअरु किते भेरिलहिचैन ॥ किते प्रशंसत भीमकहँ किते धर्मको भाग । किते प्रशंसत केशवहि गहे परम अनुराग ॥ सोरठा ॥ तेहिक्षण कृष्ण बिचारि नृपति युधिष्ठिरसों कहे । निजकृतको फलधारि बधोगयो यह मूढ़शठ ॥ चौपाई ॥ गुरु गुरुजनको कह्यो नमान्यो । भरो लोभ निजस्वारथ जान्यो ॥ बीस बिस्वे अधरम उरमान्यो । दुष्टनके मतको पण

ठान्यो ॥ यह तबहींको बधो बिचारो । नृप मति गुणो आजको मारो ॥ हठ गहि कर्मकियो शठजैसो । आजु सबन्धुलह्यो फल तैसो ॥ शोचन योग न यह रणचारी । इतसों चलो धर्मपथ-धारी ॥ कृष्णचन्द्रकी सुनि यहबानी । सहि न सको तौ सुत अ-भिमानी ॥ धरि धीरज उठि बैठ यतनसों । कहत भयो यदुबंश रतनसों ॥ तौ मातुल पितु सेवक मेरो । गोप गेह वर्द्धित तन तेरो॥तोहिं न लाज लगतइमि बोलत।मोहिं मरो गुणिनिज मति खोलत ॥ अधरम करिबो सूचित करिकै । मोहिं बधायो तू अघ भरिकै ॥ खण्ड शिखण्डिहि आगेधरिकै । भीष्महि तू बधवायो छलिकै ॥ गज बधाय द्विजसुत बध कहिकै । द्रोणहिं बधवायो छलगहिकै ॥ कर्ण अमोघ शक्ति जो पाये । सो राक्षस परब्यर्थ कराये ॥ ब्यर्थ निरायुध अभुज अदायो । भूरिश्रवहि तुमहिं बधवायो ॥ बाणरूप पन्नगसुत धायो । तेहि कटाय अर्जुनहिं बचायो॥महितै चक्र निकासत गहिकै।कर्णहिं तू बधवायो कहि-कै ॥ दोहा ॥ इतने अधरम तुमकिये उन्हैंकराये सीखि । अधरम थापत हमहिंपर करि अधर्म्म जयईखि॥भीष्मद्रोण आदिक जिते रणमें मरे अभर्म । कारणताको कठिन है तो कृत कपट कुकर्म ॥ मांगेदये न पाण्डवन पिता अंशकी भूमि । हम बुझाय बिधिवत तुम्हैं गये नाश गुणि धूमि ॥ चौपाई ॥ तुमहीं भीमहि जहर पि-याये । राखि लाहगृह आगि लगाये ॥ किये दुर्दशा द्रुपदसुता की । एक बसन रजुधर्म युताकी ॥ करिअधर्म रचि छलकेपाँसे । हरि सरबस फिरि बिपिन निकासे ॥ अर्जुन सुतहि अकेलो लहिकै । बधे निलज बहुसुभट उमहिकै ॥ तातै बधे गये तुम ऐसे । भो जगको क्षयइते अनैसे ॥ ऐसे बचन कृष्णके सुनिकै । बोलो नृपति सुयोधन गुनिकै ॥ प्रबल अरिन करिकै बनबासी । भोग्यों सर्व भूमि सुखरासी ॥ इच्छित महिधन मित्रन दीन्हों । जेहिक्षण जौन रुचो सो कीन्हों ॥ जिमि सुरगण मधि सुरपति

भ्राजत । तिमिहम हे नृपगणमाधि राजत ॥ शकलहत सुखजौन अरोगे । हमसो सकल भूमि परभोगे ॥ इबिधि भोगि रणमें तन त्यागत । नहिं दुख शोच लेशको पागत ॥ नहिंबधिसके पाण्डवन रनमें । इतो शोच पूरित ममनमें ॥ सुनि भूपतिकी ऐसी बानी । बर्षेसुमन सुमन सुखदानी ॥ लखि यहि बिधि पूजन तौ सुतके । बिस्मित भये लोग सब उतके ॥ भीषमकर्ण द्रोण धनु शोधन । भूरिश्रवा अरु नृपति सुयोधन ॥ इनको बध अधरमसों जानी । रहे शोचि उतके भटज्ञानी ॥ दोहा ॥ सो गुणिके केशवकहे जो यहि बिधिके कर्म । करि उनको बध होतनाहिं तौ न मिलतजय पर्म ॥ इमिकहि मोदितकरि भटन कृष्ण कृपाके ऐन । शयनहेत डेरन चलन कहे पाण्डवीसैन ॥ धृष्टद्युम्न युग बन्धु अरु द्रौपदेय सब भाय । निज निज डेरन जातभे जेहत शेष सचाय ॥ पांचौ पाण्डव सात्यकी सहित आपु कंसारि । दुर्योधनके बासगृह आवतभये बिचारि ॥ जयकरी ॥ दुर्योधन के डेरन आय । पाण्डव सहित कृष्ण गहिचाय ॥ कहे पार्थहों धनुष तुणीर । लै पहिले उतरो तुमबीर ॥ सुनिलै धनु तुणीर अभिराम । उतरे प्रथम पार्थ मतिधाम ॥ फेरि सुरथते घोरे छोरि । उतरे कृष्ण कुशल बिधि जोरि ॥ भे ध्वजस्थ कपिअन्तर ध्यान । गयो भस्मकै सुरथ महान ॥ तब कर जोरि पार्थ मतिभौन । बूझत भे हो कारण जौन ॥ केशव कहे सुनो सो शास्त्र । द्रोण कर्ण के बर ब्रह्मास्त्र ॥ तिनसों भस्मितहो रथ एह । मम प्रभाव सों बचो सनेह ॥ अब रणकर्म पूर्ण भो जानि ॥ कियो बिसर्जन हम अनुमानि ॥ ताते भो अब भस्मा शेष । पारथ याको इहै बिशेष ॥ इमि कहि केशव करत बिनोद । मिले युधिष्ठिरसों गहि मोद ॥ कहे भाग्य बश दैवाधीन । लहैं विजय बधि अरि अति पीन ॥ बन्धुन सहित कुशल तुम भूप । पाये बिजय भाग्य अनुरूप ॥ यह सुनि बोले धर्म अगर्ब । प्रभुतव कृपा बचे हम सर्ब ॥

भीषम द्रोण कर्णकहं मारि । बिजय दयो तौ कृपा मुरारि ॥ यह सुनि कह्यो रुक्मिणी रौन । अब करतब्य करो सब तौन ॥ अब यहिनिशि मधिरहो सयत्न । रक्षत रहैं पार्थ भट रत्न ॥ रहि कछु क्षण सब पाण्डव बीर । जात भये फिरि सरिता तीर ॥ जाय तहां नृपधर्म सनेम । कृष्णचन्द्रसों कहे सप्रेम ॥ सादर गांधारी के पास । जायआप करिये आश्वास ॥ सुनिदारुकिसों रथस-जवाय । कृष्णचन्द्रतहँ गयेसचाय ॥ यहसुनि जनमेजय क्षिति-पाल । बूझेकहो बिप्र मतिआल ॥ कृष्णहि गान्धारीके तीर । भेज्योधर्मसुमतिगंभीर ॥ यामेंकियेभेद कछुभौन । कहोप्रगटकरि कारणतौन ॥ यहसुनिकह्यो सुमुनि मतिमान । सुनोहेतुसो भूप सुजान ॥ गुण्योधर्म भूपति मनमाह । करिअधर्म गोबधि नरना-ह ॥ गान्धारीसुनि गहिसुत शोक । क्रोध अग्नि भरि मानस ओक ॥ दुसहशापदै अनरथजोहि । भस्मित करिहि बन्धु सह मोहि ॥ यहबिचारकरि भूपसचेत । प्रथमहिं क्रोधशमनकेहेत ॥ कृष्णचन्द्रकहँ सबिधि प्रशंसि । भेजेतहां मंत्र अवतंसि ॥ रथ चढ़ि केशव गहेसनेह । गेधृतराष्ट्र भूपके गेह ॥ रथते उतरि कृष्ण शुभभेश । गये जहांधृतराष्ट्र नरेश ॥ दोहा ॥ लखिशोका कुल दम्पतिहि करि अभिवाद सुजान । गहिसुपाणि धृतराष्ट्र को रोदनकिये महान ॥ करि मुहूर्तलों रुदन फिरि बारि मौंगि मुखधोय । कहनलगे धृतराष्ट्रसों बचनशान्तिरसमोय ॥ भूपति वृद्धसुजान तुमजानत शास्त्रअनूप । समय पायकै होति मति भावीके अनुरूप ॥कियेपाण्डवनको जितो तौसुत नृपअपकार । सोसब तुमजानत गुणो कस न होइसंहार ॥ कियेद्रौपदीकी अ-पति दियेबिपिनको बास । तहांलहे वे जौन दुखसोगुणि उपजत त्रास ॥ युद्धयोग लखिआय हमकह्यो बहुत समुझाय । पांच ग्राममांगे तऊदये न तुमक्षितिरांय ॥ भीष्म द्रोण कृप बिदुर अरु सोमदत्त बाह्लीक । कितो कह्यो मान्यो न तुमगहि कुमंत्रकी

लोक ॥ भूपति दोष न आपको काललेत हरिज्ञान । होनीके अनुसार मतिउपजति और न आन ॥ तातेद्दोष न पाण्डवनको कछुकरौबिचार । प्रथमभई मतिआपकी होनीकेअनुसार ॥ नतरु पाण्डुके सुवनको हरिसर्बस यहिरीति । मांगेदये न भूपतुम पांचग्राम करिप्रीति ॥ सुवनपाण्डुसे बन्धुके भरेभूरि गुणसर्ब । ताहिनिकासे भूपतुम हरिसर्बस करिसर्ब ॥ करि अतिदुख फिरि समयलहि कैसपक्ष सहसैन । कुलरक्षणहित ग्रामकछु मांगे वै मतिऐन ॥ सोऊतुम दीन्हेनहीं गहिभावीको भाव । तातेउनको दोष कछु मतिमानो तजिचाव ॥ गुणिभावीकहँ प्रबलअब धीर धरौ क्षितिपाल । मृत्युलोक यहप्रगटहै सबकहँ कर्षत काल ॥ इमिकहिकै गान्धारजासों बोलेयदुराय । अम्बधरौ तुमधीरनहिं बिधि लिपि मेटीजाय ॥ तुमहूं नृप दुर्योधनहिं कितोकही समुझाय । एक न मान्योकाल बश बिधिसों कहा बसाय ॥ ताते धीरजधारि अब सहोशोकको दाप । पांडुसुतनके नाशको मति आनो उरपाप ॥ तुमचाहौतो लोकसब करौभस्म सबिधान । पर अबकुल रक्षणकरब उचितकरो अनुमान ॥ यहिप्रकार कहि शाप कीही मतिताहि दुराय । द्रोणतनयको शङ्कगहि बिदाभये यदुराय ॥ बन्दि दम्पतिहि ब्यासकेचरण परशि तेहिठौर । रथ चढ़ि आये कृष्णजहँ हैं पांडव भटमौर ॥ रोला ॥ ऊबिऊबि उसांस लै लै गहेशोकमहान । कहेनृप धृतराष्ट्र संजयकहो सहितबिधान ॥ पुत्रममभेहत पराक्रमपरो जबगतचैन । भीमराख्यो चरण शिर पर कहतगर्बित बैन ॥ परममानी पुत्रमम तबभयो कैसोतत्र । एककोऊ आपनोहित परोदेखि न यत्र ॥ कहेसंजयगये हमतहँ गयोजब अरिसैन । कियेहौंनृप जहां क्षत्रिहि स्वर्गदायकसैन ॥ मोहिंलखि क्षितिपाल धीरज धारिकै उठिबैठि । बीररससों भरो केश सुधार मूछनऐठि ॥ कह्योसंजय सुनो होनिहि सकत नाहिं कोउ टारि । द्रोण भीषम कर्णजा सँगलहे सोइमिहारि ॥ द्रोणसुतकृप

कर्णसुत भगदत्त शकुनि नरेश। आदि एकादश अक्षौहिणी जासु संग शुभेश ॥ परेह्यो कै धूरिमधि इमिबिना संग सहाय। खबरि यहसुनि जनकजननी कहाकरिहै हाय ॥ पुत्रसौ अरु पौत्रजाके मरे अगणिततौन । धरिहि कैसेधीर ताहिबुझाइ साकिहैकौन ॥ सुतनको सुत सुतनकी सबतियनको अति मान। सहोकैसेजाय गो हा रुदनको आहवान ॥ भीममारो गदा मोकहँ धर्मकोकरि त्याग । सदाअधरमकिये पाण्डव अनय उनके माग ॥ नृपहि सबिधि बुझाइयो तुमकाल गति दरशाय । इन्द्रसम करिभोग रणमें मरबमंगलचाय ॥ भूपइतनेमें नृपतिकी खबरि सुनि त्रय बीर । द्रोणसुत कृपभूप कृतबर्मा महां रणधीर ॥ चढ़ि रथनपै हांकि जबसों शीघ्रआये तत्र। भरोशोणित धूरि कर्दम परेहो नृपयत्र ॥ गृध्रजम्बुक योगिनी जुरिभूत घेरे ताहि। यथायाचक जूहघेरत सधनदातहि चाहि ॥ देखिभूपहि उतरिरथसों करत रोदन भूरि । जायबैठे निकट नृपके महादुखसों पूरि ॥ द्रोणसुत परि मोहवश इमि लगोकरनप्रलाप । इन्द्रसम महिपाल रज माधिपरो पूरितताप ॥ द्रोण भीषम करण दुःशासन शकुनिभट और । गयेकिततुम बिजन यहिबिधि परेहौ यहिठौर ॥ व्यजन चामर छत्रओपर्य्यंक दासीदास। गयेकित इतमामकरता लोग सबतजिआस ॥ भाषियहिबिधि करतरोदन द्रोणसुतकहँदेखि। तजतचषसे बारिभूपति कहतभो अवरेखि ॥ जौनप्रगटतआय इतसों नशतभोगि स्वकर्म। भयोहमकहँ प्राप्तसो अबजौन इत को धर्म ॥ शक्रसम करिभोगरणमें मरैकोनहिंखेद। लहेपाण्डव बिजय अति दुखहोत यह गुणिभेद ॥ हन्योभीम अधर्मकरिकै गदामम अधअंग। नहींजीत्यो मोहिंकरिकै न्यायबिक्रमसंग ॥ आपनो करिलये तुमसों जननिकहँ हमपूर्ब। तऊ यहिबिधिपरै भावी होति है अतिगूर्ब ॥ भाषि यहिबिधि नृपसुयोधन तजत चषतेनीर। रहो चुपह्वैभये व्यापति दुसह दारुणपीर॥द्रोणसुत

सुनि बचन नृपके महारिस बिस्तारि । कहे वै सबमूढ़ जबमम पितहिं डारेमारि ॥ मोहिंभो नहिं इतो दुख तब जितो तो दुख देखि । सुनोतात कहतहों अब इतोपण करि तेखि ॥ बनिहि जिमि तेहिभांति यहिनिशि बधबसब पांचाल । जान कहँ तहँ मोहिं आज्ञादेहु हे क्षितिपाल ॥ दोहा ॥ भूपति सुनि ऐसे बचन अति आनँदउरआनि । कृपाचार्यसों कहतभे राजनीति अनुमानि ॥ हे आचारयपूर्ण जल सादर कलश मँगाय । द्रोणसुतहि सेनाधिपतिकरौ सबिधि गहिचाय ॥ यहसुनिकलशमँगाइ कृप सहित बिधान बिबेक । द्रोण सुतहि सैनेशको करत भये अभिषेक ॥ द्रोणतनय सैनेशको लहि अभिषेक अनूप । गयो भूप सों ह्वैबिदा भयो भयानकरूप ॥ सोरठा ॥ रामराम सियराम जपत सुयोधन तहँरहो । चाहिबिजय अभिराम द्विजसुतको आगम लखत ॥

स्वस्तिश्रीकाशिराजउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनामणिदेवेनकबिना बिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेगदापर्बणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

गदापर्बसमाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
माह फरवरी सन १८९१ ई०

महाभारत दर्पणे ॥

सौप्तिकपर्ब्बदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करिनरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा ब्यासहि रचत भारतभाषासौमि ॥ भूकृत भूभृतभूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भणतयह भाषा भार्त्त महान ॥ जेहिरघुबर प्रभुकेचरित बहुशतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरिभारत रचत भाषा बिरचिसुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परमअनूप । तेसारथ रचिदेहिं यह भारतभाषा रूप ॥

सोरठा ॥ बन्दौं कपिबरबीर रामपरम प्रियपारषद । मंगलमूरति धीर भारतस्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधि उलंघनसमयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषाकरिचाहततर्यो ॥

दोहा ॥ सातुक सौप्तिक सपनकी दशामध्यजोप्रात । भाषा सौप्तिक पर्ब यह रचतताहि गुणिआत ॥ संजयउवाच ॥ जयकरी ॥ सीतारामहिं सुमिरि नरेश । सुनो तदनु जो भो तेहिदेश ॥ जबह्वै नृपसों बिदासमर्ब । चलोद्रोण सुत सुभट अखर्ब ॥ तबकृपअरु कृत-बर्मा भूप । चले तासुसँग सुभट अनूप ॥ तेत्रयरथी बीर बल धाम । अरिदलके ढिगजाय सकाम ॥ तहँचैतन्यशत्रुदलजानि । मुराकि बिपिन मधिगे अनुमानि ॥ तहां निकटबट वृक्षनिरेखि । बैठेउतरि मंत्र अवरेखि ॥ यह सुनि शोकाकुल नृपवृद्ध । कह

तभयोकरि इवासप्रबुद्ध ॥ बातजात करियुद्ध अधर्म । बधतभयो मम सुवन अभर्म ॥ संजय ममहिय महा कठोर । सहतइतो दुख दुसह अथोर ॥ शतसुत तिनके सुवन अनेक । कोबधसुनिदहि फटत न नेक ॥ दम्पति वृद्धसुतनसों हीन । किमिहमबसबं शत्रु आधीन ॥ कह्योबिदुरजो नीतिसुनाय । अबसोपरो प्रत्यक्ष लखाय ॥ क्षात्रबंशको भयोबिनाश । सबसुतमरे न पूरीआश ॥ अबकहुसंजय बटतरजाय । कियेकहां त्रयभट दृढ़घाय ॥ यह सुनिकै संजयमतिमान । कह्योजाय तहँबीर अमान ॥ गुणितो पुत्रनकोबध भूप । अरुक्षत्रिनको नाशकुरूप ॥ कहि कहिकरुणा शोचबढ़ाय । क्षतसों पीड़ित परे अचाय ॥ भे निद्राबश कृप कृतबर्म । गह्यो न निद्रा द्विजभट पर्म ॥ अमरषक्रोध भरोद्विज बीर । निरखनलागो बिपिनगँभीर ॥ बिपिनलखत निरख्यो द्विजराय । वृक्षनबसे कागसमुदाय ॥ सब निद्राबशह्वै कलपाय । निर्भयसोवत शोचबिहाय ॥ तहांउलूक बिहँग तेहिकाल । आयो बायसकुलको काल ॥ सोक्रमसों प्रतिनीडन जाय । भोकतरत कागनको काय ॥ कितनेकेकाट्यो पगपक्ष । कितनेके उरफार्यो दक्ष ॥ भोकाटत अगणित को शीश । सो कौशिक कागा दह दीश ॥ यहिबिधिकरि कागनको नास । कौशिक पक्षीगो निज बास ॥ इमि निजशत्रुन मारतताहि । द्रोणतनय तेहि निशिमें चाहि ॥ गहतभयो मनमेंसो भाव । मनुपायो उपदेश बनाव ॥ इमिभो मनमें करतबिचार । पाण्डव प्रबलससैन उदार ॥ नहिं सन्मुख बधिबेके योग । ताते यहबिधि अमिट प्रयोग ॥ अमरष बशनृपके ढिगजौन । हम पणकरि कीन्हों इतगौन ॥ धर्मधरेते मरण न आन । यहिबिधि पणसधिबेको ठान ॥ दोहा ॥ द्रोण न बधि यहद्रोण अरि द्रोणबिधनको बेश । दूरिकर्णकहँ द्रोण सम कियोआइ उपदेश ॥ द्रोणबधन द्रोणारिको द्रोणदये दुखतौन । दूरिकरन अरिद्रोणमनु कहे द्रोण अरिद्रौन ॥ न्यायसहित लरि

शत्रुसों हारेसर्वस जात । करिअधर्म जीतेरहत सर्वसजीति कहात ॥ समितकार्य्य तत्परभजत निजन निरायुधपाय । सोवत निशिमें समयलहि शत्रुहि मारबन्याय ॥ इमि गुणि द्विजसोवत बंधब ठीकमंत्र ठहराय । तिनयुगभटन जगायभो कहतसबिधि समुझाय ॥ रोला ॥ भीम दुर्योधन नृपातिके धरेशिरपर लात । समुझिसो ममहिये अनुक्षण क्रोधबाढ़त जात ॥ भूपकी लखि दशा शत्रुन बधनको पणठानि । सहिततुमयुग भटनआये इहां जय अनुमानि ॥ एकदश अक्षौहिणी नृपसेन अति उद्दण्ड । भीष्म द्रोणादिकन सहभे बधत पांडव चण्ड ॥ सदल तिनके बधनको हमगहे ईहातात । कहोताको मंत्रजेहिबिधि मिलैजय अबदात ॥ द्रोणसुतके बचनसुनि कृपकहे सुनहु सप्रेम । जिते जन्मलआय ते सबमरतहैंयहनेम ॥ दैवके अरुकर्मके बलसधत सिगरे काज । एकसो नहिं पुरुषसाधि न सकतहै निजराज ॥ प्रवृत निवृत प्रसिद्धसब थल ब्याप्त सुनिये चाहि । शिखरपर जमिवृक्ष बाढ़त दैवसींचत ताहि ॥ बिनासींचे होतकेते सींचतौ कुंभिलात । दैवकर्मसहाय बलकी होतअभिगत बात ॥ ध्याय दैवहि शोधि कर्महि धर्मपथ गहिजौन । गुरुनमंत्रित कार्य्यरंभन सिद्ध सबबिधि तौन ॥ लोभबशपरि नृपसुयोधन कियोतासुबिरुद्ध । लियोतिनकोमंत्र जिनकीबुद्धि निपटअशुद्ध ॥ कहोभीषम बिदुरको नहिंगुणो सुखदातार । लहेऐसीदशा किमि नहिंजासु यह ब्यापार ॥ मंत्र बूझतहो हमहिंतो कहत इमि अनुमानि । चलोनृप धृतराष्ट्रकेढिग वचनश्रेयद जानि ॥ भूपगान्धारी बिदुर सों बूझि बिधिवतमंत्र । कहैंचे जो भांति जेहिसो करो आय स्वतंत्र ॥ कृपाचारय के बचनसुनि द्रोणसुत अनखाय । कह्यो निजमति श्रेष्ठ सबकहँ परतजानि सचाय ॥ कारणान्तर योगसें मति बुद्धि पलटतितात । हैबिचित्र मनुष्यको चितठीक नाहिंठहरात ॥ भिषज भेषजदेत जीवनहेत समुझि निदान । काल

बश बहमरत तौसबकहत तेहि अज्ञान।।पुरुषसिंह प्रवीणभूपति कियो राजसधर्म । गयोकाज नशाय अबसबकहत कुत्सितकर्म ॥ विप्रहम निजधर्म तजिके गह्योक्षत्रीधर्म । कर्मक्षत्रिनको करब अब उचित तजिकैभर्म ॥ झूठकहि तजिधर्म उन ममपितहि डार्योमारि । तथा अब हमवधब उनकहँ नीतिधर्म बिसारि ॥ पांचजन्य बजवाय दुन्दुभि सुचितपांडवसैन । सैनकरि परि नींद बश अबपरे पूरितचैन ॥ जायअब हमशिविर सबकेकाटि सब को शीश । धृष्टद्युम्नादिकन बधि जयलेब बिस्वेबीश ॥ धर्मआदिक पांडवनबधि काललोक पठाय । हौबउऋण भूपसों यहपरम धर्मसन्याय ॥ द्रोणसुतके बचनसुनिकै कह्यो इमि आचार्य्य । करबऐसे कर्मकुत्सित उचिततुमहिं न आर्य्य ॥ लेहुकरि बिश्राम यहिनिशिभोर धनुटंकारि । हमहिं युगभट सहित लरि के लेहुजयपण धारि ॥ बाणबर्षत तोहिंलखिके सुभटऐसोकौन । जीतिको उत्साहगहि जोकरैसन्मुखगौन ॥ दुसहलो कृतबाणझरि नहिं शक्रसहिबे योग। और मानवसहैकोतो दिव्यअस्त्र प्रयोग ॥ तथा हम तिमि भूपकृतवर्मा दुसह रणधीर । बधब तिमि अरिसैन जिमि बनदहत अग्नि समीर ॥ सामित हम अरुभूप तुमहूंलेहु करिबिश्राम। बधबसबपाञ्चालसेनाभोर करिसंग्राम॥ सुनत मातुलिके बचनये द्रोणसुत भटचण्ड । क्रोध भरि करि अरुण ईक्षण कह्योबचन उदण्ड ॥ कहां निद्रा आतुरहि अरु भरो अमरष ताहि । कहां निद्राताहिघेरे महा चिन्ता जाहि ॥ सकलये रूमाहिये पूरित कहो निद्रामोहिं । पिताके बधतेअधिक दुखकौन बूभल तोहिं ॥ धृष्टद्युम्नहिं बधेबिनु मम हिये परचत तात । बधेबिनु पाण्डवन नहिं ममशोक करुणाजात ॥ दोहा ॥ तातें यहि सौप्तिक रजनि माझिबधि अरि समुदाय । दुख दुराइ सब करब हम सुख बिश्राम सचाय ॥ अश्वत्थामा के बचन सुनिकृप सुमति सुधाम । कह्यो न सोहत है तुम्हें ऐसो कुत्सित

काम ॥ बिनु जानेहू शस्त्रकरि शास्त्रज्ञनको संग। जानत अधर-मधर्मनर सुकरम कुकरमअंग ॥ जानन हित सत असत मग भजत पण्डितन लोग। तुम पण्डितह्वै आपुकत गहत अधर्म प्रयोग ॥ पापात्मा सब जन्मके करत सपातक कर्म। जे सबदि-नके पुण्यकृत तेनिति गहत सुधर्म ॥ लक्ष्मी आवै जायकै रहै न रहैसप्रेम। धर्मशील नरनहिंतजत धर्म सुपथको नेम ॥ तुम सबबिधि शास्त्रज्ञ पटु धर्म कर्म करतार। मतिहठ गहिकरिबो गुणो यह कुत्सित उपचार ॥ त्यक्तशस्त्रबिनु कवचरथ भागत सोवत जौन। आरत कहि आवत शरण तिन्हैं बधब अघभौ-न ॥ लखिबहुदिन अति स्रमित ह्वै सोवत आयुध त्यागि। ति-न्हैं बधब सो है चलब रौरवके मगलागि ॥ तातेऐसी कुमतित-जिकरि निशिमें बिश्राम। भोरप्रचारि प्रचारिकै बधब शत्रुबल-धाम ॥ सुनि अश्वत्थामा कह्यो सत्यकहे तुमतात। पैजो करिबो अवशितहैं नहिं अधरम लखिजात॥ भीष्मद्रोण भूरिश्रवा कर्ण सुयोधनभूप। तिन्हैंबध्यो तिनबिजय हित कौनधर्म अनुरूप ॥ नाहिं मोसों सहिजात अब पितु बधको दुखघोर। इमिकहिकै चढ़िसुरथ पर चलो सैनकीओर ॥ कृप कृतबर्मा चलतभे तासु अनुग ह्वै भूप। सैनद्वारपर जातभे तेत्रयसुभटअनूप ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ सैन द्वारपर जायते कियेकहा कहु तौन। यह सुनिकै संजय कह्यो सुनो तौन मतिभौन ॥ तहां जायकैद्वारपर देख्यो पुरुषउदंड। सूर्य्यसरिस बरचस भरो बाहतपरम प्रचंड ॥ ब्याघ्र खालकोबसनं अरु भूषण ब्यालकराल। जाकेसहसन मुखचषन कढ़तज्वालके जाल ॥ सोरठा ॥ प्रलयकालके सूर समसोहत सो पुरुषतहँ। कढ़ततेजकोपूर चषमुखनासा श्रवणमग ॥ तिनतेजन ह्वैभूप प्रगटत अगणित बिष्णुप्रभु। चारु चतुर्भुज रूपचक्र आदि आयुधगहे ॥ चौपाई ॥ द्रोण तनय सो लखितेहि क्षनमें। गुणि प्रभावह्वै चिन्तित मनमें ॥ धीर धुरीण शोचपरिहरिकै।

दिब्य अस्त्र बर्षो पणधरिकै ॥ नृपसो पुरुष अस्त्र सब तैसे । ग्रस्यो सरित जल सागरजैसे ॥ अस्त्रन ब्यर्थ देखि भटनायक । तज्यो अमोघ शक्ति बध लायक ॥ पुरुषप्रभाव शक्तिसोंभारी । होतभई ऊरध पथचारी ॥ बिप्रकोपि तबखड्ग चलायो । पुरुष ब्यर्थकरि ताहि गिरायो ॥ तब द्विजतज्यो गदा अतिघोरा । ग्रस्यो ताहिसो पुरुषकठोरा ॥ मारिअस्त्र सबगुणिबधताको । करि ब्यवसाय बिप्रसुत थाको ॥ देखि जनार्दन मय अघपूरध । बिप्र बिचारि कियो अधमूरध ॥ तब कृपबचन बिचारि हियेमें । गुण्यो बिपति हठिकर्म कियेमें ॥ शास्त्ररीति युतवृद्ध सिखापन । नहिंहमगुण्यो पालिहठ आपन ॥ सपना सौतुक सौतुकसपना । होतदैवबश ब्यर्थ कल्पना ॥ चाहतदैव होतसो सबहू । नरचाहतसो होत न कबहूं ॥ जौनकरत नर कर पग मुखसों । सो सबहोत दैवके रुखसों ॥ यहबिचारि कारज मग लागो । रथ तजि शिवहि प्रशंसन लागो ॥ रथते उतरि बिप्रमुद लीन्हें । सबिधि शंभुकी अस्तुति कीन्हें ॥ उग्रहि आदिनाम सब कहिके । महिमा कह्यो भक्ति अतिगहिके ॥ अस्तुति करत तत्त्वके भेदी । प्रगटिभई काञ्चनकी बेदी ॥ तापहँचित्रभानु प्रभुराजे । नभदिशि बिदिशि तेजसों छाजे ॥ अगणित शिर चषकर पग सोहैं । सेवतखरे दिब्यगण मोहैं ॥ गणसमूहसोहैं बहुबिधिके । अति अभिराम धामरुचि निधिके ॥ बहुप्रकारके आनन जिनके । वेषबनाव बिबिध बिधि तिनके ॥ बिबिध भांतिके आयुध धारे । निरतत हँसत यथामतवारे ॥ कितने आयुधकिये उकाढ़े । गरजतफिरत बिन्ध्यसम बाढ़े ॥ कितनेखरे धनुषटंकारत । अश्वत्थामहिं कितेप्रचारत ॥ कितने शिवहि प्रशंसत थिरिथिरि । कितने हरहरटेरत फिरिफिरि ॥ यहअद्भुतलखि द्विजसुतयोधा । धरिधीरज करिमन अवरोधा ॥ पाणिजोरि इमिशिवसोंभाष्यो । भयोब्यर्थ हमजो अभिलाष्यो ॥ प्रभुहम तन होमत यहिठाईं ।

मम आत्माबलि लेहुगोसाईं ॥ इमि कहि अग्नि ज्वलित तहँ करिकै। प्रविशतभो द्विज धीरज धरिकै ॥ ज्वलित अग्निमधि द्विजहि निहारी। शम्भुकृपा करि कहे बिचारी॥ हम प्रसन्नतो पहँ भट नायक। अबनिज इच्छित करु दृढ़घायक॥ दोहा ॥ इमिकहि शिव द्विज बरहि दे खड्गदिव्य परभाव। गुणिभावी सब गणन सह गुप्तभये गहिचाव ॥ गहिसो असि अतिमुदित ह्वै अश्वत्थामाबीर। सैनद्वार मधि प्रविशिगो शिविरनप्रतिरण-धीर ॥ सुनिबूझै धृतराष्ट्र तहँ कियोकहा द्विजजाय। कृपकृत-बर्मा काकियो सोसब कहोबुझाय ॥ सञ्जयउवाच ॥ जब शिविरन मधि जातभो बिप्र भयानकरूप। खरेरहे तबद्वारपर कृप कृत-बर्मा भूप ॥ सोरठा ॥ कृप कृतबर्महि राखिद्वार देशमें बिप्रभट। बध करिबो अभिलाखि धृष्टद्युम्नके शिविरगो ॥ रोला ॥ तहां शुचि पर्यंक सोवत धृष्टद्युम्नहिदेखि। लातमारिजगाय दीन्हों नीति मग अवरेखि ॥ जागि बिप्रहि चीन्हिलागो उठन पर सैनेश। झपटि तौलगि भयोपटकत बिप्र गहिकै केश॥ कण्ठ उरपर लात धरिकै दाबि बैठोताहि। भरो आलस तौननहिं करिसको बिक्रम चाहि॥ द्रोणसों इमि कह्यो मोकहँ अस्त्र सों बधुबिप्र। पाय तो परसंगजाते जाँउसुरपुर क्षिप्र ॥ बिप्रयह सुनि कह्यो रेगुरुबधिकसों गतितोहिं। भाषिइमिभो बधतमरम-हि दाबिपदसों कोहि ॥ रहीरक्षक तासुयुवती तहांते सबजागि। देखि बिप्रहि भूतगुणि परिरही भयसों पागि ॥ द्रोणसुत तब शिविरते कढ़िसुरथ परचढ़ि भूप। परमगर्बित भयो ठाढ़ो महा भीषम रूप ॥ युवति कीन्हींशोरतब जगिआइ तहँ सबलोग। धृष्टद्युम्नहिं मरोलखिकै भयेकूझतयोग ॥ कह्यो युवतिन दनुज कैधौं मनुजबाधिकै ताहि। खरो रथचढ़ि सुभट तबबाढ़ि घेरि लीन्हें चाहि ॥ द्रोणसुत तिनभटन परकरि रुद्रअस्त्र प्रहार। तूल राशि समान सबको करत भो संहार ॥ शीघ्र उतमौजा

नृपति के शिविर मधि चलिजाय। धृष्टद्युम्नहिं बध्यो जिमि तिमि बध्यो अमरष छाय ॥ युधामन्यु महीप तुरतहि जागि अनरथ मानि। द्रोणसुत के हन्यो उरमें गदाराक्षस जानि ॥ खड्ग सों बधिताहि द्विजसुत भयो बधत सटेक। नींद बश परिपरे थरथर घूमिसुभट अनेक ॥ द्रोणसुत ह्वै चपल कीन्हें न्याय धर्महि दूरि। परे सोवत तुरँग गजभट भयो मारत भूरि ॥ जगेजेऊ देखि तेहिते रहे नैनन मूंदि। तिन्हें बधि भो बधत सोवत भटन पायँन खूंदि ॥ करत निरजन शिविर सिगरे गयो द्विज भटबीरं। रहे सोवत द्रौपदीके सुवन जहँ रणधीर ॥

दोहा ॥ तेहिक्षण तहँके सुभट सब जागि करतभे शोर। जागि द्रौपदीके सुवन करषे धनुष कठोर ॥ धृष्टद्युम्नको मरणसुनि जागि शिखण्डी दक्ष। द्रोणसुवन कहँ घेरिकै बरषेबिशिख सपक्ष॥

जयकरी ॥ तहँगहि खड्ग चर्म बलधाम। द्रोणसुवन भट अश्वत्थाम ॥ द्रुपद सुताके सुतन प्रचारि। भो प्रतिबिंध्यहि बधत प्रहारि ॥ तब सुतसोम पाश हनि ताहि। असि गहि चलतभयो बधचाहि ॥ तब अश्वत्थामा गहि बेग। बाहि रुद्रप्रद खड्ग असेग ॥ दक्षिण भुजाकाटिकै तासु। काट्यो शीशबाहि असिआसु ॥ शतानीक रथचक्र उठाय। तज्यो बिप्रपहँ ओज बढ़ाय॥ गहिसोचक्र बिप्रभटनाह। हन्योनकुल सुतके उरमाह ॥ लागे चक्र गिरो सो भौरि। तब शिरकाटि लियोद्विज दौरि ॥ तब श्रुतकर्मा परिघ उठाय। बाढ़ि मारतभो द्विजके काय ॥ सो सहि बलकरि बिप्रन भीच। खड्ग हन्यो ताके मुखबीच ॥ तब श्रुतकर्मा सुभट अमान। गिरो भूमिपर ह्वै गतप्रान ॥ सोलखिकै श्रुतिकीर्त्ति उदार। द्विजपर बरषो शायक धार ॥ सबशर धारि चर्मपर बिप्र। काट्यो तासु शीश बढ़ि क्षिप्र ॥ द्रुपदसुता के सुतसब मारि। सुभट शिखण्डिहि बध्यो प्रचारि ॥ इनसुभटनकहँ बधि तेहि ठौर। बधत भयो सब भटनसडौर ॥ कालक-

राल सदृश तेहियाम। बिलसत भयो बिप्र अभिराम॥ दोहा॥ जितने मत्स्य प्रभद्रगण अरु पाञ्चाल बिशेष। रहेजिते हत शेषसो द्विज बधि कियो अशेष॥ फिरि पाण्डवदल सृंजयन मध्य प्रविशि द्विजबीर। हयगज भटहत शेषसब बधत भयो बेपीर॥ तहँ जे भट जागत रहे तेनिरखे तेहिकाल। प्रथमजाति कालीबधाति पीछू बिप्र बिशाल॥ चौपाई॥ चेति भिरैं द्विजबरसों जेते। कटि कटि परैं भूमिपर तेते॥ काहूके पगकटि भुजकाटत। कितने शीश काटि महि पाटत॥ कितने हय गजकाटि थितावत। लसो रुद्र जिमि कलप बितावत॥ कितने घोर शब्दसुनि जागैं। कहा होत इमि बूझत भागैं॥ कितने नींदभरे नहिंबूझैं। कहाहोतको आयोकूझैं॥ जागत सोवत बैठेभागत। बधतबिप्र कछुदया न पागत॥ हाहाकार भूपतेहिपलमें। होतभयो सबपांडवदलमें॥ धुनिसुनिद्विरद तुरग भयपागे। तोरिसुबन्धन धावन लागे॥ तिनके घातलाततर परिपरि। मरतभये भट हाहाकरि करि॥ उड़ीधूरि अतिशय तमछायो। सबकेमनें बिभ्रम भरि आयो॥ बिनुचीन्हें आपुसमें लरिलरि। मरेअसंख्यन धीरज धरिधरि॥ कितने पिता बन्धुसुत टेरैं। कितने हय गज रथ धनुहेरैं॥ भागिद्वारपर जाहिंसभर्मा। बधैंतिन्हैं कृपअरु कृतबर्मा॥ नृपइतनेमें अश्वत्थामा। आगिबारि फूंक्यो पटुधामा॥ तीनिओरसों आगिलगायो। पूरिउजेरो असि फरकायो॥ अंग भंगकरि हय गज योधन। करतभयो निजपण बिधि शोधन॥ कितनेमरे अग्निमें जरिकै। कितनेमरे परस्पर लरिकै॥ सुभट असंख्यन द्विजसुत मार्‍यो। प्रलय कालको रूपपसार्‍यो॥ बधे पशुनकहँ पशुपतिजैसे। हय गज भटन बध्यो द्विजतैसे॥ निशियुगयामगये सुनुराजा। भोअशेष अरिसैनसमाजा॥ राक्षस भूत पिशाचघनेरे। भक्षणलगेमांसकरि डेरे॥ खुशी खबीसयोगिनी फिरि फिरि। शोणितपियैं ग्रीवसों भिरि भिरि॥ निरतत

बलकत फिरत अनेरे । खातगूद लखिबीर बड़ेरे ॥ चौपदपक्षी मांस अहारी । मांसखात अतिसुदिन निहारी ॥ यहि प्रकार सब अरिदल बधिकै । निज पणपूरि मोद हियमधिकै ॥ सैनद्वारके बाहेर आयो । निज कर्तब युगभटन सुनायो ॥ नृप धृतराष्ट्र दशा यह सुनिकै । संजयसों बूझतभो गुनिकै ॥ यहि निशि बिप्रकर्म जो कीन्हों । प्रथमहि कत यहपण नहिं लीन्हों ॥ जब जूझो मम सुत नृप आरज । तब कत करतभयो असकारज ॥ सो बुझाइ कहु संजय ज्ञानी । सुनिबोलो संजय अनुमानी ॥ कृष्ण आर्जुन के भयपागो । नाहिं आगे द्विज यहि मतलागो ॥ सात्यकि सहित उन्हें यहि निशिमें । अनतजानि प्रविशो यहि दिशिमें ॥ दोहा ॥ बधि हतशेष समस्तदल करि पूरण पण आस । कृप कृतबर्म्मा सहितगो दुर्योधनके पास ॥ शेषप्राण सह भूमिपर परो भूप तेहिकाल । शोणित मुखसों बमतअरु श्वासाबढ़ी कराल ॥ दुर्योधनकी लखिदशा तेत्रयभट तहँ बै-ठि । रुदन करन लागे महा शोक समुद्रमें पैठि ॥ गुणविक्रम ऐश्वर्य्यसब कहि कहि गहि दुखभूरि । किये बिलाप प्रलाप भति लहि अति दुखसोंपूरि ॥ नहिं बोलोजब नृपति तब कह्यो द्रोणसुत एहु । स्वर्गजात नृपश्रवण सुख बचनइतो सुनिलेहु ॥ धृष्टद्युम्न आदिक सकल बधिपरभट समुदाय । द्रुपद सुता के सुतनकहँ बधि यमलोक पठाय ॥ जारि शिविर पाण्डवनके हम आये तुवपास । सातसुभट उतबचिरहे बसिअनतै गहित्रास ॥ पांचो पाण्डव कृष्ण अरु सात्यकि योधा जौन । तीनि सुभट हम इतबचे सुनो बुद्धिबलभौन ॥ सुनि मुदगहि तो सुत कह्यो तुम उत्रिणभे आजु । भीष्मद्रोण अरु कर्णनाहिं कीन्हों करिसो काजु ॥ इमि कहि चुपरहि क्षणक गुणि कहि कहि सीताराम । नृपतिसुयोधन त्यागितन गोसुरपति के धाम ॥ जयकरी ॥ राम कृष्णकी कृपा अनूप । लहिजयलह्यो युधिष्ठिरभूप ॥ रामकृपा

तेका नहिंहोत । रामकृपा सबसुखको सोत ॥ रामकृपा इच्छित फल दानि । रामकृपा मुद मंगल खानि ॥ रामकृपालहि सुर सुरराज । निरभय बिलसत सहित समाज ॥ रामकृपाते दम्पति पूर्ब । इत पायो निजतपफल गूर्ब ॥ रामकृपाते विश्वामित्र । पूर्णकियो मख परम पवित्र ॥ रामकृपाते गौतमबाम । लही पूर्ब तन अति अभिराम ॥ रामकृपाते सुरसरि बार । केवटतरो सहित परिवार ॥ रामकृपाते जनक बिदेह । निजपण पूरण लह्यो सनेह ॥ रामकृपा लहि राम प्रयुक्त । भेनिज धर्म कर्म सों युक्त ॥ रामकृपा ते कोशल ग्राम । रामनिवासभयो छबि धाम ॥ रामकृपालहि परम बिचित्र । भो निषादअति पावन मित्र ॥ रामकृपाते तीरथनाथ । पाइनाथ पद भयो सनाथ ॥ रामकृपाते ऋषि बाल्मीक । हे चाहत देख्यो सो नीक ॥ राम कृपाते चित्र सुकूट । निरख्यो बिष्णु चतुरधाजूट ॥ रामकृपा ते असुर बिराध । फिरि गन्धर्ब भयो निरबाध ॥ रामकृपाते ऋषिसरभंग । लह्यो परमपददाहि सुअंग ॥ रामकृपाते ऋषि समुदाय । दण्डकबसे अराक्षस पाय ॥ रामकृपाते तर्‍यो जटाय । बस्योकबन्ध पूर्बपदजाय ॥ रामकृपालहि आनँदओक । शवरी पायो उत्तमलोक ॥ रामकृपा लहिके सुग्रीव । राज्यपाय भे कपि कुलसीव ॥ रामकृपाते सुकपिउदार । जायबायु सम बारिधिपार ॥ रामकृपा गुणि सीतहि देखि । लङ्कादाहकियो अवरेखि ॥ राम कृपाते फिरि फिरि आय । खबरि सुनायो श्रुति सुखदाय ॥ रामकृपाते कपि जयहेत । बांधतभे सागरमें सेत ॥ रामकृपाते लक्ष्मण बीर । बध्यो मेघनादहि रणधीर ॥ रामकृपा ते रावणआदि । राक्षस मुक्तभये अघबादि ॥ रामकृपालहि बिस्वेबीश । भयोबिभीषण लङ्काधीश ॥ रामकृपाते अवध अधार । फेरिभरतभो मंगलचार ॥ रामकृपाते धनपति केरि । पुष्पक पायो आनँद मेरि ॥ रामकृपाते भरतसप्रेम । रामहिलखे

पालि ब्रत नेम ॥ रामकृपाते सहितबिबेक । पुरजन लखे राम अभिषेक ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्या
ज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरा-
त्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणि-
देवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे
सौप्तिकपर्बणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

सौप्तिकपर्ब समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने मे छपी
माह फरवरी सन १८८१ ई०

महाभारत दर्पण ॥

ऐषिकपर्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिराव्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ भूकुल भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान। तेहिभरतहि भजिभनत यह भाषाभार्त्त महान ॥ जेहि रघुबरप्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरिभारत रचत भाषाबिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथभये सारथि परमअनूप । तेसारथ रचिदेहिं यह भारत भाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिवरबीर रामपरमप्रिय पारषद । मंगलमूरति धीर भारत स्वस्थध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनिअच्छ उदधि उलंघन समयकी। भारतसमुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहततस्यो॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ धृष्टद्युम्नको सारथी बचि सौप्तिक निशि माह । भोरभये चलिजातभो जहां धर्मनरनाह ॥ जयकरी ॥ जाय धर्म भूपतिकेपास । कहतभयो लैऊबिउसास ॥ यहिनिशि द्विज सुत कियो अनर्थ । बधिडारयो तौ सेना व्यर्थ ॥ द्रुपदसुताके सुत सब जौन । युगभट द्रुपदतनय बलभौन ॥ युधामन्यु उत-मौजाआदि । सबको बधभो करतप्रमादि ॥ सब हय गज योधा समुदाय । बध्यो द्रोणसुत निशिमेंजाय ॥ सोवत जागत निशि में मीति । सबकहँबध्यो विप्र तजिनीति ॥ दियोशिविरमें आगि-

लगाय । बन सम काट्यो भटन बनाय ॥ रहे द्वारपर ठाढ़े तत्र । कृप कृतवर्म्मा. गहि धनु पत्र ॥ द्विजसों भागि बाचि तेहि ठौर । गयो बध्यो तेहि तिन गहिगौर ॥ यथा तथा भगि दैवाधीन । बचे एक हम दुखसों क्षीन ॥ यहसुनि धर्म्मनृपति मति ओक । गिरो भूमिपर गहि सुतशोक ॥ तब सात्वकि गहिलियोउठाय । कियो प्रलाप भूप बिलखाय ॥ होत अनर्थ अर्थ के हेत । है अनर्थको अर्त्थ निकेत ॥ यह जय यमजाया सम घोर । भयो अजय सो अधिक अथोर ॥ सेवक सखासुहित सरदार । मरे सुसनबन्धी परिवार ॥ अब ले राज्य करब का हाय । इमि कहि रोये धर्म्म अचाय ॥ दोहा ॥ भीष्म द्रोण कर्णादिके रणसमुद्रको जैन । द्रोण तनय अधरम सरित मधि बूड़ी मम सैन ॥ पिता बन्धु पितृव्य गण को सुनि मरण मलान । पाञ्चाली कैसेसहिहि सुतबध बज्र समान ॥ भूरि प्रलाप प्रकार यहि करि प्रालब्ध निहारि । नृपति युधिष्ठिर नकुल सों बोले समय बिचारि ॥ सोरठा ॥ तुम कृष्णा पहँ जाय कहो भयो अनरथ जितो । कहि भावी समुझाय लै आओ पुत्रनलखै ॥ द्रुपदसुताके ओक नकुल गये चढ़ि सुरथ पर । बन्धुन सहित सशोक भूप गये रणअजिरमें ॥ रोला ॥ जाय तहँलखि मरे पुत्रन कियेरोदनभूरि । भे बुझावत नृपहि सात्यकि भीम दुखसोंपूरि ॥ सखासुहितन मरो लखि नृप रहे शोचतयत्र । बिकल कृष्णाहिं सुरथपहँ ले नकुल आये तत्र ॥ देखि पुत्रन गिरी महिपर रुदत करि हाहाय । भीम गहि बैठाय श्वासित किये स-बिध बुझाय ॥ करतरोदन धर्म्मनृपसों कही कृष्णाबाम । द्रोण सुतको होय बध तो जियोंमैं यहियाम ॥ कियो जैसो कर्म कुत्सित लहै तिमि फल तासु । नतरु गे जहँ सुवन तन तजि तहां जैहौं आसु ॥ धर्म नृप सुनि कहे गुरुसुत गयो अब कढ़ि दूरि । धर्म्म-चारि णिधीर धरुबिधिअंक अमिटबिसूरि ॥ बचन यहसुनिद्रुपद तनया कही भीमहिं टेरि । कीचकहि तुम बध्यो मम हित बधो

बिप्रहिहेरि ॥ परममणिहै तासु शिरमें ताहिबधि सोल्याय। भूपके शिरकरो राजित मोरदुख तौ जाय ॥ भरो अति दुख वचन नहिं सहिसको भीमं अमान। चढ़ो रथपर नकुल कहँ करि सारथी बलवान ॥ धनुष टंकारत बिशिखगहिगुणत विक्रमघोर। बेगसों हँकवाइरथभो चलत उत्तरओर ॥ भीमरथ चढ़िगयो जब तब कृष्णकरि अनुमान। धर्मनृपसों कहतभे इमिसुनो भूपसुजान ॥ क्षीण अति सुत शोकसों भटभीम गहिरिसचण्ड। गयोद्रोणिहिं बधनसों बह बिप्र सुभट उदण्ड ॥ अस्त्रउत्तम ब्रह्मशर है द्रोण दीन्ह्योंताहि। भाषि कबहूं मनुजपर मतितजेहु यहिजयचाहि॥ द्रोणसुत कछु दिवसमें नृप सुनो ममपुर जाय। कछू दिन रहि भयो हमसों कहत अवसरपाय ॥ ब्रह्मशरहै अस्त्र परमअमोघ हमसों लेहु। तासु प्रतिउपकारमें निजचक्र हम कहँ देहु ॥ कह्यो तब हमअस्त्र आपन देहु मतितुम मोहि। चक्र तुमकहँ देतहैं हमलेहु श्रेयदजोहि ॥ भाषि इमि निज चक्रहम धरिदये तबउठि बिप्र। बामकरसों चक्रगहिकै लगोकर्षण क्षिप्र ॥ उठो नहिंतबलगो कर्षण पाणि दक्षिणलाय। थकोबलकरि उठोनहिं तबरहो शीशनवाय ॥ विप्रसों तब कह्योहम सुनुविप्र अर्जुन राम। शाम्ब गदन प्रद्युम्न मांगे चक्र ममअभिराम ॥ प्राणसम प्रियमोहिंते नहिं कबहुंमांगे जौन। कियेबिनु अनुमान शठसम आइ मांगेतौन ॥ वचनसुनिमम द्रोणसुत इमिकह्यो गहि साति भाव। सुनोचाहि अजेयहूबो कह्योहम यहिछाव ॥ हेममणि दै कियोतब हमबिदाताको भूप। सुनोताते द्रोणसुतहै कुटिलताको रूप ॥ भाषि इमि निजसुरथपर सबपांडवन बैठाय। बेगसोंतहँ गये जहँगो भीमओज बढ़ाय ॥ द्रोणसुतकी लेतसुधिगो भीम सुरसरितीर। हांकिअश्वन साथहीतहँगयो केशवधीर ॥ ऋषिन सह तहँरहेबैठे ब्यासमुनि तपधाम। रहोऋषिसम तहांबैठो बीर अश्वत्थाम ॥ द्रोणसुतकहँदेखि टेरत भयो भीम प्रचारि। देखि

आतन सहित भीमहिं द्रोणतनय बिचारि ॥ मानिअनरथबाम करसों गहि इषीक अरोग। दिव्यअस्त्र सुब्रह्म शरको करिअ-मोघ प्रयोग॥ कुरुअपाण्डवभाषिइमि तेहितजतभो गहिडोर। चलोसो दिशिज्वाल जालन पूरिकैतेहिठौर॥ लोकनाशकअस्त्र सो लखि कृष्णकरि अनुमान। दुचित्तह्वैके पार्थसों इमि कह्यो सहित बिधान॥ ब्रह्मशरजो अस्त्रहै तोहियेमें तेहिक्षिप्र। अस्त्र प्रसमन हेत त्यागो नतरु जीततबिप्र॥ कृष्ण के सुनि बचन पारथ उतरि रथसों भूप। देवगुरुहि मनाइ त्यागत भयो अस्त्र अनूप॥ चलो गर्जत ज्वालमाला बमतअस्त्र बिशेष। भिरेमग में अस्त्र युगते यथा तक्षकशेष॥ भई अतिशय घोर धुनितहँ प्रलयकाल समान। भईकम्पितभूमिऋषिगण भरेभीतिमहान॥ जानि जगको नाशतेहि क्षण सुमुनि नारद आय। उभय अस्त्रन मध्य ठाढ़ेभये ओजबढ़ाय॥ उभय अस्त्रन मध्यह्वै इमि कह्यो सुमुनि अभर्म। पूर्ब धनुधर भयेतेनहिं कियो ऐसोकर्म॥ तज-तकोऊ अस्त्र यह तुम कियो साहस कौन। नाशह्वै है लोकको यहभयो कारजतौन॥ पार्थनार्दहि देखितहँ अरुबचनसुनिनिर-धारि। करतभे निजअस्त्र बरको संजहार बिचारि॥ संजहार सुअस्त्रको करिकह्यो मुनिसोंटेरि। बिप्रकेबरअस्त्रको अबशमन कीजैहेरि॥ द्रोणसुत निजअस्त्रको नहिंसको करिसंहार। दीन मनह्वै व्यासमुनिसों कहतभोयहिचार॥ भीमको भयपायकै निज प्राणरक्षण हेत। शीघ्रतासों तज्योहम यहअस्त्र ह्वै गतचेत॥ बध्योदुर्योधनहि करिकै भीमसेन अधर्म। तज्योताते अस्त्रयह हमजानि दुष्करकर्म॥ दोहा॥ नाशहेत पाण्डवनके तज्योअस्त्र यहचण्ड। संजहार नहिं रुचत यह बिनु बधलखे अखण्ड॥ व्यासकह्यो सबअस्त्रमें पारथ परम प्रबीन। करिहि शमन यहि अस्त्रको त्यागिशस्त्र अति पीन॥ अरुव ब्रह्मशरअस्त्रसों बधो जातहै यत्र। बिप्रसुनो द्वादशबरष बारि न बर्षत तत्र॥ ताते

अब यहिअस्त्रको करौशीघ्र संहार। तुम्हें न बधि हैं पाण्डु सुत कर्त्ता बिशद बिचार॥ चौपाई॥ तोशिरमधि जोहै मणिनीकी। सोप्रिय द्रुपदसुताके जीकी॥ बिनुबधकीन्हें सोमणि पैहैं। तो पाण्डव सुखसों फिरिजैहैं॥ द्रोणतनय बोलो यहसुनिके। मम मणि चहतकहा वै गुनिके॥ मणिसमूह कुरुपतिके घरमें। सो लहि तोष न आनत उरमें॥ हमनिज मणि नहिंदेन उमाहैं। पाण्डव करैंजौन कछुचाहैं॥ नहिं यह अस्त्र शमनके लायक। तातेकहत सुनो मुनिनायक॥ गर्भउत्तराको जो तामें। प्रेरित करत अस्त्र जयकामें॥ यह सुनि व्यासकह्यो करुसोई। मति करुआन अनर जेहिहोई॥ व्यास बचनसुनि द्विजमुदलीन्हों। अस्त्रगर्भमधि प्रेरित कीन्हों॥ कृष्णचन्द्र यहगुणि तहँहँसिकै। कह्यो बिप्रसों अनुपम लसिकै॥ सुताबिराट नृपतिकी जोई। पार्थ सुवनकी तियासो होई॥ सोहै गर्भवती महमानो। हैइमि भाषै बिप्र सयानो॥ कुरुकुल के परिक्षीण भयेपै। लहिसुपास कछु मास गयेपै॥ ह्वैहै पुत्र परीक्षित कीजो। नाम परीक्षित ताकहँ दीजो॥ तातेबंश वृद्धिके कारज। है भवितव्य परीक्षित आरज॥ बिप्रबचन नहिं मिथ्याह्वैहै। प्रगटि परीक्षित आनँद ग्वैहै॥ दोहा॥ कृष्णचन्द्रके बचनसुनि कह्यो द्रोणसुत दुष्ट। व्यर्थ न ह्वैहै अस्त्र यह गर्भ न ह्वैहै पुष्ट॥ यह सुनिके केशव कह्यो अस्त्रन होइहि ब्यर्थ। प्रापि उदरमें मृतक सम गर्भहि करी समर्थ॥ फेरि गर्भ चैतन्यहवै ह्वै दीर्घायुषपर्म। समय पाय होइहि प्रगट पालक मही सधर्म॥ चौपाई॥ तुम पापात्मा सहसा कर्मी। बालघातकृत परम अधर्मी॥ अबयहि अधरम को फलपैहै। तीनिहजार बरष इतरैहै॥ निर्जनथलमें फिरि है व्याकुल। रहिहै महारोगसों आकुल॥ अर्जुनसुतको पुत्रअमाना। प्रगटिपरीक्षित नृपबलवाना॥ कृपाचार्यसों धनुबेधि लैके। भोगिहि भूमि बिशदयश जैके॥ बिप्रअमोघ अस्त्रकेभर

सों। दाहित गर्भभरो दुखधरसों॥ हमतेहि जीवित करि यश लेहैं। पाण्डुसुतनकहँ आनँद देहैं॥ ममतप विक्रम लखु द्विज दोषी। प्रगटकरत गति अमल अनोषी॥ अश्वत्थामा विप्रहि ऐसे। कृष्णकहे जबबचन अनैसे॥ तबमुनिब्यास बिप्रसोंबोले। तुमहठ गहि शतपथ तजिडोले॥ तजिसुधरम अति अनरथ कीन्हों। याते कृष्णरोष अति लीन्हों॥ अब मणिदैके आनँद लहिकै। बसोबिपिनमें मुनिब्रत गहिकै॥ द्रोणतनय यह सुनि हित चीन्हें। सुमणि पांडुसुतके करदीन्हें॥ मणिदै बिपिनगयो द्विजआरय। मुनिननौमि पाण्डवकरि कारय॥ हांकिबेगसों रथ मनभाये। सादरद्रुपदसुता पहँ आये॥ रथतेउतरि कृष्ण सह शोचित। बैठे अतिदुख गहे अरोचित॥ दोहा॥ लहि आज्ञा नृपधर्मकी भीमसेन बलभौन। द्रुपदसुताके पाणिमें देतभयेमणि तौन॥ मणिदैके इमि कहतभे तजोशोक धरिधीर। क्षात्र बंश को धर्मगुणि मतिउपजावो पीर॥ हमवधिकै दुश्शासनहिं पियो रुधिर लहिचैन। शकुनि कर्ण दुर्योधनहिं बध्योसबन्धु ससैन॥ जयकरी॥ जायद्रोणसुत बीरहिजीति। मणिलीन्हें बिक्रमसोंरीति॥ बध्यो न गुरुसुत बिप्रबिचारि। मणिलै जानदियो प्रणधारि॥ मणिलखि मोदि द्रौपदीबाम। कहीधरैंमणि नृपअभिराम॥ तब नृपमुकुट मौलपर राखि। शोभितभयो शोचसब नाखि॥सुमणि धारि नृपधर्म बिचारि। कहेकहो केशवनिरधारि॥ द्रौपदेय अति प्रबलअमान। धृष्टद्युम्न अतिशयबलवान॥ तिनकहँमारि द्रोण सुत एक। बध्यो असंख्यन सुभट सटेक॥ यहगुणि मोहिंहोत अति शोच। कतमम सुभटगये कैपोच॥ यहसुनिकह्यो कृष्ण मतिमान। करिशिवकी अस्तुति मनमान॥ द्विजशिवकी अनुकम्पा पाय। सिद्धकियो यहकर्म अन्याय॥ पायअमरता बिक्रम वान। कियो भटनको नाश महान॥ इमिकहि केशव सरस सुभाव। बिधिवत कह्यो शम्भु परभाव॥ सर्बभूतगणको प्रभुशम्भु।

अन्त मध्य अरु प्रथम अरम्भु॥ वेधा जगरचना अवरेखि। सबके प्रथम गिरीशहि देखि॥ कह्यो रचो भूतनसविधान। सो सुनिकै शिवकरि अनुमान॥ करनलगे तप जलमेंपैठि। बहुत काल बितयेतहँबैठि॥ तब बिचारि फिरि शिवढिगजाय। कह्यो पितामह प्रेमबढ़ाय॥ दोहा॥ शीघ्र सृष्टि रचनाकरो तब बोले शिवबैन। ममअग्रज कोउ होइ नहिं तबहमरचैं सचैन॥ एव-मस्तु तबबिधिकह्यो सोसुनिशिव हर्षाय। परमप्रजापति सप्तदश प्रगटकिये मनलाय॥ ते सब बिरचे चारिबिधि भूतग्राम समुदाय। प्रगटि क्षुधितह्वैतेचले प्रजापतिनकहँखाय॥ भीतिप्रजापति भागितब बिधिसोंबोलेजाय। शीघ्रदेहु भोजनइन्हैं तबहम बचत सचाय॥ तब बिचारिकरि पितामह रचेअहार सनेत। दयेथावरन औषधी अन्त जंगमनहेत॥ कछुदिन में कढ़िसलिल ते देखि प्रजन की वृद्धि। रिसगहिकै बर्द्धित किये लिंग देतजो सिद्धि॥ तासों भोसब लोकमें संकीरन सुनु तात। तब बिरञ्चिशिवसों कह्यो बचन परम अवदात॥ किये कहा तुम सलिल में करि निवास चिरकाल। बर्द्धित कीन्हें लिंग निज कारण कौन कराल॥ शिवउवाच॥ सकल प्रजा औरन रच्यो कारज कहा हमार। अब अबते ह्वै ह्वै प्रजा किये लिंग व्यापार॥ इमि कहिकै उर्जवत गिरि पहुँगे श्री ईशान। तहां जायकै करत भे तप अति उग्रमहान॥ तहां पृथक् कीन्हें सकल मख गुणि बेद प्रमान। भागयोग जे देवता अरु सब हविष बिधान॥ यज्ञफलदगुणि शम्भुकहँ सुरनदये नहिं भाग। तब शिवधनु कल्पितकिये पूरिजयद अनुराग॥ क्रियायज्ञ गृहयज्ञ अरु लोक यज्ञ नृपयज्ञ। लोकयज्ञ नृपयज्ञसों धनुबिरच्यो सरबज्ञ॥ चौपाई॥ पांचकिष्कुमित गरुई धनुषा। बषटकारजाकी ज्यापरुषा॥ गहि सोधनुष शम्भुरिस पूरे। गये यजत जहँ सुरगण रूरे॥ देखि पिनाकिहि माहितेहिक्षनमें। कम्पितभई डरेसुरमनमें॥ डरेपवन

सबगवन भुलान्यों । अनरथ होन चहत सबजान्यों ॥ पावक सहित यज्ञभयपागो । ठहरि न सको मृगाह्वै भागो ॥ भागि जाय दिवमधिसो राजत । सोई रूपधरे छबिभ्राजत ॥ तहां शम्भुप्रभु गौरव कीन्हों । सुरन धनुष के मधि करिलीन्हों ॥ बषट्कार मयज्या अति भाकी । बाणीकाटि दई तब ताकी ॥ तब सुरयज्ञ सहित मुदराखे । शरणागत आरत ह्वै भाखे ॥ तब करि कृपा शम्भु प्रभु मानद । जलमधि दियो क्रोधसो सानंद ॥ सोवह क्रोध अग्नि ह्वै लसिके । शोषो करत बारि तहँ बसिके ॥ ताते सबमख ईश्वर अरपन । करिबो नीक अ-बिघ्नक बरपन ॥ प्रभुके कोप किये सब व्याकुल । होत कृपा-लहि मुदसों आकुल ॥ ताते शिवप्रसाद लहिराजा । बध्यो द्रोणसुत सेन समाजा ॥ कृष्ण कृपालहि पाण्डव बाचे । राम कृपा मुद मंगल राचे ॥ रामकृपा ईछित फलदाता । रामकृपा निति सबथर त्राता ॥ राम कृपा सब ठौर सहाई । रामकृ-पा सुत पितु हित भाई ॥ रामकृपा रुज आपद हरता । राम कृपा बुधि बिभ्रम भरता ॥ रामकृपा सन्तति सुखदायक । राम कृपा सम्पति पद चायक ॥ रामकृपा यशकीरति करणी । राम कृपा भवनिधिकी तरणी ॥ रामकृपा दुख दारिद दरता । राम कृपा बिनु चिन्ता करता ॥ रामकृपा धीरजको धरता । रामकृपा कृत सतपथ चरता ॥ रामकृपा कर्त्ता गुरुनामी । रामकृपा कर्त्ता बरधामी ॥ रामकृपा नितिशुचि मति पोषति । रामकृपा कुत्सित मति शोषति ॥ रामकृपा कर्त्ताबर पण्डित । रामकृपा कृतमहिमा मण्डित ॥ रामकृपा दायक पटुसंगी । रामकृपा प्रदसब रसरंगी ॥ रामकृपा अनुक्षण मति शोधति । रामकृपा कुमतिहि अवरोध-ति ॥ रामकृपा तनरोग न आवत । रामकृपा बपुओज बढ़ावत ॥ रामकृपा प्रद सुबुधि सुस्वामी । रामकृपा प्रदशुन्चि अनुगामी ॥ रामकृपा प्रद पतिब्रत धरणी । रामकृपा गृह सम्पदभरणी ॥

रामकृपा दायक मनभायक । रामकृपायुत सुवन सुलायक ॥
रामकृपा पालनि पण भारी । रामभक्ति देबरधन हारी ॥ दोहा ॥
रामकृपा सत सत्यको नेमनिबाहति श्राम । राम कृपाते सुजन को न्यूनहोत नहिं नाम ॥ रामकृपा ते सुजनको दिन प्रति बर्द्धतभाग । रामकृपा ते सुजन कहँ कबहुँनलागत दाग ॥ रामकृपाते सधत इत कर्म योग ब्यवहार । रामकृपाते मिलत उत उत्तम सुपद उदार ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणे ऐषिकपर्बणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

ऐषिकपर्व्व समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
माह मार्च सन् १८९१ ई० ॥

महाभारत दर्पण ॥

विशोक पर्ब दर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा ब्यासहि रचत भारथ भाषासौमि ॥ भूकृत भूभृत भूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भनत यह भाषा भार्त्त महान ॥ जेहिरघुबर प्रभुके चरित बहु शतकोटि अमन्द । ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचि सुछन्द ॥ पारथ के स्वारथ भये सारथि परम अनूप । ते सारथ रचि देहिं यह भारतभाषा रूप ॥ सोरठा ॥ बन्दौं कपिबर बीर राम परमप्रिय पारषद । मंगल मूरति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरि उच्छलनि अच्छ उदधि उलंघन समयकी । भारत समुद प्रतच्छ भाषा करि चाहत तर्यो ॥ जनमेजयउबाच ॥ जयकरी ॥ सुनि दुर्योधनको बध भेद । किये कहा धृतराष्ट्र सखेद ॥ कृप आदिक त्रयसुभट अभर्म । किये कहा सह बन्धुन धर्म ॥ वृद्धनृपति की दशा निरेखि । कहेकहा संजय अवरेखि ॥सुनि वैशम्पायन मतिमान । जनमेजय सों कहे बिधान ॥ बज्रपात सम सुतबध कर्णि । शोकाकुल नृप बचन बिबर्णि ॥ बैठिमूक ह्वै शीश नवाय । शोचत सुतन बिकलता छाय ॥ देखि कह्यो संजय मतिऐन । नृपकत शोचत भये अचैन ॥ जिमि करतब्य प्रेतबिधि जौन ।

धसि गिरिदरी गिरै होइतन भंग । तौन यथा पछितात नृप तुम शोचत तेहिरंग ॥ प्राप्त होइ नहिं बिपतिसों पहिले करै बिचारि । सो पण्डित आये बिपति रहै सुधीरज धारि ॥ नृप इतने पै भूपसों बोले बिदुर सुबैन । भूपसुनो यहि लोकमें मरिबो अचरज हैन ॥ समजेहिं करषत जेहियुगुति सो तिमि तनतजि जात । उक्ति नरन की व्यर्थसब काल युगुतिके पात॥ जातयुद्ध में बचत सो घरवारे मरिजात । सब प्रमाण अरि जियत हैं नहिं प्रमाण टरिजात ॥ दिनलहि कर्षत जीव तिमि कालहि कछू न छोह । काल न काहू को अहित नहिं हित त्यागोमोह ॥ जिमि रजतृण आदिकनको है संयोग बियोग । मारुत बश तिमि दैवबश है जीवनको भोग॥प्रथम और फिरि तो भये फेरि औरके और । नहिं ते तुव उनके न तुम कौन शोच को ठौर ॥ मरेस्वर्ग जीते सुयश नीको उभय प्रकार । लहेस्वर्ग तोसुवन नृप तजोशोच संचार ॥ यथा करत है कर्म नर तथा लहत फलथाय । सुखपावत करि शुभकरम दुखपावत करिपाप॥ मित्र आपनो आपुही आपुहि बैरीरूप । आपुहि साक्षी आपको कृत अकृत अनुरूप ॥ कियो होतहै प्रगट नृप अकृतन करत उदोत । तुम समानकी मति पलटि कियो कर्म फल होत ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ बिदुर तिहारे बचन सुनि दूरि भयो मम शोच । और सुन्यो चाहत कछू कहो तौन मतिओक ॥ बिनु इच्छितको प्राप्त अरु इच्छितकोमिटि जाब । किमि तेहिदुखसों छुटतजिमि द्विरद दशनको दाब ॥ बिदुरउवाच ॥ जब इच्छितटरि जातहै बसन्त आपदा आय । तब धीरजधरि पटु पुरुष सहि दुख देत दुराय ॥ सुखलहि भोगत शान्तिगहि नर प्रवीण तजिदम्भ । है असार सब सार नृप जिमिकदलीको खम्भ ॥ सुनो होइ धनवानकै निधन मस्त सब लोग । यश अपयश रहिजातहै मलिन प्रशस्त प्रयोग ॥ स्वर्ग नरक सुख दुख मिलत कर्महिके अप-

चार। मृण्मय पात्रनको यथा है आधे अबिचार॥ मृत्तिमानभो पात्र तब फूटत सुनो निदान। सूखो ओदोपाकिकै लहि बहु दिन परमान॥ तिमि गर्भहि कै जन्मिकै बाल युवाकै बृद्ध। देह नशाति सबकी सुनों आदि सुमन ऋषिसिद्ध॥ कर्मभोगसों सब गतिन करत लोक संचार। यह शाश्वति गति समुझि नृप तजो शोकको चार॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र नृप कहे कहो समुझाय। केहि प्रकार बसिगर्भमें प्रगटहोत सबआय॥ बिदुरउवाच॥ सुनो भूप मिलि रेतरज होत बुद्बुदाकार। मांस पिण्डकै होत फिरि सकल अंग उपचार॥ क्रमसों पचयें मास नृप पुष्ट होत सब अंग। तब प्रविशतहै जीव तहँ लिये कर्म फल संग॥-बसि तहँ दुख सहि समय लहि बात बीति क्रमपाय। ऊर्द्ध चरण अध शीशकै कढ़त योनि मग आय॥ क्रमसों इन्द्रिन सहित फिरि पुष्ट होतहै तौन। बिषय भोगमें लिप्त फिरि होत सुनो मतिभौन॥ कामक्रोध लोभादि बश कितने करत कुकर्म। कितने ज्ञानी सुपथ गहि साधन करत सुधर्म॥ मूरुषपटु निधनी धनी अरु कुलीन अकुलीन। मांस रुधिरमें भेदनहिं कर्म प्रशस्त मलीन॥ यहि बिधि सुनि गुणि समुझिजे सतपथ सहित बिचार।उत्तम गतिते लहतहैं दुहुंदिशि आनँदचार॥ धृतराष्ट्रउवाच॥ गहन धर्म परचरत नर जिमि गहिबुद्धि बिधान। पृथक्पृथक् अबसो कहौ बिदुर बिदित मतिमान॥ बिदुरउवाच॥ तौ प्रश्नोत्तर कहत हम प्रभु स्वयंभुवहि नौमि। यथा कहत संसारकी गति जिनकी मति सौमि॥ भूप सुनो संसारमें अति भीषम बनमाह। प्रविशो कोऊ बिप्र जहँ बसत घने मृगनाह॥ गैबर ऋक्ष बराहगण सो आकुल बनतौन। निबिड़ भयानक देखि अति डरो बिप्रमतिभौन॥ तबलागो इतउत लखन देख्यो तहां बिबेक। बँधोवृक्षमो रज्जुसों माहेश्वरि तियएक॥ पंचशीरषा नाग फिरि देख्यो शैलसमान। लख्यो द्विरदषटमुखचरण

द्वादशको बलवान ॥ बम्भोलतनमधि चलतसो मन्द मन्द गहि ठान । ताहिदेखि डरिकूपमधि गिरो बिप्र मतिमान ॥ तामधि लपटि लतानसों रहीबीचही तौन । ऊर्द्धचरणभो शीशअधबिनु हरि काढ़ैकौन ॥ सुनोतहांकी बिपति तहँ रहाभयानक ब्याल । सो बिप्रहिलखि डसनको लायो घातकराल ॥ और सुनो तहँ मधुप हे लाये मधुकोछात । तेउड़िउड़ि बोलत भयद करत महाउतपात ॥ श्वेतकृष्ण द्वैमूषतहँ काटत बल्लीमूल । जामधि लपटो द्विजपरो खटकिरहो बिनुकूल ॥ तहांगिरत मधुछातसों मधुकी धाराभूप । ताहिबदन पहलेपिवत भयो कृतारथरूप ॥ ऐसेहुपै सोबिप्रतहँ जियोचहत बहुकाल । जीबेकी आशा नहीं छूटति हेक्षितिपाल ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहे अहो अति खेद । कौनदेशवह बिप्रको बिदुर बुझाओ भेद ॥ कहेबिदुरनृप सुनहुसो बिपिनगहन संसार । जरायुवतिसो ब्यालवह ब्याधि सुनो उदार ॥ बिप्रजीवहै कूपतन आयूलता महान । कूपमध्य जो ब्यालसो कालकराल अमान ॥ संवतसरसो द्विरदहै ऋतु मुख द्वादशमास । मूषक निशिदिन तौनहै सुनोभूप मतिरास ॥ कामादिकते भवरहै कामाशा मधुतौन । नृपयहि बनपरि सुखित सो आशहिजीतै जौन ॥ यहसुनिकै धृतराष्ट्रनृप कहेकहौ फिरि तात । महागहन संसारकी कछुबार्त्ता अवदात ॥ कहेबिदुरयह बचनसुनि भूपसुनो मनलाय । रूपवान चर अचर जे प्रगटत हैं इतआय ॥ शब्द स्परश अरु रूपरस गन्धमये सबहोत । ब्याधि जराबशहोतसब सबकोनाश तनोत ॥ रथशरीर अरु सारथी शीलसुनो मतिमान । कर्म बुद्धिहै बागसब इन्द्री तुरँग अमान ॥ जातजितै इन्द्रीतितै गौनकरतहै जौन । यहि संसार सुचक्र में भ्रमोकरत है तौन ॥ जोरोकत पै नहिं रुकत इन्द्री यह मुहजोर । सोऊ भरमत पै न तेहि ब्यापत मोहअथोर ॥ तातेसर्ब प्रयत्नकरि इन्द्रिन जीतत दक्ष । रहतसदा सन्तुष्टसो

मोदत दोऊपक्ष ॥ जेनाहिं जीतत इन्द्रियन करत लोभ बशकाज। भूपति आपुन के सरिस ताको होत अकाज ॥ दुःख व्याधि कोएकहै औषधज्ञान महान । दुःखव्याधि बरधित करन कुपथ बिसन अज्ञान॥ जेनवसाधन परमयह शान्ति रज्जुअवदात । मानस थितिरथ चढ़िचरत तेउत्तम पदजात॥ भूतमात्रकहँ महाभय मरण सुनोनृपमर्म । तातेसिगरे भूपपहँ दयाकरबअतिधर्म ॥ चौपाई ॥ ऐसेबचन बिदुरके सुनिकै । भूपति मरणसुतन कोगुनिकै ॥ गिरेभूमिपर मूर्च्छित ह्वैकै । दुचितभये सबसोगति ज्वैकै ॥ भरसींचत गुलाबकेपानी । बीजन किये परमहितजानी ॥ कछुक्षण गये चेति नरनायक। कियोबिलाप महादुख दायक ॥ नृपबिलाप सुनिव्यास मुनीशा । कहेशोक त्यागो अवनीशा ॥ मृत्युलोक यहइत गतिऐसी । नचति रहति निति मृत्युअनैसी ॥ जातेमरेन सोबिधिलोचत । जबमरिगयो न तब बुध शोचत ॥ नाहिंतुम प्रथम मरनबिधिवारे । अबकत शोचतभये दुखारे ॥ तुमतो भूपपरम मेधावी । मतिहि पलटि प्रगटतिहैभावी ॥देवनको ईछित जोकारज । सोहम प्रगट सुने सुन आरज॥ हमहेगयेसभा सुरपतिके । तहांरहे सुरमुनिवर मतिके ॥ तहांआइ पृथ्वी सुरगनसों । कहत भई अतिमोदित मनसों ॥ बिधि ढिगममकारजकरिबेकी । कियेप्रतिज्ञा धुरहारिबेकी ॥ करौ शीघ्रसोसुमनसमाजा। यहसुनिबिष्णुकहे सुनुराजा ॥ अबतो काजकरौकछु दिन में । जोदुर्योधननृप नृपतिनमें॥ लरिलघुभारकरिहिसोपरणी।यह सुनिगई मुदितह्वैधरणी ॥ दोहा ॥ बिधि सुर सुरपति बिष्णुको यह सम्मतहोभूप । कहौतौन कैसेटरै युद्धभयानकरूप ॥ हैकलियुग को अंशनृप तौसुत जेठोजौन । क्षात्रबंशको नाशयहहठि करवायोतौन ॥ कर्णशकुनि दुश्शासनो ताहीके अनुरूप । तथाहोत परजासखा यथाहोतहै भूप॥ रोला॥ सुमुनि नारद सबिधि जानत भूप यह वृत्तान्त। भयो दुर्योधन नृपति सबजगतको किरतान्त॥

सुनोताते धीरधरि अब तजौशोक सरूप । पाण्डवन कहँ पुत्र जानो धर्मशील अनूप ॥ शास्त्रबिधिसब मर्म ज्ञाता धर्मभूप स-धर्म । करिहि सेवनआपको नित सहित आदर पर्म ॥ शोकबश जो मरोगे तुम वृद्ध दम्पति तात । धर्म नृप तौ शोक गहिनहिं राखिहैं निजगात ॥ धर्म नृपपहँ दया गहिकै सुहृदसुत अनुमानि । भूपराखौ प्राणमम मतमानि बिधिगति जानि ॥ धीरधरि तजिशोक अब करतब्य तपचिरकाल । परम प्रज्ञा बिपिन मधि बसि सुनतिमुनि गणनाल ॥ ब्यासके येबचन सुनिनृप कहेकरि अनुमान । आपकोमत समुझि अबहम सहबशोक अमान ॥ धीरधरिकै समुझि बिधिगति करब धारणप्रान । पूर्बइत कृत कर्मकोफल भयो और न आन ॥ दोहा ॥ भूपतिके येबचन सुनि ब्यासमुनीश महान । कहिनृपसों निज आशरम गेहै अन्तर्द्धान॥

स्वस्तिश्रीकाशिराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिद्वेवनकविनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेबिशोकपर्ब्बणिप्रथमोध्यायःसमाप्तः ॥ १ ॥

बिशोकपर्ब्ब समाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
माह मार्च सन् १८९१ ई० ॥

महाभारतदर्पणे ॥

स्त्रीपर्व्वदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करि नरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा ब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ भूकृत भूभृतभूभरण भूस्वामी भगवान । तेहि भरतहि भजि भणत यह भाषाभारत महान ॥ जेहिरघुवर प्रभुके चरितबहुशत कोटिअमन्द । ताहि सुमिरि भारतरचत भाषाबिरचि सुछन्द ॥ पारथके स्वारथ भये सारथि परमअनूप । ते सारथ रचिदेहिं यहभारत भाषारूप ॥ सोरठा ॥ बन्दों कपिबरबीर रामपरम प्रियपारषद । मंगलमूरति धीर भारतस्वस्थ ध्वजस्थबर ॥ सुमिरिउच्छलनि अच्छ उदधि उलंघनसमयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषाकरि चाहततरचो ॥ दोहा ॥ जेहिसकलाकी शुचिकला सकलाइस्त्रीभेद । ताहिसुमिरि इस्त्रीपरब भाषारचत अखेद ॥ जनमेजयउवाच ॥ चौपाई ॥ ब्यासगये ह्वै अन्तरधान । तबका कियो भूप मतिमान ॥ अरुपाण्डव जो किये सचाय । मुनिबर सोसब कहौ बुझाय ॥ सुनि बैशम्पायन अनुमानि । कहे सुनौ नृप धीरजआनि ॥ तेहिक्षण संजय समय बिचारि । कहेभूप अब धीरजधारि ॥ उतचलिकै करिहियो कठोर । कीजैप्रेतकर्म्म अतिघोर ॥ सुनिसंजयके ऐसे बैन । गिरो मृतक समभूप अचैन ॥ महा मोहबश नृपहिनिहारि।बोले बिदुर नीतिनिरधारि ॥ भूपति उचित न ऐसोशोक । समयपाय बिनशत

सबलोक॥ प्रथमअभावहोत फिरिभाव । फिरिअभाव यहआमिट अभाव॥मरोफिरत नाहिं कीन्हेशोच । ताते तजौशोचगुणिपोच ॥ मरि रणमधिते सुरपुर भोग । करतन अब सबशोच न योग ॥ यज्ञदानतपमखकरतार । नहिंतिमिपावतस्वर्गबिहार ॥ जेहिबिधि स्वर्ग लहतहै शूर । औरहि दुर्ल्लभसो सुखपूर ॥ क्षात्रिहि युद्ध परमगति भूप । तज्योशोच धरिधीर अनूप ॥ लहेस्वर्गसब पालि सुधर्म । अबचलिकरौ उचित जोकर्म ॥ नृपयहसुनिकै भूप बिचारि । चढ़ेसुरथपर समय निहारि ॥ भूपतिको अनुशासन पाय । रुदनकरत गान्धारी आय ॥ कुन्तिहि आदि युवति समुदाय । पीड़ित करतप्रलाप अचाय ॥ चढ़िसुरथनपर बिकल अचेत । नृपसँगचलीं जहां रणखेत ॥ रहींजिती कुरुकुलकी नारि । रुदतचलीं अतिदुख बिस्तारि ॥ नृपतेहिसमय रुदनको शब्द । जानिपरो अब बेधत अब्द ॥ जे नृपपत्नी सुखमा पूरि । जिन्हैं न कबहूं देख्यो सूर ॥ तिन्हैंलखैं सबजन त्यहिकाल । व्याकुल रोदनकरत कराल ॥ तजेअभूषण छूटेकेश । एकबसन धारे गतबेश ॥ चलींपयादे सहसनबाम । करतप्रलाप पूरिदुख दाम ॥ नाथ नाथकहि रुदतअचाय । उर शिर ताड़त लाज बिहाय ॥ महामोहबश बिकल अचेत । गिरत उठत उत जैबे हेत ॥ नाथ बन्धु पितु सुत सुतटेरि । रोदतचलीं दुसहदुखमेरि ॥ एकहिंएकजाहि लपटाय । रुदनकरैंअलि शोकबढ़ाय ॥ गहे एक एकनिको पानि । चलैंबुझावत बिधि अनुमानि ॥ यहिबिधि युवतिन सहित नरेश । पुरबाहरभो भरोकलेश ॥ शिल्पीबणिक शूद्र गतरंग । रोवत चले भूपकेसंग ॥ दोहा ॥ इमि पुरते कढ़ि कोश भरि आयो नृपति अचाय । कृप कृतबर्म्मा द्रोण सुत तहां मिलतभे आय ॥ बारिधार चषसों तजत तेत्रय सुभट अखेद । कहतभये धृतराष्ट्र सों गहेमहानिर्वेद ॥ नृपतोसुतबन्धुन सहित सहित सखा बलऐन । क्षात्रधर्म्म प्रतिपालकरि सुरपुर

गयो ससैन ॥ चौपाई ॥ यहिप्रकार भूपति सों कहिकै । ते त्रय योधा धीरज गहिकै ॥ यहिबिधि गान्धारी सों भाषे । तो सुत सुभट स्वर्ग अभिलाषे ॥ लरिनिर्भय धरि धनुबिधि शोधन । करि बिक्रमबधि अगणित योधन ॥ तनताजितजिभिदि आयुध घातन । धारिदिब्य पूरितपरभातन ॥ दाताशूर अभय कृतकारज । सुरपुर बिलसत सुर सम आरज ॥ क्षात्रिहि अति उत्तम गति तैसी । तो सुत सदललहे गति जैसी ॥ निरखि भूप को निधन अनैसो । हमफिरि कीन्हे कारज ऐसो ॥ निशि में पाण्डु सेनमधिधसिकै। ह्वैअतिचपल रुद्रसमलसिकै॥धृष्टद्युम्नआदिक पांचालन। बध्योबध्यो सबदल पणपालन ॥ द्रुपदसुताके सुतन सँहार्‍यो । करि निश्शेष शत्रुदल मार्‍यो ॥ यहिबिधि श्रुतिसुख नृप श्रुतिडार्‍यो । सुनिमुदगहि नृप स्वर्ग पधार्‍यो ॥ शोकत्यागि उर धीरज आनो । क्षात्रधर्मकी बिधि अनुमानो ॥ अबयहसुधि सुनि पांडवऐहैं । लखिहम कहँ फिरि युद्धमचैहैं ॥ तातेअब हम नहिंइतरैहैं । बिदाकरौकहुं अनतैजैहैं ॥ इमिकहि बिदाभये दुख भरिकै । सादर नृपहि प्रदक्षिण करिकै ॥ कृपकृतबर्म्मा अश्वत्थामा । सुरसरि ओरगये बलधामा ॥ दोहा ॥ कृपाचार्य रथहांकिगे हास्तिनपुर तेहि याम । जातभयो निजनगर प्रति कृतबर्म्मा मतिधाम ॥ जातभयो मुनिब्यासके आश्रम सुरसरितीर । सुरथ हांकि अति बेगसों द्रोणतनय रणधीर ॥ अनुदित रबिके द्रोण सुत गोसुरसरि तटभूप । तदनु जाय भीमादि तहँ लीन्हेसुमणि अनूप ॥ रोला ॥ सहित युवतिन वृद्धनृपको आगमन तेहियाम । सुन्योधर्ममहीप बन्धुनसहित दुखसोंछाम ॥ सुभटसात्यकि भट युयुत्सहि सहित बलबुधि धाम । द्रौपदी अरुऔर जेपांचालगण कीबाम ॥ तिन्हैंसह बढ़ि धर्मनृप गेवृद्धनृप केपास । दुहूंदिशिके रुदनधुनिसों गयोपूरिअकास ॥ भयेबन्दतपितहि कहिकहि परस्पर निजनाम। धर्म अर्जुन भीम सहदेव नकुलजय यशधाम ॥

पुत्रबध करता समुझि नृप गहे अतिशय कोप । भयो तिनसों मिलत कीन्हे कोपअघको गोप ॥ धर्मनृपसों मिलो पहिले रोकि दीरघश्वास । फेरिभीमहिं भयोटेरत गुणत कीबो नास ॥ कृष्ण आशयसमुझि नृपकोराखि भीमहिंदूरि । भीमआयसु भयोआगे दये करि भयपूरि ॥ समुझि यहवृत्तान्त प्रथमहिं भीमसम बर गात । लोह प्रतिमा बिरचि लीन्हें रहे अति अवदात ॥ मिलो तासों भूप गहिके दाबिउर कोदण्ड । जानिभीम उदण्ड बलकरि करत भोबहुखण्ड ॥ अयुत गजबल भूपकीन्हों इतोबल तेहि काल । कढ़ोशोणित बदन मग ह्वै लखतअति बिकराल ॥ दाबि प्रतिमहिं परोमहिपर तौन संजय हेरि । पकरि भूपहिसामितकीन्हों उचित सुबचन टेरि ॥ त्यागितेहि गत क्रोधभूपति मरोभीमहि जानि । भीमहाहा भीमकहिभे रुदत करुणाआनि ॥ बिगतक्रोध बिचारि भूपहिकहे केशवबैन । भीमगुणिनृप बध्यो जेहिसोभीम योधाहैन ॥ दुसह बिक्रम आपुको गुणिसमुझि यह वृत्तान्त । लोहप्रतिमा दयोहम मतिशोच कीजैदान्त ॥ दूरिरहिकै आपुसों हैभीमबांचो भूप।भीमकोवध समुझिनृपमति होहु शोचितरूप॥ शास्त्र हौ तुमपढ़े जानत वेदभेद बिधान । सुनेसकल पुराणसी खेराजनीति निदान ॥ योग्य और अयोग्य बिधिजो तासुहौज्ञा तार । करतइमि रिसकरत निजअपराध कौन बिचार ॥ भीष्म हम अरुबिदुर संजय कहेकितक बुझाय । धर्मबिक्रम शूरता में अधिक पांडवराय ॥ बलाबलहि बिचारिकै अरु देशकालनिहा रि । बैरप्रीति बिबेक करिबो उचित नृपहि सिहारि ॥ आपनो अरु औरकोगुणि कर्म दोष अदोष । कियेकोफल लहेपर नाहिं उचितकरिबो रोष॥ कृष्णके येबचन सुनिकै भूपकरि अनुमान। कहेकेशव कहत तुमसों सांचसबनाहिंआन ॥ नेहबश परिपुत्रके हमगह्यो कुत्सित टेक । आपुयहिक्षण कियोबारण बड़े अघको एक ॥ अकुलायो चहतहम अबपांडवन कहँतात । बचनयहसु

निमिले नृपसों भीमभट अवदात ॥ मिलेअर्जुन मिलतभे फिरि नकुल अरु सहदेव। मिले रोदन करतभूपति भरेदुखकेभेव ॥ पायआज्ञा भूपकीतब कृष्ण पाण्डव साथ। गयेढिग गांधारजाकेसुनो कुरुकुलनाथ ॥ क्रोधबश गांधारजाको जानिकैतेहिठौर। व्यासमुनि ह्वैप्रगट तासोंकहत भेयहितौर ॥ पांडवन पहँ कोप अबमति करहुअनरथ ठानि। दयाकरिकै करौरक्षण पुत्रआपन जानि॥लहेतौसुतदशा तैसी किये जैसीचाहि॥विदुर हमतुम कइक बार बुझाइहारे ताहि ॥ धर्म जहँजयतहां हमइमि कहेकैयकबार। युद्धकरि जयलहेपाण्डव धर्मकेअधिकार॥मानिकैममबचन अब निजधर्मकर्मबिचारि। क्रोधतजिकैक्षमाआनहुदैवगतिनिरधारि॥ व्यासकेयेबचन सुनिगांधारजा हितमानि। कहीमोमन होतबिक्कलपुत्रबध अनुमानि ॥ बधबकैबिधि जायबोलरि मिलतहै गति एक। गयेबिधिमो सुवनजो गहिलरे अधरमटेक॥ दोहा ॥ जूटि परस्पर लरिमरे नहियाकोकछुदोष। भीमबध्यो दुर्योधनहिं होत तौन गणिरोष ॥ दुरोताल मधिपुत्र ममताहि प्रचारि निकारि। बध्योगदा हनिजांघमें यह अधर्मपण धारि ॥ चौपाई ॥ सुनिगांधारसुताकी बानी। अतिभय भरो भीम अभिमानी ॥ धीरज धारि नम्रह्वै बोलो। देवि कह्यो तुम बचन अतोलो ॥ करि अधर्म हमभूपहि मारयो। विनुअधर्म नहिंजीति निहारयो ॥ पै यहसमुझि क्षमाकरु माई। हमपाल्या निजपण प्रभुताई ॥ द्रुपदसुतहि दुश्शासन ल्यायो। तबभूपति निजजांघ देखायो ॥ तब हम टेरिकह्यो इमि तासों। याहितोरिहौं मारि गदासों ॥ सो हमकियो मातु सतिमानो। कारण सदृशकाज अनुमानो ॥ यह सुनि कहतभई गान्धारी। तू राक्षस है मांसअहारी ॥ लरि दुश्शासनको बधकरिकै। रुधिरपियो अति आनँद धरिकै ॥ लरे बधेको नहिं दुखमोहीं। शोणित पियो कौनबिधि जोहीं ॥ यह सुनि भीमकह्यो सुनुमाता। दुश्शासनहो ममप्रिय भ्राता ॥ तासु

रुधिर निजसम अनुमान्यो । तातेकछू घृणानहिं आन्यो ॥ और एक कारण सुनुसोऊ । हैनछपो जानत सबकोऊ ॥ हीरजस्वला द्रुपदकुमारी । एकबसन धारेगृहचारी ॥ ताहिसभा ल्यायो कच गहिकै । तोपतिसबै शगढ इमि कहिकै ॥ चाह्योताहि अवसना कीबो । तहांकह्यो हमशोणित पीबो ॥ दोहा ॥ सोहमकीन्हें अम्ब सुनुममबन दुखअनुमानि।क्रोधईर्षा दूरिकरु दयाहियेमें आनि॥ यहसुनि गांधारीकही शतसुतबधे सटेक । अन्धवृद्धके लकुट हिय समुझिन छोड़ेएक ॥ इमिकहिकै नृपधर्मसों कहतभई सुनु तौन । शतसुतकोबध इमिनिरखि तोरवगहे किमिकौन ॥ चौपाई ॥ यहसुनि धर्मनृपति भयभरिकै । कहतभये इमि धीरज धरिकै ॥ हमतोसुत बधकरता अतिकै। बध्योयुद्धमें जयसों रतिकै॥ अब करजोरिखरे हमपांचौ । शापदेहु कैआशिष सांचौ ॥ मोहिंबन्धु बधको दुखपागत । राज्यजियब कछुनीक नलागत ॥ यहसुनि मौनरही गांधारी । तबपनगहे धर्मब्रतचारी ॥ पटअन्तरह्वै नख नृपकरके । नृपपतनी देख्यो छबिबरके ॥ डीठिपरत करके नख सिगरे । द्युतिबिहीन कुत्सितह्वै बिगरे ॥ लखियहदशा फाल्गुण डरिकै । गयेकृष्णाके पाछेटरिकै ॥ भीम नकुल सहदेव सकाने । इत उत टरिगे बचन न जाने ॥ तबगान्धारसुता रिसिग्वैकै । कीन्होअभय कृपायुत ह्वैकै ॥ गान्धारीकी आज्ञालहिकै । निज जननीढिगगे मुदगहिकै ॥ बहुदिनपै निजपुत्रन लखिकै । पृथा कियो अतिरुदन बिलखिकै ॥ गहिक्रमसों सबकेलन परसत । भईदुखित आयुधक्षत दरशत ॥ द्रुपदसुता तहँरोदन करिकै । गिरतभई अतिदुखसों भरिकै ॥ ताहिबुझाइ सहित सबनारी । पृथागई जहँही गांधारी ॥ निरखि निरखि अतिरोदन कीन्हों । करुणारसहि प्रगटकरिदीन्हों ॥ दोहा ॥ कुंतीसों भाषतभई गांधा-री तेहिकाल । प्रगटभयो अबतौन दुख जोविधि बिरच्योभाल ॥ दुसहशोक सबपहँपरो को समुझावैकाहि । जिमिहम तिमि तुम

तिमि सबै हियनफटत यहचाहि ॥ इतनेमें धृतराष्ट्रनृप पाण्डव कृष्ण समेत। तियन सहित चलिजातभे भीषमयुद्ध निकेत॥ चौपाई ॥ तहांयुवति मृतकन लखिलखिके। गिरींरथनते बिलखि बिलखिके॥ कितनी पतिपति सुतसुत भाषैं। लाजछोड़ि लखिबो अभिलाषैं॥ कितनी बन्धुबन्धु सुतटेरैं। इतउत फिरिफिरि मृतकनहेरैं॥ नृप अति आरतधुनि तेहिक्षनमें। अति पूरित भो सैनसदनमें॥ तेहिक्षण धीरजधरि गान्धारी। कृष्णहिं बोलि कही दुखभारी॥ ममसुत युवतिनकी गतिदेखो। मम अभाग्य को बल अवरेखो॥ व्याकुल दुसहशोकसों भरिभरि। रोवतउर शिर ताड़न करिकरि॥ पति पुत्रनको मरण बिचारी। सहि न सकतदुख जीवअहारी॥ युवतिजूह आरतिधुनि बोलत। पति सुत बन्धुन ढूंढ़त डोलत॥ कितीचीन्ह पति पुत्रन लहिलहि। व्याकुल रुदनकरतिहैं गहि गहि॥ बिनुशिर भुजधर लहिलहि केती। गहैं न निश्चय होहिं अचेती॥ कितनी सदृशरूपलखि देखैं। नहिंमम इमिकहि औरहि पेखैं॥ बिनुशिर परपतिआपन गुनि गुनि। कितनी रुदनकरत शिर धुनि धुनि॥ कितनी कटे शीशलहि चीन्हों। रोदनकरत गोदमें लीन्हों॥ कितनी आधो धर लहिरोवैं। भरोरुधिर आंशुनसों धोवैं॥ अंगभंग पति सुत ज्वैज्वै के। कितीगिरैं मुर्च्छितह्वै ह्वैके॥ दोहा॥ दिव्य चखनसों लखतहैं हम सकसुनो सुजान। द्रोण शल्य करणादिजे मरे परे बलवान॥ मणि सुबरणमय सेजपर सोवतरहेजे भूप। धरणि धूरिमधितेपरे भयेभयानक रूप॥ बायसगृद्ध शृगाल ये नोचि नोचि वपुखात। नहिं मोपहँ कहिजात यह बिधिकी अभिगति बात॥ चौपाई॥ कृष्णचन्द्रसों कहिये बैन। लखि निजपुत्रहि भई अचैन॥ धरीएकलों चुपरहि सोहि। चेति सुयोधन भूपहि जोहि॥ करनलागी करनप्रलाप। हायपुत्रकहि पूरिसताप॥ जेहिसेवत अभिषेकित भूप। सोमहिपरो भयोगत रूप॥ कृष्ण-

चन्द्र कहँ निकट निरेखि । यहि बिधि कहत भई अवरेखि ॥ एकादश अक्षोहिणि धीश । काग तासु फोरत शुचि शीश ॥ सबमहि शिक्षकभूप अमान । परोभूमिपर रंकसमान ॥ अब लाछिमनकी माता हाय । करिहि कहा पतिपुत्र गँवाय ॥ मरो परो दुश्शासनबीर । बायस जम्बुक खातशरीर ॥ इमिकहिकहि पुत्रनकोनाम । महारुदनकीन्ही ह्वै छाम ॥ कहिकहि बल बिक्रम ऐश्वर्य्य । कीन्ही रुदन शोकके मर्य्य ॥ हाय कढ़त नहिं प्राण कठोर । कढ़िहि पार्थ कैसो दुख घोर ॥ पति पुत्रन गहि गहि सबनारि । रुदनकरति निजमरण बिचारि ॥ गहिअभिमन्युहि रोवतभूरि । कुंवरि उत्तरा अतिदुखपूरि ॥ कहति प्रलाप दशामें जौन । हाय न सहो जातिहैतौन ॥ द्रुपदसुता पुत्रन गहिहाय । रोवतिसो दुख सहो न जाय ॥ कृष्णलखो तिमितिय समुदाय । गहिगहि पति पुत्रनको काय ॥ रुदति कहति गुणबिक्रमप्रीति । हाय कौन कर्त्ताकी नीति ॥ तिमिममपुत्रनकी तियसर्ब । लहि पतिपुत्रन गहि गतिखर्ब ॥ रुदनकरतकरि भूरिप्रलाप । कृष्ण लह्यो हम कबकोपाप ॥ कर्णधीर धनुधरबलधाम । मरोपरो भो तनु बिनुचाम ॥ पतिनी तासुलपटिकै ताहि । रुदनकरति निज मरिबोचाहि ॥ भूरिश्रवाभूपसुत सोम । परेभूमिपर जिमि गिरि सोम ॥ शकुनि जयद्रथमरे ससैन । देखि हियोमोहोत अचैन ॥ द्रुपद बिराट सहित परिवार । परे भूमिपर लहिसंहार ॥ तिन सबकी युवतिनकोजौन । रोदनबेधत ममहियतौन ॥ लखोकृष्ण. मरिमद्र महीप । परो भूमिपर नृपकुलदीप ॥ करपग कर्षतकाग शृगाल । कढ़ीजीभि मनुमहितेब्याल ॥ घेररोवत युवतिसमूह । कालकला परखतकरिऊह ॥ कुम्भकर्ण समबीर प्रमत्त । परो भूमिपर नृप भगदत्त ॥ जोजीत्यो सिगरीअरिसैन । बध्योजाहि पारथबलऐन ॥ करिताके आँतनकोभाग । इतउतकर्षतजम्बुक काग ॥ दोहा ॥ इकइसदिन भृगुरामसों लरेभीष्म भट जौन ।

प्राणशेष शरतल्पपर परो बीरबरतौन ॥ भृगुपतिसम शीक्षक समर द्रोणबीर अरिद्रौन। परोतौन रणभूमि पर बचत कालसों कौन॥ कृपीतासु तिय रुदतिढिग चाहि दाहिनोअंग। उत्तमथर में चहतिहै बासकियो पतिसंग॥ सोमदत्तकी तियरुदति गहि पति सुतकोशोक। पुत्र बधुनको रुदनसुनि तज्यो चहति यह लोक॥ उभयभूप आवन्तपति अरु केकय क्षितिपाल। अरु कलिङ्गपति मरिपरो काहिन भक्षतकाल॥ जयत्सेन श्रुतिसेन अरु शलउलूकरणधीर। परेभूमिपर कालबश देखिहोत अति पीर॥ इन सबकीतरुणी तरुणि उरशिर ताड़िसमोह। रुदन करत कहि कहिबिकल नाथतजे ममछोह॥ रोला॥ नृपब्रहद्बल परोमहिपर भरो शोणितगात। घेरि ताकहँरुदति युवती शोक नहिं सहिजात॥ द्रोणके दिव्यास्त्रकी झरिदुसह दाव समान। दहे तासों नृपनके सुतपरेह्वै गतप्रान॥ मत्स्यसंजय अरुप्रभद्रक परेबेधितकाय। रुदति तिनकी युवति ब्याकुल कहतबचन अबाय॥ मरेनृप पाञ्चालकेसुत सुभट हयगजभूरि। परेलुंठित जम्बुकनसों धूरि शोणितपूरि॥ सुवनसब नृप सुतनके अरु पाण्डवनके बार। परेह्वै गतप्राण महिपर ढारि शोणित धार॥ कृष्ण आपुनकी कृपासे पांच पाण्डवबीर। भीष्म द्रोणादिकन सों बचिरहे योधाधीर॥ बिदुर भीषम ब्याससंजय कहे आगम जोन। कियेहठ गहिकर्म प्रगटित भयोआपदतौन॥ भाषिइमि गान्धारजा ह्वैमोहबश तेहिकाल। परीमहिपर मृतकसमह्वै मनहु गरस्योकाल॥ चेति छिनमें भूप पतनी भूरि ईर्षाभारि। कृष्ण सोंइमिभईभाषत महारिसि बिस्तारि॥ कृष्णअनरथ चाहिकरि परिपञ्च बैर बढ़ाय। नाशकरवाये यथा मम बंशकोगहिचाय॥ तथा अबसोंगये छत्तिसबरष सबतोबंश। आपुसैमों लरिमरैंगे पूरि तामसअंश॥ सखासुत परिवार सब लरिमरैंगे करिद्रोह। पाइहैं जोयुवति ममसमछोह उद्भवमोह॥ बचनयह गान्धारजा

को कृष्ण सुनि लहि चैन । कहे हम यह रहेचाहत कहीतुमजो बैन ॥ रह्यो जगमें और नाहिं जो शस्त्रके उपचार । करै लरिकै युद्धमें यदुबंश को संहार ॥ सुनो ताते नाश तिनको करनपरतो मोहिं । तौनबिधि तुमकरो कलपित मनहुं मममतजोहि ॥ कृष्ण के ये बचन सुनिकै सुहित पाण्डवबीर । नाशयदुकुलको समुझिकै भये दुखित अधीर ॥ फेरिइमि गान्धारजासों कहे कृष्ण अबाध । नाशभो कुरु बंशको तोभूपके अपराध ॥ कुटिलकपटी अधमद्रोही दुष्टतेरोपुत्र । होइ कतनहिं इतो अनरथ जहांताको सुत्र ॥ बचन यहसुनि रहीचुप ह्वै भूमिपतिकी नारि । नृप युधिष्ठिरसों कहेतब वृद्धभूप बिचारि ॥ जीव कितने तजेतन रण खेत में लहि घात । कहौ तौन प्रमाण सो जो तुम्हैं जानों जात ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ साठिकोटि षटकोटि अरु बीससहस दशलाख । तीससहस अरु पांचशत भट जयके अभिलाख ॥ मरेसुभटहय द्विरदको नहिंकहिसकैं प्रमान । यहसुनिकै धृतराष्ट्र नृपकहे सुनोमतिमान ॥ लहेकौनगतिते सकल कहौतौनसमुझाय । यहसुनिकै पांडवनृपति कहतभये हरषाय ॥ जेमुदगहि लरिबढ़िमरे तेपाये सुरलोक । मरेधर्मगुणि ते लहे पुरगान्धर्व अशोक ॥ जे भयगहि कछु मुरिमरे तेगे गुह्यकधाम । मरेलरत बिनु तेसबै गेउत्तर कुरुग्राम ॥ घायलभये निरायुधौ बढ़ि बढ़ि मरे सप्रेम । ब्रह्मसदनते जातभे क्षत्रीशूर सनेम ॥ जयकरी ॥ यह सुनिकै धृतराष्ट्र महीप । कहतभयेसुनु सुतकुलदीप ॥ कौनज्ञान ते यह सिद्धान्त । तुम जानतसो कहु हे दान्त ॥ यह सुनि कहे युधिष्ठिर भूप । जब तुमशासन पायअनूप ॥ तहांआइ लोमश तपअंग । तीरथयात्राके परसंग ॥ दिव्यदृष्टि दीन्हें गहि नेहु । ताते हमजानत सबयेहु ॥ इमिकहिकै नृपधर्म बिचारि । कहे विदुरकी ओर निहारि ॥ तुमयुयुत्सु अरु संजयतात । इन्द्रसेन आदिक अवदात ॥ सूतसेवकनलै निजसात । जारौ सबसुभटन

को गात ॥ यहसुनि बिदुर आदि सबलोग। करि घृतईंधनको संयोग ॥ पृथक् पृथक् रचिचिता सुजान। पहिले लखि लखि पुरुष प्रधान॥ जितने नृप नृपपुत्र समस्त। जाय्यो तिनकोगात प्रशस्त ॥ लहि निजसुत पतिकरत कराह। कीन्हीं अगणित युवतिनदाह ॥ फेरिजुगुतिसों काठधराय। डारितेलघृत अग्नि लगाय ॥ जारे सबमनुजनके अंग। कहैं कहांलों तौनप्रसंग ॥ धूमधारसों भरोअकाश। नहिं इमिकबहुंभयो जननाश ॥ इमि कहि बैशम्पायन आप। कहतभये उरआनि उताप॥ भईरजनि तब नृपधरि धीर। गेयुवतिन सह सुरसरि तीर ॥ तहां उदक बिधि कीन्हींबाम। रुदनकरत गहिशोक अक्षाम॥ श्रुति नासा कर भूषण त्यागि। उदकदानकीन्ही दुखपागि॥ तेहिक्षणकुन्ती करिअनुमान। रुदनकरत करिमनहिं मलान ॥ कहीधर्मनृपसों गहिमोह। पीड़ितमोहिं कर्णकोछोह ॥ ममगुरुपुत्र कर्णरणधीर। बन्धुतुम्हार बिदित बरबीर ॥ कुण्डलकवचधरे अभिराम। जो प्रगटो बलबिक्रम धाम॥ कर्णतुम्हार सहोदर भाय। बध्योजाहि पारथ दृढ़चाय ॥ यहसुनि नृपगहि परम उताप। कहेजननिसों करत प्रलाप ॥ किमि तोपुत्र कर्णकहुतौन। तबसोकही रहीबिधि जौन ॥ सोसुनिनृप अति दुखसों पूरि। कहतभये करि करुणा भूरि ॥ प्रथम न कहेमातु यह हेत। होतकहा अब कीन्हेचेत॥ जोयहदेती प्रथम जनाय। तौनहोत बिग्रह यहभाय॥ इमिकहि बन्धुन सहित नरेश। कर्णहिंदिये तिलांजलिबेश ॥ तासुकलत्र ल्याय निजगेह।किये अनन्तर क्रियासनेहसुनो॥ भूप तेहि दिनको खेद।समुझतअजहुँ होतनिर्वेद॥ दोहा ॥रामकृष्णजोचहत सोहोत होतनहिं आन।रामहि कृष्णहिं जपत जो सोप्रबीण मतिमान ॥

इतिगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेस्त्रीपर्वप्रथमोऽध्यायः १ ॥

स्त्रीपर्व समाप्तम् ॥

महाभारतदर्पण

शान्तिपर्व राजधर्म दर्पणः ॥

दोहा ॥ करिप्रणाम नारायणहिं नरनरोत्तमहिं नौमि । बन्दि गिरा ब्यासहिरचत भारत भाषासौमि ॥ कबित्त ॥ धामआपने को धाम धाम धाम पूरणकै धारत धरणि जो बसैया धामधाम को । यामयाम जाकोयश जलसब यामजमो जाहिर जगतहै जगैया यामयामको ॥ सोई अभिराम रामदायक अराममोहिं गोपीनाथ मुनिगावै भेदजाके नामको । मत्स्य कोल कच्छप औनारसिंह बामन त्योंभृगुराम रामकृष्ण बौद्धबलिरामको ॥ अपर बारिजातिहूंते अवदात गातहैं बिभात सोतैसमशील सिन्धु साईंके शयनके । मुनिमनरंजन प्रभंजन तनयके प्राण खंजनते नीकेहैं अखंजन नयनके ॥ साथी गोपीनाथके प्रमाथी बीररसभरे हाथी के चढ़ैया कृपाकाराणि कयनके । ऐनसुखमाके जैनमैनहुके नैनऐनचैनद सुनैनराम राजिव नयनके ॥ अकथ कहानी मोसोंजात न बखानी कछू जानतिहैं ज्ञानीजे हैं ध्यानी सबयामके । जनमन रंजन मुदितमहा मोहनहै शोभाके सदन सदाशीक्षकहैं सामके ॥ गोपीनाथ कबिकामधेनु कलपद्रुमसे कौतुक करत दाता कमनीय कामके । दैतनको नरसिंह नखसे अनखभारे साधुनके रखवारे चखवारे रामके ॥ रंकभे निरंक

नोकतासे बंकबकताजे लंकपति आदिहे निशंक कीन्हें नचना। स्थान मघवानको महानभो अमान महागानसो करत हैं जहां न मानि यचना॥ गोपीनाथ करता सनाथ कौनतोसो नाथ जाहिर सुकण्ठ औबिभीषणकी रचना।रोचनता गहेचारु लोचन तिहारेराम मोचन सुलोचनके शोचनकी सचना ॥ कच्छ कमनीयता औमच्छ स्वक्षधरम में शीलसिन्धुकच्छ जासपलके सुभेशके । रक्षकामक्रोधसों अगच्छचाव यक्षवान दक्षजारमन अक्षभोगी जेहिदेशके। यक्षणके नातहोत लक्षण हे गोपीनाथ तक्षण निरखि जासु लक्षण अशेशके। पक्षनिज जनके प्रतक्ष दक्ष रक्षणमेंलक्ष दशमक्ष अच्छराम अवधेशके॥ दोहा ॥ कपि कुलकानन कल्पतरु बनकुलनायकस्वच्छ । सुमिरिताहि चाहतरच्यो भारतभाषा स्वच्छ ॥ सोरठा ॥ सुमिरिउच्छलनि अक्ष उदधि उलंघन समयकी। भारतसमुद प्रतक्ष भाषाकरि चाहत रच्यो॥ कबित्त ॥ गोपीनाथ नन्दन प्रभंजनको लंकाबीच कूदो देखिसाहस सरासरके सरके। तालदेतजाके कालकालको कराल भयो छूटिगे हथ्यारजे कराकरके करके। खलभल हलके हलंकके खलनके दहलकेमहलके बराबरके बरके। डरिडरि ढरिगये ढहर ढहरढर घहर घहरके धराधरके धरके॥ अपर ॥ गोपीनाथ आनन समान जासुबलवान बीरहनुमान जासुधरणी सुढारसी। बानन विधानन अमाननके प्राणनके हरताकेकरता कुशलता ढुटारसी। शक्रसान भाननकी दैतपंचाननकीबाणि घामसाननकीकरताऊढारसी।धीगधांगटाननकी हांकविकटाननकी काननदशाननके काननकुढारसी॥कबित्त॥धरखिधकेतन बधैतनको बधकरिकर तासधूम धाम रावणकेग्रामको।तीक्षणनिरीक्षणके ईक्षणकीबीक्षणसों शीक्षण रुदन अरक्षाधिपकी बामको॥दोनासमलाय्यो द्रोणाचलजो दुवनदोना बीरबातछोना जोनाभूले पणरामको। गोपीनाथ कोमल कठिन कमनीयजौन करताकहायो कल्पद्रुमके कामको॥छप्पय॥ पर

ब्रह्मपरमात्मा दाशरथी प्रभुदान्त । ताहिसुमिरि भाषारचत शांतिपर्बसिद्धान्त ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुरसरितट पांडवनृपति उदककिया करिभूप । सहितबिदुर धृतराष्ट्रअरु सहसबतियगत रूप ॥ मासएक निवसतभये पुरकेबाहर जाय । व्यासदेवआये तहां अरु नारद सुखदाय ॥ देवल देवस्थान अरु कण्वमहामुनिराज । और वेदबिधि बिप्रबर प्रज्ञावान दराज ॥ शिष्यनसह आयेतहां सुनोभूपतेहिपर्ब । देशकाल अनुरूपकै पूजित बैठेसर्ब ॥ शोकाकुल कुरुपति नृपतिकरि आश्वासिततत्र । नारदमुनि बोले सुनहुनृप करिमन एकत्र ॥ जयकरी ॥ तुम अतिभाग्यवान नृपधर्म । केशव जासुसहायक पर्म ॥ निजसुधर्म बलते तुमभूप । प्रबलशत्रुबधि बिजयअनूप ॥ पायगहत अबकतनिरवेद । जय लहिक्षत्रिहि उचितनखेद ॥ तुमबहुदिन पालेनिजधर्म । उनसब दिन कीन्हें हठकर्म ॥ तुम सबबिधि उनकहँ समुझाय । नहिंमाने तब लरेसचाय ॥ क्षात्रधर्म करिमहि श्रीपाय । अबइमि खेदकरब अन्याय ॥ क्षात्रधर्म कोकरि अनुमान । मोदगहो गुणिभाग्य महान ॥ यहसुनिकै नृपधर्म बिचारि । मुनिसों कहतभयेनिरधारि ॥ कृष्णकृपा अरुबिप्र प्रसाद । भीम आर्जुनके बलनाद ॥ पाय बिजय भूलही समस्त । प्रबलशत्रु दलबल करिअस्त ॥ पैमुनि मोहिं दुसहदुखतौन । ज्ञातिबन्धुको क्षयभोजौन ॥ द्रौपदेयअभिमन्युउदार । भीषमद्रोण आदि सरदार ॥ कर्ण बिदितबल सोदरभाय । गुणितिहिको न बखानोजाय ॥ मुनि इनसबको बधकरवाय । बिजयलह्यो दारुणदुखदाय ॥ जमजाया समबिजयकठोर । समुझि समुझि बिहरत हियमोर ॥ पतिसुत जिनके मरेबिचारि । किमिधीरज धरिहैं तेनारि ॥ दोहा ॥ सुमुखि सुभद्रा द्रुपदजा कैसे धरिहैंधीर । मरेपरमप्रियजासुसुत बिदितबीररणधीर ॥ जयकरी ॥ अयुतनागसम बली श्रीमान । मरोकर्ण ममबंधु महान ॥ प्रथम न हम यह जान्योहाय । कर्ण हमारो सोदर भाय ॥ पूर्बकह्यो

नहिं मातामोहिं । यहवृत्तान्त कहत सतितोहिं ॥ नातरु तासों हेत बढ़ाय । देइत आपद बिघ्न बराय ॥ मरो आर्जुनके कर जौन । परशुराम सों शिक्षित तौन ॥ भृगुपति कर्णहि दीन्हों शाप । मुनि हमसुने कहो सो आप ॥ काहे शापदयो भृगुराम । लहि ऐसोप्रियशिष्य सकाम ॥ यहसुनिकै नारद मतिऐन । धर्म नृपतिसों कहेसुबैन ॥ द्रोणाचारय सों तुमसर्ब । धनुबिधि सीखतरहे अखर्ब ॥ तब एकान्त द्रोण कहँपाय । कर्णकह्यो करि बिनय सचाय ॥ सहरहस्य ब्रह्मास्त्र बिख्यात । हमसीखो चाहत हैं तात ॥ अर्जुनके समकरिबोयुद्ध । हमचाहतहैं गुरुता शुद्ध ॥ यहसुनि द्रोण कपटगुनि तास । कहतभये करिक्रोध प्रकास ॥ हैंब्रह्मास्त्र बिप्रकहँयोग । अथवा क्षत्रिहि उचित प्रयोग ॥ नहिं शूद्रहि ताको अधिकार । निजलायक गुणलेहु उदार ॥ यहसुनि कर्णजानि सिद्धान्त । जातभयोपहँ भृगुपति दान्त ॥ हेमहेंद्र गिरिपैभृगुराम । गोतहँ सुमिरत रघुबर राम ॥ दोहा ॥ निकटजाय भृगुरामके करिप्रणाम मतिधाम । हमब्राह्मण इमिकह्यो सुनि कृपाकियो भृगुराम ॥ नामगोत्र सबबूझि अरु बूझिआगमन हेत । लगे सिखावन धनुषबिधि धनुबिधि बिशदनिकेत ॥ देव यक्ष गन्धर्ब गण राक्षस गणसोंतत्र । भयो समागम कर्णसों भृगुपति बिलसतयत्र ॥ एकदिवस शरधनुषगहि कर्णचरत वन बीच । बिप्रधेनु लखिजानिमृग शरहनि बधोनभीच ॥ गोला ॥ जाइकैढिग धेनुलखिकै मनहिमन पछिताय । मुनिहि क्रोधित देखिकै इमिकहतभो गहिपाय ॥ भ्रांति मृगकेबध्यो हमयहिक्षमा कीजैतात । बड़ेनके हितक्षमा निवसति लघुनके उत्पात ॥ भ्रान्तिवश कृतकर्म लखिनाहिं दोषमानत दान्त । बिनय मम सुनि क्षमाकीजे समुझिके सिद्धान्त ॥ कर्णकेसुनि बचनबोलो बिप्रपूरित क्रोध । अवशिहै बधयोग शठतू मूढ़मत्त अबोध ॥ जानिजीतन हेतशठतू करत धनुषाभ्यास । जूटिहै जेहिदेव-

तासों आनिजयकी आस ॥ प्रगट ह्वैहै तौनदिन यहपापतो शिरघूमि । चक्रतेरे सुरथके गहि ग्रसन करिहै भूमि ॥ तदनुते रोशीश छेदन करिहिशत्रु अमान। कर्णयहसुनि गुरुयोभावी होतिहै बलवान ॥ भाषिइमि द्विजरह्यो चुपनहिं सुने ताकेबैन। कर्णआयो रामकेढिग भरोशोच अचैन ॥ रहनलागो पूर्ब्बवत फिरिरामके ढिगतौन । करतसेवा सविधि निशिदिन उचितजेहि क्षणजौन ॥ देखिबिक्रम बुद्धिगुण शुचिकर्म ताकेराम । देतभे ब्रह्मास्त्र बिधिवत सहित अंगललाम ॥ धनुषवेद पढ़ाय बिधिवतकियो अनुपमदक्ष। एकदिनको सुनोकौतुक भयोजो परतक्ष॥ कर्णकेधरि जानुपैशिर शयनकीन्होराम।तहाँ आयोकीट शोणित अमिष आशीआन ॥ महादारुण जानुबेधन लगोसोअधआय। धीरधरि नहिंजानु कम्पित कियोकर्ण सचाय ॥ बहीधारारुधिर की तबजागिकै भृगुराम । देखि शोणित भयेबूझत तासुकारण छाम ॥ कर्णभाष्यो कीटकीन्हो जानुबेधन तात । तुम्हैं निद्रित जानि हम नाहिंकियो कम्पित गात ॥ रामदेख्यो कीटशूकर रूप बसुपदमान । दशनसूची सरिस तीक्षणरोम भयद महान ॥ लखतही भृगुरामके वहकीटभो गतप्रान । तुरित राक्षस रूप ठाढ़ोभयो घोर अमान ॥ श्यामतन अरुनील ग्रीवा मेघबाहन तौन । जोरिकर भृगुरामसों इमि कह्यो बिक्रम भौन ॥ मुक्तभे हम नरकते अबदरशप्रभु तव पाय ।देहु शासन जात हम निज देश शोच बिहाय ॥ कह्योतबभृगुरामको तुमअसुर बपुहै गूर्ब । कह्योसो हमअसुरहै सुनुदंशनामक पूर्ब ॥ देवयुगमें हरीभृगुकी तिया हममतिमन्द । पायभृगुकोशाप तबभैकीटरूप सदन्द ॥ बिनयबहु सुनिशापको मुनि अन्तभाषेटेरि । पायदर्शनरामको तुमअसुर ह्वैहौफेरि ॥ पायदर्शन आपके मम्छुटो अघको धर्ष। भाषिऐसे नौमिरामहिं गयोअसुर सहर्ष ॥ क्रोधकरि तब राम भाष्यो कर्णसों तेहिकाल । बिप्र नहिंसहिसकत ऐसोदुसहदुःख

कराल ॥ गहत ऐसो धैर्य्य क्षत्रीकौन तूकहुसांच । वचन यह सुनि कर्णभाष्यो पाय तपकीआंच ॥ ब्रह्मक्षत्रीमध्यमें लहिजन्म हम हेतात । राधेय सूतज कर्णहैं सबजगतमें विख्यात ॥ अस्त्र के बरलोभ काजे हमछिपाई जात । क्षमाकरिये दोषमेरो कृपा करि अवदात ॥ पिता गुरुमें भेदकछुनहिं जानिहम यह हेत । गोत्रतबसो कह्योआपन पृथक् करिकैचेत ॥ अस्त्रलोभी दास हमप्रभु क्षमो मो अपराध । भाषिइमि कैनमित महिपरि करत भो अवराध ॥ कह्योतब भृगुराम जेहिहित कही मिथ्यामोहिं । समयलहि ब्रह्मास्त्रसोनहिं प्राप्तकैहैतोहिं ॥ जाहु अबनहिंमोहिं भावत कहतमिथ्याजौन । होहुगेतुम महाउद्भट परमविक्रमभौ-न ॥ बन्दिरामहिं आइ निजपुर कर्णभट शिरताज । कह्योनृप सों लहेहमसब अस्त्रशस्त्र समाज ॥ कर्णयहिबिधि रामसों लहि अस्त्रविधि अरुशाप । भयोकुरुपति साथ राजित भरतदारुण दाप ॥ दोहा ॥ सुनोभूप अबकर्णके बिक्रमके इतिहास । जोकलिंगपुरमें कियो दुस्तरबीर बिलास ॥ रच्यो स्वयम्बर सुताको चित्रांगद क्षितिपाल । आयेतहँ राजासकल जेभट बीरबिशाल ॥ कर्णसहित तहँजातभो दुर्योधन क्षितिकन्त । रंगभूमिमें आइ तहँ बैठेनृपति अनन्त ॥ जरासन्ध शिशुपाल अरु भीष्मकनील शृगाल । महाबली नृपभोज अरु अरुबिशोक क्षितिपाल ॥ अरुकपोतरोमा नृपति शतधन्वामहराज । और तहांबैठतभये अगणित भूप समाज ॥ कन्यातहँ आवतिभई गहि जयमाल अनूप । रंगभूमि महिमधिचली बिरदसुनत लखिरूप ॥ दुर्योधनको पासलहि बंशबिरद सुनितासु । नहिंमेल्यो जयमालतिहि चली औरपै आसु ॥ चौपाई ॥ सो न सकोसहि नृपदुर्योधन । कन्याको कीन्होअवरोधन ॥ पाणिपकरिरथपर बैठाई । चलो कर्णसह ओजबढ़ाई ॥ सोलखि सबराजा रथचढ़िचढ़ि । चले भटनसह टेरत बढ़िबढ़ि ॥ सोसुनिफिरो कर्णसहराजा । बर्षत

अबिरल बिशिख समाजा ॥ भूपभई तहँतुमुल लड़ाई । अति रण कियो कर्णदृढ़घाई ॥ रथधनुध्वजा गदाशरस्रूरे । अगणित शक्तिकाटि महिपूरे ॥ अगणित हयगज सूतन बधिके । अगणितयोधन मारिबरधिके ॥ निशिसम अन्धकार अति भिरि के । तुमुलयुद्ध कीन्हों तहँ थिरिके ॥ जीति पराजितकरिसबराजन । चलिब्रजवाबत बिजयीबाजन ॥ रक्षत दुर्योधन क्षितिपालहि । आयोह्वास्तिन नगर बिशालहि ॥ ऐसो कर्ण दुसहरण करकश । रह्योबिदितभट बलीअधरकश ॥ औरसुनोताकीप्रभुताई । कहत सांचनहिं भूठबड़ाई ॥ कर्णबीरको बिक्रमसुनिके । जरासन्धनृप जियमें गुनिके ॥ कर्णहिंबोलि आपुबादिआगे । कीन्होंद्वन्द युद्ध भयत्यागे ॥ प्रथमसुरथ चढ़िशर धनुगहिगहि । कीन्होंयुद्ध भागु भति कहिकहि ॥ दिव्यअस्त्रकी बर्षा धरिधरि । दिव्यअस्त्र सों बारन करिकरि ॥ दोऊ घोरयुद्धतहँ करिके । द्वैद्वै बिधनु खड्ग कर धरिके ॥ महायुद्ध करि गौरव लीन्हे । बाहुयुद्ध फिरिरम्भन कीन्हे ॥ नृपतब कर्ण महाबल चीन्हों । दाबि सन्धि सन्धित करिदीन्हों ॥ तेहिक्षण लखि बिकार निजतनको । तज्योयुद्ध नृप ह्वै ऋजुमनको ॥ सादर कर्णहि भयो सराहत । हमप्रसन्न इमि-कह्यो उछाहत ॥ नगरमालिनीपति करिसादर । अंगदेशदीन्हों करि आदर ॥ तबसों कर्ण भूमिपति ह्वैके । कुरुपति संगलसो मुदग्वैके ॥ कर्णसकल जगजीतन लायक । जो नहिंशाप देत भृगुनायक ॥ दोहा ॥ बिप्र न देतो शापजो कवच न लेत सुरेश । तोको लरिके कर्णसों लहत बिजयकोलेश ॥ क्षात्रधर्म प्रतिपाल करि मरोयुद्धमें तौन । क्षत्रिहि उत्तम और नहिं शोच करतहो कौन ॥ कुन्तीसुतसों बचन इमि कहिके नारद प्रज्ञ । होइरहेचुप कछुन पुनि बोलेसुनु धर्मज्ञ ॥ जयकरी ॥ अति शोकाकुल सुतहि निहारि । पोंछति तजति चषनसों बारि ॥ कुन्तीकही तजोसुत शोक । काल सदन में सबको ओक ॥ ताहि बुझायो हम बहु-

बार । सूर्य्य सुनायो गिराउदार ॥ कर्णनहीं मान्यो प्रणठानि । शोकतजो ध्रुवभावी जानि ॥ सुनत बचन यह धर्ममहीप । चष जल तजत कह्यो कुलदीप ॥ यह वृत्तान्त करोतुम गुप्त । ताते यहदुख भयो अलुप्त ॥ सो गुणि शापदियो करिकोप । तियमति मंत्रसकै करिगोप ॥ इमिकहि शोकभरो कुरुभूप । भोसधूम पावकके रूप ॥ सोलखि अर्जुनकी दिशिमान । कहत भयोऋजु बचन महान ॥ राज्य लोभलगि अनरथ भूरि । हम कीन्होंनिर्दयघणपूरि ॥ जोहम गह्यो राज्यकी आश । ताते क्षात्रबंशको नाश ॥ भयो दोषताते ममसर्ब । हमलरिकियो कर्म अतिखर्ब ॥ बधि धृतराष्ट्र तनय सबभाय । लहब कौन गतिकहो नजाय ॥ नातगोत हितबन्धु अनन्त।पुत्रसुपौत्र सखा क्षितिकन्त ॥ जाके हेत बधाये हाय । लहब कौनसुख सोमहिपाय ॥ मोदत श्वानं चाबिजिमि अस्ति । तिमियहि राज्य महीसुखअस्ति ॥ सोयह राज्य न भावतमोहिं । बन्धुबर्ग बिनु अवनीजोहिं ॥ दुर्योधनकी मति अनुसार । क्षात्रबंशको भोसंहार ॥ तुममम राज्य हेतअवदात। कीन्हों भूरि पराक्रम तात ॥ तुम अबलेहु राज्य अधिकार । पालोप्रजा सहित ब्योहार ॥ हमअब करब बिपिन मधि बास । मुनिन संगलहि परम सुपास ॥ मोहिंनराज्य भोग को काम । इमिकहिमौन रहोन्रपळाम ॥ धर्मन्रपतिके ऐसेबैन । सुनि बोलेपारथ मतिऐन ॥ नीतिनिपुण तुमधर्मनरेश । जानत सकल धर्म्म सबिशेश ॥ कतभाषत जिमि कहतअयान । जेबैकलअरु क्लीवसमान ॥ धर्म्मपालि द्विजसमबन घूमि । क्षात्रधर्म करिदीन्हेंभूमि॥तामेंकौनपाप अधिकार । नशत काललहिसबसंसार॥ जबजाकेकर जाकोघात । तौन होतकछु लहिउत्पात ॥ सोई भयो नतोकछुदोस । नाहकभूप करोअफसोस ॥ प्रबल शत्रुबधि इमि जयपाय । खेदकरबहै अतिअन्याय ॥ यहिबिधिराज्यपाय कैत्याग । करत नकोऊ पूरणभाग ॥ राज्य त्यागको देखिप्रयोग ।

तुमकहँ कहा कहैंगेलोग ॥ जेहिलागि कीन्हेंऐसेकर्म । ताकोत्या-गब कौनसुधर्म ॥ कुटिल पापरत भूपतिजौन । भिक्षारटन कर-तहैतौन ॥ दिनप्रति जासुवृद्ध अधिकात । ताको भाग्य परम अवदात ॥ ऋद्धिवृद्धिहित भूपतिसर्ब । निशिदिन शोचतनीति अखर्ब ॥ दारिद सर्बपापकोमूल । दारिदहै रौरवकोकूल ॥ जिमि पापीशोचतादिनरैन । तथादारिदहि कबहुंनचैन ॥ भूपतिभयो दारिदी जौन । ताकीदशा सकै कहिकौन ॥ त्यागिसुधन दारिदी सोंप्रेम । करब न नीति निपुणकोनेम ॥ दोहा ॥ सकै न कछुकरि दारिदी दोऊदिशा नशात । होतसधन मतिमानको दोऊदिशि अवदात ॥ सधनपुरुषके सधतहैं अर्थधर्म अरु काम । होत काज धनहीनको ग्रीषमसर समछाम ॥ धनते धनहै होत अरु धनतेहोत सुकर्म । धनतेप्रगटत धर्मजिमि गिरिते सरिता पर्म ॥ काम क्रोध अरु हर्ष मद धीरज बड़ोबिचार । धनतेप्रगटत भूप अरु सधत सकल उपचार ॥ सोपण्डित गुणवानगुरु दाताशूर सुजान । दासबन्धु हिततासु सब जोजगमें धनवान ॥ गोहय सेवक बन्धुहित बिनुहै जोकृशतौन । नहिं शरीरकृश तौनकृश धनबिनु कृश सबभौन ॥ मुनिन संगमहि अजिनधरि दर्भ क-मण्डलु पानि । होनीभूपहि उचित नहिं राज्यकरो हितमानि ॥ सोरठा ॥ अर्जुनकेये बैन सुनि सुधर्मरत धर्मनृप । मर्मसहितमति ऐन कहेकर्म बनबासके ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ रोला ॥ मूलदारिद पाप को तुमकहेसति नहिं आन । सधतधनते कामसिगरो इहौसत्य बिधान ॥ सुनोतौन गृहस्थको ये उभय सुख दुखदानि । भयो मृगव्रत बिपिनबासी ताहिबन सुखखानि ॥ ताहिधनसों काम नहिं नहिं दरिद कछुदुखदेत । ताहिदेत दरिद्र दुखहै जासुधन सों हेत ॥ अवशिचहत गृहस्थकोधन बिपिनबासी बारि । मूल फल कुशअजिनते सन्तुष्टपुष्ट बिचारि ॥ सुनोताते त्यागिममता बसब बनमेंजाय । धारिमुनिब्रत मृगन सँगकरि मृगनसम दृढ़

काय ॥ भूपके येबचनसुनिकै भीमसेनसुजान । कहतभेअनखाय ऐसोकहत नाहिं मतिमान ॥ रही ऐसी बुद्धितुवतौ प्रथम कहते तात । ग्रहणकरत न शस्त्रको हम होतनहिं उत्पात ॥ भीखमांगत मोक्षहित नहिंकरत दारुणयुद्ध । जानि जोयह परतभूपहि बिजय होतिअशुद्ध ॥ छली गरबी प्रबल अरि धृतराष्ट्रपुत्रनमारि । लहब अबफलकौनतुममहि तजतधर्म बिचारि ॥ यथाप्यासा जाय सरतट फिरत पियत न बारि । वृक्षचढ़ि मधुपाय जिमिमधु पियतनहिं भयभारि ॥ यथा सहसन कोशचलि तेहिनगरकेढिग जाय । फिरत प्रविशत नगरमधि नहिं महाश्रम हियछाय ॥ क्षुधित भोजन सिद्धकरि नहिंखात जिमि अनखात । यथाकामी तरुणि नहिंलहि करतरति तजिजात ॥ भईतैसीदशा ममलहि बिजय त्यागतराज।भलीहमको हारिहीका बिजयलहि भोकाज ॥ पायऐसो बिजययश फिरि अयश चाहतलेन । कहतताहिकपोत सबजो अमिष त्यागतशेन ॥ हारिसर्बसकिये तेरहबर्षतब बनबास । युद्धकरि सो त्यागिचाहत फेरि बिपिन बिलास ॥ सगर नहुष ययाति आदिक भूपकरि रणभूरि । राज्यकरिकै नरकपाये सुने निकट न दूरि ॥ महिषकोल बराह द्विरदै मृगैपावतस्वर्ग । बिपिनबसि अरु ग्राम्यजन सबलहतहैं अपबर्ग ॥ इहोंअबलों सुनेनहिं नहिंसुने करिसंन्यास । वृक्षसिगरे मुक्तभे तजिजगत जनको पास ॥ सुनोभूपति बसति नहिं गृहत्यागमें अतिसिद्धि । सिद्धि बसति सुकर्ममें अरु पुण्य धनकीवृद्धि ॥ जीवसिगरेलहत हैं गतिकर्मके अनुसार । सुनोनृप करतब्यलाते कर्मकेब्यवहार ॥ दोहा ॥ भीमसेनके बचनये सुनि अर्जुन मतिरास । धर्मनृपतिसों कह्यो नृपसुनोपूर्व इतिहास ॥ अर्जुनउवाच ॥ कोऊ बिप्र गृहस्थ गुणि चले बिपिन गृहत्यागि । इन्द्रधारि खगवपुतिन्हैं निन्दित भे हितलागि ॥ भरुकरी ॥ खगउवाच ॥ धन्य बिघशासी नरजौन । नहिंउछिष्ट भोजनकृतलौन ॥ सोसुनिकै तेबिप्रसचेत । कहेबिहँग

कहुयाको हेत ॥ कौन बिघशाशी मतिमान । कोउछिष्ट भोजन कृतवान ॥ पक्षीबोलो सुनोयथेष्ठ । गऊचतुष्पद हृदमें श्रेष्ठ ॥ द्रब्यनमें सुबरण बरहोत । शब्दनमें बरमंत्र उदोत ॥ द्विपदनमें बरबिप्र महान । ताकहँ वैदिककर्म प्रधान ॥ ऋतुमासादिक ब्रत मख सर्ब । करैं करावैं बिप्र अखर्ब ॥ यज्ञस्वर्गको पन्था पर्म । ताते उत्तम वैदिक कर्म ॥ हैगृहआश्रम महाअनूप । परमसिद्धि को क्षेत्र स्वरूप ॥ देव पितरको अर्चन यत्र । अतिथिनको आश्वासन तत्र ॥ सर्बकर्मको जहँ अधिकार । ताकोआश्रित सब सबसार ॥ जेबिधिवत शुचिअन्न बनाय । देव पितरकहँ अरपि सन्याय ॥ फिरि सादर आगतन खवाय । सहपरिवार खातसुख पाय ॥ सुनोबिघशाशीते ख्यात । चहतस्वर्गते अतिअवदात ॥ जेउछिष्ट आशी सुनुतौन । तजिकै गेह किये बनगौन ॥ तजि परिवार गहेसंन्यास । देव पितरकहँकिये निरास ॥ धूरिधूसरित गातमलीन । बनमें फिरत क्षुधाते क्षीन ॥ खगमृग कृमिके जूठे पात । फल अरु मूल नित्यसो खात ॥ सोउछिष्ट भोजन कृत तात । पूर्बकर्मकोलहिउतपात ॥ यह दुखसहि चाहतजोक्षेम । तौन मिलैजो निबहै नेम ॥ दोहा ॥ शक्रबिहँगके बचन ये सुनिकै बिप्र सुजान । फेरिपलटि गृहबासकरि कियेकर्म सुखदान ॥ ताते तुम धर्मज्ञप्रभु धीर धारितजि मोह । पालनकीजे महिप्रजा सहित सुहित सन्दोह ॥ सोरठा ॥ भरेअर्थ गम्भीर अर्जुनके ऐसे वचन । सुनि सुनकुल मतिधीर कहतभये नृपधर्मसों ॥ चौपाई ॥ नकुलउवाच ॥ तात सुनो ममबचन सुहाये । वैदिककर्म देतमनभाये ॥ निवसत सुमन कर्मफल माहीं । बिना कर्मकोउ निवसत नाहीं ॥ उत्तमकर्म गृहीको गावत । करि सुकर्म नर सुरपुर पावत ॥ गृहको त्याग न त्याग कहावत । ममता त्याग त्यागसुख छावत ॥ हठ ब्रतधारि देहजो त्यागत । तामस त्याग नाम सों पागत ॥ गृह तजि रहत मूलफललागी । सुनोभूप सो भिक्षुक

त्यागी ॥ गृहबासि कर्म गृहीको धारत । वेदउक्त निजधर्म बिचारत ॥ मतिमानन को पथमन भावन । गुणत न गहत बिकार विभावन ॥ सुख दुखफल मधि भाव न लावत । सो त्यागी आनँद सरसावत ॥ सम दम धीरज सत्य बढ़ावत । शुचिरहि बालनकर्म पढ़ावत ॥ देव पितरअरु अतिथि न पूजत । वेद पुराण बारता कूजत । उतपति करत प्रजासुख दायक । पालत धर्म पालिबे लायक ॥ करतकर्म सबत्यागि फलासा । सो त्यागी नहिं करि बनबासा ॥ उतपतिकरत प्रजाबिधि गुनिकै । करिहि यज्ञ ममबाणी सुनिकै ॥ करत न यज्ञ धर्मधन लहिकै । सोगृहस्थ शठकिल्बिष गहिकै ॥ तातेगहौ प्रजाप्रतिपालन । यज्ञकरो इत उत हितचालन ॥ दोहा ॥ प्रजा न पालत नृपति जो देतन बिधिवतदान । लेत न राजित राज्यसुख सो नृप महा नदान ॥ नहिं पालत शरणागतन अरिन न देत सजाय । शरद मेघसम भूपसो प्रगटत जाय नशाय ॥ तजौ शोच नृप नीतिगुणि करो राज्य सुखभोग । छली बन्धुबधिमहि लियो क्षात्र धर्म उपयोग सोरठा ॥ सुनत नकुलकेबैन चैनभरे सहदेवअति । मुद मंगलके ऐन कहेधर्म क्षितिपालसों ॥ सहदेवउवाच ॥ चौपाई ॥ भूपतिसुनो भूमि नहिं त्यागे । होतन सिद्धि बिपिन अनुरागे ॥ मनकीवृत्ति छुटै जब भाई । बरधति तबै सिद्धि प्रभुताई ॥ रागद्वेष ममता मदत्यागी । पटुगृह चरत धर्म पथ लागी ॥ अक्षर दोय मृत्यु कहवावत । अक्षर तीनि ब्रह्मपटु गावत ॥ ममयह बुद्धि मृत्यु सुनु स्वामी । नहिं ममभान ब्रह्म अनुगामी ॥ सेवत ब्रह्मबुद्धि जो आरज । ताहि न दोष किये कछुकारज ॥ नहिं आपुहि करता अनुमानै । न्यामक ईश्वरकी गति जानै ॥ इतउत सुखी रहत सो राजा । गुणत ब्रह्ममय सृष्टिसमाजा ॥ वेदउक्त पथ चरत सुभावन । सो नृप चरत मोद मन भावन ॥ ताते तजि निरबेदअलायक । बिलसौभूमि भूमिके नायक ॥ जो नृपभूमि

पाइ नहिंभोगत। निष्फल ताकोजन्म प्रयोगत॥ भोगो भूमि तजो मति ऐसी। महिलहि त्यागो नीति अनैसी॥ जबसह देव कहीइमिबानी। तबइमिकही द्रौपदीरानी॥ नृपतो बन्धुबच-नतोदूषत। गुणिवृत्तान्त सुमन समसूखत॥ मोहित इन्हेंकरो हितकरिके। भूमिभोगकी इहानगहिके॥ एतोधर्महेत बलग्वैके। बनदुखसहे बिप्रसमक्षैके॥ दोहा॥ द्वैतबिपिन माधि भ्रातरनअति पीड़ित लखिनाथ। कतभाषे दुर्योधनहिं बधबबन्धुगण साथ॥ बधिसगर्ब दुर्योधनहिं भूमिभोगि धनजोरि। यज्ञकरब देद्विजन कहँ सुबरणकइककरोरि॥ निजमुख ऐसोभाषिनृप अबकतगहत गलानि। राज्यकरोनृपनीति युत क्षात्रधर्मअनुमानि॥ बीरबधत हैअरिनकहँ बीरभोगवतभूमि। बीर करतहै दानमख नहींख-ण्डरण जूमि॥ दुर्योधन कर्णादिके समुभिकर्म उतपात। राज्य करो निरखेद तजिबूभि क्षात्रपद स्यात॥ प्रथमजुवां में हारि सबकरवाये बनबास। फिरिकरवाये युद्धकरि क्षात्रबंशकोनास॥ फिरि भाषत बनजान अब प्रभुयहकौन सुधर्म। तुमसर्बज्ञउदार मतित्यागे चहतसुकर्म॥ प्रभुतव सिगरेबन्धुजो होतेमत्तसुभाव। तो करिकारागृह तुम्हैंकरते राज्यबनाव॥ राज्यछोड़िके आपदा कत चाहत क्षितिपाल। अम्बरीष अरु नहुषसम भोगोभूमि बिशाल॥ सोरठा॥ द्रुपदसुताके बैनसुनि अर्जुन जगजैनभट। कह्योभूपकछुमैंन राज्यकरोमुदऐनगुणि॥ अर्जुनउवाच॥ रोला॥ साम दाम बिभेद दण्ड उपाय नृपकेचारि। प्रथमकीन्हें तीनिमानो नहीं शठहठधारि॥ दण्डकारि निजभूमिलीन्हें कौनदोषविचार। प्रबलनृपकहँ दुष्टकेहित दण्ड अति उपचार॥ सुनोभूपति द-ण्डप्रदको सधतासिगरो काज। दण्डदेन असक्ततासु न रहत अबिचल राज॥ दण्डपालन प्रजाराखतअर्थ धर्म सकाम। धन्यधन गृह नगर रक्षत दण्ड जगमें आम॥ अश्व गजबश होतदीन्हे दण्ड पशु नरसर्ब। दण्डते न उपाधिठानत कागआ-

दिक खर्ब ॥ ब्याल बाघ बराह आदिक दुष्टजन्तु समस्त । दण्ड के भयरहत गोपतहोतहैं न प्रशस्त ॥ बाक्दण्ड द्विजाति क्षत्री बाहुदण्ड अमान । दानदण्ड बइश्य सेवादण्ड शूद्र न आन ॥ दंडकेभय रहतआश्रम बरणको मर्य्याद । दण्डके भयमत्त जन नहिं सकत करि उन्माद ॥ भारबाहन भार बाहत दंडभय बिनु तात । बालपढ़त न दंडभय बिनुकरत तिय उतपात ॥ दंडभय बिनुप्रजा त्यागत पूर्बपथ शुचिगात । दंडदायक नृपति नययुत लहतवृद्धि बिभात ॥ इन्द्र वृत्रहिमारि भूप महेन्द्रभो बिख्यात । तथा शत्रुन दंडदायक नृपतिभो अवदात ॥ आततायिहि दंड दैकै लई पैत्रिक भूमि । भूपभेगोराज्य मतिदुख रहोबनमें घूमि ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ अर्जुनके येबचनसुनि बोलोभीम अमान । कियेकछू रातेनयन सुनोभूप मतिमान ॥ भीमसेनउवाच ॥ हमनकहो चाहत नहीं कहेविना रहिजात । सुनोभूप ताते कहत नीति उचितजोबात ॥ रोला ॥ ब्याधिदोय प्रकारकी नृपहोत सुनियेतौन । एकदैहिक मानसिक सुनुभेद इनमेंजौन ॥ शीतआतप बातसों जोहोत है उतपात । तौनदैहिक ब्याधि है इमिकहत मति अवदात ॥ सत्यरजतम जनितहै उतपात जौहिरजौन । तौनमानस ब्याधिजानो सुनोनृप मतिभौन ॥ दुःख हर्षहि दूरिकरता हर्षिदुःखहिदूरि । दुःखमें सुखहोत सुमिरण हर्षमें दुखभूरि ॥ हर्षमेंसुख स्मरत तुमनाहिं स्मरतदुखमें हर्ष । देवगति यहभोग पूर्बक करत मतिकोकर्ष ॥ पूर्बको अपकर्मउनको करतसुधि नहिंतात । बिपिन को दुखभूलिकै अबबिजयल्ल हिपाछितात ॥ समुझिभूप बिराटपुर को गुप्तहित उपयोग । युद्धको दुखसमुझि त्यागो ग्लानि दारुण रोग ॥ भाग्यबल नृपबिजय पायेकरोउर्वीभोग । यज्ञदान बिधान करिकै करोमोदित लोग ॥ दोहा ॥ सीतारामहिं सुमिरिकै शान्ति पर्ब सुखदाय । यह बाइस अध्यायको कहो एक अध्याय ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिराजधर्मेप्रथमोऽध्यायः ॥

दोहा ॥ भीमादिक पाण्डवनके सुनिकैबचन अहीन । ब्यास देव नृपधर्मसों कहेबचन अतिदीन ॥ व्यासउवाच ॥ सुनोभूपतुब बन्धुसब कहतउचित शुचिबैन । गेहत्यागि बनबासनहिं उचित तुम्हैं मतिऐन ॥ देव पितर अरु अतिथिगण भृत्य दारदी जूह । तोषत धनी गृहस्थसो पशुसब जीव समूह ॥ पिता पिता मह राज्य यह पालन करो महीप । समदम संयम क्षमागहि यज्ञकरो कुलदीप ॥ द्रब्यजोरिबेमों निपुण पात्रबिचारि उदार । दण्डधारिबेमों कुशल यहनृपनीति बिचार ॥ नृप सुद्युम्न बर धित भयो दण्डधारि हेभूप । सुनोतौन इतिहास हम कहत अनूपमरूप ॥ शंख लिखितद्वै बिप्रहे भ्राता अति मतिमान । बन में आश्रम पृथकरचि हेतपतपत महान ॥ चयकर्षन ॥ लिखित एक दिन गयो बिभात । शंख बिप्रके आश्रम तात ॥ शंखनहो निजआश्रम माँह । जाय लिखित तहँसुनु नरनाह ॥ देखिधरो फल आश्रम बीच । सोलैलागो खाननभीच ॥ इतने में तहँआयो तौन । लिखितगयोहो बनमधि जौन ॥ तहां लिखितफलखात निहारि । इमिबूझतभोहिये बिचारि ॥ कहँपायो यहफल अभिराम । निज अरजित समखात अछाम ॥ सोसुनि कह्यो लिखित हतरूप । इतही यहफल लह्यो अनूप ॥ तब इमिकह्यो शंख अनुमानि । तुमफललेय कियो अघखानि ॥ लेतपरोक्ष दियोबिनु जौन । पाप लहततस्कर समतौन ॥ जब सोलहे दण्ड अघयुक्त । तब फिरिहोइ पापसोंमुक्त ॥ तातेजाय भूपकेपास । निजकुकर्म यहकरोप्रकास ॥ दण्डदेइजब नृपतिसुधर्म । तबगतपातक होहुअभर्म ॥ यहसुनि लिखित पापकेशङ्क । जायभूपसों कह्योकलङ्क ॥ फलअदत्त हमखायोभूप । दीजैदण्ड धर्मअनुरूप ॥ पूजितद्विजको ऐसोबैन । सुनिसुद्युम्न भूपतिमतिऐन ॥ पाणिजोरिकै बिप्रहिनौमि । कहतभयो बाणीअतिसौमि ॥ उचितकहत तुम बिप्रउदार । भूपहिसदा दण्ड अधिकार ॥ तुम

तपकरता बिप्रअहीन। तुमकहँजात दण्ड नहिं दीन ॥ मांगे
और तौनहमदेब। नहिंअघहेत निठुरतालेब ॥ तबद्विजकीन्हे
हठ अधिकार। तब नृपकियो दण्ड स्वीकार ॥ छेदन करवाये
युगपानि। गयोबन्धुढिग द्विज हितमानि ॥ दोहा ॥ शंखलि
खित कहँ देखिकै महेकरो कतिखेद। सरित बाहुला मधिकरे
मज्जन तजिनिरखेद ॥ लिखितजाइ तब सरितमधि सपरण
लागोभूप। तहां पाणि नूतनकढ़े बारिजातके रूप ॥ पाणिदेखि
के लिखित ह्वै बिस्मित बाहरआय। भयो देखावत शंखकहँ
महांमोद हियछाय ॥ शंखकहे तब लिखितसों यह ममतप पर
भाव। लिखित कहेकत नहिं किये तुमहीं दण्ड बनाव।
शंख कहेनाहिं बिप्रकहँ दण्डदेब अधिकार। दण्डधर्महै नृपति
को हरतापाप पहार ॥ यहिबिधि भूप सुद्युम्न नृप भयो दण्डदे
ख्यात। दण्ड धर्महै नृपनको नहिं मुण्डन करिखात ॥ सोरठा ॥
कहि ऐसो इतिहास व्यासदेव नृपसों कह्यो। गुणि निज धर्म
प्रकास राज्यकरोसब खेदतजि ॥ रोला ॥ बसतबनमैंभीम आदिक
बंधुतौ रणधीर। करि मनोरथ रहे भोगन देहुतौन गँभीर ॥
महा दुखको अंत लहि अब सुखहि भोगन देहु। पालिसुधरम
यज्ञकरिकै परमपद गतिलेहु ॥ धर्मशास्त्र बिचारपूर्बक करोरक्षण
लोक। शास्त्रजामति प्रबलकरिकै लहोआनँदओक ॥ साधुशूर
सुजान सुधनी शास्त्रविद मतिमान। गुणिनको गुणपालि सादर
करोराज्यमहान ॥ निदरि इनकहँ होतनृपजो बिषयमोलवलीन।
शत्रुतस्कर राज्यताको करतहैं अतिक्षीन ॥ नीतिधर्म सुभूमिके
हितमरतलरि क्षितिपाल। लहतहैसुरलोकनृपसो सुयश होतबि
शाल॥ हयग्रीवमहीप निरजनधर्मलगिलरिपूर्व। मारिशत्रुनजाय
बधिजिमिलह्योसुरपुरगूर्व॥ समयलहि तस्करनसोंलरिप्रजाहित
क्षितिरौन। हयग्रीव महीप तनतजि कियो सुरपुर भौन ॥ दोहा ॥
व्यासदेवके बचनसुनि कहेधर्म क्षितिपाल। नहिंछूटति ममग्ला-

नि गुणिबंश बिनाश कराल ॥ सुनिबिलाप सबतियनको धारत बनत न धीर। मोहिं न भावत राज्य प्रभुमोहिंदेत अति पीर॥ सोरठा॥ सुनिभूपतिके बैन व्यासदेव इमिकहतभे। सुनोभूपमति ऐन मरत न कोऊ कालबिनु॥ रचेबिधाताजौन कालपायसो नशतसब। बिनुआये क्षणतौन नाशैकोऊ नशतनहिं॥ निरमित बरधन काल लहि बरधत अगुणी नरौ। लहिलघुदिन धनपाल गुणीजातहै दारिदी॥ दोहा॥ कालपायके असितसित रैनिहोति सुनुतात। वृक्षलहतहैं फूलफल झरत कटतहैं पात॥ चौपाई॥ पूरबभूप शेनजित भाख्यो। बिधिजोक्षण निरमित करिराख्यो॥ उतपति प्रलयतौनलहि होई। भावी कहवावतहै सोई॥ भूप होतिहै भावी जैसी। लहिसोसमय होतिमति तैसी॥ पटुलहि प्रलय धीरता भेखै। और न लहै प्रलयसो देखै॥ सम्पतिपाइ कर्म्म अवरेखै। धनवाननकी कला निरेखै॥ शोचनकरत आ-पदा लहिकै। पटुदिन बितवत धीरज गहिकै॥ दुखअस्थान सहस शत सुखके। मोहत मूढ़ न बिना कलुषके॥ तृष्णा रतकहँ अतिदुख छावत। दुख आरतजोसो सुखपावत॥ दुख को अन्तभये सुख आवत। दुखके अन्त सुखैमन भावत॥ परदुख देखि गहत दुखभारी। सोनहिं कहूं होत सुखचारी॥ तातेजोनहिं सुखदुख मानत। प्राप्त होतसो कर्मज जानत॥ सोई मोद लहत सुनुराजा। नाशमान सबभूत समाजा॥ इ-मिकहि गयो शेनाजित भूपति। यहशुचि बाणी सुमति अनूपति ऐसेबचन व्यासके सुनिकै। भूपयुधिष्ठिर मनमें गुनिकै॥ कहे फाल्गुणसों पियबानी। सुनोतौन जनमेजय ज्ञानी॥ यह इति हास परममति दायक। नीतिधर्मगति बरधन लायक॥ युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ हैसुधर्म श्रेयदमहा लहत सुधर्मीसर्ब। प्रजा पालि करियज्ञ नृप पावत स्वर्ग अखर्ब॥ सधनीके सब सधत है निधनीको कछुनाहिं। जीवदेह तजिकाल लहि फिरि आवैं

फिरिजाहिं ॥ आप कहतसो सांचसब पैसुनिये ममबैन । समुझि मरण अभिमन्युको धीरजधरो रहैन ॥ द्रुपद सुताके सुवन सब अरुबिराट नरनाह । धृष्टद्युम्न अरुद्रुपदको मरण खुभत मनमाँह । धृष्टकेतु आदिक नृपन कोगुणि मरण अवात । मोहिं सतावत शोकप्रभु नहिं धीरज धरिजात ॥ चौपाई ॥ जासु अंकमधि क्रीड़ा कीन्हे । जासों सुधरम शिक्षालीन्हे ॥ बिदित पितामह बरव्रतधारी । परशुरामके समरणचारी ॥ जाकेसगुण जात नहिं गाये । राज्य लोभ लागि ताहि बधाये ॥ पूजन योग्य पूज्य सबहीको । बिप्र अचारज धनु धरणिको ॥ योगी गुरू बीर गिनती को । सब पाण्डब कहँ आदरही को ॥ तौ न बीर सो सुत बध सुनिकै । बूझो मोहिं सत्य बध गुनिकै ॥ सोहम राज्य लोभ अति गुणिकै । ताहि बधायो मिथ्या कहिकै ॥ हम अभिमन्युहि टेरिहठायो । ब्यूह बिदारणहेत पठायो ॥ सिंहगुहामधि मत्तद्विरदसों । प्रबिशिमरोकरि बिक्रमहद सों ॥ सोदर बंधुकर्ण धनुधारी । ताहि बधायो बिजय बिचारी ॥ हमलगि राज्यलोभ हे आरज । कीन्हेअगणित दुष्करकारज ॥ ताते अवशिदेह हमत्यागब । कोलगिशोक अग्निमन दागब ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिरके बचन सुनिकै व्याससमुनीश । पाणिपकरिकै कहतभे असनकहो अवनीश ॥ बधेगये सबकाल बश तुम न बधायेएक । करता मानत आपुकहँ यहमतहै अबिबेक ॥ है संयोग बियोग ध्रुव प्राणीको सुनुतात । यथा बुद्बुदा बारि मधि होत जुरत मिटिजात ॥ सुख दुख मोद गलानिकी थिर्ति नहिं रहति सदैव । पूर्ब्ब कर्म्म समहोत ये पूर्ब्ब कर्म्म है दैव ॥ अत्र पूर्ब्ब इतिहास हम कहत सुनो तुम तौन । भूपति जनक बिदेह सों कहे अस्म मुनि जौन ॥ जनक अस्म मुनि सों कहे कहो बिप्रमुनिदक्ष । केहिप्रकार कल्याणनर लहतजाति अघरक्ष ॥ अस्मउवाच ॥ जन्मजरा अरु मृत्यु फिरि जन्म जरादिकरोग ।

नित्यदुःखहै जीवकहँ अन्तर सुखको भोग ॥ प्राप्त होतसुख दुःख सो किये बनतहै भोग । निज मेटेनाहिं मिटतहै हैकर्मज संयोग ॥ अधनीके सुत बहुत नहिं एकधनीके होत । कर्मदैवकी गतिकहूं याहिविधि करति उदोत ॥ जियत दरिद्री बहुत दिन थोरे दिन धनवान । दोऊ सुख दुख लहतहैं निजकृत कर्मप्रधान ॥ जियत बहुतदिन दारदी दुखभोगन केहेत । भोगी सुखहि प्ररब्धभरि धनी मरत यहनेत ॥ मंत्रऔषधी टोटका धनसुत शस्त्रसहाय । टारिसकत नहिं मृत्युगति निरमित कालहिपाय ॥ सहसन माता पिता तिमि तिय सुत भाई रौन । क्रमसों संगमहोत फिरि नशै कौनको कौन ॥ पथसंगमसमहोत उरगृह कुलसंगम भूप । नहिं पूरब नहिं परकछू नाशवान सबरूप ॥ नित्यपृक्षमें जीवते देह होतिउत्पन्न । हैअनित्यमेंदेहजे जीवोत्पति आपन्न ॥ नहींनित्य संबासहै काहूको सुनुतात । पिता पितामह आदि तुव कहा सबंधु बिभात ॥ कियेकर्मको भोगहै अचल चलतनहिं एक । तातेनृप कल्याणप्रद वैदिककर्मबिबेक ॥ शास्त्रनयनहैं जगतके शास्त्रसुनो मतिऐन । बरण आशरमको धरम पालब दायकचैन ॥ अस्म बिप्रके बचनसुनि जनक यथा बिधि पूजि । गये मोहतजि निज सदन सबिनयबाणी कूजि ॥ तथा भूपतुम मोहतजि क्षात्रधर्म हितजानि । करो पैत्रिक राज्य यह उचित न गहब गलानि ॥ ब्यासदेवके बैनसुनि रहो मौनह्वैभूप । तब अर्ज्जुन श्रीकृष्णसों बोले गिराअनूप ॥ ज्ञातिशोक अति उदधिमधि नृपबूड़त करि ग्लानि । ताहिनिकासो नाथकरि लम्बितबानी पानि ॥ सोरठा ॥ सुनि अर्ज्जुनके बैन कृष्णचन्द्र नृपसों कहे । नृप कत होत अचैन लोक शास्त्र नृपनीति तजि ॥ रोला ॥ क्षात्रधर्म्म बिचारकरि करि मरे रणमेंबीर । शोक कीन्हे मिलत नहिं ते भूप धारो धीर ॥ पूर्ब को इतिहास अब हम कहत सुनिये तौन । दुखित सञ्जय भूमिपति सों कहे नारद जौन ॥ भाषि ऐसो कहे षोड़-

श राज्यको इतिहास । अभिमन्युको वध बिकल नृप सों कहे हे जो ब्यास ॥ कथा सो श्रुति पूर्व्व फिरि सुनि रह्यो मौन नरेश । ब्यासमुनि तबकहे धीरजधरो भूपसुभेश ॥ आततायी खलन को बध भूपतिनको धर्म । नीतिपूर्वक प्रजापालब करब वैदिक कर्म ॥ भूपकरि निजधर्म अब इमि वृथा आनत शोच । रोच कीजे भूपपदसो खेदकीजे मोच ॥ ब्यासके सुनिबचन बोलेधर्म उरब्री रौन । धर्मकी नाहिं मोहिंशंका सुनोमुनि मतिभौन ॥ राज्य कारण बधेबहुत अवध्यहम हेतात । हियोदाहत शोकताको धीर नहिं धरिजात ॥ दोहा ॥ धर्मनृपतिके बचनसुनि ब्यासकहे सुनु भूप । ईश्वर करता ब्याजकरि करत कर्मअनुरूप ॥ ईश्वरन्यामक तासुबश पुरुषकरतहैं कर्म । यथा पुरुषबशह्वै परशु तरु छेदतयहमर्म ॥ जोकर्त्ता पुरुषहिगणो नहिं न्यामकहै और । तऊ कियेनृपनीति तुमशंक तजोनृप मौर ॥ कर्मकियेको दण्ड दैपुरुष न पावतपाप । सदानृपतिको उचितहै दण्डवृत्तकोथाप ॥ किये अशुभशुभ कर्मको फलपावत नरऔसि । करिसुधर्म कततनतजत लेहुराज्य सुखहौसि ॥ रचेबिधाताजासु जिमि मरण मरत तिमि तौन । करमरूप निरमितकरत बिधिआगम थितिगौन ॥ ज्ञाति बन्धुके मरणको दोष न तुमकहँ तात । जयबिभूति यश हित मरेलरि क्षत्री अवदात ॥ सुने नहीं जो पूर्बभो देवासुरसंग्राम । एकपिताके पुत्रहे दोऊबली अक्षाम ॥ असुर रहेजेठेरहे छोटेसुमन उदार । दोऊलरेबिभूतिहित बत्तिसबर्षहजार ॥ बधि असुरन करिरुधिरमय मही सुमन समुदाय । बिलसत भयेत्रिलोकपति महाप्रशंसा पाय ॥ बधत दुरात्महि लहतसो धर्मसुनो उपचार । लहत पापजो दुष्टकहँ पालतकरि उपकार ॥ नहिंइच्छित हे युद्ध तुम नाहिं आनत हेरोष । भयोयुद्ध क्षय भटनको दुर्योधनके दोप ॥ राज्यकरो तजिशोच नृपतुम हितनेकुकलंक । अश्वमेध मखकरहु जो गहत पापको शंक ॥ असुरन बधिसुर

पतिकिये क्रमसोंमख समुदाय। ताते शतक्रतु ख्यातह्वैबिलसत ओजबढ़ाय ॥ तैसे तुमह्वै भूमिपति बिलसो सहितसमाज । नृप पुत्रन कहँदीजिये निजनिज पुरकोराज ॥ पुत्रपौत्रनहिंहोहिं जेहिताके कन्यनदेहु । आश्वासित करि नृपतियन मखकरिआनँदलेहु ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कौनकर्मते होतहै पापकहो मुनितौन । कौनकर्मते छुटतहै पापहोतहैजौन ॥ व्यासउवाच ॥ रोला ॥ कियेअबिहितकर्ममिथ्या कहे कपट बढ़ाइ । उदितरबि औमुदित बेला किये शैनबनाय ॥ प्रथम ब्याह कनिष्ठकोअरु ज्येष्ठकोभोपूर्ब । तौन दम्पति होतप्राश्चित योग्ययह मतिगूर्ब ॥ करत ब्रतको त्यागजो अरुमांसबेचत जौन । दानदेत अपात्रको अरु पात्र कोनहिंतौन ॥ आगिलावत ग्राममें जोकरत गुरुकुलघात । बृथामारत पशुहि जो बिश्वासघाती ख्यात ॥ महापातक लहत येसबसुनो नृपमणिदक्ष। लोकबेद बिरुद्ध करिबे योगनहिंपरतक्ष॥ त्यागकरब स्वधर्मको अरुगहब परकोधर्म। शरणआवैतासु त्याग अभक्षभक्षणकर्म ॥ भृत्यको नहिंकरब पोषण रसनकोक्रयनेम। वधब तिर्य्यगयोनिको नहिं उचितदेतअक्षेम ॥ पितासों जुबिबाद करिबो तियहि ऋतुदिनदोच । कर्मये करतव्यहैंनाहिं कियेबरधत शोच ॥ कर्मकितने लखत अनुचित कियेलखत न दोष । बधेद्विजजो बधन आवतलये शस्त्र सरोष ॥ रोगबशह्वै मरतमदिरा पिये औसर हेत। कियेपान अज्ञान बशतौ संसकार सुनेत ॥ कहेअनुचितकर्मइतने जौनतेसबभूप। छुटतप्रायश्चित्तकीन्हें शास्त्रमत अनुरूप॥ और जनको आपनोके प्राणरक्षण जानि। कन्यकाके ब्याहहितकै गुरुहिकोहितमानि ॥ जातसरबस आपनो जोकहै मिथ्याबैन। पापताको होतनहिं यहकहतहैंमतिऐन॥स्वप्नमें परदारसों रतिकिये धर्मनजाहिं। पुत्रहित गुरुबन्धु तिय केकहे रति अघनाहिं ॥ परे आपद लेइ गुरुधन बितरि तस्कर कर्म। नहींपातकहोत तासों महाबेधसमर्म ॥ समयलहिकैदेइता-

समपर करैमास षटपार॥ यहिबिधि कुत्सितकर्मप्रति है प्राश्चित्त अनेक। आस्तीकनके हेतनहिं नास्तीकन कहँएक॥ जप तप व्रत मखदान अरु तीर्थ गमन सबपर्ब। लियेनाम सियरामको छूटत पातक सर्ब॥ करिबो उचित सुकर्मनित कुत्सितको परित्याग। निशिदिन रहत सुकर्मरत तेनर पूरण भाग॥ व्यासदेव मुनिराजके ऐसेबचन अनूप। सुनि चटपट बोलत भयो सुपटु युधिष्ठिर भूप॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ कौन पदारथ भक्ष्यकौन अभक्ष्य अपात्रको। कौनपात्रहै लक्ष्य कहौ तौनमुनि पितामह॥ चर्थकरी॥ पूरब इहै प्रश्न सुनुभूप। स्वायम्भुव मनुपास अनूप॥ मुनिगण कीन्हेतब मनुदक्ष। भाषे भक्ष्य अभक्ष्य प्रतक्ष॥ पूरब को इतिहास महान। सोहम कहत सुनो मतिमान॥ भक्ष्य अभक्ष्य कहें मुनिजौन। पात्र अपात्र बताये तौन॥ दोहा॥ कमठ बिनाजल जन्तुसब बिप्रहिसदा अभक्ष्य। कहतसल्लकी जाहिसो हैब्राह्मणकहँ भक्ष्य॥ चकबकहंस सुपर्ण अरु शेन उलूको काग। चारिडाढ़के जन्तुसब हैं अभक्ष्य तजिराग॥ उटिनी भेड़ी मृगीको दूधनब्राह्मण योग। द्वादशादिन मितगऊको पयब्राह्मणहि अभोग॥ प्रेतअन्न जोप्रगटअरु सूतिकान्नजोखात। बिनुपति सुतकी तियाकोअन्न अभक्ष्य कहात॥ खातपियाय नसकतजो ताकोअन्न अभक्ष। गणिका शूद्र सोनारको अन्नअक्ष्य प्रतक्ष॥ प्रथम होमके होमकृत कोहैअन्न अखाद्य। अन्नपुंश्चली कोसदा हैअखाद्यकरिबाद्य॥ अन्न ग्रामरखवारको औ बइद्यकोअन्न। रजक जुआरीचोरको होतअभक्ष्य अपन्न॥ देवपितर अर्पणबिना है अभक्ष्यसबअन्न। उचितगृही भोजनकरैं तोषिअतिथिआपन्न॥ सुनोभूप अबजोकहे मनुप्रभु दान अपात्र। तिन अपात्रतेइतर द्विज तिनकहँ जानोपात्र॥ भीतद अयशी कौतुकी नृत्यगीत कृतहास। अंगभंग जारज कुटिल अरुअव्रत अरुदास॥ सेवक उपकारी भिषज दानपात्र येनाहिं। ब्राह्मण बिद्यामानसो

श्रेष्ठपात्र जगमाहिं ॥ बिद्याबिनुको बिप्रजिमि बारिबिनाको कूप। श्रोत्री ब्राह्मण क्रियायुत है अतिपात्र अनूप ॥ जैसेओदो काठ लहि पावक बर्द्धत नाहिं। तिमि अपात्रके दानको सुफलनहीं सरसाहिं ॥ उदर भरेको पात्रहै क्षुधावान निरधारि। नहींक्षुधित के उदरमें पात्र अपात्र बिचारि ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ यहि प्रकारकी बारता सुनिकै धर्ममहीप। श्रद्धाधरि मुनिव्यास सों कहत भयो कुलदीप ॥ मुनिहम चाहत सुनोअब राजधर्म व्यवहार। अरु आपत अरुदान अरु मोक्षधर्म व्यवहार ॥ भूपतिके येबचन सुनि कहे व्यासमुनि दक्ष। सुनो भूप इनधर्म्मको ज्ञाता भीष्म प्रतक्ष ॥ भृगुगुरु जानत धर्मजो सो भीषम मतिभौन। मार्कण्डये मुनीशसों लह्यो धर्मसब तौन ॥ सर्ब ब्रह्मऋषि पूर्बहै जासु सभासद पर्म। सो भीषम सर्बज्ञपटु हैज्ञाता सबधर्म ॥ चलि ताकेढिग प्रश्नकरि सुनो धर्म्म समुदाय। शोकमोह तजिनीति गुणि पालो प्रजा सचाय ॥ व्यासदेव के बचन सुनि मौन रह्यो क्षितिपाल। तब यदुकुलमणि कृष्ण प्रभुबोले बचन बिशाल ॥ कृष्णउवाच ॥ सोरठा ॥ शोक मोह त्यजि भूप व्यास कहतजो सोकरो। शुचि करतब्यअनूप व्यासकहतसो मंत्रमम ॥ करिकैनगरप्रवेश इष्टग्राम्य कुलदेव द्विज। पूजिदानदेवेश राज्य ग्रहण बिधिवत करो ॥ बन्धुप्रजा समुदाय मोदितकरि बिप्रनसहित। तदनु भीष्म पहँजाय सुनोजौन चाहतसुधा ॥ महिबरगी ॥ सुनिकृष्णप्रभु जगदीश के येबचनशुचि सधरममये। नृपधर्म क्षणक बिचारि बिप्रननौमि उठि अभरमभये ॥ लखि कृष्णकेपदकंज कृष्णहिं सुरथपर थापि तकरे। धृतराष्ट्र नृपहि चढ़ाय शिविका सुरथचढ़ि आनँद भरे ॥ तहँ भीम सारथिपनो कीन्हें छत्रगहि पारथलसे। सहदेव चामर व्यजनकीन्हें लयेकर रथपर बसे ॥ सब सुभट सात्यकि औ युयुत्सहि आदि रथ चढ़ि चढ़ि चले। चढ़ि बाजि कुंजर सुरथ सांवत चले छावत मुदभले ॥ दोहा ॥ बन्दीजन अस्तुति पढ़त

द्विज स्वस्त्ययन अनूप। बजत शंख दुन्दुभि घने पसरो आनँद रूप ॥ गान्धारी धृतराष्ट्र कहँ आगे करि क्षितिपाल। हास्तिन-पुर प्रति चलतभे पूरण प्रभा विशाल ॥ कुन्त्यादिक रनिवास सब गये विदुरके संग। चले विदुर लीन्हें तिन्हें शिविकों सुरथ प्रसंग ॥ पुरजन आवत नृपहि सुनि लैलै कलश सुथार। तिय गावत ठाढ़ीभईं बितरत मंगलचार ॥ रोला ॥ देत बिप्रन दान मंगल सुनत अति अवदात। कियो नगर प्रवेश राजा शक्र स-रिस बिभात ॥ प्रजन पेखत देत आनँद सुनत श्रुति सुखबैन। जाय नृपगृह द्वार उतरो भूपदायक चैन ॥ नौमि बिप्रन सुनत आशिष जाय गृहमधि भूप । पूजिकै कुलदेव बाहर कढ़ो आ-नँद रूप॥ धौम्य आदिक द्विजन कहँ तहँ नौमि विधिवत पूजि। बसन भूषण हेम गोमणि दये सुचकन कूजि ॥ सहित बंधुन भूप विप्रन भयो पूजत यत्र । पुण्य घोष महान नभलों भयो पूरित तत्र ॥ सखा दुर्योधन नृपतिको चारबाक अमान । रह्यो राक्षस तौन आयो गहे कपट महान ॥ नित्रिदण्डी द्विजन सँग लै जाय जहँ अवनीश। कह्यो ऋजुता गहे पूरित कपट बिश्वे बीश ॥ ज्ञातिघाती मूढ़नृप तू तोहिंधिक सबकाल । ज्ञातिक्षय करवाइ भोगन चहत भूमि कराल ॥ धर्मनृप यह बचनसुनिकै गहे शंका भूरि। कहे मोहिं न कहो धिक हमरहे करुणा पूरि॥ धौम्य आदिक विप्र गुणिकै ताहि राक्षस जानि। हुंकार करिकै किये भस्मित नृपतिको हितमानि॥ अधिक खेदित नृपहि लखि तब कहे केशव दान्त। खेदमति नृपगहो याको सुनो जो वृत्ता-न्त॥ चारबाक कुनामको यह रह्यो राक्षस दुष्ट। सखा दुर्योधन नृपतिको छली पापी पुष्ट ॥ मित्र बधके बैर तुमढिग आइ ऐ-सो भाषि। कह्यो इमि तवराज्यपदमें विघ्न अति अभिलाषि॥ समुझि यह वृत्तान्त जान्यो द्विजन यहि करि रोष। कहो याको गुणोमति मातिमरेको कछुदोष॥ बचो हो यह एक ताको सखा

सोऊ मूढ़ । मरो यहिविधि आय यह तो भाग्य महिमा गूढ़ ॥ राज सिंहासन बिमलपर गहो नृप अभिषेक । करो पालन प्रजनको करि नीतिधर्म बिवेक ॥ दोहा ॥ कृष्णचन्द्रके बचन ये सुनिकै धर्म नरेश । सिंहासनपर बैठिके राजो यथा सुरेश ॥ कृष्ण भीम अर्जुन नकुल सात्यकि अरु सहदेव । यथाउचित बैठे सबै बिदुर युयुत्सु सुभेव ॥ गान्धारी धृतराष्ट्र अरु धौम्य आदि द्विज यूह । बैठी कुन्ती द्रौपदी अरु सब युवति समूह ॥ रोला ॥ तहां योजित देखि सब अभिषेकको सामान । कृष्ण धौम्यहि दये शासनजानि समय महान ॥ द्विजनसह उठि धौम्य बेदीबिरचि पूरबओर । बाघ चर्म बिछाय ताढिग सुनतमंगल शोर ॥ द्रुपदजा सहधर्म भूपहि तहां करिआसीन । कियेमंगल होम बिधिवत पढ़त सुबचन पीन ॥ कृष्णपूजित शंखगहि तब मुदित सहित बिवेक । बारिभरि भरि धर्मनृपको करतभे अभिषेक ॥ बजेतेहिक्षण शंख दुंदुभि आदि बाजन भूरि । वेद अरु स्वस्त्ययनकी धुनिरही नभलोंपूरि ॥ रजत भूषण बसन सुबरण सुमणि गायअमेय । पूजिविप्रन्ह दयोबिधिवत भूमिपतिकौन्तेय ॥ करत अस्तुति सूत मागध लहे सादर मौज । हेम हय हथियार हाथी भूमि भूषण सौज ॥ देतदानमहान सुनिस्वस्त्ययन सुयश अमन्द । लसो शुभसिंहासनोपर शक्रसों कुलचन्द ॥ तहांभूपहि भयेपूजित बन्धुवर्ग समस्त । भानुसम नृपउदितभो करि शत्रुसगरब अस्त ॥ राजसिंहासन बिमलपर धर्म भूपति दक्ष । बन्धु सेवक पौरजनसों कहतभो परतक्ष ॥ महाराजधिराज नृपधृतराष्ट्र ममगुरु पर्म । प्राणराख्यो तासुसेवाहेत हम गुणि कर्म ॥ तासु शासनविषे थिरिह्वै रहेहुनिति तुमसर्ब । इहै मम प्रियहेत अतिशय नीतिधर्म अखर्ब ॥ पौरजनकहँ बिदा कीन्हें नियमकै यहकाज । तदनुभूपति भीमसेनहिं करतभे युवराज ॥ कियेनकुलहि सैनशिक्षक पुरनिरीक्षक बेश । आत्मरक्षक करतभे

सहदेव कहँ सबदेश ॥ शत्रुमर्दन काज सौंप्यो पारथहि कुरु भूप। दियेधौम्य पुरोहितहि द्विजदेव अर्चनरूप॥ बिदुर अरु संजयहिमंत्री कियेकरि अनुमान। नियमिभूपहि सदासेवतरहेहु सहित बिधान॥ तदनुभूपति कियो रंभन श्राद्धको गहिनेम। इरावाण बिराटको अरु द्रुपदको करिप्रेम॥ द्रौपदेयन कर्णको अभिमन्युको करिगौर। धृष्टद्युम्न घटोत्कचादिक सुहित हे जे और॥ द्रोणको करिश्राद्ध दीन्हेंदान सबकेहेत। पृथक् पृथक् उचारि करिकरि नाम गहि गहि चेत॥ दयेभोजन भूरि बिप्रन धर्मकरि सन्मान। रहेआश्रयहीन तिनकहँ कियोआश्रयमान॥ राजपत्नीरहीं तिनकोकियो अतिसत्कार। भृत्यगणको सविधि पोषणकियो भूभर्तार॥ श्राद्धकीन्हे सुतनको धृतराष्ट्र नृपतिसु-डौर। दयेभूषण बसन भोजन गाय बसु सबठौर॥ नहींजिनके श्राद्धकर्ता रहेतिनको नाम। पिण्ड दैदै धर्मभूपति दयो दान अठाम॥ श्राद्धकरि यहिभाँति सबसों उऋणह्वै क्षितिपाल। देव पूजन कियो बिधिवत पूरि प्रेम विशाल॥ दोहा॥ राम कृष्ण की कृपा ते बिजय पाय नृपधर्म। लहि सुराज्य राजित भयो कर-ता कौलिक कर्म॥

श्रीमहाभारतेशान्तिपर्वणिराजधर्मेयुधिष्ठिराभिषेकोनामद्वितीयोध्यायः २

बैशम्पायनउवाच॥ दोहा॥ लहि अभिषेक महात्मा भूप युधिष्ठिर भूप। कह्यो श्याम घनरूपसों बचन समय अनुरूप॥ कबित्त॥ महाराज कृष्णचन्द्रजानो आपुकी कृपाते बिजय बानोपायो मानो आपनी धरीरही। आपुकीकृपाते तौन अग्निहूं बुतानी जौन बलभौन बन्धुनके हियमें बरीरही॥ गोपीनाथ आपुकी कृपाते भूमिपाई ज्यों बिक्रमी प्रतापी क्षितिनाथकी हरीरही। आपुकी कृपाते भरी संपदा ज्योंपरीलाखिधरीसबेदाकी भूरि संपदा भरीरही अपर॥ आपु बैकुंठ बिष्णु कृष्ण पुरुषोत्तमहौ हृषीकेश हरिहर हंसता गहतहौ। बृहद्भानु अग्नि औवराह उग्रसेनानीत्रिदिव

त्रिविष्टप त्रिनैनता लहतहौ ॥ अच्युत आदित्य औअखिल लोकपाल आपु आपु महाक्षत्री सर्वक्षेत्र भोरहतहौ । आपुसाम दानधाम यामिनी दिवसधाम अभिराम रामकाम क्षामऔमहत हौ ॥ दोहा ॥ उत्पति थिति पालन करन आपुजगतजगओक । वेद सिन्धुगिरि मंत्रविभु प्रभुतुम लोकनलोक ॥ यहिप्रकार श्री कृष्णकी अस्तुति करिनृपधर्म । नमस्कारकरि नमित ह्वै भयो कृतारथपर्म ॥ तदनुधर्म क्षितिपालमणि बन्धुन सहित सनेह । यथायोग लखिदेतभे भरेसंपदागेह ॥ लैआज्ञा धृतराष्ट्रकी दुर्योधनकेगेह । देइ वृकोदर कहँ दये पूरि हियेकोवेह ॥ दुइशासनको गृहदये श्वेतबाह नहिंचाहि । दुर्मर्षणको गृहदये नकुलबन्धुजो ताहि ॥ दुर्मुखको गृहदेतभो सहदेवहि क्षितिरौन । भरे सम्पदा सकलघर यथा धनदकोभौन ॥ संजय बिदुर युयुत्सुअरु धौम्य सुधर्मा जौन । तिन्हैं कहे भूषितकरो बसि बसि निज निजभौन॥ सोरठा ॥ नृप आज्ञालहिसबै जातभये निजनिजसदन । सात्यकि सह तेहिपर्व कृष्ण पार्थके गृहगये॥ चउपाई ॥ यह इतिहास मनोरमरूप । सुनिबोले जनमेजयभूप ॥ ताकेपर प्रपितामहदक्ष । कियेकहासो कहोप्रतक्ष ॥ सुनिजनमेजय नृपकेबैन । बोलेव्यास शिष्य मतिऐन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अनुपम राज्यपाय नृपधर्म । सुनोकियेजो सुधरमकर्म॥ आश्रम वर्णधर्म व्यवहार। रक्षणकिये लिये अधिकार ॥ बिप्रनको दीन्हे धनभूरि। आश्रित भृत्यनकहँ मुदपूरि ॥ नाट्यबाद्य कौतुकबिद जौन। सबको पोषकियो क्षितिरौन ॥ जौन गुरुकी वृत्ति अमन्द। कृपहि दयेसो पूरिअनन्द ॥ यथा उचित सबको सतकार । करतभयो नृपधर्म उदार ॥ नृप तेहिदिनकी निशाबिताय । सानँद पास कृष्णके जाय ॥ ध्यानावस्थित कृष्णहिदेखि । यहिबिधि बूझतभे अवरेखि ॥ प्रभुपुरुषोत्तम आदि अनादि।तुमक्षर अक्षर कहत श्रुतिनादि ॥ तुम करता जगदीश बनाय।तुमक्यहि ध्यावत इमिमनलाय ॥ सुनि

प्रभुबोले वचन गँभीर । शरशय्यागत भीषमवीर ॥ अविचल धारिरहो मनध्यान । तहां बसोमम मन मतिमान ॥ मुनिबाशिष्ठ को शिष्य ललाम । भीषम ज्ञानधर्मको धाम ॥ दोहा ॥ बर्तमान अरु भूत जो अरु भविष्यहै जौन । सो सबजानत धर्मबिद भीषम महिमाभौन ॥ ताते ताके पासचलि भूपसुनो सबधर्म । ह्वै है ताके दिनगये अस्तज्ञान जो पर्म ॥ केशवके ये बचनसुनिकहे युधिष्ठिर भूप । नाथकृपा यहिभांतिकी मोपैकरतअनूप ॥ तौरथ चढ़ि मोहिंसंगलै चलोतहांमतिरास । देहुसुदर्शन भीष्मकहँ सुनो धर्म इतिहास ॥ कृष्ण सात्यकीसों कहे रथमम लावहु साजि । दारुक सात्यकि बचनसुनि ल्यायेसुरथ ससाजि ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ उतै भीष्मकहँ घेरि कै बैठे मुनि समुदाय । नामतासु मंगलकरण सुनो भूपमनलाय ॥ छप्पै ॥ जैमिनिदेव स्थान व्यासनारद गुरुभृगुमुनि । अरुमक बात्स्य हरीतपौल लोमश मौद्गल मुनि ॥ दुर्बासाबाल्मीकि कपिल काश्यपक्रतुतुम्बरु । भार्गव सनत्कुमार पुलह प्रिप्पल पुलस्तिअरु ॥ कचगालव गौतम धौम्रमुनि काश्यअंगिरा तत्त्वधर । अरुबिभाण्डमाण्डव्य मुनि भौतिकभाष्करि बिप्रबर ॥ दोहा ॥ पवनमरीच सुमन्तअरु मार्कण्डेयमहान । अरुसम्बर्तउलूक अरु अरु तृणबिन्दुसुजान ॥ पर्वतधौम्यपराशर देवल आदिअनेक । बैठे चहुंदिशि भीष्मके सुनत सुबचन बिबेक ॥ तहँभीषम श्रीकृष्णकी अस्तुतिकीन्हेंभूरि । सबथरव्यापीकृष्णप्रभु सोसुनि आनँदपूरि ॥ रथचाढ़िके सात्यकि सहित चले प्रदायक क्षेम । एक सुरथचाढ़िके चले पाण्डवपूरितप्रेम ॥ कृप युयुत्सु संजय बिदुर चलेसुरथचढ़ि तत्र । कुरुक्षेत्रमाधि ह्वै चले युद्धभयोहोयत्र ॥ सोरठा ॥ तहँमाधव अनुमानि नृपतियुधिष्ठिर सों कहे । भार्गव इतरणठानि शोणित पूरेपांचशर ॥ केशवके सुनिबैन चैनभरे भूपतिकहे । कहोकृष्ण मतिऐन जन्मकर्मभृगु रामके ॥ कृष्णउवाच ॥ रोला ॥ सुनोभूपति रह्योपूरब जह्नुभूप महान ।

सुवनताको बलाकाश्वो तासुकुशिक अमान ॥ शक्रताहि महान गुणिकछु अंशसुतभे तासु । गाधिनाम अगाध महिमा सुयश पसरोजासु ॥ सत्यवतीभई कन्या गाधिकी तपधाम । भूपताहि ऋचीकमुनिकहँ दईगुणि अभिराम ॥ कछूदिनमें सुमुनि तामें पुत्रउपजन हेत । गाधिनृपके पुत्रनहिंहो तासुहित करिचेत ॥ दोयवेदि बनायातिनपै अग्निकरिकै दीप्त । दोयपात्र सुचरुबनाये मंत्रकरि अवलिप्त ॥ क्षात्रमंत्रन एकमंत्रितकियो मुनिमणिदक्ष । ब्रह्ममंत्रन एकमंत्रितकिये अतिशयस्वक्ष ॥ एकचरु निजतियहि दीन्हें भाषिकै परभाव । देहुयह निज जननिकहँ कहिदये एक बनाव ॥ भाषि इमि युगभाग चरुदे बिपिनगे मुनिराज । इतैमहँ तहँ गाधिआये सहित तियसहसाज ॥ बिप्रतिय युगभागचरु निजजननि आगेराखि । आपको यहभाग ममयह कही पुत्रद भाखि ॥ भूपतियकछुभेदगुणि निजभागदीन्हींताहि । भागताको आपुलीन्ही पुत्रअनुपम चाहि ॥ गयोभूपति धामअपने सुमुनि आश्रम आय । जानिकै वृत्तान्त तियसों कहतभे समुझाय ॥ भागतो तुवजननि अरुतुमलयो ताकोभाग । पुत्रह्वैहै तासु तापस परम पूरबभाग ॥ पुत्रतेरो महादारुण गहेक्षत्रीधर्म । होयगो यह चरुबिपर्यय भयोताको कर्म ॥ बिप्रतिय यह बचनसुनिकै जानिभीषम रूप । कहीपगधरि करोप्रगटित पुत्रनिज अनुरूप ॥ बचनयह सुनिकहे मुनिनहिं मंत्रनिष्फलहोत । करीजामें जौनविधि तिमि तौनकरिहि उदोत ॥ विप्रतियतब कही इमि मतिहोइ मुनि शिरमौर । पुत्रमति इमि होउहोउ पउत्रबरु यहि ठौर ॥ ऋचीकउवाच ॥ प्रियेबचन तथास्तु तौनहिंपुत्र पौत्रहिभेद । पौत्र तौ अनुरूप चरुके होयगो तजुखेद ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ भयो सुवन ऋचीकके जमदग्नि बरबशधाम । गाधिनृपके भयो विश्वामित्र तपनिधिआम ॥ भयोसुत जमदग्निके भृगुराम दारुण दक्ष । धनुर्व्वेद महानको जो लह्यो अन्त प्रतक्ष ॥ गन्धमादन

शैलपै बहुदिवस शिवहि अराधि । लह्यो शस्त्र अनेकजो अरु परशुबर व्रतसाधि ॥ परशुपाणिअमानकै जोभयो लोकबिख्यात । महाप्रज्वलित अग्निसम जमदग्निसुत अवदात ॥ रहो पूरब भूमिपति कृतवीर्यनाम महान । पुत्रताको कार्तबीर्य्य महीप भो बलवान ॥ सुमुनि दत्तात्रेयकी लहिकृपासों रणधीर । सहस भुज लहिहोतभो जगजैन अनुपमबीर ॥ जीति सातोद्वीप सब थल कियोअगणित यज्ञ । नामसहसार्जुनो है हयनाथसो सर्बज्ञ ॥ तासुबाणज अग्नि बढ़िकै एकदिन सुनुभूप । बिपिनजारि वशिष्ठमुनिको कियो भस्मस्वरूप ॥ कछूदिनमें आइ मुनि तहँ जरोआश्रमदेखि । शापसहसार्जुनहिंदीन्हें महाअघ अवरेखि ॥ जरतआश्रम बिपिनमेरो नहींवारै जौन । करैगो तौ बाहुछेदन राम बिक्रमभौन ॥ कछूदिनमें भूपसुत जमदग्निके घरजाय । देखिअनुपमचले हरिलै बत्ससहित सुगाय ॥ रामसों रणभयो ताहित गयो अर्जुनतत्र । रामकाट्यो तासुसहसौ भुजाकरिरण शत्र ॥ भूपकोबधदेखि भाजे तासुसुत समुदाय । रामल्याये बत्स आश्रमबीच आनँदछाय ॥ कछूदिनमें कार्तवीर्य महीपके सुत सर्व । जमदग्निमुनिके गयेआश्रम गहेअतिशय गर्व ॥ समिध कुशहित विपिनमधि कहुंगये हे भृगुराम । जायतब जमदग्निको शिर दयेकाटि निकाम ॥ दोहा ॥ भृगुपतिबनते आइ तब दशा जनककी देखि । क्षात्रबंशके नाशको प्रणकीन्हें अति तेखि॥परशुपाणिचढ़िजायकैकार्तवीर्यकोबंश।पुत्रपौत्रतेगोत्रकोकरतभयो बिध्वंश॥सहसनहैहयसुभटबधि कियोरुधिरमयभूमि।कियोभूमि बिनु भूमिपति बधि सबक्षत्री घूमि ॥ जयकरी ॥ भूमि अराजक करि भृगुराम । कियोजाय गिरि कानन धाम ॥ तेहिदिशिबीती बरसहजार । तब कौशिक को पौत्र उदार । द्वैशत असितकरणदैबाजि । प्रकट कियोजेहि कौशिक राजि ॥ जौन रैभ्य नामक अभिराम । ताकोपुत्र पराबसुनाम ॥ सोभृगुपतिसों बोलो

तत्र । आपु कहत महिकियोनिक्षत्र ॥ मिथ्याकिये प्रतिज्ञातात । शतसहस क्षत्रीचढ़े बिभात ॥ तुमक्षत्रिन के भयइत आय । दिन बितवत अबिरल बनपाय ॥ बचन परावसु के सुनिराम । फिरिगहि शस्त्रचलो बलधाम ॥ जेक्षत्री हे भोगतभूमि । तिन्हें बधत भो सब दिशिघूमि ॥ बालप्रभृति बधि फिरि बनजाय । दीन्हो बहुशत बर्ष बिताय ॥ तब जे रहे गर्भमधिबाल । तेसब बढ़ि बढ़ि भे क्षितिपाल ॥ तबफिरिआइ बीर बलरास । लरि सब तिनकोकियो बिनास ॥ बधिफिरि जाइबसो बनमाह । फिरि गर्भस्थभये नरनाह ॥ सो सुनि फिरिआये बलभौन । कीन्हीं-भूमि बिनाक्षितिरौन ॥ यहिबिधिफिरिफिरि इकइसबार । कीन्हीं भूमि बिनाभरतार ॥ तबगुणि अश्वमेध मखतर्पि । भूमिकश्यप-पहि दई समर्पि ॥ कश्यपतासों लैमहिदान । क्षत्रिनको हितकरि अनुमान ॥ कहेरामसों सुनुमतिमान । उरबीमोहिं दयेतुमदान ॥ तुमकहँ उचित न यापैबास । जाहुयाम्यदिशि सागरपास ॥ सो सुनि रामउचित गुणिबैन । गो दक्षिणदिशि बिक्रमऐन ॥ तहां समुदसों महिलैदक्ष । रचि सुर्परिक देशअति स्वक्ष ॥ कीन्हे बास जानि रमनीय । महिमाजासु अनिरबचनीय ॥ इतकश्यप बिप्रनदै देश । तपहितकीन्हें बिपिन प्रवेश ॥ बिनुशिक्षक कछु दिनमें क्षुद्र । भेप्रमाद बैश्य अरु शुद्र ॥ देनलगे बिप्रन दुख भूरि । तबकैपीड़ित भूरि बिसूरि ॥ रक्षकबिना बिकलता छाय । चली रसातल अतिअकुलाय ॥ सोलखिकश्यपमुनि मनमानि । ऊरूतेधारयो हितमानि ॥ ऊरूतेधारयो मुनि आम । ताहीते भो उरबीनाम ॥ तब उरबीरक्षनकेहेत । मुनिसों बिनयकरी करि चेत ॥ नाथभयो हैहयकुल लुप्त । तामेंकछु बांचेरहि गुप्त ॥ ते ममरक्षण करेंसडौर । तौहमरहैं नबिधिहैं और ॥ सोसुनिकश्यप करि स्वीकार । कीन्हेंतिन्हें भूमिभरतार ॥ दोहा ॥ जासुनाम महि कहिदई तिन्हेंल्याइ अभिषेक । निर्भयकरि क्षितिपतिकियेकश्यप

नीतिबिबेक॥यहिप्रकारकीबारताकहतसुनतमतिऐन॥निकटजाइ भीष्महिलखे शरशय्या कृतशैन॥ सेवतमुनिसमुदायजेहिबिधि वतसब दिशिबैठि। मध्य भूमिगत भानुसम रह्योतत्त्वमधिपैठि॥ दूरिहितेरथते उतरि केशव आदिक सर्ब। नमस्कार करिजाय ढिग बैठत भयेअखर्ब॥ चौपाई॥ मुनिगणधर्म सकृष्णहिपरखत। रंकपाइ धनजिमिभे हरखत॥ तहँक्षण बितय कृष्ण अनुमानी। भीषमसों इमिकेह सुबानी॥ हेगांगेय धीर जगजेता। सर्ब धर्म-बिद ऊरधरेता॥ तुम देवनकहँ शिक्षन लायक। तुमसब मति-मानन के नायक॥ भावी बर्तितभूत बिधाना। तोहियकरआम-लकसमाना॥ समदमदान सत्यमख सागर। धनुष वेदज्ञातन में आगर॥ वेद शास्त्रबिद तत्त्व बिशारद। तुम्हें प्रशंसत भृगु गुरुनारद॥ अष्टबसुनकेअंश सुलक्षण। तुमबसु नवमबिख्यात बिचक्षण॥ परमभक्त तुम मम मनभाये। सुनौ जौनहित हम इतआये॥ जो जेठोसुत पाण्डु नृपतिको। धर्मशील सम दम सति अतिको॥ क्षात्रबंशको क्षय लखिभारी। शोकभयो ताको हियचारी॥ ताते कहिसब धर्म नियामक। लोपित करो शोक दुखदायक॥ सांख्य योग इतिहास पुराने। आश्रम बरणक धरम न माने॥ देशजाति कुलरीति विधाना। वेदलोक श्रुति शास्त्रपुराना॥ भीषम तुमसब जाननहारे। नृपति युधिष्ठिरपौत्र तुम्हारे॥ होहिं अशोक कहो सो बानी। सुख दुख सम ज्ञाता तुम ज्ञानी॥ दोहा॥ तुमसमान नहिंजगतमें तत्त्वबुझावनहार। धर्मनृपतिके शोकको शीघ्रकरो संहार॥ कृष्णचन्द्रके बचन सुनि भीषम शुभदिन जानि। ईषद उन्मुख बदनकरि कहेजोरि युग पानि॥ जयकरी॥ नमः कृष्ण गोविन्द उदार। हृषीकेश अज जगकरतार॥ नमो विश्वआत्मा भगवान। योगीश्वर जगदीश महान॥ दिवतौ शीशभूमि तुवपाय। रबि तुवनयन जगत सुख दाय॥ दिशितौ भुजाकहत श्रुति वेद। घ्राण अश्विनीसुवन

अखेद ॥ अतसी पुष्परंग घनश्याम । पीत बसन तड़िता अ-
भिराम ॥ सदा निरखिहमहोत सनाथ । श्रेयदबचन कहो यदु-
नाथ ॥ यहसुनि कहेकृष्ण अनुरक्त । भीषमतुम मम अबिचल
भक्त ॥ ताते तुमदेखत ममरूप । नहिं अभक्तजन लखत अनू-
प ॥ चढ़िबिमान सुरबसु गन्धर्व । सेवत तुम्हें गुप्तरहि सर्व ॥
तुम्हें गयेते ऊरध ओक । बिनुज्ञानी होई यहलोक ॥ तातेसब
आये तोपास । ज्ञानधर्म सुनिबेकी आस ॥ सोगुणि ज्ञान धर्म
सब भाखि । देहुभूप हियआनँद राखि ॥ कृष्णचन्द्रके ऐसेबैन ।
सुनि भीषम बोले लहिचैन ॥ तुम्हरे आगे भूभरतार । हमका
कहें ज्ञानब्यवहार ॥ बैठोजहां गुरूतेहिठौर । शिष्य न कथत
ज्ञान यहतौर ॥ लहि गुरुशासन कहिबो योग । इततुम करत
निदेश प्रयोग ॥ दोहा ॥ तुम आज्ञालहि नाथनहिं कहिबेमें स-
न्देह । पै बाणनकेघातसों है बेधित सबदेह ॥ जीवहोत पीड़ित
महा मति न होति असफूर्ति । कथा पुरातन धर्मकी नहींगहति
है सूर्ति ॥ तपत मर्मलहि अति ब्यथा जीवमहा अकुलात ।
भ्रांति बरधि घेरत मनहिं बचन नहीं कहिजात ॥ ज्ञानधर्मकी
बारता किमिभाषैं यदुराय । तुमअनन्त बैठेजहां अरु सबऋषि
समुदाय ॥ गीता ॥ भीष्मके ये बचनसुनिकै कहे यदुकुलचन्द ।
भीष्म धीरधुरीण तुम मतिमान बीरअमन्द ॥ देतहैं बरदानहम
नाहिंरहैगो तनताप । मोहपीड़ा शिथिलता भ्रमकरहिंगेनहिंदाप॥
सुमति तौअसफूर्ति ह्वैहैसूर्ति ह्वैहैसर्ब । कढ़ैगी तौबुद्धि गतह्वै
कथाजौनअखर्ब । भयेपूजत कृष्णके ये बचन ऋषिगणमोदि ।
किये सुरगण सुमनबर्षा गगनमध्य बिनोदि ॥ इतेमें सबअस्त
गिरिपै प्राप्तसूरहिदेखि । नौमिउठिउठि करिप्रदक्षिण भीष्मकहँ
अवरेखि ॥ कृष्णसों ह्वै बिदा ऋषिगण गये निज निज धाम ।
कृष्णपाण्डव सुरथ चढ़ि चढ़ि गये नगर अक्षाम ॥ करिअहार
बिहार आदिक क्रियारजनि बिताय । भोरफिरि सबभीष्मके ढिग

गये आनँद छाय ॥ जायतहँ लखि ऋषिनकहँ तेकिये सविधि प्रणाम। भयेबैठत भीष्मकेढिग कृष्ण पाण्डव आम ॥ बिदुर अरु धृतराष्ट्र संजय और नृपहत शेष। रहेजे ते भयेबैठततहां अति अवरेष ॥ जनमेजयउवाच ॥ तदनुबार्ता भईजो सोकहो मुनि परतक्ष। कियो किमिकोप्रश्न केहिबिधिकहे भीषमदक्ष ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनोनृप जबभयेबैठत कृष्णभूप समाज। भूपसों तब कहेनारद मुनिनके शिरताज ॥ धर्मनृपजो सुन्योचाहो धर्मको ब्याख्यान। प्रश्नकरि अबभीष्मसों सोलेहुसुनि मनमान ॥ बिना भीषम तासुवक्ता जगतमें नाहिं और। होनचाहत अस्त रबिसों भीष्मज्ञानी मौर ॥ कृष्णके येबचनसुनि नृपधर्म धरिकबिसूरि। कृष्ण प्रभुसोंकहे सुबचन परमआनँद मूरि ॥ प्रथम बूझि न सकतहैं हमधर्मगतिकी बात। प्रश्नकरिये प्रथम किमि यहहोत संशय तात ॥ आपुहौसर्वज्ञ कीजैप्रश्नयोग विचारि। आपुकर्ता प्रश्नवक्ताभीष्म तिसि निरधारि ॥ दोहा ॥ नृपति युधिष्ठिरकेवचन सुनि माधोअनुमानि। प्रश्नहेत उन्मुखभये जगउपकारकजानि ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिराजधर्मेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

जयकरी ॥ कृष्णउवाच ॥ भीष्मगई सुखसों यहराति। मति बुधि कछू प्रकाशि बिभाति ॥ खेद मूर्च्छाभ्रमभोदूरि। ज्ञानप्रकाशित भो मुदमूरि ॥ यहसुनिबोले भीषमधीर। लहितोकृपा कृष्णयदु-बीर ॥ भ्रमगो भयोप्रकाशित चेत। ज्ञानपूर्बवत आनँद देत ॥ मन बुधि मति कीन्ही असफूर्ति। भईसकल बार्ताकी सूर्ति ॥ प्रश्नकरैंजो धर्ममहीप। कहबतौन जिमि निशिघर दीप ॥ यह सुनि कृष्णकहे सुनुदच्छ। धर्मभूपको हिय अतिस्वच्छ ॥ पूज्यन बधे राज्यके लोभ। तातेमनमें आनत क्षोभ ॥ कछूलाज कछु भय हियओलि। तोसम्मुखह्वै सकत न बोलि ॥ यहसुनिभीषम कहे बिवेक। रणमेंबधे दोषनाहिं नेक ॥ रणमें बन्धु गुरूके आ-न। प्रतिबादीसब शत्रुसमान ॥ बिप्रहिवर संध्यादिक कर्म। रण

में मरबक्षत्रिको धर्म ॥ तजिगलानि नृपधर्म सुजान । सुनैप्रश्न करिधर्म बिधान ॥ यहसुनि धर्मनृपति हर्षाय । उठिकैंगहे भीष्म के पाय ॥ भीषमबोलि शीश करिघ्रान । कहे बैठुसुत नृप मति-मान । हेसुतत्यागिलाज भयमानि । प्रश्नकरो हियश्रद्धाआनि ॥ दोहा ॥ भीषमके येबचनसुनि मोदियुधिष्ठिर भूप । नौमि भीष्म अरु कृष्णकहँ कीन्हेंप्रश्न अनूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हेशीक्षक सब धर्म्मको राजधर्म्म अभिराम । जिमि अंकुश मैंगलनकहँ घोड़हि यथालगाम ॥ सोविचारि भाष्योप्रथम राजधर्म व्यवहार । नृपहि उचित पहिलेसुनै राजधर्म अधिकार ॥ रोला ॥ नृपयुधिष्ठिरके बचनसुनि कहेभीषम दच्छ । नमोविप्रन नमोधर्मन नमःकृष्णहि अच्छ ॥ सुनियुधिष्ठिर कहत हैं हम राजधर्म्म अनूप । देवता अरु द्विजन अर्च्चत रहैं गति अनुरूप ॥ प्रालब्ध अरु पौ-रुषे मानै श्रेष्ठ त्याज्यनएक । करैपौरुष सिद्धि नहिं तबगुणौ कर्मबिवेक ॥ भूपतिहि है ऋद्धि धारण सत्यते नहिं और । लहत आनँद दुहूँदिशिजो सत्यरत नृपमौर ॥ दान्तधर्मी गुणी सुंदर मृदुजितेंद्री दच्छ । शान्तशील सुअहिंसक जोलोभजित हेस्वच्छ ॥ दानशील प्रसन्न मुखअरु शिखैसब गुणचोप । रहे निरखत रंध्रपर निजरंध्रराखैगोप ॥ महाम्रृदुता गहैनाहिंनहिंमहा उग्रसुभाव । महा मृदुता व्यर्थ शासन महाउग्रअचाव ॥ नीति बिधिते बधन लायककर्म द्विजकोचाहि । बधैनाहिं निजदेशतेगहि करे बाहेरताहि ॥ पुरुष सञ्चनकरै करिकै दानमान यथेष्ट । आ-त्महित सबदुर्गते नर दुर्गजानै श्रेष्ठ ॥ कोषगिरि गढ़ नदीबन दलदुर्गये षटनाम । दलहि सबतेअधिक जानैभूपसो मतिधाम ॥ पुरुषको गुणदोष परखैकरै तिमिसत्कार । बिरह बिषयाधीननहिं नहिंतजै आत्म विचार ॥ आत्मसंगम गर्बयुत तियतजै ताहिन भूप । क्षुद्रजनसों कहैकबहुं नहास्य वचन विरूप ॥ आपनोप्रिय तजैते जोप्रजनको हितहोय । तजैभूपति ताहि राखै धार धर्म

समेत्य ॥ रहैराखै शास्त्रको अरुशस्त्रको अभ्यास । रहै सर्वैकर्म करिकै चारिफलकी आस ॥ रहैरक्षत धर्मआश्रम बरणको मन लाय । बर्णसंकर होनदेइ न दंड भयअधिकाय ॥ कामसौंपैजाहि तामैंगहै नाअविश्वास । विश्वास अतिशयगहै नहिंनहिंकहै काहू पास ॥ भिरैछोटेहु शत्रुसों तौचलैओज बढ़ाय । रहैलाये भेदताके फौजमें मनलाय ॥ भाररावै भटनपैनाहिं रहैगाफिलनेक । आपु रहिचैतन्य नियमित रहैयुद्ध बिबेक ॥ रहै कर्षत सुधनु नययुत लथाबर्षत पेखि । करैअर्जुन कोषको नृपनीति परमाबिशेखि॥ वृद्ध सुगुणी सुबुधि धर्मी गणिक भिषजसयान । शकुन ज्ञातनसंगरा-खैभूपसो मतिमान ॥ शूरकबि निजभक्त अरु निजनात निजकुल जात । साधु बिद्यामान नृपतिहि मान्यनितयेसात ॥ करै आत्म सहायताको करैअपुसहाय । पक्षनिजपर पक्षनिरखत रहैनितमन लाय ॥ रहैसबको बित्तसबकर रहैजो भयदेत । शीघ्रसो नृपक्रूर प्रकृती जायबाधि तेहिहेत ॥ दगासहसा कर्मछल अनियाय कर्म बलात । सकैकरि नहिंप्रजाजाके तौननृपअवदात ॥ दोहा ॥ पुत्र पितुकेगेह मेंजिमि बिलसत बिनभीत । तिमिबिलसत जाकेप्रजा सोनृपसदाअजीत ॥ चारजासु सबठौर रहिगुप्त लखतब्यवहार । मंत्रजासु अतिगुप्तहै पटुसो भूभरतार ॥ पूर्वप्रचेतस मनुकहे षट बिन्नसत सुनुतौन । बिनबकता आचार्य्य अरु निपढ़ा ऋत्विज जौन ॥ भूप अरक्षित भूपतिय अप्रिय बादिनिनास । गोपनशत गृहबासकरि नाउकरि बनबास ॥ शत्रुहि दुर्बलदेखिकै भूपनजानै छाम । समय पायथोरो अगिनिबढ़ि जारत सबग्राम ॥ राजतंत्र अति कठिनहै नाहिं निबहत अल्पज्ञ । ताते आलस त्यागिनृप रहतसदा सर्वज्ञ ॥ भीषम यह नृपनीति कहि भाषे सुनु कुरु भूप । होइ कहूं संदेहतौ बूझौ बचन अनूप ॥ यह सुनि नारद आदि मुनि कृष्ण युधिष्ठिर आदि । साधु साधु भीष्महि कहै अतिऋजु सुबचननादि ॥ संध्यालखि कृष्णादिलब द्विजननौमि

उठितत्र । करि सुप्रदक्षिण भीष्मकहँ रथ चढ़िगे गृहयत्र ॥ संध्यादिककरि निशिबिते प्रातकृत्यकरि सर्व । रथचढ़ि चढ़िकुरुक्षेत्रकेगे जहँ भीष्म अखर्व ॥ नौमिव्यास आदिकन कहँ बैठे सब मतिमान । बन्दि भीष्मकहँ कहतभे धर्म महीप सुजान युधिष्ठिरउवाच ॥ भोराजा यह शब्दबर सो काहे मतिभौन । तुल्य पाणिपदशीश कटिउरग्रीवा अरु श्रौन ॥ जन्म मरण व्यापार सबएकहि सेवत सर्व । पालत सबकहँ एकयह कारणकौन अखर्व ॥ कहौ पितामह सबिधिज्यहि यह संशय मिटिजाय । यह सुनिके भीषमकहे सुनहुभूप कुरुराय ॥ कवित्त ॥ पूर्वकृत युग मैं न राजाहो न रहीराज दण्डहो न रहो दण्डदायक जो कहिये । आपुस में प्रजाबूझि धर्म परस्पर रक्षण करत रहैं जहँ जैसो चहिये । कहै गोपीनाथ कछुदिनबीते बाढ़ोलोभ निज निज कारजकी सिद्धि कीन्हें सहिये । बिनादण्ड दाता निरभय ह्वै अनुमाने अबसोई करें जातेसुख शौर्य्य मोदलहिये ॥ अपरम् ॥ बाच्य औ अबाच्य भक्ष्याभक्ष्य औ अगम्यागम्य अपनो औ परको बिचार छोड़े सिगरे । दण्डदाता रहो नहिं लोकलाज छोड़ि दीन्हें स्वारथ के लोभलागि देखीदेखाबिगरे । गोपीनाथ देखि तौन सुरगण पीड़ित ह्वै जायपास बेधाको दशा समस्त निगरे । बेधा सुनि तौन घरी एकबूझि अनुमाने बिनादण्डदाता एकएकभे अदिगरे ॥ दोहा ॥ तबबेधा अनुमानकरि पंदस हसन अध्याय । बिरचे जाकेमधिकहे सबफल साधन न्याय ॥ पृथकुअर्थ गुण सबकहे अरुत्रिगर्व बिख्यात । स्थानवृद्धिक्षय के कहे देशकाल अवदात ॥ राजपुत्र लक्षण कहे अरु राजन की नीति । मंत्रकहे फलमंत्रके देनकहे अरुरीति ॥ यात्राकाल त्रिवर्गअरु पंचवर्ग सबिधान । बिरचे रचना शयनकी बिजय धर्मअनुमान ॥ शत्रु मित्रके गुणकहे कहे मार्गगुण तौन । अरु उत्पात निपातकहि कहे युद्धजातिजौन ॥ अस्त्रशास्त्र सहमंत्रकहि

कहे व्यूह व्यवहार । कहे अलभको लाभअरु लाभबिबर धन
चार ॥ रक्षणविधि सब प्रजनको पुरमढ़ रक्षणडौर। बरणेबिधि
भगवान प्रभु जग प्रपंच सब औरे ॥ नीतिशास्त्र अतिबिमल
सो महाअनूपम चाहि । प्रथम शम्भुकीन्हे ग्रहण जगत प्रशं-
सत जाहि ॥ सो लखिकै अतिमोदगहि कार्तिकेय बलरास । दश
हजार अध्यायको करतभये अभ्यास ॥ तदनु इन्द्र कीन्हेंग्रहण
पांचसहस अध्याय । तीनिसहस अध्यायतब सुरगुरु गहेसचा-
य ॥ बार्हस्पत्य कहतसो जानत सबआचार्य्य । शुक्र सहस अ-
ध्यायसों बरणे योगाचार्य्य ॥ यहि प्रकार सबशास्त्रको उतपति
भो सुनुभूप । अबसुनु जेहि विधि होतभो नरपति उत्पतिरूप ॥
सुनु उतपति सब शास्त्रकी सुरगण आनँदपाय । जाय विष्णु के
पासतिमि कहतभये समुझाय ॥ सोसुनि हरिगुणि घरिकलों जग
शीक्षणके हेत । प्रगटकिये निजतेज सों विरजनाय अति चेत ॥
भयो प्रणीता तासुसुत कीर्तिमानभो तासु । कर्दम ताकोसुतभयो
तपप्रभाव अति जासु ॥ ताकोसुत क्षितिपालभो नामअनंग वि-
शाल । नीतिमान सुत तासुभो मृत्युनाम क्षितिपाल ॥ भई सुता
नृप मृत्युकी नामसुनीथा एक । बेननाम सुत तासुभो सो धार्‍यो
अबिवेक ॥ मुनिगण ताकहँ पकरिकै मन्थे दक्षिणजानु । क्षुद्रपु-
रुष ताकहँ कढ़ो जौ निषाद बनमानु ॥ तब दक्षिणकर मथत भे
ऋषिगण भरेउछाह । तहांशस्त्रसह शक्रसम प्रगटोपृथुनरनाह ॥
सर्बवेद वेदांगअरु धनुर्बेदज्ञातार । पृथुबूझतभे मुनिनसों निज
कर्तव्य अचार ॥ तब ऋषिगण पृथुसों कहेपालोप्रजा सुनीति ।
बिनु शीक्षक अधरमगहे सिगरे प्रजाअभीति ॥ इमिकहिसम्मत
करिभये शुक्र पुरोधा तासु । बालखिल्य मंत्रीभये गर्ग गणिकभे
आसु ॥ अस्तुति हित प्रगटित भये मागध सूत अमन्द । बन्दी-
जन परबीण अति करता सुयश सुछन्द ॥ शिलाढेर सबथरपरे
भूमिविषम अति देखि । पृथुमहीप बलवान प्रभु सम करिबो

अबरेखि ॥ शिलाटारि धनुषाग्रसों थरथर कीन्हें शैल । तबते महियहि विधि भई सम स्वरूप ऋजुगैल ॥ बिष्णुशक्र बिधि ऋषिन सह किये तासु अभिषेक । शक्रधनद तेहिदेत भे धन असंख्य सविवेक ॥ हय गजरथ कोटिन पुरुष भये मानसिक तास । पृथु सुभूमिपति करतभो सिगरो धर्म प्रकास ॥ पृथुदोहे गोरूप महि सत्रह शश्यमहान । देव असुर आदिक सबैदोहिलये मनमान ॥ भूमितासु पुत्री भई ताते पृथ्वीनाम । कीरति पृथु नरनाह की जग जाहिर अभिराम ॥ जनरंजन गुणतेभयो राजा शुद्ध अनूप । क्षतते त्राणकिये भयो क्षत्रीगुण अनुरूप ॥ रांजामो बिलसत प्रविशि विष्णु तेजको अंस । ताते पालनगुण गहे राजा परम प्रशंस ॥ बिधिकीन्हे सबशास्त्रजो सो राजनके हेत । ताते राजनकहँ उचित सदाशास्त्र रतचेत ॥ सोरठा ॥ यह सुनिधर्म महीप भीषमसों फिरि कहतभे । अब कहिये कुलदीप धरम आश्रम बरणको ॥ राजधर्म मत जौन राजा बर्द्धत जौन करि । राज्य प्रजाधन भौन बढ़त कहा कीन्हेंकहो ॥ राज्यसहायी कोष मंत्री ऋत्विजत्याज्यकस । भेरेकौनसोदोष त्याज्यआचार्य्य पुरोहितौ ॥ कैसो आरतपाय करबकेसु बिश्वासबर । केहिअवसर मनलाय निजरक्षण अतिदृढ़ उचित ॥ भीष्मउवाच ॥ मधुप ॥ द्विजन नौमि । वचन सौमि ॥ कहततौन । चहतजौन ॥ बिनाक्रोध । क्षमाशोध ॥ सत्यसोह । बिना द्रोह ॥ भृत्य पाल । शुचिरसाल ॥ निज सुदार । रतउदार ॥ धरम राग । कपट त्याग ॥ विप्रदेव । भक्तिभेव ॥ दोहा ॥ नृप साधारण ये सदा तीनिबरण के धर्म । अब ब्राह्मणबर बरणके सुनोधर्म अरु कर्म ॥ प्रथमकरै अध्ययनफिरि अध्यापन सुनुभूप । दान प्रतिग्रह यजन अरु याजनकरै अनूप ॥ ब्राह्मणके षटकरमये इनमें क्षत्रिहितीन । अध्ययन दानअरु यजनइमि कहतप्रवीण प्रवीन ॥ युद्ध प्रजापालन करब तस्कर बधकीचाह । पालन बरणाश्रम धरम राजनीति उत्साह ॥ दान

अध्ययन यज्ञअरु धनसंचन ब्यवहार। पालन सिंगरे पशुनको बैश्यधर्म अधिकार॥ पूर्वप्रजापति पशुन रचि भयेबैश्यहिदेत। ब्राह्मण क्षत्रिहि सबप्रजा दीन्हेंपालनहेत॥ सेवाकरब त्रिबर्णकी धर्मशूद्रकोपर्म। करिसेवा त्रय बरणकी गहै जीविकाकर्म॥ सेवाहितत्रयबरण की रच्यो प्रजापतिताहि। शूद्रहि उचित न जोरि धन आपु पुजावैचाहि॥ गहै सुश्रद्धायज्ञकी शूद्रपाइ जो गाथ। फलपावै तादृशैकरि सिद्ध विप्रकेहाथ॥ भूपतिहै सब बरणकहँ यज्ञदान अधिकार। यज्ञदान सम औरनहिं इतउतसाधनहार॥ बैशम्पायनउवाच॥ वर्ण धर्म्म यहिभांति कहि भीषम ज्ञान विधान। कहत भये आश्रम धरम सुनोभूप मतिमान॥ लहि सँस्कारद्विजत्व लहि करै शास्त्रअभ्यास। तब सदारह्वैकै गृही करै सुधर्म प्रकास॥ देव पितर अर्चनकरै अतिथिनको परिपोष। पालन करै कुटुम्बको यह गृह धर्म अदोष॥ कै सहदार अदारकै करै बिपिन मधिबास। तहां आरण्यक शास्त्रको सबिधि करै अभ्यास॥ रहिसु जितेन्द्री तत्त्वबिद बानप्रस्थ बिधान। ऊरधरेता त्यागितन पावत पद निर्बान॥ ब्रह्मचर्य्य ब्राह्मणगहै रहै निरासन तौन। राखै भोजन वृत्तिसो प्राप्तहोइ जब जौन॥ मननशील अविकार निति इन्द्रीजित निष्काम। ब्रह्मचर्य्य ब्रत सिद्धकरि पावतपद अभिराम॥ परम धरम संन्यासको फिरि न ग्रहणकरि त्याग। याहिबिधि आश्रम धरम सब साधत पूरण भाग॥ गृही बिप्रकहँ उचितहै निति षटकर्म बिधान। करिबनबास सनियमद्विज है कृतकृत्य महान॥ ग्राम्य जीविका कुटिल द्विज शूद्रपुरोहित जौन। असिजीवी वृषलीपती बिप्र शूद्रसम तौन॥ कृषीकार हिंसक चुगुल लम्पट बिगत बिचार। बिप्रयज्ञ के गेहमों नहिं ताकोअधिकार॥ जेहिप्रकार त्रयबरणकहँ और आशरम चार। सुनौतौन भूपालमणि कहत पृथक ब्यवहार॥ करिसेवा त्रयबरणकी करिपौराणिककर्म। पुत्रोत्पति करिभूनृपति

आज्ञालै त्याजि भर्म ॥ शूद्र और आश्रमगहै बिना आशिष सं-
न्यास । वैदिककरि संन्यास बिनु वैश्यहि आश्रमबास ॥ तिमि
क्षत्रिणकहँ उचितहै करिकैपुत्र प्रधान । गहैं और आश्रम तथा
बिनुसंन्यास महान ॥ वैद्यकर्मकरि नीतियुत प्रजापालि सबिधा-
न । कै अधिकीके स्वल्प करि युद्ध भूरिदैदान ॥ यज्ञअश्वमेधादि
करि पुत्रहिदै महिभार । पितृयज्ञ करि करि तथा देवयज्ञअधि-
कार ॥ भूरि दक्षिणा द्विजनदै प्रजनतोषि मतिरास । सुनहुभूप
भूपहि उचित और आशरमबास ॥ हैसुधरम सबबरणके नृप
सुधरम आधीन । नीतिनिपुण नरनाह तब होत धरमसबपीन ॥
बोला॥पूर्वमान्धातामहीपति रहो अतिअभिराम। उग्रमखसोकियो
विष्णुहि लखनको करिकाम ॥ शक्रकोगहिरूप श्रीजगदीश प्रभु
तहँआय । कहैमान्धाता नृपतिसों सुनोनृप मनलाय ॥ बिष्णुप्रभु
के लखनको तुम किये काम महान । तासु दर्शनहमहिं दुरलभ
लखैकोनृप आन ॥ और काम बिचार करिकै कही जो मनमान ।
देवहमसो पूर्णकरि मति गहोहठ अनुमान ॥ मान्धाता शक्रके ये
बचन सुनि अनुमानि । कहेहम वनवास करिबो चहतनिजहित
जानि ॥ बिष्णु सबसों कठिनकीन्हें राजधर्म ललाम । प्रजापालन
बिप्र रक्षण दुष्ट दण्डन आन ॥ बरण आश्रम धरमरक्षण दुर्ग
संचनसर्ब । यज्ञकरतब शास्त्र चिन्तन दानब्रत सबपर्ब ॥ बिना
रक्षण किये नृपके नशत सिगरे धर्म । धर्म बिनशे प्रजा बिनशत
धारि कुत्सित कर्म ॥ भूपके ये बचन सुनिकै कहे शक्र सुजान ।
सत्यनृप के किये रक्षण रहत धर्म समान ॥ योग्य तुमसब धर्म
रक्षण करो नृप ब्रत राखि । उचित भूपहि प्रजा पालन जगत
हित अभिलाखि ॥ मान्धातोवाच ॥ यवन शक काम्बोज बर्वर अरु
पुलिन्द तुषार । पौंड्रचीन किरात मद्रककङ्क अरु गान्धार ॥
करत तस्करकर्म ये सब बिदित जानत जौन । सहैं हम केहि
भांति ये सब लहैंगे गतितौन ॥ इन्द्रउवाच ॥ पिता माता गुरू

अरु आचार्य्य भूपअमान । तासुसेवन करत ते सब जानिधर्म महान ॥ करत पोषण गोत को अरु अतिथि को सतकार । दान बिधिवत देत बिप्रन समयके अनुसार ॥ देतज्ञातिन अन्नभोजन पाक यज्ञबिख्यात । इहै उनको धर्म ताते लहत गति अवदात ॥ मान्धातोवाच ॥ और तस्कर बहुत जगमें करत कुत्सित कर्म । तासुव्याख्याकहो सुरपति कौन जानत धर्म ॥ इन्द्रउवाच ॥ होतभूपति शिथिलमति नहिं दण्डजानतदैन । बरण आश्रमधरमतव च्युतहोत बाढ़तऐन ॥ धर्मशास्त्र पुराणके बिनु सुने जनह्वैमूढ़ । करततस्कर करमआदिक करमकुत्सितरूढ़ ॥ भूमिपति चैतन्य धारत दण्ड नीतिमहान । चलतनहिं तवधर्म ताते भूपधर्मप्रधान ॥ श्रेष्ठगुरु यहिलोकको नृपजौन सुधरम पाल । तासुशासन नहींमानत मूढ़सो चांडाल ॥ नीतियुत नहिं प्रजापालन भूपजानत जौन । शीघ्र बिनशत तौन जैसे अन्ध करि पथगौन ॥ भीष्मउवाच ॥ भाषिऐसो शक्ररूपी विष्णुगे निज धाम । भयो मान्धाता महीपति राज्य रत अभिराम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुने हमसब बरण करता सर्व आश्रम बास । कौन बिधि यह पितामह सोकरो साबिधि प्रकास ॥ भीष्मउवाच ॥ धर्म नृपसरबज्ञतुम तुम नहीं जानतकौन । गुप्तबिधिगहि धर्मबूझत कहतहैंहमतौन ॥ जोअकाम अद्वेष सुमती ज्ञानगतिज्ञातार । सुबुधि समदर्शी सुदाता सावधानसुचार ॥ क्षमाशमदमधीरता गुणदया साधनहार । जौन निग्रह अरु अनुग्रह कर्म कुशल उदार ॥ सुहृद समदरशी अहिंसक अभयबर दातार । जौन पालतआगतन नितकरत परउपकार ॥ मानमानिहि देत जो सत्कार करि सुखरास । सुनो भूपति करत सो सब आशरमको बास ॥ दोहा ॥ करत आह्निक यज्ञजो देवपितृ मखजौन । देवार्चन रत पुरुषसब आश्रमबासिक तौन ॥ देशधर्म कुलधर्म को पालन करताजौन । परधनपरतिय बिमुखसब आश्रमबिलसत

तौन ॥ बरण आश्रम धर्म अरु सर्वधर्म चरितार । धर्मी पुरुष सदैवसब आश्रम बिहरनहार ॥ वेदाध्ययन सुभावजे शास्त्रनिरीक्षणवान । तत्व मनन करता सकल आश्रम में परधान ॥ गुरु सेवी करता सुजप सदाचाररतजौन । सतसंगतिरत पुरुषसब आश्रमबासीतौन ॥ गृहआश्रम तेसधतहै सबआश्रमकोबास । ताते गृह आश्रम सरस जो मतिरहै प्रकास ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सोरठा ॥ बरण आश्रम रीति इमिकहि भीषम कहतभे । पाले सुधरमनीति राज्यप्रजाधन सबबढ़त ॥ राज्य अराजक जौन के अजान राजा जहां । अवशि त्याज्य है तौन तासु दोष मन दै सुनो ॥ तहँ न नीतिको लेश सबलनिबल कहँदेतदुख । जिमि जलजन्तु विशेश बड़ेलघुनकहँ खातगहि ॥ तहँसब धर्मनशात बढ़त पाप दायक निरय । बिनशतगुणअवदात हाथनआवत धन कबहुँ ॥ सदाबसति सबपास घोरभीतिपर सयनकी । दिन लहिहोत बिनास घरधन हुरम्मति-जननकी ॥ राजाजहांअज्ञान ब्यर्थ तहां गुणगुणिनको । जिमि कामिनिकोमान ब्यर्थ नपुंसक पुरुषढिग ॥ सुगुणी शूरसुजान सबको करतब ब्यर्थतहँ । जहँ भूपति अज्ञान बंध्यातिय मैथुनयथा ॥ दोहा ॥ इन्द्रयथा सुरलोक मधि भूपतथा यहिलोक । सुरपति पालत लोकसबतिमि भूपति सबओक ॥ तातेसब बिधि प्रजनकहँ रक्षणीय क्षितिपाल । धन तन मनदै कपटबिनु आलसबिन सबकाल ॥ पूर्व प्रजनमनुसों कियो यहनिबन्ध गहिराग । हमसबसेइब नृपतिनितिदेत न मन धनभाग ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ परमदेवता नृपतिकहँ किमि भाषत मतिमान । कहोतौनमम पितामह तुमसर्बज्ञसुजान ॥ भीष्मउवाच ॥ अत्र पूर्व इतिहासहम कहत सुनोनृपतौन । कियोजीवसों प्रश्न यह बसुमन उरबीरौन ॥ जीवप्रश्नसो सुनिकहे नृपसुनु भूपप्रभाव । कोपिभूपके भयदये प्रजाहोत गतिचाव ॥ नृपति मूल सब धर्मको लघुवरगति दातार । परालब्ध जसप्रजनको नृपमहिरुथ

करतार ॥ बिनाउदय शशि सूरके यथारहत तमछाय । तथाभूप बिनुदेशमधि बसत आपदाआय ॥ जिमि जलसूखेहोतहै बिकल मीन समुदाय । नृपहिंभये कृशप्रजनकहँ तिमि आपद नगिचाय ॥ गोधबिना गोयूथ जिमि जलबिन शालीभाव । भूपबिना तिमि प्रजा जिमि कर्णधार बिनुनाव ॥ छप्पै ॥ हरैनिबलको बित्त सबल जोभूपन रक्षै । चोरनिधन करिदेहि प्रजनजोभूप न रक्षै ॥ गुरुन न मानै मूढ़ धर्मजो भूप न रक्षै । प्रजाअपाप न होहिधर्म जो भूप न रक्षै ॥ लरि मरै सबल भिरिजो न भूप रक्षण करै । नहिंचलै बनिजब्यवहार मगजो न भूप रक्षणकरै ॥ बर्णआश्रम धर्म मिटैजो भूप न रक्षै । होहि बर्ण संक्रमितलोक जो भूप न रक्षै ॥ वेदउक्त मखकर्म मिटैजो भूप न रक्षै । शास्त्र लोक कुल रीति मिटैजो भूप न रक्षै ॥ बणिककरै दुर्भिक्षभावजो भूप न रक्षै । यज्ञ दान ब्रत नहींहोयजो भूप न रक्षै ॥ मतिमान नृपति रक्षत रहै तौ न नेकु सुधरम टरै । समभाव धर्म सुकरमरहै ओकओक आनँद भरै ॥ अपर ॥ भूप अग्नि रबि धनद मृत्यु यम बिष्णु सदृश निति । करत दण्डदै शुद्ध प्रजनसों नृप पावक मिति ॥ चारु चक्षुकरि लखतरहत परजनसों दिन मनि । बधत शत्रुसमुदाय जौनसो मृत्युसदृश बनि ॥ जोदेत अधर्मिन दण्ड अति धर्मिन पोषत तौन यम । धनदेत रहत नितधनद नृप परजन पालत बिष्णुसम ॥ दोहा ॥ मित्र पुत्र दौहित्र हित अरु पितृव्य सुभाय । भूप न इनको हितकरै लखिअन्यायकरि न्याय ॥ ऐसो समदर्शी नृपति सुमनसदृश नहिंभेद । जासुकृपाते दुख मिटत कोपे उपजत खेद ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जीति लहत निति अरिनसों केहिबिधिको क्षितिपाल । कहो पितामह नीतिवह तुम मतिमान बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ जयशत्रुसों लहत सब इन्द्रिय जितनृपजौन । आपुहि जीतिन सकतकिमि औरहिजीततौन ॥ बन उपबन सबनगरमधि बन्धुआदिजे और । राखैहित अनहि-

तनप्रति गुप्तचार सबठौर ॥ समाचार जैसोसुनै तैसोरचै उपाय । गुप्त चारपरदेशके बसन नपावै आय ॥ आदिदिवान सुमंत्रबिद तिनसों मंत्रदृढ़ाय । आपु समुझि सिद्धांत गुणि करैजोनसुखदाय ॥ प्रबलशत्रु सों लरैतौ करिकैभेद उपाय । लखन नपावै आपनो भेद शत्रुदृढ़घाय ॥ दानमानदै भटनकहँ राखैसदाप्रसन्न । रहै मंगावत सैनमें तृणरस इन्धन अन्न ॥ परम्पराके सुभट हितशुद्धसुबुधि बलवान । राखैअपने पासदैहय हथ्यारसन्मान ॥ निबल शत्रुकहँ निबलगुणि लरैन बिनाउपाय । प्रबलशत्रु पहँ चलैजिमितिमि निबलनपहँजाय ॥ निजअपकारी होहितेहिमारै अवसरपाय । उपकारी अवरेखिकै पोषै प्रीति बढ़ाय ॥ निबल भूप करदेइतौ लरैन सहसाजाय । क्रमसों धनलै निधनकरितब महिलेय दबाय ॥ महा प्रबलअरि होयजो नहींलरन केयोग । सामदामकरि फेरितेहि करैप्रबल उतयोग ॥ जोनहिंमानै निबल गुणि लयोचहै महिमारि । तौधनद्वारा पौरजन देइप्रथमहि टारि ॥ धनीप्रजा अरुकारणी बन्धु इन्हैं सन्मानि । टारैसबके संगकरि सँगदैभट अनुमानि ॥ नामीअपने अंगजे चाकरसखा दिवान । भेजैतिनके दारधन जहँ निजदार समान ॥ आपु बिपिन गिरि अगढ़गढ़ पकरिरहै थिरभूप । शठयहरैनिजदेशको यहनृपनीति अनूप ॥ रहैलगाये शत्रुके दलमाधि चारअनेक । लेतरहैसबसमयकी खबरि बिचार बिबेक ॥ सामदाम आदिकनकी दये रहै पैगाम । धनदैताके सखनको करैपक्ष अभिराम ॥ चोरलायकपैतरहै हयहाथीहाथियार । ताहूके बधकोतिन्हैं दयेरहैअधिकार ॥ लरै शतघ्नी लायकै नेकुनत्यागै धीर । समय देखिकै कढ़िलरै सोजयलहै गँभीर ॥ ऐसे दिन हितगढ़नमें सराजामको ढेर ॥ सँचेरहै क्षितिपालनिति लगैनआयेबेर ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ केहिप्रकारचरिभूप लहत सुयशइति स्वर्गउत । सोआचार अनूप कहो पितामह परमपटु ॥ भीष्मउवाच ॥ छप्पै ॥ रागद्वेष बिनु

करै धर्म अरु कर्मसुभावन । बिनानिठुरता करैअर्थ संचन मन भावन ॥ ऋजुभाषै बिनुभीत दानपात्रनदै मोदत। दया न त्यागै कबहुं न निजगुण भाषि बिनोदत॥ गुणि बन्धुबिरोधन हियधरै नहिं अनार्य्यकहँ हितकरै । जेभरे लोभयशहीन नहिंन्यायभार तिनपहँधरै ॥ अहित मीठनहिंखाय करै नहिंतियसंगम अति। दयात्यागि नहिंगहै उग्रता कहैबचनसति॥ बिनुपरखे नहिंलेइ दण्डनहिं मंत्रप्रकाशै। धननसाधुसोंलेइ असाधुहि देइनआशै॥ नहिंदेवन अरचैदंभसह लेइनकुत्सित धनकबहु। निितिदेशकाल परखतरहै रहिप्रसन्न दर्शैसबहु ॥ दोहा ॥ गुरूमान्यअरु गुणि-नमें गहैनमायाभाव। कलबलशत्रु सबर्गबधिगहैनहीं पछिताव॥ गहि ऐसो आचरण निति भूपति भोगै भूमि । तासु चन्द्रिका सदृशयश लसै जगतमें घूमि ॥ भूप प्रातही उठिधरै गुरू इष्ट को ध्यान । प्रातकृत्य करिकैकरै देवार्चन सबिधान ॥ दानदेइ फिरि द्विजनकहँ सुनि आशिष स्वस्त्येन । राजकाज फिरिनीति मग करै भूपमणिऐन ॥ आदि पुरोहित द्विजनको पूजन श्रीदा तार । बिप्रकृपाते नृपनकी बढ़ति बिभूति उदार ॥ बिप्रवदनते बाहुते क्षत्रियभयेअनूप । बैश्यउरूते होतभे पदतेशूद्रस्वरूप॥ बिप्रजेष्ठ सबतेगुरू सबबिधि पूजनयोग। प्रगटबिष्णुमुखमुदित मुख दायक सकल प्रयोग ॥ भोजनते तोषै द्विजहि तोषत प्रभु जगदीश । बिप्र पाणि सबजगतको गुरुलघु बिश्वेबीश ॥ यथा पुरोहित नृपतिको पापपुण्य परसूति । लहत पुरोहितनृपतिको पापपुण्य परसूति ॥ बाहुजक्षात्रिहि बिधिदये दण्डदान प्रति-पाल। द्विजक्षत्रिय निजधर्मगत तो अनंद सबकाल ॥ इमिपुरू-रवा सों कहे पूर्बबायु समुझाय । सोईहम तुमसोंकहे बिप्रकृपा सुखदाय ॥ क्रियावान धरमी सुहृद बहुश्रुतिशास्त्रीदच्छ । चही पुरोहित भूपकहँ मंत्राभ्यासी स्वच्छ ॥ यहिबिधि महिमाबिप्रकी पुरूरवाके पास। कश्यपभाषे प्रश्नसुनि सुनोभूप मतिरास॥

होत पुरोहित कुशलतब नृपहि कुशलसरबत्र । सुनोपूर्ब इति-
हास हमभूप कहतहैं अत्र ॥ चौपाई ॥ पूर्बभूप मुचकुन्दअमाना ।
जीति सकल पृथ्वी बलवाना ॥ भरोगर्ब अति धनपति जूपर ।
सेन सहित चढ़िगो गिरि ऊपर ॥ धनपति असुरन शासनदी-
न्हे । ते लरि नृपदल मरदित कीन्हे ॥ तब मुचकुन्द द्विजनसों
भाषे । खरे लखतहो का अभिलाषे ॥ सो बशिष्ठ पूरोहित सु-
निकै । ये प्रभाव प्रगटतभे गुनिकै ॥ तप बल असुरन लोपित
करिकै । पथ निर्म्मल कीन्हे प्रण धरिकै ॥ धनपति तप प्रभाव
यह ज्वैकै ।कहे भूपसों प्रगटित ह्वैकै ॥ निज भुजबल प्रगटित
करुराजा । दूरिराखि सब बिप्र समाजा । भुजबल बिजयलहेते
कीरति । परबल बिजय न महिमाथीरति ॥ सोसुनिनृपमुचकुन्द
रिसाई । कहे धनद तुम सुमति न पाई ॥ रचोस्वयंभु भूमि धुर
धारण । ब्रह्म क्षत्रि जगपालन कारण ॥ बिप्र मंत्र तप बल सब
लायक । क्षत्रिय अस्त्रबाहुबल चायक ॥ ब्रह्म क्षत्रि मिलि कारज
साधत । सो हम किये दोषकत नाधत ॥ सुनि अलकेश मोद
हिय आने । नृप मुचकुन्दहि अति सनमाने ॥ ह्वै मुचकुन्द बिदा
धनपति सों । निजपुर आये आनँद अति सों ॥ बिप्रन पूजि
कूजि मृदुबानी । भो कृतकृत्य भूमिपति ज्ञानी ॥ दोहा ॥ यहि
बिधि बिप्र प्रसाद ते बिजय लहत क्षितिपाल । नित्य धर्म्म है
नृपतिको द्विज सेवा सबकाल ॥

इतिशान्तिपर्बणिराजधर्म्मे युधिष्ठिरभीष्मसंबादोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

युधिष्ठिरउवाच॥ भूपतिजो आचरणकरि बर्धतप्रजनसदैव । कहो
तौन आचरण प्रभु तुम वक्ता जिमिदैव ॥ भीष्मउवाच ॥ दानशील
मखशील नृप तपब्रतशील सुजान । धर्मशील बर्द्धित करत पर
जन सहित बिधान ॥ भूप गहत आचरण जो प्रजा गहतिहै
तौन । होत यथा राजा तथा प्रजाधूरि जित पौन ॥ नृप रक्षित
परजा करत अधरम सुधरम जौन । तासु भाग चौथो लहत

भूप शास्त्रमत तौन ॥ चोर हरैधन प्रजाको चोरहिलहै न भूप। तौ तितनो धनतेहि प्रजहि देइनीति अनुरूप ॥ ताते तस्कर गहनमें मनराखे नृपजात। गहि नहिं छोड़े बधकरै तौन होइ उतपात॥ हरे जीविका बिप्रको करै बिप्रसों बैर। ताहि निकासै देशते तौ न गहैखल मैर ॥ विद्यालक्षण सहितजे समदरशी मतिमान। कर्मकुशल अरुवेद विद सोद्विज ब्रह्मसमान॥ जन्म कर्मते हीनजे बिद्याहीन अजान। शूद्रसरिसते बिप्रहैं अरु नि-र्तन गुणवान ॥ जाहि ग्रामयाचक्ककहत देवपुजेरूजौन। दाना-ध्यक्ष जहांजगत हीनशूद्रते तौन ॥ जार ऋतिकमंत्री दूत अरु चारपुरोहित जौन। बिप्रतौन क्षत्रियसदृश सुनोभूपमतिभौन॥ जे हयरथ घोरेचढ़े तेबइश्य समहोत। इनसों भूपति लेइकर जौं कृसको सतनोत॥ ब्राह्मण तस्करतागहे लहिदरिद्रको बाध। गुणत सकल मतिमान तहँ भूपतिको अपराध ॥ बिप्र अकर्मी तासु अरु तीनिबरण जेसर्ब। भूपति तिनके बित्तके स्वामीनीति अखर्ब ॥ द्विजहिअकर्मी मतिचहै कबहुंभूप सुनुभूप। नितपालै सबबरणकहँ बरण आशरमरूप ॥ अत्रपूर्ब इतिहास हम कहत सुनो नृपतौन। राक्षससों जोकहतभो केकय उरबीरौन ॥ ब्रत धारी केकय नृपहि राक्षसबनमधि पाय। गहतभयो केकयनृपति तब इमि कह्योसचाय॥ नहिंमद्यप ममदेशमें चोर जुवारीनाहिं। नहिं बिश्वासघाती छली ममसुराज्य मधिमाहिं॥ बिलसत निज निज धर्मगहि बरण ब्राह्मणहि आदि। तथा आश्रमी निजधरम नहिंतजि सकतप्रमादि ॥ यज्ञ दान तप ब्रत नियम लोकशास्त्र कुलरीति। यथा उचितमम सबप्रजा चरत दोखि मम नीति ॥ शिष्य गुरुहि सेवत सविधि पुत्ररहत पितुभक्त। स्वामि भक्त सेवक तिया रहति पितहिअनुरक्त॥ बिप्ररहत षट्कर्मरत क्षत्रिय शस्त्रप्रवीन। युद्धदान कीरतिगहे धरम नकरत मलीन ॥ बैश्य कृषी बाणिज्यरत गोरक्षणमें लीन। नहिंअसत्य भाषत कबहुं

होत न बिषय अधीन ॥ सेवारत त्रयबरणके गहत न मत्त सुभाव । निज सुकर्मरत शूद्र ममराखत धर्म बनाव ॥ देव पितर अर्चतसबै पूजत द्विजपदकंज । दानमानदे गुणिनको करतसदा मनरंज ॥ अरथी तापस अतिथि ये सब थरलहत सुपास । निबल सबल मध्यम कबहुंकरत न बैरप्रकास ॥ नहिं परतियरत पुरुष ममराज्य बिषे कहुंएक । नहिं द्विजद्वेषी पुरुष कहुं हैंसब गहेबिबेक॥ आत्मज्ञानीवेदविद तपकृतशास्त्रीदक्ष । ममपूरोहित लोभ बिनु हैं तिमि दानाध्यक्ष ॥ राक्षसका करिसकत मम जहँ अनीति नहिं नेक । जासुसहायी बिप्रबर ज्ञाता तत्व बिबेक ॥ राक्षसउवाच ॥ जासुराज्यमें नीति इमि है सबठौर अमेय । सोराक्षस आदिकनसों है नृपसदा अजेय ॥ भीष्मउवाच ॥ इमिकहिकै राक्षसगयो नृपआयो निजधाम । सुनोभूमिपति नीतिइमिदायक बिजय अक्षाम ॥ सोरठा ॥ बरण आश्रम धर्म निशिदिन नृप रक्षतरहत । बिप्रनहोइ अकर्मइतोमर्म निरखतरहै॥ युधिष्ठिरउवाच । दोहा ॥ बिपतिपरे निज धर्ममें लखै नहीं निस्तार । क्षात्रधर्म के करन को नहिं समर्थ अधिकार ॥ सो ब्राह्मण केहिभांतिके करि बइश्य के कर्म । पालैनिज परिवार किमि प्रभु कहिये सो धर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ कृषी करै तौ बिप्र बल गो संग्रह अनुमानि । और बनिजब्यवहार सो करै जीविका जानि ॥ सुरा लवण तिल अश्व पशु सिद्ध अन्न मधु मांस । इन्हें न बेचै द्विज कबहुं अरु नहिं बेचै कांस ॥ इनके बेचे बिप्रको बिगरत है परलोक । ताते यहि ब्यापारको बिप्रहि सब दिन रोक ॥ वेद देवता यज्ञ तप नहिं बेचै द्विजराज । तातेभूपहि उचितहै पोखैबिप्र समाज ॥ युधिष्ठिरउवाच॥ कृशबल राजाहोइजो प्रजाहोहि बलवान । तौनृपकिमि शिक्षण करै किमि पालै मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ दानयज्ञ तप नियम करि अरु लहि बिप्रसहाय । भूपति बल बर्द्धितकरै पालै प्रजा सचाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अब लक्षण ऋत्विजनके कहोतात प्रर-

बीन । सो सुनिकै भीषमकहे ऋत्विज कथाअहीन ॥ सकलवेद वेदांगविद् शास्त्रकुशल मतिमान । सबसुकर्म आचारयुत सत्य बाक सुखदान ॥ बिनु अभिमान अद्रोह अरु शम दम साधन हार । क्षमावानह्रीवान अरु ब्रती अकाम उदार ॥ स्वच्छअहिंसक ज्ञानमय शुद्ध सुभाव अनूप । ऐसे ऋत्विज सहितकरिकर्म बिबर्धित भूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ प्रति यज्ञनमें दक्षिणा भेद कहत हैं वेद । श्रद्धावान अद्रब्य किमि यज्ञकरै तजिखेद ॥भीष्मउवाच ॥ वेद कहत हित जननको नहिं माया अधिकाय । यज्ञ अंग है दक्षिणा फलदायक सुखदाय ॥ द्रब्य हीन जन मख करै यथाशक्ति दे दान । द्रब्य हीन जन मख करै स्वल्पौ अधिक समान ॥ अति कृश धन श्रद्धा सहित लघुमति करि हेतात । पूर्ण पात्र दे लहतहै पूरण फल अवदात ॥ तप ब्राह्मण को यज्ञ है इहै वेद श्रुति पर्म्म । सत्य अहिंसा दम दया यह तप साधन धर्म्म ॥ वेद बचन मानैनहीं शास्त्र उलंघै जौन । निजमत मानै श्रेष्ठ जो आपुहि नाशैतौन ॥ ज्ञानी जननित करतहैं यज्ञब्राह्मण लाय । चित्त श्रुवा घृत समिध मन हविष ब्रह्मशिखि पाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कैसोदेखि सुभाव सचिवकरैमतिमाननृप । कैसो देखि बनाव करै विशास बिश्वासनाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ मित्र चारिबिधि होत हैं सुनो भूप मतिमान । ते सहार्थ अरु सहजऔ कृत्तिम अरुभजमान ॥ निजसहायहित मित्रता ठानत तौन सहार्थ । पिताबन्धु सुतश्वशुर ये सहज सुमित्र यथार्थ ॥ सेवत धनहित मित्रह्वै सोकृत्तिम नहिंआन । ब्यवहारा पूरुषनको तौनमित्र भजमान ॥ धर्मात्माहै पांचवों जाहियके बलप्रीति । नहींलोभको लेशकछु गहे मित्रता नीति ॥ कृत्रिमको बिश्वासनाहिं कबहूं करै नरेश । करैबिश्वास न तीनको जहँ कछु समय बिशेश ॥ धर्मात्मा जो मित्रहै सबथर तासु बिश्वास । नृप मित्रनकी वृत्तिमें करैप्रमाद न पास ॥ भूपनके आचरणते

मित्रशत्रु ह्वैजात । शत्रुमित्रता गहतहैं तथा साधु ह्वै धात ॥ जोअव्यवस्थित चित्तहै तासु बिश्वास अयोग । काहूमेंबिश्वास अति नृपहि न उचितप्रयोग ॥ पुत्रबन्धु नायबबल्ली तेहिएकंत थलमाह । राजनीति मग देखिनहिं बिश्वासें नरनाह ॥ भूप आपने निकटको तेहि न बिश्वासैभूप । ताकेहृदको नृपति तेहि मानैमित्र अनूप ॥ बकसीबैद्य दिवानअरु गणिक किलेबरदार । धर्माध्यक्ष खजानची येनृपप्रकृति उदार ॥ इनमें गहे बिश्वास पर परखतरहे सुभाव । सबसोंरहै प्रसन्नमुख गहेदक्षता बाव ॥ शीलवान कुलवानअरु बुद्धिमान अतिधीर । धरमी सरमी निरखिनृप सौंपेकाम गँभीर ॥ जितनेज्ञाति पराक्रमी अरुकछु दायेदार । तिनमेंराखै दक्षता गहैनामित्र बिचार ॥ ज्ञातिहिनहिं भावतकबहुं ज्ञाति बिभूत महान । ज्ञातिवर्ग पावत रहत रहि चैतन्य सुजान ॥ आहुकिअरु अक्रूरसों बैरभयो होपूर्ब । तब हरिनारद सोंकहे ज्ञातिव्यवस्था गूर्ब ॥ ज्ञातिबिनाशन होइजेहि सोकरिबो नृपनीति । यथाभागदै पालिबो उचितप्रकट करिप्रीति ॥ तहँनारद प्रभुसोंकहे आपददोय प्रकार । आभ्यन्तरअरु बाह्यये तिनको सुनो बिचार ॥ बंधुबर्गसों होतदुख सो आभ्यन्तरनाम । शत्रुआदिसों होततेहि बाह्यकहतमतिधाम ॥ तातें बन्धु सबर्गकहँ पालबहे नृपनीति । ज्ञातिहिमारे निजमरे दोऊ विधि विपरीति ॥ ज्ञातिबर्ग्ग को आदरब परम शस्त्र है भूप । तिनपै शस्त्र समाज सब जाने निष्फल रूप ॥ सुबुधि सुधरमी समुझिकै राखै डेवढ़ी.दार । तिन्हें सदा परखत रहे करतरहै सत्कार ॥ जिन्हेंआपनो सखाकरि राखे निशिदिन साथ । तिन कहँ धन मन मानदै कीन्हे रहै सनाथ ॥ आदि दिवान खजानची जे आमात्य महान । जो नर तिनके कपटको परखनहार सुजान ॥ नृप ताको रक्षण करै मनदै आप अवाब । नातरु ते ताकहँबधैं कैकरिदेहिंखराब ॥ अत्रपूर्ब इतिहासहम कहतसुनो

नृपतौन । क्षेमदरश कोशल नृपति के गृहमाधिभोजौन ॥ ऋजु स्वभाव भूपहि निरखि सबअमात्यगणतास । गुप्तकपट आचरणगहि लागे लहन सुपास ॥ काल वृक्ष नामक सुमुनि गुणिकै यहवृत्तान्त । पंजरमाधि लैकागगो भूपतिके ढिगदान्त ॥ तहां जाइकै बैठिकरि कुशलप्रश्न व्यवहार । कहोभूपमम कागयह है सर्वज्ञ बिचार ॥ सुनोकाग यहकहतहैं तोअमात्य जेसर्व । तेसब मिलितो बहुतधन हरण किये मतिखर्ब ॥ सोसुनि भूपति और जन ते बूझेयहभेद । तेऊभाषे बचनयह सांचन झूठोखेद ॥ तदनन्तर रात्रीभई मुनिकीन्हें बिश्राम । तबअमात्य तेहिकागको बधकीन्हेंमतिछाम ॥ भोरबिप्र कागहिनिरखिनृपते कह्योबुझाय । देखोमम कागहिबध्यो तोअमात्य अनखाय ॥ महाग्राह संकुल नदी ढिगतोसम ढिगबास । ताते अबहम जातहैं गहि निजबध कोत्रास ॥ अब तुमइन आमात्यसों नितिरहियो चैतन्य । कपट गहत आमात्यतब करत चहत जो अन्य ॥ भूपतिरुवाच ॥ भये एकमतये सकल कहो करैं बिधिकोन । यहसुनिकै ब्राह्मण कह्यो सुनोउचित अबजौन ॥ गोपिकछू दिनदोषयह क्रमसोंकरि बल हीन । एकएककहँ पकरिकै दण्ड दीजियोपीन ॥ कालवृक्ष सुनि इमिसिखै गो निजआश्रमओर । भूपति क्रमसों तौनकरि आनँद लहेअथोर ॥ भीष्मउवाच ॥ शुचिधरमी सर्बज्ञहित मंत्रिहिमित्रबनाय । करैकार्य्य सबमंत्रकरि देशकाल मनलाय ॥ सुरपति तेसुरगुरु कहे यहि प्रकारके बैन । जैसो मंत्री होतनृप तैसो पावत चैन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ सुयशलहत क्षितिपाल प्रजनप्रालिकै कौन बिधि । सोशुभनीतिबिशाल कहोपितामह कृपाकरि ॥ भीष्मउवाच ॥ बितरिशुद्ध व्यवहार जोभूपति पालतप्रजा । सोइत सुयशउदार लहतलहत सुरलोकउत ॥ दोहा ॥ राखैमंत्री आठनृप कारजकरैं बिचारि । व्यवसाई धर्म्मी सुबुधि संग्रहकरै बिचारि ॥ औरकरै अपराधलहि औरहिदण्डनदेइ । देइयथा अपराध तिमि दण्ड

न्यायलखिलेइ॥मंत्रप्रकाशितनहिं करै करैपरमपटुजानि।जेमंत्र-
ज्ञ तिन्हैं रहै पोषकनिजसम मानि॥ कच्छप छिपवत अंगनिज
तिमि छिपवै निजदोष। शत्रुदोष निरखतरहै करैगुणिनकोपोष॥
मंत्रीजासु प्रवीणअति मंत्रजासु अतिगुप्त। मंत्रबिना नहिंकरत
कछु ताकोसुयश अलुप्त॥ मंत्रसुनत शंकाकरै समाधान सुनि
फेरि। करिशंका उत्तरसुनै यहिप्रकार मतिमेरि॥ निर्णय करि
मंत्रिनसहित अबिचल मत ठहराय। भूमिपाल कारजकरै सदा
तेज अधिकाय॥ बधै न दूतहि कबहुंनृप कितनोकहै कठोर।
बधतदूतकहँ नृपतिसो नरकलहत अति घोर॥ सांतिवक्ताअति
दक्षअरु कांतिवक्तास्मृतिमान। शुचिकुलीन सतसंगती दूतसदा
सुखदान॥ धर्मशास्त्र तत्वज्ञ अरु ज्ञाता सन्धि बिधान। धीर
साहसी शूरअति कलाकुशल मतिमान॥ ब्यूहभेद ज्ञाताचतुर
हँसमुख सौम्य सुभाव। अरु कुलीन सेनाधिपति ऐसोदेत स-
चाव॥ सबप्रकार धरमी निरखि करैअमात्य नरेश। अधरम
भरे अमात्यतिजु नृपहिदेत अघदेश॥ करैअमात्य बिचारि नृप
चलै नीतिपथ देखि। कर्मकरैवेदोक्त लखिगहि सत्संगबिशेखि॥
ऐसोनृप आनँदलहै कीरति अति अधिकाय। स्वर्गलहै संदेह
बिनु बरधैबंश सचाय॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ भूपतिसह परिवार
निवसैकैसे नगरमधि। रचनाकौनप्रकार करि परिखाप्राकारकी॥
भूपतिकेयेबैन सुनिभीषमभाषतभये। सुनोतौन मतिऐन जनमे-
जय क्षितिपालमणि॥दोहा॥ गिरिगढ़बननदनिकटलखि निरमित
नगर अथोर। बरपरिखा प्राकारदृढ़ जहँबिरचित चहुंओर॥
चहुंदिशि यूथपनियमितहँ राखै ठौरबनाय। चारिद्वार राखैतहां
राखैभट समुदाय॥ बिनाहुक्मजन बाहिरो नहिंआवै नहिंजाय।
सधनीचारो बर्णजहँ बिलसैं आनँदछाय॥ बापी सरवर कूपबहु
बिरचैठौर निरेखि। घटन न पावैअन्नको कबहूंभाव बिशेखि॥
संग्रहराखै अन्नको आपसाल प्रतिलेइ। सदाबरत शुचिअन्नको

सदायाम सहदेइ ॥ व्यापारिन रक्षतरहै करअधिकी नहिंलेइ। चोर लैभगे ठगनको लेश न बाचनदेइ ॥ शिल्पीगण सबतरह के राखै सविधि बसाय। भिषज ज्योतिषी शास्त्रबिद राखै प्रीति बढ़ाय। गुणीदेश परदेशके आवैं याचनहेत। मानसहित धनदै तिन्हैं बिदाकरै करिचेत ॥ असिजीवी आवैंजिते प्यादेकै अस-वार। नहिंराखैतौ दैकछू फेरैकरि सत्कार ॥ हय हाथी हथियार गढ़ पुर परिखाबनसैन। मास मासमधि भूमिपति आपु लखै मतिऐन ॥ सालभरेमें आपुकढ़ि लखै आपनो देश। हदवारे भूपति तिन्हैं दरशावै दलबेश ॥ यज्ञ दान को नगर मधि राखै अति अधिकार। घटै न पावै नगरमें देवाराधनचार ॥ निबल सबल मध्यम पुरुष रहै यथा ब्यवहार। कोऊ काहूको कबहुं करि न सकै अपकार ॥ बिधवा तपसी आदिजे जिन्हैं न आमद डौर। दियोकरै निजकोषते तिन्हैंभूप शिरमौर ॥ राखै सबथर नगरमें हरकारे मतिमान। बनगिरि गढ़सब थरनकी खबरिसुनै सबिधान ॥ यहिप्रकारके नगरमधि इमि बिलसै क्षितिपाल। निकट न आवै आपदा आनँद होइविशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ यहिबिधि भूप सुवेश यहिप्रकारके नगरबासि। किमि पालै निजदेश लेइसुधन किमिसो कहो ॥ भीष्मउवाच ॥ रोला ॥ धीर शूर सुजान धरमी शास्त्रबिद मतिमान। नगरजनक सभासदन कै नात गोत महान ॥ तिन्हैं शतभट सहस भटद्वै सहस भटद्वै संग। भेजिचहुंदिशि ठौरठौरनि राखिसहित उमंग ॥ करैपालन प्रजनको अरुसुधन करषैभूप। बत्सगोपहि लायपय जिमिलेत स्वामि अनूप ॥ खबरिते तिनथरनकी नितिलिखै भूपतिपास। जमाकरिकै द्रब्यभेजै यतनते प्रतिमास ॥ लिखैआमद डौरते प्रतिग्रामको तेहिसाथ। प्रजापीड़ित होहिंनहिं तिमिलेहि सब सो गाथ ॥ भिन्नतिनसों चारराखै लिखैते सबडौर। सुनैजो सो परखिकै फिरिकरै करतबतौर ॥ जमा आमद खरच निज प्रति

मासलाखि सुनिलेइ । द्रव्य करतब हाथजिनके तिन्हैं अभय न देइ ॥ सदारक्षण कोषकोयह परमहै नृपनीति । अन्न धन भट शास्त्र संग्रह देतभूपति जीति ॥ हद पैदलरहैं नियमित बसै दुर्ग बनाय । देशमें परचक्र भयनहिं यथाव्यापै आय ॥ रहैरक्षत प्रजन तिमि जिमि निकटहोइ नखेद । अभय विलसै देशमेंव्यापार करताभेद ॥ बत्स जैसे पियत पय अरु मधुप जिमि मधु लेत । जिमि जलौका पियत शोणित नेकुदुख नहिं देत ॥ शुनी जिमि निजबाल मुखते पकरिकै लैजात । होतताके गातमेंनहिं दशनको कछुघात ॥ प्रजनसों धनलेइ तेहिबिधि भूपसहित बिवेक । रहैं तेसब देतधन नाहिं लहैं पीड़ानेक ॥ ग्रामग्रामन मुख्य जनजे मिलै तिनसों चित्त । तिन्हैं करिलै अग्रभागी लेइसबसों बित्त ॥ देशमें धनमान तिनसों लेइधन गुणिनीति । मधुरतिन को बचनकहिकै करैमुदित सप्रीति ॥ प्रजनसों धनलेइ करि अनियाय दुखदेताहि । देइ बिधिवतदण्ड भूपहि प्रजनकोहित चाहि ॥ चोर खलते रहैरक्षत प्रजनगहिकै रीति । दान मखनित करै जिहि नहिंहोय व्यापित ईति ॥ दोहा ॥ अनावृष्टि अतिवृष्टि अरु आखु शलभ शुक जौन । ईति कहावत शत्रुदल पाला पाथर तौन ॥ यहिप्रकार धनलेय नृप यहिबिधि पालैदेश । लखत रहै निजराज्यसब चारचक्षु करिबेश ॥ निजबल परबल शत्रुहित देशकाल बयवृद्धि । रहै बिचारत नृपति नित बरधै सदा समृद्धि ॥ धरमिनको संग्रह करै धरै धर्म व्यवहार । बरण आशरम धरमनित पालै भूपउदार ॥ मान्धाता युवनाश्वसुत रहोभूमि भरतार । मुनि उतत्थ्यतासों कहे राजधर्म उपचार ॥ धर्मात्मा क्षितिरमणजो अबिचल लक्ष्मीतासु । धर्महीन क्षितिरमणको लक्ष्मी गच्छति आसु ॥ भूप रूपसब जगतको कुत्सित रूप्य अनूप । पापपुण्यबर्द्धत नशत यथाआचरतभूप ॥ सब बर्द्धत सुधरम बढ़ेअधरमते सबजात । तातेजगपालकनृपतिपालै

धर्म बिभात ॥ बिप्र धर्मकी योनिहैं पूजैतिन्हैंसदैव। बिप्रअग्नि ये बिष्णु मुख ईच्छितदाता देव ॥ अनसूया करि बिप्रसों भयो बिरोचनहीन । बिप्रकोपते क्षीणसब बिप्रकृपातेपीन ॥ पाखण्डी उनमत्तअरु अधम अधर्मीजौन । परद्रोही जे तासु नहिं संग करै क्षितिरौन ॥ अज्ञाता अरु स्वैरिणी बिनुब्याही जोनारि । बंध्या अरु परतरुणि सों रतिनहिं करै बिचारि ॥ नृप प्रमाद जब गहत तब बिनशतप्रजा समाज । ताते भूपति धर्म हित पालै सुधरमसाज ॥ भूपति गहत अधर्मतब बढ़त उपद्रवभूरि। धर्मप्रजा सब पापरत श्री प्रमाद सो पूरि ॥ होत समय बरषी जलद धर्मचरत जो भूप । भरति सम्पदा प्रजनघर राज धर्म अनुरूप ॥ दण्डनीति करि प्रजनको पापदेत नहिं खोइ । सो भूपति जिमि रजक जो बस्त्र न जानतधोइ ॥ छप्पै ॥ पालै प्रजा सनीति बधै चोरनकहँ गहि गहि । युद्ध करै अरिदेखि द्विजन पूजैहित कहिकहि ॥ नहिंमेटैमर्य्यादकरै मखदान सरुचिअति। अतिथिन को सत्कारकरै नितिकहै बचनसति ॥ जो लोक वेद कुलशास्त्र मत बरण आश्रम धर्मगणि । नित नेम सहितरक्षण करै तौन बिचक्षण भूपमणि ॥ दोहा ॥ नृप अबिचक्षण प्रजनको करिनसकत प्रतिपाल। तातेलक्षण नृपनके कहेसमक्षबिशाल॥ मुनि उतत्थ्यके बचनये सुनि मान्धाता भूप । गहि सुधर्म यहि जगतमें बिलसो शक्रस्वरूप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ धर्म बिषे थितिचाहि कौनआचरण नृपगहै । केहिबाधे केहिपाहिलहैसुयश इतस्वर्गउत ॥भीष्मउवाच॥ अत्रपूर्व इतिहास सुनोभूप हमकहतहैं। बामदेवके पास नृपबसुमन बूझतभये॥ मुनिवरकहोअनूप धर्म बारता नृपनकी । सो सुनि तेहिअनुरूप प्रजापालि हम मुदल- हैं॥ देवाउवाच ॥ दोहा ॥ धर्मबिषे थितिकरहुनृप धर्मदेत फलचारि। धर्मदेतजय जगतमधि बिलसोधर्म सिहारि ॥ जोअधरमचारी नृपति मिथ्या जलपनहार । थोरेदिनमें अवशिसो लहतआप-

दा भार ॥ सतिबक्ता धरमी सुबुधि दानीमख करतार । नीति सहित पालकप्रजा अरुइन्द्रिय जेतार ॥ मित्र पुरोहित बन्धुभट सम्बन्धी परिवार । अर्थीमानी गुणिनको करत उचितसत्कार ॥ सोभूपति बर्द्धतसदा छावतसुयश अमन्द । सहसाकरमी अपटु नृप शीघ्रलहत है दन्द ॥ सहसा करमी पापरत झूठ अधर्मी जौन । नहिं गौरव इतलहत उत रौरव पावततौन ॥ भूप जासु अप्रियकरै अवशिकरै प्रियतास। तेजसुयश तेहिनृपतिको अति शयकरत प्रकास ॥ स्त्रीमृगया द्यूतखल मादकरत क्षितिपाल । नहिंजीतत इन्द्रियन सो लहत आपदा जाल ॥ गहत लोभ आलस तरफ न्यायलखत जो भूप । अति पातकसो लहत है नर बधके अनुरूप ॥ निजरक्षणकरि युगुति सों रक्षण रक्षत जौन । तासुप्रजा बर्द्धत सदा भरति सम्पदा भौन ॥ दूरिकरत निज बर्ग जो पर बर्गन सँगलाय । सो नृप टेरत आपदहि दोऊ भुजाउठाय ॥ आपुहि जानि अशत्रुकै शत्रुहि दूरि निहारि । क्षीणकरत दल नृपति सो लहत आपदा हारि ॥ शत्रु सैन बधियुद्धकरि भूमिजीति क्षितिपाल । धर्मसहित पालतप्रजा सो धर्मी सबकाल ॥ मंत्र चिंतवन युद्धबिधि अनुशासन अरु न्याय । धर्मप्रजा रक्षण कुशल भूप सदाअधिकाय ॥ सकल एकसों धरतनहिं तातेपुरुष प्रवीन । प्रतिकारजमें नियम नृप परखतरहै अहीन ॥ शास्त्रज्ञान बय वृद्धजे तिनके धारत बैन । तिन्हैं काम सौंपै नृपति तौ नित बरधैचैन ॥ जे सुबचन सुनि गहत नहिं निज लघुमति गुरुमानि । तिन्हैं काम सौंपै नहीं राजनीति अनुमानि ॥ तातेराजहि उचित है पुरुष परीक्षाभूप। परखि बुद्धि ब्यवसायतब कामदेय अनुरूप ॥ जेहि अमात्य कहँ बन्दिगृह सधिराखैगहिटेक । अरु स्त्री हयगज अहिहि नहिं बिश्वासैनेक ॥ सबशुभगुणपूरित पतिहि दुष्टातियदुख देति । तातेभूपहि उचितहैपुरुष परीक्षाचेति॥लरैबिना पावत अजयजे

भूपति दृढ़मूल। लरेबिना पावतअजय अदृढ़मूललहि शूल॥ जासुसचिव मतिमान अरु जासुसुभट संतुष्ट। सोदृढ़मूलमही- पहै जासुप्रजा धनपुष्ट॥ सचिवमूढ़ भूखेसुभट प्रजादरिद्र स्व- रूप। आपु असाति बादी सदा अदृढ़ मूलसोभूप॥ निजजन मधि भाषित असित देतभूपतिहिशूल। जिमिकुठार मधिदारु लागि छेदतहै निजमूल॥ भीष्मउवाच॥ बामदेवके बचनये सुनि बसु- मन क्षितिपाल। यथापालि सुधरमसहित पायो सुयशबिशाल॥ इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिराजधर्मेभीष्मयुधिष्ठिरसंबादेपंचमोऽध्यायः५॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ कारिसुयुद्ध लहिविजय जो अमल करै परदेश। कौनभांति तिनकेप्रजन पालै तौननरेश॥ भीष्मउवाच॥ जायतहां नृपप्रजनकहँ देइअभय बरदान। अबतुममम पालब तुम्हैं हम निज पुत्रसमान॥ यथा रहतहैं तिमिरहो तुम सिगरे तजिखेद। यथादेतहैं कर तथा देहु न मानोभेद॥ बूझिसकल वृत्तान्त तहँ सदल सुअंगी राखि। आवैअपने राजप्रति नी- तिबारता भाखि॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ युद्धधर्म व्याख्यान जो क्षत्रिनको धर्मवर। कहोतौनसाबिधान ज्ञानवान ममपितामह॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ युद्धधर्म यहपरमहै लरैएक सोंएक। समबाहन भिरिभिरिलरै गहैजीतिकी टेक॥ हतबाहन जो सुभट अरु सुभट निरायुधजौन। तजै न तापै अस्त्रयह युद्धधर्म क्षितिरौन॥ जानहारि आरत कहत जौनभगो तजिखेत। ताहि कदापि न भटबधै युद्धधर्म करिचेत॥ धर्मयुद्ध करि जयलहत सोईबिजय प्रशस्त। जोअधर्मकरि जयलहत होततासु यशअस्त॥ धर्म राखिकै निधनको होब श्रेष्ठहैभूप। धर्मत्यागि जय लहब सो है पातक कोरूप॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सोरठा॥ पैठिसमर मधि बीर देह तजतजे शूरभट। तिनको लोकगँभीर कहोजाय जहँ बसतते॥ रोला॥ पूर्वको इतिहास इतहमकहत सुनियभूप। अम्बरीषमहे- न्द्रको सम्बादजौन अनूप॥ अम्बरीषन भागको सुतशक्र पुर

भूपभूपहि उचित भटन बांटिदैतोषि। ब्यूह बिरचिकै अरिनसों लरैओज गहिरोषि॥ रथराजी मधिगजनके रथमधि तुरग सवार। मधिमधिरहै सवारके पैदर सुभट उदार ॥ दशपति शत पतिसहसपति यूथपधरे उमंग। आदरकरि तिनपैधरे युद्धभार परसंग॥ बोलिएकते भटनकहँ सौंपै दशा बिभाग। गहे ज्ञाति की ईर्षा जातेलरै अदाग॥ रथीगजीभटघोर अरु युथप युथप गंभीर। अरुपैदर समुदाय लै सेनानायकधीर॥ दलके आगे रहिलरै रहैमध्यमें भूप। बहुबाहन बहुअस्त्रनिज राखै तहांअनूप॥ बन्धुमित्र आमात्यभट जिनको अति बिश्वास। हयगज पैदरतहँरहै चहुं दिशि बिनु अवकास॥ वृद्धसुभट यूथप जिते राजपुत्रसरदार। सदल पृष्ठरक्षकरहैं पैदर सुभटउदार॥ इमि चहुंदिशि चतुरंगिनी ब्यूहभेदरचि राखि। सबदिशि सरदार भटराखै सुबचनभाखि॥ निजथरसोंसब दिशनमें दल जैबेकी राह। यत्नसहित राखैरहै गहेजीतकीचाह॥ हरकारेसब थरनमें राखैरहैसनेम। अनुक्षण में सब थरनकी सुनै खबरिदुखक्षेम॥ आपुसदा चैतन्य रहिलखतरहै सबओर। लखैपराक्रम भटन को मध्यमगुरुअरुथोर॥ जहांलखै अतिभीरतहँ भेजैकछूसहाय। दबतलखै निजभटन तहँ आपुसैन सहजाय॥ सबदिशिकेयूथपनपहँ भेजतरहै संदेश। लरो मोहिं निजढिग गुणगहौ नकछू अंदेश॥ शस्त्रपाणि क्षत्रियनकहँ युद्ध बिजय सुरलोक। जोजन मतसो मरत निजकौन सकतकरिरोक॥ विजय लहैधन सुयश इतमरे बसनकहँस्वर्ग। भगेअयश धनहानिइत मरेमिलत अपवर्ग॥ याहीदिनलगि हमतुम्हैं सौंपोप्रीति बढ़ाय। हाथतुम्हारे शरमममम जीवन मरणबनाय॥ लखतरहत सबभटन कहँहटन नपावैंनेक। कैजीतब कैलरिमरब गहेरहैयहटेक॥ होइनिरायुध सुभटकै होइअबाहनजौन। बाहन आयुध शीघ्रतेहि भेजिदेइ क्षितिरौन॥ रहैजहां सरदारते गहेंनीति यहिडौर। नृपसमजानें

भटतिन्हें मानें शासनगोर ॥ बाजनबजवावत रहैंशंख दुन्दुभी आदि । जातेयोधा चावगहि मारेंमरैं प्रमादि ॥ लरनचलै जब नृपति तब लेइ सुदिनठहराय । कालयोगिनी चन्द्रमादिशाभेद मनलाय ॥ इष्टदेव कुलदेव अरु ग्रामदेव कहँ पूजि । दान देत बिप्रनभटन तोषत सुबचनकूजि ॥ सुनतसुभट स्वस्त्ययन अरु ध्यावत गुरुपदकंज । बजवावत बाजेघनेकरत सुभटमनरंज ॥ बन्दीजन गणबदनसों सुनतबिरदकेछन्द । लरन चलैनृपतिमि लरै पावैबिजयअनन्द ॥ निशिनिवासजेहिथरकरै तहांरहैचैतन्य। चौकीराखै दूरिलों घसनन पावैअन्य ॥ शतसह भटसन्नद्ध ह्वै फिरतरहैं चहुंओर । बहुबिधि हरकारे रहैं परदल मेंसबठोर ॥ सभा बिरचि बैठे तहाँ आवैं यूथप यूह । सेनापति सरदार सबआवैंजे खुशरूह ॥ युद्धव्यवस्था तहँ सुनेभटन प्रशंसैभूप । मंत्रकरै परदिवसके लरिबेको जयरूप ॥ मरेहोहिं जिनभटनके पिता बन्धु सुत आदि । तिन्हैं ग्राम हय द्विरददे तोषै सुबचन नादि ॥ होहिंसुभट घायलजिते तिनकोकरै उपाय । घायलजे सरदार तेहिलखैआपु तहँजाय ॥ चौकीदारन नियमि चहुंदिशि की खबरिमँगाय । शयनकरै क्षितिपालमणि रहिचैतन्यसचाय ॥ प्रातकृत्यकरि पूर्बवत चलै लरै क्षितिपाल । रामचन्द्रकी कृपाते पावै बिजय बिशाल ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सोरठा ॥ यहिप्रकार रण नीति करणि युधिष्ठिर नृपकहे । अब कहिये करिप्रीति लक्षण शूर सुबीरके ॥ सोसुनि भीष्म सुजान शूरनके लक्षणकहे । अब यहि समयबिधान करैशूरता शूरसों ॥ दोहा ॥ मृगपति गामीपुरुष जो मृगपति चखभटजौन । घनस्वर गजचख पुरुषजो शूरहोत है तौन ॥ होतप्रमत्त सुभावजो क्रोधितसो रुखजासु । केते मृदु प्रकृती पुरुष होतशूरतारासु ॥ पिंगनयन भृकुटीबिकट नकुल नयन नरजौन । जासुनयन उन्नतअरुण शूरबीर नरतौन ॥ उग्र प्रकृति अरु उग्रबपु उग्रतेज नरजौन । क्रोधवान अरु उग्रस्वर

शूरहोत नरतौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ अब कहियै मतिऐन शकुन बिजय अरु अजयके । सुनि भीषम लहिचैन कहतभये सुनुनृपतिसों ॥ रोला ॥ बिप्रआवै कोपकीन्हें कछू कारण पाय । अजयजानै भूपतब मतिशत्रुसों ह्वे जाय ॥ होयजाके सुढकबाहन खिन्नमन रणजात । चण्डगति गहि जासु संमुख सुरज आवत बात ॥ इन्द्रको धनुकढ़त संमुख शब्दकरत शृगाल । गृद्धआवत उड़तसंमुख तासु अजयअचाल ॥ जासुयोधागहत आनँद चलतपीछू पौन । बामह्वै मृगजातपीछू जासुजीतत तौन ॥ साम बिधि करिलेइ पहिले करैपीछे युद्ध । लरत बिप्रन पूजिनृप सो बिजयपावत शुद्ध ॥ शुद्धशूर उदार बंशज अर्द्धशत रणधीर । एकमतह्वै मारिसहसन लेतबिजय गँभीर ॥ युद्धमति नहिंगहै मृदुतारहै तीक्षण भाव । शाम दान बिभेद लखि तबगहै दण्ड बनाव ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कहां भूपतिगहै मृदुता कहां तीक्षणभेव । तौन कहिये पितामह अज्ञान धनके भेव ॥ भीष्मउवाच ॥ पूर्व्वके इतिहास इतहमकहत सुनिये तौन । सुमनपतिको प्रश्नसुनिकै कहेसुरगुरुजौन ॥ इन्द्रउवाच॥ अहितसों आचरणकैसो गहैउरबी पाल। कहोगुरुवी नीति सोप्रभुसहित परब्रीचाल ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ अहितलखतहि नहीठानै कलहक्रोध बढ़ाय । नहीं जानै सरिस मृदुह्वै रहैरीतिबढ़ाय ॥ बिहँग गाहिबेहेत जैसे रहत ब्याधा मौन । तथातासों कहैनहिंनृप पुरुषबार्ताजौन ॥ मंत्रविद आमात्यनिज जो तौन जानैभेद । और जनजो लखै तौ तेहि जीति दीन्ह उमेद ॥ रहैनिरखत समयताको छिद्रनृप मनलाय । रहैलायेतासु जनमें भेददान उपाय ॥ समय लहि आमात्य गण सह पकरि मारैताहि । त्यागि मृदुता तीक्षणता इमिगहै औसरचाहि ॥ सदा मृदुता गहैनाहिं नहिंसदा तीक्षण सुभाव । गहैमृदुता दुष्टजनको होतचाव चढ़ाव ॥ इन्द्रयह सुनिकहे लक्षण दुष्टजनको जौन । दुष्ट जानो परैजाते तातकहियेतौन ॥ कहेसुरुगुरु सुनो लक्षण

दुष्टजनको येह । जहांप्रापति लखतनाहिं तहँ नहीं राखतनेह ॥
कहैपीछू अगुण सबको प्रगटगुण सोगोपि । और कोऊ कहैं गुण तहँ रहै और अचोपि ॥ बक्र चखकरि हँसैकछु कछुग्रीव देत हलाय । सांच जो गुण कथन ताकहँ देत झूठ लखाय ॥ हँसत बातें कहत हँसिबेको न कारणयत्र। औरको भलसुनै जहँ अति होत पीड़िततत्र ॥ लगनपावै कानसों तहँकरैपर अपराध । ठौर ठौरन आपनो गुणरहै कथत अबाध ॥ लगिसबानकमान के सम भूमिपतिके कान । रहतजीवनवृत्ति जनको बाण जैसे प्रान ॥ भूपभाषैद्विज बधनतौ कहै सुधरमयेहु । सार्बभौमन को करम यह भूपयह ब्रतलेहु ॥ जासुऐसी बारता तुमतिन्हैं जानो दुष्ट। रहत परउपकारते जो साधु सोईपुष्ट ॥ दोहा ॥ सुरुगुरुको अरु शक्रको यहसंबादसुनीति । सुनोधर्मक्षितिपालमणिहै निति दायक जीति ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ धार्मिक भूपति जौन सो अमात्यके कपटसों । होइ अधन नृपतौन सुखचाहैं तौ किमि लहै ॥ भीष्मउवाच ॥ जयकरी ॥ अत्रसुनो पूरबइतिहास । क्षेम दरश भूपति मतिरास ॥ कोशल पति सो परम प्रबीन । भो अमात्य छलते धनहीन ॥ कालकवृक्ष सुमुनि पहँजाय । कहतभयोनिज व्यथाबुझाय ॥ निज अमात्यके कपट कुठार । हमतरुभये बिना धनडार ॥ धन बिनु भूप बिहँग बिनुपक्ष । करिन सकत करत-व्य समक्ष ॥ मो मन माधि यह व्याधि महान । प्राणहरण सम भई अमान ॥ ताते गहे शरण तुव तात । कहिये उचित मंत्र अवदात ॥ मुनिरुवाच ॥ भूपति प्रथम न कीन्हेचेत्त । अब कत शोचकरत ताहेत ॥ बर्तमानको रक्षण योग । गतकोशोच न उचित प्रयोग ॥ हैअनित्यसब सारसमस्त । नयनउदयको हैबो अस्त ॥ कहँतोपिता पितामहपूर्ब । कहांगयेसब योधागूर्ब ॥ प्रग-टतजिते होततेगुप्त । मूर्तिमाननहिं कबहुं अलुप्त ॥ रक्षण करो धर्म सबकाल । महिपालत अधुनौ क्षितिपाल ॥ जेभूपतितुमसे

मतिमान । तिन्हें न उचित शोच यहिमान ॥ जौनअनागत अरु गत जौन । उचित न तासु शोच महिरौन ॥ पुत्र पउत्र बन्धुधन भूरि । ज्ञानीत्यागत आनँद पूरि ॥ हैअनर्थको अर्थ स्वरूप । हैअनर्थमधि अर्थअनूप ॥ कहूंअधनतौ आनँद दानि । हित अनहित सबपरत पिछानि ॥ सदाअधनता रहत न छाय । सदा न धनै रहत सरसाय ॥ कितनेलहि धन सुख अतिमान । नहिं जानत दूजो कल्यान ॥ कितनेधर्मे जानतश्रेय । धन लघुजानत धर्म अमेय ॥ केते धनहित त्यागत प्रान । जीवनते धन गुणत महान ॥ केते धनलहि करत न भोग । नहिंजानत निज मरण प्रयोग ॥ धर्महि बरजानत तेश्रेष्ठ । अरु सब मध्यम अधम यथेष्ठ ॥ होतपुरुषते धनउत्पन्न । पुरुषसुधनजे धर्मापन्न ॥ इन्द्रिन मोषि पोषि संतोष । कछुदिन सहीं अकिंचनदोष ॥ ममगृहआवत नृपबैदेह । तुमसों तासोंबढ़ी सनेह ॥ ताहिसहायी लहिकै भूप । होहुपूर्ववत धनीअनूप ॥ जेअमात्य कीन्हे अनियाय । पहिले तिनमें संधिकराय ॥ यथा बेलहनि फोरत बेल । तिन्हें निपातौ रचि सोखेल ॥ करि अमात्यधर्मी मतिमान । उरबीभोगी सहित बिधान ॥ मुनिकेघर बैदेहनरेश । जबआये तब सुमुनि सुवेश ॥ क्षेमदरश कोशलपतितासु । करिसुप्रशंसा बोलेआसु ॥ नृप तुमइनसों प्रीतिबढ़ाय । उचित बूझिकै करौसहाय ॥ इन्हें अमात्य दयेदुख भूरि । तुमदुखतौन देहुकरिदूरि ॥ सोसुनिकै बैदेहमहीप । भूपहिबोलि मिलाकुलदीप ॥ सैनसहित निजघरलै आय । पूजनकियो प्रेमसरसाय ॥ बिधिपूर्वक निजकन्याब्याहि । धनअसंख्य दीन्हो हितचाहि ॥ कोशलेश अति आनँदछाय । निजपुरआयो ओजबढ़ाय ॥ पालोप्रजा धर्मअधिकाय । कीन्हे यज्ञदान सुखदाय ॥ दोहा ॥ इमि मतिमान सुपुरुषसों करिकैमंत्र बिचार । मोदसुधन भूपतिलहै सुनोभूमि भरतार ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कहोतात यहमर्म काकोसेवन श्रेष्ठअति । देहधरेकोधर्म

देनहार अति परमगति ॥ भीष्मउवाच ॥ चौपाई ॥ माता पिता गुरू को पूजन । यहिसमतात और जनदूजन ॥ येपरतक्ष देवसबही के । सेवनयोग्य पूज्य अतिनीके ॥ येत्रयअग्नि कहतश्रुतिमानो । गार्हपत्य अग्नि पितुजानो ॥ माता दक्षिण अग्नि अनूपा । आहवनीय गुरू सुनुभूपा ॥ पिताअग्नि यहि लोक उबारति । माताग्नि परलोक सुधारति ॥ ब्रह्मलोकमधि गुरूबसावत । इमि येत्रय त्रयलोक बनावत ॥ सन्तति सम्पति सुधरम बर्द्धत । तेज सुयशबाढ़ि कबहुं न अर्द्धत ॥ तिनमें अधिकगुरू हमजानैं । जा की कृपा मोक्षपदठानैं ॥ सिरजत देहजन्मदै पालत । अंकलगाय प्राणसम लालत ॥ बहुत सहत न गहत निठुराई । गुरुसमजननि जनक सुखदाई ॥ जो ये चरैं कुयुग अनुरूपा । तबहूंसेवन योग्य अनूपा ॥ धनदै पालैकरि सन्माना । सोप्रभु जननीजनक समाना ॥ तेहिप्रकार बिद्यागुणदायक । जनक जननिसम पूजन लायक ॥ जेसुकर्म करिसुधरम ईक्षत । तिनकहँ वेदनीति यह शीक्षत ॥ गुणि गुरुजनकहँ पूजत जोई । सकल पदारथ पावत सोई ॥ करि अनुशासन सुबचन कूजत । जनक जननि गुरुजन को पूजत ॥ दोहा ॥ ध्यावत पूजत गुरुहिसो ब्रह्महि पूजतध्याय । चहतपरमपद गुरुहिसो सेवत मनबुधि लाय ॥ मातु पिता अरु गुरूको करत निरादर जौन । आदिभ्रूनहा तासु सम और पात की कौन ॥ मित्रद्रोही पुरुषजो पुरुष कृतघ्नी जौन । तियबध कृत गुरुघात कृत महा पातकी तौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ अब सुधर्म ब्याख्यान सत्य असत्य बिधान सब । कहिये तात सुजान सत्य समान न और कछु ॥ चौपाई ॥ सुनिये तात धर्म ब्यवहारा । सत्य असत्य बिधान अपारा ॥ सत्य समान न मख अवराधन । नहिं असत्य सम पातक बाधन ॥ सत्य समान पुण्य नहिं दूजा । सत्य समान न तीरथ पूजा ॥ है असत्य सम पातक मूला । रौरव आदि नरककर कूला ॥ कतहुं असत्य पुण्य

सरसावत। कबहूंसत्य पाप उपजावत ॥ गातिहिंसा परपीड़ा आदिक। मेटत जौन असत्यप्रवादिक ॥ तौन असत्य पुण्यप्रदराजा। भाषत सिगरे सुबुधि समाजा ॥ जौनसत्य हिंसादिक साधै। सोपातक दैपरगतिबाधै ॥ हिंसापरम अधर्म कहावत। हिंसाअगणित जन्म नशावत॥ हिंसायुद्ध यज्ञमधिकीन्हें। धर्म बढ़तनहिं अधरम लीन्हें ॥ पर उपकार धर्म अतिपावन। परपीड़ाअधर्म अघछावन॥परमधर्म हैदानसोहायो। पुण्य पयोधि दानतेजायो ॥ पापिहिदान देतजोकोई। धर्मनशत तहँअधरम होई ॥ जातिधर्म अतिसुधरम जगमें। आश्रम धर्म पुण्य प्रद अगमें ॥ परमसुधर्म प्रतिज्ञा पालन। अतिसुधर्म सतपथिमति चालन॥ सत संगति बरधर्म गोसाईं। पारससंग लोहकीनाईं॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ गहिगहि भावअनेक नर बहुबिधि सहत कलेश। कहोपितामह सबिधि अब सो सबधर्म बिशेश॥ यथा उक्त आश्रमचरत त्यागिदम्भ छलजौन। सुनो भूप भवसिन्धु तरिपारलहत हैतौन ॥ जेनहिंहिंसा करतनाहिं जीवनपीड़ादेत। दानदेत नाहिंलेतजे तेनर परपद लेत॥ जेनर करत न पापकछु अतिथिन देतसुपास। जेअलोभ अरुसत्यवद तासुस्वर्गमधि बास ॥ परतिय जानत जननिजे राजस तामस हीन। देवपितृ मखकरत जे तेपावत मतिपीन ॥ युद्धमध्य अतिशूरजे जिन्हैं मरणभयनाहिं। बिजयचहत करिधर्म बिधि तेनर सुरपुरजाहिं॥ जो तपकरता बिप्रबर वेदभ्यासी जौन। अध्यापक जापकानिपुण तरतदुर्गयह तौन॥निजसम जानत जगत सबरावरंक समभाव। तरतदुर्ग सबसारयह जोछल छूछोछाव ॥ परिबिभूति लखिमुदितजे मानिनको सत्कार। तरतदुर्गयह करतजे मानिनकोसत्कार ॥ सत्संगति रतपुरुषजो गहैसत्यगुणनेम। तरत सिन्धु यहगहतजो रामकृष्ण पदप्रेम ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिराजधर्मेयुधिष्ठिरभीष्मसंबादोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सौम्यरूप असौम्यकहु सौम्यअसौम्य स्वरूप । किमिपिछानि तेपरत सोकहिये सुमतिअनूप ॥ भीष्मउवाच जयकरी ॥ अत्र कहत इतिहास अनूप । सुनोतौन कुरुनायक भूप ॥ पौरिक नामनृपति होपूर्ब । सोहिंसारत होअति गूर्ब ॥ समयपायतन तजिक्षितिपाल । द्वितिय जन्ममें भयो शृगाल ॥ तहँकरि पूरबपरगतिचेत । भयो अनामिष बरब्रतलेत ॥ गिरो परो फलपावै जौन । बिलवै दिवसपाइकै तौन ॥ तासुवृत्ति यह अनुपमदेखि । और शृगालदुष्ट अतितेखि ॥ तासोंकहत भये छलबैन । यहमृगवृत्ति हमारीहै न ॥ हिंसाकरबमांसको खाब । मम सुजाति कहँ बड़ो सवाब ॥ मांसखाइबेको ब्रतलेहु । आपु खाहुज्ञातिन कहँ देहु ॥ यहसुनि तौन शृगाल प्रवीन । इमि भाषतभो बचन अहीन ॥ तुमसब गहियह वृत्त कुराग । लाये जम्बुककुल में दाग ॥ हम चाहत सोवृत्त अचार । जातेपसरै सुयश उदार ॥ बंशहि करत प्रशंसित जौन । ध्रुव उत्तम गति पावततौन ॥ आत्महि अमलकरै अनुमानि । हम यहवृत्तिगहे हित जानि ॥ जाते ऐसो जन्ममलानि । फेरि न लेनपरै दुख-दानि ॥ जैसो कर्मकरै तनपाय । तैसो जन्मलहै फिरि आय ॥ स्वर्ग नर्क सुखदुख लघु पर्म । हैसब गतिकोकारणकर्म ॥ तेहि शृगालके सुनि ये बैन । मौनरहे जम्बुकअघऐन ॥ होतहँमृग-पतिसो सुनि तौन । जान्योताहि महा मति भौन ॥ गुणि इमि कहत भयो मनलाय । तुम ममंमंत्री होहु सचाय ॥ अति मति मान देखि करिप्रीति । सचिवकरब राजनकीनीति ॥ तातेतुम्हैं जानि मतिमान । सचिव करत हमदेखि बिधान ॥ यह सुनिकै गोमायु सुजान । मृगपतिसों बोलो अनुमान ॥ तुमयह उचित कहतमृगराज । भूपहि चाहत सबुधि समाज ॥ जैसोहोत अ-मात्य सुभेश । ते सो बद्धत बिभव बिशेश ॥ तो मंत्रीह्वैबे को चाव । नहिंहमधारतजानि सुभाव ॥ तुमबनचर बलवानअपार ।

नहिं प्रशस्त सेवाज्ञातार ॥ पूर्व अमात्य तुम्हारेजौन । छली चुगुल कुत्सितमतितौन ॥ दुष्टहोत सहबासीयत्र । साधुप्रवीण न निबहत तत्र ॥ प्रभु अविवेकी साथी दुष्ट । तहँ साधुन कहँ कुशल न पुष्ट ॥ उनके बचन न मानैनेक । हमैंन देहु दण्डअबि-वेक ॥ यह दृढ़प्रणकीजे स्वीकार । तो हममंत्री होहिं तुम्हार ॥ दोहा ॥ यह निबन्ध करिकै भयो मंत्रीतौन शृगाल । तासु रंध्र निरखनलगे जे जम्बुक बदचाल ॥ तेहि मृगपतिके खान को मांसधरो होताहि । घरमें साधु शृगालके धरिआये बधचाहि॥ कछुक्षणमें अति क्षुधितह्वै जागि उठो मृगराज । मांस कहाभो इमिकह्यो करिकै क्रोध दराज ॥ सोसुनि दुष्टशृगाल सब कहत भये मनमान । खायोमांस शृगाल जो मंत्रीसाधु सुजान॥ दर-शावत है साधुता इबिधि करत है कर्म । क्षुद्र गुणत तुम कहँ सदा आनत कछू न भर्म ॥ सुनि प्रणतजि मृगराज वह गह्यो जातिके तौर । लियो साधु गोमायु के बधकरिबेकी डौर ॥ तेहि मृगपतिकी जननि तब बहुबिधि ताहि बुझाय । सादर साधु शृगालके प्राणहि दई बचाय ॥ तजि बाधहि गोमायुवह और बिपिन मधिजाय । कछुदिन में सो देहतजि लह्यो स्वर्ग सुख-दाय ॥ हे महीप करणीकियो जाते भयोशृगाल । करि संयम गोमायुह्वै सुरपुर लह्योबिशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ अबकहि-यै मतिभौन होतकिये आलसकहा । दोष दिखावत कौन बिनु बिचारके करमजे ॥ भीष्मउवाच ॥ अत्र पूर्व इतिहास सुनो आलसी ऊंटको । करि अबिचार प्रकास नाश लह्यो जिमि बिपिन मधि ॥ जयकरी ॥ पूर्व रहो हो ऊंट उदार । सो बनमधि तपकियोअपार ॥ तप निरखि बिधि भयेप्रसन्न । तहँआये जहँ सुतरासन्न ॥ बरं-ब्रूहि बोले बरदान । तबइमि बोलो ऊंटनदान ॥ देहुकृपाकरिकै बिस्तारि । ग्रीवहमारिकोश शतचारि ॥ इतबैठे सागरमधिबारि । पियेंचरैं सब बिपिन निहारि ॥ सोसुनि वेधा गे निजधाम । शत

योजन करिग्रीव ललाम ॥ लहि बरग्रीव ऊंटअतिमोदि । लागो सबदिशि चरन बिनोदि ॥ बैठोरहि ताही थरधीर । चरै बदन करि सागरतीर ॥ एकदिवसचरि ग्रीवपसारि । सोयो बदनदरी मधिडारि ॥ तेहिथर दम्गति जम्बुकजाय । ग्रीवदेखि अतिआनँद प्राय ॥ मांस काटिकै लागोखान । जगो ऊंट लहि क्लेश महान ॥ जौ लागिईंचै ग्रींच बिशाल । तौ लगि दीन्हें काटि शृगाल ॥ यहि बिधि गहि आलस अबिचार । भयोनिधनइमि ऊंट अगार ॥ मूल मोदको बुद्धि अनूप । है अबिचार आपदा रूप ॥ आलसतें सबहोत अकाज । ब्यवसायी को सुधरतराज ॥ भूपकरत जो जैसोकर्म । प्रगटहोत तस ताकोमर्म ॥ दोहा ॥ करै सुकर्म बिचारिकै गहै न आलसलेश । सहबासिन तोषतरहै बरधै तौन नरेश ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ जाको प्रबल अमित्र गहै कौन आचरणसों । प्रभु यहनीति बिचित्र सुनो चहत है चित्त मम ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ अत्र पूर्व इतिहासहम उदाहरणमति मान । सागर अरु सरितानको जो इतिहास महान ॥ सबसरितन तनदेखिकै सागर कह्यो बिवेक । टूटिउखरि तौ धारपरि आवत वृक्षअनेक ॥ बेनु बेत आवतनहीं ताकोकहत निदान । सो सुनिकैगंगा कही सुनोभूप मतिमान ॥ धारचलत अति बेगसों तरुगण तासोंजूटि । करैरहत तेहि अगुणसों उखरिजातकैटूटि ॥ जब प्रबाह मधिपरत है बेणु बेतसमुदाय । सुनोजात तब नम्रह्वै तातेबचत सचाय ॥ जबप्रबाह कढ़िजातहै तबफिरिहोतउतंग । निंद्य कठिनता प्रबल सों सुगुण नम्रता ढंग ॥ भीष्मउवाच ॥ इमिकठोरता नम्रतागुण अवगुण दरशाय । गंगासागरको कियो समाधान सुखदाय ॥ प्रबल शत्रुसों नम्रता गहि नृप रहै सचेत । समय पायकै उच्चता गहिसो आनँद लेत ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ ह्वै प्रगल्भ हठठानि मूरख पण्डितसोंलरै । तहँपण्डित अनुमानि केहि बिधिकरै प्रवीणता ॥ भीष्मउवाच ॥

दोहा ॥ तहँपण्डितताके सहैं सिगरे कुत्सितबैन । ताकेबातन के सरिस बातैंआपुकहैन ॥ निन्दैकै अस्तुतिकरै श्रोताजिते नदान। काकसंग जल्पतनहीं सुगुणीहंस सुजान॥निजसमबातैं करतसो तेहिक्षण श्रुतदुखदेत । प्राणघात नहिंकरतहै यहबिचारि करि लेत ॥ जानैमूढ़ मयूर सम निर्त्तत पूंछउठाय । निलज लाज आवत नहीं गुदादोष दरशाय ॥ कितनेआगे गुण कहत पीछे जल्पतदोष । पण्डित तिनके बचनसुनि कबहुंन आनतरोष ॥ चलनी समगुण अधकरत दोष देखावत भूरि । तासों सरवर करतनहिं पटुनिति निवसतदूरि ॥ जेहि बिधि दोषी श्वानसों दूरि रहतनरजानि। तेहि बिधि ऐसे नरनकहँ पटु त्यागत अनु-मानि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ कहो पितामह दक्षअक्षनीति नर पतिनकी। जासुप्रभाव प्रतक्षआनँद लहतसमक्षनृप॥भीष्मउवाच॥ रोला ॥ परमउत्तर राजबिधि हम कहत तुमसोंतात । होतनृपके अनुगजैसे तथाबिधि सरसात ॥ बर्त्तमान भविष्यभूत त्रिकाल जाहिबिचार । देशअरु कालज्ञ जिनकी प्रकृति साधु उदार ॥ शास्त्रबिद धर्मज्ञधर्मी शुद्धसरमी स्वच्छ। सावधान सुशीलसम दरशीसुज्ञान समच्छ ॥ शूरब्यवसायी सुबुधिसर्बज्ञ सब गुणमा-न । सखासचिव सुमित्रसुहित अमात्य जासुमहान ॥ प्रजाताके लहतसुख अरुरहत सुधरमपूरि । होतताके सुधन बर्द्धित तेज बर्द्धितभूरि ॥ बढ़तदल चतुरंगिनी भटरहत मोदितसर्ब । शत्रु होत न कबहुं सम्मुख सुनत त्यागत गर्ब ॥ होत ताके देश में नहिं पापको सञ्चार । बर्ण आश्रम धरम को नाहिं घटत नेकु बिचार ॥ लहत आनँद दुहूं दिशि सो भूमिपति मतिमान । होत जासु अमात्य सिगरे कहत जौन बिधान ॥ सुनो ताते नृपनकी यह परमनीति अनूप । लखि सुबंशज परखि सब गुण देखि शुद्ध स्वरूप ॥ करै ताहि अमात्यसुधरै तासु सिगरो काज। नहिं सुबंशज कपट आनत नहीं बिगरत राज ॥ करत कुटिल

कुवंशजहि आमात्य भूलि नरेश। अवशि सो बाढ़ि कपट ठानत त्यागि सुधरम लेश ॥ पूर्बको इतिहास इत हम कहत सुनिये दान्त । कहे मुनिगण बिपिनमें भृगुरामको वृत्तान्त ॥मुनिरुवाच ॥ महानिर्जन बिपिनमें तप करत हे मुनिराय । रहतहो तहँ ग्रामबासी श्वान एक सचाय ॥ तहां आयो एक दिन जो मारि श्वानहिं खात । शास्त्रमें तेहि कहत द्वीपी इतै हाठा ख्यात ॥ देखि ताकहँ श्वान मुनि सों कहो आरत बैन । सुमुनि तब करिदये द्वीपी श्वानकहँ बलऐन ॥ कछूदिनमें बाघ आयो डरोद्वीपी हेरि । सुमुनि तब करिदये द्वीपिहि बाघ अतिबल मेरि ॥ मत्त मैगल तदनु आयो बाघ डरपो चाहि । सुमुनि तासों प्रबल मैगल किये बाघहि चाहि ॥ कछू दिनमें तहां आयो सिंह अति बलवान । सुमुनि तब तेहिगजहि कीन्हें सिंह प्रबल महान ॥ कछू दिनमें तहांआयो शलभनामक जौन । आठपदको प्रबल सिंहहि बधत जो बलभौन ॥ देखि शलभहि सिंह डरपो सुमुनि तौन निहारि । कियो सिंहहि शलभ तासों प्रबल अतिप्रण धारि ॥ देखि मुनि कृत शलभकहँ डरि शलभ भागो तौन । लगो बिहरन बिपिनमें तहँ शलभ मुनिकृत जौन ॥ खायलीन्हों बिपिनके बधि मृगनके समुदाय । बचेहे ते बिपिन तजिकै दूरि निवसे जाय ॥ एकदिन मृग लह्यो नाहिं अति गह्यो आमिष चोप । मुनिहि चाह्यो खान सो लखि सुमुनि कीन्हें कोप॥नीचजनकी नीचता नाहिं जातबात बिसारि । फेरि ताकहँ श्वान करिकै किये बनते दूरि॥ दोहा ॥ कुलहीनहिं बरधित करब नाहिं कितहू नृपनीति । पुरुष परखि बरधितकरत सो बिलसत जगजीति ॥ उपकारी सतसंगती क्षमावान मतिमान । भूपति करै अमात्य ज्यहि धर्मी कहे सुजान ॥ परखि बुद्धि ब्यवसाय बल गुण ताही अनुरूप । कारज सौंपे जननकहँ सुचितरहे सोभूप ॥ जहां सिंहको काजहै तहँ जो नियमें श्वान । श्वान ठौर गोमायु करि लहै आपदा न्यान ॥ द्विरदभार

हयपर धरै हयको मेदहि देइ । अपटु कहावत नृपति सो आपु आपदा लेइ ॥ जैसे होत अमात्य अरु सखासंगती सर्व । तैसी गति भूपति लहत मध्यम खर्ब अखर्ब ॥ परदेशीजन सुभट पुर सखा अमात्य निरेखि । जानत मति गति नृपतिकी राजनीति अवरेखि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ राजनीति अभिराम तात कहे बहुभांति तुम । अब कहिये करि आम राजनीतिको तत्त्व जो ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ रक्षण सिगरे भूपकी परमसुलक्षण भूप । दक्षण को संगति करब पक्षन करब अनूप ॥ उग्रप्रकृति ऋजुप्रकृति अरु निरदय सदय सुभाव । दुष्ट साधु रिपु हित सधी भूपति गहै बनाव ॥ मोर अहिनकहँ खातहै जिमि गहि बहुरग पक्ष । तिमि बहुरग गहि खलन कहँ दण्डै भूपति दक्ष ॥ शस्त्र शास्त्र बिधि मधि निपुण हय गज रोह प्रवीन । जल तरिबेमें दक्ष अरु बिप्रभगतिमें पीन ॥ सफलवृक्षसम सुजनको करतरहै उपकार । दुष्ट मृगनपहँ बाघसम दयेरहै डरभार ॥ निजरक्षणमें भूमिपति दये रहै नित चित्त । देश काल परखतरहै को बैरी को मित्त ॥ मंत्रिनसों मंत्रिल बिना कारज करै न नेक । सो मत निज मति लायकै समुझिलेइ सबिबेक ॥ धर्म राखि भूपति करै सबही के प्रियकर्म । रहै सदा बरधित करत धन दल बिक्रममर्म ॥ निर्लोभी शीक्षित सुबुधि धर्म्म शील पहिचानि । सब काजन थापितकरै सतबक्ता अनुमानि ॥ दान धर्म्म अरु न्यायबिधि सौंपै जाहि नरेश । भले परखले प्रथम फिरि परखतरहै हमेश ॥ वार्त्तान्तर में सखनसों बूझिलेइ वृत्तान्त । अधिकारी जे काजके तिनके शान्त अशान्त ॥ निजपीड़ा सबकहत जो भूप सखनपहँजाय । छपत नहीं नृप सखनसों काहूको अन्याय ॥ निशिदिन जे सँग रहतहैं मोदत यथाबिधान । नृपमनगतिज्ञाता चतुर तेई सखा नआन ॥ जासुअनुग्रह छपतनाहिं मंत्रप्रगट नहिंहोत । सोभूपति यशजयलहत प्रतिदिन बर्द्धितहोत ॥ धनदल गढ़गजतुरगबन

प्रजादेशब्यवहार । आयुधअरु आमदखरच दानधर्मउपचार ॥ आमदबर्द्धन डौरअब युद्धसमान स्वरूप । मनलाये निरखतरहै बिजयलहतसो भूप ॥ पालिप्रजन कहँधेनुसम दोहैधन पयपूर । राखैकोष सुपात्रमें तहांननिवसै कूर ॥ ताहि तहां पचवैसरुचि शासनआंच लगाय । नित्यखर्चे ब्यवहारमें प्रथमदेइ उफनाय ॥ बढ़ि असंथाई रहैजोताकहँ देइजमाय । समयपाय तेहिमथिलहै धर्मसखर सुखदाय ॥ अपटु अधर्मी लालचिहि कबहुं न सौंपै काम । लेश न राखै अहितको चिन्तितरहि सबकाम ॥ बालवृद्ध बलहीन लखि शत्रुहि तजै न शोच । रहै शत्रुके नाशकी बिधि को करत सुलोच ॥ चारु सुबुधि बर्द्धित करै बुधिते बर्द्धतराज । बुधिते जीतत अरिन कहँ बुधि सब सुधरम साज ॥ बुद्धिमान ब्यवसायकरि लहत बिचारतजौन । बुधि विद्या ब्यवसाययुत बली भूमिपति तौन ॥ जासुअमात्य महानमति बढ़त शक्रसम तौन । तातेपरखि स्वभावमति करै सुअमात्य सुरौन ॥ तप बलविद्या धनबढ़त कियेबुद्धिब्यवसाय । सब सुधरत ब्यवसाय ते बुधिको लहै सहाय ॥ जाहि कहत उद्योग है सो ब्यवसाय सुनाम । महालोभ बिनु सो कियेहोत सुयश अभिराम ॥ लोक शास्त्र कुलरीति को करत उलंघनजौन । धर्म छुटतहै जासुबश महालोभहै तौन ॥ ताते दण्डस्वरूप गुणिसबदिनकरै सुकर्म । दण्डगुणे बर्द्धतनहीं लोभादिक सबमर्म ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ सबथर थिति करि तासु आपु प्रशंसत दण्डको । सोअबकहिये आसु रूपभेद गुणि दण्डको ॥ भीष्मउवाच ॥ गीता ॥ पूर्बमनुयहि भांति भाषे दण्डको ब्याख्यान । दण्डकीन्है धर्म बर्द्धत दण्ड धर्म महान ॥ प्रजापालन धर्मजासों दण्डहै अभिराम । श्याम रूप अनूपआभा महाबलको धाम ॥ चारिभुजअरु चारिदांतै आठपद चखएक । दोयजिह्वा ताम्रमुख मृगराजसम अतिटेक ॥ धनुषशर असिगदा मुद्गर मुशल आयुधजासु । प्रबलसबसों

क्रोध पूरित नामरक्षक तासु ॥ साधुजनको करत रक्षण खलन मर्दतजौन । भूप दण्ड न देत असतिहि दुहुन मर्दततौन ॥ लोकपाल दिगीश शिवप्रभुबिष्णु ताकोनाम । जगद्धात्रीगिरा लक्ष्मी दण्डनीति अक्षाम ॥ देवमोक्ष अमोक्ष भयदम अभय संयमदादि । नामअगणित दण्डके हैं तीक्ष्ण मृदुता आदि ॥ दण्ड बिधिकरि प्रजनरक्षत भूमिपति जोचेत्र । दण्डप्रभुतेहि करत बार्द्धित परमसुधरम्म हेत ॥ वर्ण आश्रम धर्मबर्द्धित दण्ड के परभाव । होततपब्रत दानमखसब जासुजैसोठाव ॥ सहित सुरगणशक्र मुदलहि अन्नअतिशयदेत । प्राणरक्षण जगतका है अन्नते तेहिहेत ॥ दण्ड ब्रतगहि प्रजापालनउचित भूपहि रोज । दण्ड है ऐश्वर्य्य ईश्वर तेजदलबल ओज ॥ तुरगरथ हय पतितजन अरु भारबाहकपाठ । अस्त्र सब अरु देश जन परदेश जन ये आठ ॥ गणिक तंत्री कोष मंत्री मित्र धान्य सुसौज । अंगपन्द्रह भूपकेतिमि दण्डदायकमौज ॥ दयेईश्वर भूमिपति कहँ दण्ड उत्तमपर्म । पाप प्रगट न होत जाते करत बार्द्धित धर्म ॥ दण्डप्रत्ययजौन सो व्यवहार आत्मकतात । वेद विष्णुआत्मक बिदित व्यवहार स्मृति जो ख्यात ॥ व्यवहारस्मृति सो वेदहै अरु वेदसोई धर्म । धर्म सोई शुभद सतपथ नहीं अन्तरमर्म ॥ बिना नृप के दण्ड भयनहिं धर्म निबहत एक । उचित ताते भूमिपति कहँ दण्डधारण टेक ॥ पिता माताबन्धु भार्य्या अरु पुरोहित जौन । धर्मत्यागे दण्डभूपहि सुनो उरबी रौन ॥ पूर्बको इतिहास इतहम कहत सुनिये तौन । अंगपति बसुहोम भूपति रह्यो बलबुधि भौन ॥ सहित भार्य्या गयो सो नृप मुंजपृष्ठ सुशैल । तहां तपकरि लह्यो सोनृप देवऋषि सम फैल ॥ मान्धाता भूमिपति चलिगयो तहँ सुनुभूप । अर्घ्यदैबसु होम तेहि बैठायभो कृतरूप ॥ कुशल सुनिबसुहोमबूझे आगमनकोहेत । मान्धाताभूप तबइमिकह्यो आनँदलेत ॥ मान्धातोवाच ॥

जीवकृत जोशास्त्र अरु औशनस शास्त्रमहान । तासुज्ञाताभूमि पति तुमबिदित अति मतिमान ॥ सुनो चाहत तोन हम नृप नीति धर्म बिचारि । दण्ड प्रगटित भयो किमि कित कहो सो निरधारि ॥ बसुहोमउवाच ॥ दण्ड उत्पति भयोजिमि सोसुनोउरबी रोन । आत्मसम बिनुलखे ऋत्विज गुन्यो बिधिकै मोन ॥ शीश मधि धरिगर्बराखे सहसबर्ष बिचारि । तदनु प्रगटित कियेता-कहँ नामक्षुप निरधारि ॥ कियेबेधा यज्ञऋत्विज ताहिकरिसबि धान । यज्ञरतबिधिरहे तबभोदण्ड अन्तरधान ॥ दण्डअन्तर धानभो तबबढ़ो अतिअबिबेक । आत्म परधनधर्म हदकोरहो भाव न नेक ॥ बूझिसो वृत्तान्तब्रह्मा बिष्णुप्रभुहि अराधि । कहेफिरि मर्य्याद थापितकरो प्रभुब्रत साधि ॥ बिष्णुतब निज आत्माते किये प्रगटित दण्ड । शूल आदिक धरे आयुध उग्र बपु अतिचण्ड ॥ तदनु प्रभु भगवानकीन्हें अधिप पालनहेत । सुरनकेपति किये शक्रहि तेज सत्वनिकेत ॥ पितृ वैवस्वतनके पति यमहि कीन्हें चाहि । अधिप कीन्हें यक्षगणके धनद कहि यतुजाहि ॥ दोहा ॥ पर्बतपति मेरुहिकिये सिंधुहि सरितानाथ । जलपति अरु सुरपति कियेबरुणहिदे बरगाथ ॥ कीन्हें रुद्रन के अधिप शम्भु प्रभुहि अनुमानि । किये बशिष्ठहि बिप्रपति लखि तपबर्चस खानि ॥ कीन्हें अधिपति बसुनके जातवेदसहि देखि । तेजमानके पतिकिये प्रभुभास्करहि निरेखि ॥ यहिप्रकार निर्मित किये सिगरेअधिप अमन्द । दण्डनीति करिते सकल पालत प्रजा अदन्द ॥ क्रमसों सब भूपति लहेदण्डप्रभुहि सहनीति । क्रमसों पालत प्रजनकहँ पालि सुपूरुब रीति ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि सुबचन बसुहोम के मान्धाता गेधाम । दण्ड नीति परभाव जो है नृपधाम अछाम ॥ सोरठा ॥ यहिबिधि दण्ड प्रभाव दण्ड कुशल सों कुशलनृप । रामचन्द्र गहि-चाव दीन्हें दण्ड दशान नहि ॥ जोरि बानरीसैन सेतुबांधि

लरिघेरिपुर । कौणपदल बल ऐन मरदि बधेपरिवार सह ॥
इतिशांतिपर्वणिराजधर्मदण्डप्रभाववर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अर्थधर्म अरुकाम अरुमोक्ष जौन सुख-दाय । इनको कहिये मूलअरु प्रभवभेदसमुझाय ॥ भीष्मउवाच ॥
अर्थधर्म अरु कामको हैद्वैविधि वृत्तान्त । तौनकहत मनदैसु-नोभूपयुधिष्ठिर दान्त ॥ ऋतुदिनलखि निजधरमगुनि पुत्रअर्थ अभिराम । करत जौन व्यापारसो अर्थधर्म अरुकाम ॥ मूल अर्थको धर्म है मूलकामको अर्थ । ऋतुक्षण तिनको प्रभव है सतमति करत न व्यर्थ ॥ करतधर्म परलोकके अर्थ जौन अभि-राम । अर्थ धर्म सो तासुफल प्राप्त जौनसो काम ॥ अर्थ मूल वहधर्महै धर्ममूल वहकाम । प्रभवतासु संकल्प है प्रभु यहभेद अछाम ॥ मोक्ष बिलक्षण रूपहै निस्संकल्पअमन्द । मिलतस-च्चिदानन्द में ध्याय सच्चिदानन्द ॥ अर्थ धर्मयुत काम जो सो प्रशस्त सबकाल । अर्थ धर्म बिनु कामजो सोअतिनिंद्यकराल ॥ अंगरिष्ट नृप सोइबिधि कहे सुमुनि कामन्द । अर्थ धर्म बिनुच-रतजो कामतौन मतिमन्द ॥ मूढ़प्रकृति ऐसो नृपति अबिबेकी कृतपाप । सो दुखदायक प्रजनकहँ जिमिगृहबासी सांप ॥ निज अघगुणि हियग्लानि गहि सत्संगति लहितौन । सुनिसुबचन धरि नियमकरि फिरि सुधरत महिरौन ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥
जगतप्रशंसत धरमसुभाव । धरमप्रकृतिते बर्द्धितचाव ॥ सो हम सुनो चहत हेतात । जातेमिलै धर्म अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ नृपतो राजसुय मखमाह । गोधृतराष्ट्र तनय नरनाह ॥ तो बिभूति लखि अमरष पूरि । निज पुर आइमोह भरिभूरि ॥ शकुनि दुशासन कर्णसमेत । बैठि जनकढिग कुत्सितचेत ॥ निज परिताप कह्यो क्षितिरौन । सुनि धृतराष्ट्रकहे सुनोतौन ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ बन्धुबिभूति देखि अभिराम । कत गहि शोचहोत यहिछाम ॥ शील गहौजे हिबरधत राज । जो गहिबरधै भूप समाज ॥ धर्म शील जोभूप

अमेय । तीनि लोक नहिं ताहि अजेय ॥ धर्म शील मांधाता भूप । एक दिवस चरि दिनमणिरूप ॥ नृपययाति दिन तीनि अखण्ड । सात दिवस जो भाग प्रचण्ड ॥ सुरथिन साहितसकलदिशिघूमि । निज बशकीन्ही सिगरीभूमि ॥ सोआचरणगहो प्रणठानि । जो नृपबर धन आनँद दानि ॥ दुर्योधनउवाच ॥ केहि बिधि तौन शील सुखदाय । प्राप्त होत सोकहो बुझाय ॥ जौन कियेते भूमि समस्त । शीघ्रमिलति सोकहोप्रशस्त ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ अत्रपूर्ब इतिहास महान । कहे सुमुनि नारद मतिमान ॥ नारद-उवाच ॥ दोहा ॥ पूर्वदैत्य प्रहलादगुणि धारिशील शुभश्रोक । हरयोराज्यपद इन्द्रको बशकरि तीनों लोक ॥ तब सुरपति अति दीनह्वै जाइ बृहस्पतिपास । पाणिजोरिकै निजव्यथा कहतभये जिमि दास ॥ इन्द्रउवाच ॥ रोला ॥ तात कहिये कृपाकरिकै ज्ञान श्रेयद जौन । ज्ञानबार्त्ता शक्रते तब कहे गुरुमति भौन ॥ शक्र सुनिकै कहे कहहु बिशेष याते और । जीवभाषे कहैंगे सोशुक्र ज्ञानी मौर ॥ शक्रतबह्वै बिदागुरुते शुक्रके ढिगजाय । कहे कहिये तातजौन बिशेषज्ञान सुभाय ॥ शुक्रभाषे ज्ञानजौन बिशेष अनुपम रूप । तौन जानत एकजो प्रहलाद दैत्यअनूप ॥ शक्र तबहीं शुक्रसों ह्वै बिदा बनिकै बिप्र । दैत्यपति प्रहलादहो जहँ गयो तेहिथर क्षिप्र ॥ जायतासों कहतभो हमसुनोचाहततौन । ज्ञानधर्म बिशेषबार्त्ता परम श्रेयद जौन ॥ कहेतब प्रहलादइमि अवकाश मोहिं न आम । काममें त्रयलोकके आसक्त हम सब याम ॥ शक्रद्विज तबकहे जेहि क्षण लहोतुम अवकाश । कहो तेहिक्षण ज्ञानकरि आचार्य्य नीति प्रकाश ॥ दैत्यपति तब मुदित ह्वै लहि समय अनुपम ज्ञान । कहे सुरपति बिप्रसों गुणिशिष्य परम सुजान ॥ शिष्य समह्वै नम्रसबिनय समुझि तत्व बिधान । कहत भे प्रहलाद सों फिरि शक्रकरि अनुमान ॥ भये तुम त्रैलोकपति गहिपरम सुधरम जौन । सहित

कारण कहोप्रभु हमसुनो चाहत तौन ॥ बिप्रके ये बचन सुनि प्रह्लाद आनँदऐन। कहेहम द्विजचरण लखिके लहत अति-शयचैन ॥ द्विजहि क्रोधित करत नहिं हमरहत मोदत नित्त। काव्य करता बिप्रके ढिग बसत नित ममचित्त ॥ बिप्र बचन प्रभावते ऐश्वर्य्य बरधत पर्म। बिप्र पूजन प्रजापालन शील श्रेयदधर्म ॥ भाषि इमि परसन्नकैके कहतभो दैतेश। देत हम बरदानमांगो चहो जो बरवेश ॥ दैत्यपतिके बचनसुनि सोबिप्र आनँद पाय। दैत्यपतिहि प्रशंसिके इमि कह्यो प्रीति बढ़ाय ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ देहुआपनो शीलजो देनचहत बरदान। यह सुनिके शङ्कितभयो दैत्यनाथ मतिमान ॥ घरी एकलों शोच-करि कहैतथास्तु बिचारि। शक्रबिप्र तब कौबिदा गेनिजसुदिन निहारि ॥ पंकजवाटिका ॥ दैत्यनाथ करि निश्चल लोचन। लगे बिप्रको कारणशोचन ॥ ताक्षण तासु गातकरि मोचन। शील कढ़ो रुचिले जिमि रोचन॥ दोहा ॥ मूर्तिमान निजशील लखि कहत भयो दैतेश। को तुम इत प्रगटितभये जान चहत केहि देश ॥ शील कह्यो दैतेश से हम तुम शीलअमन्द। दान दये जेहि बिप्रकहँ तापहँ जातस्वछन्द ॥ चामर ॥ शक्रपास आसु ता-सुशील यों महानगो। भासमानके समान तेजता बिधानगो ॥ मर्म देखि पर्म कर्म धर्म मूर्तिमानगो। देहधारित्यों पुकारिसत्य चारदानगो ॥ दोहा ॥ तदनु वृत्ति अरु बलगये तदनु कढ़ेश्री-ताहि। देखि कह्यो दैतेश इमि शोचासिन्धु अवगाहि ॥ श्रीदेवी तुम सतिकहो रहो बिप्र वह कौन। श्रीबोली वहशक्र हो गयो शीललै जौन ॥ निशिपालिका ॥ शील शुभ भाव गहि आपु सब लोकले। देवपति ताहिकरि ऊनमुद ओकले ॥ राजि सबराज शिरताज पदरोकले। जीतियश थीतिलिय धर्मकरि मोकले ॥ दोहा ॥ तातेसुरपति आयकै मांगिलई तुवशील। बसत सकल ऐश्वर्य्यतहँ शीलबसत जेहिडील ॥ त्यजतधर्म बलवृत्ति अरु

सत्यतुम्हैं अबत्यागि । गयेशक्रपहँ जातहम शोचो निशिदिन जागि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुरपति यहिविधि शीललहि बिलसेनिज पदपाय । यहिप्रकार सबनृपनकहँ शीलहोत सुखदाय ॥ भीष्म-उवाच ॥ यहसुनि दुर्योधनकहे अबकहिये हेतात । तत्वशीलको जेहि किये बढ़त शील अवदात ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ मनोरमा ॥ बिनुद्रोह रहैं सब भूतनमें निति । सुदया अरुदान सुभाव करैं थिति ॥ उपकारक बाणि गहैं निश्चयचिति । करि पौरुष पालय राजनकी मिति ॥ दोहा ॥ धर्म नीति सहप्रजन को पालन करै सनेम । सुयश प्रभव के करम में निशिदिन रहै सप्रेम ॥ इन्हैं आदि सुकरम सकल गुणिगहुपुत्र सुजान । इन बिनु बरधत नृपतिसो नशत शरदघन मान ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रकार धृतराष्ट्र नृप कहे शीलब्याख्यान । शुद्धशीलगहि धर्म नृप बिलसो शक्र समान ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ शीलवानता जौन तौनकहे तुम पितामह । अबकहिये मतिभौन ब्याख्या आशा अमितकी ॥ आशाछुटति न नेकलासासी लपटीरहति । जौन रहति गहिटेकलासा फांसाजनमयह ॥ भीष्मउवाच ॥ दोधक ॥ पूरबको इतिहास लहो सो । नाम सुमित्र महीप रहोसो ॥ गो बनमें मृग हेतबहो सो । आशहिकेबरपास नहो सो ॥ दोहा ॥ जाय तहां मृगयूथ लखि मार्यो तीक्षण बान । तासों बेधित एकमृग भागिचलो अतिमान ॥ ताके पीछू नृप चलो चपल तुरगदौराय । चहूंओरभरमत फिरोआशा बशबौराय ॥ सुन्दरी ॥ भूपहि यों भरमाय बलीमृग । आवतभो जहँ हेसिगरे मृग ॥ बाण तजेनृपदेखि वहैमृग । भागिगये युगकोशसबैमृग ॥ दोहा ॥ बाणगिरोजब भूमिमधि तबराजा अकुलाय । मृगजितगेतित बिपिन मधिगयो मारुजकुलाय ॥ जायबिपिनमधि दूरिलोंमृगहि न देख्योभूप । देखोआश्रम ऋषिनको अतिरमणीय अनूप ॥ उतरि तुरगतेऋषिनढिग जायनौमि क्षितिपाल । यथाउचितस-

तकारलहिबैठो सुमति बिशाल॥मुनिनृपसों बूझतभये देशबंश अरुनाम। सोसुनिकै तिनमुनिनसों कह्योभूप मतिमान॥मौक्तिक॥ हम हैहयके कुलजात नरेश। ममनाम सुमित्र सुभाव सुवेश॥ मृगयारत कीन्हअरण्य प्रवेश। लहिपूरब पुण्य लहेयहदेश॥ दोहा॥ मृगअनुआशा बद्धहम भ्रमिपाये अतिखेद। ताते प्रभु बूझततुम्हें आशाबाशा भेद॥ मेरुमहोदधि गगनको यथा मिलतनाहिं अन्त। तैसेआशा प्रबलअति जानीपरति दुरन्त॥ तातेआशा सहितनृप तासुकहो वृत्तान्त। सोसुनि नृपसोंकहत भो ऋषभनाम मुनिदान्त॥ तोटक॥ हमपूरब तीरथ हेतगये। बदरीबनमें अति मोदमये॥ जगदीशजहां युगरूपलये। तप उग्रकरैं अतिउग्रभये॥ दोहा॥ नृप हम कीन्हे बासतहँ मुनितनु नाम स्वच्छन्द। मम सन्मुख आवत भयो पूरितप्रभा अमन्द॥ लखिउठि करिदण्डवतहम आसनदीन्हेंपूजि। मुनिलागो तिरपित करन तत्वबारताकूजि॥ चचला॥ आयगो तहाँतबहि बीर द्युम्न भूमिपाल। चारुबाजि पै सवार बेगजासुतेजचाल॥ सोमसूररूप देखि नौमिनौमि ह्वैरसाल। पासबैठिकै लगोदशा कहै महाकराल॥ बीरद्युम्नउवाच॥ दोहा॥ भूरिद्युम्न ममपुत्रसोलुप्त भयो बनमाहँ। आशाबश खोजतफिरत ताहि तरुनकी छाहँ॥ यहसुनिकै अधशीशकरि तनुमुनि रहोचुपाय। तबनृपतापस-रूपगाहिबैठत भयोसचाय॥ संयुता॥ नृपदेखिकै ऋषियोंकह्यो। हमखेद आशहिते लह्यो॥ यहहोतिहै कृशक्योंचह्यो। यहिशो-भ्रमोमनहै नह्यो॥ ऋषिरुवाच॥ दोहा॥ नहिं आशासम अवरणहि आशात्यागसमान।आशाबश जीवतपुरुष त्यागेचहत न आन॥ जो अलभ्य अरुजोन गतजोन अग्राह्य बिधान। जहँ निरमित अपमान तहँआशहि तजत सुजान॥ आशायुत अरथीनिरखि आशापूरितजोन।कैलाशीकाशीअधिपसम सुखराशीतौन॥पहि-ले आशादेइ फिरिकरै निराशाजोन।बारिबताशा होताति मि बात

बलाशातौन ॥ तारक ॥ कृशगात मुनीश्वरकी सुनिबातें । क्षिति-
पाल लहे अति आनँदपातें ॥ तेहि आशहि दूरिदियेकरितातें ।
बाढ़िशोक नजीक लगेनहिं जाते ॥ दोहा ॥ करि दण्डवत प्रणाम
फिरि कहतभयो करजोरि । दूरिभई तो बचन सुनि जोकुत्सित
मतिमोरि ॥ तब मुनितप परभावते भूरिद्युम्न सुततासु । करि
आकर्षण भूपतिहि देतभये तहँ आसु ॥ पुत्रपाय नृप मुदितकै
गयो आपनेधाम । भूपति हमइमि तहँसुने आशाकथा अछाम ॥
भीष्मउवाच ॥ नृप सुमित्र मुनिऋषभके सुनिकै बचन अमन्द ।
आशहि कृशकरि निजभवन आवतभयो सुछन्द ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥
सोरठा ॥ धर्मसिन्धुको स्रोत तोसुबचन सुनि अमृतसम । मोमन
तृप्त न होत तातेकहिये और कछु ॥ भीष्मउवाच ॥ स्वागता ॥ पूर्व
एक इतिहास लहेहैं । गौतमेश मुनि जौन चहेहैं ॥ सो यमेश
अनुमानि कहेहैं । तौन साधु सनमानि गहेहैं ॥ ॥ दोहा ॥ पारि-
यात्र गिरि बिशदपहँ गौतम मुनिबरजाय । सुबरिस साठिह-
जार तहँ तपकीन्हे मनलाय ॥ धर्म्मराज आयेतहां मुनिलखि
बिधिवत पूजि । प्रश्न किये अनुमान करि कुशल बारता
कूजि ॥ गौतमउवाच ॥ किमिचरि मातापितासों अऋण होत मति
मान । कौनकर्म करिलहतहैं उत्तमलोक महान ॥ धर्मराजउवाच ॥
मौक्तिकदाम ॥ करैतप पूरसुशौच निबाहि । धरैव्रत दीननको गण
पाहि ॥ सुधर्म बढ़ाय कहैसतिचाहि । करैमखदान कहै पटुता-
हि ॥ सोरठा ॥ सोपटु दुर्लभलोक लहतबात यह अमिटहै ।
मातुपितहि सबओक होतप्रशंसित करिअऋण । युधिष्ठिरउवाच ॥
जोनृप आपद पाय होतक्षीणधन तौननृप । करिकैकौन उपाय
लहैराज्यधन धर्म्मसह ॥ भीष्मउवाच ॥ सुखी ॥ भूपतिके बूझेसुकठि-
ननीतें । जोपटुज्ञानी कहतनचीतें ॥ आपदमेंजो सुधरमथीतें ।
नाहककीन्हे अधरमकीतें ॥ दोहा ॥ आपदलहि नृपप्रजन को
करषैधन समुदाय । जिमिपावै तिमिलेय गुणिसोई सुधरमन्याय ॥

जो परजनपर दयाकरि बसै बिपिनमें जाय। तौंवहभूपतिमृतकभो खोइबंशब्यवसाय॥ न्यायप्रबल अरि लेइगो धन हरि दुखदैभूरि। तातेआपुहि कर्षिधन अचल रहैबलपूरि॥ सधन प्रजानाहिं नृपतिको करत सुरक्षण जाय। सधनभूपरहि प्रजन को रक्षण करत बनाय॥ ताते धनलै प्रजनसों आपद मेटब नीति। धनते बर्द्धत धर्म अरु धनते बर्द्धतजीति॥ सार्ंगरूपक॥ ज्यों यज्ञमें छाग आदीक जंतून। को घात कीन्हेनहीं होतश्री ऊन॥ कीन्हे बिना होतहै यज्ञसो शून। कीन्हेलसै यज्ञकोअर्थ कै दून॥ दोहा॥ तिमिधनलै थिरि पालिफिरि शोभित होत सुभेश। आपद बशकै राजताजि जीवत मृतक नरेश॥ तोमर॥ यहसमुझि बर्द्धतकोष। नृपपरमसुधरमपोष॥ लहिंनिधनबर्द्धत दोस। नित बढ़त अति अपसोस॥ दोहा॥ यज्ञदान करिसमय लहिमेटै ताकोपाप। लघु करलै फिरि प्रजनके मनकोमेटै ताप॥ मदिंखरी॥ नित सधन रहिबो नृपनकी अतिनीति हम सब थल सुने। इमि कहतभे मतिमहत निरखेशास्त्र लौकिक श्रुतिगुने॥ सियरामचाहत होतवहकै जौन बिधिगुण लखिबुने। पर भूप हंसहि कुशलनिजनृपनीति निधिमुकताचुने॥ दोहा॥ रामकृष्ण की कृपातेतुम सर्बज्ञसधर्म। प्रजनपालिहौ धर्मयुतसुयशचालिहौ पर्म॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणास्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेनगोपीनाथेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिराजधर्मे अष्टमोऽध्यायस्समाप्तः ८॥

शान्तिपर्ब राजधर्म समाप्तः।

महाभारतदर्पणे ॥

शान्तिपर्वेआपदधर्मदर्पणः ॥

दोहा ॥ नमस्कार नारायणहिं करिनरोत्तमहि नौमि । बन्दिगिरा ब्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥ सीतारामसुस्वामिप्रभु न्या- मक अन्तर्यामि । सुजन अकामिहि सर्बप्रद सन्तत तिनहिं नमामि ॥ जापद तापददै अतन थापद सुजन सुकर्म । आपद दरतापद सुमिरि बरणत आपदधर्म ॥ सूतउवाच ॥ राजधर्मइति हाससुनि जनमेजय क्षितिपाल । बैशम्पायनसों कहेपूरितप्रीति बिशाल ॥ जनमेजयउवाच ॥ राजधर्मसुनि धर्मनृप कियेप्रश्नफिरि कौन । उत्तरदीन्हे भीष्मजो मुनिअब कहियेतौन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ करिअराज सबराजथल राजसभा रचिपर्म । राजधर्म सुनिराज मणि बूझेआपदधर्म ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कबित्त ॥ परम प्रवीण पर सिद्ध पितामहसुनो तुमसोसुबाणीको कहैया कौनजगमें । स्मृति धृतिमेधानित बरधति रावरेकी सरधाति मोमति सुनतिज्योंज्यों अगमें ॥ तातेऔर बूझतनसूझत जोऔरैनाथ साथदुखशंपदा लिखीहैं करपगमें । तापद दुसह दुखआपद लहतजेते स्वपद लहतफेरिलागि कैसेमगमें ॥ दोहा ॥ क्षीणसैन धनहीनहितमित्र प्रवीण न जासु । मंत्र जासु परसिद्ध ते लहत आपदा आसु ॥ लोभी जासु अमात्य अरु शत्रुजासु बलबान । बिनु विचार कारजकिये लहत आपदा न्यान ॥ दीर्घसूत्रता गहतजो भीत.

वान नृप जौन । लहतआपदा फिरि लहत ज्वापद् किमि चरि तौन ॥ भीष्मउबाच ॥ रोला ॥ कहे अवगुण जौन तुमतेहि गहे बिन शत भूप । फेरि सम्पद लहत जेहि सो सुनो यत्न अनूप ॥ धर्म चिन्तनकरै शुचिरहि इष्टदेवहि ध्याय । जीतिबेकी बिधि बिचारै नीति मंत्र दृढ़ाय ॥ रहै नित चैतन्य बदन प्रसन्नधीरज धारि । तोषगहि नहिं यतन त्यागै सहमि हियसों हारि ॥ आत्मरक्षण करै खरचै धनहिं बिधि अनुमानि । रहै सञ्चय किये धन को समय भावी जानि ॥ शत्रुदलमें सन्धिलावै दान भेद उपाय । द्रव्य खरचै तजै आलस भीत अवसरपाय ॥ द्रव्य खरचै लहै महि तौ देइ आनँद झूमि । द्रव्यसंग्रहकरै फिरि नृपरहैजो गहि भूमि ॥ द्रव्यखरचै रहै जौलों आपदाको पार । आपु चढ़िनहिं लरब तौलों भूपतिहि अधिकार ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ हिये पीड़ित बाह्यकोपित भयो भूपति जौन । आपदा सहि सकत नहिं सो करै कारजकौन ॥ भीष्मउबाच ॥ भेद दान उपाय कीन्हे सधै नहिं जब साम । भूपतबकै प्रबल प्रकृतीलरै जययश काम ॥ शुद्ध सेवक सुभट थोरेहु लहत भूपति जीति । शूरता गहि लरतजो लहि बिजय बिधिकी नीति ॥ शत्रु बधकरि भोगवे महि परम जययश पाय । पाय बधके बसब दिव मधि उभय बिधि सुख दाय ॥ लरैयह सिद्धान्त करिसो अवशि पावैजीति । मरैउत्तम लोक ताकहँ परमपावननीति ॥ देखि बिक्रमअधिक ताकोशत्रु प्रबलौ शोचि । देत ताकहँ भागमहिमें नीति सामहि लोचि ॥ प्रबलअरिगुणि मानिसामहिबसै नृपलैभाग । गहैनाहिंबिश्वास ताकोरहैजैसे काग ॥ कोषमंत्री सुभट सुधरम रहैसरधत यत्न । समयलहि करि मंत्रचढ़ि लरिलेइ उरबीरत्न ॥ नीतित्यागेबिना आवति आपदा नहिं भूप । नीति सेवनाकिये बिनशतआपदा को रूप ॥ दोहा ॥ नृपस्वराज परराजते कराषिबढ़ावैकोष । कोष परमनृपधर्महै निर्द्धनताअतिदोष ॥ मूलराज्यको कोषहैराजहि

बर्द्धनहार। बर्द्धन पालन कोषकर नृपति नीति अधिकार॥ होइ न निस्पृह नहिं गहै अतिशय लालच रूप। मध्यम पद गहिकै करै संग्रह पालन भूप॥ होतअबलकहँ शोचनहिंशोच बिनाबलनाहिं। राज्यहोहिनाहिं बलबिना राज्यबिना श्रीकाहिं॥ गोपति नृपके पातकहि श्रीकरिपूरणचाव। तियतनकहँ गोपन करत बस्त्रयथातेहिभाव॥ उच्चवृत्तितेपतनजो सोहैमरणसमान। तातेधनदल मित्रहित बरधैभूपसुजान॥ रहैकोषदलबृद्धि को यत्न करतक्षितिपाल। चोरशत्रुनहिं क्षणलहै यथारहैसबकाल॥ करतरहै उपयोग नृपहै पौरुष उतयोग। कैमृगवत बनमधिबसै त्यागि सृष्टि संयोग॥ कबित्त॥ महाअरि प्रबलसों लागैनउपाय जौ तो संगतस्करन लैकै तस्करताकरै। दिनबसै बिपिनमें क्षण नयकत्ररहै निशि फिरि चारोंओर मारिसुधनैहरै॥ यहनहिं सधै तौपठायचोर ग्रामन में सुधनचोराय मांगिअरजन कैधरै। लक्षनहारि जोरिलक्षनसयन चारिपक्षन सुधारि ह्वैप्रतक्ष अरिसों लरै॥ दोहा॥ तीनिकर्म तस्करनहूं बर्जितहैं बिख्यात। जियधर्षण सर्बसहरण निद्रित जनकोघात॥ ऐसेहु पैनृप द्विजनको वित्तन हरैकदापि। रहै धर्मपालन करत बिकलनहोइ उतापि॥ निरखै धर्मअधर्मके फलको जोपरिपाक। बरणआशरम धर्म को पालन परखैपाक॥ सुधरमतै बल बढ़तहै बलते सबवश होत। दल अमात्यधन तेजश्री येबल करतउदोत॥ बलमधि सोहत धर्म जिमिजंगम धरणीधूम। तथाअनुगमत धर्म बल जैसे मारुत धूम॥ हैजनमहि द्रुमलता समबल सुधर्म परधान। दुराचाररत क्षीणबल लहतन कबहूंत्रान॥ सुधरम बशबलवानके बहुपरमाण अशुण्य। भोगीकेबश सुखयथा दानीकेबश पुण्य॥ बलवानहिं सबसाध्यहै निबलहि कछूनसाध्य। बुद्धिमान बलवानसों करत असाध्यहि साध्य॥ दुराचार रततेलहत दुखहित अनहितसर्ब। जिमिपुरजन बनचरन बहुवृकदुखदेत अखर्ब॥सदाचाररत पुरुष

को सुधरम दूनो लोक।सदाचारते हीनतेहि सबथरपूरितशोक ॥ नशतपाप आचार्यके सेवनते ध्रुवराहु । नशेपाप आपद नशत यहश्रुति सम्मत लेहु ॥ बरण आशरम धर्मके पाले पापनहोत। जोबिचारि सुकरमकरै बरणआशरम सोत ॥ सहनशीलता मुख्यमें दुखमें निस्पृह बानि। रामनाम सुमिरतरहै लहै नकबहूं हानि ॥ सोरठा॥अत्रपूर्वइतिहास कहतसुनोसोभूपमणि। जिमितस्करमतिरास दुहूंओर आनँदलह्यो ॥ जयकरी ॥ कामी क्षत्रीसुत अभिलाषि । बहुदिनरमोनिशादिन राषि॥तासोंभयो पुत्रअभिराम । कियोतासु कापटय सुनाम ॥ बरधित ह्वैकापटय प्रबीन । कियोउभय कुलकोगुणपीन ॥ बिपिनबास करिमृगयासक्त। रहै क्षुधित पोषण अनुरक्त ॥ बसै बिपिनमें तापस जौन । मृगपल तिन्हैंदेय निततौन॥सँगलै तस्करज्ञाति समूह।तस्कर करमकरै करिऊह ॥ निशिमें फिरिग्रामन मनमान। दिनमेंपाय पथिकधन मान ॥ अनधनकरषै सहितबिचार । पोषैज्ञाति स्वजन परिवार॥ पालै बिप्रनकोगणभूरि । देयबसन भोजन मुदपूरि ॥ गहि ताकोआश्रय तहँजाय । चहुंदिशि बसे बिप्रसमुदाय ॥ सोलहि भोजन बसन स्वछन्दि । ताहि देहिं आशिष आनन्दि ॥ इमि रहिकैकापटय सुचीति । रहैतस्करन शीक्षत नीति ॥ करोसुजाति कर्मनाहिंदोष । मतकरियो हिंसागतिपोष॥मतसर्बस हरियोहित हेति । सबथर द्विजहि बरायहु चेति ॥ बलते परतिय धर्षण काज । मति करियो लहि समय समाज ॥ मतहरियो परअन्न कदापि । बिप्रभक्ति हितराखेहु थापि ॥ दोहा ॥ सुपत निरायुध भगतड[illegible]आरतकहत सभर्म । मृगहि छोंड़ि पशुतिय बधब जानहु हिंसापर्म ॥ देवपितर अर्चाकरब द्विजपोषब अतिधर्म। मोक्षद जानेहु ब्राह्मणहिशासन नाशककर्म॥ गुरुशिक्षाआनँद भरणताहित निर्मितदण्ड । शिक्षहिबाधत तासुहै दण्ड बधबहै चण्ड ॥ यहमतगाहिकै करतजे तस्कर कर्मअडोल।लहतनपाप

न सहत दुख ते गतिलहत अतोल ॥ भीष्मउवाच ॥ लखिकरतब कापट्यको मानिसिखापन मर्म। तिमिचरिते सबलहतभे परम सिद्धितेहि धर्म ॥ यहचरित्र कापट्यको नित सुधि करिहैं जौन। नहिं अरण्य आरण्यकन ते भयलहिहैं तौन ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिआपदधर्मेकापट्यचरित्रोनामप्रथमोऽध्यायः १॥

भीष्मउवाच॥सोरठा॥ सुनोभूमिभरतार यहगाथापूर्वनकह्यो। कहततौन उपचार जिमि राजा संचत सुधन ॥ दोहा ॥ प्रजा सर्व क्षत्रियनके नहिंऔरनकेनेक। बलमखहित करषै सुधन भूपति सहितबिबेक ॥ देवपितृ मखयाचकन नहिं अरचत धनजोरि। तेहिधनते न अनर्थकछु और अधिक सबथोरि ॥ जोरिसुधन जेसुधरमेंनहिं खरचत मतिमंद। हरैतासुधन भूमिपति रहनन देइ सुछंद ॥ हरैअसाधुनके धनहिंगुणि साधुनकहँदेइ। परम धर्मविद भूपवह दुहुंदिशिआनँदलेइ ॥ प्रगटतपाप अधर्मते अकस्मात तिमिभूप। यथाभूमिते होतहै प्रगटधूरिको रूप ॥ बढ़त पुण्य जनधरमते सुनोभूप तिहिभाव। प्रगटिबीजतेवृक्ष जिमि बरधत शाखाछाव ॥ कबित्त ॥ होततीनि बिधि के पुरुष सुनोक्षितिपाल दीर्घदरशी औप्राप्तकालज्ञ मतिमान। आनँद लहत तेन आपद लहत नेक लखत बिचारि जैसो तैसो करै सबिधान ॥ होतहै तृतीय दीर्घसूत्रीतौन मतिमंद आपदलहत न सकत आपनो कै त्रान। जैसे सरिता में यहितीनि बिधिके हैं मीनपीनहीन दशातेलहे सो सुनोउपख्यान ॥ गुरुतोमर ॥ बहु मीन सरिता सोतमें। परिरहे पूरित ओतमें ॥ कछुगारतामधि में रह्यो। मगमेलमें कृशता गह्यो ॥ सो दीर्घ दरशी देखिकै। यह सूखिहै अवरेखि कै ॥ पाठीन सबसों यों कह्यो। इत बास योणन में चह्यो ॥ मगसूखिहै दिनचारिमें। केहिभांति चलिहौ धारमें ॥ इतक्षीण जल लखि आइकै। बध करिहि धीवर पाइ कै ॥ अबकह्यो मेरोमानिकै। काढ़िचलो जीवन जानिकै ॥ है

उचित करिबो शोचिके । मतिमानकी गति रोचिके ॥ दोहा ॥ सुनत प्राप्तकालज्ञ इमिकहतभयो समुझाय । प्राप्तकाललहिके करब जो कछु उचितउपाय ॥ कह्यो दीर्घसूत्री वृथाशोच करत करि गौर । होनी सबथर होतिहै कौन फिरैबहुठौर ॥ गमनदीर्घ दरशी कियो सुनि तिनके ये बैन । सरिता पूरि प्रबाहपरिपायो पूरण चैन ॥ बसुकला दिन पांचसात । जबभये जात ॥ रबिकिरण मूखि । मग गयोसूखि ॥ सो लखि निषाद । लहि सुख प्रमाद ॥ तहँजालडारि । करष्यो सुधारि ॥ दोहा ॥ तौनप्राप्त कालज्ञलखि करत भयोअनुमान।जालकोरगहि दशनते रहिगोबझोसमान॥ जालहि ऐंचि समेटि जब धोवन लगो निषाद । तबहिं प्राप्त कालज्ञतजि जाल लह्यो अहलाद ॥ जौन दीर्घसूत्रीरह्यो मरो तौन बझिजाय । तातेआगम शोचिके करिबो उचितउपाय ॥ देशकाल परखतरहै निशि दिन बारहमास । जानिपरेजामें कुशल सो गति करै प्रकास ॥ चारों फलके अर्थ को करत रहै अनुमान । सिद्ध होहिं चारों यथा तिमि बिचरै मतिमान ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ सोरठा ॥ भीषमके ये बैन सुनि बोलतभे धर्मनृप । को जगमें मतिऐन तुम समान हे पितामह ॥ जयकरी ॥ अब यह बूझत समय बिचारि । उत्तर तासु कहो निरधारि ॥ एक भूपकहँ अवसरपाय । घेरत बहुतशत्रु नृपआय ॥ एक आपु अरि जुरैं अनेक । तौ किमि थिरैपालि प्रणटेक ॥ जौन समय अति बिषम बिभात । असती मित्रशत्रुह्वै जात ॥ शत्रुमित्र के अन्तरमाहँ । करैकौनचेष्टा नरनाहँ ॥ बिग्रह कासोंकरैअभीति । कासों करै सन्धि गुणिनीति ॥ नृपबलवानोंह्वै असहाय । किमि जीतै अरिदलसमुदाय ॥ तासु उपाय कहो हे तात । नहिं तुम समवक्ता अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ तातकहे तुमप्रश्नयह तेहि आपदको धर्म । कहत सुनो जो सुखदअति करिबे लायक कर्म ॥ कबहुं अमित्रौ मित्रहै मित्रन अरिकरिदेत । सो बिचार

करि देशपति मानिकै रहै अचेत ॥ निज मित्रन हितलेइ करि करै अमित्रहि दूरि । निजपाक्षिन पोषतरहै दानमान दै भूरि ॥ सन्धि लगावैअरिनमें करिकै भेदउपाय । निजअंगिनमें सन्धि पर लगत न पावैआय ॥ करैशत्रुत मित्रता मित्रहि अरिकरि देत । अवशि लहतसो आपदा यह आपदके हेत ॥ करैअमित्रहि मित्रनृप अवसरपरे बिचारि । बीतिगये अवसर अरिहि देत युक्तिसों टारि ॥ रोला ॥ प्रबल अरिको दापलहि युगशत्रु मिलिकै मित्र । करत बुधिबेकोयुगुति निष्कपट कै निश्चित्र ॥ मिटे अरिको दाप तिनकोउचित नहिं विश्वास । सुनो कहियतु भूमिपति इतपूर्वको इतिहास ॥ मूषअरु मार्जारको संबादबन को जौन । होतभो बटवृक्षतर अबकहत सुनियेतौन ॥ रहो कानन बीचकहुं बटवृक्ष अतिकमनीय । चहूंदिशिते लतनछाजित निबिड़ अतिरमणीय ॥ बिहँगअगणित भांतिके तहँरमत बोलतबैन । मृगा आवत तासुतरते लहत अतिशयचैन ॥ पलितनामक मूषशतमुख बिवरकरि तरतासु । भयो निबसत अति बिचक्षण चपल लक्षण तासु ॥ बसत हो बटवृक्षपै मार्ज्जार लोमशनाम । गहिअनुच्छिन खातपाक्षिन कृतअदक्षिण नाम ॥ जातजाल पसारिब्याधा तहांसांझहिजाय । रातिनिबसत गेहमें फिर लखत भोरहिआय ॥ रहतबाझिजे मृगातामें तिन्हैं गाहिले जात । रहो अमरष करम जाको शरमनहिं सरसात ॥ एकादिन मार्जार लोमश बझो तामधिपापि । परोब्याकुलकल्पनो करि मरण अपनो थापि ॥ बझोलखि अखुभुकहि अखु कढ़ि लगोचरन निशंक । परेआपद प्रबल खलपै होत मोदित रंक ॥ जालबन्धन दण्डपै चढ़िलगो आमिष खान । प्रबल शत्रुहि बझो लखिकै हिये अति हरषान ॥ आइकै बटशाख पै तेहि समय ढूक उलूक । भरत भयमनु धरत निरखत करत भीषम कूक ॥ आइ उतमग रोंकि बैठो नकुलगाहिबो चाहि ॥

ताहिक्षण हियदाहि अखुरहि गयोयहि वहिचाहि ॥ उभयशत्रुन देखि कछुक्षण शोकसों रहिग्रस्त । भयोमनमें गुणत कैसे होइ आपद्अस्त ॥ रहोइत तोखातकौशिक नकुलमहि मगजात । जालमधि जो दुरौंतो मार्जार खाइअघात ॥ दोहा ॥ सबप्रकार नहिंबाचिबे कीकछुदशा देखाइ । ऐसेआपदमें कियो चहियेबुधि ब्यवसाइ ॥ जीवरहेलों जियबको करिबो उचितउपाय । बुद्धिमानतरि आपदा लहतपार सुखदाय ॥ तीनिशत्रु ममतीनि दिशि नहिंबचिबे कीराह । हैउपाय इतएकअब साधक सीतानाह ॥ हैंस्वछन्द येदोय अरि तीजो जो मार्जार । हैतापहँ आपद परो प्राणघात उपचार ॥ हैयहदोउनते प्रबल याढिगमोकहँ जोहि । आइ सकत ममनिकटनहिं नकुलउलूको कोहि ॥ बन्धनकाटि छोड़ाइबेकी बिधियाहिसुनाय । करौंमइत्री याहिसों तौसंशयमिटि जाय ॥ प्रकृति बिरोधी उभयजो होतआपदाधीन । मिलेलखत निजभलोतो करत बिरोधहिक्षीन ॥ नीतिज्ञानकी नीति यह है बिलारनीतिज्ञ । अबडर तजियाके निकटचलिबोउचितअदज्ञ॥ इतैरहत येखातहैं औआपो बचिजात । जोयह मूरखताकरिहि तौबधिजाइहि प्रात ॥ हैहृदयहि मार्जारकहँ देशकालकहँज्ञान। ममभक्षण नहिंकरिहि यह समुझि आपनोत्रान ॥ पण्डितअरि सोंश्रेष्ठअति नहिंहित मूरुखजोन । नीतिसमुझि पण्डितकरत शठमन आवततौन ॥ सोरठा ॥ इबिधि शोचिवहमूष जायनिकट मार्जारिके । बोलोबचन अदूष सीतारामहि सुमिरिकै ॥ चौपाई ॥ कछूदूरिरहि मूषप्रवीना । कहतभयो सुबचन अवलीना ॥ हेमार्जारराज मतिमाना । तुमकालज्ञ नीतिबिदजाना ॥ हमकछुकहत तौंनहित जानहु । कहतकाकु इमिमति अनुमानहु ॥ हैममतुव जीवन बिधिजामैं । सोउपाय अब चहतकहामैं ॥ बाझिपरेन सकत निछुटाई । भोरहिबधी बधिकदुखदाई ॥ जोउपायममतुव बीचेबेकी । सोहम जानतसुख साचिबेकी ॥ जो तुममोहिं बाधो

मतिमोहीं। तोहम बचबबचाउबतोहीं॥ मम बिलऔर नकुल रिसरातो। खानचहत ह्वै आतुरतातो॥ तरुपर बैठि उलूक भुखानो। मोहिंभोजन रुखराखि रुखानो॥ इनतेकरोमोर तुम रक्षण। येशठमोहिं न पावहिं भक्षण॥ इनके भयममति भइ भोरी। करिनहिं सकत युगुति जतिजोरी॥ जोतुम करहुमइत्री मोसों। होइअभयइनसों अरुतोसों॥ शत्रुनबंचिबचैहौंबचिहौं। सानँद प्रात नचैहौं नचिहौं॥ हौतुम परम प्रवीण बिचक्षण। जानतदेशकाल कोलक्षण॥ अबमम मरेमरततुमभाई। तुममम हमतुम सखासहाई॥ बिनापरस्पर रक्षणकीन्हे। मरतउभयजन शठतालीन्हे॥ दोहा॥ हित रक्षणकरि परस्पर जीयबयुक्तिनआ-न। तरब आपदा आपगा नाविकनाव समान॥ पलित मूषके बचनये सुनिलोमश मार्जार। लहिजीवन आशामुदित कह्यो उचितव्यवहार॥ बिडालउबाच॥ चौपाई॥ हेमतिमान साधुताभूषि-त। कीन्हे जातिबिरोध अदूषित॥ तजिबिरोधमम जीवनईछे। नीतिबिधान गुरूसम शीछे॥ लहिबर बुद्धिबिचार तुम्हारे। हम प्रसन्नहिय आनँद धारे॥ नकुलहरित नामक बलहीना। चन्द्रक नामउलूकमलीना॥ येडारभगैंन तुमढिगजूटैं। जोहममित्रजाल सोंछूटैं॥ तुममम सखासहायकभाई। करोशीघ्र करतबसुखदाई॥ अबभयत्यागि लागुममधोरे। तुमसमद्वितिय सुहितनहिंमोरे॥ त्यागिनकुल कौशिकके भीतहि। ह्वैनिश्चिंत छोड़ावहुमीतहि॥ मार्जारकेबचन सोहाये। सुनिमूषक बोलोमनभाये॥ सत्यमित्र मोहिं करुप्रण करिकै। अभय दानदे दृढ़मति धरिकै॥ तौ तो निकट आइह्वै निरभय। काटब जाल रुदिहि अरिनिरदय॥ सुणि मूषकके बचन बिधाना। बोलतभयो बिलार सयाना॥ शीघ्रआउ हेसखा सयाना। प्राणदानि प्रि[illegible]ण समाना॥ को शठप्राणदायकहि पीड़िहि। दैवहि [illegible]रन लोकहि ब्रीड़िहि॥ हमतुव बुद्धिप्रसाद नभीव[illegible] अबआपुहि जाने जगजीवत॥

संकटते छुटितोहित चाहब । जीवन प्रभृति सुप्रीति निबाहब ॥
दोहा ॥ उपकारीकेसरिस नहिं प्रत्युपकारी जौन । बिनकारण उपकारजो करतश्रेष्ठ अतितौन ॥ तजिसंशय आयो निकट करो मित्रउपकार । हमसुमित्र सेइब तुम्हैं पालि प्रीति व्यवहार ॥ सुनिबिलारके वचनये देशकाल अनुमानि । ह्वै निशंक मूषक गयो तासुपास हितजानि ॥ बरबीर ॥ तहँमूषजाय । संशयबिहाय ॥ सुतसम सचाय । पितुसरिस भाय ॥ बसितासु गोद । फिरि सकल कोद ॥ कीन्होबिधान । बनिप्राणदान ॥ यहमिलनिदेखि । अचरज परेखि ॥ अवसर बिशेखि । हियहारि रेखि ॥ रहिघरिकमूक । फिरि करतकूक ॥ गोडाड़ि उलूक । भरि हिये दूख ॥ नहिं लहबजानि । हियआनि ग्लानि ॥ दोहा ॥ जानि तिन्हैं मतिमान अति परम देशकालज्ञ । आशफांस फँसिथिरि रह्यो नकुललालचीअज्ञ ॥ पलित लालितमुख लोमशहि कियो हालित सुखसिन्धु । खलित पंगुकहँ चकितजिमि चाहिचढ़ायो बिन्धु ॥ बीरबान ॥ देइमित्रआनँद ॥ मूषकमानँद ॥ लाग्योकाटन । बन्धन ठाटन ॥ हरये काटत । लघुगतिठाटत ॥ इतउतजोवत । फिरिपरि सोवत ॥ लोमश जालस । ताकहँ शालस ॥ लखिके दोचित । बोलत शोचित ॥ मूषक आरज । करुतुर कारज ॥ मोहिं भितावत । राति बितावत ॥ दोहा ॥ दुखदजाल कहँशीघ्र अब काटु मित्र मतिमान । भोरहोन चाहतबधिक आयकरिहि गतप्रान ॥ लोमशके ये बचनसुनि बोलो पलित सुजान । तात देशकालज्ञ हममति भयगहो महान ॥ चौपाई ॥ तुरताकरणकहो मतिआरज । होत भलो नहिं तुरता कारज ॥ बिनाकाज लहि कारज कीन्हे । होतअनर्थ अहितबिनु चीन्हे ॥ समयलहे बिनु काटे बन्धन । तुम्हते मोहिंहोय भय धन्धन ॥ तातेशुभदसमय हमपरखत । थिरता लखितुम नाहकधरखत ॥ जबहमब्याधहि देखब आवत । तब बन्धन काटब भय पावत ॥ तेहिलखि मुक्त

भूरिभयपैहौ । लैनिज जीवतुरित कढ़िजैहौ ॥ दौरि भागिबो तजिममधरिबो । तुमकहँ जानिपरी निजमरिबो ॥ निजरक्षण तजिकारज दूसर । करतदेखिहौ शिरपरमूसर ॥ जबतुम भीम जालते कढ़िहौ । आतुरभागि वृक्षपरचढ़िहौ ॥ तिमिलखिताहि नकुलभय पाइहि । अरुतुव कढ़ब देखिभगिजाइहि ॥ तबहम तुरितजाब बिलमाहीं । सुचितरहौ कछुसंशय नाहीं ॥ इबिधि मूषकीबाणी सुनिकै । लोमशकहतभयो इमिगुनिकै ॥ तातकहे तुम कारज जैसो । नहिं सतमित्र करतहैतैसो ॥ मतिहमते निज कहँ भयमानो । निजसम गुणो न असतीजानो ॥ ममतुवभलो होइ जेहिकीन्हे । सोअबकरो शीघ्रता लीन्हे ॥ ममउपकार अ-वशिजो करिबो । तौ मतिगहौ गहरता धरिबो ॥ दोहा ॥ जौन अवशि करतब्यहै तौनशीघ्र करतब्य । गहरपियत करतब्यके रसहिबत्स जिमि गब्य ॥ जिमि जिमि बीतति रजनितिमि मम जिय सूखतजात । तातेदूषतयहि दशागहत न नीकीबात ॥ हमकीन्हे अज्ञानते जौनपूर्व अपराध । सुधिमतिकीजैतौन अब करि सुमित्रतासाध ॥ बाम ॥ लोमशजौन । बोलोतौन ॥ सुनिवह मूष । भाष्योरूष ॥ दोहा ॥ सुनोमित्र परसिद्धयह अरथी लहत न दोष । निजरक्षण बिधिसाधि सब करतऔरकोपोष ॥ आपुहि रक्षत रहत नहिं शत्रुहि करिकै मित्र । सो अपथ्यभोगी सरिस नाशलहत नहिं चित्र ॥ काहूको कोउमित्र नहिं सेवक सखा न स्वामि । सबअधीनहैं अर्थके अर्थहि सदानमामि ॥ अर्थ अर्थ सों बर्द्धत यथा पीलसों पील । बिनाअर्थ साधत अरथसो नर दैवी शील ॥ अर्थीकारज सिद्धिलों करतरहत मनुहारि । काज सधेकरतहि गुणत सहजयथा जनचारि ॥ सिद्धिहोइ निजकाज तब कारजकरी अशेष । कारजआरज सुबुधिको साधब उचित बिशेष ॥ तातेचिन्ता करहुमति तबकाटब यहजाल । हम कहँ तुमकहँ बिघ्ननाहिं प्रापिहि जवनेकाल ॥ लीलावती ॥ लोमशपलित

कहतते यहिबिधि तौलगिभयो भोरजू सुनिये । रजनीभई व्यतीत शीततजिडरो बिलार जानबध जुनिये ॥ परिघनाम चांडालो तेहिक्षण लीन्हेंसंगश्वान अरुशुनिये । आयगयो सन्मुख रुखबदले अति दुर्मुख दुखदायक दुनिये ॥ दोहा ॥ देखिताहि लोमश डरपि बोलो आरतबैन । तात आयपहुंचो बधिकमोमन गयो अचैन ॥ देखिताहि भागो नकुल तबतेहि निकटनिहारि । जालग्रन्थि काटतभयो मूषक समयबिचारि ॥ जालकटत सट पटनिकसि भागोझपटि बिलार । मूषजातभो बिवरमधि डार चढ़ो मार्जार ॥ काव्य ॥ देखिकढ़ि निज जाल घटिकलौं अति पछितानो । व्याधा जालसमेटि गयोघर बिस्मयसानो ॥ महा भीतितें निछुटि बिलार हियेहरषानो । समुझिमूषको संगसमो गुणिगुणि पछितानो ॥ कुण्डलिया ॥ आयोसन्मुख मूषके तबबिलार अनुमानि । प्रीतिभरे शब्दनलगो कहनचातुरी आनि ॥ कहनचातुरी आनि लगो बहुबिधिकी बातें । बातेंकहत बनाय कहत निजहितकी घातें ॥ घातेंकरिबो जानि जाल जोरत मन भायो । मनभायो हितसरिस साधुबनि सन्मुख आयो ॥ भाई मूषक आवअब मिलिये अंकलगाय । हमतुम बाचेअरिन सों तुम सुबुद्धि व्यवसाय ॥ तुम सुबुद्धिव्यवसाय बचेअब आनँद कीजे । कीजे बिशद बिहार चारतारणको लीजे ॥ लीजे अब गतितौन जौनसाधुनकी गाई । गाईममगतिजौन तौन हमत्यागे भाई ॥ भाईमूष निशंकअब रमुकुंजनमेंपैठि । सुखकरिबेकी समय कत रहे बिवरमें बैठि ॥ बैठि बिवरमेंरहो कहा कढ़िबाहर आवो । हमतुमसंगहिरमैं अवशिसुकरम फलपावो ॥ पावोअति ऐश्वर्य्य डरैंतुव सबैअदाई । सबैअदाईदहैं रहैंसँग सिगरेभाई ॥ भोरीतजि विश्वासकरि जोरिमइत्री पर्म । जीवनदानकराय्र करि अब कत आनत भर्म ॥ अब कतआनत भर्म मर्मका हिय में आनै । आनैअधम बिलार सरिसका मोंहुहिजानै ॥ जानैनिशि

रहिसंग कछूअसती मतिमोरी । मोरीको मतितोरि भई जाते
अति भोरी॥ सोरठा ॥ पिता पुत्र हितमित्र होममबिस्वेबसि तुम ।
गहेकौन गतिचित्र मित्र न जाते मिलत कढ़ि ॥ सुनिबिलारके
बैन श्रुतिचैनद भैनद दुखद । कह्योमूष मतिऐन हम तुम मित्र
न कबहुँके ॥ गमक ॥ मित्रनर । शत्रुकर ॥ जाहिकहि । नामनहि ॥
नेमधरि । संगकरि ॥ चेतगहि । भेदलहि ॥ सधबिधि । साधि
गिधि ॥ मित्रअरि । चीन्हिचरि ॥ दूरिलग । शोधिमग ॥ जाहि
सुख । ताहिरुख ॥ दोहा ॥ मित्ररूपकहुं शत्रु अरु शत्रुरूपकहुं
मित्र । जानिपरत पायेसमय जोपबित्र अपबित्र ॥ सुनोमित्रता
शत्रुता अमिटनामनहिंहोत । करतशत्रुता मित्रता कारणसरिस
उदोत॥तौलगिनिबहतमित्रता जौलगिस्वारथआस ।स्वारथकी
आशाछुटे कौनस्वामिको दास ॥ छप्पै ॥ मित्र शत्रुह्वैजात शत्रुह्वै
मित्रबिराजत । स्वारथके परसंग दशासब स्वारथ साजत॥ बन्धु
सखा सम्बन्ध स्वामि सेवकके भावहि । राखतसदा समर्थ अर्थ
स्वारथदे चावहि ॥ तिमि कारणबश ममभई क्षणक मइत्री चित्र
लागि । वहसमयभयोगत चहत कत स्वारथसाध्यो मोहिंठगि ॥
दोहा॥प्रबलशत्रुकहँ मित्रगुणि भूलिकरतबिश्वास । ताकहँकुशल
न कबहुंसो अवशि लहतहैनास ॥ नहिंबिश्वास न योगकर नहिं
करिये बिश्वास । मित्रनहूंमें नाहिंकरिय अति बिश्वास प्रकास ॥
रामगीतीलक्षण ॥ हमबचे तुमव्यवसायसों तुमबचे ममबल पाय ।
तहँ मित्रहे अब मित्रनहिं अबगहे पूर्व्वसुभाय ॥ तुम क्षुधित
ह्वै इतआइके मोहिंमित्रकहि कहिभोरि । करिबिवर बाहरखान
चाहत पीठि पांजर तोरि ॥ सुनु आत्मरक्षण करबसबकहँ उ-
चित सुचित लगाय । मणि हेम धनदै ग्रामतजिकढ़ि देशतजि
बढ़िजाय ॥ तुम मित्रता प्रतिपालहौ गहिखायगो तव भाय ।
नाहिं शत्रुकेसँग रहेकबहूं कुशल जानब न्याय ॥ सुनिमूषके ये
बचन लोमश झपकि महिमेंलागि । बहुभांतिके करिशपथलागे

कहन अति अनुरागि ॥ ममामित्र परमकृतज्ञ तुमसम किये अति उपकार । हम आत्मरक्षण चहतचलि तवबुद्धिके अनुसार ॥ तुम परमधर्मी गुणी सुकृती सुजनअति मतिमान । यहसमुझिराखन चहततुमसों मित्रता सबिधान ॥ हमसुज्ञानी धर्मबिद नीतिज्ञ सदया चित्त । तजिदये हिंसालये दृढ़ब्रत जानिजगहिअनित्त ॥ दोहा ॥ सुनिबिलारके बचनये लखिलूपकनि अनुमानि । मूष मूषभुकसों भयो कहत आतुरी आनि ॥ तूहिंसक चाण्डालशठ नाहकबकत बनाय । कौनबिशासै तोहिंकहु छूटतजातिसुभाय ॥ हरिगीती ॥ सुनिमूषके ये बचन लोमशहिये अमरष आनिकै । जहँरहो तहँसों झपटि बिलपै गयोगहिबो जानिकै ॥ चलिमूष गो निजबिवरमधि रहिगयो तब अरसाइकै । हियगुण्यो कारज सधोनहिं निजनीति इमि सरसाइकै ॥ इमि एक सुबुधी बहुतअ-रिसों लहतजय प्रण ठानिकै । जिमि पलित मूषक नीतिबिधि करिनीति विधि अनुमानिकै ॥ यह क्षात्रधर्म स्वरूप तुमसोंकहे बिधि उपचारिकै । लखिसमय अरिहित मध्यबिचरब उचित नीति बिचारिकै ॥ दोहा ॥ रामनाम सुमिरतरहै गहैनीति ब्यव-हार । जीतैअगणित अरिनकहँ लहै आपदा पार ॥

इतिशान्तिपर्बणिआपद्धर्मेमूषकबिलारसम्वादबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥यहिबिधि मूष बिलारकर सुनिइतिहास अनन्द । फिरि भीषमसों कहतभे धर्मभूप कुलचन्द ॥ अपतालि-कअपरातिका ॥ आपुपितामह नीतिसिखायो । सोहम आनँददायक पायो ॥ शत्रुनको बिश्वास न गायो । भूपचरै किमिकै मनभा-यो ॥ भीष्मउवाच ॥ सवैया ॥ सुनुभूपतिभइ पूरबजोगति ब्रह्मदत्त भूपतिके गेह । पूजिनि नामशकुनि अति चातुर नरपति पाले पूरिसनेह ॥ सोसर्बज्ञ तज्ञसब जानत नरसमबोलै बचनअबेह । होसुत तासुताहि नृपकेसुत बधो निरखि तेइँ कीन्हों तेह ॥ त्रिभंगी ॥ देखि मरोसुत अतिदुखपूरित रोदनकरत कही इमि

सुअरथमौन ॥ किमि अलब्धहि लहै लब्धहिं करै बर्धितभूरे । करैबर्धित को सुपालन नीतिबिधि किमिपूरि ॥ पालितहिकिमि नमितराखै शमितहोइ न भूप । कहौदेश बिचारिमुनि उपदेश परम अनूप ॥ भूपके सुनि बचनबोले सुमुनि भारद्वाज । सुनो भूप उदण्ड साधत दण्ड सिगरोकाज ॥ रहै परखत प्रजनभृत्यन बन्धुबर्गन रोज । छिद्रलखिनहिं क्षमासाधै दण्डदेइसओज ॥ दण्डनीतिहि बुध सराहत दण्ड राखतधर्म । दण्डपालत प्रजन सब क्षणदण्ड लक्षण पर्म ॥ दण्ड भयहित रहताहित अरि सेइ चाहत छाहँ । दण्डदायक नृपतिको सबजगत पूजत बाहँ ॥ दोहा ॥ मंत्र पराक्रम समर अरुकबहुं पराजयरूप । समय देखि करिबो नृपहि शीघ्र नीति अनुरूप ॥ मंत्र चूकि आपत्य लहि होइ शत्रु आधीन । पाणिजोरि अतिनमितह्वै जलपैनृपति प्रवीन ॥ चखजलढारै नीतिगुणि बोलै आरतबैन । दै बिश्वास आपुहि बचै निकट बसै मतिऐन ॥ समयपाय शत्रुहि बधै सधै आपनोकाज । सैन जोरिह्वै प्रबलबसि करै पूर्बवतराज ॥ दुगकमल ॥ इबिधि । सुसिधि ॥ नृपहि । लिपहि ॥ मुग्धाविलरस ॥ बकरूप रूपइ अर्थ । हरिरूप भूप समर्थ ॥ निज छिद्रराखैगोपि । परछिद्र देखै चोपि ॥ बर्मा ॥ शंकत्यागि । अंकलागि ॥ भूपराति । सोउनाति ॥समोहा॥ आनैभेदीबो । आपैलैलीबो ॥ धैराखैजीमें । नाखै हीमें ॥ दोहा ॥ पिता पुत्रके बन्धु जो बांधै अपनो अर्थ । बधै ताहिनृप बरु तदनु रोवै सोवैब्यर्थ ॥ रहै सदा चैतन्य नृप रहै बिचारत मंत्र । चार चक्षु करि जगलखै काज न करै स्वतंत्र ॥ सदा अमात्यन धर्मयुत राखैभाखैनीति । मृदुता लखिते अभय ह्वै गहत कापटीरीति ॥ सुनि सुनीति नृपतीतिगुणि धर्म्मभूप सुख पाय । फेरि बराधि कृष्णहि किये प्रश्नहि कृष्णहि ध्याय ॥ झूलना ॥ पर्म्म जो धर्म्म सो गुप्त जब होयगो धर्म्महत हीनजग जीव ह्वैहै । पूर्ब्बकी लीकसों गूर्ब्बता त्यागि है भूप तजि नीति

शुभ रीति ख्वै है॥ लोभ बश मोह बश क्षोभि नर भूलि थर कीर सम पीर लहि धीर ग्वैहै। क्षीण मति दीनगति पाइ यहि भांतिकी चेतिहै तौ युगुति कौन ज्वैहै॥ दोहा॥ बंचकता लगि हैं करन आपुसमें जनसर्व्व। पीड़ितह्वैहैं बिप्रगण बर्षाहोइहि खर्व्व॥ लहि ऐसी आपद दुसह नर किमि लहिहैं पार। कहो पितामह परमपटु परउपचर उपचार॥ साबित्री॥ हीमैंमोदैराखे। ऐसेप्रश्नै भाखे॥ सोकानै दै लैकै। भीष्मौ बोले जैकै॥ भीष्म-उवाच॥ गोमती॥धर्मशास्त्रजेसुनैं। रामनामही गुनैं॥ कालतेसभय रहै। नामते अभय रहै॥ प्रमाणिका॥ रमेशको सदा जपै। महेश को हियेथपै॥ अभयरहै प्रभय महै। सुखैलहै सुजयचहै॥ दोहा॥ देवाराधनते मिटत भूपति सकल कलेश। देवाराधन ते बढ़त धृतिमति ज्ञान बिशेश॥ तोमर॥ इतभूप और बिचार। सुनुतौन नीतिउदार॥ युगचारिजे अनुकूल। क्षितिनाथ ताकर मूल॥ बिराट॥ राजा जोगति धारिकै चरै। सोईलै परजा सदा अरै॥ ताहीको समको समौ लसै। तैसोई सबके हिये बसै॥ दोहा॥समयपाय पलटै प्रकृति बसत दीनता आय। दीनदशा लहि करतसब हीनकाज दुखदाय॥ अत्रपूर्व इतिहासहमकहत सुनोन्टप तौन। कौशिक अरु चाण्डालसों भईबारता जौन॥ त्रेता द्वापरकी रहीसन्धि तासुगति जानि। न्टपभइ द्वादशबारषी अनावृष्टि दुखदानि॥ रह्योअबर्षण नवबरस भूपसुनो तेहिका-ल। अस्थिमयीह्वै मेदिनी भईमहा बिकराल॥ माहिबरी॥ मुनि त्यागि निज निज थान इतउत भ्रमत अति ब्याकुलभये। लड़ि मरे अगणित गृहीपुर अरु नगर निरजन गनिगये॥ अतिभई भीषमरूप भूमि न भूपसब भाषतबनै। तरुभये बिनुरस पात गात सुजात जीवनको गनै॥ तेहिसमय बिश्वामित्र ऋषिअति क्षुधित ह्वै पीड़ित महा। उठिभये भ्रमत अहार खोजत कछु अहार मिलैकहा॥ मुनिदूरिलों भ्रमिफिरे नकुअहार नहिंकितहूं

मिलो। अतिक्षुधित आरत सामितभे नहिंजात कहिनेकहु हि-
लो॥ दोहा॥ लखि ऐसी आरत दशालखे बिपिनमेंतत्र। अति
मलान चाण्डालको गेह अस्थिचय यत्र॥ मुनिचलि ताकेगेह
मधि गिर दीनगति पाय। तहँलखि जंघाश्वानकी धीरज धरे
सचाय॥ रोला॥ कियेमुनि अनुमान मनमें होइकछु आँधियार।
श्वानजंघा लेइ भागों करोंजाइ अहार॥ इतेमेंचांडाल बोलो
परोकोइत आय। बेगिनाम बताउ नातरु देतआयुध घाय॥
सुनतसो डरिकहे मुनिमैं सुमुनि बिश्वामित्र। नामसुनिसो नि-
कटगो हिय गुणतबात बिचित्र॥ दूरिते करिदण्डवत उठिखरो
रहि करजोरि। कह्योमुनि तुवआगमनते दशाजागी मोरि॥
आगमनको हेतकहिये देतआनँद मोहि। सुनतसो भगवान
ऋषि इमिकहे ताकहँजोहि॥ क्षुधितहम अतिभये आरतमिलो
कछु न अहार। श्वानजंघा देहुतो हमकरैं भोजनचार॥ सुमुनि
के सुनिबचनसो चांडाल हियरे पीड़ि। जायनियरे कह्यो सियरे
कौशिकहि इमिईड़ि॥ उग्रतपकृत परमप्रभु भगवान ऋषितुम
ख्यात। छोड़िधीरज कहत कतइत महाअनुचित बात॥ कहे
मुनि हम महापीड़ित कढ़न चाहतप्रान। दशायहिनहिं उचित
भक्ष्याभक्ष्यको अनुमान॥ श्वपचबोलो ब्रह्मऋषि मुनि बिनय
मम सुनिलेहु। महातप निजश्वान जंघहि खाइ खोइ न देहु॥
श्वान मलिन शृगाल ते अति मलिन जंघातासु। ताहिभक्षण
चहत प्रभु तुम राखि जीवनआसु॥ महाकुत्सित कर्म त्यागब
धर्मको मुनिराय। और भोजन हेरिलीजै ग्रामजनपहँ जाय॥
कहेमुनि नहिं और भोजन मिलत हारेहेरि। क्षुधाकाढ़नचहति
तनते प्राणपीड़ामेरि॥ पाययहगति नहिंअभक्ष्यहि कियेभक्षण
दोष। बिप्रअग्नि समान भक्ष्य अभक्ष्य भक्षण तोष॥ श्वपचउ-
वाच॥ पंचसुनखी पंचबिप्रहि भक्ष्य पंचहि त्यागि। श्वानभक्षण
करहु मति द्विजधर्म ध्वंसन लागि॥ यथा शास्त्रप्रमाण करिबो

उचित तुमकहँ रोज । पूर्वपूर्वज तजेसो मतिकरो अधरमभोज ॥
विश्वामित्रउवाच ॥ क्षुधित कुम्भज मांसखाये असुरको जिमि पूर्व ।
क्षुधित हमतिमि श्वान जंघहि खातदोष न गूर्व ॥ श्वपचउवाच ॥
बिनाजाने मांसखायो असुरको मुनिराज । श्वानलखि तुमखान
चाहत महाअनुचितकाज ॥ इबिधिश्वपच बुझायहारो सुमुनि
मानो नाहिं । अचल मनकरि लायराखे श्वानजंघा माहिं ॥ क-
रत बार्ता श्वपचसों उठिखड़े ह्वै मुनिराय । झपटिकै लै श्वान
जंघा भगेआनँद छाय ॥ बिपिनमें परिपाक करिकै राखि पत्रन
पाह । लगेअर्पणदेव पितृन सुनो भूपपनाह ॥ देवपितृन अरपि
कीन्हे रुचोजो व्यापार । इन्द्र सो लखिडरतभे गुणि जगतको
संहार ॥ दयेशासन लगे बर्षणमेघ महिपै बारि । भयो पूरित
आपजगको ताप दाप बिदारि ॥ औषधी फलमूल प्रकटितभये
सिगरे अन्न । समय लहि सुखलहे दुखजहि प्रजाभे सम्पन्न ॥
दोहा ॥ फिरि तपनिधि कौशिकलहे तपकरि पूरणसिद्धि । आपद
गत मतिमानइमि बुधिबल साधतवृद्धि ॥ दैवदैवकरि परिहरत
मरिजेनिपटनदान । बुद्धिमान ब्यवसायकरि साधतकार्यमहान ॥
समयपरे जैसे बनै तैसे रक्षैप्रान । प्राणरहे हरिभजनते सुधरत
उभय बिधान ॥

इतिशांतिपर्वणिआपद्धर्मेबिश्वामित्रश्वपचसंबादोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ शरणागतके पालबे को जो धर्म अहीन ।
सोकहिये ममपितामह जाहिर धर्मधुरीन ॥ भीष्मउवाच ॥ प्रश्नकि-
योनीको निपट सुनोयुधिष्ठिर भूप । शरणागतके पालिबेकोअ-
तिधर्म अनूप ॥ अत्रपूर्व इतिहासहमकहत तौनअभि राम ।
कहेभूप मुचकुन्द ते भार्गववर तपधाम ॥ सोरठा ॥ जो सुप्रश्न-
अवनीपतुम हमसों कीन्हेसरुचि । सोमुचकुन्द महीप मुनिवर
भार्गव सोंकहे ॥ सुनि भार्गव मतिऐन कहेसुनोसो भूपमणि ।
जोदायक अतिचैन सुनेगुने पातकहरण ॥ जयकरी ॥ यहसुप्रश्न

सुनिअतिअभिराम । कहत भयेभार्गव तपधाम ॥ निजसुप्रश्न कोउत्तरबेश । सुनो सरुचि मुचकुन्द नरेश ॥ रहो एकव्याधा मतिहीन । कालो कालसरिस अति पीन ॥ बनमेंजाय बिहंग बझाय । क्रयकरि लेइद्रम बधिखाय ॥ यहि प्रकारकरि पाप अमेय । बितयो बहुतदिवस बनसेय ॥ फिरोएकदिन बनमेंथीति । मिलो न बिहँगगयो दिनबीति ॥ बीतत दिवस घेरिचहुं ओर । बारिद बरषेबारिअथोर ॥ तेहिक्षण भैव्याकुल बिहगाद । शीतारत ह्वैलह्यो बिषाद ॥ फिरिमिटि गोसब जलदपसार । उयो कलानिधि प्रभाअपार ॥ ब्याधा कँपत मैंझावत बारि । चलत भयो थलअजल निझारि ॥ मगमेंतहां कपोतएक । भीजे पक्ष न साहस नेक ॥ थलगहि बैठि रही लखिताहि । लयो उठाय मोदअवगाहि ॥ मरणदशा कहँप्रापत आप । औरहिगाहिबेको अतिथाप ॥ ब्यालगलस्थ भेकजेहिभाव । किमिनगहन चाहत गाहिचाव ॥ पिंजर मध्य कपोतिहि डारि । गिरत उठतगोसुथल निहारि ॥ वृक्षतरे होनिर्जल ठौर । तहँगिरिपरो मृतककीडौर ॥ दोहा ॥ बिरहाकुल तेहिवृक्षपर ब्याकुल बैठिकपोत । कहतभयो अतिदुखमयो बचनबिपति बश होत ॥ कपोतउवाच ॥ अजौंप्रिया आईनहीं रहीकहां केहिहेत । बातबायुबशमरीके परी कहूं हत चेत ॥ बिनाप्रिया जीवनवृथा ब्यथाहोति मनमाहँ । कामानल गतपुरुषकहँ नारी नदीपनाहँ ॥ बरवै ॥ गृहबनसम बिनुगृहिणी गृहिणीकाम । तियपति प्रियअरुपृहणी दायककाम ॥ नहिंगृह गृहगृह गृहिणी गृहिणीमोद । गृहबसिहियगृह गृहिणी गृही बिनोद ॥ चित्रांगी प्रियबैनी आयतनैनि । ममहियशय्याशयनी चौरनि चैनि ॥ मनरंजनि यहिरजनी आवति जौन । तो बिनु सबसुख सजनी जीवन कौन ॥ दोहा ॥ धर्मकर्म सुख शर्मकी साधकआनँद खानि । प्रिया भार्या कितरही हायपरत नहिं जानि ॥ यहि बिधिके निज सुपतिके सुनिकै बचन अनन्य । पिंजरस्थ पक्षी

कही जानिआपु कहँधन्य ॥ चौपाई ॥ हेपति हमैंगहे यहब्याधा। यहँनित इहैवृत्ति अवराधा ॥ आरत दशापाय यहिक्षनमें। तरु तर परचो मरणगुणि मनमें ॥ तरुअधीश तुमहो यहिठाईं । अब यह तुव शरणागत साईं ॥ शरणागतको पालब सुकरम। परउपकार करब अतिसुधरम ॥ हेपतिसुनो अतिथिकोपूजन। धर्मगृहीको सुबचन कूजन ॥ अतिथिन पूजि मोद सरसावत । सो उत्तम उत्तमपद पावत ॥ निज शरीरको शोच न कीजे । आइके व्याधहि आनँद दीजे ॥ ऐसे बचन प्रियाके सुनिके । सुबाधि कपोत हियेमें गुनिके ॥ तुरित उतरि तरुके तरआयो । टेरिकै ब्याधहि बचन सुनायो ॥ हेखगाद अब शोच न करहू । दीनदशा तजि धीरज धरहू ॥ तुमयहिसमय शरण मम पाये। इमि मानहुंमन निज घरआये ॥ निजहित कहौ करैंहम सोई । अतिथिहि पोषब परमनिकोई ॥ सुनिअतिप्रिय कपोतकीबानी । ब्याधा कहतभयो मनमानी ॥ यहिक्षण शीत देत दुखभारी । उचित उपायकरो उपकारी ॥ बातें ब्याधाकी ये सुनिके । उड़ो बिहंग हियेमें गुनिके ॥ जाय अगिनिकरमीके घरमें । लैसुअ-गिनि आयो तेहि थरमें ॥ दोहा ॥ कछु ईंधनधरि अगिनि धरि पक्ष आपनो राखि । बारितपायो बधिककहँ अतिप्रिय सुबचन भाखि ॥ अगिनितापि तनतपितकरि शीतभीत करिभंग । कह्यो बिहँगसों बिहँगहा अबमैंक्षुधित बिहंग ॥ सोरठा ॥ सुनिकपोतहा बैनहँसिकपोतइमिकहतभो। ममगृहसंग्रहहैन हमपक्षीउड़िफिरि चरत ॥ इमि कहि घरिकबिसूरि जानि क्षुधारत अतिथितेहि । महाशोच सों पूरि फिरि धरि धीरज कहतभे ॥ रामगीत ॥ ऋषि देवता पितृनको यहसुने सम्मतधर्म । जगआय पूजनअतिथि कोहै गृहिनको अति धर्म ॥ तन आपनो हम देत भोजन तुम्हें लीजै तौन । मन आपने मत खेद कीजो अमर जगमें कौन ॥ इमिभाषि पच्छी भांति अच्छीअगिनि कहँफिरिबारि। करिपांच

परदक्षिण धसोरघुबरहि हियमेंधारि॥ तेहिदेखि प्रतपतआगि-
निमें बिहगाद पूरोखेद। लखितासु सुधरमअतिथि पूजनप्रकट
भो निर्बेद॥ गुणि निन्द अपनो कर्म नितको कियोमनते त्याग।
मनमें कपोतहिगुरू जान्यो गह्योदृढ़बैराग॥ गहिकपोती छोड़ि
दीन्हों करत खेदप्रलाप। छुटि कपोती बिनापति जग जिअब
जान्योपाप॥ करिपांच परदक्षिण सबिधिधसि जरीपावकमाहँ।
तन त्यागि गहि तन दिव्य देखत भई अपनो नाहँ॥ सुर रूप
बैठि बिमानपहँ सुरनाथसरिस बिभात। तहँजायबैठीबामदिशि
अति प्रभापूरित गात॥ दोहा॥ निरखि कपोती को मरण धरि
अतिशय निरवेद। मोहत्यागि तेहिबिधिमरण गुन्योब्याधगहि
खेद॥ चितै तत्त्व रजनी बितै थितै ज्ञान घनसार। तितैचलो
अतिबन जितैरितैमोह परिवार॥ दूरजाय बननिविड़मधिदावा
लगोनिहारि। ब्याधातुर तेहिदिशिचलो निश्चय मरणबिचारि॥
जायदवामधि धसिमरो रामरामरटिलाय। उपकारीको संगलहि
लह्योस्वर्ग सुखदाय॥ यहिबिधिलों शरणागतहि पालबउचित
अनोत। जिमि ब्याधहि शरणागतहि पाल्यो सरुचि कपोत॥
सोरठा॥ पायोस्वर्गकपोत पालिबधिकशरणागतहि। दिवसागर
को स्रोत शरणागतको पालिबो॥

श्रीमहाभारतशांतिपर्वणिआपद्धर्मेब्याधकपोतोपाख्यानोनामपंचमोध्यायः

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ मिटै पापको दापकिमि कहियेसो उप-
चार। यह सुनिकै भीषमकहे सुनो भूमिभरतार॥ भीष्मउवाच॥
अत्रपूर्व इतिहासहम कहतसुनो नृपतौन। जनमेजय क्षितिपति
रहे तो पूर्वज मतिभौन॥ हरिगीती॥ तेहि पाय कारणभई घेरत
ब्रह्महत्या आइकै। नृप अवशि भावी होतिहै नहिंटरति अवसर
पाइकै॥ तेहित्यागि दीन्हें बिप्रअरु उपरोहितो अघ देखिकै। तब
राज्यतजि कढ़िगयो बनमें भूप अघ अवरेखिकै॥ तहँ पेखि
शौनक मुनिहि नृप उतभयो उगरत धाइकै। लखिताहि गुणि

पापात्मा पुनि कहतभे अनखाइकै ॥ इतआउ मतितो अङ्गते दुर्गन्ध प्रगटित होतहै। नितसंगकीन्हें पातकीको बढ़तपातक सोतहै ॥ सुनि भूमिपति यह बचन मुनिसों कहतभो करजोरि कै। मतिनाथत्यागब मोहिंतुममओरते मनमोरिकै ॥ सबबिप्र की लहिकृपा सुधरत अवशि उबरत दोषते। अपराध ममप्रभु क्षमाकरिकै सुगति दीजै तोषते ॥ सुनि भूपके ये बचन मुनि लखिरहे सुदया पूरिकै। ढिगजाइ नृप करिदण्डवत भो खरो अस्तुति भूरिकै ॥ तबदेखि सदया मुनिहिं नृप करजोरि बोलो प्रेमसों। त्रैताप कैसेमिटै मानस लहैसुख केहिनेमसों ॥ दोहा ॥ यहि प्रकार नरनाहके सुनिअति आरतबैन। कहतभये शौनक सुमुनि देत भूपतिहिचैन ॥ हियप्रगटे आरतदशा बढ़ेज्ञाननिर-वेद। अरुकीन्हें भगवत भजन मिटत पापको खेद ॥ यज्ञकिये दक्षिणादिये सेये द्विजपदकंज। काशिकादि तीरथकिये बढ़त पुण्य मनरंज ॥ काशीकाञ्ची द्वारका मथुरा अरुहरिद्वार। माया अवध अवन्तिका मेटतपाप पहार ॥ सुरसरि यमुना सरस्वती गोदावरीप्रयाग। पुण्यक्षेत्र सिगरेहरत पापतापकोभाग ॥ लोभ मोह ममता करब कामक्रोधयेपाप। महापाप मिथ्या कहबदुहुं-दिशि बाढ़ततापा ॥ सत्य करब सुधरम गहब शुचिमन रहब सदैव। दानदया उपकार ये तीरथ कथातथैव ॥ सोरठा ॥ नृप ययाति मतिमान पूरबइमि गाथाकहे। कियेतीर्थ मखदान तप ब्रतते पातक नशत ॥ सत्यवती तेहिरीति निज कुमारसों इमि कही। किये पुण्यसों प्रीति पुण्यहोत पातकनशत ॥ इमि सुर गुरु समुझाय पूर्ब कहे हैं सुरन सों। मिटत पाप दुखदाय दानतीर्थ तपमख किये ॥ महिखरी ॥ यहि भांति नृपहि प्रबोधि मुनि वर परम आनँद भरतभे। हयमेध मख करवाय द्विजन पुजायपातक हरतभे ॥ नृप धर्म जानो अवशि तपमखतीर्थ ब्रत संयम किये। अरु दान पर उपकार कीन्हें दया अरु

सुधरम लियेलहि सुगुरुप्रगटे सुमतिगुणि निजपाप अतिआ-
रतभये । सत्संग कीन्हें सबिधि हरिहर रामरति रसरँग रये ॥
अरुअतिथि पूजनकिये क्षुधितनउदर भरिभोजन दिये । निज
नशतपातक मृत्युहिय सन्तोषमुद अमृत पिये ॥ दोहा ॥ कहत
पूर्बइतिहासहम सुनो तौनमतिरास । नैमिषार मधि गृध्र अरु
जम्बुकको इतिहास ॥ चौपाई ॥ मरेएक द्विजको सुतकोई । हो
अप्राप्त यौवनबय सोई ॥ लैतेहिरुदन करत अति आरत ।
गेमसान महि द्विज दुखभारत ॥ धरिमसान महि परतेहि गहि
गहि । रुदनलगे शिशुतासुख कहिकहि ॥ गहिगहि रुदन करैं
दुखपागी । नहिंघरजाइ सकैंतेहित्यागी ॥ सोलखिएक गृध्रतहँ
आयो । तिनसों कहतभयो मनभायो ॥ मृत्युलोक यहतुमनहिं
चाचत । जेजनमत तेमरतन बाचत ॥ मरतभोगि जोबिधिलिखि
दीन्हें । मरोनजियत रुदनकेकीन्हें ॥ ताते मोहत्यागि घरजाहू ।
औशिहोत बिधिकीलिखि काहू ॥ इबिधि गृध्रकीबाणीसुनिकै ।
तेघैरचले सुतहि तजिगुनिकै ॥ सोलखिकै जम्बुक अतिबोलो ।
बिलते निकासि द्विजन ते बोलो ॥ तुमसब कहे कौनके लागे ।
सुतसनेह तजिचले अभागे ॥ सुतसनेह त्यागतजनकोई । ता-
कर भला कबहुं नहिंहोई ॥ तातेपलटि पुत्रपहँ जाई । बदनबि-
लोकहु अंकलगाई ॥ सोसब सुनहु मोहबश ह्वैकै । पलटेरुदत
पुत्रकहँज्वैकै ॥ तिनसों कह्यो गृध्र इमितबलों । मरेसुतहि सेवहु
गेकबलों ॥ अलपबुद्धि जम्बुककीबानी । सुनि सुत निकट चले
सतिमानी ॥ दोहा ॥ जीवगयो काढ़िकाठसम परीअचेतनदेह ।
गलिजइहै कछुदिवसमें राखिसकतनहिंनेह ॥ भयोहोइनिर्वेदतो
नेहमोह भ्रमत्यागि । जायकरो तपज्ञानगहि जगयामिनि मधि
जागि ॥ तपतेपातक मिटतहै तपते बाढ़त धर्म्म । दीर्घायू सुत
मिलतहै तपतेसधत सुकर्म ॥ सोरठा ॥ इतनेमें तहँआय बोलो
छली शृगाल वह । अलपबुद्धि ब्यवसाय गृध्रतासु मानतबचन ॥

दोहा ॥ देवपितर परिवारकर तोषक दायकचैन । पुत्रताहि चाहततजन सुनिकुजंतुके बैन ॥ सेवहु पुत्रहि नेहगहि जौहै हमैं बिशास । अर्थसधत उद्योग ते सिद्धि प्रदन केपास ॥ चौपाई ॥ सुनिश्शृगालकी बाणीऐसी । कह्योगृध्र गतिचाहतिजैसी ॥ बर्ष हजारहमैं भो पेखत । जन्मत युवावृद्ध अवरेखत ॥ जन्मतमरत करोरिन देख्यो । मरोनकबहूं जीवत पेख्यो ॥ भ्राता पिता पुत्र अतिप्यारे । जेनहिं होतनैनते न्यारे ॥ मईहिं तिन्हैं गेहते काढ़त । ईंधन अग्निलाइ तन डाढ़त ॥ तजि मसान महिपै घर आवत । दुखसहि करत कर्मजोभावत ॥ जगअनित्य नित ते सबजानत । तुमगहिमोह अबिधि विधिठानत ॥ तजिगोजाहि जीवतन सोई । तुमनाहिं तजतकौनाबिधि जोई ॥ गुणिममबचन जाहुनिजगेहा । मृतक न जियत बढ़ाये नेहा ॥ यहसुनि ते सब धीरज धरिकै । चलेमृतकको त्यागन करिकै ॥ सोलखिके जम्बुकभोबोलत । कततजि सुतहि गेहमुख डोलत । बर्द्धकबंशपिण्डजल दायक । सुतपदार्थ नहिंतजिबे लायक ॥ मरो बिप्रको सुत मनभायो । सुनियतु ताकहँ रामजियायो ॥ हेराजर्षि श्वेत सुखदाई । मृतक पुत्रकहँ लियोजियाई ॥ सुमन सिद्धिऋषिमृतकजियावत । आरत दशा देखिते आवत ॥ सोसुनिते अति करुणा पागे । जायसुतहि गहिरोवन लागे ॥ दोहा ॥ जानतहैं इमि गृध्रअरु भाषैरहन शृगाल । जायसके नहिंतेसबै फँसेमोह केजाल ॥ बीतिगयोदिन निशि रुदत भयोभोरज्यहि पर्ब । इतने में आयेतहां करुणानिधि प्रभुसर्ब ॥ रुदत देखि तिनकहँ शिवा शिवदाया बिस्तारि । बरंब्रूहि द्विजसों कहेबोलो बिप्र विचारि ॥ कहोचिरायु सुवनयह शम्भु कृपाते तौन । उठिबैठो हर्षैसकल किये शिवाशिव गौन ॥ लैपुत्रहि आनँद भरोबिप्र सरिस परिवार । तजिमसान निजनगर मधि कियोप्रबेश उदार ॥

इतिशांतिपर्वणिआपद्धर्म्मेगृध्रजंबुकसंवादवर्णनोनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जासोंनित अभिरो रहतशत्रु महाबल वान। किमिबुधि बलकरि सोबचै तौनकहो मतिमान॥ भीष्मउवाच॥ अत्र पूर्व इतिहास हम कहत सुनोनृप तौन ॥ शाल्मलितरु अरुपवनसोंभई बार्त्ता जौन ॥ रोला ॥ बिपिनमधिहो महाउन्नत वृक्ष से वरनाम । कियेछाज़ित दूरिलों बढ़िजासु शाखादाम ॥ बिहग बहुबिधिके बसत जहँ मृगानिबसत भूरि । बणिक पंथी आइ जेहि तर करत श्रमपथदूरि ॥ सुमुनि नारद एकदिन तेहि वृक्षके तरजाय । कहतभे हे शाल्मली तुम परम उन्नतकाय॥ पौनसों कछु प्रीति तुमसों कहो कारण तौन । नहींतोरत तुम्हैं जाते रहत रक्षक पौन ॥ सदा तोरत रहतशाखा तरुन के अति गूर्ब । गिरिनहूको करत पीड़ित पवन प्रबल अपूर्ब ॥ एकशाखा भंग नाहिं तुवपरत तातेजानि । सख्य तुमसों पवन सों तेहिहेतु रक्षतमानि ॥ बचन नारदसुमुनिके सुनिकह्यो सुनि येएहु । पवनसों नहिं सख्यहमसों नहींमनमें नेहु ॥ नहीं मम बलसदृश नारद पवनकी व्यवसाय । हीनबलकै जात मारुत लागि मोपहँ आय ॥ सकलहैन प्रवेशाकरि ममदलनमधि कर जोर । बलनलागत हारिके तबजात औरी ओर ॥ नारदउवाच ॥ सुनो शाल्मलि कहत तुम बिपरीत बचन बिधान । इन्द्र बरुण कुबेर यमते पवन अतिबलवान ॥ होत चेष्टित जगत सो सब पवनहीको अंस । कहतहौ अज्ञानबश तुमपवन बलको ध्वंस॥ वृक्षसों इमि भाषिनारद पवनके ढिग जाय । बचनताको कहो जो सोदयेताहि सुनाय॥ सुमुनिनारदके बचन सुनि शाल्मली के बैन । जायतासों कह्योमारुत किये रातेनैन ॥ मारुतउवाच ॥ शाल्मली तुम गर्वसों ममबलहि निंदै जौन । जायममढिग कहे सो सब सुमुनि नारदतौन ॥ पवन हमपरभावनिज दरशाइयतु है तोहिं । देखुममबल बेगजाकहँ निदरि मोदे मोहिं ॥ जीवके बिश्रामहित बिधितोहिं निरम्यो अत्र । बूझि यहकरिदया हम

नहिं कियो चालन पत्र ॥ दयामम नहिंगुणेतुम निजबलहिजाने पुष्ट । दयाजानत साधु निजपरभाव जानतदुष्ट ॥ भीष्मउवाच ॥ मरुतके येबचन सुनिकै कह्योतरुवर तौन । मोहिं कबहुं न आशही तुमदयाकीहैपौन ॥ निबलको बलवानजिनकी दयाचाहति आम । अधिक तुमसों बलीहम तुवदयाको नहिंकाम ॥ करोजो बलहोइ तुममें करोजोकरतव्य । क्रोधकरि ममकहाकरिहौ जाहु सभ्य असभ्य ॥ वृक्षके सुनिबचन मारुत कालबश तेहिजानि । गयेनिजथल भोरतेहि निर्मूल करिबो मानि ॥ गयोमारुत तहाँते तबवृक्ष कीन्हों शोच । निबलहम अति प्रबलप्रभुते बैरकीन्होंरोच ॥ करैगो निर्मूल मोकहँ पौनभोरहि आय । मूलघातन होइजाते तौन कौनउपाय ॥ बड़ेसों हठिबैरकीन्हें लघुहिकुशल न होत । बड़ोजो सो देव लघुको स्वामि सज्जनगोत ॥ घरीलों इमिशोचि तरुवरचाहि राख्योमूल । त्यागिदीन्हें आपने फल पत्र शाखा फूल ॥ त्यागिशाखा फूल फल दलभयो कुत्सितकाय । महतजनसों बैरकीन्हें मिलतफलसोपाय॥भोरहोतहि पवनआये कियेबेग अमन्द। शाल्मलिकी देखिगति हँसिकहे सुबचनछन्द॥ शाल्मली करिबैरहमसों लहेकैसो हाल । रहेउन्नतकाय अतिबलवान शाख बिशाल॥गयेकै यहिभांति किमिबिनु किये हमसोंयुद्ध। कहेगर्बितबचन तबकरिप्रगट खलताशुद्ध ॥गयोवहबलगर्बकित फल फूल शाखा पत्र । मूलमहिमें राखिबो गुणिभये ऐसेअत्र ॥ पवनमान अमानको सुनिबचन शाल्मलि तौन । दीनगति लहि भयो लज्जित देइ उत्तरकौन॥क्षीणगति लहिमहा लज्जितदेखि मारुत ताहि । गयेनिजथल त्यागि ताकहँ आपनीदिशि चाहि॥ भीष्मउवाच॥ दोहा ॥ यहि प्रकार नृप निबलजो गहिकै गर्बगरूर। करतबड़ेनसों बैरसोलहत आपदा पूर॥ जिमि दुर्योधन मोहबश तुमसों लरोसगर्व । जासुसहायी कृष्णप्रभु कर्त्ता खर्ब अखर्ब ॥

श्रीशान्तिपर्बणिआपद्धर्म्मेपवनशाल्मलीसंवादोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अब बताइये पितामह जौन पापको मूल । पाप ताप कितते बरधि देतदुहूंदिशि शूल ॥ भीष्मउवाच ॥ एक लोभते अगुणहै मूल पापको तौन । पाप लोभते होतहै देत दुसहदुख जौन ॥ क्रोध लोभते होतहै होतलोभते काम । क्षोभ मोह भ्रम लोभते प्रगटत औगुण ग्राम ॥ दम्भ द्रोह अरु पिशुनता प्रगट लोभते होत । त्यागकराइ सुकर्मकर गधतअशुचता स्रोत ॥ लोभमये तोषत नहीं सिन्धु समान अथाह । है आकर सब अगुणको लोभसुनो नरनाह ॥ लोभ क्रोध भ्रम मोह मद हर्ष शोक अरु दम्भ । अविवेकी अज्ञान के हिय घरके अस्तम्भ॥सदाचाररत पुरुषको अब कहियतु व्याख्यान । उभय लोकके भीतको जासु हियो अस्थान ॥ सुख दुख जिन कहँ सम सदा राखत इन्द्रीमोष । उपकारी दाता सुबुधि गहे रहत सन्तोष ॥ करतधर्म व्यापारनित साधुवृत्ति अवराध । लोभ क्रोध मोहादिकर करत नियमते बाध ॥ सत्संगति सेवन करत चरत वेद अनुसार । ते महान जन धरणिपहँ कर्त्ता तत्त्व बिचार ॥ ज्ञानवान मतिमान कर सुधरत सिगरो काज । अज्ञानी कहँ कुशल नहिं बिनशत सबै समाज ॥ मोषकरब इन्द्रियनको दम कहियतुहैताहि ।दमसाधनते सधतसब साधुसमागमचाहि ॥ काम क्रोध मद लोभ भ्रम हिंसा ममता मोह । दम साधन कीन्हें दुरत बर्द्धत सुधरम छोह ॥परम धरमको मूलहैदम साधन शुभ कर्म। दम विशेषते बिप्रको परम सनातनधर्म ॥ दम सुतेजबर्धित करत मेटत सकल अनर्थ । मन प्रसन्न कृत दोषहर दमकल दानिन व्यर्थ ॥ दम साधन करि शुद्धमति ज्ञानीसर्बस त्यागि । त्यागि अबिद्यादिक क्रिया बिलसत आनँद पागि ॥ ब्रह्मलोक पर्यन्त लहि बिलसत योगी तौन । दम साधनकृत दांत कह अलभ लोक है कौन ॥ तप सबगति साधक नृपति तपबिनु सधत न एक । तप प्रभाव प्रभु पितामह बिचरत जगत विवेक॥

तपते पायेबेद ऋषि तपते भयेमहान । तपते कामद मंत्रसब तप सब सिद्धिनिदान ॥ तपते मिलत अलभ्य अरु होत असाध्यो साध्य । नहिं अप्राप्य कछु तप कृतहि ईहा तासु अबाध्य ॥ ऋषि सुर सुरपति पितरगण दिगपालक गन्धर्ब । तप करिकै पाये सुपद तपहि सराहत सर्ब ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ दमतपकोपर भाव सुनि कहे युधिष्ठिर भूप । सत्य धर्मकी अबकहौ महिमा परम अनूप ॥ परम धर्म सब बर्ण को सत्य सुनो नरनाह । सत्य सनातन सिद्धिप्रद धर्म सिन्धु अवगाह ॥ सत्यत्रयोदश भांतिको होत भूमि भर्तार । सत्य क्षमा समता दया त्यागो तत्त्व बिचार ॥ दम अक्रोध धृति ध्यान अरु आर्ज्जव लज्जा जौन । अन अमरष ये त्रयोदश सत्यसुनो मतिभौन ॥ परम धर्महै सत्यनृप सबयज्ञनते श्रेष्ठ । ते योगी अतिधन्य जे सेवत सत्य यथेष्ठ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ क्रोधादिक अरितौन जेहि प्रकार बर्द्धत प्रगटि । कहौपितामह तौन जेहिप्रकार फिरि नशतये ॥ भीष्मउवाच ॥ रोला ॥ क्रोधप्रगटत लोभते सो नशत प्रकटे शांति । कामसो संकल्पते तेहिजहत प्रज्ञाकांति ॥ क्रोध अमरष लोभ ये अज्ञानताते होत । तत्त्व ज्ञान बिधान प्रगटे नशतहै सहसोत ॥ प्रीति थीति बियोगपाये शोक बर्द्धत आय । गुणत ताहि निरर्थ जबहीं मूलते मिटिजाय ॥ अतिअसूया बढ़तलहि कै क्रोध लोभ बिभाग । दयाप्रगटे भगतसों जिमि चोर जाने जाग ॥ सत्यसेवनबिना ममता बढ़त हे नरनाह । नशतसोसतसंग कीन्हें बसे साधनमाह ॥ बढ़तहै ऐश्वर्यते मदताहि नाशत ज्ञान । तीव्रतहि आमर्ष प्रगटत दया ताकोभान ॥ होति ईर्षा कामते बढ़िबुद्धि नाशत ताहि । लोभ कुमतिहि नशत जगहि अनित्यजानेचाहि ॥ मोहप्रगटत जीवके अबिचारते सबकाल । नशत तौनविचार कीन्हें तत्त्वके क्षितिपाल ॥ ये त्रयोदश दोष करता एक बहुत अनर्थ । हे सुयोधन मध्य येसब लरै कतनहिं

व्यर्थ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पितामहके बचन सुनिके धर्मनृप सुख पाय । फेरि बूझतभये हियरे परम आनँद छाय ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अब पितामह कहौ लक्षण निन्द्य जनको जौन । जासु संगति सुजन बरजत यथा कंटक गौन ॥ कृपी अयशी क्षुद्र हिंसत भोगरत सबयाम । पर सुनिन्दक दुष्टजन जोकरत कुत्सितकाम ॥ छली गर्वी पापरत परदोष प्रगटनहार । भलोकाहुहिगुणत नहिं निजभावके अनुसार ॥ भलोदेखत औरकोतोहिये पीड़ित होत । भलोअपनो बुरो सबको चहतत्यागे ओत ॥ करत जो उपकार ताकहँ ठगनचाहत आप । दानमान सुजान जनको करत कबहुं न थाप ॥ होत यहिबिधिके कुलक्षण निंद्यजनके भूप । अब सुलक्षण सुनो जैसो उचित पावनरूप ॥ बेदबिद बेदांगबिद द्विजनृपति राखइसेइ । करै सुरमख पितर पूजन दान बिधिवत देइ ॥ होइ बहुधन बिप्रजो नहिंकरै मख अरुदान । भूप ताकोहरै धनतेहि छोड़ि शेष समान ॥ यज्ञधरमें शूद्रकबहूं नहीं पावैजान । करैपीड़ित द्विजहि क्षत्री हरै ताकोमान ॥ इष्टि बैश्वानरी प्रतिदिन करैभूप सुजान । परमधर्म गृहस्थकोहै अतिथि पूजन दान ॥ होत दुःसह तजतनृपको पाय बिप्रप्रसाद । यज्ञकीन्हें दानदीन्हें याचकन अह्लाद ॥ बाहुबलते तरतआपद बीरक्षत्रीक्षिप्र । तरतधनबल बैश्य शूद्रोमंत्र बलतेबिप्र ॥ युवति अपुट अमंत्रबिद अरु असंस्कारी जौन । अग्निहोत्र न करै कबहूं किये निरयीतौन ॥ रहिजितेन्द्री करत मखजोदाक्षिणादे भूरि । दुहूंदिशिसो लहतईछित परमआनँद पूरि ॥ यज्ञकरिके दक्षिणा नहिंदेतजो सबिधान । प्रजापशु दिवहरतताकोयज्ञजानोन्यान ॥ कामबश परतियहि भोगत एकनिशि द्विज जौन । साधिनित ब्रततीनि बर्षअपापहू हैतौन ॥ कनकतेई बिप्रधन हरसुरापानी मूढ़ । अरुअगम्यागमन कर्त्तापतितिहि पापीरूढ़ ॥ पायसतगुरु होयइनके ग्लानि जोगुणिकर्म । किये प्रायश्चित्त तीर्थब्रतबढ़त

इनको धर्म ॥धर्ममख ब्रततीर्थ तपये हरतपातक सर्ब । मिटत
प्रायश्चित तेपातक त्यागि गौरवगर्ब ॥ भ्रूणहा निजपाणि नि-
जतन काटिकीन्हें होम । होतहै शुचिशुद्ध सबमिटिजात पातक
तोम ॥ गरम मदिरापान करिकै त्यागि तनगहि ग्लानि । लह-
त मदिरा पिशुनगति मिटिजात पातककानि ॥ लोहप्रतिमाग-
रमकरिकै लपटि त्यागैदेह । लहैगुरु तल्पग सुगति तोधर्मसो
करिनेह ॥ दोहा ॥ लिंगवृषन युगपाणि ते गाहिचलि दक्षिणओर।
जीभदशनते काटिकै मरै ग्लानि गहिघोर ॥ कैअग्निष्टोमादि
मख उत्तम करैसनेम। तौगुरुतल्पगको मिटत पापलहतहैक्षेम॥
ब्रह्मचर्य्य द्वादश बरष गहि तप करैअनूप । होत अपातक ब्र-
ह्महातौजिमि पावन रूप ॥ लगै सगर्भी ब्राह्मणी बधको पातक
जाहि । दुगुण पापतेहि लगतहै दुगुण नेमब्रतताहि ॥ बधिबै-
श्यहिद्वैवर्षमें एकवृषभ शतगाय। दैबिप्रन कहँहोतहै अघगत
शुद्धसुभाय ॥ एकवृषभ शतगायदै आठबर्षमेंदान। होतअपा-
तक शूद्रहा तजअघ करिबोठान ॥ श्वानबराह बिलार खर हिं-
सेहत्याहोत । अहिअखु दादुर काकके मारेपातक सोत ॥ पशु
बधकी प्रायश्चित्त नरकरिहोतअपाप। धर्मशास्त्र में जोकहै सोई
सबथरथाप ॥ बिनुकारण मातापितहि तजेपातकी होत । अशन
बसनछाजन सहिबिधि दीबोधर्मतनोत ॥ बिनु व्यभिचारिणिभा-
र्य्यहित्याजि परतिय तेभोग । करत तीन चान्द्रायणहि कीन्हेंहो-
तअरोग ॥ नृपति देय अतिदण्ड तेहि गरम लोह धरि अंग।
दुगुणदण्ड ब्रततेहितियहि रमैजो परपतिसंग॥ मदिरापीकैबदन
कोगन्धलहै द्विजजौन । तीनिदिवस जलउष्ण पय पियै तीनि
दिनतौन ॥ यहिबिधि पातकप्रति कहे प्रायश्चित्तमहान । तजि
बिकार व्यवहार सियरामहि भजतसुजान ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिआपद्धर्मेप्रायश्चित्तवर्णनोनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा॥ पायकथान्तर तेहिसमय खड्गयुद्ध बिद

दक्ष । नकुल पितामह सोंभये बोलतवचनप्रतक्ष ॥ बिरथबिधनु ह्वैजातभट घेरि लेहि तेहिटूटि । गदाशक्तिधर धनुषधर बध करिबो गुणिजूटि ॥ सबसों भटकिमि खड्गगहि तिनसों लरैअ-भर्म । सोबताइये पितामह खड्गयुद्ध बिद पर्म ॥ बचन नकुलके सुनिकहे धनुषवेद पारज्ञ । जोतुमबूझत शिष्य सम सो हम कहतअदज्ञ ॥ चौपाई ॥ जगहितप्रगटि पितामह आरय । बिरचेमहि दिवऋषि आचारय ॥ रचेप्रजापति अति मतिभावन । वेदवेद बिदबिरचे चावन ॥ अस्थावर जंगमबहु बिधिके । सुर गन्धर्व आदि सबसिधिके ॥ उद्भिज स्वेदज अण्डज जेते । औरजरायुज प्रगटित तेते ॥ क्रोधलोभ भयप्रगटित कीन्हे । मोहगर्व आदिक रचिदीन्हे ॥ बिरचे असुर हिरण्याक्षादिक । बिप्रचित्ति शुचि प्रभृति प्रमादिक ॥ तेसबधर्म अतिक्रम करिकै । बिहरन लगे पराक्रम भरिकै ॥ ऋषिमुनि प्रजन सतावनलागे । देवाधिपहि दबावन लागे ॥ भरेदर्प नहिं सतपथ बूझैं । सुरगणते उमदाय अरूझैं ॥ सोबिलोकि बेधागुणि मनमें । गेहिमवत गिरिपैऋषि गनमें ॥ उन्नत शृंगतरुणते छाजित । जलफल फूल बिशेषबि-राजित ॥ तहांऋषिनसह राजित ह्वैके । कीन्हे यज्ञयुगुतिज-तिज्वैके ॥ तहांहजारबर्ष जबबीतो । यज्ञअनल तबअद्भुतथीतो ॥ भोतहँबिमल अग्निते प्रगटित । नीलोत्पल छबि छटाअरगटि-त ॥ तीक्षण बदन कृशोदर भीमा । छोटोगात बिभात अधीमा ॥ मास निशासम अशनिसमाना । तेजपुंज जग जैन अमाना ॥ दोहा ॥ ताकेउत्पति होतभो भूमिकम्प तेहिकाल । तरुसीदनउ-ल्कापतन सिंधु क्षुभित दिशिलाल ॥ तेहिक्षण ऋषिगणसोंकहे बेधाआनँद देत । प्रगट कियोअसिनाम यह असुर बिनाशनहे-त ॥ इतोकहत बिधिकेसुनो वहस्वरूपतजितोन । तीक्षणतनह्वै लसतभो रूपप्रगट अबजौन ॥ तोमर ॥ निजपाणिमधि सोआनि । अनुमानि हियमेंठानि ॥ बिधिदिये शिवके पानि । अति प्रबल

प्रभु अनुमानि ॥ गहिअमल असिअति रूप। प्रभुरुद्र अनघ अनूप ॥ करिचारि भुजअति ऊर्द्ध। दिनमणिहिं पर शरमूर्द्ध ॥ करिबंकचख भ्रूभाल। अतिसृजत चखतेज्वाल ॥ बहुमार्गविरचिसनेम। भेचरतगहि रणप्रेम ॥ कियेघोरधुनि ह्वैचण्ड। गुणि खलन दीबो दण्ड ॥ प्रभु शूलधर तेहिकाल। भे काल सरिस कराल ॥ दोहा ॥ सुनीरौद्रता रुद्रकी दानवकुल भटसर्ब। चलि निजथरते जायतहँ लड़नलगे गहिगर्ब ॥ गदा शक्ति पाषाण शर पट्टिश भल्ल अनेक। डारनलागे रुद्रपहँ गहि गिरिटारन टेक ॥ चौपाई ॥ गहिअस्थान भेदबिधिचरिकै। प्रभु असिपाणि चपलता धरिकै ॥ सबअसुरनके आयुध काटत। जूटिसबनसों सबकहँ डाटत ॥ काटत अगणित कर पग शीशा। लखि असुरनको धीरज खीशा ॥ एक शिवहि अगणित करि जाने। काल कराल सरिस अनुमाने ॥ सबकहँ बधनचहतहैं क्षनमें। गुणिहत शेषभरे भयमनमें ॥ नहिं थिरिसके भगे तजिधीरज। बिप्रचित्ति आदिक जे बीरज ॥ कितने गये रसातल माहीं। किते दिगन्त न थीये नाहीं ॥ किते गगनमधि इत उत धाये। किते कन्दरन दुरि दुखपाये ॥ शंभु असंख्यन असुरनहतिकै। रुण्ड मुण्ड मय धरणी अतिकै ॥ रणमहि त्यागि रौद्रता तजिकै। शिवस्वरूपभे सुखमासजिकै ॥ सोलखि सुर ऋषि आनँद लीन्हे। महादेवको पूजन कीन्हे ॥ तबशिवसो असि बिष्णुहि देकै। गेकैलास बिजययश लैकै ॥ बिष्णुमरीचहि दीन्हेंसोई। दिये मरीच इन्द्र कहँ जोई ॥ दिये लोकपालहि सुरनायक। लोकपाल मनुकहँ गुणिदायक ॥ असिदैकहे नीति करिलालन। यहि गहिकरो प्रजापति पालन ॥ दिह्यहुदण्ड अधरम करतारण। हरेहु भूमिधन धरि असि धारण ॥ दोहा ॥ मनु निजसुत क्षुपकहँदये क्षुपतेलहे इक्ष्वाकु। तासोंआयू आयुते लहे नहुष भरताकु ॥ तासोंलहे ययाति फिरि तासोंपुरमहिरौन। यहिप्रकार

नृपबंशमें रही बहुतदिन तौन ॥ लहेताहि ऋषिदश्व फिरिलीन्हे भारद्वाज । लहेद्रोण फिरि कृपलहे तासु प्रयोग समाज ॥ अब पाण्डव असिको सुनो आठ सुनाम रहस्य । असि बिष सम अरु खड्ग अरु नामदुरासदतस्य ॥ तीक्ष्णधार श्रीगर्ब अरु धर्मपाल अभिराम । बिजयमुनो माद्रीतनय ये बसु असि के नाम ॥ सोरठा ॥ ये बसु असिके नाम जे.नितपाढ़िहैं पूजि असि । तेक्षत्री बलधाम जयकीरति लहिहैं सदा ॥

इतिश्रीशान्तिपर्वणिआपद्धर्मेखड्गोत्पत्तिर्नामनवमोऽध्यायः ९॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ इमिबार्त्ताकहि जबरहे मौनभीष्म मति खानि । तबभाषे नृपधर्मते बिदुर धर्म अनुमानि ॥ दया यज्ञ श्रद्धा क्षमा सत्य क्रिया अरु दान । बहु श्रुत सुधरम शील ये आत्म सम्पदाथान ॥ धर्म मूल कल्याणको सबकहँ बर्द्धतधर्म । धर्मवान सुकरम करत धर्मदेत पदपर्म ॥ अर्जुनउवाच ॥ बचन बिदुरके सुनिकहे अर्जुन बचन प्रशस्त । कर्म भूमि यहभूमिपति इतकढ़ि बढ़त समस्त ॥ कृषीबणिज गोरक्षण अरु शिल्पादि अखिन्न । येसबहीके अर्थहैं नहींकर्मते भिन्न ॥ अर्थवान बिषयी सुबुधि साधत सदा सुधर्म । धर्मकाम ये अर्थके अबये किये सुकर्म ॥ तजिहियते सुख दुख ग्रहण त्यागि खुलाशा जौन । अर्थ धर्म कामादिमहँ चरत कितेमतिभौन ॥ अर्थ धर्म अरु कामकहँ त्यागिकिते मतिमान । मोक्षहेतबन गिरिगहन चिन्तत ते सुखदान ॥ जातिबर्णके कर्मरत कितेतकत नहिं और । किते चहत केवल अरथ गुणत न ठौर कुठौर ॥ कितेहोत आस्तीक अरु कितेहोत नास्तीक । करतकर्मजो जौनसो भोगत ठीक अनीक ॥ नकुलउवाच ॥ चलतसुपथ बैठे खरे करत उचित जेकर्म । अर्थयोग्य साधन करबहै गृहस्थकोधर्म ॥ सहदेवउवाच ॥ अर्थधर्मसों युक्तजहँ धर्म अर्थतेयुक्त । तेमधु मिश्री मिलितसम देत स्वाद सुखउक्त ॥ भीमसेनउवाच ॥ भूपति काम बिशेषहै सबसाधत

निजकाम । ऋषिसाधत तप कामबश शास्त्रपढ़त द्विजनाम ॥ गोरक्षण बाणिज्य अरु कृषीआदि व्यापार । यज्ञदान आदिक क्रिया कामसिद्धि उपचार ॥ कितेकाल लगि उदधिमें धसतकिते बनशैल । परअधीन कितने रहत कितेचलत नितिगैल ॥ अर्थ धर्मते कामकहँ साधतहैं मतिमान । जिमि पयते नवनीत घृत काढ़त सहित बिधान ॥ श्रेष्ठतेल तिललेसुना दधिले घृत अभिराम । श्रेय पुष्प फल काठते अर्थ धर्मतेकाम ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सुनिगुणि बन्धुनके बचनकहे युधिष्ठिरभूप । हौतुमसब मतिमान अति जानत यतन अनूप ॥ धर्मशास्त्रमत तुमकहे सुनो तत्त्व सुखदान । लोह कनकसम भावजेहि सोनर अति मतिमान ॥ पाप पुण्य सुख दुखजिते अर्थ धर्म अरु काम । एकौमें रतिजासु नाहिं सोज्ञानी अभिराम ॥ खंजा ॥ कर्त्ताआपुहि गुनत न कबहूँ गुनत सदा यहभेव । चरत चरावत जिमिहृदिस्थ प्रभुजो निति न्यामकदेव ॥ सुनि ऐसे सुबचन भूपतिके बन्धुनकिये प्रणाम । क्षण रहिमौन भूप भीषमतें किये प्रश्नअभिराम ॥ दोहा ॥ मित्र द्रोही दुष्ट जोहोत कृतघ्नीजौन।तिनकी बार्त्ताअबकहौ जेहि निन्दत मतिभौन ॥भीष्मउवाच॥ अत्रपूर्व इतिहासहम कहतसुनो नृप तौन । उत्तर दिशिमहँ बिप्रशठ कियो दुष्टता जौन ॥ रोला ॥ मध्यदेशी रहोकोऊ बिप्र बिद्याहीन । बहुकुटुम्बी रहो सो फिरि भयो धनतेहीन ॥ गेह तजिकै बिप्रसो कढ़िगयो उत्तर ओर । निकट गिरिके ग्रामपायो बसतहै तहँचोर ॥ चोरपतिमतिमान अतिहो जानि द्विजहि कुलीन । बसन भोजन दियो त्यहि दै सदनचारुनवीन ॥ बांधिभिक्षा बार्षकी तेहिराखि सुबचनभाषि । दियो प्रोषित भर्त्रिका त्रिय सुभगसुत अभिलाषि ॥ पायभोजन बसन गृहतिय बिप्र गौतम मोदि । लगोतहँ बसि दिवस बितवन तरुणिसंग बिनोदि ॥ बाणबिधि शिखिलगो बनमें चरनलै धनुबान । लगोमारनमृगा तस्कर संगतिन्हहिं समान ॥ बहुत

दिन तहँकियो हिंसा निवसि तस्करसंग। एकदिन तेहि ग्राम आयो बिप्रबुद्धि सुढंग॥ देखि सबगृह त्यागि गौतम बिप्र को गृहदेखि। प्रविशि भीतर भयो ठाढ़ो बिप्रको गृहरेखि॥ इते में चक्रांगपक्षी मारिलीन्हे तत्र। भयो आवत बिप्र गौतम भये उभय एकत्र॥ रुधिरसों सबगात पूरित लिये धनुषा बाण। मृतकपक्षी धरेकांधे बनि किरात समान॥ देखिताकहँ बिप्रतपसीकह्यो सुबचनमर्म। मोहबश परि गहि कुसंगति करतकौन कुकर्म॥ वेद शास्त्र सुभाव श्रुति निजबंशको गुणितौन। त्यागि के यह वृत्ति गहुद्विज वृत्ति जाहिरजौन॥ बिप्रको सुनि बचन गौतम कहतभो समुझाय। क्षीणधनहम हीनबिद्या बसे यहि थरआय॥ आपु यहिनिशि रहोइत हम चलब तुवसँगभोर। रातिबसि द्विजभोर त्यहिलै चलो उत्तर ओर॥ गयेकहुँ अति बिपिन मधिकढ़ि दैवबश तहँआय। बध्योतपसी द्विजहिगहि के मत्तमैगलधाय॥ देखि गौतम बिकलभाग्यो जाइउत्तरकोद। लख्यो गिरिढिग बिपिन जहँबसि बिहँग करतबिनोद॥ पनस तालतमाल साल रसाल आदिउतंग। फलेफूले वृक्षफूलेमधुप अद्भुतरंग॥ दिव्यथल अवलोकि सो तहँ बसो गौतम जाय। होत संध्या तहां आयो बिहँग अनुपमकाय॥ देवकन्या पुत्र सेबकराज अति मतिमान। नामनाड़ी जंघ कश्यपको सुवनसुखदान॥ सखा बिधिको तासुदूजो राजधर्म सुनाम। होतसंध्या तौनपक्षी राजसुखमा धाम॥ आइकैनिज आश्रममेंदयो परमा पूरि। निरखि ताकहँ बिप्र हियमें गह्यो बिस्मय भूरि॥ मणिन के आभरण भूषित राजधर्म सधर्म। देखिबिप्रहिकह्यो सुबचन देत आनँद पर्म॥ बिप्र आइ सुआश्रम मम किये पावनरूप। हमहिं तुम सत्कार करिबो उचित धर्म अनूप॥ भाषि इमि सुरसरितते पाठीन पीन मँगाइ। अग्नि में परिपाककरिकै दियो द्विजहि सचाइ॥अशनबास कराय बिप्रहि पासबैठि स-

प्रेम। भयो बूझत बिप्रको द्विज नामगोत्र सनेम ॥ नामगोत्र बताय अपनो कह्यो बिप्र अधीर। हमदरिद्रीद्रव्य अर्थी जात सागरतीर॥ बिप्रके सुनिबचनबोलो पक्षिपति मुदभौन। चारि बिधिको होतधनसो कहत सुनियेतौन ॥ परंपरिक सुपूर्ब कर्मज काम्य मैत्र महान। मित्रममतहँ जायलेहु सुमैत्रधनसुखदान ॥ तीनि योजन इहांतेहै मेरुब्रज वरग्राम। तहां राक्षसराज रहत बिरूप अच्छ सुनाम ॥ मित्रममसो जाहुतहँतुम लेहुधन मन मान। सुनत द्विजकेबचन द्विजतहँचलो पुलकितप्रान ॥ खात पथमें सुफल निरखत बिपिन शोभावेश। लख्यो राक्षसराज को पुरद्वार अनुपमदेश ॥ जानि सो वृत्तान्त राक्षसराज करि अनुमान। भृत्यभेजि बोलाय बिप्रहि पूजि दीन्होंमान ॥ दोहा॥ पूजि सबिधिफिरि कहतभो बिप्र बसत केहिदेश। पठै कहाको तवतिया कहिये क्रियाबिशेश ॥ बिप्र कह्यो हम बसत हैं मध्य देशमें भूप। हैंद्विजगोतम गोत्रहम जोजग प्रगट अनूप॥ हम अभाग्यबश नहिंपढ़े गहेन क्रियासुबेश। तिया लहेहैं शूद्रिनी सत्य सुनो दनुजेश ॥ सुनि राक्षसपति गुणतभो श्रेष्ठगोत्रकुल मात्र। निर्विद्या शूद्री रमण यह द्विज महा कुपात्र ॥ दान पात्र तोहै नहीं पै भेज्यो मम मित्र। अवशि याहि दीबोपरचो मित्र प्रभाव बिचित्र॥ चौपाई ॥ मित्रसाधुनाहिं यहिलखिलीन्हों। यह कुत्सितकर्मी हम चीन्हों ॥ इमिगुणि सावधानता गहिकै। भोर कार्त्तिकी पूनोलहिकै ॥ मणि माणिकको ढेर लगायो। सादर अगणित द्विजन बोलायो॥ पूजिकह्यो उमगाइ सनेहू। जासों जौनचलै सो लेहू ॥ इतनो सुनत बिप्रसबहरषे। युग हाथन मणि माणिक करषे॥ बसनपसारि मोटरी बांधे। चले बिदा ह्वै धरि धरिकांधे॥ तेहिक्षण बोलो राक्षसराजा। बेगि जाहु कढ़ि विप्र समाजा॥ भोर जाय राक्षस ढिगपैहै। बिनुबिचारताकहँ धरिखैहै ॥ सुनिब्राह्मण अतिपायल डगरे। नांघिराक्षसी सीवा

अमरे ॥ गौतम विप्र मोटलै मनिको । आयो विहँगपास बनि धनिको ॥ देखिसधन तेहिखगपति मोदो । सादर ढिग बैठाय बिनोदो ॥ फल मँगाय भोजन करवायो । निजसमीप आसन धरवायो ॥ करत वार्त्ता प्रेमसमोयो । निद्रितह्वै पक्षीपति सोयो ॥ सोइगयो पक्षीपति जबहीं । सोशठविप्र बिचारयो तबहीं ॥ होइहिभोरदूरि पथचलिबो । मगमें कहूं न जनपथ हलिबो ॥ नहिं अहार कछुपाइब मगमें । मोटोमोट लहब दुखअगमें ॥ दोहा ॥ इबिधि चिन्तिसो विप्रशठ फिरिहमि गुन्यो बिचारि । मांसराशि ममढिगपरो पक्षीपति तेहिं मारि ॥ याहिक्षणलै भगिचलैं मगमें करब अहार । इमिबिचारि उठि बिहँगपति कोकीन्हों संहार ॥ रोमपक्ष सबकरि जुदो चलो कन्धधरि ताहि । दुष्टकृतघ्नी विप्र वह करि कुकर्म भलचाहि ॥ चौपाई ॥ उतैभोर राक्षसपति जागो । खगपतिके छोहन अनुरागो ॥ निजसुपुत्रकहँ निकटबुलाई । कहतभयो इमिमोह बढ़ाई ॥ मोकहँ जानिपरत यहिनिशिमें । भयो अनर्थ मित्रकी दिशिमें ॥ होवह ब्राह्मण शूद्राचारी । अतिमूरखअर्थी अबिचारी ॥ मित्रविहँगपति साधुमहाना । तासुदोष गुणनाहिं पहिचाना ॥ करिबिश्वास निकटतेहि राख्यो । सोअर्थी अनरथ अभिलाख्यो ॥ तातेतहां जाहुतुम आसू । देखिखबरि लैआवहु तासू ॥ सुनतहि सोअनुचर सहधायो । खगपतिबसत रहो तहँआयो ॥ तहांन राजधर्म कहँदेख्यो । रोमपक्ष लखिकैअतिलेख्यो ॥ जान्यो राजधर्म कहँबधिकै । गयोविप्रलै मांससरधिकै ॥ दियो अनुचरन कहँअनुशासन । धायधरोविप्रहिं कारिआसन ॥ सुनत अनगिने अनुचर धाये । बिप्रकृतघ्निहिं धरिलैआये ॥ शिरमणिमोटकांधपर पक्षी । ल्याये ईंचि असुरपतिपक्षी ॥ तिमिलैअसुराधिप पहँ आये । लखि कौणपपति अतिदुख पाये ॥ मित्रबिहँगपतिको तनलैकै । रुदनाकियोअतिकरुणाकरिकै ॥ कश्यपतनय सुरभि तेजायो । तेहिबधिगात कृतघ्नी खायो ॥ दोहा ॥

यहिबिधि कहिकहि रुदन करि पुत्रहिदियो निदेश। कह्योयाहि बधि खाहिंसब असुर भयानकभेश॥ यहसुनि सबराक्षस कहै जोरि जोरि युगहाथ। मांसकृतघ्नी दुष्टको हम न खाइहैंनाथ॥ तब राक्षसपति कहतभो खण्ड खण्ड करि याहि। देहुकिरातन खाहिं ले मांसबिप्रको चाहि॥ खण्ड खण्ड करिताहि ते दये किरातन आनि। नहिंखाये तेऊ असुर दुष्ट कृतघ्नी जानि॥
चौपाई॥ तबराक्षसपति चितासजायो। चन्दन अगर सुगन्ध धरायो॥ जेतकर्म करिबो अनुमान्यो। यहगति सबदिवबासिन जान्यो॥ सत्यराम राक्षसपति भाख्यो। लैबकपतिहि चितापहँ राख्यो॥ ऊपर तासु सुरभि तेहिक्षनमें। आवतभई छोहकरि मनमें॥ लखि पयस्विनी भईसुमाता। बकपति मुखपय दयो बिधाता॥ पयपरसत बकपतिभो तैसो। सुन्दरगात रहो नहिं जैसो॥ तुरित चिताते बाहरआयो। राक्षसपति हँसिअंकलगा- यो॥ तेहिक्षणतहँ अतिआनँद छायो। बकपति नयोजन्म फिरि पायो॥ तेहिक्षण सुरनायक तहँआये। अन्तरिक्ष रहि बचन सुनाये॥ बकपति बिधिकी सभा न जाई। तबबिधि दीन्हेंशाप रिसाई॥ जो बकपति ममसभा न ऐहै। तौखलके करते बधि जैहै॥ शापभाव तेहिबकपति धरते। इमि बधिगयो दुष्टके कर ते॥ जीवतभो अमृतके सींचे। मोहगई सुरभीके ईंचे॥ यहि बिधि गिराइन्द्रकी सुनिकै। बिप्रहि मरोपरो लखि गुनिकै॥ बक पतिकह्यो बिनय अति करिकै। नाथकृपामोपहँ हियधरिकै॥ यह ममसखा बिप्र बधिडारो। तेहिजियाइ ममजन्म सुधारो॥ दोहा॥ बकपतिकी बाणीबिमल सुनिसुरपति सुखपाय। सींचि अमृत ते ब्राह्मणहिं तुरतहिदये जियाय॥ बकपति बिप्रहि लाइउर मिलो प्रेम अधिकाय। मिलोबिप्र चखनत किये कहा कनौड़ी जाय॥ तेहि बिप्रहि मणिमोटसह करिकैबिदा सप्रेम। जायसभा बिधि की विहँग आदर लह्योसनेम॥ क्रमते शूद्रहिके सदन आयो

ब्राह्मण तौन । अन्तकाल रौरवलह्यो लहत कृतघ्नी जौन ॥ पूर्ब कृतघ्नीको कह्यो नारद यह उपखान । नृप हमसो तुमसों कह्यो ऐसो दुष्ट न आन ॥ सबपापिनते सरिसहै मित्रन द्रोही दुष्ट । मित्रद्रोहीते न विधि देइ मित्रता पुष्ट ॥ सोरठा ॥ मर्य्यादा को धाम मित्रमिलै विधि देइतिमि । सुग्रीवहि जिमि राम मिले पारथहि कृष्ण जिमि ॥ बैशंपायनउवाच ॥ यहिबिधि आपद धर्म भूपतिते भीषम कहे । सुमिरि ब्यासपद मर्म नृपसो हम तुमसों कहे ॥ पाइकृपा अनुकूल सीतापति रघुनाथकी । सरस सम्पदा मूल बर्णे आपद धर्म इमि ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगा मिनाश्रीबन्दीजनकाशीबासिगोकुलनाथकबीश्वरात्मजेनगोपीना थेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारतदर्पणेशांति पर्बणिआपद्धर्मेदशमोऽध्यायस्समाप्तः १० ॥

इति शान्तिपर्बआपदधर्म समाप्तः ॥

मुंशीनवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने में छपी ॥

मार्च सन् १८९१ ई० ॥

महाभारतदर्पणे ॥

शान्तिपर्व मोक्षधर्मदर्पणः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ रामगीती ॥ बरराजधर्म बशिष्ठ अतिशुभस्वच्छ आपद्धर्म । सुनि पितामह तुमकह्यो पूरब कृपाकरिकैपर्म ॥ अब कहोजो आश्रमिन कोहै श्रेष्ठधर्म अनूप । होंआपुकहिबे योग्य याते कहौ भीषमभूप ॥ भीष्मउवाच ॥ शुभधर्म ज्ञान सुकह्यो सब आश्रमिनमें शुभवेद । मैंकहत तिनको तुम्हैंफलहौं सुनहुतौन अखेद ॥ हैदेत औरै लोकमें फलधर्म अपनो स्वक्ष । शुभज्ञान सों फल देतएही देहको परतक्ष ॥ नृपभईक्कैहै शंकतेरेहिये सुनि मोबात । नहिं धर्मको फल दृष्टिक्कै है ज्ञानफल बिख्यात ॥ है ब्यर्थ करना धर्मयाते ज्ञानही है सार । यहिलोकमें जोदेतएह देहको फलचार ॥ नृप सुनहु सोशुभ धर्म कीन्हें कामनाकेहेत । यहि लोकही में धर्महू यह देहको फलदेत ॥ सुनु धर्महैबहुद्वार शंका नेक करिहै तून । बर कहतहैं बुध क्रिया बिफला होति है कबहूंन ॥ दोहा ॥ कामस्वर्ग पुत्रादिके अरु वेदान्त बिचार इन । बिच जिहिमें होतहै निश्चय जाहिसुढार ॥ तिहिकोही कल्याण कर जानत है वहभूप । समुझत है नहिंअन्यको दायक मोद अनूप ॥ जानततृणकी तुल्यहै जिमिजिमि जगको सर्ब । तिमि तिमि होत बिरागहै प्रापत सुखद अखर्ब ॥ बुद्धिमान सबलोक को जानिदुःख मयभूरि । मोक्षहोनके यत्नकोकरै ज्ञानसों पूरि ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ धनके नष्ट भये अरु पूत । पित अरुदार मरे अनकूत ॥ होतशोकजो जासोंदूरि । सोगति कहोकृपाकरि भूरि ॥ भीष्मउवाच ॥ नष्टभये तेधनअरुदार । पिता पुत्र के मरे अपार ॥ दुख बिचारमें जगको सर्ब । जानि अनित्य सुप्रक्षअ-ग्बर्ब ॥ हरण शोककी करे उपाय । चिन्ता चितकीसर्ब बिहाय॥ यह जो प्रश्न कियो तुमजौन । ताके माहिं तातबुधिभौन ॥ यक इतिहास कहतहौं आम । बर प्राचीन ज्ञानको धाम ॥ एकहो भूपसेन जित नाम । कुष्ठित पुत्र शोकसों माम ॥ ताको मिल्यो एक बरबिप्र । सुहृद दूरि कर शुकसों क्षिप्र ॥ दोहा ॥ पुत्रशोक सों लखिभयो बिह्वल औ अतिक्षीण । जानि मूढ़मन भूप के ऐसे कह्यो प्रवीण ॥ अरिल ॥ कातू शोच करतहैभूपति । हैतू मूढ़ शोच्यतो तुहिअति ॥ तुमकोशोच करत लखि हैं डरि । बान्ध-वादि सब तव शोचैं करि ॥ रामगीती ॥ सुनु आत्मा तोमो सबै औ देह इन्द्रिय जौन । सब जहांसो आगमन कीन्हों तहींजैहैं तौन ॥ यह जानिकै तुमगहौधीरज धारि तजिकै शोक । सुख हेतुहै तुमबसोयातें ज्ञानवारिओक ॥ सेनजितउवाच ॥ बरकौनसीवह बुद्धि है अरु कौनसो तपबिप्र । अरु कौनसो है ज्ञान उत्तम कहो हमको क्षिप्र ॥ श्रुतिभई तुमको कौनसी है प्राप्त हे द्विज-राज । कबहूं न तुमको ब्यास तासों शोकथोक दराज ॥ ब्राह्मण-उवाच ॥ तुम अहो भूपति लखो सबसंसार मेंजे भूत । हैं किते उत्तम किते मध्यम किते अधम अकूत ॥ फलकर्मको सोदुःख करिकै युक्त हैं भूपाल । निजहृदय स्वच्छ सुठौरमें यहकैबिचार बिशाल ॥ हैकर्मदाता दुःख सुखको करत शोक नहर्ष । एक औरो मैं कहत कारण सुनहुनृप उत्कर्ष ॥ दोहा ॥ यहजो आत्मा सो नहीं है मेरो सुनुभूप । अच्युतको आभास है सोही नित्य अनूप ॥ आत्माही जो मोनहीं तौ पृथ्वी सुतदार । कैसे अपने जानिकै तिनसों करत पियार ॥ आत्मामें जो तो सबै मैंही हौं

भूपाल । ज्योंममत्योंहीं अन्यको जानोसत्य बिशाल ॥ ऐसीमति प्रापतभये हमको शुक औ हर्ष । होत न कबहूं सेनाजित सुनो भूपउतकर्ष ॥ सवैया ॥ जिमिद्वैकाष्ठ सुबहतबहत मिलिजातसमुद में । कछूदूरि मिलि बहत फेरि परि लहरि विहद में ॥ भिन्नभिन्न ह्वै जात तिमिहिहै भूतसमागम । ऐसेहि पुत्रपउत्र ज्ञातिबान्धव जानो तुम ॥ दोहा ॥ तिनसों नेह न कीजिये सुनहु भूपमो बैन । पुत्रादिक जेते सबैध्रुव दुःखहि के ऐन ॥ सोरठा ॥ रह्यो पुत्र तव जौन अच्युतते आयो हुतो । तहहिं गयो पुनितौन शोच करत तू क्यों नृपति ॥ तेहि न जानतजौन रह्योपुत्रहौ भूपतव । अरु जानत बुधिभौन तुहूंताहि क्यों करतशुक ॥ दोहा ॥ शोच करत है कौनको पूछतहौं मैं तोहि । अच्युत के आभास को कीशरीर को जोहि ॥ शोच करत है देहको तौ सुनु जड़ है देह । काष्ठादिकहूको करो शोच परम करिनेह ॥ अच्युतके आभास को शोचकरत जो भूप । तौसुनु अच्युत एकहै होयरह्यो जग रूप ॥ रामगीती ॥ दुखहोत तृष्णा नाशतेहै भये दुखको नाश । सुखहोतहै पुनि दुखहु पीछेकरत दुःखप्रकाश ॥ दुखके अनन्तर होतसुखहै होतपुनि दुखबक्र । सुख दुःख दोऊ मानुषनके फिरत इमि जिमि चक्र ॥ यहि हेतुते दुखभयो तुमको सुख अनन्तर भूप । सुखहोयगो जूतुम्हें प्रापत फेरि परम अनूप ॥ जन लहत हैं नहिं नित्य आनँद लहत नित्य न दन्द । सुख दुःख कोयह मैं शरीरहि धाम भूप बिलन्द ॥ सुनु जौन जौन सुदेह करिकै करत देही काम । निश्चयहि भोगत तौन तौन शरीरही सों आम ॥ नृपहोतहै उत्पन्नसंगहिअल्प थूल शरीर । करि बिबिध रूप प्रकाश संगहि रहत जगमें धीर ॥ सोरठा ॥ संगहि होत बिनाश अल्परुथूल शरीरको । जिनके ज्ञानप्रकाश भयो तौन जानत मनुज ॥ प्लवंगम ॥सुधनादिक के नेह रज्जुसों जौनहै । बन्धु रहत जन अकृतारथहि तौनहै ॥ नष्ट जातह्वै इमिजिमि सेतसु-

रेत को । यहि जगतीके बीच लखे मैं केतिको ॥ हरिगीती ॥ अति अहंबुद्धिज क्लेश जो सोकर्षिकरिकै प्रेमसों । उत्पत्ति मृत्युहि चक्रमाहीं रहित करि कै क्षेमसों ॥ इहिभांति पेरत तिलन को जिमि तैलकार नृपालहे । यहकह्यो मैं तिहिमाहिं करु थिरिच-लहि मनहिं बिशालहे ॥ सुवनादिपोषण अर्थमानव करतजौन कुकामहे । दुहुँलोकमाहीं सोयपावत क्लेशको अतिमामहे ॥ शुक्र पंक सागर माहिं परि सुवनादिमें रत जौनहे । दुखलहतहैइमि बिपिनको जिमि वृद्ध मैगलतौनहे ॥ सोरठा ॥ सुतबित ज्ञातिसु-बीर नष्टभये ते अज्ञते । अतिही पावतपीर हायहाय करिरुदन बहु ॥ दोहा ॥ सुखदुख अरुउत्पत्ति अरुनाश भूप ये सर्ब । भा-ग्यहिके आधीनहे निश्चयजानु अखर्ब ॥ जेजनहैं बहुशत्रुअरु जेजन हैं बहुमित्र । अरु जेहैं सहअज्ञअरु जेसहप्रज्ञ पवित्र ॥ आभीर ॥ भाग्यहिते ते सर्ब । दुखसुख लहत अखर्ब ॥ दुखसुख दीबेमाहिं । कोऊ समरथ नाहिं ॥ दोहा ॥ धनसुखकारकहे नहीं बुद्धि द्रव्य भूपाल । यामें संशयहैनहीं भनत बुद्धि सु बिशाल ॥ तोमर ॥ नाहिं लाभ होत महान । बर बुद्धिसों बुधिमान ॥ अरु मूर्खता करि होत । नहिं हानि हे बुधि पोत ॥ सब भोग्य बस्तु सुजान । तिनको सु जो निर्मान ॥ तिहि माहिं निश्चय जौन । बरप्रज्ञ जानत तौन ॥ बलवान औ बलहीन । अरु शूरभीरु प्रवीन ॥ जड़मूढ़ पण्डित जौन । तिनमाहिं हेबुधिभौन ॥ दोहा ॥ सुखभागी हैं जौनजन ते सुखलहत महान । दुखभागी हैं जौन जन ते दुख लहत सुजान ॥ बछरास्वामी गोपअरु लोभीचोर अखर्ब । यक सुरभी को कहत ये अपनी अपनीसर्ब ॥ पै इन सबहिन माहिं जोपावत दुग्धप्रवीन । सुरभी ताहीकीगुणोऔरै काहू कीन ॥ ऐसेहि माता कहतिसुत अपनोकरिकैप्यार । पिता कहत अपनोसुवन करिकै प्रीतिअपार ॥ भगिनीअपनोकहति है भाई करि अति प्रेम । इमि कुटुम्बके और सब अपनोकहत

सच्छेम ॥ सोरठा ॥ पै इनसबमें जौन तासों जोमुदलहतहै। ताही को बुधिभौन जानो वह नहिं अन्यको ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञान को प्राप्तभे जे निश्चय करि पर्म। अरु जे मानत मूढ़अति जगके माहिं सुकर्म ॥ तेई अति आनन्द को प्राप्तहोत भूपाल। और दुःखको लहतहैं कहत सुप्रज्ञ बिशाल ॥ ब्रह्मज्ञान में रमत हैं मन थिर करिकै जौन। अरु सुषुप्ति में रमत जे अन्तर मति नहिंतौन॥प्रापति ज्ञान सुषुप्तिकी ताहि कहत आनन्द। अन्तर इनदोऊनको ताहि कहत बुधदन्द॥परम ज्ञानके मोदको सुनोलहत है जौन। काहूसों नहिं ईर्षा करत तौन बुधि भौन ॥ अर्थ अनर्थ न देतहै तिनको श्रेय अश्रेय। महत प्रज्ञते कहतहैंमनहिं ज्ञानमें देय ॥ प्राप्तभये नहिं ज्ञानको तजै मूढ़ता जौन। अतिहि मोद सन्तापको प्राप्तहोत जनतौन ॥ अरिल ॥ तिनही रहत मूढ़है मुदमय। ज्योंसुरलोक माहिं सुरकेचय ॥ महतगर्ब सोलहत अनादर। तबहूं ज्ञान गहतनहिंसादर ॥ तोमर ॥ नाहिं मूढ़ हैं जनजौन। रतज्ञान में बर तौन ॥ मन नित्यराखतभूप। सुखदाय जानि अनूप ॥ दोहा ॥ सुखको देखि दुखान्तअरु दुख को देखि सुखान्त। प्राप्तहोनको ज्ञानवर साधन करै नितान्त॥ बसति विभूति सुदक्षमें श्रियसमेत मतिऐन। निश्चय जानहु भूपवर बसति आलसी मैन ॥ प्राप्त जौन हैं दुःखसुख अप्रिय प्रियभूपाल। तिनसबंहिनको भोगिये धीरज धारिबिशाल ॥ सह सन लक्षण शोकअरु साध्वसके हैं गेह। तिनकोप्रापत होतहै मूढ़नहीं बुधिगेह ॥ अरिल ॥ ज्ञानवान वेदज्ञ सुमति मत। अनसूयक अरु इन्द्रिय चित जित ॥ जे जन हैं तेजनकबहूंनहिं। प्राप्त होत हैं शोक थोक माहिं ॥ दोहा ॥ बरबुधजन यह जानिकै कामादिक जेसर्ब। तिनसों मनको गुप्तकरिचलत नरेशअखर्ब॥ जिहि कारणते होय दुख शोकताप श्रम भूरि। सोअँग में जो होयतौ अंगहु कीजैदूरि ॥ ममतासों कल्पितकछू बस्तुहोय भू-

पाल । सोई सब परितापको प्रापत करत बिशाल ॥ तजिदेजो जो कामना सोसो देतिअनन्द । कामहिं पीछे नशत जन जौन सकाम नरेन्द ॥ जौन कामनाको शरम लोकमाहिं यहि सर्व । स्वर्ग माहिं अरु प्राप्तिको जोहै शर्म अखर्व ॥ पै तृष्णाक्षयते परम होतशरमहै जौन । षोड़शांश सम तासुये होत नहीं बुधि भौन ॥ जैसे पूरबदेह कृत कर्म अशुभ शुभ भूप । तैसे भोगत भीरु भट मूरुखप्रज्ञ अनूप ॥ चरणाकुलक ॥ जीवनमें सुखऔदुख नितही । फिरत प्रकाश कियेहैं अतिही ॥ यह गुणिके बुध जन हिय माही । बैठे रहत सुचित्त सदाही ॥ दोहा ॥ सब कामन के वृन्दको निन्दि निन्दते सर्व । करतपीठि पीछेपरम दुःखदजानि अखर्व ॥ देहिन में यह कामजो जानहु सोई क्रोध । देहि होत जिमिदुग्धको जानतलोनसबोध ॥ लेशकेलि सबकामजबजिमि कूरम तन स्वक्ष । आमज्योति तबहोतहै आपुहिमाहिं प्रतक्ष ॥ डरैआपु काहूनसों अरु न आपुसों कोय । ऐसी बिधि सेतीरहै कामादिक को गोय ॥ भुजगप्रयात ॥ नराखै बिरोधै न कामैहिराखै। कबौंहूं नहींझूठ औसांच भाखै ॥ सबै छोड़िदे शोक आनन्द थोकै । तजैप्रीय अप्रीय इन्द्रीय रोकै ॥ जबै सर्वप्राणीनमें पाप भावै । करैकी कबौंहूं मनो मैं न लावै ॥ तबै जातहै होयजूब्रह्म प्रानी । निसन्देह मानोकहैं ब्रह्मज्ञानी ॥ दोहा ॥ कुबुद्धीनसोंजाति है छोड़ि दुःखसों जौन । वृद्धहोत जिमिमनुज तिहिहोतिसुपौढ़ी तौन॥ महारोग प्राणांतजो तृष्णा ऐसीभूरि । ताहितजेसोंरहत जन महत मोदसों पूरि ॥ रामगीती ॥ बरकही गणिका पिंगलाकी कथाएक अनूप । मैं कहतयहि परसंगहीमें तौनतोको भूप ॥ सुनि पिंगला अतिकष्टवारो भयेप्रापतकाल । शुभसनातन धर्म को सोभई लहति बिशाल ॥ नृप अर्थ रहिता भयेते संकेत में बितपीय । गतकष्टमेंह्वैके अनन्तर शांतिमाति गहिहीय ॥ गुणि पिंगला जो कह्यो सो मैं कहतहौं सुनुभूप । हियरमण अति

आनंदरूप सुविद्यमान अनूप ॥ च्युतहोतनाहिं कबहूंन ऐसोकांत जोहैताहि । मैं दयोढपि अज्ञानसों जान्योनहीं अवगाहि ॥ इक थूण है अज्ञान ताकेमाहिं ऐसो आम । यह जो शरीर अगार पार्थिव दुखद अतिहीमाम ॥ मैं नासिकादिक द्वारताके ढांपि देहौंसर्व । उत्पन्नजोंभो ज्ञानतासों सुखदपरमअखर्व ॥ हियरमण मुदमय नित्यजो है कांतताको जानि । अबकौन अज्ञज कान्त कान्ता भावको है मानि ॥ अबठगि न सकिहैं मोहिंतटसोंनरक-रूपी पर्म । मैं भई ज्ञाता औ अकामा जगातिहौं सहशर्म ॥ बर पूर्वकृतसों किधौं सुरकी कृपाते अभिराम । जौनअर्थ अनर्थ हम को अर्थभोसो माम ॥ अब बिषयरहिता ज्ञानरूपा भईहौं अति-स्वक्ष । बशभईं मेरेसर्व इन्द्रियं भये ज्ञान प्रतक्ष ॥ नित सोवते हैं श्रेयसो है रहित आशाजौन । यहि हेतुते नैरास्य जान्यो महा आनँद भौन ॥ दोहा ॥ आशाको तजि पिंगला प्राप्तभये ते ज्ञान । निर्भय ह्वै सोवतिभई आनँद सहित महान ॥ ज्ञानभये ते परमये सुनि सुबिप्र के बैन । पुत्रशोकतजि सेनजित होतो भयो सचैन ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ आशाजीति महान करै सुइच्छामोक्ष की । यहतुम कह्यो सुजान तातपूर्व अध्याय में ॥ दोहा ॥ सुन्यो तौनाथिर करि मनहि अबये कारण और । पूछतहौं मैं तौन तुम कहौतात करिगौर ॥ जयकरी ॥ सबकोनाशहोत जिहिमांहि । होत व्यतीत कालको ताहि ॥ कौन श्रेयकर कीजै तौन । कहौ पिता-मह प्रज्ञाभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ यहिप्रसंगके माहींभूप । कहतएक इतिहासअनूप ॥ पितापुत्रको तामेंपर्म । हैसंबाद अमन्दसुकर्म ॥ रामगीती ॥ बरएक द्विजहै परम धर्मी बेदपाठी माम । भोहोतताके पुत्रउत्तम महामेधा धाम ॥ अभिधानताको होत मेधावी भयो भूपाल । सोलोक कारजमें हुतो मतिऔकदक्ष बिशाल ॥ अरु

मोक्षधर्महु माहिंसोहो बिचक्षण अवदात । गुणिभयोपूंछतपिता को इहिभांतिसों हेतात ॥ पुत्रउवाच ॥ सुनुपितर हेजबअसदसद को होयप्रापतज्ञान । तबकहा करियेकहोमोको आपुप्रज्ञमहान ॥ मैंजानितिहिको करौंजूआचरणसुनि बिख्यात । निजुमनुष्यनकी आयुजो सोनशतक्षिप्र हितात ॥ पितोवाच ॥ सोरठा ॥ पूंछोतुम यह जौन सो अतिउत्तम प्रश्नहै । सुनहुतात बुधिभौन गुणिकेतुमसों कहतहौं ॥दोहा ॥ ब्रह्मचर्य्य ब्रतकरिसबिधि पढ़ैप्रथमही बेद । करै फेरि पितृकार्य्यको करिकेमनहिअखेद ॥ तदनन्तरइच्छाकरे पुत्र प्राप्तिकी तात । बिधि सों अग्निस्थापिपुनि करैयज्ञअवदात ॥ बसै बिपिन में जायपुनि होयसुमुनि अभिराम । यहि धर्महि को गहतसो लहत मोदहै माम ॥ पुत्रउवाच ॥ सोरठा ॥ ताड़ितहै यह लोक अरु चहुंधासों ग्रसितहै । आयुहरणि बुधिओक जामेंपरति प्रतक्षयह ॥ दोहा ॥ आपु स्वस्थसे ह्वैकहत ह्वैकैमहतसुजान । याते अचरज होतहै मोहिय माहिं महान ॥ पितोवाच ॥ कासों ताड़ित लोकअरु ग्रसित कौनसोंतात । आयुहरणि है कौनतुम कहौ मोहिं बिख्यात ॥ पुत्रउवाच ॥ ताड़ित है यहमृत्युसों ग्रसित जरासों लोक । आयुहरणि तामें परति निशातात बुधिओक ॥ आभीर ॥ जानतहौ तुम कौन । तात परम बुधि भौन ॥ दोहा ॥ नितही आवति जातिहै आयुहरणि निशि जौन । मृत्युजानिबे में कहा तौ संशय बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ आगे करि है धर्म यहि ते किमिइच्छाकरै । यहहेतात सशर्म हमसब छादित प्रकृतिसों॥ अरिल ॥ सुनो निशाबीतति है जिमि जिमि । आयुष अल्प होति है तिमि तिमि ॥ जादिन नहीं श्रेयकर कारज । होततौन दिन को ब्रत आरज । निष्फलकहत उदासीसोअति ॥ पलऊलहत न आनँद की गति ॥ प्रापत कामहोत जनकोजब । थोरेजलके मच्छकलौं तब ॥ कोऊसुखको होत प्राप्तनहिं । कहत सुबुध है ज्ञान परमगहि ॥ काम्यकर्म फलजौन बिचारत । शास्त्रदृष्टि

सों होय महारत ॥ काम्य कर्महीमें मनथापत । तिनको मृत्यु होय के प्रापत ॥ लेयजात ऐसे हैं गहिकरि । जैसे वृकी उरण को धरि करि ॥ दोहा ॥ ताते जू शीघ्रहिकरो श्रेयकारजे काज । खोवोब्यर्थ न कालयह गहिकै ज्ञानदराज ॥ जयकरी ॥ अकृत कार्य्यहीमें सुनुतात । अन्तक प्राणीको लेजात ॥ ताते करनो प्रातःकाल । जोकारजसो करियेहाल ॥ आपराह्णमें कीवेजौन । पूर्वाह्णिहिमें कीजैतौन ॥ जनको कियो अनकियो काज । मृत्यु बिचारत नहिं बुधराज ॥ दोहा ॥ मृत्युकालकैहै अबहिं किहिको जानतकौन । यातेशीघ्रहि कीजिये धर्म मार्गमें गौन ॥ सोरठा ॥ कियेधर्म अवदात होतिकीर्ति यहिलोकमें । निश्चयजानौ तात होतश्रेय परलोकमें ॥ दोहा ॥ पिता मात औभ्रात सुत तिनके पोषण काज । मोहि मोहि पगिकै महत जोजनकरत कुकाज ॥ बरवै ॥ जातमृत्युहै ऐसेलेकै ताहि । ब्याघ्र सोवते मृगको जैसे चाहि ॥ जौनकामनासों जनतृप्त न तात । नितही करतकुसंग्रह अति हर्षात ॥ जातमृत्यु तिनकोहू लै इमि आय । पंचाननगहि पशुको लै जिमि जाय ॥ इच्छा सुख शक्तहै अरुजन जौन । फलहि कर्मके प्रापत होत न तौन ॥ अरुजे रहत गृहादिकही में पागि । पुत्र पौत्रन बारि सुरतिमें लागि ॥ मृत्युजात तिनको हू लै करितात । क्षिप्रहि गुणिकै कहतसबुध अवदात ॥ दोहा ॥ मृत्युबिचारै दुर्बलहि नहिं बलवतहि न अज्ञ । नहिंमूर्खहिनहिं कादरहि नहीशूर नहिं प्रज्ञ ॥ हरिगीतो ॥ हैजरा औबकु ब्याधि दुःखअनेक कारणदेहमें । तुमस्वस्थलौंबैठे कहाहो तात सुनिये गेहमें ॥ दोहा ॥ जराकाल अरु जननको कीवेकाज बिनाश । सोहै आवन लगत है जन्मतही बुधिराश ॥ इन दोउनसों युक्तहै जीव चराचर सर्ब । यहबिचार हियमेंकरै प्रज्ञावान अ-खर्ब ॥ ग्राम जननकी प्रीतिजो सोहैअन्तक थान । सभासदन आरण्यहै देवनको मतिमान ॥ प्रीतिबन्धनी रज्जुहै ग्रामजनन

की तात । याहिकाटि धर्मातमा मुक्तिलहत अवदात ॥ जोजनहै पापातमा काटिसकत नहिं तौन । प्रीतिरज्जुमेंबँधि खिंचत इत उत दुर्मति भौन ॥ जोजन मन बच कर्मसों हिंसाकरत कबौन । बन्धनमें नहिं परतहैसोजन प्रज्ञा भौन ॥ रामगीती ॥ जोचली आवति मृत्यु वारी चमूबुद्धि अगार । सुनु सकत मारि न ताहि कोऊ कहत करि निर्धार ॥ अति जौन उत्तम ज्ञानसों हनि सकतहै अवदात । बरज्ञान माहीं रहतहै अमरत्व निजुहेतात ॥ जोब्रह्मप्रापति होनको जनकरतहै जप नेम । अरु ब्रह्म माहीं मिलनकी जोक्रियाकरत सप्रेम ॥ श्रुति औ गुरूके बाक्यको हैसत्य मानत जौन । निज सुनहुपितुवर ज्ञानसों अन्तकहि जीतत तौन ॥ अमरत्व मृत्यु सुरहतदोऊ देहहीमें तात । अमरत्व प्रके ज्ञानते अरु मृत्युसों मोहात ॥ ह्वैकै अहिंसक सत्यबादी क्रोधतजि अरुकाम । सुख दुःखको समजानि करिकै ज्ञानसों शुचिमाम ॥ निजु छोड़िहों इमि मृत्युको जिमिदई तजिसुर ज्येष्ठ ॥ इन्द्रियनको सब जीतिहों ह्वैज्ञान सों मैं श्रेष्ठ ॥ बर मोक्षपथ अभ्यास में नित निरत रहिहों तात । अरु मनन शील सुहोय के श्रुतिपढ़न में अवदात ॥ नित स्नानादिक क्रिया में निरतह्वैहों दक्ष । अरु गुरू वारी भक्तिमाहीं सहित प्रीति प्रतक्ष ॥ दोहा ॥ पशुमखमें कैसेकरों सुनहुतात साबिबेक । मोमें अरुपशुमाहिंमें जानत आत्मा एक । आभीर ॥ जाकेहै आधीन । मन औ बाकप्रबीन ॥ योगत्याग तपपर्म । सोजनलहत सशर्म ॥ जयकरी ॥ चक्षुनहीहैज्ञान समान । औन सत्यसम तपस महान ॥ रागसमान दुःखनहिं तात । त्यागसमान आनँदअवदात ॥ करतबिचार नित्य यह प्रज्ञ । कबहुं बिचारतहै नहिंअज्ञ ॥ ब्रह्मरूपकरि ब्रह्महि माहिं । भयो न पितसों मातामाहिं ॥ अरु मैंब्रह्महि माहिं सुजान । ब्रह्म रूपकरिकै सुखमान ॥ ह्वैहों पुत्ररूपसों नाहिं । निश्चय है नारीके माहिं ॥ रामगीती ॥ जोब्रास

निर्जनथानमें औ सबनमें समभाव। आचरणमें अरुजोप्रशंसा योग्यबर बुध राव ॥ अरु त्याग हिंसाको महा अरु सत्यभाव अखर्ब। बरक्रिया जेतीकरी उत्तम त्याग तिनको सर्ब ॥ हैबित्त जैसो बिप्रके यह हैनतैसो और। सिद्धांत जानो महत यह तुम कहत हम करि गौर ॥ दोहा ॥ जोतू मरिहैतात तौ कहा द्रब्यसों सिद्धि। अरु दारादिकहूनसों कहासिद्धि बुधि निद्धि॥ बुद्धिमाहिं जो प्राप्तहै ब्रह्ममोद मयपर्म। करिके तासु बिचारको होहुतात सह शर्म ॥ चरणाकुलक ॥ मेरोअन्तकाल किमि जानो। जो तुम ऐसे मोहिं बखानो ॥ तौमैंकहत तुम्हैंहो सुनिये। मेरेबचन हिये में गुनिये ॥ दोहा ॥ गयेपितामह तवकहां अरुतवपिता सुजान। यहिते जानत तुमहुँ निज मरिहौ गुणहु न आन ॥ भीष्मउवाच ॥ पिताबचन ये सुवनके सुनिके बर बुधिगेह। ज्ञानभये करतोभयो मोक्षधामसों नेह ॥ सोरठा ॥ तिमिही कुन्तीनन्द मोक्षधर्मसों नेह करु। गहिके ज्ञान बिलन्द तजिप्रमादताको परम ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेपितापुत्रसंवादोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥ युवा अवस्थाहीमें साधनकरै मोक्ष को स्वक्ष। पिता पुत्रके संबादैकहि तुम यहकह्यो प्रतक्ष ॥ सो बिन यज्ञन होत है धनबिन होतनयज्ञ। याते निधनी पाय है मोक्षकहौ किमिप्रज्ञ ॥ भीष्मउवाच ॥ कह्यो मोहिं सम्पाक ऋषि यकइतिहास अनूप। यहिप्रसंगमें कहतहौं सो मैं तुमकोभूप ॥ मंजुगिता ॥ धनहीनसो द्विजपर्महो। अरु बुद्धिमान सुधर्महो॥ बर-रतेजको बहुधामहौ। अरुसत्य मान ललामहो ॥ अति भूषण बस्त्र मलीनसों। दुखयुक्त दारिद पीनसों ॥ इमि मोहिंसो द्विज चाहिके। कहतो भयो अवगाहिके ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ उत्पन्नजेयहि लोकमें। सुखमाहिं कबहूं शोकमें ॥ सब होत प्रापत हैं सुनो। यहि माहिं संशय ना गुनो ॥ मतिमानते यह जानिके। बरबुद्धि सों अनुमानि के ॥ दोहा ॥ हर्षित तो नहिं होतहै प्रात होय जो

शर्म । दुखप्रापत जो होय तौ कष्टित होत न पर्म ॥ कामना न तुम करतहौ तऊ मुक्तिपद जौन । ताके सोहैं चलतहौ क्यों न आपु बुधिभौन ॥ गहिसुप्रतिज्ञा सर्बदाधीरज धारिमहान । क्यों न करत बशआपने मनको हे मतिमान ॥ त्यागी जन चहुंधा फिरत महत लेतकल्यान । सुखसों सोवत उठतहैं लहतनभीति सुजान ॥ याते हे गंगासुवन त्याग सोयआनन्द । त्यागहिहैबर मोक्षको मार्ग चारु निर्दन्द ॥ यहमारग को लहतहैं योगीजन अवदात । लहत कबहुंभोगी न निजु जानो गंगातात ॥ अरु कामीजन जौनते लहत न पथयह पर्म । यहिमारगमें चलतजे कामीहैंन सशर्म ॥ रहित रागसोंजौन जन तासम और न कोय । परम ज्ञानगहि रहतसोमहामोदसों भोय । त्यागभाव अरुराज को तोलत भो मैं दक्ष । कौनश्रेष्ठ यह जानिबे बुद्धि तुलामेंस्व-क्ष ॥ गरू भयों अतिरासतों त्यागभाव सों पर्म । मैं निश्चय करिकै कहत गंगासुवन सुकर्म ॥ सोरठा ॥ यतो बिशेष महान त्यागभाव अरुराज्य में । नित क्लेशित धनवान मृत्युबदनगत लौं रहत ॥ चरणादोहा ॥ अग्नि चोर भय मृत्युभय इन्द्रिय पीड़ा जौन । जगतआशधन त्यागिको येसु होत कबहौन ॥ जयकरी ॥ सदा कामचारीहैं जौन । अरुभूसाईजेबुधिभौन ॥ जाकीशान्ति प्रकृति अति होय । तिन्हैं सराहत हैं सुरजोय ॥ क्रोधलोभसों युतधनवान । नितही रहत सुनो मतिमान ॥ सूखे बदन रहत हैं नित्य । तिनके बोलत रहत असत्य ॥ चलैंबक्र ह्वै तिनके नैन । बसेरहत पापहि के ऐन ॥ अरिल ॥ टेढ़ी भृकुटी नित्यहि राखत । कुत्सित वचन नित्यही भाषत ॥ तिनके पास जात नहिं बुधबर । रहत दूरिही जानि दुष्टतर ॥ दोहा ॥ कमलाऐसे हरति मन मूरखको मतिमान । बारि बाहकोलेतहै जैसेहरि पव मान ॥ अबिचक्षणके चित्तको जब कमला हरिलेत । गाहिकैधन कुल रूपको गर्बहि गहत अनेत ॥ गहिकै गर्बहि कहत इमि

नहीं कबौहुं जौन अज्ञहै ॥ दोहा ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसंगमेंभूप । प्राप्तभये निर्वेदऋषिमंकी कह्योअनूप ॥ गामगीती॥ बरऋषीमंकी द्रव्यकाजे करें बहुत उपाय । पैहोयासिद्धि न एक पुनि पुनि व्यर्थही ह्वै जाय ॥ जो रह्यो बाकी द्रव्य तासों बत्स लीन्हे दोय । दृढ़ बांधिकरिकै तिन्हैं शिक्षाकाज निकरयोजोय॥ बलवान दोऊ बत्स पथमें ऊंटबैठोदेखि । चकिभये धावतमध्य में केरह्यो मंकीपेखि ॥ ते भयेप्रापत्त कंधमें अनशील उष्टरहोय। अतिभयो धावत शीघ्रगति लैबच्छरनको दोय ॥ गरऊंटके में तहां मरते बच्छरनको देखि । इमिकहत भोसो ऋषीमंकीचित्त में अवरेखि ॥ धन जो नहींहै भाग्य में बरदक्षहू को तौन । हम को सुनिश्चयभयो प्रापत होतहै कबहौंन ॥ फलकी सुप्राप्रति माहिं करिनिश्चय सुभांति अनेक । लगिकर्मकेतेकरो पैहै होत सिद्धि न एक ॥ भो द्रव्यके व्यापार में मोपूर्बहो परिभाव । करि समाधान सुचित्त को हमकियो फेरि उपाव ॥ अबऊंट औबछ-रानके सम्बन्ध करिकै मोर । हा दैवकृत यह लखोजोभोहै उप-द्रव घोर ॥ हे कहा मेरेबत्स अरु यह कहा उष्टर हाय । दैव कृत परसंगसों मोदुओ बत्स उठाय ॥ धावतो है कुपथमाहीं बिषमगाहिकै चाल । बत्समेरे परमप्यारे ऊंटदुखद बिशाल ॥ ऊंटगरमें बत्सभूलत चारुमाणिलौ दोय । भाग्यमें जो लिख्यो सोईहोत और न होय ॥ तोटक ॥ पुरुषारथसों धन होत कहें ॥ जनजे जगमेंबर प्रज्ञनहैं ॥ धनहोत नहीं पुरुषारथसों । हम जानिलियो मतिकेपथसों॥ दोहा ॥ पुरुषारथसों धनमिलै भाग्य माहिं जोहोय । भाग्यमें न जोहोयतो परैनहीं कहुंजोय॥तातेजो बैराग्यहै धारणकीजे ताहि । जोधारत बैराग्यसो सुखसों रहत सदाहि ॥ धन साधनके माहिंमन सोजन लावतहैन । जौनधरत बैराग्यको करतसदाहै चैन ॥ सर्व कामनासों छुटे श्रीशुकदेव सुजान । महत ब्रह्मज्ञानीहुते धारे मोदमहान ॥ मौनी ॥ तिनयह

भांतिकह्यो है करि सिद्धान्त । जोजनभो सबकामहि प्राप्त नि-
तान्त ॥ अरु कामन को त्यागे जो जन सर्ब । तिन दोउनमें
त्यागी श्रेष्ठ अखर्ब ॥ अन्त सर्ब कामनको जोहै ताहि । प्राप्त
भयो है कोऊपूरब नाहि ॥ जबलग जीवत मानव मूढ़अखर्ब ।
तबलग बाढ़ति तिनकी इच्छा सर्ब ॥ अरिल ॥ कामी निर्वेदै
गहु तू अब । निबरत होत कामनासों सब ॥ कितीबार तव
भयोअनादर । तऊ बैराग्य चहत नाहिं सादर ॥ अबिनाशी
मोको जोजानत । मोसह जोतु बिहारहिठानत ॥ तौ मतिलोभ
संग मोको करि । कहत बित्तकामुक तो सों अरि ॥ तैं संचित
धनकीन्हों जबजब । होयगयो है नष्टहि तबतब ॥ धनकामुक
कबहूं ज्ञानैगहि । धनेच्छाहि तजिहै की तूनहि ॥ दोहा ॥ मेरोहै
मूढ़त्वयह जासों तैं करि ख्याल । राख्योकरिबश आपने मोको
दुखद बिशाल ॥ जयकरी ॥ कामवानजो होतो तून । परदास्यहि
करतो को ऊन ॥ पूरब अपरसमयके माहिं । काम अन्तगोकोऊ
नाहिं ॥ यातेधनउपाय सबत्यागि । मैंप्रतिबुद्धि भयोंअबजागि ॥
है तव हियरो बज्रसमान । मैं निश्चयहै कियोमहान ॥ युक्तअ-
नर्थ बहुनसों जौन । तउ बनहोत बिदीरण तौन ॥ जैसो तू है
तैसो आम । अबहम जानि लयो है काम ॥ बार ॥ और जौन
तेरे प्रिय तेऊ हमजाने । जैसो तूतैसे तवप्रियहू सबमाने ॥ तेरे
प्रिय जे हैं तिनमाहीं नितिपागे । आतम सुखके न कबौं निकटै
हमलागे ॥ जयकरी ॥ मूल तिहारो अबहैआम । जानि लियो है
सुनु हे काम ॥ मनसंकल्प करत अवतार । तेरोहै हे दुखद अ-
पार ॥ करिहौं संकल्पहि अब नाहिं । जासोंतू नहोय मोमाहिं ॥
धनइच्छासो दुखद महान । लब्ध करेधन चिन्तावान ॥ धनकी
प्रापति मृत्यु समान । भूरि दुखदहै कहत सुजान ॥ धनप्रापति
ह्वैहै की नाहिं । संशय तासु उपायहि माहिं ॥ दास्यहुकीन्हें मि-
लत न जौन । तासम दुखद औरहै कौन ॥ लब्धद्रव्यमों तो-

षतनाहिं । धनकीरहैउपायहिमाहिं ॥ धनसोंतृष्णाकार बिशाल । जैसे गंगाको की लाल ॥ नाशयज्ञको जाके माहि । ऐसो द्रव्य दुखदहै ताहि ॥ अबहम जानि लयोहैआम । तातेहमैं छोड़िदे काम ॥ मोशरीर आश्रितहै जौन । दारापुत्रादिक सबतौन ॥ बसै जहां मनआवे जाहि । हमसों कछूकामहैनाहि ॥ पितापुत्रअरु पौत्र सुदार । तिनमें है नहिं प्रीति हमार ॥ ताते सबकामनको त्यागि । रहिहौं सत्व सुगुणमें पागि ॥ सर्वभूतमय आतमजौन । हृदय कमलमें लखिके तौन ॥ चरणाकुलक ॥ मतिको योगमाहिं में धरिके । श्रुति में चित्त एकाग्रहि करिके ॥ मनको ब्रह्ममाहिं में धरिहौं । रागद्वेष सबही परिहरिहौं ॥ हरिगीती ॥ सुख सहित मैं करिहौं बिहारहि काम तोक्रोत्यागिकै । नहिं प्राप्त ह्वैहौं फेरिदुख में कामतामें पागिकै ॥ जो योगमाहीं धरी मेधा तिहि बिना न उपायहै । है और तोसों छुटनकी हम कहत निजु दुखदायहै ॥ श्रमशोक अरु जो महत तृष्णा तासु तूही धामहै । जेतजत तोको प्राप्तते जनहोत सुखको मामहै ॥ हमको परोअब जानि धन दुखदाय अतिही होतहै । जबनाश ताको लहतहै तबकरत क्लेश उदोतहै ॥ कला ॥ धन गहनहिं जानिकै । चोरबहु आनिकै ॥ पकरि धनव निको । बांधिकै पानिको ॥ महत अति मार दे । शिर उपर भा दे ॥ देतबहु क्लेशहै । खैंचिकै केशहै ॥ तोमर ॥ यहि हेतुतेधनमा हैं । मनमैं लगैहौं नाहिं ॥ अरुकाम तोहुन-गीच । मनहौंन दे हुं न नीच ॥ शोभा ॥ बहुत दिननसोंतेरे । जान-तहौं गुणएरे ॥ दुखअरु चञ्चलता है । तोमें और कहाहै ॥ अरिल ॥ जगमें जौतूबस्तु निहारत । तिनसबको तूलेन बिचार-त ॥ अनलअघात नहीं कबहूं जिमि । कबहुंअघात नहींहै तू तिमि ॥ रामगीती ॥ सुलभ दुर्लभ बस्तु तिनको तू बिचारत ना-हिं । तूअसन्तोषी परमहै सन्तोष नहिं तवमाहिं ॥ जिमिभरत काहूकोभरो कबहूं महींपाताल । तिमिभरतहै कबहूंनतूहू अरेका-

मबिशाल ॥ दोहा ॥ युक्त मोहिं तू दुःखसों वियो चहतहैफेरि । सो अबमैं इहैंनहीं कहततोहिं हौं टेरि ॥ चरणादोहा ॥ अबप्रवेश की बेकी मोमेंशक्ति न तोमेंकाम । तोहिंतजेते मोको एरे प्राप्त भयो सुख माम ॥ जयकरी ॥ दुःख पायहौ मोबिन माम । ऐसे कहे मोहिं जोकाम ॥ तौसुनु एरे दुखद अखर्ब । महत कलेश सहोंगो सर्ब ॥ पै अब अमति मानलौ भूरि । नाहिं चहिहौं तोको रहुदूरि ॥ धन विनशेहानिंदित पर्म । पै सो बहौंगोमें सह शर्म ॥ मैं चित्तकी गति तजिके सर्ब । तोहिं तजतहौं काल अखर्ब ॥ ताते कबहुं न संग हमार । बसिहै तू सुनु दुखद अपार ॥ चरणादोहा ॥ मैं सुनिकै अपमान कारके बचन न करिहौं क्रुद्ध । क्षमा धरेही रहिहौं निति अब कीबेको मनशुद्ध ॥ सारंग ॥ सुनु मारिहै जौन जन मोहिंअब आय । मैंमारिहौं ताहि नाहिं क्रोधधरि धाय ॥ करि श्रवण अप्रीय बैरीन केबैन । गुणि हौं न अप्रीय मैं कहतहौंऐन ॥ बैरीनको कहोंगो मिष्टमैं बोल । कबहूं न धरि हौं हिये भावकोलोल ॥ अरु दयासब जीवकी धारिहौंमाम । नहिं चाहिहौं ताहि हे कबहुं मैं काम ॥ दोहा ॥ इन्द्रियको जो जीतिबोसुख अरु क्षमाअक्रोध । शांतितृप्तिनिर्वेदअरु अरुजोहैबरबोध ॥ इनसबहिनकोप्राप्तभो मोहिंजानुहे काम । तातेहोहु न पासमम लोभादिक सबमाम ॥ तोमर ॥ अबछोड़िदे तू मोहिं । सुनुहे कहौं हौं तोहिं ॥ अब सत्वगुण अभिराम । तिहि ऽ [illegible] करि आम ॥ दोहा ॥ ब्रह्मनगरकोमैं कियो परमथान तजि [illegible] अबलोभादिक के नहीं मैं बशमाहँ अखर्ब ॥ कमल ॥ अज्ञ [illegible] मे भूरिहै । रहत दुख पूरिहै ॥ तिमि न दुखपायहौं । काम दुखदायहौं ॥ कामना जौनहै । सर्बदुख भौनहै ॥ छोड़िदे जौनही । देतिसुखतौनही ॥ रागिका ॥ महंत रजोगुणको परकाश परमदुखद हमजानो । ताते अमरष कामबिशाल हो निजुहिं अनुमानो ॥ दोहा ॥ तिहिते छोड़ि रजोगुणहि ब्रह्मनगरके माहिं । बसि [illegible] एहौंनहीं कामा-

दिकके माहिं ॥ रंगिका ॥ ग्रीषममें पावतनाहिं ताप हृद अगाधमें जैसे । छोड़े सबकामादि कलाप दुख न लहतहै तैसे ॥ मौनी ॥ कामादिकको छोड़िलह्यो अनन्द । नष्टगयेके मेरेसब दुखद्वन्द ॥ मोद कामको जो है यहि जगमाहिं । अरु जो प्रापतको है देवन पाहिं ॥ तृष्णा बिनशे जोसुखकरत उदोत । षोड़शांशसमताके सो नहिं होत ॥ याते तृष्णा जाने दुखदा पर्म । दईछोड़ि तिहि ते मैं भयो सशर्म ॥ कबित्त ॥ अन्नमय प्राणमय मनमय ज्ञानमय आनन्दमय पांचकोष ये बखानेहैं । षष्ठम समाधि ताते सप्त है काममाम दुखदायी ताहिछोड़ि अरिलों महाने हैं ॥ मंकीइमिक हतमहतमोद भयोहोय प्रापतअबध्य ब्रह्मपुरको पुरानेहैं । भूपलों महान होयके प्रतापमान अति सुखको निदान पायबैठे हरषानेहैं ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ ऐसो मतिकोहोय प्रापत मङ्कीसुअरिषिब र । महामोद सोभोय निर्वेदहि पावत भयो ॥ तजि कामनको-पाश पायो ब्रह्मज्ञानको । भये बन्धनको नाश अमृतत्वहि पावत भयो ॥ इच्छा वृक्ष अमूल कीन्हों ज्ञान कुठारसों । तासों भयो अतूल प्रापत मंकी मोदको ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

भीष्मउवाच ॥ बरवादोहा ॥ उदाहरण यक और देतहैं यहिप्रसंग में प्रज्ञ । कहि इतिहास जनकभूपतिको कह्यो परम धर्मज्ञ ॥ जनकउवाच ॥ सोरठा ॥ द्रव्यादिकहैंजौन तिनको अपनो जानिबो । भ्रान्तिमात्रहै तौन रज्जुमाहिं ज्यों उरगकी ॥ प्राप्तभये तपज्ञान मोकोहोत न दुःखहै । लागेअग्नि महान जरतिदेखि मिथिला पुरी ॥ दोहा ॥ बुधजन यहिप्रसंगमें उदाहरणयक और । देतबोध्यबर बिप्रको कहिवृत्तान्त सगौर ॥सुनोयुधिष्ठरकहतहौं तुमको सोउदहार।नहुषभूप पूंछतभयो बौद्धहि बुद्धिअगार॥भयोशान्ति को प्राप्तसो लहिनिर्वेदमहान । शास्त्रमाहिं प्रज्ञानजो तासों तृप्त सुजान ॥ नहुषउवाच ॥ अहोबौद्धबर मोक्षको करहुमोहिं उपदेश ।

कौनसुमति वहआपुसों पूंछतहौं शुभबेश ॥ ताको प्रापत होय तुम सहितशान्ति आनन्द। रहतनित्यसो मोहिंतुम कहिये बुद्धि बिलन्द॥ बौद्धउवाच ॥ उपदेशन हमकरतहैं काहूको भूपाल। औ काहूको करतहैं शिक्षानहीं बिशाल ॥ मोक्षको सुउपदेशजो ताको लक्षण जौन। आपुहिलेहु बिचारि नृप कहत तुम्हैं हम तौन ॥ अहिसारँग औ पिंगला वेश्या औ सरकार। औकुमारिका कुररये हैंषटगुरू हमार ॥ सोरठा॥ गृहारम्भ दुखदाय सुखदायककबहूंनहीं। परकृतगृहमेंजायबसेरहत सुखसोंउरग॥ अरिल्ल॥ भिक्षावृत्ति आश्रितहैं जे मुनि। सुखसहजीवतते भूपति सुनि ॥ छोड़िद्रोह सबजीवनको जिमि। सुखसों रहत बिहँग सारँग तिमि ॥ दोहा ॥ आशासों अतिकष्टहै सुखनैराश्य महान। सूती वेश्या पिंगला आशातजे सुजान ॥ बिरचतहौं एकतीरको तीरकार मनलाय। जान्योवैनाहिं निकटह्वै ताकेगोनरराय ॥ सोरठा ॥ कुमारिकाके धामसंन्यासी कहुंते चले। आये तपके माम तेज भरे औ सत्व मय ॥ तिनके भोजनकाज लगीबनावन धानको। करमेंचुरी समाज कीन्हों शब्द दराज अति ॥ तब सब डारी फोरि राखीकरमें एक यक। भयो न शब्द बहोरि लगी बनावन शंकतजि ॥ ऐसे आपुहि एक रहै लहै तो मोदको। करिकै परम बिबेक सुनहुनृपति तुमको कह्यो ॥ सुख नैराश्यमहान वेश्या सों सीख्यो सुयह। सुनोनृपति मतिमान त्याग भावसो कुरर सों ॥ नित्यहि परकृत धाम रहिबे सोंहै होतसुख। सुनो नहुष अभिराम यहमत सीख्योउरगसों ॥ द्रोहन राखतजौन काहूसों सोरहतहै। महामोदके भौन यहसीख्यो सारंगसों ॥ मनलगाय बो भूप सीख्यो हम सरकारसों। प्रज्ञावान अनूप धामशील शुभधर्मके ॥ रहब अकेलोजौन ताहीसों सुखहोत है। सीख्यो है हमतौन कूमारीकी चुरनसों ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्व्वणिमोक्षधर्मेपंचमोऽध्यायः ५ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ ऐसोस्वच्छ सुव्रतहै कौन । सुनहुपितामह कीन्हेतौन ॥ रहित सर्वशोकनसों होय । रहैमहीमें सुखसों भोय ॥ श्रौऐसोहैकौन सुकर्म । ताहिकिये उत्तमगतिपर्म ॥ ताको प्रापत प्राणी होय । कहिये ज्ञानलैनसों जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ बर इतिहास अत्रमें एक । कहत सुनहुसो नृपसबिबेक ॥ अजगर सुमुनि श्रौर प्रहलाद । तामेंहै तिनकोसंबाद ॥ होकोऊ एकबिप्र सचेत । तिहिद्विजको प्रहलाद सहेत ॥ पूछतभो ऐसेमतिमान । करिकै आदरतासु महान ॥ प्रह्लादउवाच ॥ अरिल ॥ तुमदम्भादिक को नहिं धारत । स्वस्थ रहतबरबाक उचारत ॥ करत असूया काहूकी नहि । कुत्सित बचनरहत सबकेसहि ॥ धरेरहतहौबाल सुभावहि । लाभ मार्गमें देतन पांवहि ॥ नितिहि तृप्तसेतुमको देखत । काहूको न अनादर लेखत ॥ चरणदोहा ॥ कामादिकजल के प्रबाहमें बहति प्रजाको आप । देखिदेखिकै लेखिलेखिकैहोत सहित सन्ताप ॥ हंसदोहा ॥ अर्थ धर्म अरु कामना तिनमाहीं ब्यापार । करतनहींहौ कबहुंतुम लहिकै यहसंसार ॥ चतुरानन ॥ लगन देतनाहिंबिषय माहिंतुम परिभव इन्द्रियकोकै । साक्षीलों रहतेहौ नित्यहि छोड़िहर्ष औशोकै ॥ कौनशास्त्र अरुकौन बुद्धि वह कौनवृत्तिहै जाको । प्रापतहोय भयेहौऐसे धारेज्ञानमहाको ॥ मधुभार ॥ सुनिये सुबैन । बरबुद्धि ऐन ॥ सोबिप्र दक्ष । बोल्यो प्रतक्ष ॥ हरिगीती ॥ लखिजगतमें प्राणीनके ह्रासवृद्धिबिनाश को । नहिं धरत हैं पगलाभ मगमें भूरिधरिकै आशको ॥ अरु पुत्रपौत्रादिकनको संयोगताको देखिकै । निजुहैबियोगहि मुख्य ताके अन्तमें अवरेखिकै ॥ अरुश्रौर सञ्चय सर्बतिनको अन्त नाशहि जानिकै । मनमें न लावतहौं कबौहूं दैत्यपति अनुमानिकै ॥ हैह्रास वृद्धिबिनाशताको सुनोजानैजौनहै । जनसोयदेखत अन्तवत जन सगुणको बुधिभौन है ॥ दोहा ॥ ह्रासवृद्धि अरु नाशको जो जानत दैत्येश । तिहि जनसों नहिंरहत है कारज

कौनोंशेश ॥ जंगम थावर भूतसब्ब लोकनमाहिं जितेक । समय पायसब मृत्युको प्रापत होततितेक ॥ दोहा ॥ सबभूतनको देखिके । मृत्युयुक्त अवरेखिके ॥ मैंनकरत व्यापारको । औनाहिंदुःख अपारको ॥ जगमें जीवति तेकहैं । जोगति लहत तितेक हैं ॥ सोईमैंहो पायहों । यह बिचारिकै रायहों ॥ सोवतरहत अनन्द सों । रहितहोयकै दन्दसों ॥ कबहुं अनेकप्रकारके । भोजन अन्न सुढारके ॥ कबहुंमिलतहैंनाकबों । शोचकरतहमनातबों ॥ नरेश ॥ कबहूं कोऊजन आयके । लखिमोहिं दयासोंछायके ॥ बहुभोजन मधुरसुल्यायके । देजातप्रेम सरसायके ॥ दोहा ॥ कबहूं अल्पहि मिलत हैं कबहुं जीविकाकाज । कनाहिं चुनतहैं बिप्रबर हम हे दानवराज ॥ प्लवग ॥ कबहूं मांस अरु ओदन उत्तम खात हैं । कबहूं मध्यम कबहूं क्षुधित रहिजात हैं ॥ कबहूं भोजन प्राप्त होतहैं जोवरै । पुनि प्रापतिकी तृष्णामोमनतोकरै ॥ कबहूंहममहे सोवत पलँग सुठानपै । कबहूं धरणीमाहिं कबहुं पाषानपै ॥ कबहूंसोवत चित्रितचारु अगारमें । पुष्पसुगंधित शरीसैसुढारमें ॥ कबहूं बसनहम ओढ़तसुखद बिशालको । कबहुं चीरबलकलहि कबहुं मृगछालको ॥ दोहा ॥ कबहूंसनकेबसन अरु कबहुंरेशमी चारु । धारतपै निर्लोभता राखत बुद्धिअगारु ॥ जयकरी ॥ अचल अशोक अनाशित जौन । पावत परम श्रेयको भौन ॥ सुबुधनके मतमाहिं अमन्द । प्रापत अच्युतको निर्द्वन्द ॥ जानत मूढ़ न नीकोजाहि । ऐसो अजगर व्रतजो ताहि ॥ मैं हौं करतसुनो प्रहलाद । बुद्धिअचलको छोड़ि प्रमाद ॥ सोरठा ॥ लोभादिके वृन्दको सबमैं त्यागि । बरआजगर सुव्रतको करत हौं लागि ॥ धरतजे धीर्य्यको करत तेयाहि । सक्तकरि कादर न याहि अवगाहि ॥ दोहा ॥ नियत न यामेंभक्षको औफलको नहिं दक्ष । ऐसो जोव्रत आजगर ताकोकरत प्रतक्ष ॥ रामगीती ॥ यह करौं मैं यहकरौं यहितृष्णाहिते अभिभूत । नाहिंहोत प्रापत

द्रव्य ताते लहतक्लेश अकूत ॥ सुनु प्रज्ञ दानव नाथ ऐसो द्विजनको लखिहाल । ब्रतज्ञानसों मैं जानिकै यहकरत सुखद बिशाल ॥ अतिदीन ह्वैकै द्रव्यकाजै भये आश्रितदेखि । बर बुधनको अति अबुधजनके बुद्धिसों अवरेखि ॥ ह्वै चित्तजित अरु शांतिगहिकै परमउज्ज्वल होय । ब्रतआजगरको करतहौं लोभादिको मैंमोय ॥ रतिअरति लाभअलाभ ये आनंद ओना-नन्द । अरुमरणजीवन जौनहै प्रह्लाद प्रक्षबिलन्द ॥ सबजा-नि भाग्याधीनये बरज्ञान ते अवदात । ब्रत आजगरको करत हौं मैं धीर्यता गहिख्यात ॥ दोहा ॥ अहि अजगर को देखि मैं रागादिकको त्यागि । सुब्रतआजगरको करत धीरजतामेंपागि ॥ सत्य चित्तकी शुद्धता इन्द्रियनिग्रह जौन । इनसबसों हम युक्त हैं दानवपति बुधिभौन ॥ चरणादोहा ॥ नियतनमेरे शयनाशनको जानहु तुम सिद्धांत । सर्बब्रतनके संचयसों हमछूटे दानवकांत ॥ मनोहर ॥ छूटो चिदानन्दतेजौन । रूपादिक इच्छासों तौन ॥ अन्तकालमें दुखदमहान । तेहिसोंचपल न कोऊआन ॥ नित्य रहत है जौन सकाम । ताहि दुखद जानत बुध माम ॥ ऐसो जो मम दानव राज । ताहि सथावर कीबेकाज ॥ करत आजगरब्रत हम स्वक्ष । अति सुखदायक जानि प्रतक्ष ॥ रामगीती ॥ जिन क-ह्यो ग्रन्थनिमाहिं निरणय ब्रह्मकोअतिस्वक्ष । अवगाहि तिनको जानि निरणय तौन सुनु बरदक्ष ॥ मत आपने औ औरके मत सों बिचारत जौन । बरप्रज्ञ ऐसेकह्यो तिन यह आजगर ब्रत तौन ॥ दोहा ॥ नाशलहत जामेंसकल भिन्न ब्रह्मतेजौन । अन्तर हित अरुदोषसों भरो भूरि है तौन ॥ ऐसो जो है जगत यह ताको देखि प्रतक्ष । तृष्णासों अरु दोषसों रहितहोयकै दक्ष ॥ रहत सदा हौं नरनसँग पै तिनके जो कर्म । तिनमें लावत हौं न मन सुनु दानवपतिपर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ रहितहोय रागादिसों अज गरब्रतकोजौन । प्रज्ञबिचारतबुद्धिसों सुखीरहतहैतौन ॥ मधुभार ॥

पूछौ सुजौन। तुमबुद्धिभौन॥ हमकह्योतौन। सुनु भूमिरौन॥
इतिश्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेअजगरमुनिप्रह्लादसम्बादेषष्ठोऽध्यायः ६॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ रहितहोय रागादिसों अजगरलौं थितिजौन। करै सोय सुखलहत है कह्यो आपु बुधि भौन॥ सो पूछतहौं आपुसों जन मनकीथितिजौन। कहौ मोहिं अवगाहि कै ताको साधनकौन॥ बांधवहैकी वित्तहैकीप्रज्ञाकीकर्म। यहिमेरे तुमप्रश्नको गुणिये मतिसों पर्म॥ भीष्मउवाच॥ जयकरी॥ जनके मनकीहै थितिजौन। ताको साधन मति मतिभौन॥ मोक्षसाधनहु मतिहीजानु। याते अतिश्रेष्ठा अनुमानु॥ दोहा॥ प्रज्ञाहीसों प्राप्तभो परमपदहि बलिभूप। औप्रह्लाद सुनमुचिऔ मंकी सुऋषिअनूप॥ आभीर॥ प्रज्ञाकेसमतात। औरकछुन अवदात॥ जानहु यहसिद्धांत। सुनहु प्रज्ञ क्षितिकांत॥ दोहा॥ कहतएक इतिहासहौं यहिप्रसंगमें भूप। काश्यपको अरु इन्द्रको हैसंवाद अनूप॥ तोमर॥ एकवैश्यहो धनवान। अतिगर्ववान महान॥ रथपैचढ़ो सहहर्ष। कहुंजातहोउत्कर्ष॥ दोहा॥ पथमेंतिहिरथसों दयो काश्यप ऋषिहिगिराय। तिहिते काश्यप क्रोधयुत होतभयो दुखछाय॥ अतिही आरत होयकै मनके माहिं बिसूरि। कहत भयोयहि भांतिसों परमग्लानि सों पूरि॥ निधनीको निर्बाहनाहिं माहिंलोकके हाय। तातेमैं तनओकको देहौं निजुहि बिहाय॥ करि मरिबेकी कामना बैठो ह्वैकै मौन। धरि चितमाहीं दुचितई पथमाहीं बुधिभौन॥ धरिकैरूप शृगालको देवतेश तेहिपास। आयकहत ऐसेभयो करिकै बुद्धिप्रकास॥ मोदक॥ मानुष योनि महासुखदायक। या सम औरनहीं मतिनायक॥ राखत कोनहिं हैयहिकी तृट। भाषतहैं हम सत्यहितो टट॥ दोहा॥ करतप्रशंसा सर्वहैं मनुज योनिकी पर्म। ताहूमें ब्रह्मण्यकी अतिहूकरत सुकर्म॥ चरणाकुलक॥ मनुजयोनि सुखदा तुम पाई। ताहूमें ब्राह्मण्य सुहाई॥ ब्राह्मण्यहु लहि श्रोत्रियनीके। भयेआपुहोअ-

रुशुभश्रीके ॥ यह दुर्लभता लहि मनमाहीं । आपुविचारतहौ ऋषि नाहीं ॥ अल्पदोषहै दारिद बारो । ताते तुमहौ मरणबिचारो ॥ बरवा दोहा ॥ लाभहोलसब साभिमानहै जानतहौ ऋषि दक्ष । करत नहींहौ याते जान्यो हौप्रज्ञावत स्वक्ष ॥ सोरठा ॥ सिद्धिहोतहै अर्थ तिनसों जिनके पाणिहैं । तेई परमसमर्थ तिन सम कोऊनऔर है ॥ दोहा ॥ तिनकी इच्छाकरतहौं मैं जिनकेहैं पानि । पाणिवानको देखिकै मुदिता लहतमहानि ॥ निधनीजैसे करतहै धनकी इच्छापर्म । पाणिनकीमैं करतहौं इच्छा तिमिहि सुकर्म॥ पाणिलाभकी समनहै औरलाभ मतिमान । काढ़िसकत कंटहु नहीं हम दुखलहत महान ॥ दशतजीव लघु अलघु जब मेरे तनमें आय । बिनपाणिन सहि रहतनाहिं सकत खुजाय उड़ाय ॥ हैंदशांगुली पाणिबर जिनके तौनसदाहि । रक्षाकोनिजुअंगकी करतयल अवगाहि ॥ अन्नबसनके सुखन कोभोगत हैंतेपर्म । अरुचाढ़ि अश्वादिकनपै पावतहैं अतिशर्म ॥ मैंगला दिको करतहैं बशकरि बहुतउपाय । और कार्यबहुकरतहैं सिद्धि परम सुखदाय ॥ जिनकी जिह्वा होतिहै बाकशक्ति बिनबिप्र । प्राप्तहोतहैं दुखनको तेऊपुनिपुनिक्षिप्र ॥ सोरठा ॥ अरुजेजनहैं दीन अल्पबली अरुपाणिबिन । तेईरहत मलीन सहिदुखबिबिध प्रकारके ॥ तैसे तुमहौ नाहिं काश्यप सुनिये बिप्रबर । दुखसागर के माहिं क्यों बूड़त उतरात हौ ॥ दोहा ॥ प्राप्तभये कृमियोनिमें औनाहिं भयेशृगाल । पशुपक्षी मण्डूकअहि भये नबिज्ञाबिशाल ॥ पापयोनि जेऔर हैं भैनप्राप्ततिनमाहिं । उत्तमकैके बिप्रतुम हर्षलहत क्यों नाहिं ॥ देखिअवस्था आपुमम गुणिये हियकेमाहिं । याशरीरको काटिकै कृमिदुखदेतसदाहिं ॥ काटिसकत नहिंपाणिनाहिंतकतरहत मतिमान । पैशरीरत्यागतनहीं गुणिकै कलुषमहान ॥ भरिल॥ यहितेपापयोनि मैं औरैन । पाऊंयहसुनु करिकैगौरन ॥ तजतदेहहौं पावतदुखतर । सुनुहे

काश्यपबिप्र सुबुधबर॥ गमगीती ॥ हमलही योनिशृगाल कीहैपाप योनिनबीच । हैंयहूते हे और काश्यप योनि केती नीच ॥ दुख लहत प्राणीजन्महीसों किते आनँद पर्म । हमलख्यो काहूके निरन्तर नहीं पावतशर्म ॥ जनकृपण कोज्यों द्रव्यप्रापत होय तौमतिमान । हैकरत इच्छा राजकी सन्तोष नाहिंअज्ञान ॥ जो प्राप्तकबहूं देवते बरराज्यपदहू होय । तौकरतहै पुनिदेवपदकी कामनाको सोय ॥ जो देवपदहू होयकबहूं प्राप्त हैबरविप्र । तौ करनलागत इन्द्रपद की कामना को क्षिप्र ॥ तुमद्रव्य को जो पायहौतौराज्य नाहिंअभिराम। अरुराज्य पदहूपायहौ तौदेवपद नललाम ॥ बरदेवपदहू पायहौ तौ देवतेश नआपु। जो देवते-शहु होहुगे मिटिहैनकामकलापु ॥ जनतृप्त नाहींहोतकबहूं लो-भमेंद्विजराज । जिमिशान्त होतननीरसोंहैतृष्णा सुपरमदराज॥ सोबढ़ति ऐसो नीरसो जिमि समिध सोंसुकृशान । मैं कहतहौं अवगाहि तुमको बिप्रबर मतिमान ॥ है तुमहिं माहीं हर्ष औ हैतुमहिं माहीं शोक । अरुमोह परमबिवेक तुमहींमाहिं दुखसु-खओक ॥ तुमकरत क्योंहौदुःखयाते बिप्रबिज्ञ महान । तबद-शालखिकै भयो अचरज मोहिये मतिमान ॥ सबकामना अरु कर्मको जोहेतु इन्द्रियग्राम । यहिभांति रोकैताहि जिमिपक्षीहि पंजर धाम ॥ सोरठा ॥ कामकर्मको हेत यह जो इन्द्रियग्रामहै । रोकेताहि सचेत साध्य सहोत न निजुगुणो ॥ यहजो इन्द्रियग्राम सोईभयको हेतुहै । औरन हैबुधिधाम भयकारण निजुके कहत दोहा ॥ शीतादिकहै औरहू डरकेहेतुअनेक । जोतुमयह गुणिके कहौ तौ सुनिये सविवेक ॥ जयकरी ॥ बुद्ध्यादिककौ कीन्हे रोक । शीतादिकबारो जो थोक ॥ तेहिते होतनहीं है त्रास । यहनिश्च-य जीनो बुधिरास ॥ दोहा ॥ याते करिकैरोधतुम बुद्ध्यादिक को सर्ब । दूरिकीजिये ग्लानिको प्रज्ञावान अखर्ब ॥ आभीर ॥ एक हेतु मैं और । कहतसुनो करि गौर ॥ पाणिवान बलवान । होत

सोइ धनवान ॥ यामें संशयनाहिं । कहत सुगुणि तो पाहिं ॥ जयकरी ॥ केते पै सपाणिप्रभुहोत । केते दासहोत बुधिपोत ॥ याते भाग्य जानु बलवान । निश्चयकरिकै बर मतिमान ॥ चरणाकुलक ॥ बधबन्धन क्लेशनसों भारे । जेजनपुनिपुनि होतदुखारे ॥ तेईफेरि बिहारकरतहैं । हँसतरहत बहुमोद धरतहैं ॥ और लखो जेबलवन पानी । है जिनकी बरबुद्धिमहानी ॥ पाप वृत्ति करतेहैं भारी । जैसे करत महत अबिचारी ॥ पावनवृत्ति करनके काजै । उदित रहतहैं सकुलसमाजै ॥ पै भवितव्य कर्मते जोई । निश्चय बिप्रहोतहै सोई ॥ चण्डालहु मरिबेकीनाहिं । करतकामनाहै मनमाहिं ॥ अपनी योनिहि माहिं रहतहै । मोदित कबहुंन ग्लानि लहतहै ॥ यह माया प्रभुकी तुमदेखो । अपनेचित्तमाहिं अवरेखो ॥ रोगग्रसित प्राणिनको देखे । औ चखपाणि हीनकोपेखे ॥ रोगरहित चखपाणि सहित जे । जानत लब्धहि लाभ महतजे ॥ दोहा ॥ रोगरहितहौ आपुअरु अंग शुद्ध तव सर्ब । रहतवेद में नित्य हौ तत्पर प्रज्ञ अखर्ब ॥ याते हौ तुम बिप्रनहिं धिक्कत जगमें दक्ष । आपु बिचारत आपुको क्योंहौ नहींप्रतक्ष ॥ लाग्योअनृत कलंकजो अरु जो भो अपमान । देहत्याग कोऊकरत ताते नहींसुजान ॥ चरणाकुलक ॥ गुणिहौ जो तुम बचन हमारे । शुद्ध बिबक परमसों भारे ॥ अरु सुनिकै जो श्रद्धाकरिहौ । तौ तुम महामोदको धरि हौ ॥ जो वेदोक्तधर्म है पावन । तासु पायहौ सुफल सोहावन ॥ पढ़न पढ़ावनमें तुमरतहौ । अग्नि होत्र ताको प्रापतहौ ॥ अप्रमत्त ह्वै पालो सत्यहि । रोकोइन्द्रियको तुमनित्यहि ॥ निन्दास्तुती नकाहूकेरी । कीजै यहलहु शिक्षामेरी ॥ जेरतपढ़न पढ़ावनमेंहैं । ते काहे को शोचकरैंहैं ॥ औ जेयज्ञकरनमेंरतहैं । तेऊशोचसों रहत बिगत हैं ॥ अरुजे बिधिवत यज्ञकरावत । तेउनशोचकरत मुदपावन ॥ करत अमंगलकी सुधिनाहीं । कबहूंकिये सुकर्म सदाहीं ॥

दोहा ॥ इच्छाकरै बिहारकी तेकबहूंजौबिप्र। होतबिहार आनन्द को प्रापत तौवैक्षिप्र ॥ सुन्दर तिथि सुनक्षत्रमें औ सुमुहूरत माहिं। उद्भवतिनको होतहै यामेंअनृत नाहिं ॥ जयकरी ॥ शक्ति पूर्वक देतसुदान। बिधिवत यज्ञकरत मतिमान ॥ सुतकी ईहा में अभिराम। करतयत्न बहुबिधि बुधिधाम ॥ करतरहतहैं नित्य सुकर्म। करतनहींहैं कबहुं कुकर्म ॥ सोरठा ॥ पढ़न पढ़ावनमाहिं करन करावन यज्ञमें। जेजनप्रापतनाहिं सुनहुव्यवस्था तौन की। योनिआसुरी बीच कुतिथिमुहूरत नखतमें। जनिसो लेत नगीच कबहूंहोत न धर्मके ॥ दोहा ॥ न्यायशास्त्रमैंहों पढ़ोरहो कुपण्डित पर्म। निन्दा नित्यहि वेदकी मैंहोंकरत कुकर्म ॥ जयकरी ॥ वेदज्ञनको करिअपमान। बचनकहतहों होयअपमान ॥ नास्तिकहों औमूर्ख महान। मानतहों मैंपरमसुजान ॥ शृगालत्व प्रापत जो मोहि। ताहीको फलहै यहजोहि ॥ कबहूं जोसुनु सुमति अगार। मनुजयोनिमें जन्महमार ॥ ह्वैहैतौतपमें अति प्रीतिराखौंगोमैंसहितसुनीति ॥ देहौंदानसुकरिहौंयज्ञ। अप्रमत्त ह्वैके सुनुप्रज्ञ ॥ ह्वै सचेतमैं पढ़िहौं वेद। त्याज्य त्यागिकैहोय अखेद ॥ सुनिशृगालकी बाणीबिप्र। अचरज मानि उठो अति क्षिप्र ॥ कहतभयो इमिसुनहु शृगाल। हैतूपण्डित परमबिशाल ॥ ज्ञाननयनसों द्विज मति भौन। देखन लगो शृगालहि तौन ॥ देखै तौहै निर्जरपाल। बाढ़ोअतिही मोद बिशाल ॥ जानिइन्द्र को काश्यप विप्र। पूजा कीन्हीं बिधिसों क्षिप्र ॥ फिरि मघवाकी आज्ञापाय। गयोगेहको बरद्विजराय ॥

इतिश्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेइन्द्रकाश्यपसम्बादोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिल ॥ जनके मनकी तिथिको कारण। कह्यो बुद्धितुम करि निरधारण ॥ पूछतहौंएकहेतु औरबर। कहौतात तुम तौन सुमतिबर ॥ दोहा ॥ यज्ञ तपस्या औ गुरू शुश्रूषाअ-

रुदान । कालान्तर में बुद्धि के एईहोत निदान ॥ के कलुकारण ओरहे परम बुद्धिको स्वक्ष । कहो पितामहमोहिं तुम सरलरीति सों दक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनोयुधिष्ठिर बुद्धिहै कामादिकयुतजौन। तासों करत प्रवेश है मनकल्मष के भौन ॥ कवित्त ॥ जेते जग माहिं पापकारी जीवतेतेसब दुरभिक्षताते दुरभिक्षको लहतहैं भयताते पावत हैं भयको महानआति औकलेशताते लहिक्लेश को सहत हैं ॥ औजे शुभकारीते धनाढ्यताको पायकरिउत्सव ते उत्सवको लहत महतहैं । आनन्द ते पायकरि आनन्द बिलन्द फेरि आनन्द के पायबेको गैलको गहतहैं ॥ सोरठा ॥ त्रिदशालयते होत त्रिदशालय को प्राप्त पुनि । सुनहु सुमति के ओक पाण्डुपुत्र पालकधरम ॥दोहा॥ जामेंबहु उन्मत्तगत चोर ब्याघ्रबहुसर्प । ऐसोजोआरण्यहै तामेंभूपसदर्प ॥ नास्तिककेकर बांधि के दूरिहिदे पहुँचाय । तहांलहत बहुदुःखहैं नास्तिक भय सों छाय ॥ सोरठा ॥ सुनुपाण्डव मतिमान सत्यमान बरधर्मधर। यहिते दुःखमहान औरकहा है लोकमें ॥ दोहा ॥ जाको प्रिय हैं देव अरु साधु अतिथि नित भूप । अरुउदार जो लहत सो मारग सुखद अनूप ॥ पायशर्त की ऊषमा नष्ट अन्नभो जौन । ताके समहैं मनुजजे धर्म करतनाहिं तौन ॥ उक्ता ॥ किये कर्महैं जौन । संगरहत नित तौन ॥ पलक न छोड़त साथ । जानहु निजु नरनाथ ॥ चरणाकुलक ॥ शीघ्रचलत ताहू के पाछे । लागो रहत करमहै आछे ॥ सोयजात तौ अपहुसोवै । उठिजावै तौ आपहु जोवै ॥ चलन लगैतौ साथहिचालै । बैठै तौ बैठतनाहिं हालै ॥ प्राणी कर्म करै जो कोई । आपहुकरत छांहलों सोई ॥ जे जे कर्म पूर्व जनमाहीं । कीन्हें तिते रहत सबपाहीं ॥ अरिल ॥ यहप्राणी तिनको है भोगत । तिनहीं की रति में ह्वैकैरत ॥ जब बीतत है कर्मनको फल । तबहिंलगावत नहिं एकोपल ॥ काल चहूंदिशि ते है करषत । भूतग्रामको फेरिन परषत ॥ जैसेवृक्ष

लता अप्रेरित । फूलै फलै समयकी जोमित ॥ ताकोकबहूंकरत उलंघन । तैसे करमहु छोड़त संगन ॥ कर्म अशुभशुभ जिहि जिहि बयमहि । करत होत प्रापत तिहि तिहि महि ॥ आभीर ॥ जिमि गो सहसन माहिं । माता अपनी पाहिं ॥ पहुंचन वत्स सुधर्म । तिमिहिं पूर्वकृतकर्म ॥ जैसे बसनअमन्द । होतपंकसों मन्द ॥ सोसुबारिसों स्वक्ष । होततिमिहि सुनुदक्ष ॥ महत कलुष सों जौन । भे मलीनजन तौन ॥ बिषय त्याग सो पर्म । निर्मलहोय सुकर्म ॥ मोक्ष शर्मकोहोत । प्रापतते मति-पोत ॥ मधुभार ॥ बरबिपिनबीच । कैकै निभीच ॥ तपजोबिलन्द। कीन्हों अमन्द ॥ बहुकालभूप । तिहिसोंअनूप ॥ भेस्वक्षजौन । मानव सुतौन ॥ बरलहत ज्ञान । मोदत महान ॥ दोहा ॥ ज्ञान लाभ जबहोत तब सद्य मोक्षजोभूप । ताकोप्रापत होत्तहै मानव बिज्ञअनूप ॥ पक्षिनके आकाशमें जिमिनाहिं पांवादिखात । तिमि-हीगति ज्ञानीनकी जानीजाति न तात ॥ होतिहिये सद्वासना किये भूप सत्कर्म । सत्कर्महि है बुद्धिको कारणबिमल सुकर्म ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ अरिल ॥ है सत्कर्म बुद्धिको कारण । कह्योमोहिं तुमकरि निर्द्धारण ॥ सुन्योतौन एकप्रश्न और हम । करतकहौं अवगाहि तौनतुम ॥ रामगीता ॥ यहभयो किहिते जगत है बर चराचर मयसर्व । अरुहोतहै किहिमाहिं प्रापत प्रलयमाहिंअ-खर्व ॥ सब सहित सागर गगनसह सहशैलसह घन थोक । बरसहितअचला अग्निमारुत सर्बजोयहलोक ॥ हैभयोनिर्मित कौनसो कहिये कृपाकरि आपु । अरुभयो है किहि भांति सो यहसर्व भूपकलापु ॥ दोहा ॥ औभोबर्ण बिभागकिमि शौच अ-शौच सुजान । तिनको कहिये मोहिं तुम करिकै गौरमहान ॥ औजो धर्म अधर्म बिधि बर्णकिहै हेतात । परमतिसों अवगाहि कै कहौमोहिं बिख्यात ॥ तिनको कैसोजीवहै प्राणीजीवतजौन।

जात कहां यहि लोकते जौन मरतहै तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अनूप । सो अतिही प्राचीनहै मनथिरि करि सुनुभूप ॥ मनोहर ॥ गिरि कैलास शृंगपै स्वक्ष । बैठेहुते सुऋषि भृगुदक्ष ॥ तिनको लखिकैभारद्वाज । करतभये यह प्रश्नदराज ॥ रामगीती ॥ यह लोक केहितेभयोहै बरचराचर मयसर्ब । अरुहोतहै किहिमाहिं प्रापत प्रलयमाहिंअखर्ब ॥ सब सहित सागर गगन सहसह शैलसह घनथोक । अरु सहित अचला अग्नि मारुत सर्ब जो यहलोक ॥ है भयोनिर्मित कौन सोहै कहौमोको आपु । अरुभयोहै किहिभांति सों यह सर्बभूत कलापु ॥ दोहा ॥ औभो बर्ण बिभागाकिमि शौचअशौचसुजान। सो तिनको कैसे भयो कहुकरि गौरमहान ॥ औजो धर्मअधर्म बिधि वर्णकि है हेतात । भई कौन बिधि सों कहौ आपु मोहिं बिख्यात ॥ तिनको कैसो जीवहै प्राणी जीवतजौन । जातकहां यहि लोकते मरत जौनहैतौन ॥ भरद्वाजकोप्रश्न यहसुनिऋषि भृगुमतिमान । भरद्वाजको कहतभे इमि भृगुभूपसुजान ॥ भृगुरुवाच ॥ सुन्योएकइतिहास है हम ऋषीनसों दक्ष । इहिप्रसंगमें कहतहौं तुमसों तौन प्रतक्ष ॥ आदिअन्तसों रहितहै अजरअमरहैपर्म । ऐसोसबते पूर्बअरुजगको हेतुसशर्म ॥ रहतनिरंतर है महत कीन्हेपरम प्रकाश । है अव्यक्त अभेद्य अरु निर्बिकार बुधिराश ॥ ताकोमानस नामहै तातेहीसबभूत । होतप्राप्त पुनिहोतमरि ताहीमाहिं अकूत ॥ महातत्वको सृजतभोतौनदेव भरद्वाज । अहंकार को सृजतभो महातत्व बुधराज ॥ अहंकार नभको कियो अरु नभतेभो बार । भये बारते दोयशिषिमारुत तथाउदार ॥ तिनदोउनके योगतेभई भूमिभरद्वाज । तदनुस्वयम्भूतेभयो होतोपद्मसुसाज ॥ हरिगीती ॥तिहिपद्मते उत्पन्नब्रह्मा है।तभो श्रुतिमामहै । सुनुलोकपति हैसोइसोई अहंकार सुजान है ॥ हैपंचतत्वहु सोय सोई भूतकारो पर्म है । हैशैलताकेअस्थि

सब अरु अवनि आमिषचर्महै॥ हैरुधिरजाको सरित्पति अरु उदरसों आकाशहै। अरु नदी नाड़ीतेज हुतभुक बायुजाको श्वासहै॥ हैभानु औ सितभानु जाके दुऔ लोचन भुजदिशा। है ऊर्ध्वकोआकाशजाको शीशऔ पदहैरशा॥ सुनसुऋषिभारद्वाज जिहिको सकत सिद्धन जानिहै। हैबिष्णु सोई शम्भुसोई कहतबुध अनुमानिहै॥ दोहा॥ सोईसबभूतस्थहै सुनुहेभारद्वाज। तिहिकीन्हों अहंकारसब भूतहोनके काज॥ भयो बिश्वउत्पन्न है अहंकारसों सर्व। जानिसकत कोऊनहीं तासुप्रभावअखर्व॥ सोरठा॥ जोतुम पूछो तौन यहिप्रसंगमें हमकह्यो। सुनहुसुऋषि बुधिभौन औरकहाअब पूछिहो॥ भरद्वाजउवाच॥ दोहा॥ गगनभूमि दिशिबायु अरुतिनकोकहाप्रमान। कहौमोहिंअवगाहिअबयह तुमभृगुमतिमान॥ भृगुरुवाच॥ रामगीती॥ सुनसुऋषिभारद्वाजयह आकाशको नहिंअन्त। बरयुक्तनानाश्रयनसों है रम्यअतिगति वन्त॥हैनित्य सेवित सिद्धऔ निर्जरनसों आकाश। गहिलहत कोउअन्तहै आकाशकोमतिराश॥अधऊर्ध्वमेंरबिचन्द्रकेकरकी नहीं गतियत्र। अतिभरेतेजसचण्डभारे देवताहैंतत्र॥ बरस्वयं ज्योतिसुभास्करसे अग्निऐसेचण्ड। नहिं लहत अंतअनंततातें तेऊ देव उदण्ड॥ हैसिंधुभूके अन्तमें औसिन्धुको जोअन्त। तुमतौनमें तिमरातमेंहै नीर बिज्ञभनन्त॥ हैरसातल अन्तमाहीं सलिल भारद्वाज। औअन्तमाहीं सलिलकेहै परमपन्नगराज॥ है पन्नगांते पुनह नभऔ नभांतेकी लाल। परमाण है यह सलिलको बर सुनहु बिज्ञबिशाल॥ बर अग्नि मारुत तोयके आवर्णभारद्वाज। सुरबरहु जानत कष्टसोहै कहतबिज्ञसमाज॥ क्षिति अग्नि मारुत तोयको आबर्णहैबुधजौन। सोहैअकाशहि सदृशजानत महत मतिके भौन॥ जबहोत ब्रह्मज्ञान तबआवर्णभिद्यत सर्व। बर बिबिध शास्त्रन माहिं बर्णन करत सुमुनि अखर्व॥ त्रैलोक्य सागरको कह्योहै मुनिन जौन प्रमान। हम

कह्यो तुमको तौनहै गुणिभरद्वाज सुजान॥ बरसिद्ध अरु निर्जरनका जो भोगब्योममहान। सोहै अगम्य अदृश्य याते कहै कौनप्रमान॥ जोपरै मितहै जानियाकीसुनहु प्रज्ञाभौन। तौ होय जाय अनन्तकी आनंत्य निश्चयगौन॥ तुमनामके अनुरूपही भरद्वाज जानहु याहि। यहिमाहिंसंशयहैनहीं हमकहतहैं अवगाहि॥ सोरठा॥ मूर्तिमान सर्वज्ञ भो चतुरानन कमलते। भरद्वाज सुनुप्रज्ञ सोकर्त्ता सबजगतको॥ भरद्वाजउवाच॥ जयकरी॥ भयो पद्मते जोलोकेश। पद्महितोहै ज्येष्ठसुवेश। अग्रजकहत द्रुहिणकोसर्व। यामें संशयहोत अखर्ब॥ भृगुरुवाच॥ मानसजाको नाम सुजान। सोयह भयो ब्रह्म भगवान॥ आसन हेतु तासु भूपद्म। सुनोभयोहै प्रज्ञासद्म॥ दोहा॥ मध्य भाग तिहिपद्मको हैसुमेरु भरद्वाज। सोब्रह्मा तिहिमें स्थित बिरचत जगतदराज॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादोनामनवमोध्यायः९

भरद्वाजउवाच॥ दोहा॥ मानस जाको नामहै परब्रह्म भगवान। सोई ब्रह्मा हैभयो कह्यो आपु मतिमान॥ जगजो बिबिधप्रकार को किमि बिरचतहैताहि। चतुरानन मतिमानभृगु कहो मोहिंअवगाहि॥ भृगुरुवाच॥ जगजोबिबिधप्रकार को तिहिका श्रीलोकेश। मनसों बिरचतहै सुनो भारद्वाज सुवेश॥ चरणादोहा॥ रक्षाकाजै सब भूतनकी प्रथमतोय बिधि कीन। प्राणसर्ब जगकोहै सोई निश्चय मानुप्रबीन॥ प्रजाबढ़ति है तोयसों तोय बिना मिटिजात। बलित भूत सब जगतहै तोयहिसों अवदात॥ पृथ्वी पर्बत मेघअरु मूरतिमान जितेक। बारिजही सबजानु तू भारद्वाज तितेक॥ भरद्वाजउवाच॥ भूमिअग्नि मारुतसलिल ये उत्पन्नसुजान। कहो भये किहिभांतिसों मोको आपुमहान॥ भृगुरुवाच॥ ब्रह्म कल्पकेबीच यकसमय माहिं सुनुदक्ष। होतो ब्रह्मऋषीन को भयो समागमस्वक्ष॥ मनोहर॥ होतभयो तामें संदेह। यही कियो जोतुम बुधिगेह॥ तेसुब्रह्म ऋषि ध्यान लगाय। पौनपै

होय मौन बुधराय ॥ बैठतभये तिन्हैं शतबर्ष । देवनके गतभये सहर्ष ॥ भई व्योमबाणी यहपर्म । भरद्वाज सुनुसुऋषि सशर्म ॥ पूरब तमसों युतहै व्योम । भये नष्टरबि मारुतसोम॥सोवतशोभा शतभो दक्ष । होतो भयोतदनु जलस्वक्ष ॥ जलकोजो उत्पीड़ महान । ताते उठत भयो पवमान ॥ जलको फोड़ि करत सोध्यान । प्राप्त होयके नभहि सुजान ॥ शान्तिकोन पावत उतकर्ष । बायुनीरकोजो संघर्ष ॥ ताते होतो भयो कृशान । तौन मरुतयुत होय सुजान ॥ जलहि जरावत भो नभबीच । होय मरुत सों दीर्घ निभीच ॥ दोहा ॥ कैसथूल नभते गिरो शिखिसों जोकी लाल। भयो सोय भूमित्वको प्रापत बिज्ञ बिशाल ॥ सर्ब पदारथ होतहै तिहि भूमिहि के माहिं । भूमि योनि सब जानु तू यामें संशय नाहिं ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्म्मेभृगुभरद्वाजसंवादेदशमोऽध्यायः १०

भरद्वाजउवाच॥ दोहा ॥ सुनहु महाऋषि प्रथमही पंचधातु संघात । तिनको बिरचत भो द्रुहिण जगत्कार बिख्यात ॥ तिन धातुनहीसो सरब बलित भूतहैं लोक । महाभूत संज्ञिक परम तेईहैं बुधिओक ॥ भूत सहस्रन रचतहैं नित्य नित्य सुरज्येष्ठ । महाभूत ये पांचही कैसेभे बुधश्रेष्ठ ॥ भृगुरुवाच ॥ सर्बभूत उत्पन्न ये इनभूतनतेहोत । ताते इनको योग्यहै महा शब्द मतिपोत ॥ नासाकान अकाश है श्वास बायु द्रवबार । उष्मा शिखि भूमांसहै भौतिक देह उदार ॥ पञ्चभूतसों युक्तहै जंगम थावर सर्ब । इन्द्रिय संज्ञा इनहिंकी हैमतिमान अखर्ब ॥ भरद्वाजउवाच॥ पंचभूतसों युक्तये जो थावरहूहोत । थावरहुनमें परतलखि पंचभूत मतिपोत ॥ अनुष्म है चेष्टा रहित निबिड़ सर्ब ये वृक्ष । इनमें देखि न परत है पंचभूत भृगुदक्ष ॥ सुनत न देखत स्पर्श रस गन्धहि जानत नाहिं । कैसे अचर भये कहौ भौतिक गुणि हियमाहिं ॥ भृगुरुवाच॥ निबिड़ वृक्ष तउ ब्योमहै वृक्षनमें मतिपोत । फूल फलनको

नित्यही देखो उद्भवहोत ॥ वृक्षनमेंआकाशनाहिं जोहोतेसुनुदक्ष । फूल फलन में पहुंचतो तौ कैसे रसस्वक्ष ॥ सब वृक्षनके फूल फल त्वक अरु पर्ण प्रवीन । उष्मा जो होती नहीं तौ किमिहोत मलीन ॥ फेरि लखो सब तरुन के झरत फूल फल पात । कैसे झरते तरुनमें जोनहिं होतो बात ॥ बज्रघोषसों तरुनके झरत फूल फल पात । सुनतहु है तरु बिप्रवर याते जान्यो जात ॥ लपटत चढ़ि चहुंओर सों तरुपै बेलिसमाज । लखति नहीं तौ चढ़तिहै कैसे भारद्वाज ॥ वृक्षनको जबहोतहै रोगकौनहू आय । गन्ध धूप तबदेत जन विविध भांतिकी ल्याय ॥ गन्धधूप सों होयकै रोगरहित तरुस्वक्ष । फेरि लगत फूलन फलन भरद्वाज सुनुदक्ष ॥ याते जान्यो जातहै सूंघतहूहैं वृक्ष । जो नहिं सूंघत धूपसों होत अरोगित स्वक्ष ॥ पीवतहैं जल पादसों पादप सुनु बुधि भौन । जौन पियत तौ होत किमि व्याधि जलोद्भव तौन ॥ किये चिकित्सा व्याधिकी होति निरोगित काय । याते जान्यो तरुन के जीभौ है सुखदाय ॥ ज्योंजन नीरज नालसों नीराहिखेंचत उद्ध । तिमिही पादप पियत हैं परम सलिल को शुद्ध ॥ सुखदुख दोउनको करें ग्रहण सर्ब येवृक्ष । याते जान्यो जीव है वृक्षनमें सुनु दक्ष ॥ भरि आवत जहँ होतहै क्षीण सुनो भरद्वाज । जड़ताते जान्यो नहीं जात जीवको साज ॥ ग्रहण करतहैं जौन जल पादपबल्ली तौन । अग्नि वायुको करतहै शान्त सुनो बुधिभौन ॥ तौनै जल आहार है वृक्ष लतनको सर्ब । ताते चिकने होतहैं वृद्धिहि लहत अखर्ब ॥ सर्ब बरणकी देहमें पंचधातु संघात । तौनै चेष्टित करतहै यहतौ है बिख्यात ॥ त्वचामांस औ अस्थि औ मज्जा नाड़ी पंच । ये बिकारहैं भूमि केहैं नहिं संशयरंच ॥ तेज क्रोध अरु जठर की अग्नि ऊषमा नैन । ये बिकारहैं दहनके पंच सुमति के ऐन ॥ उदर कोष्ठ औ हृदयअरु बदनश्रोत्र अरु घ्रान । येदेहिनकी देहमें पंच अकाश

सुजान ॥ पित्त स्वेद श्लेषमा अरु चरबी शोणित जौन। ये बिकार हैं सलिलके पंच सुनहु बुधिभौन ॥ प्राण बायुते लेतहै श्वास शरीरी दक्ष। ब्यान बायुते करतहै सब उद्योग प्रतक्ष ॥ सो अपान अधको चलत हियमें रहत समान। ऊपर चलत उदानसो भारद्वाज सुजान ॥ उदानही के भेदसों बोलतहै क्षै दक्ष। देहिन को चेष्टित करत पंचवायु ये स्वक्ष ॥ गन्धहि जानत भूमिसों औ मारुत सों स्पर्श। जलसोंरस अरुतेजसों जानतरूप सहर्श॥ गन्ध रूप रस शब्द औ परस पंचगुणयेह॥ तिन में गन्धप्रकारही कहत सुनो बुधिगेह॥ इष्ट अनिष्ट सुमधुर अरु कटु निर्हारी रुक्ष। हसत बिशद सान्निग्ध ये हैं सुगन्ध नव स्वक्ष ॥ चरणादोहा ॥ इष्ट गन्ध कस्तूरिकादिकी मुरदादिकी अनिष्ट। पुष्पादिक की मधुर गन्धकटु मरिच्यादिक की श्रेष्ट॥ दोहा ॥ हिंग्वादिक की गंधको निर्हारी है नाम। औ सर्षप तैलादि को रुक्ष गंध बुधिधाम॥ बहुपदार्थकी गन्धजो ताकोसंहत नाम। गन्धशालि अन्नादिको बिशद नाम बुधिधाम॥ सद्य सुतप्तघृतादिको गन्ध सानिग्ध सुजान।नव प्रकारके गन्धये करिहम कहे बखान॥ अबआगे मैं कहतहौं सुनौ सुरसकोज्ञान। रसहै बहुत प्रकार को ऋषिन कह्यो मतिमान॥ मधुर लवण कटु तिक्त अरु अम्लकषाय सुजान ।षटबिधिको रसहोतहै कहत सुबिज्ञ महान ॥ तीन सुगुणहैं ज्योतिके शब्द स्पर्श स्वरूप। अबआगे मैं कहत हौं कहत सुतौन अनूप ॥ज्योति लखति है रूपको सोहै बहुत प्रकार । चतुष्कोण अरु दीर्घलघु वृत्त सुथूल सुढार ॥ श्यामल अरुहै नील अरु रक्तपीत अरुश्वेत। चिक्कन पिछिल सुमृदुल अरु दारुणरूप सचेत॥ कठिन सुलक्षण रूपये षोड़श हे भरद्वाज। शब्द स्पर्श समीर के हैं गुण सुबुध दराज ॥ उष्णशीत खर मृदुल लघु और सानिग्ध महान । सुख दुख गुरु लक्षण बिशद बारह पर्श सुजान॥ है अम्बर को एक

गुण शब्द सात परकार। पञ्चम धैवत रिषभ अरु मध्यम अरु गांधार ॥ अरु निषाद अरु षंजबर सप्त सुबुधिसों पर्म । रहत शब्द पटहादिमें ब्यापित सुनहुसुकर्म ॥ भेरीशंख मृदंग रथअरुघनको जोध्वान । औ जोसबप्राणीन का सातहिमाहिं सुजान॥ जयकरी ॥ शब्द माहिंजो सातप्रकार । षड्जादिकते बुद्धि अगार ॥ भारद्वाज कहे हम आम । तुमको सरल रीति सोंमाम ॥ रामगीती ॥ करिक सुइच्छा बोलिबे की आतमा सर्बज्ञ । मिलि बुद्धिसों मनमें लगावत अर्थकाहे प्रज्ञ ॥ मनअर्थसों अरु बुद्धिसों मिलि होतहे सामर्थ।जठराग्नि को सो देतहे मन ताड़ना सह अर्थ॥ सोकरत बायुहि प्रेरणाहे बायु प्रेरिततौन। उरमाहिं चरिके मंदस्वर को करत है बुधिभौन ॥ उरमाहिं तेकढ़ि मूरधाके माहिंलगिके पर्म । मुखमाहिं प्रापत होयबर्णहिं करत ब्यक्त सशर्म ॥ सोरठा ॥ रुकोबायुनहिं जौन शब्द करतहे तौनबर ।रुको बायु है तौन शब्दनहीं करि सकत है ॥ दोहा ॥ सुनिये भारद्वाज बर मारुतजेप्राणादि । तिनसों चेष्टित होतहैं इन्द्रिय सर्ब स्वगादि ॥ बरवै ॥ आपअग्नि अरु मारुत तनुके बीच । जाग्रत रहत सदाहै सुबुधनिभीच ॥ उक्ता ॥ येशरीरके हेत ।हैहेबुद्धिनिकेत॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिभृगुभरद्वाजसम्बादेएकादशोऽध्यायः ११॥

भरद्वाजउवाच ॥ सोरठा ॥ भूबिकार यह देह ताको प्रापतह्वै अगिनि । सुनिये बरबुधि गेह किहि प्रकारसोंरहतहे ॥ दोहा ॥ औ किमिकरत शरीरको चेष्टितहे पवमान । कहौ आपु अवगाहिके मोकोभृगु मतिमान ॥ भृगुरुवाच ॥ सोरठा ॥ पावकको वृत्तान्तकहि पुनि कहिहैं बायुको । भरद्वाज सुनुदान्त धर्मधाम बरमति सदन ॥ दोहा ॥ देहनको प्राणीनकी जिहिबिधि सों बुधिधाम । चेष्टायुत मारुत करत कहत तुम्हैं हमआम ॥ चिदाभास के रहतहै आश्रित अग्नि सदाहि । करि परिपालन देह को कहत सुगुणि तवपाहि ॥ चिदाभास औ अग्निमें प्रापतह्वै पवमान । देहन

को प्राणीनकी चेष्टित करत सुजान ॥ जयकरी ॥ इन तीनहु को जो संघात। जीवप्रज्ञ सोई अवदात॥ सोयसनातन पुरुष अमन्द। अहंकार मन बुद्धि बिलन्द॥ सोईऔ सुभूत गणसर्व्व। औ सुबिषय सबसोयअखर्व्व॥ माया सहित होतजब दक्ष। जीव कहावत है सुनुस्वक्ष॥ माया रहित होत जबपर्म। ब्रह्मकहावत सोय सशर्म॥ दोहा ॥ करत देहकी पालना बाहिर भीतर प्रान। फिरि समान ह्वैकै सुनो सोयप्राण पवमान॥ पहुंचावत रुधिरादिको निजनिज गतिकोपर्म। सोई मारुतप्राणजो होय अपानसुकर्म॥शिखिकेआश्रय होयकै अन्नादिकहि पचाय॥मूत्रपुरीषहिदेतहै निजनिजथानपठाय॥यत्नकर्मजिहिबायुसोंकीन्होंजात सुजान। औजो बलमें रहत बुध ताकोकहत उदान॥ मनुजादिक कीदेहमें सन्धिनमाहीं जौन। रहत बायु ताकोकहत ब्यान मनीषाभौन॥ सोरठा ॥ यातु त्वगादिक जौन पावक तिनमें ब्याप्तजो। प्रेरितह्वैकै तौन बर समान पवमान सो॥ दोहा ॥ अन्नादिक रसजौन अरु धातु त्वगादिक जौन। अरु पित्तादिक दोष जे तिनको बरबुधिभौन॥ करत बिकारितहैसुनौ कहत प्रज्ञप्राचीन। सब देहिनकी देहमें भारद्वाजप्रबीन॥ चरणादोहा ॥ चलति आस्यते गुदिकालों नाड़ीएक महान। ताते और चलतिहैं केती लघुनाड़ी मतिमान॥तिन नाड़िनसों होत सबबायुनको संयोग। अरु अग्निहु को होतहै कहत प्रज्ञबरलोग॥ करत प्रकाशित बायुको अग्नि अग्निकोबाय। लागतबायु गुदांतमें अग्नि बेग सोंजाय॥बायुबेगसोंअग्निसों ऊपरउठतसुजान॥रहतदेहकेबीच हैइमिपवमान कृशान॥औदरभय नहिंहोतहै कीन्हेंवायु निरोध। बायु रोधते होतहै इन्द्रियरोध सबोध॥ नाभि उर्द्धको भागसो थान अन्नकोतौन। अधको जोहै भागसो मलस्थान बुधिभौन॥ मारुत सूक्षम रूपसों रहत नाभिके माहिं। कारज तिनसोंहोतसो कहत तिहारे पाहिं॥ प्राणसमान उदान अरु ब्यान अपान

सुजान। देवदत्त कूरम कृकल नागपरम पवमान॥ औ सुधनं-जय बायुये दशहैं इनसोंपर्म। नाड़ीप्रेरित होयकै तनके माहिं सुकर्म॥ प्राप्त करतिहै अन्नके रसको नित्यप्रबीन। गुणिकैतो सों हैकह्यो हैयह संशयहीन॥ बरवै॥ मुखते लैकै गुदलों नाड़ी जौन। जानु परम योगिन को मारग तौन॥ मूर्द्धामें यहि पथसों योगी पर्म। प्राप्त करत है आत्मा को सह शर्म॥ सोरठा॥ कीन्हें प्राण निरोध होतप्रकाशितब्रह्महै। जानतजिनको बोधभयो परमहै प्रज्ञबर॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेभृगुभरद्वाजसंवादेद्वादशोध्यायः

भरद्वाजउवाच॥ दोहा॥ जीवत बोलतबायुही चेष्टाकरतअनन्त। श्वास लेतजो बायुही तौ निरर्थ यहजन्त॥ अन्नादिककोउदर मेंशिखिहि पचावतपर्म। तौनिरर्थहै जीवभृगु प्रज्ञावानशसर्म॥ बायु न चेष्टा सकतकरि शिखिनहिं सकतपचाय। जो तुम यह गुणिकै कहौ तोसुनिये बुधराय॥ ताकोजीवन परतलखि जौन होतहै नष्ट। नशति ऊषमा तजत तन बायुहि कहत सपष्ट॥ याते बायुबियोग जो मर्ण जानियेसोय। जीवैहै न अनुमान ते कहततुम्हैं हौं जोय॥ मिल्यो मरुतसों होयजो तौ मारुतसह-पर्म। जीव चलत जान्योपरै भृगुबरप्रज्ञ सशर्म॥ और सुनहु भृगुमरुतसों मिल्योहोत जौ जीव। पृथकहोत जब मरुत सों परतदेखि बुधिसीव॥ जिमिजलमाहीं उपलसह डारीतुम्बी-तौन। जबबन्धन गरिजात तब पृथक्होति बुधि भौन॥ पंच भूतसों रहतिहै ऐसी जो यहदेह। जीवकहातिमि माहँहैकहिये बर बुधिगेह॥ सोरठा॥ मञ्चाको यक देश ताको भयेबिनाश जिमि। नाहींरहतबुधेश होतनाशसब मंचको॥ दोहा॥ इमिहि भूत संघातमें यकको भये अभाव। निश्चयहोत अभावहै सब हिंनको बुधराव॥ सोरठा॥ पुरुष मंचमेंजौन नाशहोतजबमंच को। देखिपरतहै तौन पृथक्मंचते प्रज्ञबर॥ ऐसेही जो जीव

होतभूत संघातमें । परतोलखि मतिसीव भयेनाश संघात को॥ दोहा ॥ जौनहेतु सों होतहै नष्टभूतसंघात । तौनहेतु मैंकहतहौं तुमको बुधबिख्यात ॥ सलिलपियेबिन सलिल अरु बायुरोध ते बाय । बायुभरे नभउदरको नष्टहोतबुधराय ॥ बिनभोजन कीन्हें सुनो पावक सो नशिजात । नष्ट होति अरु ब्याधि सों भूमि सुबुधअवदात ॥ इनपांचहुमें एकजो पीड़ितहोयअशेश । पृथक्पृथक् ह्वै जायतौ सबही भूत बुधेश ॥ पृथक्होतजबभूत तब कहिके पीछेजात । जीवकहा जानतसुनत बोलतकहु बिख्यात ॥ याते जो संघातहै सोई जीवसुजान । भिन्न और नहिं जीवहै निश्चयाकियो महान ॥ और जीवनहिंतो सुनो नाहिं परलोक समर्थ । जो परलोक नतौ सरब दानादिक हैं ब्यर्थ ॥ यहसुगऊ परलोकमें करिहै मो उद्धार । यह बिचारिजो देतजन भृगुऋषि बुद्धिअगार ॥ सोदैकरि मरिजातहै गोतारनिहैकाहि । प्रज्ञावान महानप्रभु कहोमोहिंअवगाहि ॥ दातागोप्रतिगृहीता अत्रहि सब मरिजात । कहा समागम होतहै तिनको कहु बिख्यात्त ॥ जौनजीव मरिजातहै होतकहा पुनितौन । पर्वत सों गिरिअग्निसों जरि करिकै बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ कटोजौनहैबृक्ष तासुमूलनहिं लहतफिरि । ताकेबीच प्रतक्ष प्रवृतहोतहैप्रज्ञबर दोहा ॥ होतबीजते बीजहै मृतक मृतक सबनष्ट । होयजात है सुऋषिभृगु मैं हौं कहत सपष्ट ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादेत्रयोदशोऽध्यायः १३

दोहा ॥ दानादिक औ जीवनाहिं नष्टहोतबुधिगेह । देहान्तर को लहतहै जीव नशतहै देह ॥ नष्टभयेते देहनहिं जीवनष्ट ह्वै जात । दग्धभयेते काष्ठजिमि पावकनहीं नशात ॥ भरद्वाजउवाच ॥ दग्धभयेते काष्ठजिमि नष्ट न होतकृशान । तिमिहिं नशेतेजीव को नष्ट न होत सुजान ॥ कहतआपुइमि तौ सुनहु इन्धन जब जरिजात । पावक नाहिं लखि परतहैसुनहुप्रज्ञ अवदात ॥ बहु-

द्धानुबर होतहै काष्ठ बिना जबशान्त । जानत ताको तष्ट भो तासुगति न हमदान्त ॥ भृगुरुवाच ॥ बिनआश्रय जबहोत शिखि सूक्षमव्है नभमाहिं । प्राप्तहोत यातेबिना काष्ठपरत लखि नाहिं ॥ सोरठा ॥ तिमिहि नशेते देह जीवरहत है व्योमवत । जानौ सो बुधिगेह जात अल्पतातेनहीं ॥ दोहा ॥ प्राणनको धारण करत शिखि आत्मामयजौन । देहनशेसो नहिं नशत शिखि आत्मामय तौन ॥ आत्मामय जो अग्निजब तनहि तजतहै दक्ष । तबसो तनमिलि जातहै भूकेमाहिं प्रतक्ष ॥ चर अचरणके मरुतनभ अग्निमहा नभमाहिं । प्राप्तहोत अरु भूमिजल भूके माहिं समाहिं ॥ जहँ अ-काश तहँ पवनहै पवनजहां सुकृशान । है अमूर्ति ये देहमें होत सुमूरतिमान ॥ भरद्वाजःवाच ॥ जलभू नभ शिखिमरु तही जो शरीरके माहिं । तौ लक्षणहै जीवको कहा कहौ मोपाहिं ॥ पञ्चभूतसों जो बन्यो पञ्चबिषयरत जौन । ज्ञानेन्द्रिय हैं पञ्चवर जिहिमाहीं बु-धिभौन ॥ ऐसो जौनशरीरहै तामेंजोहै जीव । ताहि जानिबेकी करत इच्छाहौं मतिसीव ॥ देहखण्ड खण्डहु किये जीवपरतनहिंदेखि । मांस अस्थि शोणितबसा मेद परतिहै पेखि ॥ जो हम भौतिक देहमें जीवहिमानैनाहिं । तौजानतहैं दुःखको को शरीरके माहिं । जीवसुनतहै बैन जो कहौ सुनहु तौपर्म । होतव्यग्रजब चित्ततब जीवन सुनत सशर्म ॥ मोदित मन युत चख लखत सबहि ज-गतके माहिं । व्याकुलमन जबहोत तब लख्यो लखतहै नाहिं ॥ निद्राबश जबहोततब लखत न सुनत नबैन । सूंघत बोलत र-सपरश जानतनाहिं बुधिऐन ॥ कौनक्रोधऔ शोचको करतको-नकोहर्ष । इच्छा दोषहि करतको बोलतको उत्कर्ष ॥ भृगुरुवाच ॥ अंतरात्मा जीवजो सोय चलावत देह । नहीं चलावत भूतऔ मनतनको बुधिगेह ॥ सोईजानत गन्धरस सोअरस्पर्श स्वरूप । सोई जानत शब्दको अन्य न सुबुध अनूप ॥ मनाजिहि इन्द्रिय के निकट होतसुइन्द्रिय तौन । ग्रहणकरतिहै बिषयको कहत

आपु बुधिभौन ॥ ताकोकारण यह सुनो अन्तरात्मा जौन ॥मनके निकटै रहतहै इहिते सुनुबुधिभौन ॥ मनबारे सहभावसों इन्द्रियसर्व सुजान । ग्रहण करतिहैं बिषयको जानो निजुहिमहान ॥ अंतरात्मा जीवबिन मनइंद्रिय सों सर्व । बिषयग्रहणकरवायनहिं सकत सुप्रज्ञ अखर्व ॥ स्वक्षसुषुप्तिसमाधि में अन्तरात्मा पर्म । प्राप्त होत ब्रह्मांड में है बर प्रज्ञ सशर्म ॥ तब मन औ इन्द्रीय सब रहतेहैं एकत्र । पै न बिषय को करि सकत ग्रहण न संशय अत्र ॥ उक्ता ॥ जब शरीरकी शान्त । अग्नि होत है दान्त ॥ नष्ट होति तब देह । आत्मा नहिं बुधिगेह ॥ चरणा दोहा ॥ आत्मा सो क्षेत्रज्ञ कहावत गुण संयुक्त सुवेश । निर्गुणभये कहावत सोई परमातमा बुधेश ॥ दोहा ॥ रहत देहके माहिं सो ऐसे हैं क्षेत्रज्ञ । रहत कमलके पत्रमें जैसे जलकण प्रज्ञ ॥ भेदेदेहहि जीवको होत नहीं है नाश । कहत अबुधजन तौन है मिथ्या सुनु बुधिराश ॥ देहान्तरको होतहै प्राप्त जीव भरद्वाज । जानतहै तब जीवको नाश अप्रज्ञ समाज ॥ सब भूतनमें फिरतहै जीव गुप्त ह्वै पर्म । सूक्षम मतिसों लखतहै ताको प्रज्ञ सशर्म ॥ योग निरन्तर करत जे लब्धाहारी होय । आत्माको बरबुद्धिमें तौन सकतहै जोय ॥ जासु बिमलहै हृदयसो कर्म शुभाशुभ त्यागि । रहत निरन्तर महत है मोक्ष मोद में पागि ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेचतुर्दशोध्यायः १४ ॥

दोहा ॥ पूरब पूछो आपहो भूतभये किमि सर्व । औभो बर्ण बिभाग किमि सुनिये तौन अखर्व ॥ अरिल ॥ मरीच्यादि बरबिप्र प्रजापति । तेजोमय शिखि सविता सम अति ॥ तिन्हें बनावत भयो प्रथम बिधि । तदनु सुनो भरद्वाज सुमतिनिधि ॥ सत्य वेद अरु तपस धर्मतर । स्नादिक आचार सर्वबर ॥ शौचसुप्रायश्चित्तादिक पुनि । स्वर्ग प्राप्तिके काज द्रुहिण गुनि ॥ करतो भयो तदनु सुर दानव । राक्षस यक्ष नाग अरु मानव ॥ तिमिहि

पिशाच भयोसो बिरचत । बहुत रूप धारणमें तेरत ॥ दोहा ॥
ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्यअरु शूद्र चारिये बर्ण । तिनको करतबि-
भागभो तदनु द्रुहिण मतिधर्ण ॥ ब्राह्मणको सितबर्ण है अरु
क्षत्रिय को लाल । पीतबैश्यको शूद्रको श्याम सुप्रज्ञ बिशाल ॥
ब्राह्मणकेहै सत्त्वगुण रज क्षत्रियको पर्म । श्वेत अरुण यातेब-
रण हैंहे प्रज्ञ सशर्म । रजतम मिश्रित बैश्यहै तमहि शूद्रमेंहोत ।
पीतश्यामहैं बर्णहै याते प्रज्ञापोत ॥ भरद्वाजउवाच ॥ श्वेतादिक जे
बर्ण हैं तिनसों कियो बिभाग । बिप्रादिक सब बर्णको तौसुनिये
बड़भाग॥सबबर्णनमें बर्णको शंकर देखोजात । किमिबिभागभो
बर्णसो बर्णको कहुबिख्यात ॥ और सुनोजे बर्णसब विप्रादिक
बुधिधाम । तिनमें भय चिन्ता क्षुधा लोभक्रोध श्रम काम ॥ ति-
मिहि शोक लखि परतहै क्षण क्षण माहीं पर्म । कैसेबर्ण बिभाग
भो कहिये प्रकट सशर्म ॥ और सुनो तुम सबहि के तनते शो-
णितस्वेद । गिरत मूत्रपूरीष किमि बर्ण बिभाग सबेद॥भृगुरुउवाच॥
ब्रह्मा कीन्हो जगत यह याते ब्राह्मण सर्ब । हैनहिं बर्णबिभाग
यह जानो प्रज्ञ अखर्ब ॥ बर्ण ताहि प्रापतभयो कर्मनसोंसंसार ।
याते बर्ण बिभाग को कारण कर्म उदार ॥ काम भागहै प्रियजि-
नाहिं क्रूर क्रोध बशपर्म । रज गुण मयह्वै तजि दियो अपनो जो
है धर्म ॥ सहसा करिके करतहैं कर्म सदाही जोन । ब्राह्मण ऐसे
होतहै क्षात्रिय बर बुधिभौन ॥ सुरभी सों अरु कृषी सों वृत्तिजे
करत सदाहि । रज तम मयह्वै करत जे अपने कर्महि नाहि ॥
ऐसे ब्राह्मण जौनहैं होत बैश्य हैं तौन । जानहु भारद्वाज यह
निश्चय बर बुधिभौन॥ जिनको प्रिय हिंसा अनृत लोभी तममय
पर्म । करत जीविका आपनी जोन सर्ब करि कर्म ॥ शुचिता सों
परिभ्रष्ट हैं ऐसे ब्राह्मण जोन । शूद्रताहिते लहतहैं जानो निज
बुधिभौन ॥ चरणादोहा ॥ इन कर्मन सों बर्णान्तरको होतप्राप्त
द्विजदक्ष । बर्णान्तरकी प्राप्ति को हम हेतु कह्यो परतक्ष ॥ धर्म्म

जौन बेदोक्त है तामें तत्पर जौन। नीच जातिमें होतहै प्रापत ब्राह्मणतौन ॥
इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिभृगुभरद्वाजसंवादःपचंदशोध्यायः १५ ॥
भरद्वाजउवाच ॥ दोहा ॥ ब्राह्मण उत्तम होतहै कौन कियेते कर्म। कौनकर्मते होतअरु क्षत्रिय कहौसशर्म॥ श्रौसुनु बैश्यक शूद्रते कौन कर्म ते होत। कहो आपु अवगाहिकै मोको प्रज्ञापोत ॥ भृगुरुवाच ॥ प्रथम जन्मतहि होतहै संसकार जो स्वक्ष। जातकर्म तिहिको कहत तिहि आदिक सुनुदक्ष ॥ चत्वारिंशत अष्ट औ संसकारहैं पर्म। युक्तहोय तिन सबनसों औ शुचिहोय सुधर्म ॥ स्नान देवपूजन परम होम अतिथि सत्कार। सन्ध्या जपये नित्यके हैं षटकर्म उदार॥ युक्तहोय तिन सबन सों बिधिवत पढ़ै सुवेद। रहैगुरूकी भक्तिमें तत्पर होय अखेद॥ सत्यमाहिं तत्पर रहै नित्यहि लोभ बिहाय। ताको कहिये बिप्रवर भरद्वाज बुध राय ॥ युद्धमाहिं तत्पर रहै पढ़ै बेद अवदात। दानदेय बर द्विजनको आदर सह बिख्यात ॥ प्रजा पालिकै नीतिसों लेयआपनोभाग। क्षत्रिय ताको प्रज्ञबर कहिये सुनु बड़भाग॥करैंजीविका पशुनसों तिनहिं कृषीसो जौन। बेद माहिं तत्पर रहै बैश्य कहावततौन॥ सदा सर्ब भक्षणकरै तिमिहि करै सबकर्म। बेद रहित आचार सों शूद्र कहावत पर्म॥ चचला ॥ बिप्र माहिं बिप्रके न कर्म जोपरैं लखाय। शूद्र माहिं कर्म शूद्रके परैंनहीं दिखाय॥ बिप्रको सुबिप्रतो कहीन शूद्र शूद्रकौन। मैं कह्यों बिचारिकै तुम्हैं सुनो सुबाद्धि भौन॥ रामगीती ॥ बर बिप्र ताको मूल कारण कहतहौं अब अत्र। तुम मनहिं थिरकरि सुनहु सो भरद्वाज प्रज्ञपबित्र॥ नित करै निग्रह कामको अरु क्रोधको अतिमाम। येकरत दोऊघात सुखकी परम प्रज्ञाधाम॥नितकरै रक्षा लक्ष्मीकी क्रोधताजि भरद्वाज। तिमि छोड़ि मत्सर करै रक्षा तपस की सुख साज॥ ताजि औरको अपमानको औ आपनो अभिमान। नितही सुरक्षण

करै बिद्याको महा मतिमान ॥ कबहूं प्रमाद न करै मांगै कछूकाहू सोन । नित कामना बिन होम दानहिं करतहै बुधि जौन ॥ है सोयत्यागी सोय प्रज्ञावानहै अवदात । है तासुसम नहिं और कोऊ जगतमें बिख्यात ॥ नहिंधरै हिंसा भावको भोरहै सबको मित्र । अरु बुद्धि सों इन्द्रियनको गण जीति प्रज्ञ पबित्र॥बर होय आत्मध्यान माहीं प्रज्ञ तत्परपर्म । तजि सुतादिकको मोह करिकै स्वस्थ चित्त सशर्म॥दोहा॥अजित जौन कामादि हैं तिन्हैं जीतिबे काज ।इच्छाजो मनमें करै तौ सुनिये भरद्वाज॥पुत्रादिकके संगमें रहै असंगीसोय । हर्ष शोक कबहुं न करै तिनके सुखदुख जोय ॥ अजित जीतिबेकी करै जौन कामना स्वक्ष । तौन करैजो योगबर सो हम कहत प्रतक्ष॥चरणादोहा॥जाको होतग्रहण इन्द्रिय सों तौन कहावत व्यक्त । अरु जाको नहिं होतग्रहणहै जानहु सो अव्यक्त ॥ गुरु औ श्रुतिके बाक्यमें राखिये सुबिश्वास । अबिश्वासमें राखिये कबहुं न मन बुधिरास ॥ ताहि जानिबेकी परम इच्छा हियमें राखि । रहै गुरूकी भक्तिमें तत्पर मिथ्यानाखि ॥ प्राण बायुमें धारिये मनको अरुजो प्रान । तिहिको धरिये ब्रह्म में करिके योग महान । बिन बैराग्य न होतहै प्राप्त ब्रह्ममेंप्रान ॥ यातेबर बैराग्यको साधन करै सुजान॥ बैराग्यहि सो लहतहै ब्राह्मण ब्रह्महि पर्म । बिन बैराग्य न लहतहै जानु सुनिजुहिं सुधर्म ॥ होत शौचसों युक्त अरु सदाचार सों स्वक्ष । अरु सब भूतनमें दया धारैजो द्विजदक्ष । सोअधिकारी योगको होय बिज्ञ भरद्वाज । और योगको होत नहिं अधिकारी बुधराज ॥ अधिकारी जब होतहै परमयोगके स्वच्छ । तबअधिकारीहोतहै ब्रह्मप्राप्तिकोदक्ष ॥

श्रीमहाभारतशांतिपर्व्वणिमोक्षधर्म्मेभृगुभरद्वाजसंवादःषोडशोऽध्यायः १६

दोहा ॥ शुक्लबिप्रको धर्महै कृष्ण शूद्रकोधर्म । कह्योपूर्वअध्याय मेंतुम यहप्रज्ञसशर्म ॥ तिनदोउनके रूपकोपृथक् पृथक्अभि-

राम। करिविवर्ण हमको कहो भृगुबर ऋषि बुधिधाम॥ भृगुरुवाच॥ अरिल॥ वेदब्रह्मकोप्राप्त करावत। औस्वधर्महू मतिबरगावत॥ येहीदोऊ लोकहि धारत। इनहीसों जनदिवहि पधारत॥ सत्यरूप येदुओ सुमतिघर। शुक्लधर्महै बिप्रनको बर॥ धर्मशूद्रको जोहै श्यामल। सुनहु तौनअब सो प्रज्ञाबल॥ उकछा॥ बपुअसत्यको श्याम। तिहिते मानवमाम॥ जातनरक के माहिं। लखतस्वर्गको नाहिं॥ शुक्लस्वर्गकोस्वक्ष। श्याम नरकको दक्ष॥ कहतेहैं भरद्वाज। प्रज्ञामान दराज॥ रामगीती॥ सितअसितसत्य असत्य दोऊ होत समजबप्रज्ञ। तब मनुज योनिहि जीवपावत भनतहैं बरबिज्ञ॥ तहँकरत सत्यअसत्य सेती धर्मऔर अधर्म। सुख दुःखकोहै होतप्रापत भरद्वाजसशर्म॥मल्लिका॥ सत्यतेसुहोत धर्म। धर्मते प्रकाश पर्म॥ जोप्रकाश है अमन्द। होततौन ते अनन्द॥ औअसत्य ते महान। होतहै अधर्मभान॥ औअधर्मते नितान्त। होतहैसुजान ध्वान्त॥ दुःखध्वान्तते अशेश। प्राप्तहोतहैं बुधेश॥ दोहा॥ तनमनके जेदुःख सुख तिनसोंयुत जगसर्ब। ताहिनिरखि मोहनकरै प्रज्ञावान अखर्ब॥ लोकनमें जोश्रेयहैं दुःखहि ताके अन्त। मोक्षारथ साधन करैं याते प्रज्ञ भनन्त॥ एकश्रेय शारीरहैं औहैमानसएक। श्रेयदोयपरकार के होत सुनो सबि वेक॥ तिन दोउनकी प्राप्तिको यत्न करत हैं सर्ब। अर्थमोक्षके करतहैं कोउ न यत्न अखर्ब॥ भरद्वाजउवाच॥ अर्थश्रेय की प्राप्ति को यत्नकरत सबकोय। कह्यो आपुयह सो नहीं कहत तुम्हैं हम जोय॥ बड़े बड़े हैं सुऋषिजे तिन्हैं तपस्या माहिं। प्राप्त रहत सबश्रेय हैं पै चाहत हैं नाहि॥ और सुनो सब लोक कृत ब्रह्मा जो सर्बज्ञ। एकाकी सो रहत नहिं चहत काम सुखप्रज्ञ॥ भस्मदयो करि कामको महादेव भगवान। कामश्रेयजो चहततौ क्यों जारतमतिमान॥ चहत काम सुख महत नहिं याते मोमन माहिं। आवति नहिं जो तुम

कही सुऋषि हमारे पाहिं ॥ और सुनो जो कहततुम सुखते कछू न अन्य । सुख औदुख द्वै परत हैं देखि जगतमें धन्य ॥ लहत पुण्यते श्रेयअरु अघते दुःखमहान । यह तुमको अवगाहि मैं कहत सुऋषि मतिमान ॥ भृगुरुवाच॥ होततमोगुण अनृतते ताते हैयुत जौन ॥ महत अधर्मोहिं माहिं नित प्रवृत रहतहैं तौन ॥ प्रापति भये अधर्ममें दोऊ लोकन माहिं । बिबिध भांतिके सहतदुख श्रेयलहतहैं नाहिं ॥ अरिल ॥ युक्त तमोगुणसों नहिंजेजन । सुखको प्राप्तहोतहैं तेजन ॥ जौनतमोगुण माहिंरहत रत । तौन दुःखहीमाहिं रहतगत॥ स्वर्गलोकमें हैंसुखहीबर । मारुत बहत महा शीतलतर ॥ छायोरहत गन्धहै सुन्दर । जड़ितहेमके हैंजहँ मन्दिर ॥ जहँनहिं जरा पिपासा क्षुतश्रम । ब्यापतहै निश्चय जानोतुम ॥ दोहा ॥ सुखऔ दुख यहिलोकमें ब्यापितहैं बरप्रज्ञ। दुःखहि केवल नरकमें महत कहतहैं बिज्ञ ॥ जानि अल्प यहि लोकके सुखको मानव दक्ष । करैंयत्न अवगाहिकै स्वर्ग प्राप्तको स्वक्ष ॥ स्वर्गहुको सुख जानिके तुच्छ दक्षबरजौन । करतमोक्ष के यतनको भरद्वाज बुधि भौन ॥ आभीर ॥ जौनमोक्षको शर्म । नित्यजानुसोपर्म ॥ लोकान्तरको जौन ॥ नित्य शरम नहिंतौन ॥
श्रीमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंवादःसप्तदशोध्यायः १७ ॥
दोहा ॥ कहासुफल है दानको कहा होमको पर्म । तपको अरु अध्ययन को फलहै कहा सधर्म ॥ अरु कीन्हों जोधर्महै तासु कहा फलचारु । कहोमोहिं अवगाहिकै भृगुऋषि बुद्धिअगारु॥ भृगुरुवाच ॥ भोगमिलत है दानसों नशत होमसोंपाप । तपसों प्राप्त होत दिव निश्चय जानहु आप ॥ बिषयमें नमन लगत है कीन्हेते अध्ययन यामें संशय । है नहीं भरद्वाज मतिऐन ॥ दानदोय परकार को कहत मनीषी पर्म । तेदोऊ हम कहत हैं तुमको सुनहु सधर्म ॥ जयकरी ॥ सुबुधनको दीन्होंजोदान । तिहि ते मिलत स्वर्ग मतिमान ॥ औ अबुधनको दीन्हों जौन । ताते

सुनहु सुऋषिबुधिभौन ॥ कहहिं लोकमेंकछु सुखहोत । प्रापत
कहत सुप्रज्ञापोत ॥ देत सुमानव जैसोदान । तैसोफल, पावत
मतिमान ॥ अपने धर्ममाहिं जनजौन । युक्तरहतहैं प्रज्ञाभौन ॥
तेजन जात स्वर्गकेमाहिं । यामें नेकहु संशयनाहिं ॥ भरद्वाजउवाच ॥
सोरठा ॥ चारिहु आश्रम जौन कहे ऋषिनके प्रज्ञवर । तिनको
तुम बुधिभौन मोहिंकहौ आचरण सब ॥ भृगुरुवाच ॥ हरिगीती ॥
वरधर्म रक्षणहेतु ब्रह्मा रचेआश्रम चारिहैं । तिनसबन कोआच-
रण तुमसों कहत हम निर्द्धारिहैं ॥ जोबास गुरुकुल माहिं कीबो
प्रथमआश्रम तौनहै । तिहिंमाहिं शौच सुनियम ब्रत गहिरहत
बरबुधि भौनहै ॥ रबि अग्निकी अरु और देवनकी स्वराके प्रेम
सों । नितदुओ संध्या माहिं स्तुतिहि करैमनगहि नेमसों ॥ अरु
स्नानतीनिहु काल माहींकरै आलस त्यागिकै । गुरुदेव कोनिति
नौमिबेदहि पढ़ै मतिमें पागिकै ॥ सुनि बारतावर धर्मवारी स्वक्ष
अन्तहकरणको।गुणिकैकरै अरु करैहोमहिनित्यकल्मष हरणको॥
नितकरैसेवा गुरूकी धरिहियेमाहींप्रीतिको । अरुगुरूआगेधरै
भिक्षा ल्यायगुणिकै रीतिको ॥ गुरुकी कृपाते प्राप्तभो अध्ययन
नित्यहि तौन में । रतरहै मनको लायकै यह कह्यो निज बुधि
भौनमें ॥ दोहा ॥ गुरुको जो आराधि कै पढ़त वेद अवदात ।
स्वर्गलोकमें प्राप्त ह्वै सो जन समुद बिख्यात ॥ करै जौन सं-
कल्पहै होत सिद्धिहै सर्ब । यामें संशय हैनहीं सुनिये सुबुधअ-
खर्ब ॥ कहत सुमुनि गार्हस्थको आश्रम द्वितिय अमन्द । ताको
जो आचरण सो सुनहु सुऋषि निर्द्वन्द ॥ ब्रह्मचर्य आश्रमहि
करि पूरण बिधिवत पर्म । फेरि गृहाश्रमको करै कीबे तियसह
धर्म ॥ आभीर ॥ धर्म अर्थ अरुकाम । त्रिवर्ग इनकोनाम ॥ इन
के साधनु काज । सुनिये भारद्वाज ॥ सजुगिना ॥ बिधिसों सुयज्ञ
करायकै । अथवा सुजनहि पढ़ायकै ॥ अथवा प्रतिग्रह लेयकै ।
अथवा सुदेवहि सेयकै ॥ अथवा सुसागर माहिंते ॥ अथवासु

प.लैपाहिते ॥ धनलै ग्रहाश्रमकोकरै।कबहूंनधर्म तजै बरै॥दोहा॥ सबआश्रमको मूलहै ग्रहस्थाश्रम मतिमान । यामेंसंशयहैनहीं बरबुध भनतमहान ॥ त्रिभंगी ॥ जेगुरुकुलबासीअरु संन्यासीनेम बिलासी औरतिते । ग्रह आश्रमनीको धर्मगतीको तासोंनिबहैं सर्बातिते ॥ यामें मतिआनो संशय जानो निजुहि बखानो सत्य तुमैं । जेमतिसोंछाये बरबुध गाये कहतेआये तौनहमैं ॥ दोहा ॥ बिनबोये जे अन्नहैं तिनकोखात सदाहिं । रहैंनिरत अध्ययनमें करै क्रोधकोनाहिं ॥ चरणादोहा ॥ ऐसे बानप्रस्थसे मतिबर सुनिये भारद्वाज। फिरन लगतहै पृथ्वी माहीं तीरथयात्रा काज ॥तिन्हैं लखै जोदूरिसों तोउठि सोहैं जाय । लखै निकट तौ शीघ्रउठि आदर करै सचाय ॥ आभीर ॥ कहै सुकोमल बैन । अतिहीउज्ज्वलऐन ॥ तामेंचारु बिछाय।आसनअति सुखछाय ॥ बैठावैतिनमाहिं । करै असूया नाहिं ॥ चरणादोहा ॥ अतिथि निराश होय कै जाके ग्रहतेफिरै सुजान । तासुपुण्य तौ लेयजातहै कैकैपाप महान ॥ नरेश ॥ ग्रह आश्रम माहिं सुजानहे । मखसों सुरवृन्द महानहे ॥ लहि तृप्ति प्रसन्नसोंहोतहै । सुखवृन्द बिलन्द तनोत है॥ अरिल्ल ॥ लहत श्राद्धसों पितर तृप्तिबर ।अरु बिद्याब्रत बरसें बुधिधर ॥ होतप्रसन्न सुनहु बुधि सागर । अरुअपत्यसों द्रुहिण उजागर ॥चरणाकुलक॥ दयासर्ब जीवनमें राखै । बचन मधुर सबही को भाखै ॥ काहूको जो है दुख दीबो । अरु बिनाश काहूको कीबो ॥ अरुकुबैन जे क्रोध समेते । निंदित कर्म ग्रहीके येते ॥ अरु जो अहङ्कार हिय धरनो । अरुकाहूको परिभव करनो ॥ येऊ निन्दित परम ग्रहीको । कहत तुम्हैं मति में करिजीको ॥ रामगीती ॥ अहिंसा औ सत्य और अक्रोध येत्रयजौन । परमतप हैं सर्ब आश्रममाहिं सुनु बुधि मौन॥ बिबिध बिधिकेबसन भूषण नृत्यबाजन पर्म । श्रवणको सुख कर्णिबार्त्ता दर्श पर्शअभर्म ॥ बिबिध बिधि के चारु भोजन चन्दनादि सुगन्ध । काम अरु

ब्यवहार जेबहु औ सुरागप्रबन्ध॥ और बरइनसबनहींको गृहा-श्रमहीमाहिं । और आश्रम में नहीं है अत्र संशय नाहिं ॥ धर्म अर्थ सुकामको जिहि गृहीके आनन्द । श्रेष्ठजनकीगतिहिपावत गृहीसो निर्दन्द ॥ सोरठा ॥ पशुनगृहस्थ सुजौन उंछवृत्ति को गहतहै । तिनको बरबुधिभौन स्वर्गलोक नहिंदुर्लभ ॥ आभीर ॥ कणचुनिबो हैं जौन । उंछकहावै तौन ॥

इतिश्रीमहाभारतेशांतिपर्वणिभृगुभरद्वाजसंबादेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

भृगुरुवाच ॥सोरठा ॥बानप्रस्थहैं जौन परेधर्ममें निशिदिवस । पुण्य तीर्थहैंतौन स्नानजाय तिनमें करत॥हरिगीती ॥ मृगमहिष औबा-राहगज शार्दूलहैं बन जौनमें । बरबानप्रस्थ सुफिरतहैं तपकरत अतिबन तौनमें ॥ तजिबस्त्रकोहैं करतधारण चीरबल्कल चर्म-को। अरुचारु भोजन छोड़िभक्षत मूल अरुफल पर्मको॥ नख रोमकेशहि दुष्यको सहि कियेधारण रहतहैं । अरुस्नान तीनहु काल माहीं करतदाया गहतहैं ॥ महिमाहिं अरु पाषाणमें अरु भस्म बालूमेंपरे। कबहूं सुकंकर युक्तभूमें करैंशयन सुमतिभरे ॥ निति करत बलिअरु होमको बिक्षेपको नाहिं करतहैं । कुशस-मिध कुसुम सुमूल फलके काज बनमें चरतहैं ॥ सुनुयहीहै बिश्रामतिनको दिन बितावनको महा । बहुशीत उष्ण सुपवन बर्षा सहत धीरजसों नहा ॥ दुखसहेते शीतादिकोत्वच उपढ़ि तिनके रहतहैं । तबहूं धरेहें रहत धीरज ज्ञानमान सुमंहतहैं ॥ आहारलघु पञ्चाग्निसाधन कियेभारद्वाजहे । अरुफिरं शोणित मांसतिनकेसूखिअस्थि सुसाजहे ॥ त्वचअस्थिही रहिजातबाकी सबैतिनकी देहमें । गुणसत्वतेतिनको निबाहत कहत सतिबुधि गेहमें॥ दोहा ॥ बानप्रस्थआश्रमहि जोकरत नेमसोंपर्म । शिख लौं दोषनको दहत निश्चय तौन सधर्म ॥ अतिही दुर्लभलोक जे तिनमें प्रापतहोत। यामें संशयहैनहीं भरद्वाज मतिपोत ॥ जयकरी ॥ संन्यासिनको जो आचार । सुनहुतौन अब बुद्धि अ-

गार ॥ धमगीती ॥ अग्नि धन अरु भार्य्यादिक छोड़ि तिनाहिं अभर्म । भोगसामग्री जिती सब तिती छोड़िसधर्म ॥ नेहफांसी काटिकरिके कढ़ैंगृहते दक्ष । लखैं कंचनढेल औ पाषाणसमहि प्रतक्ष ॥ धर्म अर्थ सुकाम साधन माहिंहोय अशक्त । उदासीन सुमित्रअरि समभाव माहीं रक्त ॥ भूतथावर जंगमनमेंकरैं द्रोहैं नाहिं । कहूंस्थान न करैं जंगम रहैं भूकेमाहिं ॥ फिरैंपर्बत माहिं औ तटनदीके बुधिधाम । देवतनकेथानमें अरु बिपिनमेंअति-साम ॥ बासकीजे ग्राम अथवा नगर पासैजाय।पांच रजनीनगर माहीं रहैंसुनु बुधराय ॥ ग्राममाहीं एक निशि कै बास जाय अन्यत्र । जायभोजन काजद्विजके जानि परमपवित्र ॥ पात्रमें जो करैभिक्ष्या लेयसानँद ताहि । कबहूंकाहूपाहिंमाँगैं आपुभि-क्षा नाहि॥ दोहा ॥काम क्रोध अरुलोभ अरु मोहदर्प अभिमान। औहिंसा निन्दारहैं इनसों बिगत सुजान॥सबभूतनको अभयदै फिरतेहैं मुनिजौन । सबभूतनते भीतिका प्राप्तहोत नहिंतौन ॥ देहमाहिंजो अग्निसो अग्नि होत्रकोमानि । तौन अग्निमाहींहु-ते भिक्षाहबि अनुमानि॥भिक्षाकोजो भक्षिबो भक्षणसमुझैनाहिं। होमकरब समुझै परम अपनेहियके माहिं ॥ जग्करी ॥ ऐसेसंन्या-सीहैंजौन । भरद्वाजसुनु प्रज्ञाभौन ॥ यज्ञकारके लोकहिपाय । रहतपरम आनँदसों छाय ॥ दोहा ॥ संन्यासाश्रममें रहत बिधिव-तजे जनप्रज्ञ । ब्रह्मलोकमेंप्राप्तते होत सुनहुधर्मज्ञ॥भरद्वाजउवाच॥ सुनतेहैं हमब्रह्मको पैजानतहैं नाहिं । ताहि जानिबेकी कहौ तुम उपाय मोपाहिं ॥ भृगुरुवाच ॥ रामगीती ॥ नासिकाको भागउ-त्तर मध्यभ्रूको जौन । ब्रह्मप्रापत होनकोहै थानउत्तम तौन॥ ब्रह्मको तहँ लखतहैं बुधसाधि प्राणायाम । कहत निजुकै तुम्हैं भारद्वाज मेधाधाम ॥ रहितजे पापादिसोंहैं पहुंचिकैते तत्र । निरउपद्रव होत हैं सुनु हैन संशयअत्र ॥ ब्रह्म प्रापति होन को जो परम उत्तमथान । रहत हैं नितत्तहां जे बुध सुनहुबर

करी ॥ होय ब्रह्मचारी गहिनेम । सेवागुरुकी करब सक्षेम ॥ जोसो सब लोकनको चारु । जानत मारग बुद्धि अगारु ॥ चरणाकुलक ॥ जासों जाय ब्रह्मपद जान्यो । तौन धर्म तव पास बखान्यो ॥ धर्म अधर्महि जानत जोई । बुद्धिमान है जानहुसोई ॥ भीष्मउवाच ॥ भरद्वाज भृगुकी सुनिबानी । पूजतभये भृगुहि बरज्ञानी ॥ सुनहु युधिष्ठिर भूप सयाने । तुमबूझो हमतौन बखाने ॥
महाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसम्बादोनामोनबिंशोध्यायः १९
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ होति बुद्धि आचरणसों विमला परम ललाम । याते तुम आचरणबर कहौ मोहिं बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ नित्य दुष्ट आचरणमें प्रबृत रहत है जौन । अरु साहस करिकै करत मनआवतहै तौन ॥ अरु जिनकी मतिमें रहै कीबो पर अपकार । मानव तौन असाधुहै भूपति बुद्धि अगार ॥ तत्परजे आचरणमें ते मानव हैं साधु । कहत सुबुध अवगाहिकै जिनको सुमति अगाधु ॥ गभीर ॥ प्रातैउठै नित्यही नेमधारै । ध्यावै गुरूको हिये प्रेम भारै ॥ स्नानादि क्रियाहिकै और कामै । नित्यै करै हैधरै सत्य मामै ॥ चालै न छोड़ै कबौं वंशवारी । देखै कबौंहू नहीं अन्यनारी ॥ उपदोहा ॥ बिष्ठा मूत्रनकरै कबहुं सूरयके ओरै । राजमार्ग अरु गोनमाहिंनहिं सुरगृहधोरै ॥ सदाआचमन लेय सुउतरै पार नदीके । दया धरेही रहै सर्बदा माहींहीके ॥ पाणि पांव मुखधोय न पोछै भोजन कालै । करै सुभोजन पूरब मुख है शेष है प्रीति बिशालै ॥ सदा भक्षिये मधुर मधुर कहि निन्दाकबहूं । कीजै नहिं जोबनो होय नीको नहिं तबहूं ॥ दोहा ॥ दोय काल भोजनकरै करै बीच नहिं फेरि । लहत तौन उपबास फल कहत सुबुध है टेरि । कर्म सुजिहि तिहि कालके तिहि तिहि कालहि माहिं । कीजे मनहि लगायकै आलसकीजै नाहिं । तोटक ॥ नख काटत जो जनदन्तन सों । अशुभैन बिचारतहै मनसों ॥ अरु जो तृणको नित तोरत है । जनजोअरुलो-

छुहि फोरतहै ॥ नहिं आयु महा नहिं तौन लहै। बरमानवबिज्ञ बिचारि कहै ॥ सजुगिता ॥ गुरुको सुआसन दीजिये। उठिकैप्रणामहि कीजिये ॥ गुरुको सप्रेम सुपूजिये। गुणतास बहुविधि कूजिये ॥ नगनानपरतिय देखिये। अरु भानु उवत न पेखिये ॥ रामगीती ॥ देव के आगार में औ गौन में भूपाल। और उत्तम क्रियामें औ तिमिहि भोजैन काल ॥ कीजिये है सव्यकारजकहत आरज पर्म। औतिमिहि शुभकार्य्य कीजे होयकै आभर्म॥ दोहा ॥ छिक्काके अरु छोरके तिमिहि स्नानकेअन्त। अरु भोजनके अन्तमें प्रज्ञावानभनन्त ॥ बढ़ोआयुयहमनुजको कहिये बचनसदाहि। यहैवचन कहियेसदा ब्याधिनहूकेपाहि ॥ कोक ॥ बड़ेजनहि ना कबौं तुकारिये। औकबौंननाम को उचारिये ॥ औ कनिष्ठ औसमान जौन है। भूपहै तुकारयोग्य तौन है ॥ दोष नाहिं सतनामलेनमें। प्रज्ञ पास ये सुनै सुबैनमें ॥ दोहा ॥ जौन छपावत पापहै जनमहानकेपास। ते बिनाशको लहत हैं क्षिप्र सुनहु बुधिरास ॥ करिकै कल्मषको महत छपवत जौन अजान। लखत नताको मनुज जो सुरतो लखत सुजान ॥ हरिगीती ॥ सुनु भूप हैमतिमान याते किये अघन उपायये। बर बिज्ञ जन जे महत तिनके पास जाय सुनाइये ॥ सुनिये सुकल्मष छूटिबेकी सुबिधि तिनके पासमें। करिये सुकल्मष दूरि गुणिकै देखि सुमति प्रकाशमें ॥ अघजो छपायो सोकरावत पापहीकी बासना। मति भौन सुनसो धर्मको बर होन देत प्रकाशना ॥ अरुजो छपायो धर्मसो सुनु धर्म धर भूपाल है। नितही करावत धर्मवारी बासनाहिं बिशाल है ॥ यहि हेतुते अघ कियोजोहै ताहि परगट कीजिये। अरु धर्मको नहिंप्रगट कीजै यह सुमति गुणि लीजिये ॥ जन मूढ़जो अघ कियो ताको करत सुमिरण नाहिं है। अघ समय लहिकै तौन निश्चय होत प्रापत पाहिं है ॥ जिमिशीत भानहि होतहै सुरभान प्रापतनृप

सुनो । तिमिकियो जो अघहोत जनको प्राप्त संशय नागुनो ॥
दोहा ॥ जान बटोरो द्रव्यहै आशासों नरराय । जियके माहिं
बिचारि यह यह कछु बीति नजाय ॥ भोगत ताको दुःखसों
मानवमूढ़ बिशाल । करत प्रशंसा हैं नहीं तिनकी प्रज्ञनृपाल॥
तिनकेभोग अपूरणहि औधन जोहैताहि । काल बिचारतहैनहीं
तुम्हैं कहत अवगाहि ॥ आभीर ॥ मनसों कीन्हों जौन । मुख्य धर्म
हैतौन ॥ चरणा दोहा ॥ याते सब भूतन कोदीजै मनसों अभय
सदाहिं । नृप बिचारिये भैको दीबो कबहूं तिनको नाहिं॥ जयकरी॥
अग्निहोत्र आदिकजे कर्म । तिनके माहीं भूप अभर्म ॥ भार्य्या
दिक कीचही सहाय । अरुजोध्यान परम सुखदाय ॥ ताकेमाहिं
सहाय प्रबीन । चहिये कबहूं काहूकीन ॥ ध्यानहु कोजानौ तुम
धर्म । मनको कीन्हों भूप अभर्म ॥ दोहा ॥ सुरता और मनुष्यता
कोहै कारण पर्म । धर्महि निश्चय जानुतू मतिबरकहत अभर्म॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेभृगुभरद्वाजसंबादोबिंशोऽध्यायः २० ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ आत्माकोहै जौन बिचार । तासनाम
अध्यातमचार ॥ किहिबिधि मानव चिंतनतास । करै कहौमोको
बुधिरास ॥ चरणाकुलक ॥ अरुयह बिश्व चराचर भयो । सोउतपन्न
कौनते भयो ॥ प्रलय होत जबकेहिके माहीं । प्रापतहोत कहौ
ममपाहीं ॥ भीष्मउवाच ॥ जयकरी ॥ अध्यातम कोजोवृत्तांत । पूछो
मोहिं सप्रीति नितांत ॥ सोतुमको हम कहिहैंतात । प्रज्ञावान सु-
नहु अवदात ॥ हरिगीती ॥ सबभूतकी उत्पत्ति जिहिते होति है
बुधिधामहे । अरुहोतजामें प्राप्त सबही प्रलय माहीं मामहे ॥
सुनब्रह्म नित्यानन्द ऐसो नाहि जानै सोमहा । सुख परम प्रापत
होत जनको अत्र संशय नाकहा ॥ अबबायु भूआकाश तेजस
पञ्चभूत महानहै । इनमहाभूतनतेहि सब उत्पन्नहोत जहानहै ॥
पुनि इनहिंमाहीं होत प्रापत कहतविज्ञ नरेशहे । मैंकहत हौं
ता माहिं संशयको नहींहै लेसहे ॥ अरु महाभूत सुब्रह्मते उत्पन्न

ह्वै सरसातहै । पुनि प्रलय माहीं ब्रह्महीमें लीनह्वै सब जातहै ॥
जिमिहोय सागरते महा उत्पन्न लहरि अनेकहे । पुनि समुद्र
हीमें होत प्रापत सुनहुनृप सविवेकहे ॥ यक औरहू दृष्टांत तुम
से कहतहौं मैंसोसुनो । सुनि तौन अपने हिये माहीं बुद्धिको त-
निकैगुनो ॥ जिमि कूर्म अपने अंगको फैलाय स्वेच्छासों सबै ।
आपुही लेत बटोरिहै मनमाहिं आवत हैतबै ॥ इहिभांति भूता-
तमा आकाशादि भूतनको महा । बिस्तारिलेत बटोरिहै पुनि
अत्र संशयना कहा ॥ दोहा ॥ शब्दजौन भूतातमा ताको जोहै
अर्थ । सोमैं तुमसे कहतहौं भूपति सुनहु समर्थ ॥ सोरठा ॥ भूत-
हि जाकोरूप तासनाम भूतातमा । बरमतिमान अनूप जीवतौन
है प्रज्ञबर ॥ चरणा दोहा ॥ भूतकार सब भूतन माहीं महाभूत
जे पंच । तिनको करतभयो सुन मतिबर अत्र न संशयरंच ॥
दोहा ॥ शब्द श्रोत्र अरुछेद्रये नभते भेहैंतीन । भ्रमणादिक
चेष्टा परश अरु त्वक सुनहु प्रवीन ॥ इनतीननको हेतु है
बायु सुनहु बुधिधाम । हम बरबिज्ञन सों सुन्यो यह वृत्तांतल-
लाम ॥ जठराअग्नि सुरूप अरु चक्षु सुनहु येतीन । इनको
कारण तेजहै सुमति कहत परबीन ॥ जिह्वा रस अरुक्लेद ये
त्रैजलके हैंपर्म । गन्ध घ्राण अरु देहये भूके सुनहु सुधर्म ॥
महाभूत ये पंच हैं छठयो मन बुधि धाम । महत प्रज्ञ धर्मज्ञ
सुनु कुन्तीसुत अभिराम ॥ मनसों औ इन्द्रियनसों होतजीव
को ज्ञान । औ सु सप्तमी बुद्धि है निश्चय करणि सुजान ॥ अ-
ष्टमहै क्षेत्रज्ञ सो कर्म साक्षी तौन । भूमिपाल अरिजालदर सुन-
हु तात मतिभौन ॥ क्षेत्रदेहको नामहै ताकोजानतजौन । ताहि
कहतक्षेत्रज्ञहै सुबुध जीवहै तौन ॥ जिह्वा त्वकअरु श्रोत्रअरु
चक्षुघ्राण बुधिधाम । ज्ञानेन्द्रियहैं पंच ये बिषयकहतअबआम ॥
रस स्पर्श अरु शब्द अरु रूप गन्ध सुनु भूप । ये इन्द्रिय कै
बिषयहैं पंच सुप्रज्ञ अनूप ॥ चक्ष्वादिक इन्द्रिय सकल रूपादि-

कह्यो जौन। ग्रहण करत तामें करत संशय मन बुधिभौन ॥नि-श्चय को मति करतिहै अरु जोहै क्षेत्रज्ञ। तौन कर्मको लखत है साक्षीवत है प्रज्ञ॥ साक्षी जो क्षेत्रज्ञ है बर चैतन्य अनूप। सब शरीर में रहत है जैसे व्यापत भूप ॥ सर्ब जगत में रहत है तैसे व्यापत सोय। यामें संशय है नहीं भनतसुबुधबर लोय॥ बुद्ध्यादिकको साक्षी महाभूतयुत जौन। ब्रह्मभावतामें कह्यो जगव्यापक हैतौन॥ श्रुति मनसों औयुक्तिसों सुनहुंजानि-थे ताहि। ताकोजाने होतसुख कहत तोहिं अवगाहि॥ चक्ष्वा-दिक इन्द्रीयजे तौनजानिये तात। तिनकोजाने सत्वरज तमऊ जानेजात॥ मनजिहि इन्द्रियके निकट रहत सुइन्द्रिय तौन। ग्रहण करतिहै बिषय को और न इन्द्रिय जौन॥ चौपाई ॥ यह बिचारहै कीबोजोय। इन्द्रियको जानबहै सोय॥ आभीर ॥ जिहि सों देख्यो जात। तौनचक्षुहै तात॥ सुन्योसु जिहिते जाय। श्रोत्र तौन नरनाय॥ दोहा ॥जाते सूंघोजातहै घ्राणकहावे तौन। जीभ कहावे तौनहै रसको जानति जौन॥ जान्यो जात परश है जाते त्वकताको है नाम। जोबिकारको लहति तौनहै बुद्धि सुनहु बुधिधाम॥ आभीर ॥ करत सुइच्छा जौन। जानहु मनहै तौन॥ दोहा ॥ जिनको भिन्नसुअर्थ हैअरु मतिके आधार। तिन-कोइन्द्रिय कहतहैं जेहैं बुद्धि अगार॥ करत जीव चैतन्य है तिनको चेष्टित पर्म। जैसे चुम्बक लोहको चेष्टित करतसुधर्म॥ रामगीती पुरुषमें है बुद्धिजो सोकबहुं सात्विक माहिं। होति कबहूं रजोगुण औ तमोगुणके पाहिं॥ लहति कबहूँ मोदकोहै कबहुं शोचाहिपाय। प्राप्तकबहूं मोह माहीं होतिहै नरराय॥ नरनके मनमाहिं ऐसे प्राप्त मेधाजौन। प्राप्तसात्विक आदिकनको होति है बुधि भौन॥ रहति तीनहुं गुणनमें पै भिन्न है महिपाल। रहति है ज्यों बेलि वृक्षपै सिन्धु पृथक बिशाल॥ भिन्न तीनहुं गुणनसोंपै रहति गुणहिन माहिं। परम सूक्ष्मरूप करिकै अत्र

संशय नाहिं ॥ रजोगुणको प्राप्तह्वैके बुद्धिसुनु नरनाह। लावती इंद्रियन को है बिषय निज निज माह ॥ बिषयमें जो दोष लखि केप्राप्त सत्वहि होय। होय भ्रम नहिं परै जैसोहोय तैसोजोय॥ तमोगुणको प्राप्तजो मति होयतौ बुधिधाम। बस्तु जैसी होय तैसी परतलखि नहिंग्राम॥ शान्ति अरु इन्द्रियनको जो रोकिबो है तात। सत्व गुणसों प्राप्त तिनको होहिमति अवदात॥ रजोगुण सों कामको अरु क्रोधकोसो पाय। होतितमसों खेद भयको प्राप्तमति नरराय॥ दोहा॥ कही सर्बगति बुद्धिकी तुमको हमहे भूप। सब इन्द्रियकोजीतिये भनतसुप्रज्ञअनूप॥ बरवै॥ सत्व सुरज तमगुण ये तीनहुं जौन। रहत माहिं देहिनके सुनु बुधिभौन ॥ दोहा॥ सुखकी जोहैप्राप्ति नृप सत्व तौनही जानि। अरु दुखकी जो प्राप्तिहै रज तौनाहिं अनुमानि॥ प्राप्त जौन अज्ञानकी सोईतमहै भूप। सुनहु युधिष्ठिर धर्मधर मतिबर कहत अनूप॥ प्राप्तहोय शुभकर्ममें जौन समयके माहिं। तौन समयमें जानिये सत्वहि अपने पाहिं॥ अपनेको नहिं प्रीतिकर औ दुखसों युतजौन। प्रवृती ऐसे कर्मकी होय जबै बुधिभौन॥ तबै रजोगुणकी प्रवृति जानी अपने माहिं। हम यह बर वृत्तान्त को सुन्यो सुबुधजन पाहिं॥ युक्त जौन अज्ञानसों करम सुनहु नरनाह। आयसके अरुजो नहीं मन बिचारके माह॥ प्रवृती ऐसे कर्मकी होय समयमें जौन। प्रवृति तमसकी जानिये भूपसमयमें तौन॥ हर्षप्रेम आनन्द ये सात्विकके गुण धर्म। कबहूं प्रापत होतहैं भूपति सुनहु सधर्म॥ असंतोष परिताप अरु लोभ अक्षमा शोक। रजगुणके ये चिह्न हैं कहत सुमतिके ओक। आलस निद्रा मोहअरु तैसेही अपमान। तमके गुण येहोत्तहैं प्रापत कबहुं सुजान ॥ जयकरी॥ जाकेहोय महान बिचार। दीनवचन भाषै न उदार॥ अरु उत्तम सुपदार्थ अनेक। जिनकोजानै सहितबिबेक॥ सो दोउ लोकनकेमाहिं।

पावत आनँद संशय नाहिं ॥ दोहा ॥ बुद्धि और क्षेत्रज्ञ को अन्तरहै यह प्रज्ञ । करै अहंकारादिको बुद्धिनहीं क्षेत्रज्ञ । जैसेमिले सुरहत है मसक उदुम्बर तात । तिमिहि बुद्धि क्षेत्रज्ञहै मिले रहत अवदात ॥ है पै भिन्न स्वभावसों बुद्धि और क्षेत्रज्ञ । जैसे जल मच्छी मिले रहत भिन्नपै प्रज्ञ ॥ देह अहङ्कारादिको जानत आत्मा पर्म । आत्माको जानत नहीं ते सब सुनहु सधर्म ॥ देह अहंकारादिको दृष्टाजो क्षेत्रज्ञ । जानत है बुद्ध्यादि को मिले आपुमें प्रज्ञ॥हम गोरे हमसांवरे हम अन्धेहम कान । हम कुरूप हैं परम अरु हम स्वरूप बलवान ॥ दृष्टामें अरु दृश्यमें इन वचनन सों दक्ष । जान्योजात अभेद है तुमको कहत प्रतक्ष ॥ आभीर ॥ दृष्टा ताको नाम । जो देखत है आम ॥ योग्य देखिबे जौन ॥ दृश्यकहावे तौन ॥ दोहा ॥बुद्ध्यादिक है दृश्यसब दृष्टाहै क्षेत्रज्ञ । तौन निरंतर लखत है बुद्ध्यादिकको प्रज्ञ ॥ इंद्रिय मन अरु बुद्धि ये सब जड़हैं सुनु भूप । इन्हें प्रकाशित करत है आत्मा परम अनूप ॥ इनकेसँगमें प्राप्तकै आत्मा नाहिं जड़ होत । पैइनके सँगमें मिल्यो रहत सुनहु बुधिपोत ॥ मनको करति प्रकाश मति मनगुणको परकाश । मतिके आश्रय रहत नहिं आत्मा सुनु बुधिराश ॥ सोरठा ॥ मनसों कीन्हेशोक इन्द्रिय वारि वृत्तिको । सुनहुतात बुधि ओकआत्मा करत प्रकाश है ॥ हरिगीती ॥ तजिकर्मको इन्द्रियनकेजो आतमामेंरतिकरै । अरु नित्य आत्माके विचारहि आपने हियमेंधरै ॥ तबहोत उत्तम गतिहि प्रापत अत्र संशय नाहिंहै । सुनु भूमिपति धर्मज्ञबर हमसुन्यो बुधजन पाहिं है ॥ जिमि बारि चरणहिहोतपक्षीलिप्त बारि सुपर्महै । तिमि आतमामेंनिरतजेतेलिप्तहोत न कर्महै ॥ सुनुआत्मा नहिंकर्म मांहीं लिप्तकबहूं होतहै । यहजोसुनिश्चय तासकरिकै हियेमाहिं उदोतहै ॥ तजि शोच हर्ष सुलोभ क्रोधहि मोहकाम मदैतथा । अरु तिमिहि मत्सरछोड़ि करिकैरहै बर

ज्ञानी यथा ॥ दोहा ॥ कोऊ ऐसेकहत बुध नाशितहै गुणजौन। नष्ट नहींते होतहै सुनहुतात बुधिभौन॥कोऊ ऐसेकहत हैं नाश गुणनको जौन। जान्यो नाहीं जातहैचेष्टा करिकैतौन ॥ ग्रहण करतिहै बिषयको जबये इंद्रियसर्ब।ताते तब सुखदुख नहीं प्रापत होत अखर्ब ॥ तब हियमाहीं जानिये गुणमेरे हे जोन। सुख दुख कर्त्ता मोह अरु नष्टभये सबतौन ॥ सोरठा ॥ येदोऊ मत जौन तिनमाहीं बरबिज्ञजन। नीको देखैतौन ग्रहणकरें सुनुभूपबर॥ तप्तलोहहैजौन तामाहीं अरु अग्निमें। भिन्नभावहैतौन जान्यो नाहींजातहै॥ दोहा ॥ ऐसेहीक्षेत्रज्ञ जो साक्षीहै अवदात। तेहि माहीं अरु बुद्धिमें भेद न जान्योजात ॥ जयकरी ॥ इनदोउन में एकीभाव। जानिपरतहै सुनुनरनाव ॥ एकीभाव दुहुंनकोजौन। समुझब हृदय ग्रन्थिहै तौन ॥ दोहा ॥ खोलत जे यहि ग्रन्थिको ते हैं जीवनमुक्त। यामेंसंशयहै न जेकहत ज्ञानसोंयुक्त ॥ जैसे उज्ज्वल करततन पुरुष नदीमेंन्हाय। तैसे बुध यहिज्ञान सों अंतःकरण सचाय॥ महानदी के पारको जनजानेहू तात। पारकरन नौकाबिना केहू जाय न जात॥अरु यहजोहै जगनदी तासु परात्मापार। ताको जानेहीतरत साधन बिनहु सुढार ॥ अर्थ धर्म अरु काम जे तिन्हें जानि क्षयमान। छोड़त जेतेहोत नहिं फेरि बासनावान॥इन्द्रिय करिकै आत्मा नाहीं देख्योजात। अपनी अपनी बिषयमें लगीरहतहै तात ॥ यहजानेसो होत बुध और न कारणजानु। सुबुधहोनको कहतहैं जेहैंसुबुध महा-नु॥ सोरठा ॥ आत्माको जोज्ञान जाहि होतहै प्राप्तनृप। ताहिकह-त मतिमान होत न दृष्टादृष्टभय ॥ दोहा ॥ शत्रु आदिको जौन भय दृष्टतौन दुखरूप। नरकादिकको जौनभय सोअदृष्टहै भूप॥ हरिगीती ॥ सुनु देहको अभिमान जाकोहोय छूटो ज्ञानसों। नहिं होत ताको प्राप्तहै भयसबैजगत महानसों॥ बरआत्मज्ञानीजौन पूरब जन्मके जेकर्महै। तिनकोसुभोगन काज कर्महिं करतकहत

सुधर्महै ॥ यहिहेतुते यहिजन्ममाहीं करत कर्महि जौनहै।सुनुकर्म सो परलोकमें फलदेतनहिं बुधिभौनहै ॥ दोहा ॥ आत्मज्ञानीजे नहीं करतकर्मते जौन । तिनते दृष्टादृष्टभय प्राप्तहोत बुधिभौन॥ कामादिकमें पगि करत अहंभावसों कर्म । तासु असूया करत हैं जेबरप्रज्ञ सुकर्म ॥ आत्मज्ञानीजेनहीं अहंभावसों तौन ।कामादिकमें पगिकरत कर्म सुनहु बुधिभौन ॥ तेहिते दृष्ट अदृष्ट भय प्राप्तहोतहैपर्म।जेआतमज्ञानीनहींतिनकोजानुसुकर्म॥चरणादोहा॥ मरण भये पुत्रादिकको अरु नष्टभये धनभूरि । अज्ञानी जन जौनसर्व ते रहत दुःख सों पूरि ॥ आभीर ॥ अरु ज्ञानीहैंजौन । लहत दुःख नहिंतौन ॥ पुत्रादिकोनाश । भयेसुनहुबुधिराश ॥ दोहा ॥ जानत यहि वृत्तान्तको जे जन हैं अवदात । ज्ञानवान तेईपरम सुनहु धर्मधरतात ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ ध्यानचारिपरकारको कहत तेहिहौंतात। जेहिसों ऋषिबर लहत हैं परमसिद्धि अवदात ॥ भ्रमरावली ॥ नहिंकामहि आदिक जे जिनके मनमें। हिमआदिक सर्व सहैं बसिकै बनमें ॥ जगको तजिकै जगमें पुनि आवतना । रतज्ञानहिमें मनवेग बढ़ावतना ॥ दोहा ॥ कीन्हें मनगत मोक्षमें ऐसे हैं जनजौन । यथायोग्यते करतहैं ध्यानसुनहु बुधिभौन ॥ इंद्री सर्व बटोरिकै मनथिरिकरिकै पर्म । काष्ठवत बैठे सुमुनि हैं जे तजिकै भ्रम ॥ सुनैशब्द नहिं कानसों जिह्वासों रसनाहिं । जानै अरुजानैनहीं स्पर्शत्वचा के माहिं ॥ रूप नजानै चक्षुसों अरुनासा सों गन्ध । करि कै ऐसी भांतिसों सब इन्द्रियको बन्ध ॥ मनके माहिंबटोरिकै बिधिसों इन्द्रिय सर्व । आत्मामांहिं लीनयदे ज्ञानी परम अखर्व ॥ प्रथम हृदयाकाशमें ध्यानमार्ग के माहिं । मनलावदे स्वस्थकै अंतलगनदे नाहिं ॥ मनको औ इन्द्रियनको हैबटोरिबोजौन । मुख्य ध्यान यह भूप है कहत म-

नीषाभौन ॥ जयकरी ॥ इन्द्रिय सह रोक्यों जो तात ॥ चंचल सुमन अलग ह्वै जात ॥ जिमि घनते ह्वै अलग बिशाल । चमकत चपला सुनु भूपाल ॥ जिमिजलबिंदु पातके माहिं । लोल होत हैं ठहरत नाहिं ॥ इमिही ध्यानमार्गमें पर्म । होत लोल चित कहत सुधर्म ॥ दोहा ॥ ध्यानमार्गके माहिंरहि मन क्षणमात्र सुजान । होयजात पुनिबायुवत चञ्चल तातमहान ॥ चंचल तासों चित्तकी नहींअधीरज होय । फिरि लगायदे ध्यान में ज्ञान नयनसों जोय ॥ ध्यानकरण जो लगतहै ताको प्रथम बिचार । प्रातहोतपुनि होत है प्राप्तविवेक सुढार ॥ प्राप्त बितर्क सु होतहै फेरि सुनहु महिपाल । जानतते हैं यह क्रमहिं जिन की सुमति बिशाल ॥ ईश्वरको जो रूप है अति सूक्षम अभिराम । तामें मनहि लगायबो हिय अकाशमें आम ॥ अधिकारी जो ध्यानको मध्याहिमें सुनुभूप । तासु बिचारक नामहै यह जो ध्यान अनूप ॥ चरणा दोहा ॥ थूल रूप जो ईश्वरको है तामाहीं भूपाल । मनलगायबो जौनहै कहत सुबुद्धि बिशाल ॥ दोहा ॥ अधिकारी जो ध्यानको अधम तास यहपर्म । ध्यान बिचारक नाम है निजु मैं कहत सुधर्म ॥ क्रमसों आत्मा जानिबो तजि अज्ञान अपार । है उत्तम ध्यानीनको यह बर ध्यान बिचार ॥ ईश्वरकी जो मूर्त्तिहै तास अकारहिचारु । मन जब प्रापतहोयबर कीन्हें ध्यान बिचारु ॥ तब छुटाय आकारसों ईश्वरको परकाश । तामें मनहिं लगायबो सो विवेक बुधिराश ॥ जयकरी ॥ मध्यमध्यानी को यहतात । ध्यान विवेक कह्यो अवदात ॥ अब उत्तमध्यानी को जौन । ध्यान विवेक सुनहु तुम तौन ॥ दोहा ॥ निर्गुणमाहिं लगायबो चंचलमनहिं अपार । सो उत्तम ध्यानीनको ध्यान विवेक सुढार ॥ गुरुसों पाई युक्ति जो तासों क्रमते पर्म । निर्गुणको जो चीन्हबो तौन बितर्क सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह जो बितरकध्यान सोमध्यम ज्ञानीनको । अब बितरक मतिमान

सुनु ध्यानी उत्तमनको ॥ दोहा ॥ आत्मामाहिं लगावनो मनको जौन सुजान । ताते छूटै देहको जो अभिमान महान ॥ प्राप्त भयो आनंद जो तौनहु तजिकै पर्म । मनको जो न लगावनो निर्गुणमाहिं सुधर्म ॥ सोरठा ॥ यह जो बितरकध्यान सोउत्तम ध्यानीनको । कह्यो तुम्हैं मतिमान हम सुबुधनके पाहिं सुनि ॥ रोला ॥ होय मनको ध्यानमें जो प्राप्त क्लेश सुजान । ऊबितो तजिधीर्य्यताको छोड़िये नहिंध्यान ॥ धूरि भस्म करीषमें जो भोरि शीघ्रहि नीर । जो बनायो चहै कछु तौ बनै नाहीं धीर ॥ राखिये कछुकाल जो जलमाहिं इनको डारि । जो बनावो बनै सो तब कहतहौं निर्धारि ॥ इमिहि इंद्रिय इकट्ठी मनमाहिं करि अवदात।सहज सहज लगाइयेमन आत्मामें तात ॥ सहित इन्द्रिय मनहिंराखे ध्यान मारगबीच । नित्यके अभ्याससों मनशान्त होत निभीच ॥ दोहा ॥ मनरोकेसों जौनसुख प्राप्त होतहै पर्म । तासम दोऊलोकके सुख नहिं भूप सधर्म ॥ तासुखसो है युक्त जे ध्यान कर्ममें तौन । होत परम परसन्न हैं संशय नहिं बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ यहि बिधि कीन्हें ध्यान योगी मोक्षहि लहतहैं । सुनहु भूप मतिमान संशय अत्र नरंच है ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

इति अध्यात्म समाप्तम् ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ मनहिं लायबो ध्यानमें कह्यो पूर्व तुम तात । हम यकाग्रके चित्तके सुन्योतौन अवदात ॥ चंचलमन बिन जपकिये लगत ध्यानमें नाहिं । याते जपकी बिधिकहौ आपु हमारे पाहिं ॥ चारिहु आश्रमके धरम मोहिं सुनाये पर्म । और सुनाई बहुकथा सह इतिहास सुधर्म ॥ नरेश ॥ हम सुनी तौन मलायकै । अरुगुणी हिये बहुभायकै ॥ अब जापके फल पर्म को । तुम मोहिं कहौ तजिभर्मको ॥ आभीर ॥ जापकहैं जनजौन । कहां रहत हैं तौन ॥ कहौ मोहिं अरु तात । जपकी बिधिअव-

दात ॥ दोहा ॥ जापक कहिये काहि नृप अरु जपकहिये काहि। यह सब मोको करि कृपा कहो आपु अवगाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं इक इतिहास अनूप। यमको द्विजको काल को है संवाद अनूप ॥ जयकरी ॥ कह्यो योग वेदांत बिचार। मोक्ष दरशिन सुमति आगार ॥ जपको त्यागहिं तिनके माहिं। हम यहसुनो बुधनके पाहिं ॥दोहा॥ लिख्यो वेदके माहिंहै ब्रह्महिको सुबिचार। याते जपको त्यागहै सुनु नृप बुद्धि अगार ॥ जगत माहिं जो ब्रह्मको है बिवेक सुखदाय। ताहि कहत वेदान्त हैं जे बरबुध नरराय ॥ आभीर ॥ मन निरोधको योग। कहत बिज्ञ बरलोग ॥दोहा॥ होत सु अन्तःकरण है जप कीन्हेतेशुद्ध। होत नहीं साक्षात है आत्माको नृपबुद्ध ॥ योग और वेदान्तमें यहि कारण ते पर्म। उपकारी है औ नहिंहुं जप बुधकहत सुधर्म ॥ जयकरी ॥ यहिके माहिं सुकारणएक। है सो सुनु भूपति सबिवेक ॥ इन्द्रीजीतब अरु मनरोध। सत्यबोलिबो तजिबोक्रोध॥ अग्निहोत्र को करिबो जौन। अरु एकांते रहिबोतौन ॥ अरु पवित्रभोजन को कर्ब। हियमें निति अनसूया धर्ब। अरु सुजीति इन्द्रियको पर्म। सत्वसुगुण के माहिं सुकर्म॥ जोलगायबो है भूपाल। अरु जोधरिबो क्षमाबिशाल ॥ अरु नकामना करिबो जौन। अरु जो मनरोकब बुधिभौन ॥ जपके अंगसबै एतात। कहत सुबुधमतिके अवदात॥ बरवै ॥ सिद्धिहोत नहिं जपहै इन बिनभूप। इनको धारण करिये प्रथमअनूप ॥जेसकाम जन तिनको जप अभिराम। कारण स्वर्गादिक कोहै बुधिधाम॥ अरु सकाम नहिं जेहैं जन अवदात। साधन मोक्षहिं कोहै तिनको तात॥ पैन्हिपवित्रा कर्म सुकुशकी चारु। अरु शिरमाहिं धारिकै कुशा सुढारु ॥ बैठि सुआसन कुशके पैअत स्वक्ष। और सु बहु कुश धरिकै चहुंदिशि दक्ष ॥दोहा॥ मनको कर्षि सुविषय ते जीव ब्रह्म करि एक। करै जपहि सुनुभूपबर कहत सुबुध

सविवेक ॥ मनको करिएकाग्र तजि बार्ताको अधिकार । जानै एकहिब्रह्मको अरुआपहि सुउदार ॥ रामगीती ॥ ब्रह्ममें अरुआपु माहीं एक जानै भाव । ताहितजि कामादिमें पुनि परैनहिं नरराव ॥ होतहै तब ब्रह्म सूक्षम देहतजिकै तात । है नहीं सन्देह यामें भणत बुध अवदात ॥ चरणादोहा ॥ चहै भिन्न जो रह्यो ब्रह्मको प्राप्त होयकै पर्म । रहै भिन्न तौ ब्रह्मलोक में लहत न जन्म सुकर्म ॥

श्रीमहाभारतशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेजापकोपाख्यानेत्रयोविंशोऽध्यायः २३

युधिष्ठिरउवाच ॥ चरणादोहा ॥ जो उत्तमगति पावत जापककही तौन तुमतात । यहै एकही गतिपावन की औरहु गति अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ उत्तमगतिहूकोहै पावतजापक परमअनूप । और अनुत्तमहूगति को सुनुप्राप्त होतहै भूप ॥ आभीर ॥ जापक जैसेजात । नरकमाहिं हेतात ॥ तैसे तू सुनुआम । छोड़िदुचितई माम ॥ दोहा ॥ पूर्वकही जैसीक्रिया जापककी अभिराम । करैन तैसी जायतौ तौन नरकमें माम ॥ मोहा ॥ करै जौन जपप्रेमसों । अरु जो करै न नेमसों ॥ जो जापक सुनु तातहे । निश्चय नरकहि जातहे ॥ जयकरी ॥ गर्बवान अरु जापकजौन । परअपमान करत अरु तौन ॥ निश्चय निरय लहत है तात । कहत सुबुध मतिकै अवदात ॥ दोहा ॥ जहँ जहँकी करिकामना करत जपहि जनजौन । निश्चयतहँतहँ जातहैसंशय नहिंबुधिभौन ॥ प्राप्त होब परब्रह्मको है उत्तम गतिजौन । तासोंहै स्वर्गादि की प्राप्ति निरय समतौन ॥ आभीर ॥ जे जापक ज्ञानी नाहीं । प्रापतहोत मोहिंमाहीं ॥ तातेनारद दुखकारी । लहिशोच करभारी ॥ चरणाकुलक ॥ उठिहैं हमयहकारज करिकै । हठ बिस्तावी नेमकोधरिकै । करतजौन जपनारक माहीं । परततौनहै संशय नाहीं ॥ दोहा ॥ जपनाहिं पूरणहोतहै तिनसोंप्रण भूपाल । कोईउपद्रव होतहै प्रापत आयबिशाल ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ब्रह्ममाहिं जो प्राप्तभो करत

करतजप पर्म। सोपुनि कैसे देहको प्रापतहोत सुधर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ जपतौ परमप्रशस्तहै पैकीन्हें सहकाम ।प्राप्तहोत जन निरयको कहत सुबुध बुधिधाम ॥

इतिमहाभारतशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेजापकोपाख्यानेचतुर्विंशोध्यायः २४

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जापक कैसे निरयको प्राप्तहोतहैतात। कहौ मोहिं अवगाहिकै आपुबिज्ञ अवदात ॥ सुनेरावरे बचन ये भो आश्चर्य महान। सुकरमकीन्हे मिलतकहुं कुत्सित फल बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ भयो धर्मके अंशते तू उत्पन्न नरेश। है तेरी थिति धर्म में बरसुभाव ते वेश ॥ आभीर ॥ धर्म जास आधार । ऐसो बचन सुढार ॥ तोहिं कहत हौं तात। सुनहु तौन अवदात ॥ चचला ॥ देवतानके सथान जौन हैं प्रकाशमान। रंगसों भरेउतंगहैं अनूप रूपमान॥सर्बदा आनन्ददाय हैनरेन्द्र हैसुजान। स्वच्छभासके उदास भावहर्ण हैं सुठान ॥ दोहा ॥ इच्छाजहँकी होय तहँ शीघ्रलेयहै जात। ऐसेचारु बिमानहैंतिन के माहिं बिभात ॥ जयकरी ॥ लोकलोकपालनके पर्म। शुक्रतथा गुरुके सहशर्म ॥ बिश्वेदेवनको बरलोक। तथा मरुतको सुनु बुधिओक ॥ तिमिहि रुद्रको रबिको पर्म। औसुबसुनको सुनहु सशर्म ॥ ब्रह्म प्राप्तिसोंहैं ये सर्ब। जानहुनरक समान अखर्ब ॥ आभीर ॥ सुनहु ब्रह्मपद जौन। बरनिभयहै तौन॥ सत्वादिकगुण तीन। तिनसों रहित प्रवीन ॥ जयकरी ॥ महाभूत मनइंद्रियसर्ब। बुद्धिबासना कर्मअखर्ब॥ वायुतिमिहि अज्ञानमहान। इनआठहु सोंरहित सुजान॥ प्रियता अरुप्रियता जौन। रहित इनहुंसोंहै बुधिभौन ॥ सुखदुख शोकहर्षसों भूप। रहित नित्यहै परमअनूप ॥ आदिअंतसों रहित नृपाल। तहांसमर्थ नहीहै काल ॥ है सबको प्रभु तौन महान। ताहि भये तेप्राप्त सुजान ॥ रहत शोच नहिं महत अनेक। औजितेक हैं दुःख तितेक ॥ कह्यो

ब्रह्म पद तोहिं बखानि । हम नीके मति सों अनुमानि ॥
इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेपंचबिंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
रामगीती ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ कालको इक्ष्वाकुको अरु बिप्रको बुधिधाम । मृत्युको अरु धर्मको संबाद तुमको आम ॥ कहैंगे हमकह्योहो तुमतात ऐसे मोहि । कहो सो अब कृपाकरिकै आपु मोतन जोहि ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत यहि परसंगमें इतिहासहो इकतात । सुनहुसो तुम चित्तको एकाग्रकरि अवदात ॥ सूरसुत इक्ष्वाकुको अरु बिप्रको अभिराम । कालको यम मृत्युको संबाद अति शुभ आम ॥ हुतोब्राह्मण एक अति अभिराम बरबुधि धाम । धर्ममेंहो प्रवृत शुचि यश हुतोजाको माम ॥ कल्प अरु व्याकरण ज्योतिष औ निरुक्ति सुछंद । औ सुशिक्षा वेदके षट अंग ये मनुजेंद ॥ हुतो जानत तौनहो इनषटहुको सुनु भूप । पैप्पलादि सुनामताको हुतो परम अनूप ॥ वेद अर्थहु माहिं सो बर हुतो बिप्र प्रवीन । शृंग पै हिमवानके सो हुतोरहत कुलीन ॥ नेमकरिकै कियोजप तहँ बर्षएकहजार । छोड़िकै सबकामनाको मामबुद्धिअगार ॥ जयकरी ॥ जपसोंगायत्री साक्षात । ह्वैकै ताहि कह्यो इमितात ॥ मैंप्रसन्नहौं तोपरपर्म । लखितेरीजपाबिप्र सुधर्म ॥ उकछा ॥ गायत्रीके बैन । सुनिकै द्विज बुधिऐन ॥ बोल्यो कछूहू नाहिं । निरत रह्यो जपमाहिं ॥ दोहा ॥ तातेभई प्रसन्नअतिकरिकै कृपाबिशाल । पुनिपुनि भईसराहती द्विजकेजपहि नृपाल ॥ जबजप बिधिसंपूर्ण भो तब उठिकरिकै क्षिप्र । शिरदेवीके पांयपै धरतो भयोसुबिप्र ॥ हरिगीती ॥ तिहिके अनन्तर कहतभो सोताहि ऐसेबैन । तूमोहिं आई लखन ताते भयोदेवि सचैन ॥ देदेवियहबरदान हमको तूकृपा करिकैमहा । मैंरहौं तत्पर जपहिसे रतप्रीति बंधन सोंनहा ॥ सावित्र्युवाच ॥ जपमाहिं तौबर लगोईहै चित्ततेरो बिप्रहे । कछुऔर इच्छाहोय जोसो मांगुदेहौं क्षिप्रहे ॥ दोहा सावित्रीके बैनये सुनिइमि कह्यो

सुजान । बढ़ोलालसा जपहिमें ममचाहिये नहिंआन ॥ अरिल ॥ रहै चित्त एकाग्रनित्यमम । देहुदेवियहचाहतहैंहम ॥ सावित्रीतिहिके सुबचन सुनि । कहत भईइमि मधुरबचनगुनि ॥ उल्लाला ॥ जिनलोकनमें जात अन्यऋषि तिनमें तूनहिं । प्रापत ह्वै है बिप्र प्राज्ञबर करुनिजु हियमहिं ॥ प्रापत ह्वै है ब्रह्मपदहि तू आनँदमेंपगि । रहो चित्त एकाग्र नित्ततव जपहि माहिंलगि ॥ सोरठा ॥ धर्ममृत्यु यमकाल ऐहैं तेरे पास द्विज । धर्म बिवाद बिशाल तोसों उनसों होयगो ॥ तोमर ॥ अब जातिहौं निजधाम । सुनु बिप्र हेअभिराम ॥ इमि बिप्रको कहिबैन । नृपसों गई निजु ऐन ॥ तिहिके अनन्तर तौन । जपमाहिं लगि बुधिभौन ॥ सुरवर्ष शतलो पर्म । भोगहत तत्र सुधर्म ॥ दोहा ॥ पैप्यलादि को पूर्णभो जब जप बिधि सह भूप । तास पास साक्षात तब आयो धर्मअनूप ॥ धर्मराजउवाच । चरणाकुलक ॥ सुनोबिप्रबर मतिसोंछाये । तोहिं लखन काज हम आये ॥ तोहिं मिली जपको फलऐसो । बहुतन अबलौं लह्योनं तैसो ॥ दोहा ॥ देवलोक नरलोक अरु जोतेते मतिमान । गृह उलंघि तूसुरनके लहिकै उत्तमथान ॥ मौनी ॥ देहत्याग तुमकरिकै विप्रसुजान । इच्छित लोकहि जावहु गुणहु न आन ॥ देहतजे तुम लहिहो इच्छित लोक । और कहैं का तुम हौ बर बुधिओक ॥ चरणाकुलक ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दुखसों मिश्रित सुख जिनमाहीं । तिनलोकन को जैहौं नाहीं ॥ जाहुधर्म तुम अपने गेहे । तजिहैं हम नाहीं यहिदेहे ॥ स्वर्गादिक लोकनके काजे । करु निश्चय हियमाहिं दराजे ॥ तनतजिहै तब मुक्तिहिह्वैहै । नहिंहमस्वर्गादिकमें जैहै । पैप्यलादिकी बाणी सुनिकै । धर्म कहतभो ऐसेगुणिकै ॥ धर्मउवाच ॥ दोहा ॥ तब अवश्यहीछूटिहै है नहिं संशयअत्र । अरु सुब्रह्मपद पायहै तूबरबिप्र पवित्र ॥ बीचत्व स्वर्गके बासकोक्यों छोड़त आनन्द । यह तोकोमैं कहतहौं गुणु ममबचन अमन्द ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ बिना ब्रह्म नहिं रुचतहै हमैं स्वर्ग हेधर्म । याते

श्रद्धा स्वर्गकी हैनाहिं मो हिय पर्म ॥ धर्म उवाच ॥ तनमें मन तुम लाउ मति तजितन होहु सशर्म । बिना रजोगुण लोक जे तिन में जाहु सुकर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ चरणा दोहा ॥ होय कामना जैबेकीजो सतन स्वर्गके माहिं । जपके फलते जाय सतन तौ यामें संशय नाहिं॥दोहा ॥ स्वर्ग जायबेकी नहीं मो हिय इच्छा धर्म । यातेहम जैहैं नहीं निश्चय जानहुपर्म ॥ धर्म उवाच ॥ पैप्यलादि तुम कहत यह हम तन तजिहैं नाहिं । लखो मृत्यु अरु काल तब आये हैं तवपाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ तदनन्तर यमकाल अरु मृत्यु बिप्रको बैन । कहतभये ऐसे सुनहु भूप मनीषा ऐन ॥ कालउवाच ॥ कियो चारु आचरण ते अरु जप सबिधि महान । ताके फलकी प्राप्तिबर है द्विज तोहिं सुजान ॥ मिल्यो तोहिंफल सुजप को जाहु स्वर्ग तू आसु । जैबे को है समय हौ काल कहत तव पासु ॥ मृत्युरुवाच ॥ पाय प्रेरणा कालकी सुनहु बिप्र बुधिरास । तोको लीबे काज हौं आयोमैं तवपास ॥ जयकरी ॥ यमअरुकाल मृत्युके बैन । सुनिकै बिप्र मनीषा ऐन ॥ कहत भयोइमि बचन सुजान । आदर करिकै परममहान ॥ करौं काजमैं कौनतुम्हार। तुम सब आज्ञा करो सुढार ॥ भीष्मउवाच ॥ धर्मवान पांडव बुधि-धाम। तीरथयात्रा करतललाम ॥ आयोनृपइक्ष्वाकुपवित्र। तिही समयके माहीं तत्र ॥ सबको करिइक्ष्वाकु प्रणाम । कुशलप्रश्न पूछत भोआम ॥ अर्घ्यपाद्य दैताको विप्र । बैठाये आदरकरि क्षिप्र ॥ पूछि कुशल तदनन्तर चाहि । बचन कहतभोऐसेताहि॥ कहोभूप इक्ष्वाकु उदार । करौंकौन तव काजसुढार ॥ सुनियेबैन भूपइक्ष्वाकु । कहत भयोबिप्रहि इमिबाकु ॥राजोवाच॥ हमराजातुम ब्राह्मणपर्म ।याते तुमको कहत सधर्म॥लीबोहैद्विज कार्य तुम्हार। अरु दीबोहै कार्य हमार॥यातेकछु हमहीं सोंलेहु।सुनहु बिप्रतुम बरबुधिगेहु॥ब्राह्मणउवाच॥दोहा॥द्वैप्रकारके होतहैं बिप्रभूप बलवान। कितेप्रतिग्रह में प्रवृत कितेनिवृत धीमान। सोरठा ॥ तिन्हैं देहु

तुमदान जौन प्रतिग्रह में प्रवृत्त । हमहैं निवृत सुजान यातेलेहैं नाहिं कछु ॥ दोहा ॥ तपसों साधैंकौन तब कारज हमहैं भूप । कहा देहिंहम तोहिं अति प्रियहै कहा अनूप ॥ राजोवाच ॥ सोरठा ॥ हम क्षत्रियहैं उद्ध सुनहुबिप्र धर्मज्ञबर । मांगैंतौ हमयुद्ध जानत और नमांगिबो ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ जैसेतू निज धर्ममेंहै प्रसन्न सुनु भूप । तिमिहि आपने धर्ममें होहु प्रसन्न अनूप ॥ राजोवाच ॥ देहिं कहा निज शक्तिसों तोको हम भूपाल । मोहिं कह्यो तुम पूर्वहीं ऐसेविज्ञबिशाल॥ जयकरी ॥ सोतुम सों मांगतहैं पर्म । जपको फल बरदेहु अभर्म ॥ ब्राह्मणउबाच ॥दोहा ॥ जानत युद्धहि मांगिहम तुम इमिकह्यो समर्थ । सोमोसंगन होयगो जानत होकिहि अर्थ ॥ राजोवाच ॥ चरणादोहा ॥ बाक युद्धके कर्त्ता हौतुम याते याचततोहिं । देहु बुद्धिबर शुद्धद्विज बाकयुद्ध तुम मोहिं ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मन सुप्रातिज्ञा छोंड़िहौ सुनहु भूप बुधिभौन । देहमें अपनी शक्तिभर कहो जौन तुम तौन ॥ राजोवाच ॥ तोमर ॥ तुम कीन्ह जप शत बर्ष । मनलाय होय सहर्ष ॥ फल तास जो अभिराम । तुम देहु तौन ललाम ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ जप कीन्ह जो हम भूप । फल तास अर्द्ध अनूप ॥ तुम लेहु हैं हम देत । सुनु पर्म प्रज्ञ सचेत ॥ तुम जो प्रसन्न न होत । लहि अर्द्धफल बुधि पोत ॥ सब लेहु तौ अ-भिराम । हम देतहैं नृपमाम ॥ सुनि बिप्रके बरबैन । इमि कह्यो भूप सचैन ॥ तुम दीन औ हम लीन । फल जापको सु प्रवीन ॥ कहु मोहिं बिप्र प्रतक्ष । हमहैं सुपूछत दक्ष ॥ हम फलहि जानत नाहिं । सति कहतहैं तव पाहिं ॥ जपकीन्ह जो सो सर्ब । हम दीन्ह तोहिं अखर्ब ॥ यम मृत्यु काल सुधर्म । सब साक्षियेहैं पर्म ॥ राजोवाच ॥ फलबिना जान्यो जौन । तव जापको बुधि भौन ॥ मम कहा करिहै काज । सुनु बिप्र बिज्ञ दराज ॥ फल जापको जो होय । हमको कहो जो सोय ॥ हम तौ लहैं फल तौन । सुनु बिप्र प्रज्ञा भौन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ देहा ॥ बहुत बारता कथन हम करि जानत

नाहिंभूप। तुमफल माँग्यो जापको सोहम दयो अनूप ॥ उल्लाला ॥ तुम औ हम दोउनको सत्य पालिबो उचितहै। बिना सत्य पाले सुमो जीव होत अति दुचितहै ॥दोहा॥ करी कबहुं नहिं कामना मैंजप माहिं सुढार। यातेकैसे जापको जानो सुफल उदार ॥ चरणादोहा ॥ देहु जाप कोफल तुम हमको यहतुम कह्यो नरेश। अरुदेंगे हम जपको फलबर यहहम कह्यो सुबेश ॥ दोहा॥अपने२ बचनको रक्षण उचित सुजान। बिन कीन्हे रक्षानृपति ह्वैहै दोष महान ॥ सोरठा॥ कहत जौन मैं बैन तिनको जोनहिं मानिहौ। तौतुम भूपति ऐन लहिहौ पापअसत्यको ॥ जयकरी ॥ उचित नहीं तुमको भूपाल। झूंठ बोलिबो प्रज्ञ बिशाल ॥ अरु हमकोहु उचित है नाहिं। होनो प्रबृत झूठकेमाहिं ॥ तुमजपमो मांग्यो हमदीन। करौ ग्रहणतुम तौन प्रबीन ॥ तुम मेरेसुस्थानमें आय। जपको फल मांगो नरराय ॥ सो तुम लेहुसत्यके माहिं। पगिके करिये नाहीं नाहिं ॥ यज्ञ तिमिहि औ नेम नृपराय। सत्य समान नहीं सुखदाय ॥ दोहा॥ करतभूप परलोकमें जैसी सत्यसहाय। तैसी नाहींकरि सकत यज्ञ नेम नरराय ॥ मोतोदाम ॥ अनेकनबर्ष कियोतप जौन। सुनौनृप सत्य समान नतौन ॥करै रबि सत्यहि सों परकाश। रहैतम तुंगहि हेबुधिराश ॥ बहे अरु सत्यहिसों पवमान। प्रकाशित सत्यहि सों सुकृशान ॥ सो सत्यहि बोलत जौन हमेश। लहै दिवमें सुखतौन अशेश ॥ दोहा ॥ धरिसुतुला में सत्य औ धर्महिं द्रुहिणसशर्म । तोलतभो सो धर्मते सत्य गरू भोपर्म ॥ बरवै ॥ सुन्यो पूर्बहौ हम यह बुधजन पाहि। सत्य होतहै ऐसो तजहु न ताहि॥ दोहा ॥ जहां सत्यतहँ धर्म है बढ़त सत्य सों सर्ब। क्यों तजिसत्य असत्यकी इच्छाकरत अखर्ब ॥ सत्य भावको गहहु तुमतजो अनृतको भाव। अनृत समान न औरहै पातक सुनु नरराव ॥ मैंदीन्हों फल जापको ताको लेहौ नाहिं। छूटिधर्म सोंबिचरिहौ तौलोकनके माहिं ॥ राजोवाच ॥ हे

क्षत्रियकेधर्महैं सुनहुविप्रमतिमान । पृथ्वीकी रक्षाकरनअरुबर-युद्ध महान ॥ क्षत्रियकोदाताकहत बुधजन सुनुबुधपर्म । यातेतो फलजापको कैसेलेहिंसुकर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ रामगीती ॥ अपनेमनसों न तुमको कह्योहमनृपदेन । औसुनोइक्ष्वाकु हमनहिंगयेतेरेऐन ॥ आपुही सों आयकै नरराय तुम मोपाहिं । मांगिकै फलजापको अब लेतहौ क्योंनाहिं ॥ धर्मउवाच ॥ हौं तुम्हारे पासआयो मोहिं जानहुधर्म । करोतुम मतिबाद दोऊ दुओ सुनहुसधर्म ॥ सत्य को फललहौ भूपति दानको तुमविप्र । तजोदोऊ तुमबिवादहि कहेमेरेक्षिप्र ॥ स्वर्गउवाच ॥ धारिकैमैं रूपआयौं स्वर्गजानोमोहि । करोतुम मतिबाद दोऊ सुनो मोतनजोहि ॥ तुल्यफलतुमलहौ औचुप रहोसुनि मोबैन । बैनसुनिये स्वर्गके इमि भयो कहत सचैन ॥ राजोवाच ॥ बरवै ॥ सुनहुस्वर्ग तुमसोंनहिं कामहमार । जिमिआये तिमि जावहु करहुन बार ॥ होयकामना द्विजके जो अभिराम । तुम्हैं प्राप्तहोने की सुनुदिव आम ॥ लेयपुण्य को फलतो चारुहमार । यह सुनि बोल्यो सोद्विज बुद्धि अगार ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ अज्ञभावसों लरिकइ नाहींहाथ । कबहुं पसारोकैहै हम नरनाथ ॥ यज्ञकरन आदिकहैंजे षटकर्म । बिप्रन के सुनु भूपतिपर्म सुकर्म ॥ याजनादि जे तिनमें सुकरमतीन । तिन सों जानहु हमको निवृत प्रवीन ॥ निवृत धर्मको सेवतरहतहमेश । मोहिं लुभावत क्योंहो आपुनरेश ॥ अपनोकारज करिहैंहमहीं भूप । तव सुपुण्यको चाहत फलन अनूप ॥ राजोवाच । जयकरी ॥ जो अपने जपको फलपर्म । हमको दीन्हों बिप्रसुधर्म ॥ तौमम तबकछुहै फलजौन । संगहि रहौनित्य द्विजतौन ॥ लेनोहैद्विज कार्य तुम्हार । अरु देनोहै कार्य्यहमार ॥ पैमांग्यो जपहमतव पाहिं । ताकेपरे भोगके माहिं ॥ अब यक कहत तुम्हैं हौं बैन । सोमानहुतुम द्विजबुधिऐन ॥ ममतव फलराखोएकत्र । अबतुम कहौ कछू मतिअत्र ॥ दोहा ॥ आपुकहौ यहबचन जो प्रज्ञावान

सुढार । कहा कहाफल भोगिहैं हमफल संगतुम्हार ॥ तौ मम फलको लेहुतुम तवफल को हमलेत । मानोमेरोबचन तुम यह बर बुद्धिनिकेत ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ तिही समयके माहिं लरत लरत द्वै पुरुषनृप । आयेतिनकेपाहिं गहेपरस्पर फेटको ॥ दोहा ॥ नाम एकको बिकृतहो एककोनाम बिरूप । धारे बस्त्रमलीन हे ते दोऊ सुनुभूप ॥ चरणाकुलक ॥ सुनो बिकृत हमपै ऋणतेरो । है इमिकहत बिरूपघनेरो ॥ कहत बिरूपहि बिकृतसकोपै । ऐसे मम नहिंहैऋणतोपै ॥ कहिकहि इमिते झगराकरते । ऐसे कह्यो परस्पर अरते । नृपइक्ष्वाकु हमार तुम्हारे । करिहैंदूरिबिवादहि भारे ॥ कहिसुपरस्परइमिऋषिपागे । ऐसेकह्योभूपकेआगे ॥ तुम होप्रतिपालक धरणीके । निपुण नीतिके माहींनीके ॥ झगराजो हमदोउनवारो । न्यायसहितताकोतुमटारो ॥ बिरूपउवाच ॥ हरिगीति ॥ हमहिंधरावत बिकृतको गोदान फलसुनु भूपहे । नहिंलेतताको बिकृत हेहम फेरिदेत अनूपहे ॥ बिकृतउवाच ॥ कछुना धरावत है बिरूप हमार हमनिजु कहतहै । नहिंसत्यजानो बैनये यहकहत मिथ्या महतहै ॥ राजोवाच ॥ सोरठा ॥ कहुहे मोहिं बिरूप कहाधरावत बिकृतको । सुनिहम हियेअनूप कहिहैं तोहिं बिचारिकै ॥ सुनिबिरूप येबैन भूपति बर इक्ष्वाकुके । सुनहुतात बुधिऐन भूपहि कहत बिरूप भो ॥ तोमर ॥ हमहैं धरावतजौन । ऋण कहत तुमकोतौन ॥ मनलाय सुनहु नृपाल । तजिकै प्रमाद बिशाल ॥ दोहा ॥ बिकृत दईही धेनु यक ब्राह्मणको अभिराम । मांग्योहो हमतास फल जायबिकृत केधाम ॥ रंगिका ॥ बिकृत सहित आनंद महान धेनुदानको नीको । देत भये फलहमैं सुजान लोभन कियो नजीको ॥ मौनी ॥ तासअनन्तर लैहमकपिला चार । दुग्धवती बरबत्सा दोय उदार ॥ दई उंछवृत्ती बरद्विज कौ तौन । बिधि सह आदर करिकै सुनु बुधिभौन ॥ जयकरी ॥ तिनको सुफल बिकृतको देत । करत हठहिसो फलनहिंलेत ॥

जैसे हम लीन्हों फलस्वक्ष। तिमिहि बिकृतहू लेय प्रत्यक्ष॥ चरणाकुल॥ लीन्ही एक धेनुको फलहम पै दिन बीतेभूरि। याते हैगोदानको सुफल देत याहि सुखपूरि॥ सोरठा॥ हैऐसो वृत्तान्त याको मतिसों बिचारि कै। सुनिये श्रीक्षितिकान्त न्याय आपु करिदीजिये॥ दोहा॥ यासों हम गोदान फल जैसेलियो सुजान। तैसेहमसों लेतनहिं यहहठ करत महान॥ सोरठा॥ तुम बिचारि कै न्याय झगराहम दोऊनको। सुनिये बरनरराय शीघ्रदूरि करि दीजिये॥ आभीर०॥ राजोवाच॥ दीन्होंहै ऋण जौन। तैंबिरूप को तौन॥ फेरिलेत तूक्यौंन। कहौ बिकृतबुधिभौन॥ जैसोहोय करार। तैसो करो सुढार॥ रामगीती॥ बिकृतउवाच॥ हम दियो नाहिं यहिभाव सों गोदान कोफल याहि। तिहिते नहीं कछुचहत मो-मन होय यत्रहि जाहि॥ राजोवाच॥ यहदेत औतू लेत नाहीं बिकृत सुनु मोपाहिं। बिनभये ऋण हेदेत जगमें काहु काहुहि नाहिं॥ सुनि बिकृत याते अनृत भाषत तूहि सत्य बिरूप। है दण्ड केतू योग्य निश्चय कह्यो ऐसे भूप॥ बिकृतउवाच॥ हमदीन्ह भूप बिरूप को गोदानको फल पर्म। पुनि दियोकैसे लेहिं हम नृप कहौ आपुसुधर्म॥ जो दण्ड बरवस देतहौ तौ देहु हेभूपाल। पै दण्ड के हमयोग्य हैं नहिं नीतिसों सु बि-शाल॥ बिरूपउवाच॥ हमदेत हैं तूलेतनाहीं बिकृत सुनुयत जोहि। बरधर्मपालक भूपमणियह दण्डदेहैंतोहि॥ बिकृतउवाच॥ दोहा॥ मांग्यो तुम गोदानको फल मेरे गृह आय। तोहिंदयो हम फेरिसो कैसे लेहिंसचाय॥ पुनि लीबे गोदानको दयोसुफल नाहिं तोहिं। याते सुनो बिरूप तू कहाकहत हौमोहिं॥ सोरठा॥ बोल्यो पुनिन बिरूप सुने बारता बिकृतकी। तबबर बिप्रअनूप कहत भयो इमि भूपको॥ तोमर॥ इन दुहुनके तुमबैन। नृप सुने बर बुधिऐन॥ फलजापको हमदेत। तुमलेहु तौनसचेत॥ तुम अत्रऔर बिचार। जिनि करौ सुमति अगार॥ आभीर॥

भीष्मउवाच ॥ ब्राह्मण कोसुनिबाक । भूपति बर इक्ष्वाक ॥ मनके माहिं बिचार । यहभो करत उदार ॥ दोहा ॥ इनदुहूनको न्याय जोभयो अबहिं नहिंतौन । बीचाहि देनो करत दृढ़ जापक बर बुधिभौन । बिप्रदेत फल जापको मोको बर अभिराम । ताहि नहीं जोलेहु तउप्राप्त होत अघमाम ॥ जयकरी ॥ जप कोमांग्यो हमहीं अत्र । तिहिते द्विजक्यों देन पवित्र ॥ यह विचारिकै नृप बुधि ऐन । कह्यो दुहुनको ऐसे बैन ॥ दोहा ॥ तुम दोउन को न्याय निजु होय चुकै जब अत्र । तुमदोऊतब जाइयो मन आवै जहँतत्र॥सोरठा॥ करौं जौनमें न्याय नीति सहित दोऊनको । राज धर्म नशिजाय तौयामें संशय नहीं॥आभीर॥ स्वधर्म पालन जौन । उचित नृपनको तौन ॥ जेनृप पालत नाहिं । परत नरकके माहिं॥ दोहा ॥ मोकोभो अज्ञानसों कठिन बिप्रकोधर्म । प्रापत भो याते नहीं हैमोमन सहशर्म ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ दीन्होंजो फल जापको तुमको हम अभिराम । ताहि धरेहैं भूप हम ऋणकी नाईं माम ॥ उक्का ॥ ग्रहण करो तुम तास । सुनहु भूप बुधिरास ॥ जो नहिं लेहो आप । तौमैं देहोंशाप ॥ येसुबिप्रके बैन । सुनि ह्वै भूप अ-चैन॥कहत भयो इमिबात।बर बिप्रहिअवदात॥हरिगीती॥राजोवाच॥ सुनु बिप्रबर यहि राज धर्महि नित्यहै धिक्कार । जिहि में प्रति ग्रह लेनकोहै परम दोष अपार ॥ हमकरैंका हमको प्रतिग्रहपरो लेनो अद्य । किमिहोय नाहीं प्रतिग्रह कोदोष मोको सद्य ॥ इहि भांति मनमें शोचिकै द्विजको कह्यो इमि बैन। सुनु पैप्पलादि सुब-चन मेरो परम प्रज्ञा ऐन ॥ तुरलेय करिकै देन काजै हम प्रति-ग्रहलेत । नहिं राखबे की कामना करिलेत बिप्र सचेत ॥ इमि बचन कहिकै बिप्रको पुनि कहतभो इमि भूप ॥ तुम मोहिं देनो कह्योसो अब देहु शीघ्र अनूप ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ बर संहिता के जापसों हमको मिल्यो फल जौन । तुम लेतसो हमदेत तुमको सर्व प्रज्ञा भौन ॥ इहि भांति कहिजल छोड़ि दीन्हों भूपके कर

माहिं । नृप लेयसो संकल्प ऐसे कह्यो द्विजके पाहिं ॥ हमलयो तुमसों जौन अबहीं देत तुमको तौन । तुम लेहु सोबर धर्मधर द्विज परम प्रज्ञाभौन ॥ फल देय नृपको जापको द्विज भयो रहित बिषाद । फिरि भूपको कछुकह्यो नाहीं समुझि व्यर्थ बिबाद ॥ बिरूपउवाच ॥ चरणादोहा ॥ कामक्रोध हम दोउनको तूजानु नृपाल महान । तुममें हम परवेश करि यह सब कियो सुजान ॥ लेय प्रतिग्रह ब्राह्मणको तुम देन कह्यो पुनि भूप । याते तुम दोऊवर लहिहो लोक समान अनूप ॥ दोहा ॥ तजी प्रतिज्ञा बिप्र नहिं औ न लोभ तुमकीन । पाल्यो क्षत्रियको धरम नृप इक्ष्वाकु प्रवीन ॥ आभीर ॥ याते लोक समान । लहिहौ दुओसुजान ॥ काव्य ॥ द्विजसों जप फल मांगि आपु नहिं लेनलगे जबातब समुझावन काज कियो झगराहमने तब ॥ सोजपको फललीन्हे आपुपुनि हठनहिं कीन्हो । अरु बरजानि लुभायनहीं तिहिमें मनदीन्हो ॥ दोहा ॥ यातेजौने लोककी करिहैंइच्छा आप । तौन लोकको जाय हैं नृपइक्ष्वाकु सदाप ॥

शान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेकालमृत्युइक्ष्वाकुपैप्पलादिसम्बादेषड्विंशोऽध्यायः

भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ जापकको सुत होत फल जैसो । बर्णि सुनायो तुमको तैसो ॥ पढ़त संहिताको द्विजजेहैं । प्राप्तहोत बिधि लोकहि तेहैं ॥ अथवा सूर्य्य लोकमें नीके । अथवा अग्नि लोकमें श्रीके ॥ करैकाम बसिबे तिनमाहीं । लहैबास तौ रबि शिखिपाहीं ॥ रबिशिखि केहि सुगुणको धारैं । परम प्रचण्डसु तेज पसारैं ॥ दोहा ॥ इमिही औरहु लोकजे उत्तम परमबिशाल । तिनमें जो इच्छाकरै जैबेकी महिपाल ॥ चरणा दोहा ॥ तौतिन लोकनमें ह्वै प्रापत सानँद सुनुबर भूप । तिन लोकन के बासिनको फल लहिकै रहै अनूप ॥ सोरठा ॥ ब्रह्मादिक को लोक तिनमें होय न जासरति । सोजनबर बुधिओक प्राप्त ब्रह्मको होतहै ॥ दोहा ॥ ब्रह्मपदहुकी प्राप्तिकी इच्छाकरै न जौन ।

तौ जैसी इच्छाकरै तैसी पावै तौ । ॥ जापक जैसीगति लहत बर्णि सुनाईतोहिं । अबआगेका पूछिहो भूप पाण्डुसुत मोहिं ॥
इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेसप्तबिंशोऽध्यायः २७ ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ सुनि बिरूपके बैन ब्राह्मण औ भूपाल बर । सुनहु तात बुधिऐन कहा सुउत्तर देतभे ॥ दोहा ॥ सद्य मुक्ति क्रममुक्ति ये दोय भांतिकी मुक्ति । औ उत्तम लोकहि लहब कीये पुण्य सयुक्ति ॥ इन तीनहुमें काहि वे प्राप्त भये भूपाल । कहा करत सम्बादभे दोऊ बिज्ञ बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ समगीतौ ॥ धर्म यम अरुकाल मृत्युहि यथा स्वर्गहि पूजि । औरजे द्विजरहे तिनको पूजि सुबचन कूजि ॥ कहतभो भूपाल को इहि भांतिसों द्विजबैन।लेहुमेरे जापकोफल आपु प्रज्ञा ऐन ॥ सुनोलैहौं फेरि मैं करिजाप अपने अर्थ । मोहिं सावित्री दयो बर यह सुभूप सुशर्थ ॥ रहैगी श्रद्धा तिहारी जापमाहीं पर्म ।फेरिया ते सकतहौकरि जापहोय अभर्म ॥ राजोवाच ॥ पैप्पलादि सुबिप्र तुमफल दयो जपको मोहिं । दयेते जपदान भोबर पुण्य प्रापत वोहि ॥ होतजोमैं बिप्रतौ जपदानको फल जौन । अधिक तुमको प्राप्तहोतो बिप्र प्रज्ञाभौन ॥ हौंसुक्षत्रिय भयोयाते दानसम फल तोहिं । भयोमम तवपुण्य में सबभाव तातेजोहिं ॥ पुण्यके सम भावसोंतुम बिप्रपर्म सुजान । चलौउत्तम लोकको ममसंग दक्ष महान ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ कहत हो जो भूप हमको चलौ मेरे साथ । सामुहेधर्मादिकेतौ सुनोबर नरनाथ ॥ योग्य ममतव पुण्यकेजो लोकहोय अमन्द । चलौतौने लोकमाहीं भरेभूरि अनन्द ॥ भीष्मउवाच ॥ जानिनिश्चय दुहुनकी मतिको सुरेश सुजान । आवतो भो पासतिनके सुरन सहित महान ॥ साध्यसब अरुमरुत त्योंही लोकपालक सर्ब । नदीशैल समुद्र तीरथ जितेरचक्ष अखर्ब ॥ तिमिहिं तप धरिरूप आवत भयो तिनके पास । सर्ब औहाहादिबर गन्धर्ब सहित हुलास ॥ सिद्धऔ सुनि

वेदसंह बिधिभयो आवत तत्र। बिष्णु आवत भये तिमिहीं करन जनहिं पवित्र॥ त्रिबिध बिधिके बाद्यबाजन लगे नभके माहिं। भावकरि बहुलगीं नाचन अप्सरा तिनपाहिं॥ हर्षसेती लगे वर्षण फूलदेवत स्वक्ष। बिप्रको तिहिसमयमे इमिकह्यो स्वर्ग प्रतक्ष॥ धन्य तुमहौ बिप्रवर औधन्य तुमहूँ भूप। पुण्य के परभावसों तुमलही सिद्धि अनूप॥ तदनुरूप इक्ष्वाकु औ बर पैप्यलादि सुबिप्र। भयेकर्षत बिषयते इन्द्रियनको सब क्षिप्र॥ प्रान ब्यान अपान तिमिहि समान अरु सुउदान। थापि हियके माहिं पांचहु बायु एमतिमान॥ बायुप्राण अपान माहीं मनहिं धारणकीन। कियेप्राण अपानको भ्रूमध्य दुहुंन प्रबीन॥ तत अनन्तर आतमाको प्राणसहित सुजान। कर्षिके भ्रूमध्यमें ले हर्ष सहित महान॥ धारि मस्तकमाहिं दोऊ परम क्रमसों भूप। फेरिकै ब्रह्माण्डको भेजात दिवहि अनूप॥ होत भो सब दिशन माहीं महत हाहाकार। जातभो बिधि पास द्विजको तेजस्वक्ष उदार॥ देखिकै लोकेश ताको ताससोंहैं आय। सहित आदर लेतमे अति हर्ष हियमें छाय॥ तद अनन्तर भये ब्रह्मा कहत ऐसे बैन। जापकन को तथा औ योगीनको मति ऐन॥ होतहै परतक्ष दर्शन देवता कोपर्म। होतपै जापकन को फलइतो अधिक सुधर्म॥ चरणो दोहा॥ दर्शन ही परतक्ष होतहै योगिनकोअभिराम। प्रत्युत्थानऔदर्शनपावत जापकजौनललाम॥ ज यकरी॥ उठिसादर जो लीबोआम। प्रत्युत्थान है ताकोनाम॥ प्रत्युत्थान पावत है जौन। जानो परम श्रेष्ठ है तौन॥ आभीर॥ ब्रह्माके येबैना सुनिकै द्विजमति ऐन॥ ब्रह्मा के मुखबीच। आपत भयोनिभीच॥ दोहा॥ ऐसेही इक्ष्वाकुनृपबिधि के मुखमें भूप। प्राप्तहोतभो बिप्रसंग कीरतिमान अनूप॥ मैनी॥ तदनन्तर ब्रह्माको करिप्रणाम। बचनकहतभे ऐसेदेवललाम॥ प्रत्युत्थान जापकको अधिकपबित्र। जापक काजे हमसब आये

अत्र ॥ लख्यो सुफल जापकको हमअतिमाम ॥ लहत तिहारे पदकोजापकआम ॥ नांघि सर्ब लोकन को जापक पर्म । जात जहांमन आवै होय सशर्म ॥ ब्राह्मणउवाच॥दोहा ॥ पढ़तजौन मनुके स्मृती अरु सुवेदके अंग।शिक्ष्यादिककोपढ़तजेधारेसुमतिउतंग। ऐसिहि बिधिसों तौनहू लोक हमारे माहिं । आय लहत आनन्दको यामें संशय नाहिं । प्रवृत रहतजे योगमें तेऊ इहिबिधि आय। रहत हमारे लोकमें महत मोदसों छाय ॥ चयकरी ॥ अब तुम जावो निज निज धाम । इहि विधि बिधि देवनको आम ॥ कहिके भयो सुअन्तर्द्धानं । देवहुगे सब निज निज थान ॥ कालादिक आये हेजौन । पास बिप्रके प्रज्ञाभौन ॥ धर्मको सु करिकै सतकार । करिकै बहुबिधि स्तुती अपार ॥ पीछे लगे धर्मके सर्ब । जातभये सुनु भूप अखर्ब ॥ दोहा ॥ कियेजाप जो मिलत फल सोहम कह्यो अनूप । अब इच्छाहै सुननकी कहा युधिष्ठिर भूप ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेअष्टाविंशोऽध्यायः२८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ जापकको फल मिलत जो तौन सुन्यो हम तात । अबकछु पूछत औरहू कहौतौन बिख्यात ॥ आभीर ॥ जपके फल सँग स्वक्ष । योगहुको फल दक्ष ॥ कह्यो मोहिं बिख्यात । सुनहु बिज्ञ बर तात ॥ तासु कारण एक । पूछतहौं सविवेक ॥ तौन हेतु तुममोहि । कहौ कृपाकरि जोहि ॥ दोहा ॥ ज्ञान सहित जो योग है तासु कहा फल चारु । अरु बर ज्ञानहिं सहित जो वेदाध्ययन सुठारु ॥ अरुसुअग्निहोत्रादि को फलहै कहा अनूप । औकिमि जान्यो जातहै जीवकहौ बरभूप ॥ भीष्म उवाच ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसङ्गमें भूप ॥ मनुको अरु बागीशको हैसम्बाद अनूप ॥ हरिगीती ॥ इतिहास यहअभिराम मनुको बृहस्पति पूछतभयो । परणाम करि करजोरिकै बुधिधाम अति रतिसों रयो ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ जिहहेतु सुकरम काण्ड है

अरु हेतु जगको जौनहै। और ज्ञानसों उत्पन्न जो फल होत बरबुधभौनहै॥ नाहिं सकत ताहि जनाय बेदहु तौन तुम प्रगटै कहौ। कहि मोहिं तुमम्नु प्रज्ञमेरे हियेको संशय दहौ॥ अरु प्रज्ञबर करियज्ञ अरु गोदान करिकै नेमसों। हैकरत इच्छा जौनकी हैतौनका कहु प्रेमसों॥ सो मिलत है किहि भांतिसों अरु कहौसो कहँरहत है। अरु भूमि भूमिज बायु नभ जल जन्तु अरु जल महतहै॥ दिव औ दिवौकस सर्ब्ब ये उत्पन्न जाते होत हैं। तुम तौन प्रगटै कहौ मोको आप प्रज्ञा पोत हैं॥ बरप्रज्ञ जाके ज्ञानकी इच्छा सुहीमें करतहैं। शुचिज्ञान ताको भये प्रापत महत आनँद धरतहैं॥ बरज्ञान ताको भये ताके प्राप्तकीहै जोक्रिया। तिहि माहिं मानव लहतहैं बुध अत्र मैं निश्चय किया॥ मैं ताहि जानतहौं नहीं बिनु ताहि जानेते सुनो। किहिभांति ताके मार्गमाहीं लगौं मैं हिय में गुनो॥ हम बेदशास्त्रहि पढ़ेहैंपै ब्रह्मको जानत नहीं। तुमतौन माहिं बताय दीजै आपु बिज्ञमहा सही॥ अरु कहाहै फल ज्ञानमें औ कर्म माहीं महतहै। अरु कहौदेही देहको तजि देह पुनि किमि लहत है॥ मनुरुवाच॥उक्तछ॥ आपुकोन प्रिय जौन। दुःख कहावत तौन। आपुहि जो प्रियमाम। सुख ताकोहै नाम॥ दुखको कीबे दूरि। औसुख लीबे भूरि॥ कर्महिं जानो प्रज्ञ। बाचस्पति धर्मज्ञ॥जौन अर्थहै कर्म। तौन कह्यो हमपर्म॥ ज्ञानको सुफल जौन। सुनहु प्रज्ञ अबतौन॥ दोहा॥ अप्रिय प्रियको दुःख सुख होय नप्रापत मोहिं। ज्ञान सबुधि यहि अर्थहै सत्य कहतहौं तोहिं॥अरिल॥जगमें महतप्रज्ञहैं जेजन। ब्रह्म जानिबेको बरतेजन॥यज्ञादिक कोकरत सहित बिधि। यह सिद्धांत कहतहौं बुधिनिधि॥बहुबिधि केजे कर्म बृहस्पति। करत सकाम तिन्हैं जे लघुमति॥ तेजन चरण निरय कोधारत। कहतज्ञान सोंजौन निहारत॥ बृहस्पतिरुवाच॥ सोरठा॥ महत प्रज्ञहैं जौनकरत यज्ञआदिक करम। ब्रह्मजानिबे तौन

कहत आपुऐसेसुबुध॥ जगकेमाहीं सर्व दुःखनिवारणकोमहत। अरु सुखलेन अखर्ब करत सबिधि यज्ञादिहैं ॥ मनुरुवाच॥दोहा॥ लोकनके जेदुःखहैं तिन्हैं निवारण काज । अरु सुखकी प्रापति अरथ अर्थ सुकर्म समाज ॥ नरक स्वर्गके माहिंते फिरत रहतहैं सर्ब। ब्रह्मपदहिते लहतनहिं कहत सुबुद्ध अखर्ब ॥ स्वर्गादिक फल कर्म्म के तास कामना जौन। ताहि छोड़िजे करतहैं कर्म परम बुधिभौन ॥ ब्रह्मपदहि ते लहतहैं जानु महत सिद्धान्त । करत प्रज्ञजे रहत रतशास्त्रहि माहिं नितान्त ॥ दुष्टकर्म कबहुं न करैं निशिदिन करैं सुकर्म । पै हियमें राखैं नहीं फलकी ईहा पर्म ॥ जे ईहा राखत न ते ब्रह्महि प्रापत होत । राखत ईहा जौन ते जगमें करत उदोत ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ निश्चय बन्धक कर्महै तौन अबन्धक होय। कैसे कहिये मोहिं तुम ज्ञान नैनसों जोय॥ मनुरुवाच॥ विधि मनसों अरु कर्म्मसों प्रजाबनाई सर्ब । दोय प्रजा उत्पत्तिके येहैं हेतु अखर्ब ॥ मनमें ईहा राखिके कर्म कियो है जौन । फलहि देतहैं कर्मसो जानहु निज बुधि भौन ॥ कण्टकादि जिमि लखत जन रबिकेभये प्रकाश। तिमि बिज्ञान भये लखत अशुभ कर्म बुधिराश॥सोरठा॥अति उत्तम फल देत ज्ञान महान सुजानसुनु। अरु अज्ञान सचेत अधमहि फलका देतहै ॥ तोमर ॥ जन जौनहै सहज्ञान। जनतौन सुनुमतिमान॥ सर्पादिको पथमाहिं। लखि तास पासन जाहिं॥ अरु जेन ज्ञान समेत। सर्पादिते भयलेत ॥ दोहा ॥ फल सुज्ञान अज्ञानको ऐसो होत सुजान । कहूं दुःख नहिं लहत जन प्राप्त भयेते ज्ञान ॥ सविधि जाप अरु सबिधिमख और दक्षिणा चारु। मनसमाधि अरु अन्नको दान सुबुद्धि अगारु ॥ पांच कर्मये पर्म हैं इनको करैं सदाहिं। पै ईहा राखैं नहीं अपने हियके माहिं ॥ जयकरी ॥ सात्विक राजस तामसपर्म। होत तीनिबिधि केहैं कर्म ॥ होत मंत्रहू बिधिकेतीन। सुनहु बृहस्पति परमप्रवीन ॥ कर्ताहू त्रय-

बिधिके होत। सत्वरज तमको करत उदोत॥ दोहा॥ ज्ञानको सुफल दृष्टहै दृष्ट कर्मको नाहिं। यातेज्ञानहि कर्मते श्रेष्ठगुणहु मनमाहिं॥ आभीर॥ जैसे जैसे कर्म। करतमनुजहै पर्म॥ तैसे तैसे तौन। पावत फल बुधिभौन॥ दोहा॥ जातेभो सब जगतहै ताहि ज्ञानसों स्वक्ष। ज्ञानी पावत तौनहै कहत तोहिं हौंदक्ष॥ आपु बिषयते रहितहै नित्यानन्द दराज। बिरचतहै सब बिषय को प्रजा भोगके काज॥ नहिंनारी नहिंपुरुषहै नहीं नपुंसक तौन। नहीं सूक्ष्म नहिंथूलहै अक्षर आनँद भौन॥

इतिश्रीशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेमनुबृहस्पतिसंवादेएकोनात्रिंशोऽध्यायः२९॥

मनुरुवाच॥दोहा॥ अक्षरतेभोव्योमअरु भयोव्योमतेबाय। भयो बायुतेतेजअरु तातेजलबुधराय॥ जलतेभईबसुन्धरा तामेंभो जगसर्ब। यहजानोउत्पत्तिको क्रमबागीशअखर्ब॥हरिगीती॥ जिहि भांतिअक्षरतेभयो उत्पन्न यहजगसर्ब है। तिहिभांति बिधि बिपरीतसो संहारमाहिंअखर्ब है॥ मिलिजात अक्षरमाहिं जैसे नार माहीं नौनहै। है महत जिनकी मनीषा यहिक्रमहि जानत तौन है॥ बुधभूमि जलमें तेजमेंजल तेजसों पवमानमें। पवमाननभ में मिलत नभ अक्षर सु आनँदवानमें॥ दोहा॥ अक्षर जान्यो जातहै योगाभ्यास बिनान। यह तुमसों मैं कहतहौं बर सिद्धांत महान॥ अक्षर मृदु न कठोरहै नहीं उष्णनहिं शीत। नहिं कषाय नहिं अम्लहै नहीं मधुर नहिं तीत॥ नहींशब्दवत गन्धवत नहीं रूपवतपर्म। केहूजान्यो जातनहिं बर बागीशअभर्म॥ तोमर॥ बिधि योगकी अभिराम। सुनु बृहस्पति बुधिधाम॥तुम को कहैं हमआम। सुखदायहै अतिमाम॥ दोहा॥ इन्द्रियनिज निज बिषयको जानति है मतिमान। जानि सकति नहिं अक्षरहि जोहै नित सुखदान॥ बिषयमाहिं ते कर्षि के त्वगादि इन्द्रिय सर्ब। करसकजो इन्द्रियनको ताको सबुध अखर्ब॥अक्षर ते जाने पृथक करिके महतबिचार। योग शास्त्रको स्वच्छहै यह

सिद्धांत सुढार ॥ कर्ता सुकरण कर्म अरु आधेये आधार । सो अक्षर इन मबनको जानोहेतु अपार ॥ रहत मंत्रलौं गुप्तहै सर्ब जगतमें तौन । सोई हेतुहै और सब्र कार्यजानु बुधिभौन॥ कर्म जन्य जोदेहहै ताकेमाहिं अनूप । परम प्रकाशित रहतहै ज्ञान ब्रह्मकोरूप ॥ होत प्रकाशित दीपसों जिहिविधि गेह अखर्ब । तिमिहि प्रकाशित ज्ञानसों होत सु इन्द्रिय सर्ब ॥ जिमि भूपति के रहत हैं सदाभृत्य आधीन । तिमिहिं ज्ञानके इन्द्रियां हैंआ-धीन प्रवीन ॥ यक आवत यक जात जिमि बायुबेग बुधिगेह । तिमि आवति यकजातिहै सब्र देहिनकी देह ॥ ज्ञान देहकेसँग रहत नशत देह सँग नाहिं । नित्य ज्ञानहै ब्रह्मको रूप जगतके माहिं ॥ काष्ठमाहिं शिखि रहतहै परत नछेदे देखि । तिमिहिं देह में रहतहै ज्ञानपरत नहिं पेखि ॥ मथन किये ते काष्ठमें परतधूम जिमि देखि । तिमिहिं योगसों देहमें परतज्ञान बुधि पेखि ॥ दे-हांतरको होतजब प्राप्त जीव तबज्ञान । जातजीव सँग देहसँग नष्ट नहोत सुजान ॥ जयकरी ॥ उतपति वृद्धि घटन अरुनाश। ये शरीरकोहै बुधिराश ॥ हैन शरीरीकोये सर्ब । जानो यहसि-द्धांत सखर्ब ॥ दोहा ॥ जड़है इन्द्रिय सर्बअरु आत्मानित चैत-न्य । यहि सिद्धांतहि योगबिद जानतहैं नहिं अन्य ॥ आत्मा को जानति नहीं त्वगादि इन्द्रियसर्ब । जानत सबइन्द्रियनको आत्मा सबुध अखर्ब ॥ द्वितिय देहकी प्राप्तिजो पहिली देहबि-हाय । तुम को तास प्रकारहो कहत सुनहुबुधराय ॥ अरिल ॥ छो-ड़त देही प्रथम देहजब । पंचभूतके अंश प्रज्ञतब ॥ लेयजात संग द्वितिय देहमहिं । यह सिद्धान्त जानु संशयनहिं ॥ दोहा ॥ पञ्चभूत के अंशते द्वितिय देहमें जाय । अपने अपने गुणन सों युक्तहोत बुधराय ॥ अरिल ॥ मनआधीन रहत इन्द्रियगन । अरुमतिके आधीन रहत मन ॥ आत्माके आधीन रहतमति । जानत जिनकी शास्त्रमाहिं गति ॥ दोहा ॥ किये पूर्बके अशुभ

शुभकर्म रहत मनमाहिं । यहो जन्ममें होतहै तातेप्रापत पाहिं ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ नित्य बासना कर्मकी रहती है मनमाहिं । जौलों कबहूं जीवकी मोक्ष होयगी नाहिं ॥ मनुरुवाच ॥ मैंहौं अक्षरआत्मायहजो ज्ञानअमन्द । तासोंमनकोजातमिटि कर्मबासनावृन्द॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ दोहा ॥ बुद्धि सहितजो आत्मा निर्बिकार है तौन । पूर्व कह्यो बहुबारतुम यह हमको बुधिभौन ॥ बुद्धिसहित जो आत्मा होत बिकारी सोय । सोईहोत स्थूल अरु दृश्यहु सोईहोय ॥ पै हम जानत आत्मा बुद्धिबिना नहिंभूप । याते कहिये फेरि तुम प्रज्ञावान अनूप॥ मनुरुवाच ॥ इन्द्रिय मनसह आत्मा जाग्रतमाहींजौन । बस्तु उषतहै स्वप्नमें फेरि लखतहैतौन ॥ इन्द्रिय औ मन रहतहै आत्मासंग न तत्र । पै जाग्रत ये बस्तु जो लखी लखतहै यत्र ॥ इन्द्रिय मनबिन स्वप्नमें देखत जोहै ताहि । आत्मा जानो ज्ञानसों कहत तुम्हें अवगाहि ॥ कहत आप बुधिबिन न हम जानत आत्मा और ॥ सोजड़ है किमि स्वप्न में देखै करिये गौर ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ रहति मनोरथमाहिं ज्यों इन्द्रिय बास्ना रूप । तिमिहिं स्वप्नमें रहति है बास्नारूप अनूप ॥ इन्द्रिय बास्ना रूपते लखति स्वप्न के माहिं । याते निश्चय होतहै आत्माको मनुनाहिं ॥ मनुरुवाच ॥ भूत भविष्यत कालको जाहि होतहै ज्ञान । ताको जानो आत्मासुर गुरु प्रज्ञमहान ॥ भूत भविष्यत कालो नशति न इन्द्रियप्रज्ञ । ज्ञान होतहै दुहुनको बाचस्पति धर्मज्ञ ॥ चरणा दोहा ॥ जाग्रत स्वप्न सुषोप्तिये थानबुद्धिके तीन।रजतमसों अरुसत्यसों तीनिहु युक्त प्रवीन ॥ सुखदुःखादिको आत्मा जानत तीनहुमाहिं । पै भोगतिहै बुद्धिही आत्मा भोगत नाहिं ॥ अरिल ॥ स्वप्न सुषोप्ति अवस्थामें जिमि । बुद्धि सुखादिक को भोगतातिमि ॥ इन्द्रिय द्वाराहूसों भोगति । सुखदुखादि को सुनहु बृहस्पति ॥ रामगीती ॥

जिहिभांति इंधन माहिं जोहै अग्निताको बाय । करिसो प्रकाशित देति जारति है नहीं बुधराय ॥ तिहिभांति आत्माकैप्रकाशित बरबुद्धिको करिदेत । सोकरति भोगहि करत आपनभोग सुमतिनिकेत ॥ चरणा दोहा ॥ कह्यो तोहिंहम आत्मा भिन्नबुद्धि सो जोन । इन्द्रिय को विषयन है ताते जानिपरत नहिंतौन ॥ आत्माहै यहिमाहिं दिखायोहम सिद्धांत महान । अब निषेध को आत्माके हम कहत अभाव सुजान ॥ सोरठा ॥ भूधर जो हिमवान ताकोउत्तर भागजो । अरु शशिकी मलिमान देखिपरति नहिं दृष्टिहै ॥ दोहा ॥ देखि परेबिन दुहुंनको ह्वै है नहीं अभाव । तिमिहिं अभाव न होयगो आत्माको बुधराव ॥ चन्द्रमाहिं जो जगतको चिह्नपरत है देखि । पै काहूको जगतमें परत नहीं अवरेखि ॥ ऐसेही है आत्मा पैजानत नहिंकोय । ताहिजानिये शुद्धके प्रवृतज्ञानमेंहोय ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ नरेश ॥ लखि परत जो नआँखियाँनसों । तिहिको सुप्रज्ञ अनुमान सों ॥ जानतहैवाचस्पति सुनो । मतिअत्र आपु संशय गुनो ॥ दोहा ॥ रूपमान जे चरअचर तिनको प्रज्ञ अनूप । आदिअंत में लखत हैं सुबुध मृत्युको रूप ॥ सोरठा ॥ अतिहि दूरितेहितैन देखिपरति गति भानुकी । पैजानत बुधिऐन देहान्तर की प्राप्तिसों ॥ ऐसेही बर प्रज्ञ ज्ञानदीपसों लहतहैं । आत्माजो सर्बज्ञ ताहिसुनो बागीशबर ॥ दोहा ॥ बिना उपायनहोतहै बस्तुकौनहूंसिद्धि । यहसिद्धांत महान है कहत परम बुधिनिद्धि ॥ सोरठा ॥ जलकेमाहिं अथाह संदारहत जलजन्तु हैं । तिनको लेत मलाह गहि सु सूत के जालसों ॥ अरिल ॥ अहिके चरणहि जानतहै अहि । जगमेंजानत और कोयनहिं ॥ इमिहिंआत्माकोहै जानत । ज्ञानहिं और नहींअनुमानत ॥ दोहा ॥ आत्मायो चैतन्यजो रहतदेहके माहिं । पै घटादिके लखति तिमि ताहि लखति मतिनाहिं ॥ आत्माहै यह ज्ञान जोजानतिहै मतिलाहि । पैआत्माको लखति नहिंक-

हत तुम्हें अवगाहि ॥ सोरठा ॥ नशै अमाके माहिं कला नशात नहिंचन्द्रहै। इमिहिं नशतहै नाहिं देहीं संगमें देहको ॥ दोहा॥ नशतन देही देहसँगजानि परतहो क्योंन। जोइमि तुमसुरुगुरु कहो तो सुनुप्रज्ञाभौन ॥ सोरठा ॥ कलाभये तेक्षीण शशिनअमा में परतलखि। देही इमिहिं प्रवीन जानि परत बुध देह बिन ॥ फेरि कलाकोपाय देखिपरत जिमिचंद्रमा। जानि परत बुधराय देही पायेदेह तिमि ॥ दोहा ॥ पैऐसेते कहतहैं महत प्रज्ञहैजौन। आत्माको अरु देहको हैसम्बन्ध कवौन ॥ जयकरी ॥ घटमेंधरो सुदीपक जौन। तासों अरु घटसों बुधिभौन ॥ है सम्बन्धन तिमिहीं देह। अरु आत्माको नाहिंमतिगेह ॥ दोहा ॥ हैसम्बन्ध नपै सुनो देहीबिन जोदेह। तास प्रकाश नहोतहै निश्चयहेबुधि गेह ॥ सोरठा ॥ देही हू बिन देह प्राप्त नहोत प्रकाशको। सुनहु परम बुधिगेह यामें संशयहै नहीं ॥ दोहा। जैसे राहु अदृश्यहै रबिशशि संग लखाय। परत तिमिहिं सँग देहके देही जान्यों जाय॥ जिमिरबि औशशिसों छुटे राहुपरत नहिंदेखि। तिमिहिं छुटेते देहको देही परत नलेखि ॥ अरिल ॥ छुटत देहसों देही है जब। द्वितिय देहको पावतहै तब ॥ कर्मनके फलसो सुरगुरु सुनु। अत्र नही संशय निश्चयगुनु ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेएकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥ देहीतजिके देहफेरि लहत यातेभयो निश्चय यह बुधिगेह छुटत देह सम्बन्धनाहिं ॥ रामगीती ॥ सुनु जौनहीं सम्बन्धछूटत देहको हे भूप। तौ मोक्ष अर्थी को भयो सब यत्नव्यर्थ अनूप ॥ तुमकहौ याते देहकी जो निवृति ताको हेतु। हौ आपुही यह हेतु कहिबेयोग्य बुद्धिनिकेतु ॥ मनुरुवाच ॥ सोरठा ॥ लख्यो स्वप्नहै जौन व्यर्थ तौन तैसहि सुनो ॥ है शरीर बुधिभौन व्यर्थ नित्यमति जानिये ॥ जयकरी ॥ थूललिंग ये तन हैं दोय ॥ जात सुषोप्ति माहिं जिमि सोय ॥ रहत भिन्न ह्वै कै

है ज्ञान । तैसेहि मोक्ष जानु मतिमानु ॥ जैसे निर्म्मल जल जो होय । परै अवश्य तौ तामें जोय ॥ ऐसेही जो इन्द्री सर्ब । होहिं बिलम तौ सुबुध अखर्ब ॥ आत्मा परै ज्ञानसों जानि । यह निश्चय मनमें अनुमानि ॥ रहे स्वच्छ जो मन हे दक्ष । तौ इन्द्रियहु रहैं सब स्वक्ष ॥ रहैंस्वच्छ सुरगुरु मन जौन । इन्द्रिय रहैं स्वच्छ सब तौन ॥ दोहा ॥ होत कुबुधि अज्ञानते ताके सं-गम दुष्ट । होत ताससँग इन्द्रियहु होति दुष्टहै पुष्ट ॥ बिषयमा हँ जो मग्न अति धरै महत अज्ञान । तौन जीव पुनि देह को प्राप्तहोत मतिमान ॥ प्राप्तभयेते देहको तृष्णा होति महान । सोतृष्णा तब मिटतिहै जब अघनशत सुजान ॥ उल्लाला ॥ जेपरम ज्ञानको छोंड़ि नितबिषयमाहिं रतरहतहैं । तेनहींहोतहैं ब्रह्मको प्राप्तमहत बुधकहतहैं ॥ ते.मर ॥ जब पाप मानसिजात । तबज्ञान जो अवदात ॥ उतपन्नहोत सुजान । सुखदान पर्म महान ॥ जब ज्ञानहोत अमन्द । तब बुद्धिमें निर्द्वन्द ॥ परमातमा सुखदाय । लखिपरत है बुधिराय ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय जेरत बिषयमें तिनतेदुः-खमहान । प्राप्तहोतहै जीवको नित नित सुनहु सुजान ॥ चरणा दोहा ॥ बिषय माहिंते खैंची इन्द्रिय तिनसों अति आनन्द । प्राप्त होतहै जीवकोहोति सुबुद्धि अमन्द ॥ ॥ अरिल ॥ कारणमाहिं मि-लतहै कारज । लयके माहिं करतहै आरज ॥ अरु उत्पन्न होत जबगुरु सुनु । कारण तासोंहोत कार्य्य गुनु ॥ जयकरी ॥ लय जब होत बिज्ञ अवदात । तब इन्द्रिय मनमें मिलिजात ॥ अरु मन बुद्धि माहिं मिलिजाय । बुद्धि जीवकेमाहिं समाय ॥ परमात्माजो नित्यानन्द । तामेंजीव मिलत निर्द्वन्द ॥ लयको हेतु कह्यो हम ऐन । अबउत्पतिको सुनहु सचैन ॥ मति अब्यक्त ब्रह्महै जौन । तातेजीव होतहै तौन ॥ ताते मतिको होत उदोत । मतिते मन-को उद्भवहोत ॥ मनते होति सुइंद्रियसर्ब । बिषय माहिंते लगति अखर्ब ॥ अरिल ॥ उत्पतिको तुमकोहमकारण । कह्यो प्रगट करिकै

निर्द्धारण ॥ हेतुमोक्ष को जोहै बरश्राति । कहत तुम्हैं अबसो बाचरूपति ॥ दोहा ॥ शब्दादिक जे बिषयहैं आकाशादिक माहिं । प्रथम छोड़ि तिनकोन पुनि लागै तिनके पाहिं ॥ शब्दादिक को छोड़िपुनि आकाशादिक सर्ब । तिनहूंको छोड़ै समुझि गहि कै ज्ञान अखर्ब ॥ सोरठा ॥ आकाशादिक जौन तिनको जो आभावहै । हिय अकाशमें तौन रहत देहतजि तौनहूँ ॥ आभीर ॥ फिरिजो सूक्ष्म देह। ताहितजे बुधिगेह ॥ सूक्ष्म छोड़ेपर्म। लहत मोक्षको शर्म॥ मधुभार ॥जिमि मारतण्ड। लहि उदय चण्ड॥ करकोपसार। है करत चार॥ फिरि अस्त होय। कर लेत गोय ॥रबि आपु बीच। सुनु गुरु निभीच ॥ हरिगीत ॥ यहि भांतिही सों देहको आतमा प्रापत होयकै ।बिस्तरत हैइन्द्रियनको सबफेरि तिनको गोयकै॥ जोआपनोहै रूपताको होतप्रापत तौनहै । यह बारताहै गुप्त तुमैंको कहीजो बुधिभौन है ॥दोहा॥पुनि पुनि कर्म प्रभावसों प्राप्त होतहै देह।आत्माविद हैं जोनजन तिनहूँको बुधिगेह॥चरणादोहा॥ पुनि पुनि जोहै प्राप्त देहकी तास निवृतके काज । निवृत धर्मको कहततुम्हैं हम सुनिये प्रज्ञदराज॥ मौनी ॥बिषय माहिं इन्द्रियको लगन न देय।लगे बिषयमें देहैदुख यहज्ञेय॥देतजि भोजन धरि कै धीर्य्य महान। इन्द्रिय निर्बल ह्वैकाज सुजान॥ रहत सबलहैं जबलौं इंद्रिय सर्ब।कर्म होतहै तबलौं खर्ब अखर्ब ॥ निबलभयेते इंद्रिय कौनहु कर्म । होत नहींहै केहू कबहूँ पर्म ॥ तजे भोजनहु जिह्वा निबल न होय। कीजे निर्बल तिहिको आत्मा जोय ॥ध्या-नमाहिं आत्माकोजो येप्रज्ञ । निबल होतिहै जिह्वा बर धर्मज्ञ॥ दोहा ॥बिषय संगसोंरहित मति जबजिय माहिंसमाय । प्राप्तहोत तब ब्रह्मको जीवजीव बुधराय ॥

महाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेमनुबृहस्पतिसम्बादेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२

जयकरी॥मनुरुवाच ॥ योगमाहिं जे बाधाकार । बहुतभांतिके दुःख अपार॥देखै तिनको कबहूँ नाहिं।लागोरहै योगके माहिं॥हरिगीती॥

करनो बिचार न दुःखको जो चित्तमें मतिमान । नहिं दुःखप्रा-
पतहै सुनीको यही हेतु महान ॥ बरज्ञान जैसो दूरिकारक दुःख
के समुदाय । दुख दूरि कारक और ऐसो हेतुनहिं बुधराय ॥ बय
रूप योवन द्रव्य सञ्चय औ निरोगितअंग । अरु बास प्यारे
पासजो है प्रीति सहित उतंग ॥ ये सर्बनाहीं नित्यहैं यह हेतुते
इनमाँहिं । कबहूँ न इच्छा राखिये करिज्ञान कोमनपाहिं ॥ इ-
न्द्रियन के जे बिषय तिनमें निरतहैं जनजौन । सुख लहतहैं
लघुकबहुं बहुदुख लहत दीरघतौन ॥ यहिलोकके सुखदुःखको
जन जौन हैं तजिदेत । सोब्रह्मपदको होत प्रापत सुनहु बुद्धि-
निकेत ॥ दुख निवृत्तिको जोहेतुहै सो कह्यो हमतव पास । अब
जीवको अरु ब्रह्मको यकभाव सुनु बुधिरास ॥ जो ब्रह्मभो
संसारहै सोज्ञानइन्द्रिय पास । जबहोतहै तबहोति बिषयाकार-
माति मतिरास ॥ सुनुप्रज्ञ जब मनबुद्धिकोहै होत एकीभाव ।
तबध्यानसों परब्रह्म जानो जातहै बुधराव ॥ सोरठा ॥ गिरिते
जिमिकीलाल कढ़त तिमिहि अज्ञानते । प्रज्ञाकढ़तिबिशाल सो
लागतिहै बिषयमें ॥ नगस्वरूपिणी ॥ अज्ञान नाशकालमें ।सुसेमुखी
बिशाल में ॥ सुप्रज्ञ आतमा जबै । सुप्राप्तहोतहै तबै॥ चरणादोहा॥
चीन्हिपरतहै ऐसे जैसे हेमकसौटी माहिं । प्राप्तभये मतिमें आ-
त्माको जानोजड़ तुमनाहिं ॥ दोहा ॥ मनमातिके सहभावसों जो
तुमकहो सुजान । ऐसेमतिमें प्राप्तभो आत्माजौन महान ॥ ताहि
लखे मनसों नहीं सकत देखिमन ताहि । दृष्टाहै मनबिषयको
कहततुम्हें अवगाहि ॥ चरणादोहा ॥ थूल देहके नाशकालमें सत्वा
दिक गुण जौन । आकाशादिक भूतनकोलै निवृतहोत सुतौन॥
दोहा ॥ ऐसेही इन्द्रियन सह मतिमनमें मिलिजात । लयको हैऐ-
सोहुक्रम सुनहुप्रज्ञ अवदात ॥ मतिजब मनमें मिलति तब मति
मनहीं ह्वैजाति । मनसों भिन्न न रहतिहै सह इन्द्रियकी पाँति ॥
बृहस्पतिरुवाच॥पूर्बकह्योतुम आतमा प्राप्तहोत मतिमाहिं । अबमति

वारी ॥ अरु प्रबालकी माला भाकी । तिमिहीं जोमाला मृति-
काकी ॥ तिनमें सूत्र रहतहै जैसे । सुनहु वृहस्पति आत्मातैसे ॥
रहत मनुज गोमयगल हयमें । तिमिही पशु पक्षिनकें चयमें ॥
चरणादोहा ॥ जैसे जैसे तनसों जोजो जीव करतहैकर्म । तैसे तैसे
तनसों भोगत सोसो कर्म सुधर्म ॥ कर्म भेदते बिबिध देह को
जो संयोग सुजान । मैंदृष्टान्तदेतहौं तामें तुमकोकरि अनुमान॥
सोरठा ॥ ब्रह्मभये क्षेत्रज्ञ जैसे जैसे करत है । कर्म सुनहु बरप्रज्ञ
तैसे तैसे तन लहत ॥ जैसे धरणी माहिं जैसो बोयोजात है ।
यामें संशयनाहिं अन्नहोत है सोइहै ॥ हास ॥ होति प्रथम इच्छा
पुनि होत सुउद्योग । सिद्धि होत कर्मफेरि कहत सुबन्धु लोग ॥
कर्म भये सिद्धिफेरि ताकोफल होत । जानतसोजाकेहिय मतिको
है द्योत ॥ प्रथम हेतु इच्छाहै जानो तुमप्रज्ञ । लगे रहतयाहीमें
जे जनहैंअज्ञ ॥ जेहैंजनप्रज्ञरहैंइच्छासोंदूरि । दुःखदायजानि हि-
ये धारि ज्ञानभूरि ॥ दोहा ॥ योग्यजानिबे होयसो ज्ञेय कहावत
दक्ष । जासों जान्यो जातहै ज्ञेयज्ञानसों स्वक्ष ॥ ज्ञेयजौन पर-
मातमा ज्ञानचक्षुसों ताहि । लखतसुबुधहैअरु अबुध ताहिल-
खतहै नाहिं ॥ श्लोक ॥पृथ्वीते नीरमहत है सुनो । नीरते सुतेज
महतहै गुनो ॥ तेजसते महत पवन जानिये । पवनहु ते महत
व्योम मानिये ॥ दोहा॥व्योमहुते हैमन महत मनते बुद्धिमहान।
महत बुद्धिते कालहै कालहुते भगवान ॥ तोटक ॥ यहसबै महा
जगहै जिहिको । जनकोउन भेव लहै तिहिको ॥ जिहिको बुध
जे नितध्यावत हैं । मनकोनाहिं अन्तलगावत हैं ॥ चरणादोहा ॥
आदिमध्यअरु अन्तन जाकोयाते अव्ययमाम।हैश्रीबरभगवान
कोसुनु सुरगुरु बुधधाम ॥ सैनिका ॥ ताहिप्रज्ञ प्राप्तहोतजोनहैं।
कालसों बिमुक्त होततोनहैं ॥ ताहिजौन प्राप्तहोतहै नहीं । तौन
होत प्राप्तदुःख कोसही ॥ दोहा ॥ इंद्रिय निग्रहआदिजे हैंउपाय
मतिमान । तिनसों प्रापतहोतहै ब्रह्महि मनुज सुजान ॥ चरणा-

कुलक ॥ आदि मध्य अन्तनहैं जाको। नाम सुअव्यय यातेताको॥ दुःखरहितहै अव्ययताते। सबजग होतप्रकाशित जाते ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ मौनी ॥ ब्रह्मज्ञानी केसुखको नाशनहोत। कहत आपु हैंऐसे प्रज्ञापोत ॥ ब्रह्मज्ञानमेंतौ सबलागत क्योंन। तुमबिचारि कै कहिये बरबुधिभौन॥ मनुरुवाच॥ ब्रह्मदृश्य नहिंयाते मानवसर्व। ब्रह्मज्ञानमेंलगतनसुबुध अखर्व॥ जेलागतहैं तेजनसोंसुखलेत। कहत तुम्हैं मैंनिश्चय सुमति निकेत॥ दोहा ॥ जनको मनसो रहतहै लगो विषयकेमाहिं। यातेजनको ब्रह्मपर जानिपरतहैनाहिं ॥नरेश॥ जे अबुध मनुज हैं लोकमें। तेसर्व विषयके थोकमें॥ जो देखताहीकोकरैं। इच्छा न और हियमेंधरैं॥ अरिल ॥ बिषयहि माहिंनिरतहैं जेजन। बिषय रहितकी इच्छा तेजन॥ करत नहीं हैं सुनहु बृहस्पति। बिषयहि माहिं रहत रतिसोंअति ॥ दोहा ॥ बिषयमाहिं रतरहतहैं निशिदिन मानवजौन। बिषयराहित परब्रह्मको जानिसकै किमितौन ॥ सारग ॥ करैशुद्ध बरज्ञानसों बुद्धि को स्वक्ष। करै बुद्धिसों शुद्धमन परम हे दक्ष ॥ इन्द्रियनको स्वच्छ मनसोंकरै बिप्र। सुनो होत है ब्रह्मको प्राप्तत्तब क्षिप्र॥ दोहा ॥ सुनत बारता ब्रह्मकी अरु सुबिचारत जौन। निर्गुण जो परमातमाताहि लहतहैतौन ॥ आभीर ॥ कामवान जनजौन। परमात्माकोतौन॥प्राप्तहोतहैं नाहिं। सत्यजानु मनमाहिं॥ जयकरी॥ काष्ठान्तरगत जौन कृशान। प्राप्तन होत ताहिपवमान॥ जिमि तिमिकामवान जनजौन। प्राप्त ब्रह्मकोहोत न तौन ॥ दोहा ॥ जो बिचार अव्यक्तको करतै रहत सदाहिं। अव्यक्तहि ह्वै जातसो अन्तकालके माहिं॥ प्लवगम ॥ जोइन्द्रिय लगिजाय बिषयकेब्न्द में। तौजन निजुपरजाय कामके फन्दमें॥ कामफन्दमें परेदुःख अतिहोतहै। अति दुर्लभ ह्वैजात श्रेयको द्योतहै ॥ दोहा ॥ आत्मा सूक्षमदेहको प्राप्तभये बागीश। पंचभूतके रहतहै आश्रय कहत मुनीश॥ भूताश्रय जबहोतहैलाहिके सूक्षमदेह। परमात्मा

कोभाव तब रहतनहीं बुधिगेह ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ सोरठा ॥ प्राप्ति देहकी जौन सोतौपुनिपुनि होतिहै । कैसे सुनु बुधिभौन आत्मा छुटिहै देहसों ॥ मनुरुवाच ॥ दोहा ॥ अरणवमाहिं जहाजजो ताहि हिलावत बायु । कबहूं ताको बायुही पारदेतिहै लायु ॥ चरणा दोहा ॥ भवसागरमें जीव जहाजहि कर्म बायुहैजौन । देतबहाय प्रबल ह्वै कबहूं पारलगावत तौन ॥ दोहा ॥ शुद्धहोत अंतःकरण तेजे बिषय को सर्व । प्राप्तहोततब ब्रह्महै नितिअव्यय सुअखर्व ॥ ब्रह्मज्ञानहै मोक्षको कारणहै नहिंऔर । कह्योतुम्हैं सिद्धांत यह मैंमनमें करिगौर ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्म्मेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञानहैमोक्षको कारणहैनाहिं और । कह्योपूर्व अध्यायमें ऐसे तुम करिगौर ॥ निर्गुणको जो ज्ञानसों सुगुणबिना जानैन । होतसुनो महिपालबर तातसुमतिकेऐन ॥ याते तुम श्रीकृष्णको कहौतत्व पुनिमोहिं । कौनलहत आनंद है महत तिन्हैं जब जोहि ॥ भीष्मउवाच॥ काला ॥ परशुराम अरु व्याससुनारद । बाल्मीकि अरु परमबिशारद ॥ नारायणको चारुमहातम । है इनसबते सुन्यो प्रज्ञहम ॥ सोरठा ॥ यहजोबर भगवान केशव प्रभु आनन्दमय । सोई सब तू जान महतमहा तम जासुहै ॥ जयकरी ॥ शारँग पाणि कृष्ण को कर्म । जानत हैं बरसुबुध सुधर्म ॥ तुम्हैं कहत हौं ते बिख्यात । सुनहु धर्मधर कुन्तीतात ॥ महत भूतजे आकाशादि । बिरचितभेहरि तिन्हैं अनादि ॥ भूमि बनाय शीघ्रही शैन । करतभयो श्री आनँद ऐन ॥ अहंकार को बिरच्यो तत्र । छाय रह्यो सोहै सर्वत्र ॥ भूत भविष्यत्त जेहैं भूत । धारतसो तबतौन अकूत ॥ दोहा ॥ नारायणकी नाभिमें तदनुहोत भोपद्म । तौनपद्ममें होतभो ब्रह्मा बरमति सद्म ॥ मौनी ॥ तदनु होतभो दानव मधुबलवान । करत भयो पुरुषारथ तौन महान ॥ चतुराननकी रक्षाकाजै ताहि ।

हनतभये श्रीमाधव रटसों चाहि ॥ ताहि हतेते नरसुर दानव सर्ब। कहतभये मधुसूदन हरिहि अखर्ब ॥ तदनन्तर बिरचत भो श्रीलोकेश। सप्त मानसिक पुत्र सुत्र्प्रतिहि सुभेश ॥ दोहा ॥ पृथक् पृथक् मैंकहतहौं तिनके नाम सुजान। सुनहु तौनतुम भूपबर कुन्तीसुत बलवान ॥ मरिचि अंगिरा अत्रिबर अरु पुलस्त्य मतिधाम। सुबुध पुलह क्रतुदक्ष अरु स्वक्ष दक्षसो माम ॥ अरिल ॥ कश्यप भयो मरीचीके सुत। मनते परम महत मेधायुत॥ ब्रह्माके अंगुष्ठते उपजत। दक्षभयो सुनुभूप सुमति मत ॥ चरणाकुलक ॥ भईदक्षके तेरह कन्या। तिनमें दिती सुज्येष्ठा धन्या ॥ कश्यपको सुब्याहिते दीन्ही। तिनको कश्यप मोदित कीन्ही॥फेरिभईदशसुतासुढारी। दईधर्मको तेमुदकारी॥भयेधर्म केसुवनसुढारे। तिनमें अतिहीबल गुणवारे॥ दोहा ॥साध्य रुद्र-गण अष्टबसु अरु सुमरुत गणपर्म। औबिश्वेदेवा लहे येसुत तिनमें धर्म ॥ सत्ताइस कन्याभई और दक्षके चारु। दईचन्द्र को ब्याहिते करिकै प्रीति अपारु ॥त्रिभंगी॥ कश्यप कीनारी परम सुढारी बरतनवारी सुगुणरई। गोतरु गन्धर्बा तुरग अखर्बाहय सुखसर्बा जनत भई॥ अरु अमर अनूपा अति शुभरूपा मो-दितदिति उत्पन्नाकिये। तिनके प्रभुबामन बिष्णु सचावन होय सुहावन मोददिये॥ चरणा दोहा ॥ प्रभुबामनके पुरुषारथते देवनकी श्रीपर्म। बढ़तिभई अरु भई पराजय असुरनकी शुभकर्म॥ तोटक॥ दिति दैत्यनको उत्पन्नाकिये। दनुदानवको सृजिमोद लिये॥ बलवान भये सबते अतिही। पुरुषारथ करतभये नितही॥ सोरठा ॥ दिनरजनी अरुकाल पूरवाह्न अपराह्ण अरु। ऋतु षष्ठहु अरु साल मधुसूदन बिरचत भये॥ जयकरी॥ थावर अरु जंगम सब भूत। औपृथ्वीसह जगत अकूत॥ अरु मेघनके जूह सुजान। बिरचे नारायण भगवान॥ तदनन्तर माधव सबि वेक। अपने मुखते बिप्र अनेक॥ बिरचतभे तेजो मय

भूरि । तिनको सुयश रह्यो जगपूरि ॥ चरणा दोहा ॥ बाहुनते क्षत्रिय बिरचे बहु वैश्य उरुनते भूप । अरु सुपदनते शूद्र बहु केशव रचे अनूप ॥ रामगीती ॥ उत्पन्न चारिहु वर्णको करि रमानाथ सुजान । बिधिको सुतिनको कियो अधिपति प्रीति सहित महान ॥ सब भूतगण अरु योगिनिनिको अधिप शिव को कीन्ह । अरु यक्षराजहि परम धनकी अधिपताई दीन्ह ॥ जनपातकी हैं जौन तिनको दण्ड दाबेकाज । हरिअधिपताई दई यमकी सुनहु बहु नरराज ॥ अरुकियो अधिपति बरुणको जल जीवगण को सर्व । सब देवतनको कियो इन्द्रहि अधिप बिष्णु अखर्व ॥ दोहा ॥ सतयुग माहीं नरनमें हुती न मैथुन धर्म । होतीरही अपत्यही संकल्पहिते पर्म ॥ चरणाकुलक ॥ जन जीवनकी इच्छा जबलों । करतरहे जीवत हेतबलों ॥ यमकृत भयहि लहत हेनाहीं । नित्य रहत हेआनँद माहीं ॥ दोहा ॥ त्रेतामाहीं होतही किये अपत्य स्पर्श । मैथुनधर्म न होतहे सुनहु भूप उतकर्ष ॥ द्वापर में मैथुन धरम होतभयो भूपाल । कलियुगहूमें होतहै मैथुन तिमिहिं बिशाल ॥ दक्षिणबासी जौनजन तिनके माहिं पुलिन्द । गुह अन्धक चूचुक सबर मद्रकनीच नरीन्द ॥ उत्तरमें जे बसतजन तिनमें सबर किरात । गान्धार अम्बोज अरु तिमि जौनक बिख्यात ॥ बायस गृद्ध स्वपाकको भूपसधर्म हे जौन । सोई हे इनसबनको धर्मसुनहु बुधिभौन ॥ आभीर ॥ पूर्व प्रजापति जौन । भयोकहो बुधिभौन ॥ दिशा दिशाके स्वक्ष । ऋषी कौनहें दक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ प्रश्नकियो तुम जौन । तुम्हें कहतहौं तौन ॥ सुनिये प्रज्ञ नरेश । धर्मवान शुभवेश ॥ चरणाकुलक ॥ चतुरानन भोपूर्व प्रजापति । तदनु तासु सुतसप्त महापति ॥ बर मरीचि अरुअत्रि अंगिरस । अरु सुपुलस्त्य पुलहक्रतु बरजस ॥ परम बशिष्ठ श्रेष्ठसम बिधिसम । तेसु प्रजापति भयेसुन्यो हम दोहा ॥ इनते आगे और जे भये प्रजापति भूप । ते मैं तुमको

कहतहों प्रज्ञावान अनूप॥ हरिगीती ॥ नृपभयोश्रीप्राचीन बरही अत्रि ऋषिके बंशमें। बर प्रज्ञ जनसों सुन्योहै सुनु भरत कुल अवतंश मे॥ प्राचीनबरही के भये दशपुत्र बर बलवान है। भोप्रचेता अभिधान तिन दशहूंनको मतिमान है॥ भोपुत्र तिन दशहूंनके यक दक्ष ताको नामभो। अरु परम सुऋषि मरीचि के कश्यप सुबर मतिधामभो॥ भोनाम्न कश्यप एकतासुअरिष्ट-नेमीदूसरो। अरुअत्रिकेभोसोमसुत तिहिमृगनको बाहनकरो॥ दोहा॥ कश्यपके सूरयभये तेजोमयबलवान। भुवननकेयेअधिप हैं सर्बसुनहु मतिमान॥ चरणाकुलक॥ श्रीशशबिन्दु नृपतिकेरानी। होतिभई दशसहस सुजानी॥ सहस सहस यकएकके नीके। होतभये सुतभो अतिहीके॥ परजापति आपुहिको जाने। और प्रजापति तिननहिं माने॥ बरप्राचीन बिप्रमतिधारी। तिनयह बात कहीबहुबारी॥ दोहा॥ प्रजाभूप शशबिन्दुकी है यह सर्ब महान। कुलमेंयादव वृष्णिके भयो जौनबलवान॥ महतप्रजा-पतितौनहो और न तासुसमान। कहे प्रजापतिसर्बये तुमकोहम मतिमान॥ टकरी॥ त्रयलोकनके देवततौन। अबमैं कहत सु-नहु बुधिभौन॥ भग अरु अंश अर्यमा मित्र। सविताधाता परम पबित्र। बिवस्वान त्वष्टाअति चण्ड। पूषातेजस भरोअ-खण्ड॥ इन्द्र वरुण अरु बिष्णु सुजानु। ये कश्यपसुत बारह भानु॥ दोहा॥ दस्रऔर नासत्य ये अष्टम रबिकेतात। त्वष्टासुर को सुवनहै बिश्वरूप बिख्यात॥ जयकरी॥ अहिर्बुध्न अरुअजै-कपात। बिरूपाक्षरैवत बिख्यात॥ अम्बक है रजयन्त बहुरूप। अरु अपराजित आनँद रूप॥ अरुसाबित्र पिनाकी पर्म। ये एकादश रुद्र सशर्म॥ अरु बसु अष्टदेव येसर्ब। पहिले मनुहैं केसुअखर्ब॥ दोहा॥ अर्बाबसु अरु पराबसु औषिज कक्षीवान। यवक्रीट अरुरैभ्यबल येजेदेव सुजान॥ नाम इनकोहै आंगिरस सबयेब्राह्मण वर्ण। क्षत्रियहैं आदित्यसब देवनमेंमुदधर्ण॥ बैश्य

मरुतगण अश्विनी सुवनशूद्रहैं भूप। देवनकेंचारिहुबरणतुमको कहेअनूप॥ सोरठा॥ इनको लीन्हें नाम प्रातकाल उठि भूपबर। होतिदेह दुतिमाम पापसबै काटिजातहैं॥ दोहा॥ कण्व बर्हिषद आदिऋषि प्राची दिशिके पर्म। उन्मुच बिमुच सुप्रमुच अरु स्वस्त्यात्रेय सशर्म॥ इध्मबाहु अरु दृढ़ब्रत बीरजमानमहान। अरु सुप्रतापी परमबर सुऋषि अगस्त्य सुजान॥ दक्षिणदिशि में रहत हैं येऋषि बीरजवान। एकतद्विजत्रित सारस्वत धौम्य उषंग सुजान॥ परिव्याध अरु कवष ये सुऋषि प्रतापी भूरि। पश्चिम दिशिमें रहतहैं महत मोदसोंपूरि॥ दत्तात्रेयबशिष्ठ अरु कश्यपबिश्वामित्र। भरद्वाज गौतम परमऋषि जमदग्नि पवित्र॥ उत्तरदिशि में रहतहैं येऋषि उत्तम पर्म। दिशि दिशिके जेसुऋषिहम तुमको कहेसशर्म॥ पापपुण्य जेकरतहैं जगमेंजनगण सर्ब। तिनके साक्षीभूतहैं येऋषि परम अखर्ब॥ आभीर॥ इनको लीन्हें नाम। जात छूटि अघमाम॥ परमो होतिअमन्द। प्रापत होतअनन्द॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ पूर्वप्रजापति जौनहे कहे तौनतुममोहि। और दिशनके सुऋषिऊ कहेकृपासों जोहि॥ अब कहिये पुनि कृष्णके तेजसको वृत्तांत। औ कीन्हें जेकर्महैं पूरब महतनितांत॥ अरुधारो किहि कार्य्यको माधव पशुको रूप। कहोतौन अवगाहिके प्रज्ञावान अनूप॥ भीष्मउवाच॥ रामगीती॥ इक समय में हम गये मृगया काजको बनमाहिं। अतिमहत तामें रहत हे सिंहादि जीवसदाहिं॥ बहुबृन्द बिहरतरहे जामें बिहंगनकेचारु। फलफूलसों युतवृक्षतामें हुतेस्वच्छअपारु॥ दोहा॥ तहांमारकण्डेयको हुतोथान अतिस्वक्ष। हमतामें देखतभये वृन्दमुनिन के दक्ष॥ अरिल॥ तदनु तिन सुपूजा कीन्हींमम। तातेपरम प्रसन्न भयेहम॥ कश्यप कथाकही तहँइकबर। तुम्हैं कहतहौंतौनसुमति

बर ॥ नरकादिक दानव अति बलमय । क्रोध लोभ युततिनके बहुचय ॥ तिमिहिंऔर दानव बहुबरबल । अतिहिप्रमत्तमहत तिनकेदल ॥ चरणादोहा ॥ देखिनसकेसुरऋद्धि सरनकी तेसब सुनुभूपाल । दलि मलिडारे कोपि महत अति करिकैयुद्धबिशाल ॥ चरणाकुलक ॥ हारीदानवनसों रणमाहीं।केहूधीर सके धरिनाहीं ॥ फिरत भयेते इतउत छपते । दानवानको बलगुणि कपते ॥ भीर दानवनकी अतिभारी । तासों धरणी भईदुखारी ॥ जलकेमाहीं बूड़न लागी । दानव भीर भारसों पागी ॥ देवसमूह देखि कै ताको । कहत भये ऐसे ब्रह्माको ॥ दानवमर्दन कीन्हहमारो । ताते हमको भो दुख भारो ॥ भूमि भारसों आरतह्वैकै । बूड़ि जातिभो हर्ष को ग्वैकै ॥ सुनिकै यह देवनकी बानी।बोलेचतुरानन बरज्ञानी ॥ विष्णुरूप शूकर को धरिहैं ।नाश सर्ब दनुजनको करिहैं ॥ श्री अव्यक्त बिष्णुको नाहीं । जानतहैं अपनेमनमाहीं ॥हैमदान्धसब बर बल धारी । बसत भूमि तरहै रणकारी ॥ दोहा ॥ तहांजायकै मारिहैंसब दनुजनकोबृंद । शूकरको बपुधारिकै श्रीहरि नित्यानंद ॥ शोभा ॥ ब्रह्माकी यहबानी । सुरगण सुनि सुखखानी ॥ आनँद हियमें धारो । शोचसमूह निकारो ॥ दोहा ॥ तदनन्तर श्रीबिष्णु बरधरि बराहको रूप । गेतित भूतल पैठिकै जितहै दनुज अनूप ॥ लखि बराह बपुबिष्णु को दनुज सिकलिकै सर्ब । गहत भयेते आयकै करिकैवेग अखर्ब ॥ नरेश ॥ सब खैंचतभे चहुंओर सों । हरिशूकररूपहि जोरसों ॥ थकगे सबकै कछुनाशकै । विषम लहिआपुसमेंतकै ॥दोहा॥ तदनन्तरबाराहबपु बिष्णुभयंकर भूरि। करते भये निनादसों गोलोकनने पूरि ॥ चचला ॥ त्रासमान होतभे महान शक्रआदि देव । केहुतौन नादको सुपाय तेननेक भेव॥ सर्बलोक माहिंज्ञान काहुकोरह्यो न स्वक्ष । जीववृन्दभूरि भीतिसों भरेपरे प्रतक्ष ॥ तोमर ॥ तिहिनादसों डरिपर्म । सबदैत्य होय सभर्म ॥ सबलोपरें भुवबीच । पुरुषारथै तजिनीच ॥ तब

बिष्णु शूकरस्रूप। सुर दुःखहर्ण अनूप ॥ चरणाँदोहा ॥ तिनके आमिष अस्थिमेदके संच जो तहँभूप। भये बिदारत खुर अपने सों श्रीहरि शूकरस्रूप॥ तदनन्तर सब देवता गे चतुराननपास। चतुराननको कहतभे ऐसेबचन उदास॥ देवाऊचु ॥ अरिल ॥ कैसो नादभयो यह जगपति। कियो कौनयह नाद महत अति॥ बिकल भयो जगत जिहिको सुनि। हमको कहो कृपाकरिकेगुनि॥ दोहा॥ इतनहिं में बाराह बपु बिष्णुजगतके हेत। महिमें ते निकसत भये सुनुनृप बुद्धि निकेत॥ पितामहउवाच ॥ दोहा ॥देखोयह बाराहबपु बिष्णु महाबल पर्म। आवत दानवपातिनको हतिको उग्रसशर्म॥ इनहिंकियो हो नादअति दनुजनकेबधकाज। तुम न डरो हिय में धरो आनँद परम दराज॥ भीष्मउवाच ॥ जिहि काजै बाराह बपु धारयो श्रीभगवान। कह्यो तुम्हें हम तौन अब सुनिहो कहा सुजान॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेश्रीकृष्णबाराहरूपमाहात्म्येषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा ॥ सुन्योमहातम आपुसों शूकरबपुकोपर्म। अबकहियेतुममोक्षकी मोहिंउपायसशर्म॥ भीष्मउवाच ॥ कहतएक इतिहासहों यहि प्रसङ्गमें भूप। तामाहीं गुरु शिष्यको हैसम्बाद अनूप॥ एक बिप्रहो बिज्ञ अति ताहि शिष्यबर तास। पाणि जोरिकै कहतभो ऐसे सहित हुलास॥ भये कहांते आपु औहम हे तात सुजान। कहोमोहिं अवगाहिकै बक्ताआपुमहान॥ अरिल॥ और कहो यक करिनिर्द्धारण। पंचभूतहैं सबके कारण॥ श्रेष्ठ अश्रेष्ठ ताहि कैसे जन। पावत संशयमें हैमोमन॥ गुरुरुवाचदोहा॥ सुनहु शिष्यमैं कहतहौं तोहिं गुप्तयक बात। तूहू गुप्तहि राखियो मनमाहीं अवदात॥ भयो सुयादव वृष्णिके बंश माहिंअवतार। बार्ष्णेय ताते भयो तासु नाम सुखकार॥ ऐसो जो परब्रह्म है बासुदेव भगवान। पुरुष सनातन ताहि बुध जानत हैं श्रुतिमान॥ करता उत्पति प्रलयको सोई और नकोय॥ ताहीते हम

तुम भयेऔ सबजंग यहजोय ॥ बासुदेव भगवानजो श्री परब्रह्म सशर्म । तिनको जामें अंशहै अधिक श्रेष्ठसो पर्म ॥ बाष्र्णेय भगवानको चारु महातम स्वक्ष । सुनो तोहिंमैं कहतहौं दायक मोदप्रतक्ष ॥ चक्रारूढ़ पिपीलिकाघूमतिहै जिहिभांति । बासुदेव के माहिं तिमि त्रयलोकनकी पांति ॥ महाप्रलय जबहोत तब अव्ययाबिष्णु महान । फेरि प्रकृति को सृजत हैं जगके काज सुजान ॥ छपे वेद युग अन्तमें तिनको सुऋषिमहान । आज्ञा बिधिकी पायकै धारत भये सुजान ॥ वेदांगनको बृहस्पति धारत भयो सप्रीति । नीति शास्त्र को धारतो शुक्रभयो सहरीति ॥ नारदभो धारत परम स्वच्छ शास्त्र गांधर्व । धनुर्वेद धारतभये भारद्वाज अखर्व ॥ बैद्यकको धारतभयो कृष्णात्रेय सुप्रज्ञ । न्याय शास्त्रको और ऋषि धारत भे धर्मज्ञ ॥ बेदशास्त्रकोधारते भये सुऋषि सब स्वक्ष । पै जान्यो अव्यक्त जो ब्रह्म ताहि नहिं दक्ष ॥ भयो व्यक्त अव्यक्त जो नारायण भगवान । सोई आपु अव्यक्तको जानत हैं नहिं आन ॥ नारायणते औरऋषि जानत हैं बुधिधाम । नित्यानंद सुब्रह्मको सुनहु शिष्य अभिराम ॥ सोरठा ॥ नारायणभगवान तिनकी इच्छाते प्रकृति । सुनुहेशिष्य सुजान करति महत तत्त्वादिको ॥ चरणाद्दोहा ॥ होत प्रकृति ते महातत्त्व है महातत्त्व ते होत । अहंकार औ अहंकार ते नभ कोहोतउदोत ॥ नभते बायु बायुते तेजस तेजस ते बुधिधाम ॥ उद्भव जलको होत कहत है महत प्रज्ञ अभिराम ॥ पांच कर्मेन्द्रिय औ पांचहि ज्ञानेन्द्रिय अति स्वक्ष । इनतेहोत बिषय औ पांचहि मनषोड़श हो दक्ष ॥ ज्ञानेन्द्रिय ये श्रोत्र त्वक् चक्षु सु जिह्वाघ्रान । कर्मेन्द्रियये लिंग गुद करपदबाक सुजान ॥ बरवै ॥ गन्धरूप अरु रसऔशब्द स्पर्श । प्राप्तसर्ब इनमें मन रहत सहर्ष ॥ दोहा ॥ मनजिहि इन्द्रियके निकट रहत सुइन्द्रियसोय । ग्रहण करतिहै बिषयको औरन इन्द्रिय कोय ॥ दश इन्द्रियसब

भूत अरु षोड़शहो मन जौन। आज्ञामें क्षेत्रज्ञकी रहत देह में तौन ॥ जिह्वा जलको सुगुणहै पृथिवीको गुण घ्रान॥ चक्षु अग्निको श्रोत्रहै नभ गुणको मतिमान ॥ सोरठा ॥ मारुतको गुण पर्श महाभूतके सगुणये। सुनुहे शिष्य सहर्ष सब भूतनमें जानिये ॥ दोहा ॥ होत चित्तहै सत्वते सत्व प्रकृतिते पर्म। ईश्वर में सोरहतहै कहत सुप्रज्ञ सशर्म ॥ ईश्वर माहीं रहतहै सत्वसुगुण अवदात। यहीहेतुसों सत्व सों ईश्वर जान्यो जात ॥ जयकरी ॥ भाव सर्ब मायादिक जौन। सर्ब जगत के कारण तौन॥ चिदानंद तिनको आधार। प्रकृति परे साबुद्धि अगार ॥ दोहा ॥ मायादिक सों युक्तजो जामें हैं नवद्वार। ऐसो तन तामें रहत आत्मा सुमति अगार ॥ बरवै ॥ पुरुष कहावत है जनयहि ते जानु। जानत ते जिनको भो मति को भानु ॥ आभीर ॥ लघु दीरघ जे देह। तिनमाहीं बुधि गेह ॥ आत्मातुल्यहि जानु। संशय मति अनुमानु॥ देखिपरतहै पैन॥ छेदे ते तनऐन। अग्नि काष्ठ के माहिं ॥ देखिपरति जिमिनाहिं ॥ दोहा ॥ मथन किये ते काष्ठको परत अग्निहै देखि। तिमिही योगाभ्याससों परतआतमा लेखि ॥ आत्माको अरु देहको पृथक् भावहै जौन। तन सम्बन्धन छुटत है जानि जात जबलौन ॥ सरिता माहिं नयो नयो आवत जिमि जलचारु। तिमिहीं देही देहको पावत बुद्धि अगारु ॥ सेन्द्रिय आत्मा देहतजि स्वप्नमाहिं जिमिजात। इमिहिं देहतजि द्वितियको प्राप्तहोत है तात॥ ह्वैके प्रेरितकर्मसों करत कर्मलहिदेह। कर्महिसों पुनिलहतहै द्वितियदेह बुधिगेह॥ भूतचारि परकारके होत शिष्यसुनु दक्ष। पृथक्पृथक् मैं कहत हौं ते सब तोहिं प्रतक्ष ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेगुरुशिष्यसंवादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७

गुरुरुवाच ॥ चरणा दोहा ॥ अण्डजस्वेदजऔर जरायुज औउद्भिज ये भूत। जानेजात नजनन मरणहैतिनके तात अकूत ॥ दोहा ॥

तनकोजो संयोगहै औबियोग हेतात। मनहै ताको हेतुबर कहत प्रज्ञ अवदात ॥ सोरठा ॥ मनहैमायारूप जनन मरण को हेतुसो। यहिते प्रज्ञअनूप जानिपरत जननादिनहिं ॥ रामगीती॥ जड़लोह जो सोलोह चुम्बक के भयेतेपासु। चैतन्यलों सोतास सोहै धावतो है आसु॥ तिमिहिं मनके लगे पीछे इन्द्रियादिक सर्ब। मनजात जहँजहँ जात तहँतहँ कहत प्रज्ञअखर्व ॥ है कर्मकेबश बासना अरु बासनाबशकर्म। यहबासना अरुकर्म कोजो चक्रप्रज्ञ सशर्म॥ तिहि माहिं परिकै जीव अरु मन इन्द्रियादिसमेत। हैभ्रमत तबलौं चक्र जबलौं रहतबुद्धिनिकेत॥ फल बासनामें लागिकरिकै कर्मकीन्हे जौन। सुनुदेह प्रापतहोन को है हेतु आगेतौन॥ कर्मजोहै हेतुअरु मायादि जेहैं सर्ब॥ होतजब क्षेत्रज्ञसोंहै युक्तप्रज्ञ अखर्ब॥ परस्पर मिलिजातहै ये मिलतहैं जबदेह। दृश्यजग में होत तासों करतहै जनेह॥ चरणादोहा॥ ईश्वरके आश्रय में ह्वैके जीवपूर्वतजिदेह। लोकान्तर को प्राप्त होतहै सुनहु शिष्यबुधि गेह॥ अरिल॥ लोकान्तर को जात जीवजब। रज औतम नहिंजात संगतब॥ स्वच्छ सत्व गुण जात जीवसँग। तेजानत जेगहतज्ञानमग॥ दोहा॥ जात संगपै पृथक्है जैसे रजअरुवायु। तिमिहिं संग ये जात पै जीवपृथक् है सोउ॥ आपोजान्यो जगत है प्राप्तभये ते ज्ञान। आपोजाने फेरनहिं देहलहत मतिमान॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेगुरुशिष्यसंबादेऽष्टत्रिंशोऽध्यायः३८॥

दोहा॥ उदय क्लेशको जौनहै तासुहेतु जो माम। सोमें यहि अध्याय में कहत तोहिंहौं आम॥ रामगीती॥ जनप्रवृत्तजेहैं कर्म माहीं तिन्हें प्रियहै कर्म। अरुप्रवृत्त जे बिज्ञानमाही रहतनित्य सशर्म॥ प्रियलगत है बिज्ञानही तिनजनन को नहिं और। सुनु शिष्य तोसों कहत हौं यहबारता करि गौर॥ बर कर्म मारग मोक्ष मारग कहे श्रुति में पर्म। तिनमाहिं जे हैं प्रवृत्त

तेई बुद्धिमान सशर्म ॥ तिन दुहुनहूं में मोक्षमारग माहिं रत हैं जौन । सो श्रेष्ठतर हैं तासु सम जन और नाहिं बुधिभौन ॥ तुम कहौ जो यहिभांति मेरे प्रगट सुनिये बैन । जन रहै जीवत करै तबलौं कर्मबर बुधिऐन । यह बेदमाहीं लिख्योहै तौ सुनहु मेरीबात । जनकरै कर्म न होय जबलौं ज्ञानबर अवदात ॥ नहिं ज्ञान प्रापत होय जो तो कर्मको फल त्यागि । अतिस्वच्छ कीबे चित्तको जनकरै कर्महि पागि ॥ जिमि न कञ्चन लसत मलसों परम जो बिज्ञान॥तिमि प्रकाशित बासना सों होतनहिं मतिमान॥ लगि काम क्रोध अरु लोभमाहीं करतजौन अधर्म । नशिजात सोहै लहतहै नहिं ज्ञानको बरशर्म ॥ अनुराग सेती पञ्च जे हैं बिषय तिनके माहिं। मनको न लावै बैठिके बरबिज्ञ जनके पाहिं ॥ मनको लगाये बिषय माहीं क्रोध हर्ष बिषाद । नित होतहै जन कहत हैं ते तजे जौन प्रमाद ॥ जनअज्ञ जे ते बिषय माहीं लगे रहत हमेश । जनप्रज्ञ कबहुँ न लगत तिनमें जानि महत कलेश॥ जिमि मृत्तिकासों जातलीप्यो मृत्तिका को गेह । नहिं गिरत है तिहि भांतिहीसों प्रगट जो यह देह ॥ हे पारथिव यहिहेतुते पृथ्वी बिकारहि पाय । नाहिं नष्टताको होत प्रापत कहतबुध सुखदाय॥ जयकरी ॥घृतगुड़ तैलदुग्ध अरुनौन। आमिष धान्य मूलफल तौन ॥ येसब जानहु भूमि बिकार । नशतन इनते देह सुढार ॥ दुर्घट मारगमें जिमि पर्म । जो संन्यासी जात सुकर्म ॥ मधुर सुभोजनको ललचाय । मिलत न तब सुनि बाहन काय ॥ रहै खायकै ग्राम्यअहार ॥ तैसेही सुनु बुद्धि अगार । जगतहि जो दुर्घट पथ भूरि । तामेंरह्यो भीति बहुपूरि॥ सुनिबे को निशिदिन बेदांत । प्रापत ह्वैज्ञान नितांत ॥ मिलै अन्नहै सोई खाय । प्रज्ञावान निबाहै काय ॥ दोहा ॥ सत्यक्षमा अक्रूरता अरु धीरजताधारि । मनकी चंचलताहि अरु कुत्सित बचन बिसारि ॥ रोंकै सब इन्द्रियनको क्रमसों नर मतिमान।

तपस्वीन के संगरहि करितप परममहान॥ युक्त होयकै गुण-
नसों प्राणीजगकेमाहिं। घूमतहै अज्ञानते चक्रसमानसदाहिं॥
॥ आभीर ॥ याते जो अज्ञान। दायक दुःख महान ॥ तजिबे ताहि
सदाहिं। बैठे प्रज्ञन पाहिं॥ मनोहर ॥ महाभूत अरु इन्द्रिय सर्व।
अरु तीनहुँ गुण सुबुध अखर्ब ॥ इनसों युत लोकन को हेत।
अहंकारहै बुद्धि निकेत ॥ दोहा ॥ प्रवृत करावत ऋतुन की जैसे
काल सुजान। प्रवृत करावत कर्मकी अहंकार तिमि मान ॥ अ-
हंकार के भेद त्रय तुम्हें कहत हौं तौन। मन थिर करिकै सुनहु
तुम महत मनीषा भौन॥ मनोहर ॥ तामस अहंकारहै एक। अरु
यक राजसहै सबिबेक॥ सात्विक अहंकार यक पर्म। अहंकार ये
तीन सुकर्म ॥ तामस अहंकार है जौन। तमसों श्याम बरण है
तौन॥ ताको कारणहै अज्ञान। मोह करावत तौनमहान ॥ राजस
अहंकार को लाल। बरण तौन दुखकार बिशाल ॥ श्वेत बरण
सात्विक को स्वक्ष। प्रीतिकार सोहै बर दक्ष ॥ कला ॥ अब बिशेष
तीनोंके गुण सुनु। सुनिकै तू तिनको हियमें गुनु ॥ असंदेह अरु
प्रीतिस्मृति धृति। अरुप्रसन्नता परम महामति ॥ ये बिशेष सा-
त्विकके गुण बर। अब राजसके गुण सुनु मतिधर॥ काम क्रोध
अरु लोभ मोह भय। अरु प्रमाद यह राजसु गुणचय ॥ दोहा॥
मान कुटिलता दर्पता अरति बिषाद सुशोक। ये गुण तामस के
कहे तुमको हम बुधिओक॥ ये जे गुण तीनहुँनके तिन्हैं धरतहैं
जौन। तिनको दोषहि होतहै ये सब सुनु बुधिभौन ॥ इनदोषन
में कौन लघु औ है कौन महान। करिकै यहअनुमान बर हियके
माहिं सुजान॥ क्रमसेती इनसबनको छोंड़नलागैप्रज्ञ। इन्द्रिय-
गणको कर्षिकै मनसह बर धर्मज्ञ ॥ इन दोषनमें कौनसो छूटो
दोषकितेक। यहबिचार करतैरहै नित्यहि जन सबिबेक॥ युधिष्ठिर
उवाच॥ जयकरी ॥ मनसों छोंड़ि दियेहैं जौन। शिथिल किये अरु
मतिसों तौन ॥ ऐसे दोष कौन तिन माहिं। छोड़े छूटि सकत जे

नाहिं ॥ अरु ऐसेहैं कौनसुदक्ष । छूटिछूटि पुनि होत प्रतक्ष ॥ यहसंशय मोमनमेंपूरि । रह्यो ताहि तुम करिये दूरि॥ भीष्मउवाच॥ दोहा ॥ जौन जात निर्मूल ह्वै तौन नहीं पुनि होत । जासु लेश रहिजात सो पुनिपुनि करत उदोत॥ महत होत अज्ञान है रज तमते भूपाल । क्रोध लोभ भय होतहै ताते दुखद बिशाल ॥ इनकोदाबे होतहै पावन मानवधर्म । येई अघके हेतुहैं बुद्धिनिकेत सुधर्म ॥ मायाते भगवानको नष्ट भयोहै ज्ञान । जिनकोतेई क्रोधको प्रापतहोत सुजान ॥ होतक्रोधते कामको प्रापतमानव मूढ़ । अहंकार अरुदर्पको लोभहि तिमिहि अगूढ़ ॥ अहंकारते होतहै कर्म कर्मतेनेह । होतनेह सम्बन्धते शोक महान अछेह ॥ क्रियापापअरु पुण्यकी ताकोजोआरम्भ । जनन मरण कोलहत है ताते मनुज सदम्भ ॥ शोणित मूत्र पुरीषको तामेंहै संघात । गर्भबास इहिभांतिको तामाहिंसुनु तात ॥ प्राप्तहोतहै जौनजन पाप पुण्यमें शक्त । पापपुण्यमें हूजिये याते नहिं अनुरक्त ॥ सोरठा ॥ जगतचक्र यह जौन ताहि चलावतिनारिहै । यहजानो क्षितिरौन निश्चय संशय नात्रहै ॥ दोहा ॥ मंत्रमयी जो शक्ति है शत्रु सँहारण हेतु । ताको कृत्या नामहै तामस बाम सचेतु॥ सोरठा ॥ अबिचक्षण जन जौन तिनके मनको हरति तिय । जे जन बरबुधि भौनते इनको सँग करतनहिं ॥ दोहा ॥ मूरति जो इन्द्रियनकी छपी रजोगुण माह । तातेहोत अपत्यहै नारिन में नरनाह ॥ अपनी छोड़ि अपत्यदै परकी ऐसीजानि । ऐसेदेहज कृमिनको तजत बीनि अनुमानि ॥ लावै मनन अपत्यमें कबहूं हेभूपाल । रतिमें पगे अपत्यकी लहतनज्ञान बिशाल ॥ जौन त्यागिबे योग्यते कहेताहिं हमआस । योग्य जानिबे जौन सो सुनहु भूप बुधिधाम ॥ तममें रज अरु सत्वगुण होय जात है लीन । प्राप्त होततम ज्ञान में भूपति परम प्रबीन ॥ प्राप्तभयो है ज्ञान में भूप तमोगुण जौन । अहंकार अरु बुद्धिसों युक्त

होतहै तौन ॥ प्राप्ति देहकी जौनहै सोयतासु है हेत ॥ काल युक्त जो कर्म है तासों बुद्धि निकेत ॥ जीवहि यहि संसार में रहत फिरावत सोय । जानत यहि सिद्धान्तको जेहैं बरबुधि लोय ॥ चरणादोहा ॥ रमतजीव मनसों देहीलों स्वप्नमाहिं जिमि दक्ष । जीव तिमिहिं गर्भहुके माहीं लगतविषयमें दक्ष ॥ दोहा ॥ बीजदेहको कर्मजो तो करिकै भूपाल । जे जे इन्द्रिय होतिहैं प्रेरित प्रज्ञ बिशाल ॥ युक्तहोय अनुरागसों ते ते इन्द्रिय भूप । अहंकारते होतिहैं सबउत्पन्न अनूप ॥ जयकरी ॥ सुनिबेकीइच्छा सों कान । देही लहत सुनो मतिमान ॥ इच्छाकिये रूपकी भूप । देहीपावत चक्षु अनूप ॥ कियेगन्धकी इच्छा घ्रान । देहवान पावत मतिमान ॥ अरु स्पर्श इच्छासोंपर्म । प्राप्त होतिहै त्वचा सुकर्म ॥ दोहा ॥ कर्मबिना नहिंहोतिहै इच्छा कौनिहुंभूप । याते कारण कर्मही जानो प्रज्ञ अनूप ॥ प्रान अपान उदान अरु मारुत ब्यान समान । इन पांचहु सों चलति है देह भूप मतिमान ॥ आदि अन्त अरु मध्यमें दुःखहि जिनके माह । ऐसे कर्मज गात्रयुत जीव होत नरनाह ॥ सोरठा ॥ कीन्हे अंगीकार देहेन्द्रिय को गर्भमें । भूपति बुद्धि अगार जीवहि जान्यो जात दुख ॥ दोहा ॥ दुःखबढ़त अभिमानते तिमिहिं मरण तेभूप । यातेदुखके हेतुको कीजै रोध अनूप ॥ दुख कारणकेरोध को जानत जौन सुजान । सोई छूटत दुःखसों कहत सुबिज्ञमहान ॥ प्रलय प्रभव इंद्रियनको रजगुणहीमें होत । याते रज रोके नहीं इन्द्रिय करतिउद्योत ॥ सोरठा ॥ तृष्णा सों जन हीन तासु नइन्द्रिय चलतिहैं । इन्द्रिय जानु प्रबीन करण देह की प्राप्तिको ॥ दोहा ॥ हीनकरण जब होत तब देहीलहत न देह । यहि सिद्धांतहि योगबिद जानतहैं बुधिगेह ॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेवार्ष्णेयोपाख्यानेएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ इन्द्रियकोजो जीतिबो ताकेमाहिं उपाय ।

शास्त्र चक्षुसोंदेखिहौ कहत सुनहु नरराय ॥ तिहिउपायकोहोतहै प्रापत जौन सुजान । उत्तमगतिको पायकैहोततौन सुखमान ॥ मौनी ॥ श्रेष्ठसबैभूतनमें मानवभूप । मनुजनहूंमें द्विजहै श्रेष्ठअनूप ॥ विप्र श्रेष्ठहै द्विजनहुंमें माहींपर्म । वेद शास्त्रको जानतजौन सुकर्म ॥ सोरठा ॥ नेत्रहीन जनजौन मार्गमाहिं जिमि लहतदुख । ज्ञानहीनहै तौन तिमिहिं जगतमें लहतदुख ॥ करिकै शास्त्र बिचार धर्महिं धारण करतहै । याते बुद्धिअगार बिप्र द्विजनमें श्रेष्ठहै ॥ दोहा ॥ सत्यक्षमा अरु शौचधृति धर्मनमाहीं सर्ब । जन पावतहैं धर्मबिद ब्राह्मण दक्षअखर्ब ॥ सोरठा ॥ योग धर्म जो भूप सोप्रापकहै ब्रह्मको । यातेप्रज्ञअनूप और धर्मतेश्रेष्ठहै ॥ दोहा ॥ उत्तमबिधिसों करतजो योगधर्मकोपर्म । तौन ब्रह्मकोहोत है प्रापत बिप्र सुकर्म ॥ मध्यम विधिसों करतजो योगधर्म को स्वक्ष । सत्यलोकको लहतहै बिप्र तौन बरदक्ष ॥ जौन अधम बिधिसों करत होत बिप्रही फेरि । कह्यो तोहिं सिद्धान्त यह योगशास्त्रकोहेरि ॥ आभीर ॥ दुखसों कीन्हों जात । योग धर्म अवदात ॥ तिहिकेमाहिं उपाय । मैं हौं कहत नृपराय ॥ दोहा ॥ बढ़े जौन कामादिहैं रोकै तिन्हें हमेश । नारिनकी न कथा सुनै औ नहिं लखैनरेश ॥ कथा सुनै नारीन की औ देखेते रूप । प्रातरजोगुण होतहै दुर्बलहूको भूप ॥ मनमाहीं उतपन्नजो भूपरजोगुण होय । प्रायश्चित द्वादश दिवस करै ज्ञान सों जोय ॥ जयकरी ॥ भोजनकरै तीनदिन प्रात । सायंकाल तीन दिन रात ॥ करैनहीं भोजन दिनतीन । देयकोऊ तौकरै प्रबीन ॥ करै तीनदिनलौं उपबास । धीर्य्य धारिकै बर बुधिरास ॥ दोहा ॥ यहहै प्रायश्चित्तबर प्राजापत्य सुनाम । यहिसों रजउतपन्नको दोष जात मिटिमाम ॥ पीड़ित शुक्राधिक्य सों होय अतिहि जो भूप । करैनीरमें स्नानतौ पैठिसुप्रज्ञ अनूप ॥ शुक्रपात जो स्वप्न मैंहोयतौ सुत्रयबार । बर अघमर्षणमंत्रको जलमें जपै सुढार ॥

जौन रजोमय पापहै दाहै यहिबिधि ताहि । करिविचार कौ दक्ष बर ज्ञानचक्षुसों चाहिं ॥ मलबन्धनहै देहको जैसे तिमिहीं देह । आत्माको बन्धन सुदृढ़ जानो बरबुधिगेह ॥ व्यापत कफपित बातसों हैशरीर यह भूप । यहिमें रसनाड़ीन सों पहुंचत प्रज्ञ अनूप ॥ गुणपांचौ इन्द्रियन के प्राप्त करावति जौन । ऐसी दशहैं नाड़िका देहमाहिं मतिभौन ॥ तिन दशहूंनाड़ीनसों होति सहस्रन और । चलदल दलकी नोकसम सूक्षम नृप शिरमौर ॥ नदिका जलसों भरतिहै सागरको जिहिभांति । पोषित तैसेहि देहको रससों नाड़ीपांति ॥ हृदयमध्य यक नाड़िका मनोबहाहै नाम । प्राणबिकार जबहोतहै तबै भूप बुधिधाम ॥ मनोबहा सोशुक्रको सर्बदेहते कर्षि । करिउपस्थके देतिहै सन्मुख समयो पर्षि ॥ है शरीरमें नाड़िका बरमहिपाल जितेक । मनोबहा अरु नयनमें लागी सर्बतितेक ॥ स्वप्नहुमें मनबीच नृप रजको भयेप्रकाश । मनोबहासी शुक्रको छोड़िदेतिहै आश ॥ शुक्रहि कारण जातिके शंकरको यह जौन । जानतहै संसारमें करत राग नहिं तौन ॥ दोषसर्ब जरि जातहैं तिन मनुजनको सर्ब । फेरि जन्म के दुःख कोपावतनहीं अखर्ब ॥ औरहु देह अप्राप्तिको कारण परम अनूप । तुम्हैं कहतहौं सो सुनो महत ज्ञानमय भूप ॥ निर्बिकल्प जोज्ञानहै ताहि मनहिंसों स्वक्ष । प्राप्त होय तनकोतजे फेरिलहतनहिं दक्ष ॥ जीवनमुक्तहि जोकरै ऐसोज्ञान अमन्द । तासुमार्ग मैं कहतहौं प्रज्ञाराशि नरेन्द्र ॥ मनहीं बिषयाकारहै यह जोज्ञान नरेश । मनहीं को सोहोतहै प्रापत भणत बुधेश ॥ निब्रतकर्म कीन्हें मनस होत न बिषयाकार । प्राप्त होतहै मोक्ष को जो बर सुख आगार ॥ मारग दुर्ग उलांघि जन पावत सुख ज्यहिभांति । तिमिहिं मोक्ष जन लहत हैं लांघि दोषकी पांति ॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ दुखद अन्तमें बिषय अति तिनमाहीं रत

जौन । कहत सुबुध जन लहतहै महत खेदकोतौन ॥ जे अश-क्तहैं त्रिषयमें तौन परमगति लेत । जे जन ज्ञाता मर्मके जानत बुद्धि निकेत ॥ चरणा दोहा ॥ जन्म मृत्यु अरु आधि व्याधि सों युक्त जगत निति देखि । काजमोक्षकेयत्न करतहैं बुद्धिमान अव-रेखि ॥ दोहा ॥ मनसा बाचा कर्मसों रहैनित्यही शुद्ध । करैगर्बको नहिंधरै शांतिहि होय अक्रुद्ध ॥ दायाहू सों भूतसँग बन्धहोत हैपर्म । धरेदयाहू नहिंकरै याते संग सुकर्म ॥ करै कर्म जोतौ शुभहि करै अशुभको नाहिं । दोऊ भोगे जातहैं यह गुणिके मनमाहिं ॥ उदासीन सबमेंरहै शत्रु मित्रता त्यागि । परमगहै यह धर्म जन रहतशर्ममें पागि ॥ चरणाकुलक ॥ करैकामना कौनि-हुंनाहीं । गुणै न परअनिष्ट हियमाहीं ॥ भार्य्यादिकके मरे न रोवै । कालब्यर्थ कबहू नहिं खोवै ॥ मनके स्वच्छज्ञानमें लावै । बिषयमाहिं कबहूं न लगावै ॥ सूक्षम परम धर्मजो नीको । अरु सुबचन सुखदायक हीको ॥ इन दोउनकी इच्छाहीमें । करै सु गुणिजो बिमलाधीमें ॥ कहै बैन तौ सत्य सदाहीं । दुखदहोहिं जे काहुहि नाहीं ॥ जामें चुगुली काहूकेरी । होयनहीं दुखदाय घनेरी ॥ अरु कठोरतासों बिलगानी । ऐसीजोहै सुन्दरिबानी ॥ तजि प्रमादता बोलैं थोरी । कबहुं न कहै भरीबरजोरी ॥ बहुत बारता कीन्हे जगमें । मन रँगिजात बिषय रस रँगमें ॥ दोहा ॥ इन्द्रिय रजगुण युक्तसों करत जौन जन कर्म । तौन नरक को लहत है अत्रपाय दुखपर्म ॥ ताते आत्माको सदा राखै धीरज माहिं । लगनदेय कबहूं नहीं दुखद बिषयके माहिं ॥ कर्मन्यास हम कहत हैं तुम्हें सुनहुसो भूप । जानत ताको सुखदहै जे बर प्रज्ञ अनूप ॥ चरणाकुलक ॥ जैसे तस्कर चोरी करिकै । लोभमाहिं पगि शिरपै धरिकै ॥ भागन लगत कुमग को लहिकै । बांधत्त तिन्हैं ग्रामजन गहिकै ॥ तिमिहिं अबुद्धन को दुख भारी । कुकरम देत बांधि बहुबारी ॥ बस्तुहि छोड़ि

चोर जो भागै। तौ बन्धन दुखसों नाहिं पागै॥ इमिहि कुकर्म छोंड़ि जो देई। तौ अशर्मको मनुज न लेई॥ गृह आदिक संग्रह कोतजिकै। एकान्तस्थल कोलखि ब्रजिकै॥ रहै तहां ह्वै अल्प अहारी। नाशिज्ञानसों क्लेशहि भारी॥ रहै तपस्यामेंनित तत्पर। तौन लहत जन पावन पदपर॥ धीरजमान महतहीह्वै कै। दुःखद कामादिक कोग्वैकै॥ मन चञ्चल कोरोंकैमतिसों। लगन न देय बिषयमें रतिसों॥ तिहिको महत जानियोगीश्वर। करत प्रशंसा अतिताकीसुर॥ ह्वैके प्रगट तासु तट आवत। भरे शरम परमासों भावत॥ दोहा॥ मिलो जासु मन सुरनमें ऐसोजो जनताहि। ब्रह्मज्ञान बरहोतहै प्राप्त चहत सुरताहि॥ छूटिजात जबबिषय तबपावत ब्रह्मज्ञान। याते बिषयनकोतजै दुःखद जानि महान॥ जबलौं बूह्मज्ञान नहिं प्रापतहोयअनूप। तबलौं गाफिलनाहिं रहै साधन सों सुनुभूप॥ चरणाकुलक॥ शाकादिक को भक्षण करिकै। बितवै काल सुमतिसों धरिकै॥ करै तपस्या अपनी नाहीं। जाहिर राखै गुप्त सदाहीं॥ करैसात्विकहि नेमअहारै। कालदेशलखि करिसु बिचारै॥ प्रवृत कर्म सों योगैमाहीं। बिघ्न होनदे कबहूं नाहीं॥ अल्प आगि जैसे सुलगावै। तिमिहिं ज्ञानमें चित्तबढ़ावै॥ ऐसो जोजन हैबरधीको। ज्ञानप्रकाश लहतसो नीको॥ जौन प्रकाश ज्ञानकोपावत। प्राप्त होय अव्ययकोभावत॥ दोहा॥ पावतज्ञानप्रकाश जोतिहि समान नैहिंऔर। गावत जाके यशहि सुर सुनहु सुजान सगौर॥

इतिश्रीमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेएकचत्वारिंशोऽध्यायः॥ ४१॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥ औरहु साधन कहत थक सुनहु तौन तुमभूप। थिर करिकै चंचल मनहिं कुन्तीसुवन अनूप। निष्फल मखइच्छाकरै बूह्मचर्य्यकी जौन। स्वप्नदोषको समुझिकै निद्रा तजिदे तौन॥ चरणाकुलक॥ रजओ तमसों स्वप्नैमाहीं॥ आपु आपुको जानतनाहीं॥ देहान्तरको लहिकै जैसे। डोलतपग्योलो

भमें तैसे ॥ ज्ञानाभ्यास कियेतेजागै । निद्राबीच कबहुं नहिंपागै ॥ स्वप्न माहिंकैसे बिनुदेहै । चेष्टा करत कहौकरिनेहै ॥ जोतुमक-होतात यह हमको । तौतुम सुनो कहतहैं तुमको ॥ यहिवृत्तांत हि ईश्वर जानै । ऐसे ऋषिवर वृन्द बखानै ॥ मनके व्यापारहि तुमजानो । स्वप्नन और भूप अनुमानो ॥ कारज माहिं युक्तमन जाको । थिर नरहत कबहूं हैताको ॥ जगतहोत संकल्पहिजैसे । स्वप्नहु माहिं मनोगत तैसे ॥ जगमें कामवानहै जोजन । जन्म असंख्य लहतहै सोजन । मनमें जोजन जगको जानत । उत्तम पुरुष तौन दुख मानत ॥ किये जौनहै कर्म पुराने । कहत सु-बुधहैं परममहाने ॥ तिनसों सत्वादिकगुणमाहीं । जोजोप्राप्तहोत हैपाहीं ॥ तौन दिखावत स्वप्नेमें है । भूतआतमाको नगिचैहै ॥ दोहा ॥ सत्व सुगुण सों देवता रजसों नारिअनूप । तमसों राक्षस स्वप्नमें देखि परत हेभूप ॥ बहुप्रकारकी परत लखि अपनीहू जो देखि । सत्वादिक गुणयोगते कहतमनीषा पेखि ॥ करतजौन सं-कल्पहै जाग्रतमें मनमाहिं । स्वप्नमाहिं सो परत लखि मन को अपने पाहिं ॥ निति अरोक मन रहत है सबभूतन के बीच । ताको आत्मप्रभावते जानैभूप निमीच ॥ स्वप्नअवस्था हमकही तुम्हैं भूप अनुमानि । अब सुषुप्ति हमकहत शुभ थिरतामेंमन आनि ॥ प्रापत होत सुषुप्ति में साक्षीमाही सर्ब । बुद्धि अहंका-रादि नृप जानत प्रज्ञअखर्ब ॥ चरणादोहा ॥ स्वप्नसुषुप्ति अवस्था तुमको कही भूप अनुमानि । संप्रज्ञात अवस्था तुमकोअब हम कहत बखानि ॥ मन बारे संकल्पते ईश्वरको गुण जौन । ताकी जो इच्छाकरै स्वच्छ परमजन तौन ॥ चरणाकुलक ॥ विषयगणान को नित्यनवीना । निरखेते मन होत मलीना ॥ विषयगणानको छोड़े नीको । भासमान सो सो हलश्रीको ॥ चरणादोहा ॥ कहत दोयविधि को देहीको ब्रह्मभाव अभिराम । जगको कारण एक महतहै ब्रह्म सुनो बुधिधाम ॥ दोहा ॥ दूजो निर्गुण ब्रह्महै रहित

बिकारअनूप । सगुणतौनहीहोतहै निर्गुण जानोभूप ॥ चरणादोहा ॥ तपस अग्निहोत्रादि बताये देवन कोले केश । असुरन को तम महत बतायो दुःखद परमअशेश ॥ दोहा ॥ निर्विकारजो ब्रह्महै राख्योताहि छपाय । सुर असुरनके सगुणहै सत्वरज तम नरनाय ॥ असुरनके रज तम सुगुण सत्व सुरनको जानि । ब्रह्म गुणनके हेपरे परत नहीं पहिचानि ॥ निग्रहते इन्द्रियनके ब्रह्म परतहै जानि । निग्रह बिनकीन्हें नहींपरत ब्रह्म अनुमानि ॥
महाभारतशांतिपर्वणिमोक्षधर्मवार्ष्णेयाध्यात्मेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ औरहुसाधनकहतहम सुनहु तौनभूपाल । जानिपरतहै ब्रह्मबर साधनकिये बिशाल ॥ हैं सुअवस्था जीवकी स्वप्नसुषुप्ति सुदोय । ब्रह्महुकी निर्गुण सगुण कहतप्रज्ञ बर लोय ॥ इनचारिहुको जो नही जानत जाग्रत माहिं । निर्बिकार परब्रह्मको जानि सकतसो नाहिं ॥ तत्वब्यक्त अब्यक्त कोकह्यो ऋषिनहै भूप । ब्यक्तमृत्यु मुखगत अमृत है अब्यक्त अनूप ॥ अरिल ॥ वेद कह्योहै प्रवृत धर्म्मबर । तौनहिंमें है शिथिल चराचर ॥ निवृत धर्मसो है नृप ब्यक्त न । जानत प्रवृत माहिं जेशक्तन ॥ प्रापत प्रवृतधर्म्ममें जे जन । जनन मरणको पावत तेजन ॥ निवृतधर्म में जोजन भावत । सोजन महत परमपद पावत ॥ दोहा ॥ माया अरु क्षेत्रज्ञते भिन्न ब्रह्महै जौन । तासु बिचारकरै सदा बुध थिर करि मन गौन ॥ कारणहै उत्पत्ति को माया त्रिगुणसमेत । निर्गुणहै क्षेत्रज्ञसोजानतबुद्धिनिकेत ॥ है सुमहत तत्वादि नृप प्रकृति बिकार जितेक । दृष्टाहै क्षेत्रज्ञ सो तिनको बर सबिबेक ॥ माया अरु क्षेत्रज्ञको भेदकह्यो हम पर्म । अब ईश्वर अरु जीवके सुनो भेदको मर्म ॥ जीव औ सुईश्वर परम निराकारहै भूप । होयसकत तातेनहीं तिनको ग्रहण अनूप ॥ चरणादोहा ॥ बिनमाया सों ब्रह्मकहावत सह माया सों जीव । इनदोउन में इतोभेद है पाण्डुसुवन मतिसीव ॥ सोरठा ॥

सत्वादिकगुण तीन तिनसों छादित जीवहै । अरुजो ब्रह्मप्रबीन आच्छादित गुणसों नसो ॥ चरणाकुलक ॥ इच्छा ब्रह्मज्ञानकी जाके ऐसे जेजन बरमेधाके ॥ बाहर भीतर उज्ज्वल ह्वैके । वृन्दबिलन्द कलुषके ग्वैके ॥ करैंसुतप ह्वैके निहकामैं । धारेरहैं दयाहिय मामैं ॥ महतप्रकाश लोकमें जोहैं । भूत तपस्विनहीको सोहैं ॥ भानु और शिलभानहि देखो । तेजतपस्याको अवरेखो ॥ रज अरु तमको नाशबजोहै । लक्षण तीन तपस्याको है ॥ ब्रह्मचर्य्य अहिंसा जो है । तपशारीरिकजानो सोहै ॥ रोकब जोहैमन बाणीको । मानस तीन तपसहैनीको ॥ धर्मवान बरबिप्रनवारो । अन्न प्रसन्न सुलेय सुठारो ॥ ऐसोअन्न लियेते भारी । राजस पाप नशत दुखकारी ॥ उदरहिकाजे लेय सुअन्ने । अधिकलेय नहिंरहे प्रसन्ने ॥ दोहा ॥ ऐसो साधन कीजिये ताते भूपनिभीच । ज्ञानहोय मनमेंमहत अन्तअवस्था बीच ॥ सोरठा ॥ देहवानसों देहको तजिअभिमान नरेश । रहैसदा रतज्ञानमें बर अतिहरणकलेश ॥ दोहा ॥ देहरहै जबलौंरहे सावधान ह्वैभूप । पावतहै देहान्तमें पावनमोक्षअनूप ॥ भूतनके जननादिकोजानु कर्महै हेत । मोक्ष सुधर्मनको महत यह सिद्धान्त सचेत ॥ मन इन्द्रियको खैंचिकै विषयमाहिं ते सर्ब । धारेयोगी धीर्य्यसों देहै रहत अखर्ब ॥ जानिशास्त्र सिद्धान्तको ज्ञानमार्गकेबीच । किते चलत जानत न पै ब्रह्महि परम निभीच ॥ ज्ञानमार्गके बीच बर किते लेतहैं जानि । बिमलभएते हृदयअति तुम्हैं कहतअनुमानि ॥ करिकै तासु उपासना जानतकेते भूप । जानतहैं अभ्यास करिकेते सुबुध अनूप ॥ एतेसर्ब महातमा पावतहैं गति पर्म । किलबिषसों ह्वैकै रहित कीन्हेंसो तपकर्म ॥ सूक्ष्मताको ब्रह्मकी शास्त्रचक्षुसों पर्म । देखैत्याज्य सथूलता हियमें समुझि सुकर्म ॥ ईश्वर में मन लायबो तासु धारणा नाम । तामें जो आशक्त है ऐसो योगी नाम ॥ परब्रह्मको हृदय में जानत मति

बिस्तारि। मृत्युलोक़ते जातहैं छूटि गुणनको टारि॥ रागादि-कसों छूटिजन पावन गतिको लेत। कह्यो बेदबिद बुधन यह भूपति बुद्धि निकेत॥ ज्ञानभयोहै शास्त्रते जिनको परम अल-न्द। भयो नसाक्षात्कारहै ऐसे जौननरेन्द। तौनहुंजन बैराग्यसों पावन गतिकोलेत। मृत्युलोक सों छूटिकै धर्म सुधर्म निकेत॥ जौन ज्ञानसों तृप्तअरु तजे कामना सर्ब। तौनहु अव्यय बिष्णु को प्रापत होतअखर्ब॥ आतमस्थ परब्रह्मको जोजानतहैं तात। तौन छूटि संसारते पावत गति अवदात॥ तृष्णासोंजगबद्धहै घूमत इमि जिमि चक्र। जोयामें तत्पररहत तौनलहत दुखबक्र॥ जिमि मृणालको तंतुसों सर्बनालमें पूरि। रहत तिमिहि तृष्णा महति रहति देहमेंभूरि॥ जो माया अरु जगतको जानत असत नरेश। सतजानै परमेश्वरहि सो सुख लहत अशेश॥ यह बर साधन मोक्षको कह्यो प्रगट अभिराम। नारायण करिकै कृपा भूतन पै अतिमाम॥

श्रीमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेबार्ष्णेयाध्यात्मेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३

बैशम्पायनउवाच ॥दोहा॥ सोसाधनहै मोक्षको तृष्णाको जोत्याग। कह्यो पूर्ब अध्यायमें यह भीषम बड़भाग॥ सोरठा॥ यहसुनिकै भूपाल धर्मधुरन्धर धर्मसुत। तृष्णात्यागि बिशाल दुर्लभहै भूप-तिनको॥ यह बिचारि हियमाहिं मेधाको बिस्तारिकै। गंगासुतके पाहिंफेरि प्रश्नयह करतभो॥युधिष्ठिरउबाच॥दोहा॥ जनककौनआच-रणकरितजिभोगनको सर्ब। भयोमोक्षको प्राप्तबर प्रज्ञावान अ-खर्ब॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ जनकसुभूप मोक्षपद पायो। जौन आचरणसों मनभायो॥ सुनहु तौन हम तुम्हैं कहतहैं। थिरकै चंचल मनहिं महतहैं॥ मोक्षधर्मके परम बिचारै। करन लग्यो नृप जनक सुढारै॥ पृथक् पृथक्बरधर्म सुतिनके। अतितेजस्वी कल्मष बिनके॥ ऐसेसत आचारय ताके। गृहमें हुते महामेधा-

के ॥ तिनके प्रवृतधर्मको सुनिकै। होत प्रसन्ननहीं नृपगुनिकै ॥ निभृत धर्मकोगुणि हियमाहीं । तामेंलागो रहतसदाहीं ॥ कपिला नामा बिप्राताको । पुत्रमहा मुनि भूरि प्रभाको ॥ तासु पंचशिखनाम सुमेधा । अन्तरङ्ग जैसोबरबेधा ॥ फिरतो तीन भूमिके माहीं । जातभयो मिथिलाकेपाहीं ॥ आसुरि नामाद्विज कोनीको । पहिलोशिष्य हुतोबरश्रीको ॥ सहस बर्ष द्विज आसुरिनामा । मनमें कियोध्यान अभिरामा ॥दोहा॥ ब्रह्मज्ञानबिचारसों हुतो युक्त मतिमान । औतपसों हो युक्तवर वेद उक्तशुभठान ॥ क्षेत्र और क्षेत्रज्ञको जोहै भेद अनूप । ताहि भयो जानत सुद्विज आसुरि सुनु बरभूप ॥ सगुण भयेते रूपबहु निर्गुणभये न एक । आसुरि ऐसे ब्रह्मको जानतभो सबिबेक ॥ तासु शिष्य हो पञ्चशिख तेजस्वी धीधाम । कोईही यक ब्राह्मणी कपिला ताको नाम ॥ प्राप्त तासु पुत्रत्वको होतभयो सो भूप । कांपिलेय ताते भयो ताको नाम अनूप ॥ ज्ञानवती जो बुद्धिहै प्राप्त होत भो ताहि । कह्यो मारकण्डेय है मोको यह अवगाहि ॥ बहुधर्म्मी आचार्य्य जे तिनमें लखि समभाव । मिथिलाधिप को पञ्चशिख गुणिकै बरबुधिराव ॥ सबआचार्य्यन को महत ज्ञानबादके माहिं । करतपरासतभो सुमुनि जनकभूपकेपाहिं ॥ तासु दरश ते जनक सब आचार्य्यन को त्यागि ॥ पञ्चशिखहि को अनुगगुणि होतभयो अनुरागि ॥ जनक नृपहिंसों पञ्च शिख मोक्ष कहत भो आम । स्वच्छ समुझि ताकोहृदय दक्ष परम अभिराम ॥ मोह बिनाशी दुखदहै अरु चल जनकनरेश । कीजे नहिं बिश्वासको यामें जानि कलेश ॥ कर्मनको फल चहत हैं मोहहि ते जन सर्ब । होय फलाशा माहिं रत धर्म्महु करत अखर्ब ॥ नाश परत परतक्ष है देखि जगतके बीच । है यह मिथ्या जानतउ धारे होय निभीच ॥ आत्माको जो देहते भिन्नमानिबोजौन । मोहभयेते सोनहींनीकोमतहै तौन ॥ सोरठा ॥

लोकायतहै जौन मानतहैं तेलोकही । तिनको है बुधिभौन तुम सों जोयह मतकह्यो ॥ दोहा ॥ लोकमाहिं जोहै नहीं ताको कहिबो जौन । अजर अमर जिमि भूप को कह्यो बचन श्रुति तौन ॥ भूपति श्रुतिके बैन ते अजर अमर नहिं होत । यहि प्रत्यक्ष बिरोधते मिथ्याश्रुति मतिपोत ॥ अनुमानहुमें है नृपति दुःखन सुनियेतौन । तहँ अनुमान नहोतहै ब्याप्ति न जहँ बुधिभौन ॥ पावकके अनुमानकी ब्याप्ति धूमहै जानु । लखे धूम बिन होत नहिं पावकको अनुमानु ॥ सोरठा ॥ हैधौं नहीं अभाव गतिको ताराचन्द्रमें । लखिनपरत नरराव यातेगुणयो अभावहै ॥ दोहा ॥ देशान्तरकी प्राप्तिसों कीन्हें तेअनुमान । शशिउड़ को गतिभाव सो जानि परत मतिमान ॥ देखे बिना पदार्थके होतनहीं अनुमान । अनुमानहु सो परत नहिं जानि अदृश्य सुजान ॥ और एकवृत्तान्तमैं कहतभूपतोपाहिं । भिन्नदेहसों जीवनहिं नास्तिक मतके माहिं ॥ दूषत हौं मैं ताहि यह नास्तिकको मतजौन । आस्तिक के मतसों महत भूप मनीषा भौन ॥ देह भिन्न सों आतमा जानि परत इमि जौन । जौन देह को तजत है चेष्टा करति न तौन ॥ औरहु एक प्रमाण है यामें बिज्ञनृपाल । सो गुणि तुमको कहतहौं तिनके बुद्धि बिशाल ॥ आत्मामाने देहको जौन देहके कर्म । ते नशिजैहैं देहके संगहि भूप सशर्म ॥ भिन्न देहते आतमा याते जान्योजात । आत्मा पावतकर्मसों दुतियदेह बिख्यात ॥ नास्तिकहीके भेदमें सौगतहै मततास । खण्डन काजे कहत हौं सो सुनिये बुधिरास ॥ तृष्णा अरु अज्ञान जो अरु जोहै नृपकर्म । फेरि देहकी प्राप्तिको सो कारण है पर्म ॥ सोरठा ॥ अरु लोभादिक सर्ब तौनहु पुनि तन प्राप्ति के । कारण गुणोअखर्ब सोमत ऐसे कहतहैं ॥ दोहा ॥ कहत क्षेत्र अज्ञानको बीज किये जो कर्म । तृष्णाको जलकहतहैं भूपतिप्रज्ञ सुधर्म ॥ अज्ञानादिक सर्बजे तिनते पुनि पुनिहोत । बहुप्रकार

की देहजो ताको भूपउदोत ॥ सोरठा ॥ अज्ञानादिक सर्ब नष्टभये तेज्ञानसो । पावतमोक्ष अखर्ब फेरिदेह नहिं होतहै ॥ दोहा ॥ यह है मत सौगतन को दूषतहौं मैंयाहि । बिमला मति बिस्तारि कै तासुबीच अवगाहि ॥ सोरठा ॥ सौगत मतके माहिं ज्ञान रहतहै एकक्षण । फेरि रहतहै नाहि ताते यह दूषण लगत ॥ नष्टहोत जो ज्ञान नशिहै अज्ञानादि किमि । अज्ञानादि महान नशेबिना नहिं मोक्षहै ॥ सौगत के मततैन याते क्वैहै मोक्षन्नप । यह जानो तुम ऐन गुणिकै सूक्षम बुद्धिसों ॥ दोहा ॥ कर्महु क्षणभर रहत है सौगत मतके माहिं । क्षणभरहीजो कर्मतो दानादिक फलनाहिं ॥ बीज देहको कर्महै कह्यो पूर्बयह जौन । सौगत मतमें जानिये याते ब्यर्थहि तौन ॥ नहीं दुःखसुख होतबिन पूरब कर्मसमर्थ । याते क्षणभर कर्मको कहत तौनहूं ब्यर्थ ॥ तिनते दुखसुख लहत अब किये पूर्बजे कर्म । करत जौन अबतौनते आगे लहिहैं पर्म जौन मरत सो कर्मसों फेरि जन्म है लेत । याते धारा कर्मकी जानोबुद्धि निकेत ॥ ज्ञानहु धारामहतिहै ताको पाये पर्म । जन पबित्र ह्वै लहतहै मोक्षहि भूप सुकर्म ॥ क्षणिक ज्ञान बादीनकी मोक्षहु भये सुजान । होयजात च्युतहै परम बिनानिरंतर ज्ञान ॥ जैसे फल यज्ञादिको जबलौं रहत अनूप । तबलौं जन स्वर्गादिमें रहत तदनु नहिं भूप ॥ बहुमतकी बहुतर्कना मनमें आवति भूप । होतनहींहै एकको पैनिर्द्धार अनूप ॥ जेबिचारजन करत हैं तिनकी मेधायत्र । लगति तहांहीं जातिह्वै जीरण भूप पबित्र ॥ बहुप्रकारकेशास्त्रजे तेजनको भूपाल । खैंचेखैंचे फिरतहैं मत मतमाहिं बिशाल ॥ जेजे मत तेते महत बादहिकेहैं सर्ब । साधनब्रह्मज्ञानके हैं नहिंप्रज्ञ अखर्ब ॥ मतबादहिकरते सबै बादी है मरिजात । पावत ब्रह्मज्ञानको कबहुं नहीं अवदात ॥ सबको तजिकै जातमरि फिरि आवतहै नाहिं । मोह कियेतो है कहा पुत्रादिक के माहिं ॥ सुमुनि पंचशिखके बचन सुनिये जनक

नृपाल। फिरि पूछनको उदित भो लहिकै मोद बिशाल॥
इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेपंचशिखोपाख्यानेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ सुमुनि पञ्चशिखको जनक प्रज्ञावान नितान्त। फेरि मोक्षसंसारको पूछतभो वृत्तान्त॥ जनकउवाच ॥ जैसे मूर्छा सुप्तिमें पूर्बस्मृतीरहै न। मोक्षहुमें तिमि रहति नहिं पूर्बस्मृति बुधि ऐन॥ होत सुमुनि अज्ञानसों मूर्छा सुप्तिमहान। होतमोक्ष है ज्ञानसों महतकहत मतिमान।। सुनोज्ञान अज्ञान में तौभो कहा बिशेष। कहौमोहिं जासों हिये रहैन संशयरेष॥ ज्ञान और अज्ञानमें जो विशेष नहिंधर्म। तौज्ञानारथ क्लेश जो ब्यर्थहि गुणौ सुकर्म॥ भीष्मउवाच ॥ बैन जनकके येसुने सुमुनि पंचशिख प्रज्ञ। कहत भयो अवगाहि कै यहि बिधिसों धर्मज्ञ॥ निर्णय ज्ञाना ज्ञान को कहत तुम्हैंहौं भूप। सुनिये थिरता माहिं करि चञ्चल मनहि अनूप॥ आरोपित अज्ञानसों आत्मा माहिं अनूप। बुद्ध्यादिक गणहोत जब तासु अभाव सुभूप॥ तब अनर्थ मिटिजात सब जानत आपुहि आप। निर्बिकार आनन्दमय ब्रह्म सुबुद्धि कलाप॥ बुद्ध्यादिकको होतहै नहिं अभाव बिज्ञान। याते ज्ञान उपायमें क्लेशन ब्यर्थ सुजान॥ देहादिकहि अनात्मा कहिबेको भूपाल। देहादिकके मूलको प्रगट कहतहौं हाल॥ पञ्चधातुजे देहमें तेतबलौंहि एकत्र। प्राणी जबलौं जियतहै हैनहिंसंशयअत्र॥ देहादिककोमूलहै पंचधातुसंघात। जानो इन्हैं अनातमा जनकप्रज्ञ अवदात॥ सोरठा ॥ बुद्ध्यादिक सब जौन तौनहुसर्ब अनातमा। इनमाहीं क्षितिरौन आत्म भावसों दुखद अति ॥ दोहा ॥ जाने इन्हें अनातमा मैं अरु मम यह भाव। जौन बुद्धि सों कहत हैं रहत सोन नरराव॥ सांख्यशास्त्र अभिरामजो तासुबिचार अनूप। सोअति उत्तम अत्रहै तुम्हैं कहत सोभूप॥ करिहोजो भूपालतुम तिहिबिचार को पर्म। प्राप्तहोहुगे मोक्षको तौतुम सुबुधि सुकर्म॥ जोजन

चाहै मुक्तिसो करैत्यागको सर्व । त्यागबिना मोक्षहि चहत सो दुख लहत अखर्व ॥ सर्वकर्म क्षैजातहैं त्याग किये ते द्रव्य । होयजातहैं सर्वव्रत भोगत्यागते भव्य ॥ औसुख त्यागेहोत है औतपयोग बिशाल । सर्व त्यागतेहोतहैं सबही येभूपाल ॥ सर्व त्यागके मार्गको जेजन जानत भूप । तेतापै चाढ़ि लहतहैं मानवमोक्ष अनूप ॥ मतिके ऊपररहत मन ज्ञानेन्द्रियन समेत । इनहूंको मति त्यागमें यातेगुणो सचेत ॥ कर्मेन्द्रिय सहबल रहत मनपै चपल बिशाल । यातेमतिके त्यागमें सबको रहत नृपाल ॥ कर्णशब्द अरु चित्तये हेतु श्रवणमें तीन । रूपपरश रस गन्धके ज्ञानहु माहिं प्रबीन ॥ कर्णादिकहै कर्णसब अरु शब्दादिक कर्म । अरु कर्त्ताहै चित्तनृप जानो प्रज्ञ सुधर्म ॥ व्योमाश्रितहै श्रोतअरु श्रोताश्रितहै राव । जिह्वाश्रित रसजलाश्रित जिह्वाहै बुधराव ॥ ऐसेहि इन्द्रिय औरसब महाभूत श्रितभूप । इन्द्रिय आश्रितबिषयहै जानोप्रज्ञ अनूप । इन्द्रियसब मनमेंरहति यातेमन आधार । हैतिनको महिपालबर प्रज्ञावान उदार ॥ नृप दशहूं इन्द्रियनके ज्ञानकर्म हैजौन । जानतयाही हेतुते हैमन धिषणाभौन ॥ द्वादशहौ जो बुद्धिहै मनको जानत तौन । इनते जानत भिन्नहै आत्महि ज्ञानीजौन ॥ जाग्रत में देखी सुनी बिषय जौनहै भूप । सुनु सूक्षम इन्द्रियनसों तिनको जीव अनूप ॥ युक्तहोयकै गुणनसों स्वप्न अवस्था माहिं । देखत है प्रत्यक्षलौं दक्षहोयकै पाहिं ॥ तमसों युक्तसुचित्तजो सबइन्द्रिय तेस्वक्ष । देत आतमहि भिन्नहै करि सुषोप्तिमें दक्ष ॥ भिन्नभये इंद्रियन सों नृप सुषोप्तिकेबीच । होतजान सुख नामहै तामस तासुनिभीच ॥ जैसेशरम सुषोप्तिमें तैसो मोक्षहु माहिं । पै सुमोक्ष सुखरहतहै निति सुषेप्ति सुखनाहिं ॥ मोक्षहु माहिं सुषोप्ति लौं अहँकारादिक सर्व । रहतनहीं भूपाल मणि प्रज्ञावान अखर्व ॥ भूतादिक समुदाय को नामक्षेत्रहै भूप । जो अधार

समुदायको सोक्षेत्रज्ञ अनूप ॥ मिलेसुकर्म प्रभावसों क्षेत्रऔर क्षेत्रज्ञ। इनमें सत्य असत्यनृप कहिये कोहिको प्रज्ञ ॥ जबलौं कर्म प्रभाव है तबलौंहीं ये सर्ब। रहत फेरि नहिं कहतहैं जे हैं प्रज्ञ अखर्ब ॥ जिमि नदिका नद सिन्धु में तजत नाम अरु रूप। प्राप्तभयेते ब्रह्ममें तैसेहि ये सब भूप ॥ मोक्ष मनीषाको नृपति जानत है जन जौन। आत्माको सो होतहै प्रापत सुनु क्षितिरौन ॥ लगत कमलके पत्रमें जैसे नहिंकी लाल ॥ मोक्षमतीतिमिकर्मफल सोनहिं लिप्त नृपाल ॥ लखतनहीं तजिजात जिमि निर्मोकहि सुभुजंग। तिमिबिमुक्त सोदेतहै दुःखहि छोड़ि उतंग ॥ सुमुनिपंचशिखकेसुने ये भाषण अभिराम। जनकभूप भूमें चरतभयो मोदसोंमाम ॥ भीष्मउवाच ॥ यहजो निश्चय मोक्षको पढ़िहैताकोजौन। उपद्रवनसों छूटिकै लहिहै आनँदतौन ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेजनकपचशिखसंबादेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

युधिष्ठिरउवाच॥दोहा ॥ कहाकियेसुखहोतअरु कहाकियेदुखहोत। कहा किये निर्भय फिरै लोकमाहिं मतिपोत॥ भीष्मउवाच ॥ निग्रह जो इन्द्रियनको ताकोहै दमनाम। तासु प्रशंसा करतहै बेदवान बुधिधाम॥दमको साधनसबकरैब्राह्मणकरै बिशेश। अदमवान सों होतिहै सिद्धिन क्रिया नरेश ॥ क्रियासत्य अरुतपसयेदमहीमें हैसर्ब। दमहिं बढ़ावत तेजको दमहिं पबित्र अखर्ब ॥ ह्वै अपाप निर्भयदमी लहत ब्रह्मपद पर्म। जगहूमें जबलौं रहत तबलौं रहत सशर्म ॥ प्राप्तहोत नहिंतेजको क्रोधीहैजन जौन। जनकोभय अदमीनते महतहोत बुधिभौन ॥ तासुनामक्रव्याद जो कच्चे मांसहि खात। तिहिते भय जिमि होत तिमि अदमी ते बिख्यात ॥ मेटनको अदमीनके उपद्रवहिं लोकेश। बिरचत भो भूपालको गुणिकै बर अचलेश ॥ आश्रमवारे धर्म्म ते होत जौन फल पर्म्म। ताते अधिकी होतफल दमते भूप सुकर्म्म ॥ जिनके दम को उदयहै तिनको चिह्न अनूप। मतिसों

में अवगाहि के तुम्हें कहत हों भूप ॥ गर्व अभार अदीनता औ सन्तोष महान । आस्तिक बुद्धि अनूप औ मृदुता अरुठ सुजान ॥ औ तजिबो अभिमानता गुरुपूजा अभिराम । अनसूया अरुबहुदया भूतनमेंबुधिधाम ॥ अस्तुति निन्दा छोड़िबो अनृतबाद बहुबात । रागादिककीबारता तिनको तजिबोतात ॥ सर्ब कामना छोड़िबो औकरिबे नहिं बैर । शीलधरण सुब्रतकरण औतजिबो सबघैर ॥ औतजिबो पैशून्यको गुणिके दोषमहान । ये लक्षण दमवानके हैं हे भूप सुजान ॥ लोकमाहिं सतकारको प्राप्तहोय दमवान । प्राप्तहोत देहान्तमें स्वर्गहि समुदमहान ॥ चरणाकुलक ॥ हितहिगुणै सबभूतनवारे । धरिकै सरलसुभाव सुढारे ॥ काहू जनसों द्वेष न राखै । मधुर बचन सबही सों भाखै ॥ देत त्रास भूतनको नाहीं । आपहु डरत न तिनके माहीं ॥ सबही भूतदेखि दमवानै । धारिप्रेमको परममहानै ॥ करतप्रणाम आयके पाहीं । चहुंघा खरेहोय नगिचाहीं ॥ महत अर्थ में हर्षनपावै । औ अनर्थमें शोच न लावै ॥ सुनुभूपाल दमीहै सोई । तासम प्रज्ञावत नहिंकोई ॥ अनसूया अरु क्षमा महानी । औसन्तोष शांतिप्रिय बानी ॥ सप्तदान अरु इनकोजे हैं । दुष्ट मनुज पावत नहिंतेहैं ॥ दोहा ॥ बिनाकाल कोउ मरतनहिं यह गुणिके हिय बीच । दमीलोकमें फिरतहै ह्वैकै परम निभीच ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेदांतकथनंषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ बिना अहिंसा धर्म भूतगणनको अभयता । जातिनदई सुकर्म सुनहुपितामह प्रज्ञबर ॥ कीजैदेवत अर्थ पशुकोबध मखमाहिं नृप । कहत सुबेद समर्थ औ सब स्मृतिहु कहतिहै ॥ याते भो सन्देह मेरेमनमें महतअति । कहो तात बुधिगेह दोऊ किहिबिधिसों सधैं ॥ भीष्मउवाच ॥ बेदउक्तब्रत जौन तासोंजे जन युतनहीं । खाये आमिष तौन महत दोषको लहतहैं ॥ दोहा ॥ बेद उक्तब्रतको गहे जेजन प्रज्ञअनूप । खाये

आमिष तौनहूं गिरतस्वर्ग ते भूप ॥ परपीड़ा करयज्ञ जो याते निन्दिततात । तनपीड़ाकर जौनहै सोऊनिन्दित ख्यात ॥ आभीर ॥ निवृतिधर्ममें जौन । तत्परहै बुधिभौन ॥ तिनको यह वृत्तान्त । कहोतोहि क्षितिकान्त ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ जयकरी ॥ चान्द्रायण आदिक उपबास । तपस कहत तिनको बुधिरास ॥ केतेजन कहु नृपशिरमौर । यहही तप के है तपऔर ॥ भीष्मउवाच ॥ जातेदेह जायह्वैक्षीण। तिहिको तप मतिगुणो प्रबीण॥मोक्षारथ साधनहै जौन । सकत न होय निबलसो तौन॥ रामगीती॥नृप त्याग अरुजो नम्रता है तौनही तपपर्म।बरकरत जो यहितपहि सोई सुमतिमान सुधर्म ॥ हैलहत सोईमोक्ष मार्गहि त्राससों ह्वैदूरि । यह गुणतहै जनलोकमाहीं मनीषाके भूरि ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ सोरठा ॥ लोकमाहिं जे कर्म्म ते आपुहि सों होतहैं । के हैकर्ता धर्म्म इनको पुरुष सुजानबर ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ इहि प्रसंग में कहतहौं यक इतिहास अनूप । सुरपति अरु प्रह्लाद को प्रश्नोत्तर है भूप ॥ परमभक्त प्रह्लाद जो परमेश्वर को प्रज्ञ । इन्द्र ताहि पूछत भयो यह सुप्रश्न धर्मज्ञ ॥ समदरशी प्रह्लाद की बुद्धिजानिबे काज । नम्र होयकै जायतट पाणिजोरि नरराज ॥ चरणाकुलक ॥ थोरेहि गुणसों जनजगमाहीं । होयप्रतिष्ठित रहत सदाहीं ॥ सबगुणहैं थिर तुममेंनीके । हैंजेतेबर माहिं महीके ॥ पैशिशुलौं तुमरहत सदा हो । मानादिकहि बिचारतनाहो ॥ औ तुमहो बर आत्मज्ञानी । यातेपूछत सुखदसुठानी ॥ साधनता तुमकहा बिचारी । अर्थज्ञान के आनँदकारी ॥ परीफांसितब ग्रीवामाहीं । छुटेगेहते तबश्रिय नाहीं ॥ तबहूं शोचकरत नहिं मनमें । निशि बासर बिच एको क्षनमें ॥ कौनहेतु याकोहै कहिये । भोसंशय ताकोतुम दहिये ॥ धीरजताको धरिकै भारी । कैमतिलाभ भये सुखकारी ॥ यहसु-

निके सुरपतिकी बानी । बोलतभो प्रह्लादसुज्ञानी ॥ प्रह्लादउवाच ॥
माया परमप्रकृतिको कारण । कहत तुम्हैं हौंकरि निर्धारण ॥
आत्महि भिन्न प्रकृतिते जानै । जेजन तेसुखदुख नहिं आनै ॥
आत्माहैबर नित्यानन्दी । कबहूंहोत नहींहै द्वन्दी ॥ जानतहै नहिं
यहिवृत्तान्तहि । गुणत आत्मामाहिं नितान्तहि ॥ धर्मप्रकृतिको
सुरपति जोजन । प्राप्तहोत अभिमानहि सोजन ॥ कहौआपुजो
जड़हैमाया । चलत न बिनआत्माकीछाया ॥ प्रवृतिहोतिहै किमि
तोसुनिये । कहत तुम्हैंहौं सुरपति गुनिये ॥ मैनो ॥ होतजौनहै
तौनकहावत भाव । होततौन आपुहिसों सुनुसुरराव ॥ काहूके
कीन्हेंसों तेनहिं होत । जानतते जन जिनके मतिकोद्योत ॥ दु-
ग्धहोत आपुहिसों गोस्तन बीच । जैसेयल बिनाही सुरपनिभी-
च ॥ दोहा ॥ अपनेहि होति सुभावसों माया प्रवृतिहमेश । आत्मा
केपुरुषार्थसों होतिनहींस्वर्गेश ॥ मायाके परभावसों होतआपुही
सर्व । करतनभोगत आतमा नित्यानन्द अखर्व ॥ सोरठा ॥ आत्म
को करतार भलेबुरेको गुणतजो । ताकीबुद्धि अपार दोषवतीमैं
गुणतहौं ॥ दोहा ॥ आत्माको कर्त्तागुणे है बिरोध सुरराज । सोमैं
तुमसों कहतहौं तनिकै बुद्धिदराज ॥ आत्माकर्त्ता होयजो तौता-
के सबकाज । सिद्धिभये चाहिये बिघन रहित सुनो सुरराज ॥
प्रापतहोत अनिष्टहै किये इष्टब्यापार । आत्माको पुरुषार्थसो है
तहँकहा सुढार ॥ आभीर ॥ यातेनहिं कर्तार । आत्माबुद्धि अगार ॥
आपुहिसों सबहोत । अत्रन संशयद्योत ॥ दोहा ॥ जो आपुहि
सोंहोतहै सुखदुःखादिक सर्व । तौकारण अभिमानकोहै कासुनो
अखर्व ॥ आपुहिसों सबहोतहै यह मेरे सिद्धांत । आत्मज्ञानहु
ओ तिमिहि मोक्षहुसुखद नितांत ॥ सोरठा ॥ भलेबुरे जेकर्म सुख
दुखादिके हेतुते । जोयहकहौ सशर्म तौनिषेधइनकोसुनो ॥ दोहा ॥
सुखदुःखादिहि देतहै कर्म प्रकाशि सुरेश । होत प्रवृत्त तौ आ-
पुही जानोनिजहि बिशेश ॥ काहू काहुहि देतनहिं सुखदुःखादिक

र्व। आपुहिसों सबहोतहै यहसिद्धांत अखर्व॥ आपुंहि कर्तागुणतजो तौनकरत अभिमान। आपुहिकर्ता गुणतनहिं सोनकरत पबि मान॥ नष्टताहि मैंसबैकी जानतहौं सुरराय। यातेशोचन करतहौंदुःख समय कोपाय॥ सोरठा॥ अंतवानहै जौन तासुशोच क्योंकीजिये। हियबर मतिको भौन तामें यहगुणतैरहौ॥ ममता औ अहँकार औआशा मोमेंनहीं। औ जो बन्ध अपार तिन सबहिनसों मुक्तहौ॥ दोहा॥ जाते भूतनको प्रभव अरुलय जा केमाहिं। ऐसो जोपरब्रह्महै ताकोगुणत सदाहिं॥ काहूमेंद्वेषनकरत औकाहूमें प्रीति। शत्रुमित्रनहिं गणतहों काहूहियहमरीति॥ स्वर्गादिक की कामना मैं राखतहौं नाहिं। तत्पर आत्मज्ञानमें मैंहों रहतसदाहिं॥ शक्र उवाच॥ सोरठा॥ जिहिउपायसों होयशांति प्राप्तिअरुबुद्धितव। कृपादृष्टिसों जोय कहौ मोहिं प्रह्लाद तुम॥ प्रह्लादउवाच॥ दोहा॥ सेवाकिये बड़ेनकी गहिकैकोमलभाव। अप्रमादताको धरे मनमें बरसुरराव॥ औजीते इन्द्रिय सकल औमति किये अमन्द। ज्ञानपायकै लहतहै मानवमोक्ष अद्वन्द॥ तोमर॥ सुरराज येसुनि बैन। भरिहर्षसों हियऐन॥ अतिभो सराहतताहि। हियमाहिंसो अवगाहि॥ दोहा॥ पूजिइन्द्र प्रह्लादको आज्ञा लेयसशर्म। जातभयो निजधामको भूपतिसुनहु सुकर्म॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेइंद्रप्रह्लादसंबादेअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ निग्रह सबइन्द्रियनको त्याग गर्बको आपु। कह्यो पूर्वअवगाहिकै मोकोबुद्धि कलापु॥ चञ्चलवय अतिसम्पदातासु प्राप्तिअरुनाश। तामें कबहूं होयनाहिं हर्षदुःखपरकाश॥ जिहिमतिसों सो मतिकहौ औजिहिमतिको पाय। लहिबिपदा धरिधीर्य्यकौ महिमेंरहै नृराय॥ भीष्मउवाच॥ कहत एकइतिहास हौं यहिप्रसंगमें भूप। तामेंहै सम्बादबलि अरु बासवकोभूप॥ रामगीती॥ सुरराज हनिसबअसुर गणको पितामह पैजाय। इमि भयोपूंछतकहांहै बलिदेहु मोहिंबताय॥ नहिंघटतहै कबहूं न

जाके हस्तसों धनदेत । सो गयोकित बलिकहौ हमको कृपाम-
हत निकेत ॥ हौबनो आपुहि बायु आपुहि बरुण आपुहिभान ।
शितभानु आपुहि अग्निआपुहि आपुजल बलवान ॥ तजि
आलसै सोहुतो बर्षत समयलहिकै नीर । लखिपरतहैनहिंगयो
बलिाकत महत अति बलबीर ॥ ब्रह्मोवाच ॥ यहि समयमाहीं
सोधबलिको उचित तुमकोनाहिं । हमदेत बलिहि बतायमिथ्या
कहैंकिमितवपाहिं ॥ हयवृषभ उष्ट्र खरनमाहीं श्रेष्ठदेखोजाहि ।
तुमजानियो बलिताहि तुमको कहत हमअवगाहि ॥ शक्रउवाच ॥
बलिमिलैजो कहुँशून्यथलमें बधौंकीनहिंताहि । तुमकहौ श्रीलो-
केश हमसों सुमतिको अवगाहि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ बलि योग्यबधकेहै
नहीं बधियो न यातेआप । जो मिलैतासों पूछियो तौ परैनीति
कलाप ॥ येबैनसुनि लोकेशके अमरेशगजहिमँगाय । चढ़िचलो
ढूँढ़न बलिहि भूमें बलीबज्र उठाय ॥ खररूपको धरिखरोहैबलि
शून्य थ नके माहिं । अतिश्रेष्ठ लखिबलि जानिताको जातभो
तिहि पाहिं ॥ शक्रउवाच ॥ खरयोनि जोअति अधम ताको प्राप्ततू
बलिहोय । हियमाहिं शोचहि करतहै कीनाहिं मोतन जोय ॥
बश शत्रुके हौपरे कबहुँन परो अबतू आय । गोरहित ह्वै कै
सबहि तुमसों गयोबीर्य्य नशाय ॥ बहुदैत्य तवसँग रहतहैंअरु
बहुत बाहन धर्म । सबलोकमाहीं भरेहो तू निजप्रताप सशर्म ॥
तवरहत आज्ञामाहिं हेसब दैत्य जोरेपानि । तवराज्य माहींबिना
जोते भूमिमाहिं महानि ॥ बहुहोतहै बर अन्न ऐसे भाग्यवान
अनूप । तूहुतो अब यहयोनि गर्दभ कीलही दुखरूप ॥ गुणि
ताहितू हियमाहिं शोचहि करतहौ कीनाहिं । जब देतहौज्ञातीन
को धन महत सागर पाहिं ॥ तब हुतो तेरोमनस कैसो कहोहम
कोतत्र । अरुकहो अब खरयोनि पाये हैसुकैसो अत्र ॥ देवां-
गना बहुनाचतीही निकट तव बहुबर्ष । बररत्न भूषित हुतोतोपर
छत्र अतिउत्कर्ष ॥ तब अग्र गावत रहेहे षटसहसबर गंधर्व ।

तव दापते होहोत जयजय ध्यानपरम अखर्ब ॥ मखमाहिं तेरे गड़ोहो अतिबिमल कचन जूप। दशसहस मखमें दईही बर गऊपरमअनूप ॥ बरनापमें छत्तीस अंगुल दंडखड्गाकार। है नामसम्या तासुसो बलिमहीमाहिं उदार ॥ जहँगिरे अतिबल-वानके फेंके सुबलसों पर्म। थलहोत तहँलौं यज्ञको है कहत प्रज्ञ सुकर्म ॥ सबभूमिमें तुम यज्ञकेथल कियेहे जन स्वक्ष। फिकवाय सम्या बलीजनसों भलीविधिसों दक्ष ॥ तबहुतोकैसो मनस तव बलि दैत्यपति बलवान। अबकहौ कैसो अत्रहै मन भये खर मातिमान ॥ नहिंछत्र चामर परत लखि अरु दईबिधि कीमाल। अरु हेमभाजन कहांहै तव मणिन जटित बिशाल ॥ बलिरुवाच ॥ हैंगुप्तममछत्रादि तिनको तूसुपूछत मोहिं। जबसुखद ऐहै समय मम तबपैरंगे लखितोहिं ॥ यहिसमयमें यहि भांति पूछब उचिततोको नाहिं। गजराजपै चढ़ि आयकै खररूप में तिहि पाहिं ॥ नहिंदुःख माही करत शोचहि ऋद्धिमें नहिंहर्ष। जेरहतहैं जन निरत निशिदिन ज्ञानमें उत्कर्ष ॥ दोहा ॥ मोऐसो जब होयगो तूहे सुनु सुरराज। कहि साकिहै इमि नाहबचनतब करि गर्वदराज ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेबलिवासवसंबादेएकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९

भीष्मउवाच ॥ चण्डातुलक्र ॥ फेरि प्रश्न पूछतभयो बलिसों यह सुरराज। कीबेबाग बिलासबर तनिकै बुद्धिदराज ॥ शक्रउवाच ॥ तोमर ॥ तवसंगमें बहु अश्व। जवमाहिं जेप्रषदश्व ॥ सम हे सु चढ़त अनूप। बलवान बीर स्वरूप ॥ हमकोन तूमनबीच। गुणतो हुतो सुनिभीच ॥ सबलोकमाहिं प्रताप। भरिदेतहो सु अमाप ॥ अबतू दशा यह पाय। दुखदा महाबरराय ॥ जियमाहिं शोचमहान। अतिकरत कीन सुजान ॥ बलिरुवाच ॥ हम अन्त तव गुण सर्व। नहिंकरत शोच अखर्ब ॥ मतिमान हैंजनजोन। नहिं करत क्लेशहितौन ॥ दोहा ॥ जानत जेन अनित्यता जग-

बारी सुरपाल । मूरखतासों लहतहैं तेजनक्लेशबिशाल ॥मधुभार॥ जन सुमति पाय । किल्विष नशाय ॥ लहि सत्वपर्म । हैं लहत शर्म ॥ गुण सत्वनाहिं । जिनजनन माहिं ॥ तेजन्म लेत । फिरि फिरि अचेत॥हमकामनान । कौनहुं सुजान ॥ हिय माहिंकर्त । सुख सहित चर्त ॥ अरु रागद्वेश । करतन सुरेश ॥ हमअन्नृत पाहिं । तव कहतनाहिं ॥ दोहा ॥ मारत मरो मरैहिहै मारत जो अरुमर्त । जानत आपुहिमरे हम यह सत्वत उच्चर्त ॥ मारि जीतिकै अरिनको जौन करतहै गर्ब । सो कर्ता नहिं औरही कर्ता जानु अखर्ब ॥ प्रभव नाशजो जगतको मन कर्ताहै तास । मनको कर्ता औरही है कोऊ बुधिरास ॥ पंचभूतमय सर्व हैं है नहिं नेको भेद । यह गुणिकै नहिं कीजिये जियके माहीं खेद ॥ काल सबहिको करतहै अपने बशके माहिं । जानत यह वृत्तान्तजे करत शोचते नाहिं ॥ कालसिन्धु यह जौनहै ताको वारन पार । औ द्वीपहु तामें नहीं बासव प्रबल उदार ॥ महतहि करत बिचार है पैपावतनाहिं अन्त । काल समुद्र बिशालको सुनिये बर सुरकन्त ॥ तरंगाकुलक॥ काल ग्रसै भूतनकोनाहीं । सम देखत जोतो मनमाहीं ॥ करौं शोच मैं सुरपति भारी । कह्यो बुद्धिसों सुगुणि सुढारी॥ शूनो गृहमें गर्द्दभ ह्वैकै । मैंहौं खरो स्वतनुको ग्वैकै ॥ तहां आयतू निन्दा मेरी । धरि गरूरता करत घनेरी ॥ जो अपने मनमें मैंआनों । रूपअनेकन बिधिकेतानों॥ जिन्हैं बिलोकि इन्द्रतू आनै । साध्वसमनके माहिं महानै ॥ तूतो अन्नृत पराक्रम गावै । कालस्वभाव नमनमें लावै॥ करत करावतहै सबकालै । और नही सिद्धान्त बिशालै ॥ बासवमैं जब क्रोध कियोहो । कांप्यो सबको तब सुहियोहो ॥ यातेजानत यहिवृत्तांतहि । सबल देखि सबडरत नितांतहि ॥ इन्द्रतुहूंकरु इहि सुबिचारै । मनमें ल्याउ न गर्ब्ब अपारै ॥ है आधीन आपने नाहीं । करिबोभूति प्रकाश सदाहीं ॥ वय कुमारमेंहीं मतिजैसी ।

हुतोबलसों भूरि ।अरु लोककीहों करतरक्षामैंहिं दुखकरिदूरि ॥ अरु मैंहिं हौं त्रयलोक को पितु मो समान न और । मैं गुणत काहूको नहींहों सुनोसुर शिरमौर॥मैंहुतोऐसो गयोसोयाहिसमय में मम सर्ब।कछु परत देखि न मोहिं लहि यह दुखद काल अखर्ब ॥ हे तू न कर्त्ता औ न मैं हों समय लहि सुरपाल। जन दशा सुखदा दुःखदा को प्राप्त होत बिशाल॥दोहा ॥ निशि बासर अरु मास ऋतुबर्ष जासुहैं अंग। अरु माया आधार है ताको सुनु बर स्वंग ॥ ऐसो जोहै काल सो दौरत जोहै तास। पीछे दौरत औ खरो रहत खरो तिहि पास ॥मुहूर्तादिक नाम सब कालहि के हैं दक्ष। ताहीके बशमाहिं यह जो लखि परत प्रतक्ष ॥सोरठा ॥ पूर्बकाल के माहिं होय गये बहु सहस हैं। जानो मिथ्या नाहिं तोसम इन्द्र महाबली ॥ दोहा ॥ अन्तकाल जब आयहै तेरो हे सुरपाल। तब तूहू रहिहै नहीं गुनु सिद्धान्तबिशाल ॥ आभीर ॥ ग्रासि लेतहै काल। सबको सुनु सुरपाल॥ यातेतू अभिमान। हीमें करु न महान॥ दोहा ॥ राजश्रीको प्राप्तहै तूजानतमनमाहिं। रहिहै इमिहीं सर्बदा सो यह रहिहै नाहिं ॥ तजि सहसन सुर पतिनको आई मेरे पास।राजश्री सुरराज यह कीन्हे परम प्रकास ॥ मोहूं को अब छोड़िकै गई तिहारे पाहिं। राजश्री यह चंचला ऐसी गुणु मनमाहिं॥ सोरठा ॥ मति कहु बचन सगर्ब तोहू को यह छोड़िकै। राजश्रीय अखर्ब जैहै कौनहु कालमें ॥

महाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेबलिबासवसंबादेपंचाशत्तमोऽध्यायः५०॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ श्रीकरिकै जो दर्पभो तासुशमनकेकाज। कहत एक इतिहास हों तुमसों हम नरराज ॥ लक्ष्मीको अरु इन्द्रको तामें है सम्बाद। सुनहु तौन भूपाल बर तजिकै सर्ब प्रमाद ॥ निकसति बलिकी देहते लक्ष्मी भई सुभूप। तेजमयी अति चञ्चला परमा भरा अनूप॥ संयुता ॥ सुरराज ताकहँ देखि कै ।हिय माहिं बिस्मय लेखिकै॥ बलिको सुपूछत भोबली। यहि

भांतिसों मतिसोंक्षल्ली॥ शक्रउवाच ॥ दोहा॥तव तनुते यह जो कढ़ी मढ़ी प्रभासों स्वच्छ । कहो कौनहै मोहिं तुम बलि सुदैत्यपति दक्ष ॥ तोमर ॥ बलिरुवाच ॥ हमयाहि जानत हैं न । मम सत्यमानहु बैन ॥ तुम इन्द्र पूंछहु याहि । मनहोय तौनहिंनाहि ॥ शक्रउवाच ॥ उक्कच्छा॥ बलिके तनते आम । कढ़ी भामईमाम ॥ मोदिशिआवति नारि । कहुतू कौन सुढारि ॥ अरिल ॥ श्रीरुवाच ॥ जानतहौं नहिं मोहिं बिरोचन । औनहिं जानत बलि बैरोचन ॥ हैयकनाम दुःसहा ममबर । दूजो नाम बिधत्सा प्रबिधर॥ दोहा ॥ तीजो लक्ष्मी नामहै हैं ऐसेबहुऔर । जानत मोको सुरहुनहिं औतुहु सुर शिर-मौर ॥ शक्रउवाच ॥ बलिहि तजनको हेतुहै कहा रमा कहुमोहि । आवनको ममपासकी बलिऊपरतूकोहि ॥श्रीरुउवाच॥ आयोकाल अनिष्टहै बलिको यातेयाहि । छोड़तिहौं सुरपालसुन और कछु नअवगाहि ॥ शक्रउवाच ॥ बलिको तू जिहिबिधि तज्यो तजियो तिमि मतमोहिं । जिहि उपायसों नहिं तजै सोकहु पूछततोहिं ॥ गामगीती॥ श्रीरुवाच ॥ बरसत्यमें अरुदानमें अरु तपस्यामें पर्म । ब्रत औ पराक्रम धर्म में हौ रहित शक्र सशर्म ॥ हौपूर्व ब्राह्मणभक्त अरु बर सत्यबादी स्वक्ष । बहु यज्ञ करिकै करत पूजा हुतोमेरी दक्ष ॥ अबब्राह्मणनकी करत निन्दा धारिकै बहुगर्ब । यह परमदुःखसुलोकजनको लग्योदेन अखर्ब ॥ यहिहेतुतेताजि बलिहि आई पास तव अमरेश । मैंरहौंगी जोराखिहै तजिकै प्रमाद हमेश ॥ शक्रउवाच ॥ नहिंकोऊ ऐसो लक्ष्मी सुनुसर्बभूतन माहिं । जो एकराखै तोहिं मैंहौं कहत साति तवपाहिं ॥ श्रीरुवाच ॥ सुनुकहतहै तूसत्यहै सुरपाल बिज्ञबिशाल । नहिंसकत कोऊ राखिमोको एककौनेहु काल ॥ शक्रउवाच ॥ तूरहै जिहि बिधिपास मेरे मोहिंकहु बिधितौन । मैंकरौं जातेमोहिं ताजितू करै अनत नगौन ॥ श्रीरुवाच ॥ दोहा ॥ मोको राखै सुरपजो करिकै चारिबि-भाग । तौतव पासरहौं सदा जाउं कहुंन बड़भाग ॥ शक्रउवाच ॥

तव बिभागमैं शक्तिभरि करिहौं देविसुढारि । तासु उलंघनकी-
जियो मैंजोकहौं बिचारि ॥ महति चराचर धारिणी भूमि एक
तव पाद । धारण करिहैं कहतहौं मैंनिजछोंड़ि प्रमाद ॥ श्रीरुवाच॥
राख्यो भूमें पावँमैं एक दुतियको ठौर । गुणिकै तूकहु मोहिं
अब सुनु बरसुरशिर मौर ॥ शक्रउवाच ॥ दुतिय पावँ तब धारिहैं
जलयाते जलमाहिं । धारण करुहे लक्ष्मी करु बिचार तूना-
हिं ॥ श्रीरुवाच ॥ दुतिय पावँजल बीच में राख्यो हेसुरराव । और
ठौर कहु मोहिं जहँ राखौं तीजोपावँ ॥शक्रउवाच॥ देव यज्ञअरुवेद
ये रहत अग्निकेबीच । यातेचौथो पाव तव धारण करी निभी-
च ॥ श्रीलक्ष्मीरुवाच ॥ अग्निमाहिं पद तीसरो रख्यों मैं सुरपाल ।
अब तुम चौथे पदहि मम ठौर बतावहुहाल ॥ शक्रउवाच ॥ बिप्र
जितेन्द्रिय प्रज्ञ बर सत्यमानहैं जौन । लक्ष्मी चौथो पावँ तव
धारणाकरिहैं तौन ॥ श्रीलक्ष्मीरुवाच ॥ राख्यो चौथोपावँ मैं बिप्रन
माहींपर्म । जानहुचारिहुठौरमम चारिहुपावँ सशर्म ॥ बित्ततीर्थ
अरु यज्ञ अरु बिद्या येमम पाव । चारि चारिहू ठौर में राखेहैं
सुर राव ॥ शक्रउवाच ॥ तेरे चारिहु पावँकोजो जन हनिहैताहि ।
हनिहौं मैं सुनु लक्षमी परम अघीअवगाहि ॥भीष्मउवाच॥ दैत्य-
नकोराजातदनु बोलतभो अचलेश । सुरपतिसों यहिभांतिसों
धीरजमान बिशेश ॥ बलिरुवाच ॥ वैवस्वतमनुकेसुनो अन्तमाहिं
सुरपाल । हवैहै जब सावर्णिमनु तब फिरि युद्ध कराल ॥ सुर
असुरनको होयगो जीतैं गे हम तोहि । भानु स्थिति मध्याह्न
में हवैहै जबयत जोहि ॥ शक्रउवाच ॥ वरणाकुलक ॥ मोहिं बिरञ्चि
मन करिदीन्हो। तातेमैं तवबध नहिंकीन्हो ॥ नातो तोहिंबज्रसों
हन तो । प्रबल प्रताप आपनो तनतो ॥ दोहा ॥ छोंड़िदयो मैं
तोहिं बलि शीघ्र यहांते गच्छ । भानु स्थिति मध्याह्न में हवै
है कबौं नस्वच्छ ॥ आज्ञाते लोकेशकी फिरत रहतहै भानु ।
लोकनमाहिं प्रकाश बर करत महाबलवान ॥ उत्तरऔ दक्षिण

अयन सूरयके हैं दोय । तिन में तत्पर रहतहै दैत्यराज बलि जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ बलिदक्षिण दिशिजातभो बासव के सुनि बैन । बोलो कछुनाहिं बासवहु उत्तर गोव्रधिपैन ॥ बलिको तजि कैलक्ष्मीगईइन्द्रके पास । यातेलहिलक्ष्मीनहींकीजैगर्वप्रकाश॥ महाभारतेशांतिपर्व्वणिमोक्षधर्मेइन्द्रस्यश्रीप्राप्तिर्नामैकपंचाशत्तमोध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ गर्बनकीजै लक्ष्मीको लहिकै भूपाल । कह्योपूर्ब अवगाहिमैं अब्बर बिज्ञ बिशाल ॥ मैंहौं कहत अशोच में यकइतिहास अनूप । तामाहीं सम्बादहै सुरप नमुचिकोभूप ॥ सोरठा ॥ लक्ष्मी सोंझै हीन नमुचि दनुजबैठो हुतो । तासों बली प्रबीन पूछत भोसुर राज इमि ॥ भये रमासों हीन औच्युत भये सथानते । शोच करतहैं कौन नमुचि दनुज हमकोकहो ॥ नमुचिरुवाच ॥ अरिल ॥ शोक आयके होत प्राप्त जब । शत्रुमहत अति लहत हर्षतब ॥ केहूंतास होतनाहिं वारण । लहे सहायहु आनँद कारण ॥ दोहा ॥ ताते शोचन करतहौं सुनहुं प्रबल सुरराज । अंतवान मैं गुणतहौं यहसब जगतसमाज ॥ नशाति रमा संतापते तिमिहिं नशत है रूप । बयहु नशति संतापते औ बर धर्म अनूप ॥ याते आपतकालमें कीजे नाहिं संताप । यहो जायगो नष्टह्वै गुणि यहशक्र सदाप ॥ अरिल ॥ जब जन हर्ष माहिं मनराखत । सिद्धि होत तबजो अभिलाषत ॥ शक्र अत्रमति संशय अनाहु । है सिद्धान्त शास्त्रको मानहु ॥ आज्ञा करत जौन परमेश्वर । हमहैं करत सोय स्वर्गेश्वर ॥ परमेश्वरहीआज्ञा कारक। हैयह बर सिद्धांत बिचारक॥ शुभ औ अशुभहि जानत हैंजन । पैनहिं करत लोयशुभमें मन ॥ करत रहत हैं निशिदिन पापहि । गुणततासुनहिं भयके थापहि ॥ याते गुणिये सुनोशचीपति । महतिमनीषा सूक्षमसों अति ॥ जन पावत जैसो प्रभुशासन । सोइ करत यह निज संभाषन ॥ रहत तहांहीं जहँप्रभु राखत । रहत नतहां जहां अभिलाषत ॥ करतहिये में यह गुणि

शोचन। सांति जानो सुखदुःख बिमोचन ॥ दोहा ॥ जोजो मम भवितव्यहै सोसो प्रापत आय । भयेगुणत यहजौन नहिं शोच करत सुरराय ॥ आवतजे सुखदुःखहैं समयपाय सुरराय । तिन कोसबसंसारमें सकत नकोइछुड़ाय ॥ जयकरी ॥ नरअरुअमरा-दिक सुरपाल । कोन लहतहै आपतकाल ॥ यहगुणि सदसत बिदहैं जौन । होत भीति कोप्राप्तनतौन ॥ करत बिज्ञ जनहैं नहिं कोह । औनकरत काहूमें छोह ॥ कबहूं शोच न कबहूंहर्ष । करत नहीं सुरपति उत्कर्ष ॥ धर्मतत्वको करि सु बिचार । करत जौ-नजनबुद्धि अगार ॥ धर्मधुरन्धर सोइ सुरेश । धर्म प्रबक्ता कहत हमेश ॥ हूबेप्राप्तयोग्य नहिंजौन । प्राप्तहोत नहिं कबहूं तौन ॥ यहगुणिके ज्ञानीजनजौन । भयकोप्राप्त होतनहिंतौन ॥ नरेश ॥ बर मानुष जेमतिमानहैं । गुणिकामहि दुखदमहानहैं ॥ तनुतेनिकारि तेदेतहैं । नितिरहतअनन्दसमेतहैं ॥ दोहा ॥ जैसीजैसीहोतिहै प्राप्त अवस्थाआय । तैसीतैसीछोड़िभय भोगतहैंसुरराय ॥ मोहा ॥ धर्म तत्वअवगाहिके । प्राप्तहोतजोचाहिके ॥ धर्मधुरंधरसोइहै । और नजानो कोइहै ॥ अज्ञनके जेकर्महैं । तिनके जेफलपर्म हैं ॥ ते नहि जानै जातहैं । कहत सुबुध अवदात हैं ॥ गृह आश्रम सों होयकै । च्युतगौतम दुख जोयकै ॥ नहीं मोहको ज्यों लह्यो । तिमिहिं मैंननिजहैकह्यो ॥ चरणा.दोहा ॥ सुखदुखजिते प्राप्तहोनेको तितेहोतहैं आय । तेटारेतेटरत कबहुं नहिं जानो निज सुरराय ॥ हथा दोहा ॥ यह बिचारिकै मोहको प्राप्तहोत नहिं जौन । रहत सर्बदा सुरप सुनु महत कुशल सों तौन ॥

महाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेशक्रनमुचिसंबादेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ आवैकालअनिष्टतब कीजैशोचहिनाहिं । कह्यो पूर्ब अध्यायमें आपु हमारेपाहिं ॥ बंध्वादिकको नाशअरु भयेराजकोनाश । कष्टहोत तिहिमाहिं जेमग्न मनुजमतिराश ॥ होय श्रेयको प्राप्तबर कहा किये ते फेरि । कहो आपु अवगाहि

अब ज्ञानचक्षुसों हेरि ॥ भीष्मउवाच ॥ बंध्वादिककोनाशअरु भये राज्यकोनाश । जौनकष्टगतहैं तिन्हैं शरमद धीर्य्य प्रकाश ॥ मनोहर ॥ धीरज धारे सदाप्रबीण। होतशरीर नहीं है क्षीण ॥ धीरजताते होत अनन्द । रहत सदा आरोग्य नरेन्द्र ॥ रहेशरीरा योग्य नरेश । श्रियको पावे फेरिसुबेश ॥ धारतवृत्ति सात्विकी जौन । धीर्य्य ताहिपावतहै तौन ॥ अत्रएक इतिहास अनूप । तुम्हैं कहत हौं सुनिये भूप ॥ पुनिबलि बासवकोहै स्वक्ष । तामाहीं सम्बाद सुदक्ष ॥ देवासुर संग्राम महान । होयचुक्यो जब भूपसुजान ॥ चतुर्दन्त ऐरावत पर्म । तापै चढ़िकै शक्र सशर्म ॥ फिरतभयो तिहुंलोकनबीच । लीन्हेंकर मेंबज्र निभीच ॥ कबहूं सरिता पतिके पाहिं । उन्नत गिरि गह्वरके माहिं ॥ बलिको देखि भयो तटजात । बासव महाबीर्य्य बिख्यात ॥ सह ऐश्वर्य्य इन्द्र कोदेखि । मनमें बिथानकी अवरेखि ॥ निर्बिकारबलिको सुरराज। देखिखरो करिकै गजराज ॥ कहत भयो सो ऐसे बैन ॥ बलि दानव पतिको मतिऐन ॥ सहऐश्वर्य्य मोहिंलखि पाहिं । बलि चिन्तान करीमनमाहिं ॥ दोहा ॥ ताको कारणहै कहा कहौमोहिं दैत्येश । अनैश्वर्य तूमें महासह ऐश्वर्य्य सुबेश ॥ तोमर ॥ तिहुं लोकको बरराज । नशिजात जासुदराज ॥ नहिंतौन त्यागत प्रान । बलिदैत्य राजसुजान ॥ दोहा ॥ तूशोचहुनहिं करतहैकारण काहै तास । निर्बिकार तूहैखरो सोहैसाहित हुलास ॥ तोमर ॥ सुर राजके सुनिबैन । बलिदैत्यराज सचैन ॥ मनमाहिं गुणि करि तौन । कहतोभयो बलभौन ॥ बलिरुवाच ॥ सुनिबैन मोपविमान । बहुकर्तका अभिमान ॥ बशमैं भयों तवमाहिं । लखुहोखरोतब पाहिं ॥ नहिंतोहिं आवत लाज । अतिधारि गर्बदराज ॥ बहु अत्र बोलत बैन । गजपैचढ़ो सहचैन ॥ दोहा ॥ महत बली मैं पूर्वहौं तूहै निबल सुरेश । ताहि गुणत तूहै नहीं ह्वैकै निलज अशेष ॥ रामगीती ॥ जोआपु अति बलवान ह्वैकै अरिहि बशमें

पाय। तजिदेत ताकोकहत हम पुरुषारथीसुरराय ॥ हैलहतहैं रण माहिं तिनमें लहतहै जयएक। बरसमय ताको भाग्यकरि के होतसो सबिबेक ॥ सबभूतको जोईश सोतौ हारिही हैजात। सुनु गजारूढ़ सुरेशबरहै कहामम तवबात ॥ हैहोनवारो जो अनर्थ न मिटत होसुरपाल। बिनबुद्धि बिमला जानुयह सिद्धान्त बिज्ञबिशाल ॥ जबहोत जनको आय प्रापत अति अनिष्ट-अनेह। तबफटी नौकाजातिज्यों जलमाहिं बूड़िअछेह ॥ तिमि सुमति सोअज्ञान माहीं जातिबूड़ि सुरेश। नहिं सकति होयउपायकोनहुं कियेहु भूरिकलेश ॥ जिमिनष्ट गेहवै इन्द्र पूरब बहुत तौनहिं भांति। हम तुमहु ओजे और ह्वै हैं इन्द्रबहुबर कांति ॥ सबजायँगे ह्वै नष्ट हेसुरश्रेष्ठगुणसिद्धान्त। ह्वै गजारूढ़ सुमूढ़लौं काकरत गर्ब नितान्त ॥ हेभये ताते इन्द्र पूरब बहुत हे सुरपाल। अरु पृथ्वी में पृथु आदि राजा भये बहुत बिशाल ॥ तेगये सबहीनष्टह्वै लखि परत एकहु नाहिं। तिमि तुहूं जैहै नष्टह्वै यह जानु निज मनमाहिं ॥ जिहि दशाको मैं प्राप्तभो तिहिदशाको सुरराज। तबपायहै सकिहै न तू तबधारि धीर्यदराज ॥ बर राज्यवारे नाशमाहीं तुहूं कबहुं शोक। निज लहैगो अभिमान कातू करत है बलओक ॥ उद्योग कारक बहुत मैंहों मोहिंहूं यहकाल। अति दुखद प्रापत भयोहै हेदेखु बर सुरपाल ॥ बहु क्षमा तूहू पायहै यहि समयको दुखदाय। नाहिं रहैगो यहसमय जोहै प्राप्तअब सुरराय ॥ मैं वधोहोंयाहि हेतुते बलवान आपुहिजानि। बहुबार ताको करतहै अभिमान ताको तानि ॥ जब करतहों मैं क्रोधको तब सामुहे ममआय। नहिं खरो कोऊ होतहै बलवान ओज बढ़ाय ॥ दोहा ॥ आपने यशके कहतये मोहिं होतिहै लाज। पै कहवावै तूखरो सोंहेमम सुरराज ॥ चरणाकुलक ॥ युद्ध बीच पुरुषारथमेरो। तेरोलख्यो पूर्व बहुतेरो ॥ मैंआदित्य द्वादशो जीते। हेबलसांदीन्हें कररीते ॥

तिमिहिं साध्यगण मारुत बलमें। जीतिकिये हे पूर्व्व विकलमें॥ औआठहु बसु जीतेमैंहे। गुणतनही ये शचीपति तेंहे॥ तूजानत पुरुषारथ जैसो। हैमेरो स्वर्गाधिप तैसो॥ शिखरतोरिकै भारेभारे। तोऊपरमें हें बहुडारे॥ ऐसोहौं मैं अबकछु नाहीं। करिहौं सकत खरो तवपाहीं॥ यहमेरे पुरुषारथ वारो। कालन याते धीरज धारो॥ बात कहत स्वर्गाधिप जैसी। तूहै कहत सहतहौं तैसी॥ दोहा॥ सुनिकै बलिके येबचन बज्रीक्रोधहिगोय। कहत भयो अनिमेषह्वै सोंहें ऐसे जोय॥ बज्रसहित ममकर उठो ऐसोमें जोताहि। त्रासमान नहिं होयको दैत्यप सोहैचाहि॥ तूनबिथा नेकहु करत यामें अचरज भूरि। जान्योमैंतू है रह्यो महत धीर्य्यसों पूरि॥ देहमाहिं औ द्रव्यमें कीजे नहिं बिश्वास। दोऊये थिरहैंनहीं जानतज्ञान प्रकास॥ कालबह्निके माहिंयह परो जगतहै सर्ब्ब। जानत मन में मैंहुहौं दैत्यप प्रज्ञ अखर्ब्ब॥ महतहु तोबलवानतू अबयहिपायदशाहि। नेकहुग्लानिनकरत है बलिमनमें अवगाहि॥ अरिल॥ नष्टताहि तूजगकी जानत। याते हर्ष शोक नहिं आनत॥ बलिबिद्वान महाहैतूबर। कालहि जानततूउन्नतकर॥ दैत्यपशुभऔअशुभनमेंगुनि। लेतहंसलौं शुभहीको चुनि॥ तेजीतेलोकनको तनिमति। तोसम और न ज्ञानमानअति॥ रहतजहांलागतनाहिं तोमन। कमलपत्रमें जैसे जलकन॥ कबहुं नहीछूटन रजऔ तम। तोकोयाते कोउन तो सम॥ प्रीतिअप्रीति नहीं तूराखत। काहूमें नसत्यनिति भाखत॥ दया तोहिं लखि मोको आवति। तोहिं हनन की रुटनहिं भावति॥ दोहा॥ दुखद बरुण की पाशसों तेरो बधो शरीर। करिहि प्रजा अपचार जब छुटि जैहै तब धीर॥ रागगीती॥ सुनु भार्या सब सासुसों करवाइकै गृहकाम। अरुपितासों करवाइहैं सुतकाम गृहके आम॥ पद धुवावैंगे शूद्रहू बरबिप्रसों सहहर्ष। अरुब्राह्मणीको राखिहैं गृहमाहिं बलिउत्कर्ष॥ सबपुरुष कुत्सि-

त योनिमाहीं छोड़िहैं निजबीर्य । तजिबर्ण देहैंधर्म अपनो दैत्य राज सधीर्य ॥ अरु करैंगे हे सर्बभोजन कांस्य भाजनमाहिं । परस्पर संकोचको कबहौंहु करिहैं नाहिं ॥ दोहा ॥ ऐसोह्वैहैं काल जब तो शरीरते सर्ब । क्रमसोंजैहैं छूटिये पास सुप्रज्ञ अखर्ब ॥ तोमर ॥ हमते न तू करुत्रास । नितिहीं रहो सहुलास ॥ हमजो बतायो तोहि । तिहिकालकोतू जोहि ॥ कहिदैत्यसों इमि बैन । सुरराज गोनिजऐन ॥ जयपायकै उत्कर्ष । लसतोभयोसहहर्ष ॥ ऋषि तासु सुस्तुति स्वक्ष । करतेभये बरदक्ष ॥ सुनि तौन श्री सुरराज । अतिलह्यो मोद दराज ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेबलि बासवसंबादेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ बंध्वादिकको नाशअरु भये राज्यको नाश । धीरजधारेलहतजन आनँदकोपरकाश ॥ बलिबासवसँबाद कहि कह्योपूर्ब तुमतात । करिकैकृपा महानबर परमप्रज्ञबिख्यात ॥ प्राप्त होयगो सिद्धिको जो जन पूरब तास । औ ह्वै हैं जिहि पुरुषकी महत वृद्धिको नास ॥ ताको पूर्ब सुभावसो कैसोहोत सुजान । अबयह मोहिं कहोनृपति करिकैकृपामहान ॥ भीष्मउवाच ॥ वृद्धि अवृद्धिहि लहनकी चेष्टाको सुनुभूप । पूर्बहि मनकहि देत है लहिमुद अमुद अनूप ॥ कहत एक इतिहासहौं मैं यहि मैं तवपाहिं । है संबाद सुरेश औ श्रीको ताके माहिं ॥ चरणाकुलक ॥ फलसों परम तपस्यावारे । ज्ञानी नारद सुऋषि सुढारे ॥ फिरत तिहूं लोकनके माहीं । संशय कहूं लहत हैं नाहीं ॥ बर ध्रुबद्वार वहां गंगाको । धरिकै हियस्नान इच्छाको ॥ जाते भये मोदसों पागे । नारद सुऋषि महा बड़भागे ॥ तौ नहिं समय इन्द्रहू आयो । सुर गण सहित ओजसों छायो ॥ तहां स्नान करतभे दोऊ । औजेसंग अमरहे ओऊ ॥ करनलगेजप स्नानहि करिकै । दुओ तदनु बार्ता बिस्तरिकै ॥ इतनहिं माहिं भानु भो उदित । उठिकै स्तुति करतभे मुदित ॥ दोहा ॥ उदितभयो रबिजिहि समय

तिहहि समयमें दक्ष ॥ नभमें तिनको रबिहि सम तेजपरयो लखि स्वक्ष॥ बेगगरुड़ अरु भानुको तैसोही तिहिमाहिं। नारद औ सुरराजके सो आवत मोपाहिं॥ अपनी भासों करतजो लोकन माहिं प्रकास। ताके बिचबर कमलमें लक्ष्मीभरी हुलास ॥ देखि परी तिनदुहुनके शिखिकीज्वाल समान। धारण कीन्हे भूषणनि भासोंभरे महान ॥ चरणाकुलक ॥ श्रीलक्ष्मी अति तेजस छाई। ब्योम जानते अति सुखदाई॥ सुरपति औ नारदकेसोहैं। आई सुरपहु ह्वै बिहसोहैं॥ गयो सनारद सोहें श्रीके। नमस्कार भो करत नजीके॥ तदनु सबिधिसों पूजा करिकै। ऐसे कहत भयो मुद धरिकै॥ शक्रउवाच॥ कोहैतू कितसों इतआई। जैहैकहां हर्षसों छाई ॥ श्रीरुवाच ॥ तिहुंलोकनमें प्राणीजेते। मोको चाहतहैं सबते ते॥ बिकसितकंज भानुकेकरसों। दलको सहस भरोभावरसों॥ लक्ष्मी आदिक नामहमारे। हैंबहु हेसुरराजसुढारे॥ बिजय हो-नबारी जिनबारी। रहति ध्वजामें हौं तिनबारी॥ धर्मशील जनके गृहमाहीं। सुनु सुरपति हौं रहति सदाहीं। औनहिं भजत कबहुं जेरनमें। रहतीहौं मैं तिनके तनमें ॥ औहै जिनमें उदारताई। रहति सदाहौं सुनु सुरराई ॥ दोहा ॥ औजेजन मतिमान हैंतिनमें रहतिसदाहिं।औजेजन हैंनम्र अति बर तिनहूंके माहिं॥ चरणाकुलक ॥ धर्मसत्य हेअसुरनमाहीं। याते रहतीही तिनपाहीं॥ अबतिन धर्मसत्य सबत्यागे। अधर्म औअसत्यमेंपागे॥ यहितें मैंअब तिनको तजिकै। आईपास तिहारे ब्रजिकै॥ अबमैं रहिहौं बासव तोमें। निश्चय जानुकह्यो यहजोमैं ॥ शक्रउवाच॥ कैसेहुते दैत्यहे आगे।अबते कैसेभये अभागे ॥ तिनको तजि आई मो पाहीं। मोहिंसत्य कहुगुणि मनमाहीं ॥ श्रीरुवाच ॥ पूरब दैत्यधर्म हेधारे। धीर्य्यहि छोड़तनहेसुढारे॥ दानादिकहि करतहे नीके। पूजत हे गुरु चरणहि सीके॥प्रेमभक्त हेबिप्र नबारे। राखत गृह हे स्वच्छ सवारे॥राखतहुते अक्षमा नाहीं।रहतजितेन्द्रिय हुते

सदाहीं ॥ मंत्री औ सेवककोराखत । हुतेप्रसन्न सत्यहेभाखत ॥ यथायोग्यसन्मानकरतहे । औकाहूको नहिंनिदरतहे ॥ सोवतहे संध्यामेंतेना। होतेगर्बकनिकटैहेना॥ स्नानादिकसुक्रियाहैजेती । रतिसोंकरतहुते सबतेती ॥ उठिकैप्रातहिव्रतकेमाहीं। लखतहुते निजमुखहिसदाहीं ॥ शयनकरत बासरमें हेना । औसुअर्द्ध रजनीलौं तेना ॥ रक्षाकरतहुते दीननकी । खबरिलेतहे धनहीनन की ॥ ताकतहे कबहुन परनारी। करत दयाहे भूतनवारी ॥ दोहा॥ ऐसे गुणवारेहुते जब सबदैत्यसुबेश । तबमैं तिनकेपासमें रहत हुती स्वर्गेश ॥ सृष्टिभई उत्पन्नहे जबसों तिनके माहिं। युगलौं रही अनेकमैं आनँद सहित सदाहिं ॥ जब लहि कुत्सित समयको तज्योधर्म तिनसर्ब । काम क्रोधके बशभये जबमैं लखे अखर्ब ॥ लागे करन बड़ेनको निंतिहि अनादर तौन । करनलगे परिहास अरु सभासदनके भौन ॥ रामगीती ॥ प्रत्युत्थान बड़ेन को नहिंलगे दीबेतौन । अरुपिता सों कहनलागे बचन दुर्मति भौन ॥ तजि हयाको जे योग्य कबहूं नाहिं कहिबे दक्ष। अनधर्म करिकै प्राप्तजोहै होतअर्थ प्रतक्ष ॥ तिहिमाहिं श्रद्धा करन लागे भरेदुर्मति भूरि । अरु नारि तिनकी सर्बते बेहयापनसों पूरि ॥ कटु बचन लागीं पतिनसों बहुकहन नित्यसुरेश । नहिं करन आदर लगे गुरु को धरि प्रमाद अशेश ॥ बिन दिये भिक्षा बलि सुभाजन करन लागे सर्ब्ब । अपवित्रही जिनकी रसोई सूदअज्ञ अखर्ब्ब ॥ निति करनलागे भयहि त्यागे सुनोहे अमरेश। श्वानादिको उच्छिष्ट भोजन लगेकरन हमेश ॥ अरु नारितिनकीदियेतजिसब धामवारेकाज। गृहपशुनकेते अनादर को लगीकरन दराज॥ बिन दियेहीते शिशुहि भक्षण लगीभक्ष पदार्थ। अरुअनूपादिक चारुभक्ष बनाय करिकै स्वार्थ॥ तेदैत्य आपुहिलगे भक्षण करन तजिबर रीति। मख बिनहि भक्षण करनलागे मासधारि अनीति ॥ अरुलगे गृहगृह माननित्यहिं

कलह करन अखर्ब। सतकार नीचन करनलागे बड़ेन कोधरि गर्ब ॥ जन अधर्मी धर्मीनकी निन्दाहि लागे कर्ण। अरु होन संकर लगो तिनमें परम धर्महि दर्ण ॥ जन धर्मबिदते लगेकीबे दासिकामें भोग। बरधर्म पत्नीमाहिं रतिसों दियोतजि संयोग ॥ धरिनारिबारे बेशको नरबेश नरको नारि। बिच सभा केते लगे नाचन भावको बहुधारि ॥ अरुशूद्र कीबे लगे ब्राह्मण कर्मको अवदात। राज्यमें तिनके सुताश्रित भये पितु अरु मात ॥ बरबेदबिद ते जीविकारथ कृषी ल्यायो कर्ण। गुरुकी सुआज्ञा भंग लागे करन दुर्मति धर्ण ॥ अरु श्राद्ध माहीं मूर्ख बिप्रहि लगे भोजन देन। तिमिही अभक्षहि लगेभक्षण महादुर्मति ऐन ॥ इहिभांति कीबे अनाचारहि लगेदानव सर्ब्ब। तब भई तिनको छोड़िबेकी ममसुबुद्धि अखर्ब्ब ॥ अब इन्द्र मैं तवपास आई राखुमोहिं सशर्म्म। जो पूजिहै तू मोहिं तौ सब देवताहू पर्म्म ॥ धृति शान्ति आशा क्षमा श्रद्धा बिजिति संतति वृत्य। येअष्टदेवी रहतिहैं मैं रहतिहौं तहँनित्य ॥ दोहा ॥ तुमको गुणि के धर्ममें तत्पर सहित हुलास। आईहैं स्वर्गेशहम सबतुम्हारे पास ॥ सोरठा ॥ लक्ष्मीके ये बैन सुनिकै श्री स्वर्गेश बर। सह नारद मतिऐन अतिही हर्षित होतभो ॥ जयकरी ॥ बहनलगे शीतल पवमान। मन्द मन्द तहँ सुरभी बान ॥ सह लक्ष्मी सुरपति को सर्ब। आये देखन देव अखर्ब ॥ तदनु सलक्ष्मी श्रीसुरराज। सह ऋषिनारद देव समाज ॥ भये पधारत दिव कोभूप। भरे दीप्तिसों परम अनूप ॥ स्वर्गमाहिं जब श्रीस्वर्गेश। पहुंचतभो तिहि समय सुवेश ॥ वृष्टि सुधाकी भई अमन्द। बजन दुन्दुभी लगी नरेन्द ॥ दिशो सुहावनि लागीसर्ब। समय पायकै वृष्टि अखर्ब ॥ करत भयो भूमें सुरराज। बढ़तभयो बर धर्म समाज ॥ रत्नसों भूषित अभिराम। होतिभई भूनृप बुधि धाम ॥ दोहा ॥ लक्ष्मी सह सुरराजकी यहजोकथाअनूप। पढ़िहैं

ताकोजौनसोंसम्पातिलहिहैंभूप ॥ लक्ष्मीको जो भवअभव ताको धर्म्माधर्म्म । है कारणतुमको कह्योसो हम भूप सुकर्म्म ॥
इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेश्रीबासवसंबादसमाप्तश्चतु:पंचाशत्तमोध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ किये कौन आचार अरु किहि बिद्या सों धर्म्म । औ सु पराक्रम कौनसों श्रीबर बीर सुकर्म्म ॥ परमात्मा के थानको प्राप्त होत जनदक्ष । कहौ आपु अवगाहि कै मोको प्रश्न प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ मोक्षधर्मके माहिंजो तत्पर रहत सदाहिं । होय जितेन्द्रिय लब्धाहारी बैठि सुप्रज्ञन पाहिं ॥ प्रकृति परे जो ब्रह्म है नित्यानन्द अनूप । ताको प्रापत होतहै सो जन श्रीबर भूप ॥ कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसंग में दक्ष । जैगीषव्य महा सुबुध ब्रह्मज्ञानी स्वक्ष ॥ औ श्यामल देवल सुऋषि तिनको है सम्बाद । तामाहीं सो भूप तुम सुनिये छोड़ि प्रमाद ॥ देवलउवाच ॥ नमस्कार जो करतहैं तिहिते खुशी न होत । औ निन्दा जो करतहैं तापै क्रोध उदोत ॥ करतनहीं हौ कबहुं तुम जैगीषव्य सुजान । कैसी तवमति है कहा ताको मूल सुठान ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिकै जैगीषव्य ऋषि देवलके ये बैन । कहतभये इमि महातपशील सुमतिकेऐन ॥ जैगीषव्यउवाच॥ सोरठा ॥ पुण्यकर्म है जौन तिनकी जो गति शान्ति अरु । तुम्हैं कहत हौं तौन श्यामल देवल सुऋषिसुनु ॥ दोहा ॥ हृदयग्रंथि को छोड़ि जे सुख सह फिरत हमेश । जिनके बन्धुन काहु के बंधुनतेसुबुधेश ॥ पुण्यसुकर्मा प्रज्ञबरतेई औरनकोय । सुस्तुति निन्दाको सुनेज्ञान चक्षुसों जोय ॥ होत खुशीनहिं औ करत क्रोध कबहुं मनमाहिं । सबहीको सम दृष्टिसों देखतरहत सदाहिं ॥ जे जनकै धर्मज्ञबर नित्य करत हैं धर्म । निन्दा सुस्तुति ते सुने लहत न क्रोध अशर्म ॥ पुण्य सुकर्मा जौनजन तिनको मारग जौन । तामें मैं नित चलतहौं करत अनत नहिं गौन ॥ निन्दा औ सुस्तुति सुने लहत न मैं रुटहर्ष । श्यामल देवल

सुऋषि बर प्रज्ञावत उत्कर्ष ॥ उकछा ॥ हमको पूछो जौन । कह्यो तुम्हें हम तौन ॥ अब ज्ञानिनकी बात । कहत तुम्हैं हौं ख्यात ॥ दोहा ॥ खुशीहोति ज्ञानीनके भये परम अपमान । खेद महाही चित्तमें होतभये सनमान ॥ करतजौन अपमानहै जाको ताकोपाप । प्राप्तहोतहै आयके तिहि जनको सहदाप ॥ जिनके परपद लहनकी इच्छारहति हमेश । तेयहव्रत धारणकिये रहत सदा ताजि क्लेश ॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेजैगीषव्यासितदेवलसंबादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच॥दोहा॥ युक्तसर्बवर गुणनसों प्रियलोकनकोसबै । ऐसो कोहै लोकमें कहु बरप्रज्ञ अखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत एक इतिहासहौं यहिप्रसंगमेंभूप । उग्रसेन अरु कृष्णको है सम्बाद अनूप ॥ उग्रसेनउवाच ॥ जाकेसुनिके नामको खुशीहोत सबलोक । बहु गुणसों सम्पन्न बर नारद प्रज्ञा ओक ॥ कहोमोहिं श्रीकृष्ण तुम तासु सर्ब वृत्तान्त । तुम ज्ञाता हौसर्बके वासुदेव श्रीकान्त ॥ बासदेवउवाच ॥ नारद केगुण सर्बते तुमको कहत प्रतक्ष । यादवपति सुनु तौन तुम उग्रसेन बरदक्ष ॥ नारदमें सुचरित्र गुणहैं बहुपैअहँकार । करतन याते लोकमें पूजित रहत उदार ॥ रामगीती ॥ चापल्य भय अरु अरति औ नहिं क्रोध नारद माहिं । अरु करत जो सो शीघ्रताके माहिं पागिसदाहिं ॥ बर शूरहै औ सत्यबादी तजे सबकामादि । बरज्ञानसोंजो गुणतहै निति तत्त्व जौन अनादि ॥ जोतपस्या औ ज्ञानसों अरु तेजसों परिपूर्ण । अरु भणत सुन्दर बचनहै कल्याण कारक तूर्ण ॥ इतिहास करिकै ग्रहण सुन्दर अर्थको जो कर्त । अरु क्षमा धारे रहत है निति नहिं कुबैन उच्चर्त ॥ बहु करत नीकी बारताअरु बहुत श्रुत है दक्ष । नहिं लालसा को करत कौनहु परम पण्डित स्वक्ष ॥ है अदीन अक्रोध औसुअलुब्ध औ निष्काम । है सुहरिकी भक्ति जाके हृदयमें दृढ़ माम ॥ सब दोषसों अरु मोहसों

सो रहित है बिख्यात । नहिं नेक संशय हृदय माहीं जासु अति अवदात ॥ सबसंग माहिं अशक्तहै पै लगत शक्त समान । मनको लगावत है न कौनहुं कार्य माहिं सुजान ॥ सोमनहिंजानत सबहिके पैकरत निन्दा नाहिं । है कुशल अतिही सुऋषि नारद सर्ब बिद्यामाहिं ॥ अरु देत कालहि ब्यर्थ जानन जितेन्द्रियहै पर्म । निति योग माही रहत तत्पर अप्रमत्त सशर्म ॥ नहिं दूसरेके लाभ माहीं करत द्वेषहि तौन । अरुधरे लज्जा रहतहै निति परम प्रज्ञा भौन ॥ दोहा ॥ याते पूजित सुऋषिबर नारदहै सर्बत्र । सबहीको प्रिय लगतहै यत्रजातहै तत्र ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेबासुदेवोग्रसेनसंबादोनामषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः

जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ बहुप्रकारकी जेकथा सहइतिहास अनूप । तिनकोसुनि पश्चातका पूछोश्रीबरभूप ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अधिकारी जो मोक्षको तासुस्वरूप अमन्द । बहु इतिहासन माहिं सुनि भूपति कुन्ती नन्द ॥ लखिकै तत्त्वज्ञानके अधिकारहि निज माहिं । सुनीजोन सोई कथा पुनि भीषमके पाहिं ॥ सुनिबेकी बिस्तारित करि इच्छा हियकेबीच । पूछतभोपाण्डव नृपति अरिदल दमन निभीच ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ध्यान कर्म अरुकाल अरु युगयुग कीजो आयु । आदि अन्तजो सर्बको अरुजोहै नरराय ॥ लोकतत्त्वसब औसुनो भूतनवारी सर्ब । आगति गति हमको कहो प्रज्ञावान अखर्ब ॥ भृगु अरु भारद्वाज को पूर्बकह्यो इतिहास । सोसुनिकै बिमला भई मेरी मति मतिरास ॥ तौनहि पुनि बिस्तारिकै कहो मोहिं बड़भाग । सुनिबेकी है लालसा मोहियसह अनुराग ॥ भीष्मउवाच ॥ कह्यो व्यासमुनि पुत्रको जो इतिहास अनूप । यह प्रसंगमें कहतहौं तुमको सोमैं भूप ॥ सब भूतनको कौनहै कर्त्ता उत्तम पर्म । अरुजो कालज्ञान सों जानो जाय सुकर्म ॥ पढ़ि अंगन सह वेदको श्रीशुकबर बुधिधाम । ब्रह्मचर्य्यमें रहनकी अनिश कामनामाम॥ करिकैहियमें ब्यासको

पूछत भो संदेह । महाप्रज्ञ धर्मज्ञ बर परम शीलको गेह॥ शुकउवाच॥ ब्राह्मण के जोकर्महैं कहौतौन तुममोहि। तुमसोंवक्ता और नहिं कहूंपरत हैं जोहि ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिकै शुकके बैन ये व्यासविज्ञ अवदात। गुनिकै हियमें कहत भो तिहिको इमि बिख्यात ॥ व्यासउवाच ॥ अव्यय अजर अनादिअज स्वच्छ सनातन पर्म। ऐसो जोहै ब्रह्मसो सुनहु सुतात सुशर्म ॥ सब भूतनको सोयहै कर्ता आनँद रूप। ज्ञानीहूं दुर्लभकेहत ताको परम अनूप॥ तुमको कालस्वरूप अब कहतसुनहु शुकख्यात। दशअरु पञ्च निमेषको काष्ठा नामक तात ॥ कला कहत है तीसजो काष्ठा जिनको नाम। कला तीसऔ कलाको दशम भाग बुधिधाम ॥ तासुमुहूरत नाम है अरुमुहूर्तको तीस । बासर होत यथा निशिहु भणत महान मुनीश ॥ निशिबासर जे तीस हैं तासु महीना नाम। अयन नाम षटमासको दोय अयनको आम॥ बर्ष नाम इनको सुनो करत विभाग दिनेश। मर्त्यलोक की बर्षलौं संख्या कही अशेश ॥ पितरन के दिन रातिको अबहौं कहत प्रमान। पितरनको यक मासको निशि दिन होतसुजान॥ शुक्लपक्षको होतदिन कृष्णपक्षकी राति। जानत तेजन शास्त्रमें जिनकी धिषणा भाति ॥ देवनके दिन रातिते एक बर्षको होत । बासर उत्तम अयनको जानोशुक बुधिपोत॥ रजनी दक्षिण अयनको जानो अबमैं अग्र। ब्रह्माके दिन रातिको कहत प्रमाण समग्र॥ बरगादोहा ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग तिनकी जोहैआयु। पृथक्पृथकमैं कहत तुम्हैं हौं सुनहु तौन मनलायु॥ सुरके चारिसहस बर्षनको सतयुग होत सुजान। संध्यासोशत चारिबर्षकी औ संध्या शसुठान॥ आदिसंधिजो युगनकी ताको संध्यानाम । है संध्यांसहअन्त सन्धिको नाम सुनो बुधिधाम॥ तीन सहस बत्सरका त्रेता औ संध्याशततीन। बत्सर कीहै औ संध्यांशहु होततात परबीन॥

दोयसहस बत्सरको द्वापर औ संध्याशत दोय । बत्सरकी है औ संध्यांशहु द्वै शतहीको होय ॥ एक सहस बत्सरको कलियुग औ संध्याशत एक। बत्सर कीहै औ संध्यांशहु तासुहोत सबिबेक ॥ दोहा ॥ ऐसो जो यह काल है ताहि ब्रह्मविद पर्म । कहत निरन्तर ब्रह्म है गुणिके जात सशर्म ॥ सतयुग माहीं रहत है चतुष्पादबरधर्म । सत्यहिरहत अधर्मकी प्रबृति नहोतिसुकर्म ॥ और युगनमें होतहै एकएक पदक्षीन । चौर्य्यकामअरु अनृत अरु मायाते सुप्रबीन ॥ बढ़ती होति अधर्मकी जानोनृप सिद्धान्त । सतयुगमें नहिं होतहो रुजजनको क्षिति कान्त ॥ सिद्ध होतहै अर्थसब आयुचारिशत बर्ष । होतिजननकीही रहे बली होत उत्कर्ष ॥ और युगन में आयुमें एकएक पदक्षीन । होत सुन्यो मतिमान जन केतटभूप प्रबीन ॥ सुनिबे कोअरुपढनको बेदनको फलजौन । उत्तर उत्तर युगनमें न्यूनहोत बुधिभौन ॥ सोरठा ॥ पृथक पृथकहैं धर्म सतयुगादि चारौनके । सतयुगमें तपपर्म त्रेतामाहीं ज्ञानबर ॥ द्वापरमाहीयज्ञ कलियुगमाहीदान नृप । येचारिहु केप्रज्ञ कहेतुम्हेंहम धर्मबर ॥ दोहा ॥ देवनकेद्वादश सहस बर्षन माहिं अनूप । सतयुग आदिक जातह्वै चारोंयुगसु नुभूप ॥ इन चारिहुकी जौनहै आवृत एकहजार । ब्रह्माको दिन एकसो जानोबुद्धि अगार ॥ येतिहि दीर्घा होतिहै रजनिहु बिधि की भूप । प्रलय होत जब शयनको ब्रह्माकरत अनूप ॥ फेरि निशाके अन्तम जागि प्रजापति पर्म । करतसृष्टि उत्पन्न है क्रमसों भूप सुकर्म ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्म्मेव्यासशुकसंबादेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥ जिमिजन जलके माहिं परि बूड़त औ उतरात । जननमरण को देखिदुख तिमि जगमेंबिख्यात ॥ रुचै जनहि कैवल्य जो ज्ञानवान तो होय । लहै ज्ञानजन ब्रह्मपद पायरहै सुखमोय ॥ अबुधनको जन सबुधते भवसागरते पार ।

ज्ञानवान उपदेशसों करत निशंक उदार ॥ नष्टभयो है दोष शुक जिनको ऐसेजौन। सुमुनि छूटि दारादि सों दुखद जानि अतितौन ॥ देशादिक बारहनको गुनोजानि सुबदाय। लहिबे काजैयोगकी सिद्धि सुमनहिलगाय ॥ देशकर्म अनुराग अरु अर्थ अहार उपाय। निश्चय चक्षु सुद्वार अरु अरुसंहार अपाय ॥ मनदर्शन देशादि ये बारह करै बिचार। इनमेंप्रथमहि देशको सुमती पुरुषसुढार ॥ होयपवित्र अनूप अति होयजासु तट तोय। बालूजामें होयनहिं औ जिहिको शुकजोय ॥ होय खुशीमन कंकरन जामें एकहु होय। नत उन्नत नहिंहोय अरु परे कण्टकन जोय ॥ योग्य सुयोगाभ्यास के ऐसो होतसुदेश। अब मैं कहत बिचार हौं कर्मनको शुभवेश ॥ सम अहारकरिकै रहै औश्रम बहुतकरैन। सोवैजागै समय लहि आलसकबहुंधरै न॥ राखै शिष्य सुशीलमें गुणिकै बर अनुराग। अभअभावके काजको करैअनत नहिं लाग॥ राखे धनहिं अभावको चिन्ताके दुखदाय। आसनादिको करबजो ताको कहतउपाय॥ करबदूरि रागादिकोताको कहत अपाय। गुरुके अरु बरबेदके बचनमाहिं सुखदाय॥ मानव जौन प्रमाणहै निश्चय ताकोनाम। नेत्रादिक इन्द्रियनको राखै बशमें आम ॥ शुद्धहिकरै अहार निति प्रवृति बिषयके माहिं। ताको जौन अभावहै सो संहार सदाहिं ॥ प्रवृत रहत संकल्प औ बिकलपमें मन नीति। शुद्धाचार समदर्शि है करै भक्तिवी नीति ॥ जन्ममृत्यु अरु व्याधि अरु जरादुःख अरु शोक। इनको जौन बिलोकिबो दर्शनसो मतिओक॥ जाके इच्छा मोक्षकीहोय तौन मतिमान। द्वादशहू इनमाहिं सो प्रवृतरहै गहि ज्ञान ॥ जोजन उत्तम ज्ञानकी इच्छकरै हमेश। बाणी मनको बुद्धिसों रोकै तौनबुधेश॥ जोचाहै कैवल्यसो ज्ञान परम अवदात। तासों आत्माको करै भिन्न बुद्धिसों तात ॥ जो जन जानत आत्माहिं सोभवसागर पार। होत जनन औ

मरण के दुखसों छूटि अपार ॥ जो बर योगाभ्यास में प्रवृत्त भयो जन होय । नित्यकर्म जो नाहिं करै लगत दोषनाहिं कोय ॥ योगसुरथपै बैठिकै योगीजन अभिराम । ब्रह्मनगर को जातहैं आनँद सह अतिमाम ॥ ब्रह्मनगरको जायबेकी जोबिधि हैतात। सोमैं तुमसों कहतहौं सुनो तौन बिख्यात ॥ सोरठा ॥ प्रथम होइकै मौन सप्त धारणा कीजिये। तदनुकरै बुधिभौनजन प्रधारणाको सुगुणि ॥ दोहा ॥ पदसों कैलै जानुलौं जौन अंगहै ताहि। जानो भूतिहि माहिं शुक थापि मरुत अवगाहि ॥ भूकै बीज लकार सह करै द्रुहिण कोध्यान। पांच घरीलों बुद्धि सों थिर ह्वैकै मतिमान॥ हैयहपृथ्वी धारणा सबिधि किये ते याहि। पृथ्वीकी जय लहतहै महत सुबुध अवगाहि ॥ गुदलौं लैकै जानुसों जानो नीरस्थान। तामें मरुतहि थापिकै पांच घरीमतिमान ॥ जलके बीज बकार सह नारायण कोध्यान। करै लहत जलकी जयहि अरुजहोत शुभठान॥गुदसोंलैकै हृदयलों अग्नि स्थानअनूप। तामेंमरुतहि थापिकै पांचघरी मतिरूप॥ शिखिकै बीजरकार सह करैशंभु कोध्यान। जीतैअग्निहि रोगसों रहित होय मतिमान ॥ लेय हृदयसों मध्यलौं भृकुटीके अवदात। जानो सोसुस्थानहै मारुत कुलकोख्यात ॥ तामेंबायुहि थापिकै पांचघरीलौं दक्ष। मारुत बीजय कारसह ईश्वरको अतिस्वक्ष॥ किये ध्यानबरहोतहै नभचारी बुधिधाम। जीति बायुकोलतहै योगी शुक अभिराम ॥ भृकुटी को जो मध्यहै तिहि सों लैकै स्वक्ष। थान जौन ब्रह्माण्डलों सोनभको हैदक्ष ॥ बायुहि तामें थापि कै नभको बीज हँकार। तासह शंकरको परम दोय घरीहु उदार॥ जीति गमनको लेतहै कियेध्यान अवदात। योग माहिं जोरहतहै तत्पर बिधिसहतात॥ अहंकार अव्यक्तकी सुनोधारणा जौन।सुनहु तात अब कहतहौं तुमको दोऊ तौन॥ स्थूल देहते भिन्नहो मैंहींहौं यहसर्व। अहंकार बर धारणा जानो याहि

अखर्व ॥ मैंहींहौंसबजौनशुक यहअभिमानमहान। ताकोकरिबो नाशजो ताहि परम मतिमान ॥ बर अव्यक्त सुधारणा कहत ज्ञानसों पर्म। कही तुम्हेंहम धारणा सातहुतात सशर्म॥ सोरठा॥ योगयुक्त जन जौन ताको जो जो होतहै। बिक्रम प्रापत तौन सो सोतुमको कहतहौं॥ औआत्माको ध्यान कीन्हे अन्तःकरण में। योगहि सिद्धि सुठान प्राप्तहोत सो कहतहौं॥ प्रकाशात्मा जौन कहिहैंताके रूपहम। तिन्हेंलखै मतिभौन अहन्ताहितजि देहकी ॥ दोहा ॥ अहन्ताहि छोड़तनहीं थूल देहकी जौन। प्रका शात्मा केनहीं लखत रूपको तौन॥ अहंभावजोदेहकोछूटिजात हैजास। पूर्वरूप कोहोतहै प्राप्ततौनमतिरास॥ सोरठा॥ प्रथमहो-तरँगश्याम तदनुहोतहै रक्तरँग। तदनुपीत अभिराम तदनुहोत हैरँगसित॥ दोहा ॥ श्वेतरंगलहि होतहै सूक्षम बायुसमान। तदनु लहतहै जौनफल सोमैंकहत महान॥ करतसृष्टिउत्पन्न है बिधि-लौंयोगीतौन। भूको देतकँपायहै लहिमारुत गुणजौन॥ नभकी शक्ति अदृश्यजो ताहि लहत नभमाहिं। ऐसे औरहुकी सकति पावतसंशयनाहिं ॥ सोरठा ॥ अहंकारको एकजीते पांचहु भूतजे। जानतहैं सबिबेक तेऊ जीतेजातहैं ॥ दोहा ॥ जीते इनषटहूनको अति निर्मल जोज्ञान। ताकोप्रापतहोत है योगीजौन सुजान॥ सगुण भयो जोआतमा व्यक्तताहि अव्यक्त। जानत योगीजौन सोभयो ज्ञानमें रक्त॥ परम बोध अव्यक्तको ताके पूरबस्वक्ष। सुनु वृत्तान्तहि व्यक्तके मैंहौं कहत प्रतक्ष॥ हैं पचीसबर तत्व शुक योगमाहिं अभिराम। औसांख्यहुके माहिंते तुम्हेंकहतहौं आम॥ चरणादोहा॥ मूल प्रकृति अरु महातत्वअरु अहंकार गु-णतीन। ज्ञानेन्द्रिय औ कर्मेन्द्रिय औ मन अरु चित्तअपीन॥ दोहा॥ महाभूत अरुबुद्धिअरु पुरुषकहे ये तत्व। तोहिं पचीसों सांख्यके मतसों तात ससत्व ॥ होय बढ़ै जीवैमरै व्यक्तजानि तू ताहि। कह्यो व्यक्तको रूपहम तोहिं तात अवगाहि॥ इन

चारिहुसों रहित जो ताहिजानु अव्यक्त । जानत हैं है आतमा जौन ज्ञान में रक्त ॥ ईश्वर कारण रूपहै जीव सुकारज रूप । जानतयहि सुबिभाग को श्रुति मतसों मतरूप ॥ जीवसुभोगत कर्मफल ईश्वर भोगत नाहिं । दुओआतमा रहत ये तात देहके माहिं ॥ तत्वज्ञानी जौन है जीवनमुक्त अमन्द । ताको लक्षण अबकहत तोहिं तात निर्द्वन्द ॥ ममताको रागैनहीं रहै सदानिर्द्वन्द । अहंकारछोड़ै कहै कटुनवचन दुखकन्द ॥ अहं कार त्यागेरहै औ रुद्द द्वेषिहिसर्ब । जो अपमान करैगुणै अशुभ न तासु अखर्ब ॥ मनबाणी अरु कर्मको रहै दबाये नित्य । सब भूतन में समरहै कहैन कबहुं असत्य ॥ इच्छानेच्छा ना करै भोजनहीके काज । करै उपाय निबाहिसब देह सर्बतजिसाज॥ प्रापतहोय अनिष्टजब व्यथितहोय नहिंनेक । राखै मनएकाग्र निति ह्वैअहिंस सबिबेक ॥ कह्योतोहिं सिद्धान्तहम सांख्य शास्त्रको स्वक्ष । योगशास्त्रको कहतहौं अबसिद्धान्त प्रतक्ष ॥ परम योग ऐश्वर्य्यको प्राप्त होतहै जौन॥यहि भवसागर महतको लहतपारहै तौन ॥ भये योगसे प्राप्तजे अणिमादिक बसु सिद्धि। तिनमाहीं बैराग्य सों जोन लगत बुधिनिद्धि ॥ पावत योगैश्वर्य्य को योगी और न कोय।कह्यो तुम्हैं सिद्धान्त यह योग शास्त्रको जोय ॥ योग मतहि अरु सांख्य के एकहि जानत जौन । ह्वै करिकै निर्द्वन्द जन लहत ब्रह्मपद तौन ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

व्यासउवाच॥चरणादोहा ॥ सांख्यमार्ग अरु योगमार्गसो दुओब्रह्म पद देत । सांख्यमार्गते योगमार्गसो हैअतिक्लेश निकेत॥सोरठा॥ यातेदोउन माहिं सांख्यमार्ग सो श्रेष्ठहै ।सो मैं तेरेपाहिं फेरिक-हत हौं तातसुनु॥दोहा॥या भवसागर माहिं जो बूड़त औ उतरा त । आश्रयज्ञानजहाज को करैतौन अवदात ॥ शुकउवाच ॥आ-श्रयकीजै ज्ञानको जगते ह्वैमुक्त । कहत आपुसों ज्ञानको कहो

रूपमति युक्त ॥ जासोंजान्योजातहै बस्तुतत्वअभिराम। कहत मनीषावानहै ताकोबिद्यानाम ॥ ताहिकहतहौ ज्ञानतुम प्रज्ञासो अवगाहि। की प्रापक जोध्येय को परमधर्म है ताहि ॥ आत्मा को उच्छेदहै जिनके मतके माहि। लोकायत ऐसेसुनो सम्मत तिनको ताहि ॥ कहतज्ञानहौं आपुकी तातप्रज्ञ अवदात। कृपादृष्टिसों जोहि कै कहोमोहिं बिख्यात ॥ छूटिजातहै दुःखसब जनन मरणको जौन। जासों सो हमको कहो तातज्ञानके भौन॥ व्यासउवाच॥ आत्माको सु अभाव तौ किहिपै ह्वैहै ज्ञान। याते लोकायतमतहि ब्यर्थ कहत मतिमान॥ आपुहिसों जगहोतहै जौनकहत यहिभांति। प्राप्तहोत कल्याणकोकबहुँन तिनकी पांति॥ कर्ताहै संसारको आपुहि सों नहिंहोत। जैसे कर्ता कृषीको कृषीकार मतिपोत॥ भूतनको पररूपहै ब्रह्मसुनित्यानन्द। और रूप मायापरम जानत सुबुध अमन्द॥ भूतचारि परकारके अण्डज उद्भिजतात।होतजरायुज औ स्वेदज ते देखिपरत हैं ख्यात॥ स्थावरनसों श्रेष्ठहै तिनमें जंगम पर्म। बहुबिशेष जोचेष्टा करति हमेशसशर्म॥ जंगमदोय प्रकारके बहुपद औद्वैपाद। तिनमें श्रेष्ठद्विपादहैंजानो यहनिर्बाद॥ खेचर औपार्थिवसुनो द्विपदहु बिधिकेदोय। तिनमेंपार्थिव श्रेष्ठहै भक्षत अन्नहि जोय॥ पार्थिव दोयप्रकारके मध्यमउत्तम पर्म। निर्णयको उत्तमनके तुमको तात सशर्म॥ कहतभेद मध्यमनको सुनहुतौन तुमसर्ब। जातिधर्म धारण करत यातेश्रेष्ठ अखर्ब॥ मध्यमद्वै धर्मज्ञ यक औधर्मज्ञ नएक। तिनमें जोधर्मज्ञसो श्रेष्ठ गुणोसबिबेक॥ धर्मज्ञहु द्वैबेद बिद एकएक हैऔर। तिनमें जेहैं बेदबिद तौन श्रेष्ठसहगौर॥ बेदज्ञहु द्वैहोतहैं एक प्रवक्ता पर्म। एक औरहै दुहुनमें बक्ता श्रेष्ठ सशर्म॥ बक्ताहू द्वैहोतयक आतमविद यक और। तिनदोउनमें श्रेष्ठहै आतम बिदसह गौर॥ सोरठा॥ आतम बिदहैं तौन सोई जानहु सर्बबिद। सोइ सत्यको भौन सोईत्यागीशुचि

परम ॥ दोहा ॥ जोबर ब्रह्मज्ञानमें तत्पररहत हमेश । ताको ब्राह्मण कहतहैं सुमनस हरण कलेश ॥ सर्बब्यापक जौन हैं आत्मा नित्यानन्द । तेईब्राह्मणहैं परम जानततांहि अमन्द ॥ तिनके चारुमहात्म सन कछू नहींहै ओर । जेब्राह्मणहैंमें कह्यो तुम्हैं तात करिगौर ॥ जोप्रापकहै ध्येयको परम धर्मअवदात। ताकोजानो ज्ञानतू निश्चयकरिकै तात ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥

व्यासउवाच॥दोहा॥ ब्राह्मणको आचरणयह कह्योतुम्हैंहम जौन। सिद्धिकर्मकी लहतहै ज्ञानवानहै तौन ॥ कर्ममाहिंजे करतनहिं संशयको बुधिनिद्धि। तौन लहत निश्चयसुनो तातकर्मकी सि- द्धि ॥ कर्ममाहिं केतेकहत पुरुषारथहै हेतु। किते सुभावहि कह तहैं भाग्यहि कितेसचेत ॥ सर्बभूतनको खण्डिके योगीजे अव दात। परब्रह्मको कहतहैं निश्चयकारणतात ॥ त्रेता द्वापर माहिं अरु कलियुगमें जो होत। तिनजनके मन माहिं शुक संशय करत उदोत ॥ सतयुगमें जनहोतजे सत्वगुणी अभिराम । सम- दरशी समदेहसों रहित होत मतिधाम ॥ ह्वैकै तत्पर वेद में साबिधिकरत तपपर्म । कामद्वेषसों होयकै रहित स्वच्छसहशर्म॥ तप सोंओ बरधर्मसों जेजन युक्त सुजान । सर्बकामकीलहतहैं तेजन सिद्धि महान ॥ तपसों ब्राह्मण होयकै जगतहिं करत अखर्ब । ब्रह्माह्वै प्रभु होतहै भूतनकेरो सर्ब ॥ सोरठा ॥ बेदवान है जौन तिनबरबेद बिचारमें । नित्य ब्रह्म है तौन कह्यो परम दुर्ज्ञेयहै ॥ दोहा ॥ कह्योब्यक्त वेदान्तमें तौनयोग अति स्वक्ष । कीन्हें जान्योजातहै यहजानत बरदक्ष ॥ वेदयज्ञ अरुवर्णअरु आश्रमको अवदात । हुतो बिभागन बीचमें त्रेतायुगकेतात ॥ द्वापरमाहिं बिभागभो बेदादिकको सर्ब । आयुभये तेतातसुनु मनुजन वारीखर्ब ॥ द्वापरवारे अन्तमें तिमिहीं कलियुगमाहिं। नाशवेद कोलगतहै हौनकहत अवगाहि ॥ कलियुगवारेअन्तमें

कहूंरहत कहुं नाहिं। प्रवृत अधर्मभये धरम रहत नहीं भू माहिं॥ औषधको अरु गऊको नष्ट सुरस ह्वै जात। जनश्रुति बेचन लगत अरु धर्म जौनकछु तात॥ पोषत जैसे वृष्टि है शुकभौमनकोसर्ब। वेदाध्यायिनकोतिमिहिंवेदसप्रीतिअखर्ब॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेषष्टितमोऽध्यायः ६०

भीष्मउवाच॥दोहा॥ परमसुऋषि श्रीब्यासके सुनिकै शुकयेबैन। भूरि प्रशंसा ब्यासकी करिकै सोमतिऐन॥ धर्मारथ अरु मोक्षसों युक्त परम अभिराम। फेरिप्रश्न यह करतभो समुदहोय बुधिधाम॥ शुकउवाच॥ चरणाकुलक॥ वेदमान मतिमत मखकारी। अनसूयक बरशुभ ममचारी॥ ऐसो जोजनब्रह्महि कैसे। प्रापतहोत कहोतुमजैसे॥ ब्यासउवाच॥ विद्याबिना सुब्रह्माचारी। औगृहस्थ तपबिन सुखकारी॥ बानप्रस्थ इन्द्रिय बिनरोके। औसंन्यासी सब बिनमोके॥ केहूंसिद्धि लहत हे नाहीं। मैं अवगाहि कहत तव पाहीं॥ परत न देखि ब्रह्मचखसोंहै। तिमिहिं और इन्द्रिय सबसोंहै॥ केहूं परत नहीं है जौनो। परत मनहिं सोहै अनुमानो॥ ज्ञानदीपसों जोहत जोहै। ब्रह्महि प्राप्तहोत जनसोहै॥ सब भूतनमें ब्रह्महि देखै। ब्रह्ममाहिं तिनको अवरेखै॥ ब्रह्महि प्राप्तहोतहै सोई। निश्चय जानहु और न कोई॥ परको औ अपनेको जानै। एकहि और नहीं अनुमानै॥ देवहु ताके मारगमाहीं। सुनुहेतात सकत चलिनाहीं॥ इच्छा करत तासु पदबारी। जानि मोददा परम सुढारी॥ अणुहूते सो सूक्षम जानो। औ महतहुते महतबखानो॥ अन्तसर्ब भूतनको सोई। हैपै देखत ताहि न कोई॥ दोहा॥ ऐसो नित्यानन्द वर ब्रह्म होतहै तात। ज्ञानीहूकों तासुगति दुखसों जानीजात॥ आत्मा के द्वै रूपहैं क्षर एक अक्षर पर्म। क्षर भूतनमें रहतहै अक्षरनित्य सशर्म॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

व्यासउवाच॥दोहा ॥ योगतत्त्व मैं कहतहौं तुमको अब अवतात। जासोंयोगी ब्रह्मपद पावत है अवदात ॥ जोजन है शुचिकर्म अरु इन्द्रिय निग्रहकार। योग्य जानिबे तासुहै ज्ञानपरम सुखकार ॥ स्वप्नलोभ भय क्रोध अरु कामपञ्च ये पर्म । बिघ्न योगमें हैं तिन्हैं करैसुदूरि सुकर्म ॥ चरणाकुलक ॥ जीतै रुटहि शान्तिसोंभारी। मन संकल्पहि तजि दुखकारी॥ जीतै कामहि शुभ मग चारी। सत्वहि धारि अशुभ गणहारी ॥ जीतै निद्राको प्रणधरिकै। औजीतै लोभहि धृति करिकै ॥ अप्रमादता धारि सुहाई। जीतै भयहि जानि दुखदाई ॥ ऐसे इनदोषनकोजीतै। जोयोगी निज शुभको चीतै ॥ इनको जीतैते यशपीनै। होत पापमाहैं अतिक्षीनै॥ सिद्धि होतहै सब उद्गाढ़ै। आनँद दायक ज्ञान सुबाढ़ै ॥ निशिके आदि अन्तके माहीं । मनहि लगावै आत्मा पाहीं ॥ एकहु इन्द्रिय जो अलगाई । तौमति कढ़ति मसक जलनाई ॥ याते सब इन्द्रियके थोकै। अतिही सावधान ह्वै रोकै ॥ चंचल मीनहि धीवर जैसे ॥ पकरत है पहिलेही तैसे ॥ पूर्बहि करिकै सबमें मनको। पीछे नेत्रादिकके गनको ॥ मनसह जब षट् इन्द्रिय लागैं। बीच आत्माके नहिं भागैं ॥ आत्मा करत प्रकाश महा है। इमिजिमि पावक धूमबिना है ॥ गिरि उतंगके शृंग सुहाये। तिनपै औ तरुतर छबिछाये ॥ योगाभ्यासहि धीरज सेती। करै सुकरि प्रज्ञाहि सचेती ॥ योगतेन उद्वेग करावै। मनको नीकी बिधिसों लावै ॥ रहै सुदेवता यतन माहीं। औजिहि गृहमें कोऊनाहीं॥ योगीकरै बास वरतामें। औशून्यापर्वत सुगुहामें ॥ दोहा ॥ ऐसोयोगी जौनवर षट्मासहि के माहिं। प्राप्तहोत है ब्रह्म को यामें संशय नाहिं ॥ शूद्रहु औ नारीहु जो यहि मारगको पर्म। प्राप्तहोहिं तौ परम गति लहिकै होहिंसशर्म ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेद्विषष्टितमोऽध्यायः६२॥

शुकउवाच ॥ दोहा ॥ सुन्योयोग वृत्तान्तमें तुमसों अनुपम सर्व। यक संशय अबतातभो कीजेदूरि अखर्व ॥ कह्यो कर्मको करब अरु कह्यो कर्मको त्याग। वेदमाहिं सो त्यागते ज्ञानहोत बड़ भाग ॥ लहत ज्ञानसों कौनगति कर्म किये अरुकौन। गतिको प्रापतहोत है मानवबरबुधिभौन ॥ कर्म तजन अरु करनमें है बिरुद्ध हे तात। कहोमोहिं अवगाहिकै बक्ता तुम अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ मधुभार ॥ सुनिये सुबैन। बरज्ञान ऐन ॥ अवगाहि ताहि। भेकहत चाहि ॥ व्यासउवाच ॥ लहि ज्ञान तात। जिहि गतिहि जात ॥ अरु किये कर्म। जिहि गतिहि पर्म ॥ बर बुद्धि पोत। जन प्राप्त होत ॥ सो कहत तोहि। सुनुतात जोहि ॥ उकच्छा ॥ कर्म त्याग है जौन। निवृत धर्महै तौन ॥ करम करब जोतात। प्रवृत धर्मसो ख्यात ॥ चरणाकुलक ॥ बँधे जातजन कर्महिं कीन्हें। तजेकर्म बरज्ञानहिं चीन्हें ॥ छूटत याते जे सुमती हैं। गुणिकै कर्महि करत नहीं हैं ॥ बारम्बार लहत हैं देहै। कर्मकिये करि परम सनेहै ॥ कर्महि छोड़ि भयेते ज्ञानी। लहत ब्रह्मपद ताहिंसुठानी ॥ जिनकी बुद्धिमेंन महताई। करत कर्मकी तौन बड़ाई ॥ ज्ञानहि प्राप्तभये जनजे हैं। कर्महि नहीं सराहततेहैं ॥ जो जलपियत नदीके माहीं। कूपहि तौन प्रशंसत नाहीं ॥ दोहा ॥ कर्म कियेते अरुतजे जिहि गतिको जन जात। सोगति बिधिसों बर्णिकै कहौतोहिं बिख्यात ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ सुने व्यासके बैनबर प्राप्तभयो जोज्ञान। ताहि जनावन व्यासको गुणि शुकवर मतिमान ॥ सुनीबार्त्ता जौनहै पूछतहै पुनिताहि। बरा बुद्धिसों बुद्धिबर हियेमाहिं अवगाहि ॥ शुकउवाच ॥ माया आदिक सबभये आत्माते हे तात। सुन्यो आपुसों पूर्वमें प्रश्नोत्तरमें ख्यात ॥ साधुनको आचार मैं सुन्योचहतहौं अद्य। तातकृपा करिकै महत कहो मोहिं सोसद्य ॥

तजिबो करिबो कर्मको कह्यो वेदके माहिं । कौन कीजिये कर्म अरु कौन कीजिये नाहिं ॥ मैंभोतवउपदेशते पावन परम सुजान । लोकहुके वृत्तान्तमें तुमहो बिज्ञ महान ॥ व्यासउवाच ॥ सोरठा ॥ जैसे बर आचार चतुरानन पहिलेकहे । ऋषिबरबुद्धि अगार तैसे धारण करतभे ॥ दोहा ॥ ब्रह्मचर्य्य सों परम ऋषि उत्तम लोकहि जात । कीन्हेते बिधिवत सुनो निर्मलमन करितात ॥ शुकउवाच ॥ सोरठा ॥ करोनहीं येकर्म परम वेदके बचनये । तिनमें तात सशर्म अतिही महतबिरुद्धहै ॥ दोहा ॥ मोक्ष होयगी तात किमि बिन छूटेते कर्म । यह इच्छा है सुननकी कहो मोहिं गुणि मर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ गन्धवती सुत बिज्ञबर सुनि सुत के येबैन । भयो सराहत ताहिगुणि ज्ञान परम मतिऐन ॥ व्यासउवाच ॥ फल चारों आश्रमनको ब्रह्म जानिबो जौन । यातेकीन्हे बिधि सहित लहत मोक्ष बुधभौन ॥ चारों आश्रम जौनते सिढ़ीपरमहैस्वक्ष । इनपैचढ़िके ब्रह्मको प्राप्तहोत जनदक्ष ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेचतुःषष्ठितमोऽध्यायः ६४

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥ देहादिकजे सर्बहैं हेसुत प्रकृति बिकार । तिनसों युतक्षेत्रज्ञहै जानत प्रज्ञ सुढार ॥ जानत है क्षेत्रज्ञशुक तिनको अरु तेसर्ब । जानत नहिं क्षेत्रज्ञको जड़ताते सुअखर्ब ॥ सोमनसह इन्द्रियन सों सर्ब करतहै काज । निज सत्तासों तिन सबहि करि चैतन्य दराज ॥ श्रेष्ठसुइन्द्रियते बिषय विषयहुते मनपर्म । मनतेश्रेष्ठा बुद्धिहै निश्चयकरी सशर्म ॥ आत्माश्रेष्ठसुबुद्धिते ताहूतेअव्यक्त । श्रेष्ठ परम जानतसुबुधजौन ज्ञान में शक्त ॥ सब भूतनमें आत्मा छप्यो रहतहै तात । अतिही सूक्षम बुद्धिसों सोहै जान्यो जात ॥ ध्यान परमकरि विषयते चंचल मनहिं छुड़ाय । अहं ताहि जोदेत तजि धरिके शान्ति सुभाय ॥ पावतसो कैवल्यपद गावत जाहिबुधेश । भावत जासु कथासुने ललचावत सुहमेश ॥ चरणाकुलक ॥ मनकी निर्मलतासों आछी ।

पांति शुभाशुभ वारी पाछी॥ कीन्हे जीति अनिश सुख भारो। ताहि लहतहै सुबुध सुढारो ॥ जिमि निर्वातस्थलके माहीं। दीपहोत कम्पितहै नाहीं॥ तिमि निर्मलता सों मनवारी। जन नहिं खेद लहत सुखकारी॥ आपुमाहिं आत्माको देखै। दोऊ कालमाहिं अवरेखै॥ दश हजार बेदकी खासी। ऋचा तिन्हैं मथि मतिसों भासी॥ यह सिद्धान्त सुढार लह्योहै। जोतव आगे प्रगट कह्योहै॥ शुक नवनीत दहीते जैसे। भिन्न करत जन तुमको तैसे॥ वेद बीचते करिकै न्यारो। यह सिद्धांत दयो कहि भारो॥ तत्पर होय धर्मकेमाहीं। स्नातकादि जन तिनके पाहीं॥ कहिये यह औरनके सोहैं। कबहूं ज्ञान चक्षुसों जोहैं॥ वेद बिहित ब्रत धारत जोहैं। स्नातक बिप्र कहावत सोहैं॥ दोहा॥ अन्तमयी पुहुमीदिये होत जौन फल स्वक्ष। होत सुताहूते अधिक याको कहेप्रतक्ष॥ दूरिकरनके काजमैं तोमनकोसन्देह औरहु पूछौसो कहौं तोको सहितसनेह॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेपंचषष्टितमोऽध्यायः॥

शुकउवाच॥ दोहा॥ धर्मऔर जिहिधर्मते होय श्रेष्ठनहिंकोइ। तौन धर्म हमकोकहौ कृपादृष्टिसों जोइ॥ व्यासउवाच॥ सर्बधर्मते श्रेष्ठअति कियोऋषिन कोस्वक्ष। मनकोकरि एकाग्र सुनु तोको कहत प्रतक्ष॥ चरणाकुलक॥ मतिसों इन्द्रिय गणको रोकै। तासों तजै बिषयके थोकै॥ समन इन्द्रियनको जोलगिबो। बिषयमाहिं सो दुखमें पगिबो॥ याते तात रोक इनकेरो। श्रेष्ठसर्ब धर्मनते हेरो॥ सह मन इन्द्रिय गणको मतिसों। रोंकेसावधानता अतिसों॥ रहैतृप्त जबआत्मा माहीं। करैऔर ब्यापारैनाहीं॥ छूटिबिषयते इन्द्रिय तेरे। लगिहै आत्मामें सुत मेरे॥ तब आपुहितू देखन लगिहै। आत्माहीमें शमदम पगिहै॥ बिना धूमको पावक जैसो। तेजोमय आत्माहै तैसो॥ ताहि मनीषी ब्राह्मण जेहैं। ह्वैकै निर्मल देखत तेहैं॥ जिमि सुफूल फल युक्त सुढारो। महाबृक्ष बहु

शाखा वारो ॥ सोजानत नहिं फूल कहाहै । मेरे औफल मधुर महाहै ॥ इमिहिन आपुहि आत्मा जाने । धारे बहुलघु बपुष महा-ने ॥ दोहा ॥ ताको भये प्रकाशबर ज्ञान दीपजो स्वक्ष । आपुहि देखत आपहै आत्मा तात प्रतक्ष ॥ चरणाकुलक ॥ नदी दुःख रूपा अति भारी । क्रोध पंकसों भरी करारी ॥ इन्द्रिय पंचग्राह जिहि माहीं । महति सर्व दिशि फिरति सदाहीं ॥ मन संकल्प कूल जिहिकेरे । काम सर्प जिहि माहिं बड़ेरे ॥ लोभ मोह तृणसों है छाई । पापात्मासों तरी न जाई ॥ मायाते सो भई महानी । तास नत्वरिता जाति बखानी ॥ जग जलनिधिको प्रापत होहै । होती घोर स्रोत तिहि कोहै ॥ हैयतनादि भौंर जिहि माहीं । अघीपरत तिनमाहिं सदाहीं ॥ ताको महति मनीषा वारे । तरत परम धीरजको धारे ॥ तरत तात यहि सरितहि जोहै । जात ब्रह्मही ह्वै जन सोहै ॥ लहत पारतोयहि सरिताकी । जोजन करत बड़ाई ताकी ॥ धर्म धुरन्धर जौनमहाने । धीरजमानन माहिं बखाने ॥ गुप्तकथायहतोहिं कहीहै । अधिहि कहनके योग्यनहीं है ॥ दोहा ॥ सब धर्मनते श्रेष्ठअति पूछ्यो जोहो धर्म । तौनधर्म अवगाहि कै तोको कह्योसशर्म ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्व्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेषट्षष्टितमोध्यायः ६६

दोहा ॥ भिन्नस्थूल शरीरते अल्प शरीरीजौन । योगी ताहि समाधिमें प्रगट करतहैंतौन ॥ नाम चित्तएकाग्रता कोसमाधि है तात । तासों योगीलहत है आनँदको अवदात ॥ सोरठा ॥ जे योगी अभिमान छोड़ें अपनी देहको । तेजगमाहिं महान निर्मोही ह्वैकै फिरत ॥ दोहा ॥ लिंगशरीरको पृथक् सब सब देहनकेबीच । योगमार्ग में जो प्रबल तेहैं लखत निभीच ॥ भास्वतके प्रतिबिंबको जिमि जलमाहीं तात । देखतहैं संसारमें मानवते बिख्यात ॥ सोरठा ॥ लिंगदेह आधीन योगिनके नित रहतहैं । कामादिकजे पीन तिनको देत छुड़ायकै ॥ जयकरी ॥

स्वप्नहुमें योगीजनजौन। लिंग देह को जानत तौन॥ भिन्न स्थूल देहते तात। पगे योगमें निति अवदात॥

इतिश्रीशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मे शुकानुप्रश्नेसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

व्यासउवाच ॥ दोहा ॥ आत्माहै अज्ञानते भिन्नतात अवदात। सो मैंयहि अध्याय में तोहिं कहतहौं स्यात॥ रामगीती ॥ हिय क्षेत्रमें उत्पन्न भोहै कामतरु अतिमाम। है मोह ताको बीज जानत जौन हैं बुधिधाम ॥ अज्ञान ताको मूलअरु है शोष शाखा तास। कीलाल सींचन काजताके जो प्रमाद प्रकास ॥ है ईर्षा शुकपत्र ताके पाप अन्तरछाल। है भयहि अंकुर ता सुऔ चिन्ताहि बिटपाबिशाल ॥ बहुमोहनी लतिकान सों है बलित भूत महान। हैतासु धर्माधर्म फलजन चहत जौन अ-जान ॥ दोहा ॥ यहि वृक्षहि तजिदेतजो जन सुख दुखकोअन्त। ताको प्रापतहोतहै ज्ञानीपरम भनन्त॥ सोरठा॥ अज्ञानीहैंजौन काम वृक्षपै चढ़तते। डारत है करितौन तिनको क्षिप्रहि नष्ट द्रुम॥ दोहा ॥ लहेज्ञानबल कामद्रुम जात उपारयो तात। ताहि उपारत योगबिद धीर्य्यवान अवदात॥ सोरठा ॥ यह शरीर पुर जौन तासुस्वामिनी बुद्धिहै। चञ्चलताको भौन मन हैतासुअ-मात्य शुक ॥ दोहा ॥ पुरजनहै तिहि माहिंशुक इन्द्रियजेहैंसर्ब। मनबारीते रहतिहै आज्ञामाहिं अखर्ब॥ तिहिपुर में द्वै दोष हैं राजस तामसपर्म। तिनमें पौरुष स्वामिनी लागेरहत सुकर्म॥ अहंकारराजस औतामस कुत्सित पथसोंतात। भोगत है सुख दुःख महतको जानत बुध अवदात॥ सत्वमयीहै बुद्धिशुक तिहिते निजबशमाहिं। राजस औतामस कबौंतात सकतकरि नाहिं। राजस तामसलेतकरि मनको निज बशमाहिं॥ मनकी समता गहति मतिहोत जबै मनपाहिं॥ स्वामिनि भई अमात्यके जो सँगमाहिं मलीन। तो मलीन क्यों होहि हे सुन शुक पुरबासीन॥ मनको प्रापत होतहै खेदसुभये कुकर्म। मनसँग

खेदित होतिहै बुद्धिहु तात सशर्म ॥ बुद्धिमाहिंशुक रहतहै आत्माको आभास । यहिकारण ते तीनहूं पावत खेद प्रकास ॥ मनही याते जानिये महादुःख को हेत । राजस तामस माहिंजो कीन्हें रहत निकेत ॥ ज्ञानहोय जिनको सुने ऐसे मैं इतिहास । तोहिंसुनायेबहुतहैं तिनकै बुद्धिप्रकास ॥ तिनको गुणिबश माहिंकरि मनइन्द्रिय सहतात । गुणि अनित्यसंसार सों रहित होहु अवदात ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ कहेज्ञानके काज शुकहि ब्यास इतिहास जे । तेतुमको नरराज कहेतिन्हैं हियमें गुणो ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकानुप्रश्नेअष्टषष्टितमोध्यायः ६८ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ मनको कीबो शान्तिजो सो है जनको श्रेय । कह्यो पूर्व अवगाहिकै मोकोयह गांगेय ॥ अन्तसमय में शान्तिमन आपुहिसों ह्वैजात । शान्तिकाज क्यों कीजिये याते साधन तात ॥ जो तुम इमि हमकोकहौ मतिसोंगुणिहिय माहिं । तौथिरकरिकैमनहि तुम सुनो कहत तव पाहिं ॥ गत प्राणजे भूमिमें परे भूतबलवान । मृतक शब्द कैसे भयो तिनको प्राप्त सुजान ॥ प्राप्त होतहै शान्ति जो अन्त समय के माहिं । मनको सो भूपाल सुनु रहत निरंतर नाहिं ॥ मृत्युकौन किहि ते भई कैसी बिधिसों तात । करति प्रजा संहार किमि कहो मोहिं बिख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ शान्तिकाज याते करै साधन सबिधि सुप्रज्ञ । शान्ति लहत मन तब महत होत शरम धर्मज्ञ ॥ यहिप्रसंग में कहतहौं यक इतिहास अनूप । तामाहीं सम्बाद है मृत्युद्रुहिण को भूप ॥ मनोहर ॥ सतयुग में अनुकंपक भूप । महापराक्रम वान अनूप ॥ होतभयो सो सत्वाधीन । महत समरकै माहिं प्रवीन ॥ हरिनामा ताको सुतपर्म । हरिसमान सो बली सुकर्म ॥ ताहिहनत भे शत्रुअखर्व । युद्धमाहिं लरिक्रुद्ध सगर्व ॥ पुत्रशोक तासों अतिपीन । होतभयो अनुकंपक क्षीन ॥ मिलतभये नारद ऋषिताहि । तिनको अनुकंपक नृपचाहि ॥ बर्णियुद्धको सब

वृत्तांत। कहतभयोसुतशोक नितांत॥ नारदमुनि भूपतिकेबैन। कहत भये यक कथा सचैन॥ पुत्रशोककीबेकोदूरि। अनुकंपक भूपतिको भूरि॥ नारदउवाच॥ भूपतितोहिं एक आख्यान। अत्र कहत बिस्तरित सुठान॥ प्रजा बनावतभो लोकेश। बढ़ति भईसो बहुत नरेश॥ तिनमें मरैसु कोऊनाहिं। भूरिभरिभी भू के माहिं॥ प्रजाहोतिभी बिकला सर्ब। बिधिकरि चिन्ता देखि अखर्ब॥ प्रजानाशको मनकेमाहिं। बिधिकेकारण आयोनाहिं॥ कियो बिचार बहुतबहुबार। तातेबाढ़ोक्रोध अपार॥ कढ़तभयो इंद्रियते ज्वाल। सो जारतभो प्रजहि बिशाल॥ देखिप्रजाको पीड़ित ईश। भये द्रुहिण पैजात महीश॥ ब्रह्मादेखि शंभुको बैन। कहतभयो ऐसे बलऐन॥ जो तुम कहो करैं हम तौन। शंकर पशुपति गिरिजा रौन॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेमृत्युप्रजापतिसंवादेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः

स्थाणुरुवाच॥ चरणादोहा॥ प्रजातुम्हारी बिरचीहै यहयापैक्रोध करोन। तबकोपानल सों है पीड़ित धीरजजातधरोन॥ प्रजापतिरुवाच॥इच्छाप्रजानन हौनकीहै मोमनमें नाहिं। क्रोधकियो लखि बहुप्रजा सत्यकहत तव पाहिं॥ भारप्रजाकोपायबहु धरणी जब जलमाहिं।बूड़नलागी प्रार्थना करी आयमोपाहिं॥ तबमैं प्रजा सँहारको भयो बिचारत हेतु। देखिपरो एको न तब कियो क्रोध वृषकेतु॥ स्थाणुरुवाच॥ करहु क्रोध लोकेश मति प्रजानाश के काज। तब रुट शिखसों जायगी जरि सब प्रजादराज॥ सर्ब प्रजाको चाहिये नाश नहीं लोकेश। याते क्रोधानलहि तुम देहु दबाय अशेश॥ जाते होय नहीं सुनो नाशप्रजाको सर्ब॥ ऐसी और उपाय तुम हियमें गुणो अखर्ब॥ बरवै॥ उद्भव होय प्रजाको बारम्बार। द्रुहिण प्रार्थना यह मैं करत उदार॥ नारद उवाच॥ दोहा॥ महादेव के बैन ये सुनिकरिकै लोकेश। कर्षतभे जिन तेजजो बगरयोहुतो बिशेश॥ कर्षि तेजको प्रजाके जनन

मरणके काज । भये कल्पना करत श्री द्रुहिण देव शिरताज ॥ छिद्रनते लोकेशके तदनु मृत्यु कढ़ि बाम । कृष्ण रक्त पैहैं बसनभूषणधरे ललाम ॥ धारे कुण्डल दिव्यअति श्यामललोचनताश । खरीभई दक्षिण दिशाहिसो बहु भरीप्रकाश ॥ जयकरी ॥ देखत भे बिधि औ हरताहि । भरी तेजसों अति अवगाहि ॥ ब्रह्माताको निकटबुलाय । कहतभये इमि बचन सचाय । करुतू नाशप्रजाको माम । मेरीआज्ञासों हे बाम ॥ बचन द्रुहिणके ये सुनिबाल । रुदन करति सो भई बिशाल ॥ क्रमसों प्रजानाश के काज । अश्रुमृत्युके सुरशिरताज ॥ लेतभयोआनँदसोंछाय । सुनु अनुकंपक बर नरराय ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेप्रजापतिमृत्युसंवादेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

नारदउवाच ॥ दोहा ॥ सुनि ब्रह्माके बैन ये मृत्युजोरिकै पानि । कहतभई बाणीसुइमि ऋजुताभरीमहानि ॥ धर्महोयजिहिकर्ममें ऐसोकहियेमोहिं । लोकनाथ मोओरतुम कृपादृष्टिसोंजोहिं ॥ जामें अधरमहोतहै ऐसोजोहैकर्म । तासोंअतिही डरतिहौं मैंहौंद्रुहिण सशर्म ॥ नाशप्रजाको होयगो मोसोंनहिं लोकेश । मोहिं करो आज्ञा न यहकरिकै तुमसबिशेश ॥ संबंधी जिन जननके हनिहौं तिनकोशाप । तातेधारणकरतिहौं साध्वसअतिहिअमाप ॥ चरणा दोहा ॥ बहिहैंआंशू दीनजननकेते बहु दिनलौं मोहिं । दाहैंगे याते शरनेमें राखहु रतिसों जोहिं ॥ दोहा ॥ औइच्छाहै तपकरनमोको हेलोकेश । आज्ञामोकोदीजिये करिकैकृपाबिशेश ॥ पितामहउवाच ॥ रामगीती ॥ सुनुप्रजाके संहारबेको हमबनाई तोहि । करु औरतू न बिचारहियमें मृत्युहे इतजोहि ॥ जोकह्यो हमहै तोहि ह्वै है अन्यथा नहिंतौन । ममबचन यातेमानिकै संहार कोकरिगौन ॥ येबैन सुनिकै बिधाताके कलुन बोलीबैन । अति नम्र ह्वैकै भई सोहैं खरीसुनु बलऐन ॥ सो भईहोती प्राणगतसी तत्र भूप उदार । करुप्रजाको संहारये सुनिबचन बारंबार ॥ लखिमृत्युबारी

दशाबिधि पुनि कछूबोले नाहिं। सबलोक देखत भये मोदित होयकेमनमाहिं। जबक्रोधबिधिको दूरिभो तबगई नहँतेबाल। गो तीर्थको बिधि बैन अंगीकारकै न नृपाल॥ तहँ जायकरिकै तपस्या सो भई करति महान। यकपावँ सों ह्वै खरी पन्द्रहपद्म बर्षसुजान॥ तहँ जायकरिकै ताहि ऐसेकहतभे लोकेश। ममबैन अंगीकार करु तू मृत्यु हे शुभबेश॥ येबैन बिधिके तिन्हैंलाई मृत्यु सो मनमैन। पुनि बीसपद्म सु एकपद सों कियोतप बल-ऐन॥ दशसहस पद्म सुरहीसो पुनि पशुनमें भूपाल। द्वैअयुत बत्सर कियो बायुअहार हेतिहिबाल॥ नृप तदनु ग्यारह सहस बत्सर कियो तप जलमाहिं। बर कौशिकी जो नदी ताके भई जाती पाहिं॥ तहांहू रहतीभई जल बायु भक्षिनरेश। सोतदनु जातीभई श्री सुरसरी को शुभ बेश॥ तहँ भई रहती दारुवत ह्वै रहितचेष्टा बाल। सोतदनु गिरिहिमवान ऊपर जायकैमहि-पाल॥ जहँ किये देवन यज्ञ हे तहँ कियोतप अभिराम। बर बर्षएक निखर्बलौं बिधि सह अखर्ब ललाम॥ तहँ करिप्रसन्न सुबिधाता को कहति भी इमिबैन। सुनु प्रजाको संहार मोसों होयगो नहिं ऐन॥ इमि बचन कहिकै भई परती बिधाता के पायँ। बिधितदनु ऐसीभांति मृत्युहि कहत भो समुझाय॥ सुनु मृत्यु तोको होयगो न अधर्म करु संहार। यहकर्म माहीं प्राप्त ह्वैहै तोहि पुण्यअपार॥ हम रहैंगे सहसुरन तत्पर नित्य तव हित माहिं। मैंदेतहौं बरदान तोको जानुमिथ्यानाहिं॥ बहुब्याधि बारेब्याजसों नहिंतोहि देहैं दोष। सबप्रजा याते आपने मन मेंन करु अपसोष॥ तूपुरुषके तट पुरुष ह्वैहैनारिकै तटनारि। औनपुंसकमें होयगीतू नपुंसकहि सुढारि॥ येबैन सुनिकै बिधाताके जोरि मृत्यु सुपानि। इमि कह्योये मति कहोमोको बचन हठको ठानि॥ येबचन सुनिकै मृत्युके बिधिकह्यो इहि बिधि भूप। नहिंतोहिं ह्वैहै दोषप्रापत निजुहि जानु अनूप॥ तब

अश्रुजेहे गिरे पूरब धरेतेहैंसर्ब। सुनु मृत्यु ह्वैहैं रोगते दुखदाय परमअखर्ब॥ यहप्रजाजोहै नाश माहीं तासु तिनकोनाम। ह्वै है नतेरो होयगो करु हिये निश्चयमाम॥ सब प्रजापीछे कामक्रोधहि मृत्युदेतूलाय। क्रमसों सुअन्त अनेह माही मम सु आज्ञापाय॥ डरिशापसेंती बिधाताके कह्योऐसीभांति। तब लहे आज्ञा हनौंगी मैंप्रजावारी पांति॥ सोप्रजा अन्त अनेह माहींकाम क्रोधलगाय। मृत्यु हनतीभई क्रमसोंप्रजाको नरराय॥ दोहा ॥मृत्यु अक्षिके अश्रु जे तेई हैं रुजसर्ब। प्राप्तिहोति है तिनहिंसो दुख कोप्रजा अखर्ब॥ बिधिकी आज्ञापायके या बिधिसों अचलेश। मृत्यु हनतिहै प्रजाको यातेकरु न कलेश॥ अंतकाल जबहोतहै जनकोप्रापत आय। निश्चयताको करति है नाशमृत्यु नरराय॥ यह गुणिकैतुम शोचको प्रापत होहुन भूप। तव सुत दिवमें प्राप्तह्वै पावत मोद अनूप॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्ममृत्युप्रजापतिसंवादेएकसप्ततितमोऽध्यायः७१

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ मृत्यु हनति है प्रजाको रोग व्याजसों तात। कह्योपूर्ब अध्याय में यहगुणिके बिख्यात॥ रोग निरन्तर रहत हैं तनमें कीन्हे बास। निवृति होति तनकी सुनो भये सुधर्म प्रकास॥ याते मोको धर्मको कहौ स्वरूप बखान। धर्म प्रबक्ता आपुही हौभू बीच महान॥ इहिहि लोकमें करत हैं जनकी धर्म सहाय। परलोकहु में करतकी दुओ लोकमें राय॥ भीष्मउवाच ॥ सदाचार अरु स्मृतिअरु बेद सुअरु बरअर्थ। ये लक्षण हैं धर्मकेचारि महीप समर्थ॥ सोरठा ॥ जासों जानो जाय ताको लक्षण नामहै। पर उपकार सचाय कीबोधर्म महान अति॥ भुजंगप्रयात ॥ दुहूंलोकमें देत है धर्मशर्मै। महा पापसों देत है दुःख पर्मै॥ सुनो हे करै धर्म याते सदाहीं। नहीं पांवदे पापके मार्गमाहीं॥ सभामें महीपालकी ह्वै निशंकै। सदाजात धर्मीधरे हीन शंकै॥ अधीजात हैं नित्यही शंकधारे।

कंपै भूपकीबंक भौंहें निहारे ॥ दोहा ॥ लक्षण जोहै धर्मको कह्यो तोहिंसो आम । ऋजुतामें तुमनित्यही प्रवृतरहो बुधिधाम ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेधर्मलक्षणकथनोनामद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२

दोहा ॥ बरसूक्षमजोधर्मको लक्षणअति अभिराम । ताहिकह्यो अवगाहि महि कै सुपितामह आम ॥ आपुकह्यो सिद्धान्तहै पै कुतर्ककरि एक । पूछतहौं शंकाभई मोमनमें सबिबेक ॥ उत्पति थिति संहारये आपुहिंसों सबहोत । धर्मकहाहै करत नहिं अनुभव तासु उदोत ॥ अज्ञानीते धर्मगुनि करतअधर्माचर्ण । ज्ञानी तेसु अधर्मसोंधर्म करतशुभकर्ण ॥ बेदबिहित जो धर्महै युगयुग माहीं तास । एकभाव नहि रहतहै होतजातहै ह्रास ॥ औरसुनो यकधर्मको करत दोय तिनमाहिं । एक लहत आनन्दको एक लहतहै नाहिं ॥ याते मनमानै कहो कैसे धर्म प्रमान । अप्रमाण जो धर्मभो तोहे तात सुजान ॥ अप्रमाण भोवेद औ स्मृतिहुको अवदात । मूलधर्मको श्रुति स्मृति यहिकारणते तात ॥ पूरबते आये करतधर्ममहत जनपर्म । याते करनोहैनपै धर्मप्रमाणसुकर्म ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

भीष्मउवाच ॥ यहि प्रसंगमें कहतहौं यक इतिहास अनूप । जाजलिनामा सिद्ध यक तेजोमय अतिभूप ॥ बणिकएक मतिमानबर तुलाधार तिहिनाम । तामें है संबाद तिन दोउनको बलधाम ॥ चरणाकुलक ॥ जाजलि नामा द्विज बनचारी । तेजोमय मतिमत शुभकारी ॥ करतरह्यो तपसागर पाहीं । मनको करिकै थिरता माहीं ॥ होय जटाधर धरि मृगछाला । कियो सुतपबहु बर्ष बिशाला ॥ कछूकाल रहतोभो जलमें । महा सुधीवर अति निर्मलमें ॥ लोकनकोसो जलके माहीं । देखतभो इमि जिमि निज पाहीं ॥ लखि इमि कहतभयो गुणि मनमें । मो सम और न बर द्विजगनमें ॥ तब पिशाच इमि बोले तासों । इमि न बचन कहुगुणि मेधासों ॥ तुलाधार यकबणिक सुहायो । काशी

माहिं रहत गुण छायो ॥ कहते नहीं बणिक सों ऐसे । बचन कहत तू सगरब तैसे ॥ यह सुनिकै भूतनकी बानी । कहत भयो जाजलि अभिमानी ॥ तुलाधार हम देख्यो नाहीं । ये भाषण सुनि ताके पाहीं ॥ आय निकारि नीरते नीको । भये दिखावत पथकाशीको ॥ जाजलिसो काशीमें आयो । तुला-धारतट गुणसों छायो ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कहाकर्म कीन्होंहुतो जाजलि उग्र महान । परमसिद्धिको प्राप्तभो जातेबर मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ करतोभयो तपस्याभारी । जाजलि बिप्र वेदमगचारी ॥ धर्मबीच सो नितिही पागो । अधरममें न कबहुँ अनुरागो ॥ तपतमाहिं पंचागिनितापै । बर्षामाहिंसहैसोआपै ॥ ऋतुहिमन्तमें जलमें ठाढ़ो । रहै धारिधीरज कोगाढ़ो ॥ कियो तपहि यहिभांति महानै । पैआन्योन हिये अभिमानै ॥ एक सम-यमेंसो भूसाईं । बनमें खरो काष्ठ कीनाईं ॥ ताकी घनी जटोंमें अच्छी । नृप कुलिंग नामाबरपच्छी ॥ नीड बनावतभये सुठानो । जाजलि द्विजबर तिहिको जानो ॥ भयो नेकहूं चञ्चल नाहीं । पक्षीरहत भयेतिहि माहीं ॥ भूपसुनो जब बीतीबर्षा । तब तिन अण्डदये बेधर्षा ॥ अण्डदये जाजलि द्विजजाने । चञ्चलभो नधीर्य्यको ताने ॥ रक्षाकरत भये तिनकेरी । तेपक्षी करि प्रीति घनेरी ॥ जब सुअण्ड फूटेपकि नीके । अण्डज दोयभये शुभ श्रीके ॥ बढ़तभयेते तत्रहि दोऊ । बिप्रन अंग हलायोकोऊ ॥ समयपायते परम सुढारे । भयेसपक्ष होत बलवारे ॥ दोहा ॥ आतम जनको लखिबढ़े दुओ कुलिंग सहर्ष । तासु जटा में रहत भे सुनहु भूप उत्कर्ष ॥ चरणाकुलक ॥ प्रातहिते बन में उड़ि जावैं । सांझभये ते फिरितहँ आवैं ॥ पक्षी एकसमयके मा-हीं । पांच दिवस लौं आयेनाहीं ॥ तबहुँ न जाजलि अंग हलायो । खरोरह्योधीरज सों छायो ॥ षष्ठ दिवसते पक्षीआये । रहेजटा में मुदसों छाये ॥ तदनु गये उड़ि फिरिबनमाहीं । एक

सुनिके ऐसे कहत भो ताहि मनीषा ऐन ॥ जाजलिरुवाच ॥ बेचतहै तू सर्वरस औ हैं गन्ध जितेक । औबेचतहै औषधी हैं भूमाहिं तितेक ॥ ऐसीमतिको प्राप्तभो तूकिमि कहु अवगाहि । तुलाधारसुनु बनिकभो अचरज तोको चाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ जाजलिकी सुनिके यह बानी । तुलाधार बर बनिक सुज्ञानी ॥ धर्मतत्त्व सूक्षम अतिताको । कहतभयो तनिके मेधाको ॥ तुलाधार उवाच ॥ जनमहान जानत जिहिधर्मै । जानत ताको मैंहूंपर्मै ॥ द्रोह सोय भूतनको नाहीं । अथवा अल्प होय जिहि माहीं ॥ ऐसी जोहै वृत्ति सुढारी । ताहिकरतहौं मैं बनचारी ॥ काष्ठन सों औरनके काटे । मैंआपने सदनको पाटे ॥ चंदनादि बरगंध सुआछा । बेचतहौंऔ सुनुद्विज लाछा ॥ औ लवणादिक रसको लैके । तास मोलतजि कपटैहैके ॥ उचित नफाले बेचतताही । कपट छोड़िकहि गाहकपाही ॥ मन बच कर्मसों न अपकारै । परवारे जो कबहुँ बिचारै ॥ धर्महिसोय जगत में जानै । और नहीं कोऊ अनुमानै ॥ कौनिहुं मैं न कामना राखों । मिथ्याकबहुं नहींहों भाखों ॥ जोजन मोहिं बचन कटुभाखै । तास द्रोह मोमन नहिं राखै ॥ दोहा ॥ नस्तुति काहूकी करत काहूकी निन्दान । जानतहौं संसारको मैं अनित्य मतिमान ॥ चरणाकुलक ॥ सोना औ मृतिकामें मानो । हौं मैं एकभाव निजजानो ॥ पुत्र पिताके धर्महि धारे । जैसी बिधिकरि परमबिचारे ॥ धर्महि तिमिहि अहिंसकबारे । धारतहौं मैं परमसुढारे ॥ अभयदेत सबभूतहि जोहै । आपहु अभय लहतजनसोहै ॥ यहगुणि सबभूतहि जगमाहीं । मैंहौं देत सुअभय सदाहीं ॥ प्राणी देखि डरतहै जाको । होत न धर्म प्राप्तहैताको ॥ चन्द्रादित्य बायुअरु धाता । औयम भूतनमें अख्याता ॥ बसतसुनो जातेभय नाहीं । दीजे भूतनको सुसदाहीं ॥ अजशिखि मेष बरुणहै जानो । औहै अश्व अर्य्यमामानो ॥ धरणीधेनु बत्सनिशि राजा । जानो जो करि

लोभदराजा ॥ इनकोबेचतसोनहिं पावै। कबहुंसिद्धि अतिदुख सों छावै ॥ इमिमैं महतजननसों सुनिकै। यहनहिंकर्म करतहौं गुनिकै ॥ दोहा ॥ जानत लोकाचारसों तूधर्महि द्विजधर्म। कहा कियेका होतहै यहनहिं गुणत समर्म ॥ कीजै तौन बिचारिकै ज्ञानदृष्टिसों जोय। बिनाबिचार न कीजिये कारज कबहूंकोय ॥ जो निन्दा मेरी करत अरु जो सुस्तुति स्वक्ष। राखतहौं सम भावातिन दोउनमें मैं दक्ष ॥ धर्मकह्यो यहतोहिंजो तासुमनीषी धर्म। करत प्रशंसाहैं महा जाजलिविप्र सशर्म ॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेजाजलितुलाधारसंवादेपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

जाजलिरुवाच ॥ दोहा ॥ धर्मकह्यो यह जौनते प्रवृत भये तिहि माहिं। सिद्धिहि दोऊलोककी लहिहै मानवनाहिं ॥ जीवतपशु अरु अन्नसों मनुजहोत औ यज्ञ। नास्तिकलौं तूकहतहै कहा बणिक बरप्रज्ञ ॥ बिना जीविका कौनबिधि रहिहै यहसंसारु। होयसकति नहिंजीविका किये धर्म तबचारु ॥ तुलाधारउवाच ॥ नास्तिकहौं नहिं बिप्रमैं तोहिंकहतहौं दक्ष। हिंसासों जोरहित है चारु जीविका स्वक्ष ॥ करत न निन्दायज्ञकी यज्ञ विष्णुको रूप। दुर्लभहै जनयज्ञबिद जाजलि प्रज्ञ अनूप। बिप्रयज्ञ भगवानहै छोड़तहै जनताहि। जाजलि बिप्र अनूप बुध करत नहींअवगाहि ॥ अग्निष्टोमादिक सुनो क्षात्रयज्ञहैजौन। हिंसा मो तिनको करत धगिजन दुर्मतिभौन ॥ यज्ञनको स्वर्गादिफल लिख्यो बेदके बीच। पै आत्माको जानिबो फल सिद्धांत नि-भीच ॥ ताहि बिचारत हैं नहीं बर मतिसों अवगाहि। मिथ्या फल स्वर्गादि में लगेरहत हैं चाहि ॥ आत्माको जो जानिबो ताकोजे बुध यज्ञ। करतनहीं स्वर्गादिकी राखि कामना प्रज्ञ ॥ द्रव्य प्राप्तभो सुकृतसों तासों सुमन सधर्म। नमस्कारस्वाध्याय सों तुष्टित होत सुकर्म ॥ जानो इन तीनहुनको ब्राह्मण मखके हव्य। अतिउत्तम तुमविज्ञबरजाजलि बिप्रसुभव्य ॥ परमेश्वर

की प्रीतिबिन जौन करतहै यज्ञ । कुत्सितताकी होति है प्रजा बिप्रबर प्रज्ञ ॥ लुब्धहि सन्तति होतिहै लुब्धनके बुधि धाम। प्रजा अलुब्ध अलुब्धके होत परम अभिराम ॥ करतयज्ञजन जौनहै फलमें करि संदेह । ताको फल नहिं यज्ञको प्राप्त होत मतिगेह ॥ जाजलिरुवाच ॥ कह्योधर्म यह गुप्ततें हम न सुन्यो अब लौन । सो काहूके बदनसों तुलाधार बुधि भौन ॥ कौन कर्म कीन्हे महत सुखको प्रापत होय । प्राणी कहुफिरि मोहिंतू ज्ञान चक्षु सों जोय ॥ मेरेश्रद्धाहै महति सुनिबेकीतोबैन। महामुनिन की होति मति तैसीहै तवऐन ॥ तुलाधारउवाच ॥ यज्ञ जौन जन करत हैं हियमें करि अभिमान । ते नहिं फलको यज्ञके प्रापत होत अजान ॥ एक गऊहीसों लहत यज्ञनको फलचारु । जे जन श्रद्धावान हैं सुमती परमउदारु ॥ शृंगनमें सुरभीन के तीर्थ रहतहैं सर्ब । गोशृंगोदक स्नानते यातेप्रज्ञ अखर्ब ॥ सर्ब तीर्थके स्नानको होत प्राप्त फलपर्म । गोपद रजऊपरपरे कल्म-षनशत सुकर्म ॥ श्रद्धा सह जाजलि किये धर्मपर्म अभिराम । शुभलोकनको होतहै प्राप्तमनुज बुधिधाम ॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा॥ तुलाधार जे धर्म कहेस्वच्छ अवगाहिकै । साधुनसोंतेपर्म सेवि-तहैं निर्दोष अति॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेतुलाधारजाजलिसंबादेपट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥

तुलाधारउवाच ॥ दोहा ॥ सुजनकुजनके मार्गजेतिनको तूद्विज देखि । देखैगोतबपरैगो भलोबुरोअवरेखि ॥ येपक्षीबहुजाति केचहूँओरकोधाय । अपने अपने नीडमें प्राप्तहोतहैं जाय ॥ तव शिरमाहिंकुलिंग जे भयेहुते हे बिप्र । तिनको तोशिरनीडहै तिन्हैं बुलावहुक्षिप्र ॥ तुलाधारके बैनसुनि जाजलिबिप्र सचैन । भयो बुलावतभूपतिन पक्षिनको मतिऐन ॥ जाजलिके प्रियबचनसुनि बोलत भयेबिहंग । धर्ममये बरबचन अति ऋजुता भरेउतंग ॥ हिंसासों जे रहितजन तिनके कर्म सुढार । रहतप्रकाशित लोक

में दोऊप्रज्ञ उदार ॥ हिंसाजो सोधर्मकी नष्टकरति श्रद्धाहि । बिनश्रद्धा बिश्वासबर रहत धर्मके नाहि ॥ यातेहिंसा त्याग ते सिद्धिहोतहै सर्ब । हिंसामें रत जेनहीं तेहैं प्रज्ञअखर्ब ॥ श्रद्धासों सबहोतहै श्रद्धा बिन नाहिंएक । यातेश्रद्धा सहकरै कार्य्य सर्बसबिबेक ॥ ब्रह्माकी गाईकथा कहत पुराणेप्रज्ञ । अत्रसुनो जाजलि सुद्विज ताहि प्रगट बरबिज्ञ ॥ अतिपवित्र है आपु पै श्रद्धा हिये न तास । अरुजो हैअपवित्रपै श्रद्धावत मतिरास ॥ तिनदोउन केद्रव्यको जानत देव समान । धनउदारको श्रेष्ठहै श्रद्धातेहि महान ॥ लीजे अन्न उदारको कृपण जनन कोनाहिं । श्रद्धाहोति न कृपिणमें यहगुणिके हियमाहिं ॥ परम अश्रद्धापाप है श्रद्धानाशनिपाप । श्रद्धावान समानहै औरन बुद्धिकलाप ॥ यातेतू श्रद्धाहिकरु जाजलि बिप्रसुजान । श्रद्धाते तूपायहै पर पद निति सुखवान ॥ भीष्मउवाच ॥ तदनुबिप्र औबणिकवर श्रद्धावान निमीच । ब्रह्मभावको लहतभे थोरेहि दिनकेबीच ॥ तुलाधारकी उक्तिबर बहुतअर्थ जिहि माहिं । कही ताहि अवगाहि कै मैंनृप तेरेपाहिं ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेतुलाधारजाजलिसंबादेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ श्रद्धासह कारज करत सोफल उत्तम देत । कह्यो पूर्ब अध्यायमें मोकोबुद्धि निकेत॥सो सुनिकै मेरे हिये भयोतात सिद्धान्त । कहियेअब यकऔरमैं पूछतहौंवृत्तान्त ॥ करै परीक्षाकार्य्यकी तुरकी लहि चिरकाल । कहोमोहिं अवगाहि कै बक्ता आपु बिशाल ॥ भीष्मउवाच ॥ यहिप्रसंगमें कहतहौं यक इतिहास अनूप । चिरकारी नामासुद्विज ज्ञानवान बरभूप ॥ ताके शुभ आचरणको तामेंहै वृत्तान्त । मन थिरकै ताको सुनो कुन्तीसुत क्षितिकान्त ॥ मनोहर ॥ चिरकारी बर बिज्ञ बिशाल । गौतमऋषिको सुत क्षितिपाल ॥ बहुत काललौं प्रथमबिचार । करिकै कारज करै सुढार ॥ याते चिरकारी भोनाम । गौतमसुत

को मेधाधाम ॥ कहत आलसी बहुजनताहि । करत बिचारहि
जे जननाहि॥ एकसमयमें माता तास । रमति भई परसँग सहु-
लास ॥ तासु पिता तब ऐसेबैन । कहतो भयो ताहि मतिऐन ॥
अपनी माताको हनिडारु । अत्र तूनकरु और बिचारु ॥ सुनि
येबचन पिताके तौन । कहत तथास्तु भयो मतिभौन ॥ तदनु
तौन मनमाहिं बिचार । करत भयो क्षितिनाथ उदार ॥ आज्ञा
पितुकी किमि मानौन । कैसे मारहुं माता जौन॥ क्योंन धर्मसं-
कटमें हाय । बूड़ों अज्ञानलौं दुखछाय ॥ दोहा ॥ पितुकी आज्ञा
मानिबो सोहै उत्तमधर्म । औ रक्षण जो मातको सोउ धर्महैपर्म॥
जयकरी ॥ प्रथम नारिको हनिबो ख्यात । परमपाप ताहूमें मात ॥
ताको हनिकै को जगमाहिं । दुखको प्राप्त भयो है नाहिं ॥ औ
पितुकीमाने आज्ञान । कौन प्रतिष्ठा लही महान॥ भोउत्पन्न दुहु-
नसों स्वक्ष । मैं संसार माहिं परतक्ष ॥ येकिमि मोसों दोऊकाज ।
सिद्धि होहिंभो शोचदराज ॥ पितुकी आज्ञा मानत जौन । दूरि
करत अघानिज को तौन ॥ याते पितुकी आज्ञा ताहि । कीजे
परम धर्म अवगाहि ॥ लहेपिताकी कृपा अखर्ब । करत कृपादेव-
तहैं सर्ब॥ दुःख लहेहू छोड़त नाहिं । पितापुत्रको राखतपाहिं ॥
ऐसोपिता होत जगमाहिं । मानोताकी आज्ञानाहिं ॥ चरणादोहा ॥
होत पिताको गौरब ऐसो कीन्हों तास बिचार । अब माताको
गौरवताको करत बिचार सुढार ॥ मनोहर ॥ मोशरीर को कारण
मात । ज्योंअरणी पावकको ख्यात ॥ सुतके सुख करणी अति-
माम । माताके सम औरन आम ॥ माता जाके सोयसनाथ ।
जाके मातन तौन अनाथ ॥ पुत्र पौत्रनहूसों जौन । युक्त जगत
में मानव तौन ॥ समुद जबै मातातट जात । शिशु द्विवर्षकैसे
ह्वैजात ॥ रक्षा माताही सबिधान । करति पुत्रकी सदामहान ॥
पुत्रःसमर्थहुकी अवदात । रक्षा करति नित्यहै मात ॥ जब जन
कीमाता मरिजात । तबहीं दुखी होतहै ख्यात ॥ तबहींवृद्ध जात

हैपर्म। शून्यहोत जगतास अशर्म॥ जगती में नहिं मातसमान। रक्षाकारक और महान॥ मातासम छाया नहिंऔर॥ हैसिद्धांत परमयह गौर॥ धारण करति पुत्रको मात। धात्रि कहावति या-तेख्यात॥ जनतीहै पुत्रहिंअभिराम। यातेजननी भोहै नाम॥ अंगबढ़ावति सुतके स्वक्ष। याते अम्बा भई प्रतक्ष॥ दोहा॥ नारीको अपराध नहिं पुरुषहिकोअपराध। यामेंहै संदेह नहिं यह सिद्धांत अबाध॥ कारण है व्यभिचारको पुरुषहि नारी नाहिं। पुरुषकरत इच्छाहितब जात नारि तिहि पाहिं॥ याते नारि अबध्यहै बधिबे योग्य कवौन। पशुहू जानत क्योंनहीं जानै प्रज्ञाभौन॥ पालिदेत आनन्दहै मृत्युलोकमें पर्म। औपू-जेपरलोकमें भूरि देतहैशर्म॥ माताको गौरव नहीं याते बरण्यो जाय। दुवोलोकमें और नहिं मातासम सुखदाय॥ ऐसेहि करत बिचारनृप बीततभो बहुकाल। तदनंतर आवत भयो तासु पिता महिपाल॥ बध तियको मम पुत्रकहु कियो होयनहिं हाय। मनमें करत बिचारयह महत शोचसों चाय॥ मनोहर॥ युक्तहोतहैदुख सोंतौन। मेधातिथि गौतम मतिभौन॥ मनमेंकरिकै पश्चात्ताप। लोचन तेसु गिरावत आप॥ पुत्रहिकहत भयोइमि बैन। मम आश्रममें बर बलऐन॥ ब्राह्मणहोय अतिथि ब्रतधारि। आवत भयो तात अचलारि॥ बाणीसों पहिले सनमान। करिदैअर्घ्य पाद्य सबिधान॥ पूजतभो सादर बैठाय। पुनिपुनि मधुरीगिरा सुनाय॥ साथअहिल्याके तिहिकर्म। कुत्सित कीन्होतातसशर्म॥ दोष अहिल्याको तिहिमाहिं। नहिंऔ सुरपतिहू कोनाहिं॥ औ नहमारोहूहेतात। यहबिचार निश्चयमतिजात॥ दोषसमागमको है जानु। औरनहीं मनमें अनुमानु॥ सुनो समागम होतोजौन। दोउनसों यह होतोतौन॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ द्वेष न काहूकोकरत बर मुनिजन अभिराम। याते येभाषण कहे गौतमऋषि बुधि धाम॥ मनोहर॥ तदनु कहतभो ऐसे बैन। गौतमऋषि बरप्रज्ञा

ऐन ॥ होत अक्षमाते दुखभूरि । यहसुगौर संशय तेदूरि ॥ परम अक्षमासों मैं हाय । परो पापसागरमें जाय ॥ पतिव्रता पत्नी अभिराम । भरीगुणनसों अतिहीमाम ॥ डारीमैं सुत सों मर-वाय । ताहि ईरषासों दुखदाय । मोसुत चिरकारी है आर्य्य । ताहि कह्यो कीबे यह कार्य्य ॥ करीबेर जो याकेमाहिं । परिहौं अघसागर मेंनाहिं ॥ तदनु पुत्रको ऐसे स्वक्ष । बचन कहतभो गौतम दक्ष ॥ हे चिरकारी परम निभीच । जोतू यहि कारजके बीच॥ भोह्वैहै चिरकारी पर्म । तौ तू चिरकारी सहधर्म ॥ करु रक्षा तू मेरी बात । औ तव माता की अवदात ॥ औ जोमैं तप कीन्हो तास । ताकी रक्षा करु सहुलास ॥ आपु पापते बचिकै पर्म । तू चिरकारी होहु सुकर्म ॥ यह कारज में जो चिरकाल । कीन्हों ह्वैहै प्रज्ञ बिशाल ॥ चिरकारित्व तात तव जौन । सफल होयगो तौ वर तौन ॥ दोहा ॥ चिरदिन इच्छाहीकरी सुतकीतेरी मात । चिरदिन तोको गर्भमें राख्यो हौ हेतात ॥ चिरकारित्वहि सफल कहि चिरकारी तू स्वक्ष । गौतम ऐसे मोहवश कहत भयो प्रत्यक्ष ॥ तदनन्तर देखत भयो चिरकारीको आम । अपने पास उदासअति गौतमऋषि मतिधाम ॥ जयकरी ॥ दुखित पिता को देखि नितान्त । चिरकारी बर बिज्ञ सुदान्त ॥ तत्र हाथते शस्त्र गिराय । पाणि जोरिकै शिरहि नवाय ॥ भूपैगिरि करिकै परणाम । पितुहि प्रसन्न करत भो आम ॥ देखिपुत्रसह पत्निहि पर्म । गौतम होतो भयो सशर्म॥पूरब ममझातापै कोहि । देइगये हे आज्ञामोहि ॥ मोपित ताहि हननकी आम । करतो रह्योबिचा-रहि माम ॥ मैंन हनी मोको अबहाय । कहिहै कहा पिता रुट छाय॥ऐसे हियमें करतबिचार । करि पितु पदबिचशिरहिसुढार॥ बहुत बेरलौं भूकेमाहिं । परोरहो करि शोचहि पाहिं ॥ तदनुसु गौतमसुतहि उठाय । प्रेम सहित निज हृदय लगाय ॥ चिरंजीव रहुयह बरबैन । कहतो भयो सुप्रज्ञा ऐन ॥ करिकै पुत्रहि हर्ष

समेत । कहत भयो इमि बचन सचेत ॥ चिरकारी तेरो कल्यान । होहु परम मम प्रिय मतिमान ॥ चिरकारी तू रहु चिरकाल । आशिष मेरी पाय बिशाल ॥ तैं चिरकाल बिचारहि माहिं । कियो मात निज मारी नाहिं ॥ तातें मोहिं महत भो शर्म । प्रापत चिरकारी सह धर्म ॥ दोहा ॥ तदनन्तर गाथा कहत गौतम भो यह ताहि । चिरकारी जे पुरुष हैं तिनमें ये गुण चाहि । मनोहर ॥ मित्र ताहि राखै चिरकाल । मित्र माहिं धरि प्रेम बिशाल ॥ शीघ्र न तजै करै जो काज । करि बिचार हिय माहिं दराज ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ सुत कीजो चिरकारता तासों अतिही हर्ष । पावत भो गौतम सुमुनि मेधावत उत्कर्ष ॥ सोरठा ॥ सर्ब कार्य्य के बीच चिरकारी लौं पुरुष बर । निश्चय करै निभीच चिर दिन लौं दुख लहत नहिं ॥ कीन्हे प्रथम बिचार कार्य्य माहिं चिरकाल लौं । भूपति बुद्धि अगार होत न पश्चात्ताप है ॥ दोहा ॥ आश्रम में बहु दिवस रहि सुत सह गौतम पर्म । जात भये सुरलोक को मेधा ओकस शर्म ॥

इति शांतिपर्बणि मोक्षधर्मे चिरकारिकोपाख्यानो नामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः॥

बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ परम अहिंसा धर्म्म है हिंसा कल्मष पर्म । भीषम सों वृत्तान्त यह सुनिकै पूर्ब सुकर्म ॥ दुर्लभ गुणि भूपतिन को परम अहिंसा धर्म । फेरि प्रश्न यह करत भो नृप कौन्तेय सुकर्म ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ किमि सुप्रजा रक्षण करै भूप किये बिन घात । जानि श्रेष्ठ अति मैं तुम्हैं पूंछत हौं हे तात ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत एक प्राचीन हौं यहि प्रसंग के माहिं । बर इतिहास महीप सुनु पाण्डुसुवन मम पाहिं ॥ द्युमत्सेन भूपाल अरु सत्यवान सुत तास । तिनको है सम्बाद नृप तिहि माहीं मति-रास ॥ रामगीती ॥ नृप द्युमत्सेन सुकह्यो ऐसे सत्यवानहिं बैन । ये दण्ड्यजन तुम देहु इनको दण्ड तात सचैन ॥ ये बचन सुनिकै कह्यो ऐसे सत्यवान सुजान । ये दण्ड्य हैं पै इन्हैं देहु न दण्ड तुम बलवान ॥ बध नाम जो यह धर्म सो नहिं धर्म है हे

तात । यहिमाहिं हिंसा होति है सो पापहै बिख्यात ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ हैं योग्य बधके चौर इनको होयजो बध नाहिं । तौकहैंगे पर बस्तुको निज पागि अधरम माहिं ॥ नहिं लोकवारो कार्य केहू चलैगो हे तात । ह्वै निडर करिहैं उपद्रवको चौर गए बिख्यात ॥ सत्यवानउवाच ॥ हैं बिप्रके आधीन तीनिहुं बर्णवारेकार्य । जो दण्ड देहैं भूपतिन तौ कहतहै बरआर्य ॥ बिन बिप्रही सब कार्य करिहैं औरहू हैं तौन । जो उलंघत बिप्रबच तेहि पर्म दुर्मति भौन ॥ सुनु ताहि देनो दण्ड भूपहि उचितहै हेतात । सिद्धांतहै यहि माहिंशंका नेकुनाहिं सरसात ॥ गुणिदेय ऐसो दण्ड तामें होयहिंसा नाहिं । यहकह्योहै मैं तुम्हैं हे अवगाहिकै मनमाहिं ॥ जिहि चौरको नृपहनतहै तिहिचौरके जनजौन । ते सर्बमारेजातहैंतिहिभूपसोंबलभौन ॥दोहा॥ यातेबधकीजैनहींमार दीजिये भूरि । तिहिसों डरि नितहीरहै चौरकर्मसों दूरि ॥ करिहौंमैं चोरीन अब जब इमिकहै सुचोर । तबताको नृपदीजिये तजिकहि बचन कठोर ॥ द्युमत्सेनउवाच ॥ रामगीती ॥ हेसुनहु सुत मर्य्यादसेती जनहि दीन्हेदण्ड । लहि समय होतन पापहै हौहोत धर्म अखण्ड ॥ हैं हैं सनातन धर्मयह यहिमें नहींहै पाप । सब युगन माहीं करत आये बिज्ञभूप कलाप ॥ बिनहने मानत चोर हैं नहिं करत चोरीफेरि । यहितेन तजिये चौरकी अपराधता कोहेरि ॥ हैं अल्प जिनको द्रोह औ हैं अल्पक्रुध मृदुपर्म । अरु सत्यही निति कहत ऐसे जे महीप सुकर्म ॥ तेराज्यके आनन्द को नहिंहोत प्रापततात । नहिंहोत कबहुं प्रताप तिनको भानु सम बिख्यात ॥ जब ताड़नाको लहतहैं तबकहत ऐसेबैन । हम करैंगे चोरीनते पुनिकरत दुर्मति ऐन ॥ सत्यवानउवाच ॥ जो हनन हीको चौरको तवहृदयहै सिद्धान्त । नरमेधके मिसिमारि तौतू करि बिचार नितान्त ॥ जोरहै तत्पर धर्ममें नृपप्रजाहू तौसर्ब । नृपश्रेष्ठके आचरणकोहै करति सरति अखर्ब ॥ जोचलत आपु

न धर्मपथमें ताजि प्रमादहि भूरि। औरहि चलावत हैंसतताको देखिके जनदूरि ॥ जो कियो चाहे दूरिअघ सो प्रथम आपुहि दण्ड। देफेरि बंध्वादिकहि पीछे प्रजहिदेय अखण्ड ॥ जहँ लहतपापी दण्डनहिं तहँबढ़त पापमहान। ध्रुवधर्म लघुता लहत हैं जन कहतहैं मतिमान ॥ दोहा ॥ पूर्व पितामह हौं कह्यो मोकोयह वृत्तान्त। बिप्र अहिंसा धर्म इमि कहेनृपनको दान्त॥ जामेंहिंसा होयनहिं ऐसो शासनभूप। देय प्रजाको तातसुनु गुणिकै धर्म अनूप॥ सतयुग को यहधर्म है कह्यौतुहौ हम जौन। यामें तत्पर रहत जे पावत आनँद तौन॥ रामगीती ॥ बरधर्मवारी षोड़शी नृपकला हैं रहिजाति। कालि अन्त में क्षितिकन्त सुनुबर और सर्व नशाति॥ मनु कहत स्वायम्भूसु ऐसे अहिंसा जो धर्म। नितताहि धारणकरे रहिये सुखद गुणिकै पर्म ॥

इतिमोक्षधर्मेद्युमत्सेनसत्यवान्सम्वादेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ धर्म जौन गार्हस्थ अरु योगधर्मअभिराम। श्रेयदहै इनमाहिं को कहोमोहिं बुधिधाम॥ भीष्मउवाच ॥ येजोदोऊ धर्म हैं देतमहत फलपर्म। साधु करत आचरणइन दोउनको गुणिमर्म ॥इनदोउनको कहतहौं गुणिकैतुम्हैं प्रमान। मनको करिएकाग्रसुनु कुन्ती सुवनसुजान॥इहिप्रसंगमेंकहतहौं यक इतिहास अनूप। गोको औमुनि कपिलको हैसंबादसुभूप॥ रामगीती ॥ नृपनहुष जोसोजानि करिकै बेदके बरबैन। भोकाज त्वष्टाके सुहनतो गउहि भोबलऐन॥ भोकापिल मुनितिहि गउहि देखत सत्यवान अनूप। सोनहुष नृपकी करत निन्दाभयो तहँ सुनुभूप॥ तिहि गऊमो ऋषिस्यूमरस्मी बिज्ञकरि सुप्रबेश। इमि कहनलागो बैनसों हे कपिलके शुभबेश॥ जोश्रुतिहि की तू करत निन्दा और तौका धर्म। जेतपस्वी बिज्ञहैंबर तेसदाहि सुकर्म॥ सुनुबेदके मानत प्रमाणहि अप्रमाण कबौन। जोबेद माहीं लिख्योहै सब उचित करिबो तौन॥ कपिलउवाच ॥ मैं बेद

की नहिं करत निन्दाऔ नराखतदक्ष । सम बिषम मैंनहिंकहत कबहूं वेदबैनहिं स्वक्ष ॥ हैंआश्रमी जे सर्ब तिनके भिन्न २ सुधर्म । पैकियेते निष्काम एकहिहोत सुफल सुकर्म ॥ जिमिपरिब्राजक परमपदको प्राप्तहोत सुजान । तिमि ब्रह्मचारी गृही त्योंही बानप्रस्थ सुठान ॥ येचारि आश्रम जौनहैं तेचारिमारग स्वक्ष । सुनुपरम पदको जायबेके बिघ्न रहित प्रतक्ष ॥ पैसुनो संन्यास मारग गहेशीघ्रहि जात । अरु ब्रह्मचारय आदिजेहैं तीनमार्ग बिभात ॥ तिनको गहेसों शीघ्रता सो परमपद नहिं लेत । हैचारिहुनको भेद इतनो गुणत बुद्धि निकेत ॥ दोहा ॥ करै कर्मयह जानिकै बेदबिहितजेसर्ब । पैजोहै संन्यास सोउत्तम परम अखर्ब ॥ रामगीती ॥ सुनुजो अहिंसा शास्त्रताते प्रकट भूरि सुकर्म । तुमकहाहिंसा शास्त्रमेंफल लख्यो उत्तम पर्म ॥ स्यूमरश्मिरुवाच ॥ जो चहै स्वर्गहि करै विधिवत यज्ञसो अवदात । यह सुफल हिंसा शास्त्रकोहै कपिलमुनि बिख्यात ॥ अजअश्व मेष सुगौपक्षी बनौषधि बहुपर्म । अरुग्राम्य औषधि यज्ञ साधनसर्ब येसहहशर्म ॥ बधकिये यातेयज्ञ माहीं होतहिंसा नाहिं । बिधिकरी पूजा यज्ञसेती सुरनकी भूमाहिं ॥ गऊ अज अरुमेष मानुष अश्वगर्दभ जौन । अश्वतर येग्राम्य पशुहैं कपिलमुनि मति भौन ॥ सिंहऔ बाराह बारण व्याघ्र बानर ऋक्ष । अरु महिष येहैं पशूबनके सत्य मुनिबरदक्ष ॥ येयज्ञ साधन ताहि प्रापत होहिं जो अवदात । तौइन्हें उत्तमजानिये हम सुन्यो पूरबख्यात ॥ जनयज्ञ करता लहत स्वर्गहि औपशू औसर्ब । ये यज्ञमाहीं जातहोमे सहबिधान अखर्ब ॥ पशु वृक्ष लतिका पयस दधि घृत भूमिहवि दिशिकाल । ऋक् साम औ यजु वेदत्रय यजमानबिज्ञ बिशाल ॥ अरुसुनो श्रद्धा औषधी औसत्रहौं सुकृशान । येयज्ञ केसब अंगहैं अरुयज्ञजो अभिरान ॥ सोलोक थितिको मूल है वर कपिलमुनि बुधिधाम । बर आज्य सोंअरु दुग्ध दधिसोंअरु

त्वचासों पर्म । अरुबालसों अरु शृंगपदसों गोमखहि सहशर्म ॥ जिमि करत पूरण तिमिहि सब अश्वादि पशुशुभ ठान । मख करत पूरण अंगअपने सो सुनो मतिमान ॥ दोहा ॥ पशुअश्वादिकहैं बने यज्ञहि काजेसर्ब । यातेइनको हनतहैं मखमें मनुज अखर्ब ॥ कोऊकाहुहि हनत नाहिं करत सर्ब मखकाज । बध अश्वादिक पशुनको निश्चय बुध शिरताज ॥ कियेकराये बिधि सहितयज्ञहिप्रज्ञमहान । स्वर्गलोकमें प्राप्तह्वै पावतमोदसुजान ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेगोकपिलसंबादेअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

कपिलउवाच ॥ दोहा ॥ दृश्य पदारथ जौनहैं तिनको लखतहमेश । कर्म मार्गको छोड़िकै संन्यासी शुभवेश ॥ प्राप्तहोतहै ब्रह्मको काहूलोकहि माहिं । महतपराक्रम सों सुनि जुलहत ब्यतिक्रम नाहिं ॥ रामगीती ॥ जेसर्बबन्धनसों छुटेहैं होयकै निर्द्वन्द । तेरहित ह्वै सबपाप सेतीभये फिरत अमन्द ॥ जेज्ञानमें नित रहततत्पर शोकको तजिसर्ब । औरजो गुणछोड़ि करिकै जानि दुखद अखर्ब ॥ तिनजननकी जेगतिहिपावत मनुज बर सुखदाय । गृह धर्ममेंका प्रयोजन तिनजननको दुखदाय ॥ स्यूमरश्मिरुवाच ॥ तुम कहतहो सिद्धान्तही पैगृहीबिन अभिराम । निर्बाह संन्यासीनको नहिं होतहै बुधिधाम ॥ नितिमातकेहैंरहत आश्रितपूज जैसीभांति । तिमिगृहाश्रमके रहत आश्रित और आश्रम पांति ॥ है गृहस्थाश्रमही सुनो सब धर्मकेरो मूल । सुर पितर पावत गृहस्थाश्रम सोंहि तृप्ति अतूल ॥ नहिं प्रजाको उत्पन्न करिबो और आश्रम माहिं । जो गृहाश्रम नहिंहोय तोमुनिहोय बर्षा नाहिं ॥ जोकहौऐसे होति मोक्षन गृहाश्रम केबीच । तोसुनो जेनहिं करत बिधिवत गृहाश्रमहि निभीच ॥ तेलहत मोक्षन आलसी औ जेन श्रद्धावान । अरु जे पगे कामादिमाहीं रहत नित्य अजान ॥ संन्यास बिनहै होतिमोक्षन कहतजे इमिबेन । यह कपिलमुनि सिद्धान्त जानोति सुपंडितहैन ॥ बरऋषिनकोअरु सुरनको अ-

रु पितृगणको पर्म। जन्मतहि जनको होतहै ऋणआय प्राप्त सशर्म॥ बिधिसह पढ़ेते ऋषिनको ऋणऔ कियेते यज्ञ। ऋण सुरन केरो सर्व छूटत सुनो मतिबरप्रज्ञ॥ औकिये सुत उत्पन्न छूटत पितरको ऋणजौन। जोगृहाश्रम नहिंकरै तोयेछुटैं ऋण किमितौन॥ यमदूत सोंते लहत दण्डन करतमख सविधान। पशुसहित उत्तमलोककोहैं चलेजात सुजान॥ कपिलउवाच॥ जे कर्मतजिकै धारि धीर्यहिधरतहैं संन्यास। रागादि मलसों रहित ह्वैकै पाय सुमति प्रकास॥ तेनिर्बिकार सुब्रह्म भावहि लहत महत सुजान। पथमाहिं तिनकेसुरहु जायन सकत उग्रमहान॥ दोहा॥ चारिद्वारहैं पापके गुप्तकरैते सर्व। ब्रह्मभाव को होतहै जबजन प्राप्त अखर्ब॥ यकबाणी यकजठरऔ यक उपस्थ औ हस्त। येप्रतिबन्धक ज्ञानके जानत सुबुध समस्त॥ रामगीती॥ कटु बचन कोनाहिं बोलिबो औवृथा बकिबो नाहिं। अरु छोड़िबो पैशून्यकोजो ग्लानि गुणि मनमाहिं॥ अरु छोड़िबो मर्याद सेती सत्यनित्य सगौर। ये बागद्वारहि गुप्तकारक सर्व बुधशिरमौर॥ अरु अलोलुपता महत अशनाहिं छोड़िबो अरुजौन। येजठर द्वारहि गुप्तकारकगुणो बर मतिभौन॥ अरुत्यागजो परद्वारकोहै सदाबुद्धि अगार। सोउपस्थद्वारकोहै गुप्तकार सुढार॥ हैबाहु द्वारहि गुप्तकारक छोड़िबो हिंसाहि। जोकरत चारोद्वार गुप्तन बुद्धिसों अवगाहि। बरकहत आरजहोतताके सर्व कारज व्यर्थ। कछुहोतहैनाहिं यज्ञतपसों प्रज्ञपरम समर्थ॥ स्यूमरश्मिरुवाच॥ हैकर्मकरिबो जौन अरु जो करमकोहै त्याग। इनदुहुनमें पथकौन सोहै श्रेष्ठकहु बड़भाग॥ कपिलउवाच॥ जेबिज्ञ तवसम परमहैं अज्ञान नहिं तिनपाहिं। तेगुणत श्रेष्ठ अश्रेष्ठ कोहैं आपुही हिय माहिं॥ स्यूमरश्मिरुवाच॥ हैस्यूमरश्मि सुनाम मेरो कपिलमुनि अवदात। मैंश्रेय कीकरि कामना हियमाहिं परम सशात॥ बरज्ञानलहिबे काजआयो इहांहौं तवपास। अति कृपाकरिकै कहो मोको आपु

सहित हुलास ॥ मैं बादकी इच्छान करिकै तुम्हैं पूछत अत्र। मुनि आपुसेहो आपुही गति तुम्हारी सरबत्र ॥ जोयुक्तहे शुचि बुद्धि सों बर चिदाभास अमन्द। तुम करत तासु उपासनाहौ कपिल मुनि निर्द्वन्द ॥ की बुद्धिकरिके कियो निश्चय तासु ऐसो जौन। तिहिकी सुकरत उपासनाहौ आपु प्रज्ञाभौन ॥ मैं छोड़ि करिकै तर्कशास्त्रहि बेद कर्महि पर्म। हेजानतोहौं सहित बिधि बर बुद्धिसों गुणिपर्म ॥ जोसबिधि आश्रम माहिं तत्पर रहैमानव स्वक्ष। तो बेद बिहित सुकर्म सिद्धिहि होत प्रापत दक्ष ॥ बहु पूर्वपूर्व सुकर्मवारी बासनासों माम। यहिभूरि भवसागरहि नहिं तरि सकत है बुधिधाम। हम शिष्य हैं तव कृपाकरिकै ज्ञानको उपदेश। तुम कीजिये बर कपिल मुनिहो ज्ञानमान बिशेश ॥ दोहा ॥ चारोंजे हैं बन अरु चारों आश्रम जौन। तिनको पर आनन्दको साधनजो मतिभौन ॥ तामेंजो कछु न्यूनहै सो तुम देहु बताय। ताकी पूरणता नहीं हमैं प्राप्तसुखदाय ॥ चरणाकुलक ॥ जे ज्ञानमें जन रहत तत्पर साधनाके बीच। लगिताहि देत छुड़ाय जगते ज्ञान परम निभीच ॥ बर ज्ञानतेजो रहितहैं आचरण मेधाधाम। सोदेत अतिही क्लेश है बहु प्रजाको मुनि माम ॥ तुमहो सुज्ञानी औ निरामय पर्म उत्तम स्वक्ष। अद्वैत भावहि पायबो सो अतिहि दुर्लभ दक्ष ॥ है होत कबहूं प्राप्त काहूकोहि निश्चय जानु। संदेह यामें है नहीं सिद्धान्त कहत महानु ॥ भोस्वच्छ तत्त्वज्ञान काहूको नहीं अवदात। जयचाहि अपनी करत ब्यर्थहि बाद है बिख्यात ॥ जन है रहे कामादिके वशमाहिं जगमें सर्ब। यहिते सुतिनको किये वशमें अहङ्कार अखर्ब ॥ जे करत इच्छा परमगति की लहनकी अभिराम। बहु शुभाशुभजेकर्म तिनको देततजिबुधिधाम ॥ स्यूमरश्मिरुवाच ॥ जो कह्योहै हम आपुसों सो शास्त्रको अवगाहि। बिन शास्त्र जाने प्रवृत धर्म सुहोत है मुनिनाहिं ॥ जो न्याय है आचार जग

में शास्त्रहीते सर्ब । है प्रवृति कौनो नहीं जानो बिना शास्त्र अखर्ब ॥ बरशास्त्रसों जेरहितमानै व्यक्तही को प्रज्ञ । है बुद्धि सेती हीन ऐसे जौन मानव अज्ञ ॥ तेतमोगुणसों युक्त है संसार है बुधराज । हम कह्योहै अवगाहि तुमको तनि सुबुद्धिदराज ॥ जो बेदमाहीं लिख्योताको करत आश्रय नाहिं । अनुमानहीसों कहत सो किमि गहै मनके माहिं । जो कहत होसो कुटुम्बीको परमदुष्कर कर्म । यहिमाहिं लागे व्यर्थ कैहै कर्मकाण्ड सशर्म ॥ बर बेदवारी कृपा पीछे भये ते अवदात । सुनु नास्तिकता आय जैहै कपिलमुनि बिख्यात ॥ हमकह्यो जो यह आपुसों अवगाहि करिकै ताहि । तुम कहौ हमको और तुम सो परतहै नहिं चाहि ॥ दोहा ॥ औ जैसी बिधि मोक्षको जानत तुम बुधिधाम । तैसेही हमको कहो करिकै कृपा ललाम ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेगोकपिलसंबादेएकाधिकाशीतितमोध्यायः ८१॥

दोहा ॥ स्यूमरश्मि हम बेद नहिं पीछे करत सुजान । जानत हैं हम बेदही लोकन को सु प्रमान ॥ शब्द ब्रह्म है एक अरु परब्रह्म है एक । कर्मोपासनकाण्ड अरु शब्दब्रह्म सबिबेक ॥ परब्रह्म निरुपाधि जो नित्यानन्दाव्यक्त । शब्द ब्रह्मके माहिं जन जो बुधहैंआसक्त ॥ सो जन अति उज्ज्वल भये क्रमसेती मतिगेह । परब्रह्म को होतहै प्रापत निस्संदेह ॥ गर्भाधानादिक सरब संस्कार जे स्वक्ष । तिनसों जोहैं युक्तजन मेधावान सुदक्ष ॥ सो अधिकारी ज्ञानको होत और नहिं कोय । ज्ञानलहेते ब्रह्म को प्राप्त होत सुख भोय ॥ गुणिकै कर्म अनन्त में अत्र कहतहौं तोहि । कर्महिं में न लगो रहे दिव्यदृष्टिसों जोहि ॥ ज्ञानारथ साधन करै तजि कामादिक सर्ब । गुणिकै बिमला बुद्धिसों दायक दुःख अखर्ब ॥ यज्ञादिक सबही करै पै फल आशा नाहिं । मनमें राखै आपने जन मतिमान सदाहिं ॥ संन्यासाश्रम मुख्यहै तीनों आश्रम जौन । ते साधन संन्यास के जानो प्रज्ञा

भौन॥ तीनों आश्रम बिधि सहित कीन्हे उज्ज्वल होत। तदनु किये संन्यास बर ज्ञान सु करत उदोत॥ निर्बिकार जो ज्ञान है होत प्राप्त जब पर्म। बृह्मभाव तब लहत जन स्यूमरस्मि सहशर्म॥ तीनों आश्रम जिहि किये संन्यासाश्रम काज। ब्राह्मण कहिये ताहि बर प्रज्ञावान दराज॥ सन्तोषी त्यागी परम ते सु ज्ञानके थान। और न कोऊ है गुणी जगके माहिं महान॥ सो जो परपद लहनकी तर्क करै हिय माहिं। परपद पावै छूटि तो जगते संशय नाहिं॥ स्यूमरस्मिरुवाच॥ त्यागि फलाशा को सुनो जौन करत है कर्म। अरु जे जन संन्यास में प्रवृतभये सहशर्म॥ तिन दोउनकेमाहिं जन श्रेष्ठ कहोहै कौन। बक्ता आपु महानहौ कपिल ज्ञानके भौन॥ कपिलउवाच॥ दोउनमाहीं श्रेष्ठ है त्यागी मनुज सुजान। त्यागीही आनंदको प्रापतहोत महान॥ स्यूमरस्मिरुवाच॥ तुमको निश्चय ज्ञान में गृहिहि कर्म्मके बीच। जाको निश्चय है जहां तहहीं शरम निभीच॥ निश्चयही जो मुख्यहै तौभो कहा बिशेश। ज्ञान माहिं बर कर्मते कहो मोहिं शुभबेश॥ कपिलउवाच॥ शुद्ध सु होत शरीर है कर्मन सों अभिराम। पै पावत कैवल्य जन ज्ञानहि सों मतिधाम॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मे गोकपिलसंबादेद्वयशीतितमोऽध्यायः ८२॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ मोक्षधर्म जिन जननसों होय सकल नहिं तात। तिनको कहा त्रिबर्ग में कहो श्रेष्ठ अवदात॥ भीष्मउवाच॥ अत्र एक इतिहास हौं कहत पुरातन पर्म। ताहि सुनो एकाग्रके मनको तात सधर्म॥ कुण्डधार निज भक्तको कीन्हेहो उपकार। तिहिको है वृत्तान्त नृप ताके माहिं उदार॥ कोऊ निधनी बिप्रयक भूप मखेच्छावान। धर्म करौंजो धनमिलै यह गुणिकै मतिमान॥ अतिही दारुण बिधि सहित करत भयो तप पर्म। मनको थिरता माहिं करि सो ब्राह्मण सहशर्म॥ चरणाकुलक॥ महती भक्ति हियेमें सो धरि। देवतानको पूजतभो

चरि ॥ पैनकहूं नृप पावतभोधन । महाविज्ञ बरबिप्र तपोधन ॥ तदनन्तर चिंता करिकै अति । करत विचार भयो इमि बरमति ॥ ऐसो कोऊ होय सुदेवत ॥ होय प्रसन्न शीघ्रजो सेवत ॥ तदनन्तर ब्राह्मणसों लेखत । कुण्डधार जलदहिभो देखत ॥ ताहि देखि इमिभयो बिचारत । करहि श्रेयमो लखिकै आरत ॥ रहत नगीच देवता के यह । देहै धनबर शीघ्र कृपासह ॥ तदनन्तर बिधिवत सों पूजत । भयो ताहि तहँ सुबचन कूजत ॥ थोरहि काल माहिंसो जलधर । होतप्रसन्न भयो करुणाकर ॥ ब्राह्मणके उपकारहि कारक । बचन कहतभो सोजलधारक ॥ तदनन्तर कुशशाई सोबर । ब्राह्मण स्वच्छ परम मेधाधर ॥ दोहा ॥ जलधरके सुप्रभावसों स्वप्न अवस्था माहिं । सब भूतनको देखतो भयो आपने पाहिं ॥ माणिभद्र को लखतभो स्वप्नतौनही बीच । अति तेजोमय छबि महाधारे परम निभीच ॥ आज्ञातेसो देवकी याचकको फलदेत । होतलखे आनन्द अति ताकोदया निकेत ॥ जयकरी ॥ शुभहि करतहैं कर्म जौन जन । तिन्हैं देतहैं देव राज्य धन ॥ करत अशुभहैं जेजन दुर्मति । तिनके छीनलेत करिरुट अति ॥ यक्षणके देखतसो जलधर । कुण्डधार नामाबर छबिघर ॥ करतप्रणाम भयो भूपैपरि । देवनके आगे मुदको धरि ॥ तदनन्तर मणिभद्र महामति । देवनकी आज्ञाते करिरति ॥ कुण्डधार जलधर छबि ऐनहि । सोंहे कहत भयो इमि बैनहि ॥ तोहि कहा इच्छाहै तुरकहु । अत्रनेक संकोच नतूगहु ॥ कुण्डधारउवाच ॥ जोप्रसन्नहो देवभये तुम । देहु कृपाकरि जो मांगैहम ॥ मेरो महाभक्त ब्राह्मण यह । याहि कृपाकरि कीजै सुखसह ॥ सोसुनि माणिभद्र बोलो पुनि । देवनकी आज्ञा मनमें गुनि ॥ मणिभद्रउवाच ॥ उठुउठु कुण्डधारहे जलधर । धनअर्थी जोब्राह्मण यहबर ॥ तौतुम देहुचारु याकोधन । अतिही आनन्दित करिकैमन ॥ ब्राह्मण चाहतहै धन जेतिक । अबहीं चारु

देतहौं तेतिक ॥ कुंड़धार मानुष्यहि गुणिचल। ब्राह्मण कीमति कोसुनु वरबल ॥ जासु प्रशंसा कोबुध गावत। ऐसे तपमें भयो लगावत ॥ कुंडधारउवाच ॥ धनचाहतहम ब्राह्मण काजन। रत्न पूरण भूमि दराजन ॥ रहों धर्म में नित्यहि तत्पर। यह सुविप्र हम मांगत यहबर ॥ मणिभद्रउवाच ॥ दोहा ॥ रहोधर्मके माहिं यह तत्पर नित्यहि बिप्र। धर्म्मनके जेपरम फल याहि मिल्यो तेक्षिप्र॥ भीष्मउवाच ॥ दुर्लभ इच्छित पायबर कुण्डधार सह हर्ष। होत भयो भूपाल मधिसुनु अरिदर उत्कर्ष ॥ तदनन्तर तिहि ब्राह्मणहि कुंडधार भोदेत। जीरण चीर सुधीरहे परम सुधर्म निकेत ॥ तिहिको लखिके दोष गुणि जलधर में लहिग्लानि। जाय तपस्या करतभो बनके माहिं महानि ॥ अरिल ॥ देव अतिथिसों रहेमूल फल। बाकी तिन्हें भक्षिके निर्मल ॥ किये तपस्या ब्राह्मणकी अति। होती धर्म मध्यमेंदृढ़ मति ॥ त्यागि मूल फलको सो मतिधर। पर्ण अहारी होतभयो बर ॥ तदनन्तर पर्णहुको तजि करि। जलाहार भोधीरजको धरि ॥ तदनु सुभक्षत भयो स्पर्शन। त्यागि नीरहूको बहु बरसन ॥ तासुप्राण छीजत भो तबहुंन। बहुतकालमें ताकी बरगुन॥होतीभई सुदिव्यदृष्टि नृप। सह बिधान बर करतकरत तप॥ ताकी होति भई ऐसी मति। कछू कालमें तहँबर नरपति ॥ मांगै कोऊ जोमोसों धन। ताहि देउंतौंह्वै प्रसन्नमन ॥ मिथ्या होयनहीं बाणी मम। यह बिचारिके तदनु सुउत्तम ॥ फेरि तपस्या करत भयोबर। सहित बिधान महा मेधाधर॥ तदनु बिचारत भो मनमें यह। ब्राह्मण तौनमहा आनँद सह ॥ जोमैं राज्य देहुं काहुहि अब। ताहि मिलैतौ सह समाज सब॥ मिथ्या होय नहीं मम भाषण। जाक्षण कहौं मिलै तुरताक्षण ॥ तदनु सुकुण्डधारभो दर्शन। देतो ताहि प्रकट सह हर्षन ॥ कुण्डधारकी पूजा सह बिधि। करतभयो सो ब्राह्मण बुधिनिधि ॥ तदनु कहतभो ऐसे जलधर। तिहिब्राह्मण कोभूप-

ति बरकर ॥ दिव्यदृष्टि जो पाईतैं ऋति । तिहिसों तूलखु भूपन कीगति ॥ औलोकनको करु अबलोकन । सहित चराचर के बहु थोकन ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सहसन नृपति भयो नरकके बीच । दिव्यदृष्टि सों देखतो ब्राह्मण तौन निभीच ॥ कुण्डधार सों कहत भो तदनु ताहि इमिबैन । जोतूदुखको प्राप्तभो मोहिं पूजि मति ऐन॥तौमोको पूजे कहा तोहि भयो फलपर्म । औतेरो उपकार हमकीन्हों कहा सुकर्म ॥ देखु देखतू फेरिद्विज कामवान जन जौन । नरकहि पावत कामना करैसु किमि बुधिभौन ॥ देव तानके बचनते कामादिक जेसर्ब । बिघ्न करतहैं जननके प्रापत होय अखर्ब ॥ देवतान कीबिन कृपा धार्मिक होतन कोय । परम धर्म प्रापत भये आपुहि कोतूजोय॥ तपके स्वच्छ प्रभावते महत राज्यधन भूरि । दीबेकी इच्छा करत जनहि मोदसोंपूरि ॥ देव विघ्न जोनाहिं करैंतौ धार्मिक जनहोय । देहिं जगत मेंजनन कोजो मन आवै सोय ॥ भीष्मउवाच ॥ चौपाई ॥ तदनु सुबिप्र जोरि कै पाणी । इमि जलधरहि कहत भो बाणी ॥ कीन्ही आपु अनुग्रह भारी । मोऊपर बर पर उपकारी ॥ मैं तव पूर्व असूया कीनी । मतिसों काम लोभसों भीनी । तिहिको तुम मनमें न बिचारो । ताहि माफ करिकै सुबिसारो ॥ ये सुबचन ब्राह्मणके सुनिकै ।कुण्डधार जलधर बर गुणिकै । क्षमा कियो तहँ ऐसे कहिकै ॥ मिलिकै सो ब्राह्मणसों चहिकै ॥ भयो सुअन्तर्द्धान तहाहीं । फेरि लखि पर्‌यो बिप्रहि नाहीं ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सो फिरतभो सब लोकनकेबीच । कुण्डधारकी लहि कृपातपसों भयो निभीच ॥ करन लग्यो संकल्पजो हौंन लग्योसो सिद्धि । फिरन लग्यो आकाशमें लहिकै तपसों सिद्धि ॥ सन्त बिप्रअरु देवता औ चारणजो यक्ष । हुलासित ह्वै पूजा करत धार्मिक जनकी स्वक्ष ॥ कामिनकी औ धनिनकी पूजाकरत कबौ न । याते तिनते श्रेष्ठ हैं धार्मिकजन मतिभौन ॥ मोक्षारथ साधन

नहीं होयसकैजो तात । ह्वैतत्पर निति धर्ममें रहिहैं ह्वैअवदात ॥
इतिशांन्तिपर्बेणिमोक्षधर्म्मेंकुण्डधारोपाख्यानेत्र्यशीतितमोऽध्यायः८३ ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ धर्मारथजो यज्ञहै तासुरूप कहुमोहिं ॥
तात सुनो बिख्यात अब कृपा दृष्टिसों जोहि ॥ भीष्मउवाच ॥ उंछ-वृत्ति बरबिप्रको मैं बृत्तान्त अनूप । नारदको गायो तुम्हैं अत्र कहतहौंभूप ॥ नारदउवाच ॥ काव्य ॥ बिदर्भनामा देशमाहिं यकबिप्र सुउंछ वृत्तिवारो ॥ मनके माहिं बिष्णु पूजाको करतबिचार भयो भारो ॥ सूरजपर्णी औसुबर्चला ताको शाक भक्षिफीको । औ सावाँको भक्षि तहांसो रहतहुतो अतिबरधीको ॥ सावां अरु सो शाक बिष्णुको अरपे सो नृप दिवकेरो । साधनभयो अहिंसा सेतीआनँद दायक बहुतेरो ॥ परम निर्मला ताकी नारी पुष्कर धारिणि नामाही । भई कृशाहीव्रत कीन्हेंसो तबहूं अति अभि-रामाही ॥ दोहा ॥ मोरपुच्छ अरु परणजे धरे वस्त्रही तास । सोइ करतिजो पतिकहत धारि शापकी त्रास ॥ आज्ञा पतिकी पायकै पुष्कर धारिणि बाल । त्यागि फलाशा बिबिध मख करती भई बिशाल ॥ होयन हिंसा जीवमें करिकै यह सुबिचार । पशुबनाय कै पिष्टको हनती भईसो दार ॥ सुनहु तात यक मृगहुतो. तिहि अटबीके माहिं । ब्राह्मण कोसो कहतभो ऐसे ह्वैकैपाहिं ॥ अं-गहीनभो यज्ञ तबहुते पिष्ट पशुप्रज्ञ । याते मैं तोको कहत बिप्र परम धर्मज्ञ ॥ जो नहिं धन तब पासतौ मोको हनि साबिधान । स्वर्गलोकको जाहु तू सहतिय समुद सुजान ॥ तदनन्तर तिहि यज्ञमें सावित्री साक्षात । होय कहत ऐसे भई तिहि ब्राह्मणको तात ॥ तोसों यहमृग कहतसो करि सुबिधान समेत । सावित्री के बैनयै सुनिकै बुद्धि निकेत ॥ सहबासीहै यह सुमृग कहत भयो इमिबैन । याते हेसावित्रि सुनु याको हनिहौंमैं न ॥ ब्राह्म-णकेयेबचन सुनि सावित्री अचलेश । मख पावककेमाहिं तहँ करती भईप्रवेश ॥ फेरिहु मृगकोकहतपै मान्यो ब्राह्मण नाहिं ।

कहतभयो इमि मृगहि तू खरो रहुन मम पाहिं ॥ ये ब्राह्मणके-
बचनसुनि हरिण अष्टपद जाय । कहतभयोइमिआयके फिरि
बिप्रहि नरराय ॥ मोहिंमारिकै सहित बिधि हुति तू मखकेबीच ।
सँग गतिको हौं प्राप्तह्वै जासों होहुंनि भीच ॥ दिब्यदृष्टि मैं देतहौं
तोको ब्राह्मणपर्म । तिनसों तू लखु अप्सरा सुखमासनी सशर्म ॥
औ गन्धर्व्वनके भरे भासों भूरि बिमान । रत्नसोंभूषितभले
देखुस्वच्छ मतिमान ॥ दिब्यदृष्टि लहि हिरणसों दखिबिप्र चि-
रकाल । हिंसाकोयह स्वर्गफल यहतहँ गुन्यो नृपाल ॥ कौनहु
कारण पायकै हरिण होयहै धर्म । बनमें तिहि रहतो हुतो शी-
तादिक सहिपर्म ॥ होकारणहि छुड़ायबे बिप्रहिकहत कुरंग ।
मोको हनि हुति बिधि सहित करु तू यज्ञ असंग ॥ सुनिकुरंगके
बैन ये द्विज यह कियो बिचार । स्वर्गलहौं मैं याहि हनि हुनि
मखमाहिं सुढार ॥ यहबिचारतहि बिप्रको तपभो नष्ट बिशाल ।
हिंसा मखउपकारिका याते नहीं नृपाल ॥ तदनन्तर तिहि बिप्र
सों यज्ञ अहिंसावान । करवावतभो आपुही धर्मसधर्म सुजान ॥
समाधान भो नारिको ब्राह्मण की हे भूप ।भये अहिंसा यज्ञबर
सहित बिधानअनूप ॥ अहितहिहिंसा धर्महे निश्चयजानुसु-
धर्म । परम अहिंसा धर्मसों उत्तम सर्ब सशर्म ॥

इतिशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेयज्ञनिंदानामचतुरशीतितमोध्यायः ८४ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ त्रिबर्गमाहीं धर्मको कही श्रेष्ठता आप ।
मोहिं पूर्व्व अध्याय मेंतात सुबुद्धि कलाप । परम उपाय किये
बिना मोक्षहोत नहिं तात । कह्यो पूर्बसो मोहिं तुमकहु उपाय
अबदात । भीष्मउवाच ॥ पूछनकी सबधर्म औबर कैवल्य उपाय ।
तोहींमेंहै बुद्धिबर बिमला सुनुनरराय ॥ घट करणेमें बुद्धिजोहो-
तसुघट जबसिद्धि । तबन प्रयोजन तासुकछु ऐसेही बुधिनिद्धि ॥
प्रवृत्ति धर्म है सबिधि जो कछुन प्रयोजन तासु । निवृत्ति धर्म
निष्कर्म जबमनमें कियोप्रकासु ॥ एकहि मारग मोक्षको तोहि

कहतहौं तौन। मनकोकरि एकाग्र सुनु कुन्ती सुत मति भौन॥ मनकोजो संकल्पहै ताको छोड़िअखर्ब। करैकामको दूरिऔ क्षमा धारिकै सर्ब॥ दूरिक्रोधताको करै औ आलसको त्यागि। निद्रादूरि करैसुबुध परमबुद्धिमें पागि॥ सावधान तासों करैभयको दूरि महान। मनलगाय क्षेत्रज्ञमें रोकै श्वास सुजान॥ इच्छाको अरुद्वेषको तजैधर्य्यिको धारि। तजैलोभऔ मोहको सन्तोषहि बिस्तारि॥ परमसुतत्त्वाभ्यास में पगिकै आठहुयाम। भ्रमको औ अज्ञानको करैदूरि बुधिधाम॥ तजै अधर्महि कृपासों औ अनित्यता जौन। करैसनेहै दूरिनृप तासों प्रज्ञा भौन॥ वायु रोकसों क्षुधा औ मौन भावको धारि। बहुत बारता को तजै बिमलामति बिस्तारि॥ करुणासों अभिमानको दूरि करै हे तात। करै सुदूरि बितर्कको निश्चयते अवदात॥ मतिसों मन औ बचनको जीतै बुद्धि निधान। मतिको जीतै ज्ञानसों निर्मल परम महान॥ आंत्मावारे बोधसों जीतै ज्ञानहिं पर्म। जीवात्मा के बोधको चित्त प्रकाशसो पर्म॥ यह मारगहै मोक्षको निर्मल परम अनूप। यापैजे बुधचढ़तते सुखसों पहुंचत भूप॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेयोगचारानुवर्णनोनामपंचाशीतितमोऽध्यायः८५

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ सब कोऊ हमको कहत धन्यधन्य जग माहिं। औ हमसों कोऊमहा दुःखित जगमें नाहिं॥ हमदेवतह्वै दुख लह्योधारेते नरदेह। यातेनरदेहहि गुण्यो दुःखरूप बुधिगेह॥ करिहैंबर संन्यासको ग्रहणकबैहमतात। छांड़नकाजैदेहको दुःखदमहा बिख्यात॥ इंद्रियआदिकसर्बजे तिनकोतजि अभिमान। जैहोंमें आरण्यको कबहै तातसुजान॥ भीष्मउवाच॥ व्याकुल होहुन भूपतुम अन्तवान गुणिसर्ब। कोऊहैन अनन्तयहहै सिद्धान्त अखर्ब॥ लहिहौ तुम कैवल्यजब ह्वैहै दुखको अन्त। जोतुम इमि हमको कह्यो हियमें गुणि क्षितिकन्त॥ मेरोमन लागोरहत नित्यराज्यके माहि। लहिहौं किमि कैवल्यको तौसुनु

नृपममपाहि ॥ अचल कछूहूहै नहीं यातेबर भूपाल । लहिहौ तुम कैवल्यको आनँद परम बिशाल ॥ साधनकिये समाधिको अल्पकालही बीच । आनँदकोकैवल्यके लहिहौनृपति निभीच॥ प्राप्तभये जेदैवते दुखसुख तिनमें नाहिं । लागैनिति लागोरहै मोक्षसाधना माहिं ॥ श्यामअरुण रणमेंमिले तद्गतहोतसमीर । श्याम अरुणपै गुणनहीं मारुतको रणधीर ॥ इमिहीदुखसुख युक्तसों भये आत्मा तात । लागत सुख दुखवानपै भिन्नहिहै अवदात ॥ आत्माके गुणहैं नहीं सुख दुःखादिक सर्व । यातेछेदे जातहैं छेदे गुणत अखर्व ॥ तमजो भो अज्ञानतेताहिज्ञान सों स्वक्ष । दूरिकरै तब होत है ब्रह्मप्रकाशित दक्ष ॥ आत्मा सिद्ध न होत द्रुत यत्नहु किये बिशाल । याते लागोई रहै बिकल न होय नृपाल ॥ भ्रष्टहोयकै राज्यसों वृत्रासुर बलवान । कह्यो जौनसो अत्रमैं तोको कहत सुजान ॥ कहत भये ऐसे बचन शुक्रताहि अवगाहि । भये पराजय तू हिये व्यथा करत क्यों नाहि ॥ वृत्रउवाच ॥ मनसों महत बिचारकै जगऔ मोक्षहि पर्म । जानतहौं यातेन मैं मुदशुक लहत सुकर्म ॥ बशमें ह्वैकै काल के प्राणी कर्माधीन । नरकमाहिं बूड़तकिते पावत स्वर्ग प्रवीन ॥ जहँरहिबेको कर्म है जितनो तितने बर्ष । रहिकै तहँ पुनि जन्म को प्राप्तहोत शतबर्ष ॥ ऐसेमैं संसारके बीच लखतहौं जीव । कर्मकरै जैसोलहै लाभसुनो मतिसींव ॥ वृत्रासुरके बैनयेसुनिकै शुक्र नरेश । कहत भये वृत्रासुरहि ऐसे बचन बिशेश ॥ असुर होयकै ये बचन तू बोलत क्योंतात । असुर भावके बैनये नाशकहैं बिख्यात ॥ वृत्रउवाच ॥ मैं सुबिजयके लोभसों पूर्बकियो तप पर्म । सो जानतहौं आपुऔ सुमति सु और सुकर्म ॥ मैं तपवारे तेजसों घेरि तीनहूं लोक । मारतभोबर आपुको जानि महाबल ओक ॥ सबभूतन के माहिं नहिं जीतिसक्यो कोउ मोहि । कोऊमेरेतेज को सकत हुतो नहिं जोहि ॥ तपसों भो ऐश्वर्य्यहो

ऐसो प्रापत मोहि । सो सब मेरेकर्मसों गयो नष्टह्वै जोहि ॥ नष्टभये ऐश्वर्य्य सों प्राप्तधीर्य को होय। मैं न शोच नेकहु करत हियोज्ञानसों भोय॥ पूर्ब सुराधिप समरके समय माहिं अवदात। मोहिं बिष्णु भगवान को दरशन भो हो ख्यात॥ कीन्हेको सुरराजकी आयेहुते सहाय। तेजोमय जिन की महा महिमा जानि न जाय॥ जानततप कछु शेषहै पूरब कृत तिहिमाहिं। कर्म फलहि पूछन करत इच्छा हौं तव पाहिं॥ आत्मा साक्षात्कारकी जो सामर्थ्य महान। तौनकहाहै करिकृपा कहौमोहिं मतिमान॥ किहि ते प्रबृत सुहोत है किहिते जीवत भूत। रहत निरन्तर किहि फलहि करिके जीव अकूत॥ रहत निरन्तर जिहि फलहि लहिके जीव महान। सोकिहि ज्ञान सुकर्मसों पायोजात सुजान॥ कुन्तीसुतये शुक्रसुनि वृत्रासुरके बैन। कहतभये मैं कहतसो सुनु सबन्धु बलऐन॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेवृत्रगीताशुषडशीतितमोध्यायः॥

उशनोबाच॥दोहा॥ नमस्कारमैंकरतहौं भगवत बिष्णुहिपर्म। तासुकृपाकोपायके कोनहिंहोतसशर्म॥ तासुमहातम कहतहौं तुम कोमैं सुखदाय। मनको करि एकाग्र सुनु चंचल ताहि बिहाय॥ भीष्मउबाच॥ तिही समयके माहितहँ आये सनत्कुमार। तिनको संशय करनको दूरिसुबुद्धि अगार॥ पूजित ह्वैकै दुहुँनसों बैठत भेतेतत्र। आसन अतिही स्वच्छपर गति जिनकी सरबत्र॥ उशना सनत्कुमार को कहतभये इमिबैन। नारायणको वृत्रको कहुमहात्म्य सुखऐन॥ चरणाकुलक॥ सुनिकै सनत्कुमार सुज्ञानी। शुक्राचारय की यहबानी॥ नीके बिष्णु महातमबारे। कहतभये बर बचन सुढारे॥ सबजग स्थित बिष्णुके माहीं। जानततासु गतिहि कोउ नाहीं॥ भूत ग्रामको सोयबनावैं। काल पायकै सोइ नशावैं॥ फिरि उत्पन्न करतहैंसोई। यहिवृत्तान्तहि जानतकोई॥ इन्द्रियादिको निग्रह कीन्हें। बुधको बिष्णु परतहैं चीन्हें॥ और

उपाय कियेते भारी। जानि परत है नहिं धनुधारी॥ जन्म अनेक और व्यापारै। कीन्हें नहीं स्वच्छता धारै॥ शुद्ध होतहै जनिमें एकै। लहै सुरन हरिको सबिबेकै॥ दोहा॥ ऐसीहै सामर्थ्य प्रभु नारायणकी पर्म। कहीतोहिं अवगाहि हम याको गुणि तूमर्म॥ वृत्रउवाच॥ हरिकीही सामर्थ्यसों जो सबहीहै होत।काहेको तौमैंकरौं हिये बिषाद उदोत॥ तव बाणीमें श्रवण करि कल्मषसों भोदूरि। मति सों तासु बिचार हौं करत मोदसोंपूरि॥ भीष्मउवाच॥ ऐसे कहिकै बैनबर वृत्रासुर मतिमान। बिष्णुहि अन्तःकरण में ल्याय परम करिध्यान॥ प्रापत परम स्थान को होतभयो तजिदेह। ऐसो हरिके शरणको है प्रभाव बुधिगेह॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सनत्कुमार सुवृत्रको कह्यो महातम जास। येईहैं भगवान सो तिनकी हमको आस॥ भीष्मउवाच॥ और नृपनलौं मतिगुणै कृष्णहि कुन्तीनन्द। कारण हैं संसारके येभगवान अमन्द॥ निर्बिकार जो ब्रह्महै ताको चौथो अंश। अर्द्धभाग तिहि माहिं है यह केशव यदुबंश॥ अर्द्धभाग जो शेषहै सत्तासेती तास। सर्बजगतयहहैबन्यो जासुजन्म अरुनास॥युधिष्ठिरउवाच॥ वृत्रासुर वृत्तान्त सुनि मैं जान्यो यहतात। आत्माकी गतिको लखी वृत्रासुर अवदात॥ आत्माकीगति लखत नहिं राज्यभये तौनष्ट। थिरताको लहतोन कहुं पावत अतिही कष्ट॥ यहि असार संसारसों वृत्रासुरभो मुक्त। अति बिलन्द आनंद जो सो तासों भोयुक्त॥ जिनमें केवल सत्वहै तेनजन्म पुनिलेत। औजिनमें रजतम लहत पुनि पुनि बुद्धि निकेत॥ अशरमको हम शरम गुणि लगे रहत तिहिबीच। धौंकिहि गतिको प्राप्त हम ह्वैहैं तात निभीच॥ भीष्मउवाच॥ पिता पितामह शुद्धहै तव औ तूहू शुद्ध। याते चिन्ता तूनकरु भूपति मनमें उद्ध॥ प्राप्त सुपुण्य प्रभावसो ह्वै दिविमें अभिराम। मानुषताको प्राप्त फिरि ह्वै हौ नृपमतिधाम॥ ह्वैहै सिद्धनमें तदनु गणना

तब भूपाल। तत्पर हो तुम धर्म में शोच न करो विशाल॥
इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७॥
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ परम बिष्णुको भक्त अरु परम जासु बिज्ञान। वृत्रासुर ऐसो महा बली सुधरिज मान॥ शक्रताहि कैसे हन्यो यह मेरे सन्देह। कहोमोहिं बिस्तारसों आपु महामति गेह॥ भीष्मउवाच॥ बज्री रथपै बैठिके देवगणन सहउद्ध। भयो वीरतासों भयो आवत कीबेयुद्ध॥ अचलोपम वृत्रहि लखत सोहैभो सुरराज। उन्नत योजन पंचशत तासुदेह नरराज॥ औस्थूलकछु अधिकत्रय शतयोजन बलधाम। निर्जर सबकांपत भये ताको लखिकै आम॥ सयुता॥ मघवान ताकहँ देखिकै। बलवान अतिअवरेखिकै॥ शिथिलाङ्ग होतभयोमहा। नहिं धीर्य्य धारि गयो तहा॥ बहु दुन्दुभी बाजनलगीं॥ चहुं ओर घोर सुधुनि पगीं॥ नृपदेखिकै सुरराजको। अरु तासु सर्बसमाजको॥ डरनेकहू नहिं धरतभो। रणलालसा हियकरत भो॥ सब फौजको तहँ साजिकै। रणको खरो भय गाजिकै॥ असि शूल परिघ सबानसों। अरु और शस्त्र सुठानसों॥ सुर दैत्यते लड़ने लगे। अति भूरि अमरषसों पगे॥ दोहा॥ बिधातादि सुर और ऋषि आवतभे तहँसर्ब। देखनकोरण अप्सरा औ सुसिद्ध गन्धर्ब॥ तोटक॥ तदनन्तर वृत्र सुबाहुबली। नृप प्रापत ह्वै नभमाहिं छली॥ रति उन्नत प्रस्तरकी बरषा। करतो सुभयो तहँबेधरषा॥ सुरते शरवृष्टि महा करिकै। सुबरावतभे तिनको चरिकै॥ दिबिमेंशरके गण छायरहे। सटि बारिदके समभायरहे॥ दोहा॥ चाहिवृत्रसो तदनुकरि मायायुद्ध महान। मोहतभो सुरराजको तत्रपरम बलवान॥ साम बेदके बाक्य सों सुऋषि बशिष्ठ अनूप। मोहदूरि सुरराजको करत भये तहँ भूप॥ बशिष्ठउवाच॥ तोमर॥ तुमहोयके सुरराज। बलवान बीरदराज॥ सुनुहोत मोहित पर्म। किहि हेतुतेबर कर्म॥ बिधि

बिष्णु हैं तबपास । शिवसोम औ सहुलास ॥ अरु देखुये ऋषि सर्ब । तवखरे पास अखर्ब ॥ डरु नेकुतू न सुरेन्द । हतु-शत्रु वृन्द बिलन्द ॥ तवस्तव पढ़त दराज । गुरुआदि ऋषि सुरराज ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ ये बशिष्ठके बचन सुनि बासव बीर अनूप । बलदराज को प्राप्तसो होतभयो सुनुभूप ॥ दूरि करत माया भयो वृत्रासुरकी सर्ब । महत तेजसों आपने बासव बली अखर्ब ॥ नगस्वरूपिणी ॥ सुवृत्रको निहारिकै । कराल शोच कारिकै ॥ सुऔ चमूहु देखिकै । महा कराल लेखिकै ॥ दोहा ॥ सुराचार्य बहु ऋषिन सह जाय महेश्वर पास । तिनको प्रथम सुनायकै वृत्र तेज परकास ॥ तदनु प्रार्थना करत भे वृत्रनाशके अर्थ । जानि महेश्वर को महा तेजोमय ससमर्थ ॥ तदनु महेश्वर को महा तेज होय ज्वर भूरि । वृत्रासुर बलवानकी देह माहिंगो पूरि ॥ तदनु महेश्वर कहत भे सुरराजहि इमि बैन । यह वृत्रासुर परमहै बल महान के ऐन ॥ बहु माया यह करत है गति याकी सरबत्र । प्राप्त योग को होयकै तू याको हनि अत्र ॥ अरिल ॥ साठि हजार बर्ष कीन्हो बर । वृत्रासुर तप पूरब पबिधर ॥ बिधिव्रत थिरता में मन को करि । हिये कामना अति बलकी धरि ॥ याहि दियोहो तहँ यहबर बिधि । लहिहै वृत्रासुर महिमा सिधि ॥ औ लहिहै तू महा बलत्वहि । उग्रतेज अरु महा छल-त्वहि ॥ दोहा ॥ याते अतिहीउग्रहै वृत्रासुरबलवान । याकोहनिबे काजमैं अपनो तेजमहान ॥ तोहिंदेतहौं भीतिको छोड़ियाहि तू मारि । उद्ध युद्ध में बज्रसों गर्जिबीर असुरारि ॥ शक्रउवाच ॥ जयकरी ॥ तव प्रसाद सों याको हनिहौं । निजप्रताप लोकनमें तनिहौं ॥ भीष्मउवाच ॥ ज्वर जब वृत्रासुर के तनमें । प्राप्त भयो तब सुर ऋषि गनमें ॥ फैलत भो आनन्द महानो । ऐसोसो नहिं जाय बखानो ॥ तिहिते सुरऋषि महत निनादे । करत भयेबहु छोड़ि बिषादे ॥ तदनन्तर बहु बाजे बाजे । युद्धकाज भट दुहुंदिशिगाजे ॥

बगरीही माया जोभारी। क्षणमें नष्टभई सो सारी॥ असुर बृन्द अतिही अकुलाने। सुधि बुधि अपनी सबै भुलाने॥ यह बृतान्त जानि ऋषिदेवा भूपति तहां सहित अहमेवा॥ सुना-शीरकी करिसुबड़ाई। मारु मारु धुनि करी सुहाई॥ दोहा॥ तहँ रथस्थ सुरराजको अतिकठोर भोरूप। सुनिके सुस्तुति ऋषि-नकी मुखकी उक्ता भूप॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेवृत्रासुरोपाख्यानेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८॥

भीष्मउवाच॥दोहा॥ बृत्रासुर ज्वर युक्तके जेशरीरके माहिं। चिह्न भये रण समयमें कहत तेसु तवपाहिं॥ चामर॥ सुआस्य तासु धूम्रके समान तत्रहोतभो। महान श्वास देहमाहिं कम्पको उदो तभो॥ उठे सुरोम सर्वओ अखर्व जो मजातभो। शिवा कढ़ी सुबक्त्रते नृपालतासु ख्यातभो॥ दोहा॥ गिरति भई आकाशते उल्का ताकेतीर। महता घोरा ताहिलखि जकेअसुर सबबीर॥ उक्ता॥ गृध्रओर बककाक। बोलत कुत्सित बाक॥ बृत्रासुरके घोर। फिरत भये चहुंओर॥ नगस्वरूपिणी॥ सुबज्रलेय हाथमें। अमर्त्यबृन्द साथमें॥ निहारतो सुबृत्रको। भयोधरै सुक्षत्रको॥ गुरुतोमर॥ ज्वरसों युत बृत्रबली रणमें। लखिबासवको रुटके मनमें। अतिघोर निनाद भयो करतो। डरकोनहिंनेक भयोधरतो॥ दोहा॥ लेत जम्हाई बृत्रपै बज्र चलायोशक्र। अतिही ते-जोमय महत काल अग्नि समबक्र॥ क्षिप्रहि भयो गिरावतो बृत्रहि सोपबि घोर। जैजैजै धुनि करतभे देव सर्वतिहि ठौर॥ युत सत्तासों बिष्णुकी बज्र चण्ड भूपाल। तासों हनि बृत्रहि गयो दिबिको श्रीसुरपाल॥ रामगीती॥ नृपतत अनन्तरबृत्रवारी देहते अतिभाम। अतिघोररूपा ब्रह्महत्या भईकढ़तीश्राम॥ दशनावली अतिहीकराला घोरचक्षुबिशाल। कछुकृष्ण पिंगल रूपजाको खुले बालकराल॥ अरु धरेदीर्घकपाल माला अति बिशालातौन। औ चीर बल्कल कियेधारण तातबरबलभौन॥

बहु रुधिर सों सोभरी देखन लगी इन्द्रहि तत्र । सुरराज सो सुरलोकको नृपहुतो जातो अत्र ॥ लखिताहि गहतीभईसोकर तासु गरमें डारि । लखिताहिं भारी भीति सेती भरोबर असुरारि ॥ सोकमलके बिसमाहिं बहुदिन भयोकरतो बास । तहँभई तेजोमयी नष्टा सर्व ता की भास ॥ बहु ब्रह्महत्या छूटिबेकी करी इन्द्र उपाय । पै नहींछूटी महाघोरा दुःखदा नरराय ॥ नृप तत अनन्तर जायब्रह्मा पास श्रीसुरराज । लहिचरणगिरतो भयो तिनके भरो दुःख दराज ॥ है ब्रह्महत्यागह्यो सुरपहि बिधाता यहजानि । गुणि ब्रह्महत्याको भयोइमि कहत मेधातानि ॥ तू छोड़िदे सुरराजको हेकह्यो मेरोमानि । हैकहाइच्छातोहिं मोको अत्र कहु अनुमानि ॥ ब्रह्महत्योवाच ॥ तुम भये परमप्रसन्न मोपै बिधाता लोकेश । तेहितै सु मोको सर्व प्रापत भयो कछु नहिं शेश ॥ मैं नाशतेहां करो मोको देहु आपु निवासु । इमि बचन कहि पुनि कह्योऐसे बिधाताको आसु ॥ मर्य्याद तुमहीं लोकमें यहकरीहेलोकेश । गोबिप्रहै नहिंयोग्यबधके पूज्य परमहमेश ॥ जोकहतहो सोकरोंगी रहिहै नपै मर्य्याद । तुमदेहु मोहिंनिवास मैंतहँ रहौंछोड़ि बिषाद ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ द्विजहत्याकेप्रगट ये चतुरानन सुनिबैन । राहिबेको इमिकहतभे देहैंतोकोऐन॥ तदनन्तर करतेभये ब्रह्माशिखिको ध्यान । इमिब्रह्मातट आयकैकहतो भयोकृशान ॥ आज्ञाजो कछु होयहम करैंतौन लोकेश । चतुराननये बह्निके सुनिकैबचन बिशेश ॥ कहतभये इहिभांति हम द्विजहत्याके भाग । करिहैंबहु तिन माहिंतुम पावकबरबड़ भाग ॥ चौथे भागहि लेहुतुम अत्रगुणो मतिऔर । अघछूटन कोशक्रको यह शिखिसुनि करिगौर ॥ कहतभयो इमिजौन तुम कहिहौ करिहौं सोय । पैमेरी कबछूटिहै अघतुम कहियेजोय ॥ ब्रह्मोवाच ॥ जबहव्यैहे प्रज्वलित तू तव जोपूजा नाहिं । करिहैतब शिखिजायगी द्विजहत्या तिहिपाहिं ॥ बैनधनंजय श्रवण करि

ब्रह्माके येख्यात । द्विजहत्याके भागको धारतभोहेतात ॥ तदनु बुलावतभो द्रुहिण तृण औषधि अरु ब्रक्ष । कह्योतिनहुंको जोकह्योअग्निहि हुतोप्रतक्ष ॥ व्यथितहोयकै अग्निवत ब्रह्माकेसुनि वैन । कहतभये इमिहे द्रुहिण द्विजहत्याकोऐन ॥ धारणकरिहैं पै सुनोयाको ह्वैहै अन्त । कबतुम कहौ बिचारिकै दुखभो हमैंअनन्त ॥ हमसब अपने भाग्यसों शीतादिक जेसर्ब । सहततिन्हें हैं आपुहौ गुणत न द्रुहिणअखर्ब ॥ ब्रह्मोवाच ॥ छेदन भेदनकरिहिजो पर्बकालकेमाहिं । द्विजहत्याके भागसों जैहेताकेपाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ तरु औषधि तृणये बचन सुनिकै बिधिको पूजि । जिमि आये तिमिजातभे स्तव सुनहु बिधिकूजि ॥ तदनुबुलावत भोद्रुहिण अप्सरानको तात । कह्योतिनहुंको जो हुतो कह्यो नगादिहि ख्यात ॥ अप्सरसऊचुः ॥ द्विजहत्याको भागहम लेहैं चतुरथअद्य । पै छूटैगी यहकबै कहौहमैं तुमसद्य ॥ भीष्मउवाच ॥ मैथुन करिहै जो पुरुष रजस्वला के माहिं । द्विजहत्याको भागयह जैहै ताके पाहिं ॥ तदनन्तर कीलाल को ब्रह्माचिन्तन कीन । सो ब्रह्मा को प्राप्तह्वै करि सुप्रणाम प्रबीन ॥ बिधितुम मम चिन्तन कियो यातेहम तवतीर । आयेहैं जो कहहु सो करैं कह्योइमि बीर ॥ ब्रह्मोवाच । द्विजहत्या सुरराजको प्रापतभईबिशाल । ताकोचौथो भाग तुमलेहु सुनो कीलाल ॥ कीलालउवाच ॥ द्विजहत्याको भाग हमलेहैं चतुरथसर्ब ॥ पैबिधि हमको छोड़िहै कब यह दुखद अखर्ब ॥ ब्रह्मोवाच ॥ मूत्र पुरीष श्लेषमा जोजन तोमें डारि । है ताके सँग जायगी द्विजहत्या तुरवारि ॥ तदनन्तरताजि इन्द्रको द्विजहत्या सुखदाय । प्राप्तभई चारिहुनमें होतीहै नरराय । फिरि आज्ञा लहि द्रुहिणकी अश्वमेध सबिधान । सुनाशीर करतो भयो महाधीर बलवान ॥ परम शुद्धिको प्राप्तभो ताते श्रीसुरराज । यह पूरब हमह्वो सुन्यो कुन्ती सुत नरराज ॥ कृपाते सुलोकेशकी द्विजहत्यासों बक्र । छूटि सुनिज ऐश्वर्य्यको प्राप्त

होतभो शक्र ॥ वृत्रासुरके बदनते भे उत्पन्नाशिखण्ड । तेद्विजातिके भक्षणहि भूपति प्रबल प्रचण्ड ॥ श्रेष्ठताहि प्रापत भयो जैसे बज्री बीर । तैसे ह्वैहौप्राप्तनृप तुमहू बर रणधीर ॥ पढ़िहैं शक्र कथाहि जो पर्ब पर्बके माहिं । विप्र वृन्दमें किल्विषहि प्रापति ह्वैहै नाहिं ॥ कह्यो पराक्रम इन्द्रको अद्भुत अत्र महान । अब इच्छा है सुननकी तुमको कहा सुजान ॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेवृत्रबधोनामएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ ज्वरसों मोहित वृत्रको बज्री बज्र चलाय। मारयोसो सुनिकै भई इच्छायह नरराय ॥ ज्वर जो सो उतपन्न भो किमि किहिते कहुआप । ज्वरवारी उत्पत्तिको हमको बुद्धि कलाप ॥ भीष्मउवाच ॥ जैसे ज्वर उतपन्नभो तुम्हैं कहत हौं आम। कुन्तीसुत भूपालमणि सुनो बीर बलधाम ॥ मनोहर ॥ रत्नसों भूषित अभिराम । गिरि सुमेरुकोशृंग ललाम ॥ तापै बैठेहुते महेश । शैलसुतासह पूर्व सुरेश ॥ औबैठेअश्विनीकुमार । हे औ धनद सुभूप उदार ॥ सनत्कुमारादिक ऋषिपर्म । बैठेहुते तहां सहशर्म ॥ औ सु अंगिरस आदिकतात । बैठेहे सुहर्षि अवदात ॥ बैठे नारद पर्बत तत्र । हे तहँ गति तिनकी सर्वत्र ॥ औ सु अप्सरा सर्ब अनूप। बैठीहुतीं तहांसुनु भूप ॥ शीतल मन्द सुगन्ध समीर। बहत हुती सुखदायक बीर ॥ औ बिद्याधर सिद्धसुढार । सेवतहे पशु पतिहि उदार ॥ औ बहुनाना बपुधरभूप। औहेराक्षस तत्र अकूत । नन्दीधारणकीन्हेशूल । खरोतेजसोंभरोअतूल॥ गंगाधारणकीन्हेरूप। सेवतिहीशंकरहि अनूप ॥ दोहा ॥ इमि देवनसों ऋषिनसों पूजित श्रीभगवान । रहत भये गिरि शृंगपै उन्नत परम सुठान ॥ मनोहर ॥ कौनहु काल माहिं भूपाल । दक्ष प्रजापति बिज्ञ बिशाल ॥ इच्छाकरी करनकी यज्ञ । पूर्ब्बवत् बिधिसोंधरमज्ञ ॥ शक्रादिक सु देवता सर्ब । दक्षयज्ञको लखन अखर्ब । भयेसु हरद्वारको जात । बैठि

बिमाननपै अवदात ॥ शैलसुतातिन सबको देखि । कहत भई शम्भुहि इमि लेखि ॥ ये सुरजात कहां हैं सर्ब । बैठि विमानन पै सु अखर्ब ॥ सुनाशीर आदिक सानन्द । कहिये संशय भयो बिलन्द ॥ महेश्वरउवाच ॥ हयमख करत प्रजापति दक्ष । तत्रजात शक्रादिक स्वक्ष ॥ उमोवाच ॥ दक्ष यज्ञमें क्यों नाहिंजात । आपु कहौ हमको बिख्यात ॥ महेश्वरउवाच ॥ देवन पूर्बहिसों मखमाहिं । हमको भाग देत हैं नाहिं ॥ उमोवाच ॥ अतिहि श्रेष्ठ देवनमें आप । परम तेजके महतकलाप ॥ पैनहिं पावत भागईशान ॥ यातेभो दुखमोहिं महान ॥ भीष्मउवाच ॥ ऐसे कहि शंकरको बैन । होति भई चुपघरी अचैन ॥ देवीके मनको बृत्तान्त । मनमें जानि शंभु क्षितिकान्त ॥ लैकै भीम रूप गणसाथ । नन्दी पै चढ़ि गिरिजा नाथ ॥ मख बिध्वंस करतभे जाय । दक्ष प्रजापतिको नरराय । केतेगण करतेभे ध्यान । कितेकरतभे हासमहान किते रुधिरसों अग्निहि धाय । भये बुझावत तत्रनृराय ॥ मख खम्भन को किते उखारि । भये फिरावत कौतुक धारि ॥ दक्ष सेवकन को तहँदोरि । ग्रसतभये केते बरजोरि ॥ तदनु तौन मख धरि मृगरूप । भो अकाशको भागत भूप ॥ दोहा ॥ ताके पीछे जातभे शिवलहि शर को दण्ड । तत्र स्वेदकन भालते शिवके गिरो प्रचण्ड ॥ सो कणभूमें गिरत ही महाअग्नि भोहोत । ताके बिच यक पुरुषको होतो भयो उदोत ॥ मनोहर ॥ ताको अतिही ह्रस्व शरीर । भीमरूप चख अरुणसुबीर ॥ तासु भयङ्कर ऊरध केश । भरोरोमसों ताकोबेश ॥ कृष्ण बर्णसो परमकराल। श्येन उलूक सदृश भूपाल ॥ धारण किये रक्तसों बास । मखहि जरावत भोसो आस ॥ सुरऔ ऋषिगण पैनृपतौन । तदनु दौरतोभो बलभौन ॥ साद्धससेती तासुअखर्ब । भीतभयेसुर औ ऋषि सर्ब ॥ बसुधा कांपति भई बिशाल । शीघ्रबेगसों तासु नृपाल ॥ सर्बजगतमें हाहाकार । दिशिदिशिमें भोहोत

अपार ॥ ब्रह्मातिही समयके माहिं । जाय कहत भो इमि शिवपाहिं ॥ ब्रह्मोवाच ॥ भागयज्ञ में देवत सर्ब । तुमहूं को देहैं हे सर्ब ॥ यह जो श्यामल पुरुष कराल । कर्षिलेहु ताको तुम हाल ॥ तवरुद्रते सुर औ ऋषिभूरि । रहेभीतिसोंहैं सबपूरि ॥ तव प्रस्वेदतेभोजो आम ॥ यह ज्वर ह्वैहै ताकोनाम ॥ रहि है शिवलोकनके माहिं । सकिहैधारि याहि कोउनाहिं ॥ यातेकीजे खण्ड अनेक । याके करिकै आपु बिबेक ॥ सुनिकै ब्रह्माके येबैन । कहत तथास्तुभये शिव ऐन ॥ खण्डकिये बहु ज्वरके ईश । गुणिकैबिधिके बचनमहीश ॥ गज मस्तकमें पीड़ाजौन । ज्वरको खण्ड जानुनृपतौन ॥ पर्व्वतमाहिं शिलाजतु तात । काईजलके माहीं ख्यात ॥ अरु सर्पनमें जो निर्मोक । ज्वरको खण्ड जानु बल ओक ॥ पशुपदमेंजो खोरक रोग । औ भूमेंऊखर संयोग ॥ हयगल व्रणमें आमिष खण्ड । बढ़ततौन ज्वरभागप्रचण्ड ॥ शिखामाहिं बढ़तीहै और । मोरशीशमें नृपशिर मौर ॥ औ कोकिल केजो चखरोग । ज्वरबिभागको सो संयोग ॥ सर्बशुकनके हिक्काजौन । ज्वर बिभाग जानोनृप तौन ॥ शार्दूलन मेंजो श्रम माम । ज्वरबिभागसोहै बुधिधाम ॥ ज्वरहि नाममानुष्यन माहिं । निश्चयकरि सुकह्यो तवपाहिं ॥ चरणा दोहा ॥ जन्म मरण में मध्यमें त्योहिं जनाहिं प्राप्तज्वरहोत । लहत तेज यह शंकर कोहै ज्वर नामाबल पोत ॥ दोहा ॥ वृत्रासुर जब मुक्तभो ज्वरसेती भूपाल । मार्‍यो बज्रचलायकै तब ताको सुरपाल ॥ प्राप्त होतभो बिष्णुको वृत्रासुर तजिदेह । घातित ह्वैकै बज्रसोंमहापराक्रमगेह ॥ ज्वरवारी उत्पत्तिहम कही तुम्हैं भूपाल । अब इच्छाहै सुननकी तुमको कहाबिशाल ॥ ज्वरवारी उत्पत्तिको जो सुनिहैं बृत्तान्त । रोगन सोंसो रहित ह्वै ह्वैहैं सुखी नितान्त ॥
महाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेज्वरोत्पत्तिर्नामनवतितमोऽध्यायः ९० ॥
जन्मेजयउवाच ॥ दोहा ॥ यज्ञाकियोजो भंगशिव ताहि कियोपुनि

दक्ष। किमिलहि शंकरकी कृपा हमको कहो प्रतक्ष॥ वैशंपायनउवाच॥ हरद्वार शुभदेशमें दक्ष करत भो यज्ञ। संग सुऋषि संघात लै सह बिधान धर्मज्ञ॥ स्वर्गलोकबासी परम स्तुति करत भे सर्ब। औ पृथ्वीबासी सरब अंजलिजोरि अखर्ब॥ इन्द्रसहित आवतभये मखभागीते सर्ब। तिनको देखि दधीचि अति कीन्हो क्रोध अखर्ब॥ कहत भये ऐसे बचन ऋषि दधीचि नृपतत्र। सो न यज्ञहै शम्भुकी पूजाहोत न यत्र॥ घोर उपद्रव होतभो यामें बिन गिरिजेश। ताहि बिचारत कोउनहिं मति बिस्तारि बिशेश॥ ऐसे कहिकै बैनसो ध्यान चक्षुसों स्वक्ष। सह गिरिजा गिरिजापतिहि देखतभो ऋषि दक्ष॥ औ देवीके देखतो भो नारदहि समीप। अतिहि महत आनन्दको प्रापतहोत महीप॥ एकमंत्र तिन सबनको जानि निभीचि सगर्ब। मख गृहते कढ़िकहत भो इमि सुनि दक्ष अखर्ब॥ पूजनते सुअपूज्य के औजे पूज्य अनूप। किये अपूजन तासुबुध जानतहैं मतरूप॥ पातिकनर संहारको होत प्राप्तहैपर्म। अमृत गुणै कोऊ न मम भाषत मोहि समर्म॥ चरणाकुलक॥ इतनेहीमें शंकर आये। सबके देखतरूद्रसों छाये॥ तिनको देखि कहत भो बानी। दक्ष प्रजापति इमि अभिमानी॥ रुद्र सु एकादश हैं तिनको। जानत हैं हम नाहीं इनको॥ दधीचिरुवाच॥ शंभु समान और हम नाहीं। देखत देवत लोकन माहीं॥ शिवको नहीं बुलावन केरो। सबको मंत्र परत है हेरो॥ यहि सुमंत्रसों यज्ञ न ह्वै है। पूरण भूरि उपद्रव ग्वैहै॥ दक्षउवाच॥ ये सुविष्णु सब यज्ञन वारे। हैं सुईश प्रभु सुखद सुढारे॥ येई योग्य बुलावन को है। इनके और समान न हो हैं॥ देहौं यज्ञभाग इनहीको। करिकै भूरि भक्ति मेंहीको॥ देव्युवाच॥ कौन दान औ नियम करौं मैं। औ किहि तपको लूटहि धरौं मैं॥ यज्ञ भाग जिहिसों पति मेरे। पावैं ऋषिसुर बीच घनेरे॥ गौरीको कहती इमिबानी। कहत भये ऐसे

वृषयानी ॥ मोहिं गौरि तू जानति नाहीं । मैं अब कहा कहौं तव पाहीं ॥ मख में स्तुति करत द्विज वेदी । मेरो रति सह होत अखेदी ॥ करत कल्पना मखके माहीं । मम भागहुको सबिधि सदाहीं ॥ देव्युवाच ॥ करत प्रतिष्ठा निज तिय सों है । हीनहु पुरुष चढ़ाय सुभों है ॥ भगवानुवाच ॥ करत प्रतिष्ठा होंमें नाहीं । देखु अबहि मैं तेरे पाहीं ॥ जाहिकरत उत्पन्न दिराजे । मखको भाग लेनके काजे ॥ ऐसे कहि देवीको बानी । श्री कैलाशनाथ वृषयानी ॥ दोहा ॥ अपने मुखते एक तहँ भये बनावत भूत । ताहि कहत ऐसे भये करिकै कृपा अकूत ॥ दक्षप्रजापति के मखहि नष्टशीघ्र करुजाय । बीरभद्र तब होयगो नामख्यात बरकाय ॥ चरणाकुलक ॥ शंकरकी यहबाणी सुनिकै । तिहिको बीरभद्र सोगुनिकै ॥ काली सहित जाय मखनष्ट । करि करिबे दक्षादि सकष्ट ॥ बलसों दूरि करनके काजे । पारबतीके कोप दराजे । बीरभद्र गण तदनु सुढारे । रोम कूपते अतिबल वारे ॥ बरउत्पन्न बहुत गणकीन्हे । शिव समउग्र परेते चीन्हे ॥ रौम्य नामहोते भे तिनके । अतिहि बीरबर साध्वस बिनके ॥ दक्ष यज्ञको कीबे भंगे । आयेते धरि क्रोध उतंगे ॥ करत भये तहँघोर निनादै । सुरनहु सुनिकै लह्यो बिषादै ॥ केतदक्ष गणनको मारे । केतेयज्ञ स्तंभ उखारे ॥ केते हव्य खायकेभूमैं । केतेडार देतभे भूमैं ॥ हुती देवतनकी जे नारी । तहँते फेंकि दूरि गहिडारी ॥ रक्षादेव करतहैं जाकी । तामेंधरी पांति समिधाकी ॥ ऐसो यज्ञस्थान सुहायो । बीरभद्र गणताहि जरायो ॥ तदनु काटिकै शिर मखवारो । घोर निनाद करत भो भारो ॥ दक्ष और ब्रह्मादिक देवा । सकेपाय तिहिको नहिं भेवा ॥ तदनु भयेपूछत इमिताको । कोतू धरे भूरि बलताको ॥ बीरभद्रउवाच ॥ देवीको भोक्रोध महानो । ताहि जानि अमरष ईशानो ॥ करत भये तातेहम आये । करन भंग तव मखहि सुहाये ॥ दोहा ॥ मैंहों भो शिवकोपते बीरभद्र

मम नाम। भई भद्रकाली प्रगट गौरी रुटते माम॥ चरणाकुलक॥ शिवके भेजे आये इतहैं। जानो हमतव परम अहितहैं॥ ताते शिवके शरणै जावो। मनमें दक्ष और मति लावो॥ बीरभद्रकी बाणी सुनिकै। दक्षधर्म भृत मनमें गुनिकै॥ शिव तटजाय नम्र अतिह्वैकै। दक्षदक्ष इतिसो तियग्वैकै॥ पढ़िस्तोत्र शुभलीबे शिवको। करत प्रसन्नभयो अतिशिवको॥ तदनु कहतभो ऐसे बानी। शंकरको लहिकृपा महानी॥ धर्मकियो जोमैं बहुकालै। सहित सुबेद बिधान बिशालै॥ सोनहिं ब्यर्थहोय शिवमेरो। यहबर देहुशरणि निति हेरो॥ शिवउवाच॥ धर्मनष्ट ह्वैहैतवनाहीं। मोदित होहु दक्ष मनमाहीं॥ येसुनि बैन हर्षसों पागो। शिव सहस्र नामहि अनुरागो॥ पढ़िके स्तुति करतभो नीकी। दक्ष प्रजापति बृषयानीकी॥ युधिष्ठिरउवाच॥ सुस्तुतिकरी जिननामन सेती। शिवको मतिकरिदक्ष संचेती॥ भईलालसामो मनमाहीं। तिन्हैं सुननकी कहु मोपाहीं॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ अति सुखदा यक नामहैं शंकरके अवदात। तेश्रद्धा सह तुमसुनो तुम्हैं कहत हौं तात॥ सहस्रनाम॥ नमस्ते देवदेवेश देवारिबलसूदन। देवेन्द्रबलबिष्टम्भ देवदानवपूजित॥ सहस्राक्षोबिरूपाक्ष अक्षयक्षाधिपाप्रिय। सर्ब्बतः पाणिपादान्त सर्ब्बतोक्षिशिरोमुख॥ सर्ब्बतः श्रुतिमल्लोके सर्ब्बमावृत्यतिष्ठसि। शंकुकर्ण महाकर्ण कुम्भकर्णार्णवालय॥ गजेन्द्रकर्णगोकर्ण पाणिकर्णनमोस्तुते। शतोदरशतावर्त्त शताजिह्वनमोस्तुते॥ गायंतित्वांगायत्रिणो अर्चयन्त्येकमर्किणः। ब्रह्माणंत्वांशतक्रतुमूर्ध्वस्वमिवमेनिरे॥ मूर्त्तौहितेमहामूर्त्ते समुद्रांबरसन्निभ। सर्वावैदेवताह्यस्मिन्ना वेगोष्टइवासते॥ भवच्छरीरेपश्यामि सोममग्निजलेश्वरं। आदित्यमथवैविष्णुं ब्रह्माणंचवृहस्पतिं॥ भगवान्कारणंकार्य्यं क्रियाकरणमेवच। असतश्चसतश्चैव तथैवप्रभवाप्ययौ॥ नमोभवायशर्वाय रुद्रायवरदायच। पशूनांपतये नित्यं नमो-

स्त्वन्धकघातिने ॥ त्रिजटाय त्रिशीर्षाय त्रिशूलवरपाणिने । त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय त्रिपुरघ्नायवैनमः ॥ नमश्चण्डाय कुण्डा ययण्डायाण्डधरायच। दण्डिनेसमकर्णायदण्डमुण्डायवैनमः ॥ नमोर्ध्वदंष्ट्रकेशायशुक्लायावततायच । बिलोहितायधूम्राय नील ग्रीवायवैनमः ॥ नमोस्त्वप्रति रूपायविरूपायशिवायच । सू र्य्यायसूर्य्यमालाय सूर्य्यध्वजपताकिने ॥ नमःप्रमथनाथायवृष स्कन्धायधन्विने। शत्रुन्दमायदण्डाय पर्ण चिरपटायच ॥ नमो हिरण्यगर्भायहिरण्यकवचायच । हिरण्यकृतचूडायहिरण्यपत येनमः ॥ नमस्तुतायस्तुत्याय स्तूयमानायवैनमः । सर्वायसर्व- भक्षाय सर्वभूतांतरात्मने ॥ नमोहोत्रेथमंत्राय शुक्लध्वजपताकि ने। नमोनाभायनाभ्याय नमःकटकटायच॥ नमोस्तुकृशनाशाय कृशांगायकृशायच । संहृष्टायनमस्तुभ्यं नमःकिलकिलायच । नमोस्तुत्रायमाणाय शयितायोत्थितायच । स्थितायधावमानाय कुण्डायजटिलायच ॥ नमोनर्त्तनशीलाय मुखवादित्र वादिने ॥ नाटोपहारलुब्धाय गीतवादित्रशालिने ॥ नमोज्येष्ठाय श्रेष्ठाय बलप्रमथनायच । कालगाथायकल्पाय क्षयायोपक्षयायच ॥ भी- मदुन्दुभि हासाय भीमव्रतधरायच। उग्रायचनमोनित्यं नमोस्तु दशबाहवे ॥ नमः कपालहस्ताय चितिभस्मप्रियायच। बिभीष- णायभीष्माय भीमव्रतधरायच ॥ नमोबिकृतवक्त्रायखड्गाजिह्वा यदंष्ट्रिणे। पक्वाममांसलुब्धाय तुम्बीबीणाप्रियायच॥ नमोवृषा यवृष्याय गोवृषायवृषायच । कंकंकटाय दण्डायनमःपचपचा- यच॥ नमःसर्ववरिष्ठायवरायवरदायच। वरमाल्य गन्धवस्त्राय बरातिबरदायच ॥ नमोरक्तबिरक्ताय भावनायाक्षमालिने । सं- भिन्नायबिभिन्नाय छायायालपनायच ॥ अघोरघोररूपाय घो- राघोरतरायच ।नमःशिवायशान्ताय नमःशान्ततमायच ॥ एक पाद्बहुनेत्राय एक शीर्षायवैनमः । क्षुद्रायक्षुद्रलुब्धाय सविभाग प्रियायच ॥ पञ्चलायशितांगाय नमःशमशमायच । नमश्च

मानितथोङ्कारमाहुस्त्वांब्रह्मवादिनः॥ हायिहायिहुवाहायि हुवा-
हायितथा सकृत्। गायन्तित्वांसुरश्रेष्ठ सामगाब्रह्मवादिनः॥
यजुर्मयोऋग्यजुश्च त्वामाहुर्निमयस्तथा। पठ्यसेस्तु तिभि-
श्चैव वेदोपनिषदोगणैः॥ ब्राह्मणाक्षत्रियावैश्याः शूद्रावर्णावरा
श्चये। त्वमेवमेघसंगाश्च विद्युत्तमितिगर्जितः॥ संवत्सरस्त्व
मृतवो मासोमासार्द्धमेवच। युगंनिमेषाःकाष्ठास्त्वं नक्षत्राणिग्रहा
कलाः॥ वृषाणाङ्ककुदोसित्वं गिरीणांशिखराणिच। व्याघ्रोमृगा
णां पततां तार्क्ष्योनन्तश्चभोगिनः॥ क्षीरोदोप्युदधीनांच यंत्रा
णांधनुरेवच। वज्रःप्रहरणानांच व्रतानांसत्यमेवच॥ त्वमेवद्वेषइ
च्छाच रागोमोहः क्षमाक्षमे। व्यवसायोधृतिर्लोभः कामक्रोधौ
जयाजयौ॥ त्वंगदीत्वंशरीचापी खट्वांगीसशरीतथा। छेत्ताभे-
त्ताप्रहर्त्तात्वं नेतामंतापितामतः॥ दशलक्षणसंयुक्तो धर्मोर्थकाम
एवच। गंगासमुद्राःसरितः पल्वलानिसरांसिच॥ लता वल्य
स्तृणौषध्यः पशवोमृगपक्षिणः। द्रव्यकर्मशुभारम्भः कालपुष्प-
फलप्रदः॥ आदिश्चान्तश्चवेदानां गायत्र्योंकारएवच। हरि
तोरोहितोनीलः कृष्णो रक्तस्तथारुणः॥ कद्रुश्चकपिलश्चैव
कपोतोमेचकस्तथा। अवर्णश्च सुवर्णश्च वर्णकारोह्यनोपमः॥
सुवर्णनामाचतथासुवर्णप्रियएवच। त्वमिन्द्रश्चयमश्चैव वरदो
धनदोनलः॥ उपप्लवश्चित्रभानुः स्वर्भानुर्भानुरेवच। होत्रंहो-
ताचहोम्यंच हुतंचैवतथाप्रभुः॥ त्रिसौपर्णतथाब्रह्मा यजुषश्श-
तरुद्रियं। पवित्रंचपवित्राणां मङ्गलानांचमङ्गलं॥ गिरिकोहि
ण्डकोवृक्षी जीवः पुंगलएवच। प्राणःसत्वंरजश्चैव तमश्चाप्रम
दस्तथा॥ प्राणोपानःसमानश्च उदानोव्यानएवच। उन्मेषश्च
निमेषश्च क्षुतंजृंभित मेवच॥ लोहितान्तर्गतादृष्टिर्महावक्त्रमहो-
दरः। शूचीरोमाहरितश्मश्रुरूर्ध्वकेशश्चलाचलः॥ गीतवादि-
त्रतत्वीशो गीतवादनकप्रियः। मत्स्येजलचरोजाल्यो ऽकालःके
लिकलःकलिः॥ अकालश्चातिकालश्चदुष्कालःकालएवच। मृ

त्युः क्षरश्चकृत्यश्च पक्षोपक्षक्षयंकरः ॥ मेघकालोमहादंष्ट्रः संवर्त्त-कबलात्मकः । घण्टोघण्टःघटीघण्टी चरुचेलीमिलीमिली ॥ ब्रह्माकाय कमग्नीनांदण्डीमुण्डस्त्वदण्डधृक्। चतुर्युगश्चतुर्वेद श्चातुर्होत्रप्रवर्तकः ॥ चतुराश्रमनेताच चातुर्वर्ण्यकरश्चयः । सदाचाक्ष प्रियोधूर्त्तो गणाध्यक्षोगणाधिपः ॥ रक्तमाल्यांबरधरो गिरीशोगिरिकप्रियः। शिल्पिकःशिल्पिनांश्रेष्ठः सर्व शिल्पप्रवर्त्त कः ॥ भगनेत्रांकुशश्चण्डः पूष्णोदन्तविनाशनः । स्वाहास्वधा वषट्कारो नमस्कारोनमोनमः ॥ गूढव्रतोगुह्यतपास्तारकस्तार कामयः । धाता विधातासंधाता विधाताधारणोधरः ॥ ब्रह्मात पश्चसत्यश्चब्रह्मचर्यमथार्जवं । भूतात्माभूतकृद्भूतो भूतभव्य भवोद्भवः ॥ भूर्भुवःस्वरितश्चैव ध्रुवोदांतोमहेश्वरः। दीक्षितोदी-क्षितः क्षंतो दुर्दान्तोदांतनाशनः ॥ चन्द्रावर्तो गुणावर्त्तः संवर्त्तः संप्रवर्त्तकः। कामोविन्दुरणुस्थूलः कर्णिकारस्रजाप्रियः॥ नन्दीमु-खोभीममुखः सुमुखोदुर्मुखोमुखः । चतुर्मुखोबहुमुखो रणेष्वग्नि मुखस्तथा ॥ हिरण्यगर्भः शकुनिर्महोरगपतिर्विराट् । अधर्म हामहापार्श्वश्चण्डधारीगणाधिपः ॥ गोनर्दोगोप्रस्तरश्च गो-वृषेश्वरबाहनः । त्रैलोक्यगोप्तागोविन्दो गोमार्गोमार्गएवच ॥ श्रेष्ठः स्थिरश्चस्थाणुश्च निष्कम्पः कम्पएवच । दुर्वारणोदुर्वि-षहो दुस्सहो दुरतिक्रमः ॥ दुर्द्धर्षोदुःप्रकम्पश्च दुर्विषोदुर्जयो जयः । शशःशशाङ्कःशमनःशीतोष्णोक्षुज्ज्वराधिधृक् ॥ आध योव्याधयश्चैव व्याधिहाव्याधिरेवच । समयज्ञमृगव्याधो व्या धीनामागमोगमः ॥ शिखण्डीपुण्डरीकाक्षः पुण्डरीकवनालयः। दण्डधारस्त्र्यम्बकश्च उग्रदण्डोण्डहाशनः ॥ विषाग्रपास्सुर श्रेष्ठः सोमपास्त्वमरुत्वाति । अमृतपास्त्वंजगन्नाथ देवदेवगणे श्वरः ॥ बिषाग्निपामृत्युपाश्चक्षीरपासोमपास्तथा । मधुरश्चुपा नामयपा स्त्वमेवतुषिताजपाः ॥ हिरण्यरेतापुरुषस्त्वमेवत्वंस्त्री-पुमांस्त्वंहिनपुंसकश्च । बालोयुवास्थविरोजीर्णदंष्ट्रस्त्वंनागेन्द्र

शक्रस्त्वंविश्वकृत्‌विश्वकर्ता ॥ विश्वकृद्विश्वकृतांबरेण्यस्त्वं ॥
विश्ववाहोविश्वरूपस्तेजस्वीविश्वतोमुखः । चंद्रादित्योचक्षुषी
ते हृदयश्चापितामहः ॥ महोदधिःसरस्वतीवाग्बलमनलोनिला
होरात्रानिमेषोन्मेष नचब्रह्मानगोविन्दः ॥ पौराणाऋषयोनते
माहात्म्यंवेदितुंशक्ताः । याथातथ्येनतेशिव यामूर्त्तयःसुसूक्ष्मास्ते
नमह्यंयातिदर्शनं ॥ त्राहिमांसततंरक्षपितापुत्रमिवौरसं । रक्षमां
रक्षणीयोहं तवानघनमोस्तुते ॥ भक्तानुकम्पोभगवान् भक्तश्चा
हंसदात्वयि । यःसहस्राण्यनेकानि पुंसामावृत्यदुर्दशः ॥ तिष्ठ
त्येकसमुद्रान्ते समेगोप्तास्तुनित्यशः । यंविनिद्राजितश्वासाः
सत्वस्थाःसंयतेन्द्रियाः॥ज्योतिपश्यतियुंजानास्तस्मैयोगात्मनेन-
मः। जटिलेदण्डिनेनित्यंलम्बोदरशरीरिणे ॥ कमण्डलुनिषंगा
य तस्मैब्रह्मात्मनेनमः। यस्यकेशेषुजीमूता नद्यःसर्वांगसन्धिषु॥
कुक्षौसमुद्राश्चत्वारस्तस्मैतोयात्मनेनमः । सम्भक्ष्यसर्वभूतानि
युगांतेपर्युपस्थिते ॥ यःशेतेजलमध्यस्थस्तंप्रपद्येऽम्बुशायिनं ।
प्रविश्यबदनंराहो र्यःसोमंपिवतेनिशि ॥ ग्रसत्यर्कंचश्वर्भानु भू-
त्वामांसोभिरक्षतु । येवानपातितागर्भा यथामामनुपासते ॥ नम-
स्तेभ्यःस्वधास्वाहाप्राप्नुवंतुमुदंतुते। येऽगुष्ठमात्रापुरुषादेहस्थाः
सर्वदेहिनां ॥ रक्षंतुतेहिमान्नित्यं नित्यंचाप्याययन्तुमां । येनरो
दंतिदेहस्था देहिनोरोदयंतिच ॥ हर्षयन्तिनहृष्यंति नमस्तेभ्य-
स्तुनित्यशः । येनदीषुसमुद्रेषु पर्वतेषुगुहासुच ॥ वृक्षमूलेषुगोष्ठे
षु कांतारेगहनेषुच । चतुष्पथेषुरथ्यासु चत्वरेषुहटेषुच ॥ हस्त्य
श्वरथशालासु जीर्णोद्यानालयेषुच । येषुपंचसुभूतेषु दिशासु
विदिशासुच ॥ चन्द्रार्कयोर्मध्यगता येचचन्द्रार्करश्मिषु । रसा-
तलगतायेच येचतस्मैपरंगताः ॥ नमस्तेभ्योनमस्तेभ्योनमस्ते
भ्योस्तुनित्यशः । येषांनविद्यतेसंख्या प्रमाणंरूपमेवच ॥ असं-
ख्येयगुणारुद्रा नमस्तेभ्योस्तुनित्यशः । सर्वभूतकरोयस्मात्सर्व
भूतपतिर्हरः ॥ सर्वभूतान्तरात्माच तेनत्वंननिमंत्रितः । त्वमेव

हीज्यसेयस्मायज्ञैर्विविधदक्षिणैः ॥ त्वमेवकर्तासर्वस्य तेनत्वंन निमंत्रितः । अथवा मायया देव सूक्ष्मयातत्रमोहितः ॥ एत-स्मात्कारणाद्वापि तेनत्वंननिमंत्रितः । प्रसीदममभद्रन्ते भव भावमतस्यमे ॥ त्वयिमेहृदयंदेव त्वयिबुद्धिर्मनस्त्वयि । स्तु-त्वैवंतंमहादेवं विरराममप्रजापतिः ॥ भगवानपिसुप्रीतः पुनर्दक्ष समभाषत ॥ दोहा ॥ ऐसे करिकै शम्भुकी दक्षस्तुति अवदात । होत भयो चुप फेरि नहिं कछू कह्यो हे तात ॥ कहत भये इमि दक्षको ह्वै प्रसन्न ईशान । भये परम इहिस्तवनसों हम परितुष्ट सुजान ॥ रहिहौं नित्य समीपमम कहैं कहा हम और । तुमको दक्ष प्रजापते बिज्ञ बिप्र शिरमौर ॥ बाजपेय शत औ सहस अश्वमेध अभिराम । तिनको लहिहौ तुम सुफल मम प्रसादते माम ॥ भयो बिघ्न तव यज्ञमें ताते करहु न क्रोध । ऐसोहो भ-वितव्यही जानो दक्ष सबोध ॥ दक्षप्रजापतिसों बचन ऐसे क-हिकै तत्र । अन्तर्द्धान सुहोतभे गति तिनकी सर्वत्र ॥ दक्षप्रोक्त यह स्तव जो ताको पढ़िहै जौन । औ सुनिहै नाहिं अशुभ को प्राप्त होयगो तौन ॥ ह्वैहै मानव प्राप्तसों दीर्घ आयुको भूप । अतिहि श्रेष्ठ यह स्तवहै कामद परम अनूप ॥ सबदेवनकेमाहिं जिमि अतिहि श्रेष्ठईशान । तिमि सब स्तवन माहिं यह स्तवश्रेष्ठ बलवान ॥ रामगीती ॥ यशराज्यसुख ऐश्वर्य त्रिया चहै जो जन तात । सो भक्ति सहज न सुनै यहि वर स्तव को अवदात ॥ भय रोग सब मिटिजातहैं अभिरामहोत शरीर । यहदेह सोहो लहत समता गणनकी बरधीर ॥ यहस्तव जौने धाममाहीं पढ़ो जायनरेश । तिहि माहिं भूत पिशाच राक्षस करिन सकतकलेश ॥ जो सुनै नारी भक्ति सेती तौन पूज्या होति । हैहोति सुरप ति नारिकीसी तासुबिमला ज्योति ॥ जोसुनै अथवा पढ़ैताके सिद्धि होत सुकर्म । औ बिचारै कहै सोऊ सिद्धिहोत सशर्म ॥ ईशगौरी गुहहि औ नंदीहि पूजि सप्रेम । ह्वैतदनु शुद्धमुपढ़ैशिवका सहस

नामसनेम ॥ दोहा ॥ प्राप्तहोतदेहान्तमें स्वर्गलोकके बीच । होत नतिर्य्यग योनिमें प्रापत भूप निभींच ॥

इतिमोक्षधर्मेदक्षप्रोक्तशिवसहस्रनामसमाप्तिरेकाधिकनवतितमोऽध्यायः॥

दोहा ॥ दुःखमहत अरु मृत्युसों त्रसित रहत सबजीव । जिमि हमकाये प्राप्तनहिं होहि कहो मतिसीव ॥ भीष्मउबाच ॥ यत्रएक इतिहाससुनु भूपति छोड़ि बिषाद । नारद और समंगको तामेंहै संबाद ॥ नारदउबाच ॥ चरणाकुलक ॥ नित्य नित्यहर्षिताहि रहतहौ । शोकताहि नहिंनेकु लहतहौ ॥ औ उद्वेग नेकहू नाहीं । देखि संमग परत तवमाहीं ॥ रहत सुनित्यतृप्त के समहौ । करत बाल तवचेष्टा तुमहौ ॥ समगउबाच ॥ भूतसुभव्यभविष्यहि जानो । मैं नसत्य मिथ्याहो मानो ॥ यातेमनही लहत उदासी । धारेरहत हर्षता खासी ॥ मिथ्याभाव गुणय मनमाहीं । कर्मारम्भ करतहौं नाहीं ॥ कर्मारम्भ बिना किहि भांती । तुम ऐसे जीवन कीपांती॥ जीवैगी तुमयह जोबानी । कहोसुनो तो ऋषिबर ज्ञानी ॥ जीवत अन्ध पंगुहय जैसे । जीवत हमहूं हैं मुनितैसे ॥ सब इन्द्रियहि शोकसों छावैं । औ इन्द्रियहि मोहकोपावैं ॥ ऐसेमतिसों जोजन जानै । सोइप्रज्ञ सुखदुख नहिंआनै ॥ मूरखइन्द्रियहै मुनिजाकी। सो नहिं लहत प्राप्तप्रज्ञाकी ॥ प्रापति प्रज्ञाहोतन जाको । सुख दुख होत प्राप्तहै ताको ॥ मो ऐसो जो आतमज्ञानी । दुखदा अहन्ताहि जिहिभानी ॥ सोचिन्तैनहिं कबहूं भोगे । औ सुख दुखवारे संयोगे ॥ योगारूढ़ पुरुषबर जोहै । चाहत और केन सुखसोहै ॥ प्रापति भई न कबहूं जाकी । मनमें धरैन इच्छाता-की ॥ प्राप्तहोय जोधनहि महानै । तौन हर्षता मनमें आनै ॥ ताकेनाश कालकेमाहीं । प्रापतहोय बिषादहिनाहीं ॥ दोहा ॥ योग बिना नाहिंहोतहै प्रापत ज्ञानमहान । औनयोगबिनहोतहै प्राप्त परम कल्यान॥ मनीहर ॥ प्राप्तभये प्रियहोत सहर्ष । तातेदर्प होत उत्कर्ष ॥ नारकहोतदर्पते भूरि । तातेभो प्रिय मुदसों दूरि ॥ कह्यो

तोहिंयह जो वृत्तान्त । तप करिकैमैं तौन नितान्त ॥ जान्यो ताते मोकोशोक । करत नहीं बाधा मति ओक ॥

इतिमोक्षधर्म्मेसुमंगनारदसम्बादोनामद्वयधिकनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अबलौं बृद्धा ज्ञानके कहेबहुत उपदेश । आपु पितामह प्रज्ञबर हमको सुखद बिशेश ॥ जानत तत्त्वन शास्त्रको संशय गत मनजासु । उद्योगहु नहिं करतजो अबश्रेय-सकहुतासु ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ तत्पर गुरुपूजा के माहिं । रहै सु बैठै बृद्धन पाहिं ॥ औनृप शाश्वत शास्त्र सुनेते । लहत श्रेयजन कहत गुनेते ॥ अत्रएक इतिहास सुढारो । कहत तुम्हैं हौं ताहि बिचारो ॥ गालव अरु नारद मेधामें । है संबाद दुहुँनको तामें ॥ गालव निज श्रेयसकेकाजै । मतिकोकरिबिस्तार दराजै ॥ कहतभये नारद को बानी । हर्षित ह्वै ऋजुतासों सानी ॥ लो-कतत्त्व को हमनहिं जाने । जानत तुमसब तुमहिं बखाने ॥ छूटि जाय अज्ञान हमारो । प्राप्तहोय बरज्ञान सुढारो ॥ जासों ऐसी हमें बतावो । चारुउपाय देर मतिलावो ॥ मानवचारिहु आश्रम वारे । निजु निजुही को कहत सुढारे ॥ मिलत श्रेय आश्रमहू माहीं । पै न मिलत जो रहतसदाहीं ॥ नारद शास्त्रहोत जो एकै । होतश्रेयतो लहत बिबेकै ॥ बहुत शास्त्र हैं मुनिवर ताते । जानि नपरत श्रेय मेधाते ॥ नारदउवाच ॥ सबशास्त्रहि लखिहैं औ सुनिहैं । तिनको अपनी मतिसों गुनिहैं ॥ तोहिं श्रेय तबपरि हैं जानो । शास्त्र बिनन परिहैं अनुमानो ॥ शास्त्रकेन सिद्धान्तहि जानै । अरु अपनेको शास्त्रीमानै ॥ श्रेयपरत ताहीनहिं जानो । ममयं वचन सत्यकरि मानो ॥ दोहा ॥ सह बिधि वेदाध्ययन जो अरु वेदान्त बिचार । अरुजो इच्छाज्ञानकी श्रेयस सोयसुढार ॥ जानेसो सबशास्त्र बर लाभबुद्धि कोहोत । बुद्धिलाभ सम और नहिं जानतहैं मतिपोत ॥ बुद्धिलाभ सोइश्रेयहै अति उत्तम अ-

भिराम । कह्यो तुम्हें जो श्रेय है सो गुणिके हम आम ॥
इतिशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मेश्रेयवाचिकोनामत्र्यधिकनवतितमोऽध्यायः ॥
युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ होतसुप्रज्ञा लाभहै कीन्हें शास्त्रविचार । श्रेयसप्रज्ञालाभते प्रापत होत अपार ॥ कह्योपूर्व अध्याय में इनको तुम यह तात । और एक वृत्तान्त अब पूछतहौं कहु ख्यात ॥ हमऐसे भूपालते संग पाशसों पर्म। छूटै किहिगणसों भयेयुक्ति कही गुणि मर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ रामगीता ॥ हौं कह्यो पूर्व अरिष्टनेमी सगर को इतिहास । नृपअत्र सो सुनु मनहिं थिरकरि बुद्धिको सुप्रकास ॥ सगरउवाच ॥ ऋषि कहाकीन्हेंपरम सुखके मनुज प्रापत होत । अरुकहौ कैसे होयकबहूँ शोच को न उदोत ॥ भीष्मउवाच ॥ मुनिबैन ये सुअरिष्टनेमी सगरके अवदात । गुणि चित्तमाहीं आपने इमि कहत भो सुनुतात ॥ है मोक्षको सुख जौन सोई परमसुख अभिराम । नहिं होत ताको कबहुँ प्रापत मूढ़ जो जन माम ॥ नितरहत है पुत्रादिमें औ पशुन में अनुरक्त । बहुदुःखदा जो नेहफांसी भयो तासों युक्त ॥ अतिप्रौढ़ करिकै सुतन को तिनको सुकरि सुविवाह । नितरक्तरहनो नेहफांसी जानु सो नरनाह ॥ जो जानि करिकै सुतनको सामर्थ छोड़िहिदेत । सोचरतहै आनन्द से तोलोक माहिं सचेत ॥ अरु सुतवती जब होयनारी ताहिदे तब त्यागि । नहिं पुत्रहोय समर्थ तोलौं रहैमति में पागि ॥ येबचन मेरे श्रवण करिकै मुक्तवत रहुभूप। तू छोड़िकै उद्वेगताकरि बुद्धि विमल अनूप ॥ दोहा ॥ ये सुविप्र के बचन सुनि सगर भूप बड़ भाग । प्राप्तभयो प्रज्ञाहिसों मनसे गाहिकै त्याग ॥ भीष्मउवाच ॥ संग पाशसों छुटतजन त्याग दियेते सर्ब । और उपायन हैं कछू त्याग समान अखर्ब ॥
इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मसगरारिष्टनेमिसंबादेवेदाधिकनवतितमोऽध्यायः
नारायणउवाच ॥दोहा॥ छूटिजातहै दुःखसों छोड़िदेय सबसंग ।

पूरब यहवृत्तान्तकहि भीषमप्रज्ञ उतंग ॥ संगदोषते लहतजन अधोगतिहि दुखदाय । अरु प्रतिबन्धक स्वर्गके मारगको नर-राय ॥ कहिबे को यह शुक्रको उपाख्यान जो ताहि । पूछे पांडवके कहत श्री भीषम अवगाहि ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ असुरनके प्रिय माहिं रतकाव्यरहत क्यों तात । औ अप्रियमें सुरनके कहो मोहिं बि-ख्यात ॥ असुरनहीके तेजको नित्यबढ़ावतपर्म । कैकरिकै देवर्षि बर याको कहिये मर्म ॥ अरु आपल शुक्रत्वको भयो कहो किहि भांति । अरु पाई किहिभांतिसों चारु ऋद्धिकीपांति ॥ जौनरूप भूमिस्थअरु तासों दिवकेमाहिं । बशिष्ठादि सबऋषिनलों जाय सकत हैं नाहिं ॥ यह सब जाननकी महति इच्छा मो मनमाहिं । मो सबप्रश्ननको सुगुणि कहोआपु ममपाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ कहत तुम्हें हौं जौन तुम पूछो हे वृत्तान्त । जैसे हम पूरव सुन्यो तैसे सुनु क्षितिकान्त ॥ जयकरी ॥ असुर करतबाधा मखबीच । हुते सुरनको होय निभीच ॥ लेतहुते जब अमर दबाय । दैत्यनके बृन्दनको धाय ॥ असुर जातहैं भागि सदाहिं । तब भृगुपत्नीके गृहमाहिं ॥ शरणभयेते भृगुकी बाम । रक्षा करतीही अभिराम ॥ तहां न जाय सकतहे देव । तासुशापको गुणिकैभेव ॥ तब तिन लयो बिष्णुकीशर्ण । निर्जर जानि महाभय हर्ण ॥ बिष्णु सुरन को पीड़ित देखि । अति अरु शरणभये अवरेखि ॥ चक्रचलाय सुनो अवनीश । भृगुपत्नी को काट्यो शीश ॥ लखो शुक्रको शरणो जाय । तब तिन असुरन भयसों छाय ॥ शुक्रमात के बधसोंक्षीण । अभयदेवके तिनहिं प्रवीण ॥ देवनकोबाधा अति भूरि । देनलग्यो बहु रुटसों पूरि ॥ सर्ब जगतको प्रभु पुरहूत । अरु ताको जो कोश अकूत ॥ यक्षराज ताको प्रभुख्यात । तासु शरीर माहिं भृगुतात ॥ योगयुक्ति सों करि सु प्रवेश । रोंकि धनपतिहि सुमुनि सुबेश ॥ हरत भये ताको धन सर्ब । स्वच्छ योगसो परम अखर्ब ॥ धन हरिगये सर्ब अलकेश । प्रात होन

भो दुखहि अशेश ॥ दीन होयके शंकर पास । जात भयो भो अतिहि उदास ॥ शंकरको अपनो वृत्तान्त । कहत भयो ऐसे क्षितिकान्त ॥ भार्गव मो तनुमाहिं प्रवेश । करिकै रोंकमोहिं गिरिजेश ॥ लेयगये मेरो धनसर्ब । योगयुक्तिसों पर्मअखर्ब ॥ तोमर ॥ सुनि श्रीदके ये बैन । करिशम्भु रातेनैन ॥ कबिहि कहां कहुमोहि । धनदे कह्यो इमि जोहि ॥ दबिभौन शम्भुसमीप । गुणि क्रोधवान महीप ॥ करमाहिं लीन्हें शूल । शिवको सुगुणि प्रतिकूल ॥ दोहा ॥ शूलपाणि को लखिपर्‍यो भार्गव अतिही दूरि । तदनु पर्‍यो शूलाग्रपै देखि योगसों भूरि ॥ चरणाकुलक ॥ शंकर कबिहि शूलपै जान्यो । भये शूलपै यह अनुमान्यो ॥ तपसों भई सिद्धता भारी । प्रापत कबिको परम सुढारी ॥ सो यह चाहत मोहिं बतायो । यह गुणि शूलहि सद्य नवायो ॥ शूल नवावत करमें आयो । कबि तपके तेजससों छायो ॥ कर में लखि के शीघ्र तहांहीं । डारि देतभे निज मुख माहीं ॥ शम्भु उदरमें प्रापतह्वैके । कबिभो फिरत शोचसों ग्वैके ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ भार्गव शम्भु उदरके माहीं । पैठि कियोका कहुमो पाहीं ॥ भीष्म-उवाच ॥ भार्गव पैठि उदर में नीको । सुस्तुति करत भो बृषयानी को ॥ कढ़िबेकी कबिके मन आवै । शंकर सोंपै कढ़नन पावै ॥ तब शंकरको ऐसे बानी । कहत भयो तत्रहि कबिज्ञानी ॥ दोहा ॥ मोपै होय प्रसन्न शिव कढ़न दीजिये नाथ । बारबारमैं कहतहौं तुम्हैं जोरिकैहाथ ॥ तब शंकर ऐसे कह्यो निकरु शिश्नकीराह । सर्बद्वार रोंकत भये इमि कहि शिव नरनाह ॥ अरिल ॥ शंकर सर्ब द्वार रोंके जब । अति ब्याकुलता लहत भयोतब ॥ फिरत उदर में भो कबि इतउत । शिव के दहत तेजसों दुखयुत ॥ उकाछा ॥ कढ़त शिश्न की राह । भार्गव भोनरनाह ॥ शुक्र भयो है नाम । याते कबिको आम ॥ दोहा ॥ भार्गव शिवके उदर ते कढ़े शिश्न की राह । याते दिव में सकतहै जाय नहीं नरनाह ॥ महत तेज

सों युक्त अति निकसे कविहि निहारि। होत क्रोध युत शूललै खरे भये त्रिपुरारि॥ भई निवारति क्रोध तहँ देवी शिवको भूरि। देवीके पुत्रत्वको प्राप्तभयो मुद्पूरि॥ ब्रह्मोवाच॥ शुक्र भयो मम पुत्र है याते याको नाश। कीजै आपुन ममपते करिकै क्रोध प्रकाश॥ देव उदरते जो कढ़त तासु बिनाश। कवौन। भयो आजुलौं औ नहीं ह्वैहै हे मम रौन॥ ये देवी के बचन सुनि ह्वै प्रसन्न शिवतत्र। जाहु शुक्र तू मुदित ह्वै तव मन आवै यत्र॥ दोहा॥ शिवको औ तिमि उमाको करिकै शुक्र प्रणाम। निजस्थानको जातभो तेजोमय अभिराम॥ भार्गवको जो चरितसो हम सब कह्यो बिशाल। हमको जो पूछ्यो हुतो कुन्ती सुत भूपाल॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेभार्गवसमागमोनामपञ्चाधिकनवतितमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ संग दोष ते शुक्रसो लहत ऊर्ध्वगति नाहिं। यह सुनि तुमसों डर भयो भूरि मोहिये माहिं॥ याते पूछत आपुसों कहौ श्रेय कछु और। प्रब्रक्तान के आपुहौ तात परम शिरमौर॥ कौन कर्मकीन्हे पुरुष दुओलोकके बीच। अतिहि परमजो शरमहै ताकोलहै निभीच॥ रामगीती॥ एक कहत हौं इतिहास तुमको अत्रमैं प्राचीन। इमि पराशरको पूछतो भो जनकभूप प्रवीन॥ सबभूतगणको श्रेयहै कादुओलोकनमाहिं। जो जानिबेकेयोग्यहै सो कहोमेरे पाहिं॥ येबचन सुनिकै पराशर नृप जनकके अवदात। इमि भये कहते जनक को मुनि कृपा करिकै तात॥ पराशरउवाच॥ बर धर्म होहै श्रेय भूपति दुओलोकन बीच। कुछ और श्रेष्ठ नधर्मते हैबदत बिज्ञ निर्भीच॥ जन होत है अति पूज्य दिवमें प्राप्त धर्महि होय। बुध आश्रमीते रहत तत्पर धर्ममें अघगोय॥ जनचारि बिधिकी लहतहै गति जनक भूप सुजान। तेक्रमहि सों मैं कहत तुमको अत्र बिज्ञ महान॥ जन योनिको बिहगादिकीहै लहत अघरत जौन। अरु स्वर्ग

को तेहोत प्रापत पुण्यवत मतिभौन॥ सोमनुज ताको पाय जामें पुण्य पाप समान। फिरि ह्वै शुभाशुभ कर्म माहीं प्राप्त होत सुजान॥ नृप पुण्यको अरु पाप सबको भये ते उच्छेद। जन प्राप्तहो कै अल्प पदको नित्य रहत अखेद॥ गति लहत तैसो मनुज जैसे होहिं पूरब कर्म। गतिकर्मके आधीन जानो जनक भूप सशर्म॥ नृपकिये पुण्य अपुण्य तिन में होय जो बलवान। है होत ताको भोगप्रथमहिं कहत मेधावान॥ अघहोय अथवा पुण्य जोई जातहै रहिशेश। हैहोत ताको भोग पीछे नशत नहिं अचलेश॥

इतिशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासुषडधिकनवतितमोऽध्यायः ९६॥

पराशरउवाच॥ दोहा॥ हैसुखादिको हेतुनृप पूरबकृत जो कर्म। तासु करन उच्छेदबर करैयोग गुणिमर्म॥ ब्रह्म भावसों लखत जो संसारहि लहिदेह। ब्रह्म भावको लहतहै सोईनृप बुधिगेह॥ निरालम्ब मनकरि करी सेवाजिहि जनपर्म। भक्ति ज्ञानरूपी परम सोय प्रशस्त सुकर्म॥ हस्तादिक कोकार्य्यनाहि तासेवाके माहिं। जिन्हें ज्ञान साक्षात नहिं तिनसों होतोनाहिं॥ दुर्लभजो है आयुनहिं ताहि बितावै ब्यर्थ। उत्तर उत्तर शरमको यत्नहिंकरै समर्थ॥ भक्तिज्ञान रूपापरम सेवाजो अभिराम। ताको प्रापत होयकै पूरबजन्म बुधिधाम॥ फिरिजो राजस कर्ममें प्राप्त होय भूपाल। लहै श्रेष्ठता तौनहीं कहत सुबुद्ध बिशाल॥ प्राप्तबर्ण उत्कर्षको पुण्य कर्मसों होत। ताहि बितावत है कुनर करिकै पाप उद्योत॥ कियोपाप अज्ञानते जोनपरम सुखदाय। ताको दूरि करै परम करिकै तप नरराय॥ पाप कर्मते होतहै निश्चय दुःखहि भूरि। यह बिचार करिकै रहै पापकर्मसों दूरि॥ कुत्सित होफल लखतहौं पापनको अचलेश। देहादिहि जाको रुचत सोअघ करत हमेश॥ होतनहीं बैराग्य है पापात्मासों भूप। निश्चय ताको होतहै नरक प्राप्त दुखरूप॥ रंग बस्त्रते छूटत है केते

छूटतहैन। यत्न कियेते इमिहि अघ जानोनृप मतिऐन॥ कियो जौन अज्ञानते छूटिजात सोपाप। औजानेसों जो कियो सोनहिं सुमतिकलाप॥ जोजनकरिसुबिचार यह नित्यकरत शुभकर्म। प्राप्तहोत कल्याणको निश्चय सोजनपर्म॥ यहसाधारण सबन को कह्यो धर्म हमभूप। अब बिशेष भूपतिनको कहतसुधर्म अनूप॥ जीतैउन्नत अरिनको पालै प्रजहि सनीति। अग्निहोत्र औ मखकरै बयके मध्य सरीति॥ करैबास आरण्यमें अन्तमाहिं लहिज्ञान। निग्रह कैइन्द्रियन को रहैभूप सबिधान॥ जिमि आपुहि देखे तिमिहिं भूत गणनको सर्ब। सत्यमाहिं तत्पर रहै गुणि के धर्म अखर्ब॥

इतिशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासुतसाधिकनवतितमोऽध्यायः ९७॥

पराशरउवाच ॥ दोहा ॥ हमराजा हैं मुनिनके पालतहैं सहधर्म। तिनको कीन्हों योगजो सहबिधान अतिपर्म॥ कैहै छठहो अंशबर ताके फलके बीच। हमको प्रापत यहसुगुणि मनमें होय निभीच॥ प्राप्ति होनको ब्रह्मको हमक्यों करैं उपाय। जोऐसे हमको कहौ तौसुनिये नरराय॥ कौन कौनको करतहैं जगमाहीं उपकार। कौन देतहै कौनको यहतुम गुणो उदार॥ प्राणी कर्महि करतहैं सबै आपने अर्थ। कोऊ करत परार्थ नहिं निश्चय जानु समर्थ॥ माता आदिक की कियेसेवा सहित बिधान। सुधरतहै परलोकयह गुणिकै करत सुजान॥ निकसो अपनोही अरथयाते वाहूमाह। ऐसेही सबको गुणो निश्चय हैनरनाह॥ भीष्मउवाच॥ सुनि सुपराशर के बचन देगुणि जनक नृपाल। फिरि पूछतभो चाहिकै तनिकै बुद्धिबिशाल॥ जनकउवाच॥ काहै साधन श्रेयसों जोहैनित्य अमंद। औ बिनाशको लहत नहिंकहिये बिज्ञ बिलन्द॥ अरु प्राणी कहँ जायकै आवत इतनाहिं फेरि। कहो आपु अवगाहिकै ज्ञानचक्षुसों हेरि॥ पराशरउवाच॥ साधनं नित्यअसंग है परम श्रेयकोभूप। औ बिनाश नहिं होतहै तपको स्वच्छ अनू-

प ॥ आवत इतनहिं फेरिजो प्राप्तब्रह्ममें होत । जानलयहवृत्तान्त भो जिनके ज्ञान उदोत ॥ अरिल ॥ जोजन करिकै दूरिअधर्महि । प्राप्त होतहै उत्तम धर्महि ॥ अभय दान जीवनको दैकरि । सानँद रहत मोक्षको लैकरि ॥ जोजन सहसन सुरभिनके चय । देत सैकरन अरु चंचल हय ॥ तिहिते अतिहि श्रेष्ठहै सोजन । अभय देत भूतनको जोजन ॥ दोहा ॥ बिषय मध्यहू रहिनहीं लिप्त होत मतिमान । बिषय बिनाहूं बिषयमें लिप्तहि रहत अजान ॥ अरिल ॥ लगि बिषयनमें जोनित देखत । अपनो भलोसोन अवरेखत ॥ बशमें होयक्रोध वारेबहु । सुखकोप्राप्त होतहै नहिंकहु ॥ देरन कीजे कीजै अतिद्रुत । धर्महि बिमला मतिसों कै युत ॥ छोड़तिमृत्यु धर्मके काजन । समयपाय लैजाति सुराजन ॥ दोहा ॥ चित्तहोत जब विमल है शर्म धर्मसों भूप । तबनृप योगाभ्यासकी आवत राह अनूप ॥ जात अन्ध अभ्याससों जैसेनिज गृह माहिं । ऐसेही बरयुक्ति जो लही गुरूके पाहिं ॥ ताकेबर अभ्यासते ज्ञानी परमअनूप । मार्गअगोचर माहिंहू जात चलोहै भूप ॥ मोक्षधर्म के माहिंजन बिप्रनही है जौन । जन्म मरणमें चक्रसम घूमतहै जनतौन ॥ ज्ञान मार्गको लहतजो दुहूं लोकमें पर्म । प्राप्तहोत आनन्दको तुम्हैं कहत गुणिमर्म ॥ मनहीं कारण बन्धको लगेबिषयमें भूप । औनलगे तेमोक्षको कारण मनहिंअनूप ॥ याते मनको रोंकिके कीन्हें योगाभ्यास । आत्माको जनहोत है प्रापतपाय प्रकास ॥ इन्द्रियकी जे बिषयहैं तिन्हैं गुणत निज कार्य्य । सोनिज कारज योगसों छूटि जातहै आर्य्य ॥ मृन्मय भाजनमें पके रहत नहीं कीलाल । तैसे तपयुत देहमें विषय नही भूपाल ॥ आच्छादित अज्ञानसों बिषयमाहिं रतजौन । जानत पथनहिं अन्धजिमि तिमि आत्माको तौन ॥ जरा अवस्थालौं रहत जोरत जगहीबिच । अहि बायुहिं ग्रसिलेत तिमि ताको मृत्यु निभीच ॥ खैंचेखैंचे फिरतहै जिमि नावहि मल्लाह । मन

तिमि देहहि भावना सोंजगमें नरनाह ॥ नेहयुक्त जनजात नशि
ऐसे लहिकैकष्ट। नीरमाहिं जिमि जात है सैकतको ग्रहनष्ट॥
जोशरीरको गुणल ग्रह तीरथ अंतर शुद्धि। औमति मारगमें
चलत पावत सुख बरबुद्धि॥ अतिबर आस्तिकभावते मतिसों
गुणि व्यापार। करै सुबुध जिहि अर्थसों नष्टन होत उदार॥
भीष्मउवाच ॥ जनक पराशर सुमुनिसों सुनिकै यह सिद्धान्त। प्राप्त
परम आनन्दको होतभयो क्षितिकान्त॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेपराशरगीतासमाप्तिर्नामअष्टाधिकनवतितमोध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सत्य क्षमा दमसुमतिको सुबुध सराहत
सर्व। लोकमाहिं तव मतिकहा यामेंप्रज्ञ अखर्व॥ भीष्मउवाच॥
कहत एक इतिहासहौं यहि प्रसंगमें भूप॥ साध्यनको अरु हंस
कोहै संवादअनूप॥ हरिगीती॥ बिधिहंस ह्वैकै हेमके फिरतेसुती-
नों लोकमें। नृपसुनो कबहूं भये आवत साध्यवारे थोक में॥
साध्याऊचु ॥ हेहंस हमहैं साध्यनामा देव पूछत आपसों। तवरूप
लखिकै जानितुमको भरे ज्ञान कलापसों॥ हमकोकहो तुम कृपा
करिकै मोक्षकोजो धर्महै। तव बदनते अभिराम अतिही बचन
निकसत नर्महै॥ होकहा जानत श्रेष्ठ तुनअरु रमतहै तव मन
कहां। जोकाज कीन्हें पुरुषछूटे जगतसों कहुसो इहां॥ हंसउवाच॥
बरस्वधर्म्माचरणधारे सत्यनित भाषणकहै। सबछोड़िकै रागा-
दिको जबचित्त बारीको लहै॥ कबहूं प्रियाप्रिय प्राप्तमें हर्ष बि-
षादै नाकरै। इन्द्रियन को बशमेंकरै नहिं कामना कौनिहुधरै॥
नहिं कहैकबहूं बैनऐसे होय दुख जिनको सुने॥ कटुबचनको
जोदुःखहै सो सह्यो जात नयहगुने॥ जन कहैकोऊ आयके कटु
बचनतो आपुन कहै। नाहिं कहो ऐसोमानिहियमें क्षमा धारेही
रहै॥ हमसुनत उत्तम कार्य्यहै यह और यासमहै नहीं। सुख
चहतसो यह करत कारज लगत अन्तनहै कहीं॥ दोहा ॥ सत्य
सुफलहै बेदको सत्यसुफल को पर्म। इन्द्रिय केरो रोंकिबो ताको

मोक्षसशर्म ॥ बचनक्षुधा तृष्णारटहि औ उपस्थकोजौन । रोकत है ताको कहत हमध्यानी मतिभौन ॥ मैं परिपूरण ज्ञानसों तबहूं नित्यसहर्ष । सेवत सबिधि बड़ेनको जानि महत उत्कर्ष ॥ तृष्णाको अरु रोषसों रहितहि रहत सदाहिं । बिषय लाभको जातनाहिं कबहुं सुरनके पाहिं ॥ छूटोहौं मैं पापसों घनसों जिमि निशिनाह । कौनहु कारजमें लगत मैंन सहित उत्साह ॥ बुधसों अबुधन को करै कबहुं नहीं अपमान । औन बुलावै निज निकट करिकै प्रेम महान ॥ निन्दापरकी औ स्तुती अपनीकरैकबौन । कोऊजो निन्दाकरै तौ सुनि रहै सुमौन ॥ होत जासु अपमान है तासु कछूनहिंहोत । नशत शीघ्रही करतजो लहिकै दुःख उदोत ॥ क्रोधी जो शुभ करत है ताको यम हरिलेत । श्रमही को सो होत है प्रापत अबुध अचेत ॥ जयकरा ॥ सत्य क्षमादम प्रज्ञापर्म । ये चारो दायकहैं शर्म ॥ पैइन चारिनहूंके माहिं । औरहि गुणो सत्यसम नाहिं ॥ सत्यस्वर्ग को है सोपान । कीन्हों मैं सिद्धान्त महान ॥ दोहा ॥ देवन को अरु सुरन को फिरि लोकन के बीच । कहत यहै सिद्धान्त हों मैं भो परम निभीच ॥ जैसे जनको सँगकरै तैसोही ह्वै जात । आपहु कछु दिनमें सुनो बसन रंगइव ख्यात ॥ जे नित तत्पर रहत हैं शिश्न उदरके माहिं । अरुजे नित्यहिकहत हैं पुरुष बचन सब पाहिं ॥ औ चोरीमें जेरहत तत्पर सहित हुलास । तिनते दूरहि रहतसुर कबहुं न आवत पास ॥ सम्भाषण सुर करत हैं बर साधुनके संग । नित्य प्रशंसा करत हैं तिनकी परम उतंग ॥ जौन सत्वगुण हीन अरु असन करतजे सर्ब । होतनहीं संतुष्ट हैं तिनसों देव अखर्ब ॥ साध्याऊचु ॥ किहिसों छादित लोकनाहिं किहिसों होत प्रकास । अरु किहिसों मित्रहितजत अत्रकह्यो हमपास ॥ हंसउवाच ॥ आच्छादित अज्ञानसों मत्सरसों न प्रकाश। होतजात हैलोभको भये महानप्रकाश ॥ साध्याऊचु ॥ बैन एक

ब्राह्मणन में रमत मोदके बीच । मौन धरतको और को कलह न करत निभीच ॥ हंसउवाच ॥ रहत मोदते प्राज्ञ अरु प्राज्ञरहत हैं मौन । प्राज्ञहि कलह न करत है करत लोकमें गौन ॥ साध्या ऊचु ॥ का कारण देवत्व को बिप्रनको अभिराम । अरुकाहे साधुत्वको कारण कहिये आम ॥ असाधुत्वको हेतु औ मानुषता को कौन । साध्यन के ये बचन बर सुने हंस मतिभौन ॥ हंसउवाच ॥ वेद पढ़न देवत्वको कारण है अभिराम । औ कारण साधुत्वको ब्रतजो बिधिवत माम ॥ असाधुत्वको हेतुहै निन्दाकी बो जौन । मृत्युलहत यहिहेतु ते मनुज कहावत तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ हमकोपूछ्यो जौनतुम अत्रकह्यो हमतौन । अबआगे कापूछिहौ हमको सुतबल भौन ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेहंसगीतासमाप्तिर्नामैकोनशततमोऽध्यायः ९९ ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ सत्य क्षमा दमऔ सुमति इन चारिहु के माहिं । कही श्रेष्ठता सत्यको आपुतात ममपाहिं ॥ सो सुनिकै निश्चयभयो मोमनमें अवदात । सांख्यमाहिं अरुयोग में जो बिशेष कहुख्यात ॥ सांख्य माहिं अरुयोगमें जो बिशेषहै दक्ष । सुन्योपूर्ब पै आपुसों सुनि हौं फेरि प्रतक्ष ॥ भीष्मउवाच ॥ करत प्रशंसा सांख्यकीसांख्यमती हैजौन । करतप्रशंसा योगकी अरु योगीहै तौन ॥ दृश्यमान यहजगत जो ब्रह्म तौनहैसर्ब । सांख्य नामयहिज्ञानको हैनृप अत्र अखर्ब ॥ ब्रह्मजगत यहसर्ब जो तौ ईश्वर नहिं कोय । ईश्वरबिन किमि छूटिबो महादुःखसों होय ॥ करत प्रशंसायोगकी याते योगी स्वक्ष । भिन्न योगमें पूज्य औ पूजक है नृपदक्ष ॥ ईश्वरपूज्य अनूपजो मोक्ष प्रदातातौन । सांख्ययोग के माहिं है इतोभेद क्षितिरौन ॥ जगते भिन्नन ईश्वरहि जानन को यह हेतु । सांख्यमती ते कहतहैं हेसुनु तात सचेतु ॥ कबहूं जो नहिं लगत है बिषय वृन्दके बीच । मानतहै संसारको ब्रह्महि परम निभीच ॥ ब्रह्महिसो कैजाल है होतजबै

देहान्त । यातेमानै भिन्नक्यों ईश्वर को क्षितिकान्त ॥ याहीको बरकहतहैं सांख्यसुप्रज्ञअखर्ब । सांख्य माहिं हैनृप प्रवृत होय सकत नहिंसर्ब ॥निश्चय सांख्यमतीनको होत शास्त्रते तात। जिमियोगिनकोतिमि तिन्हैं अनुभवहोत न ख्यात ॥ दुओमार्ग ये मोक्षकेश्रेष्ठ गुणत हो भूप । प्रवृतहोय जिहिमाहिं बरसोइहोत सुखरूप ॥ तुल्यहि ब्रत तुल्यहि दया तुल्यहिहै आचार । दोउन केहैशास्त्रहीभिन्न सुबुद्धिअगार ॥युधिष्ठिरउवाच ॥ तुल्यहि हैदोऊन केआचारादिक सर्व । भेदशास्त्रको क्योंभयो कहियेतातअखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ अनृत भावजो द्वैतको ताको एकहु बार । तत्त्वज्ञान तब होततब उदय न होत उदार॥रागमोह अरु स्नेहऔ तथा क्रोधअरु काम । द्वैतभाव जबलौं रहत तबलौं ये सब नाम ॥ तातसुनो जब होहिं नहिं उत्पन्नहि ये सर्ब । कर्महोत नहिंदेह नहिं रहतिन दुःख अखर्ब ॥ सांख्य शास्त्रकी रीतियह कहीतुम्हैं जो भूप । योगशास्त्र की रीतिसों अबहों कहत अनूप ॥ जो निशोधहै मानिबो जगको तासोंख्यात । सत्यभावजो दृश्यमें सोन रहतहै तात ॥ तासोंसब रागादिको होय जात उच्छेद । मुक्तहोय संसारसों नित्यहि रहतअखेद ॥ ऐसो जोनहिं होयतौयोग मार्ग ते भ्रष्ट । निश्चय योगी जातकै सहत पायकै कष्ट ॥ होति बिघ्न सम्भवना योगमार्ग सों पर्म । मोक्षमाहिं याते नहींयोग सुमुख्य सुधर्म ॥ याहीको निश्चयकरतदे अनेकदृष्टान्त । आगेसोएकाग्र कोचित्तहि सुनि क्षितिकान्त ॥ रामगीती ॥ अनिमेष जैसे मत्स्य बलवत काटि करिकै जाल । पुनि प्राप्तहोत सुनीरमें तिमि योगवान बिशाल ॥ सब काटिकै कल्मषनको परपदहि प्रापत होत । फिरि होत ताहिन प्राप्तहैं रागादिबारो होत ॥ जिमितोरि पाशहि हरिण बलवत बिमल मार्गहि जात । तिहि भांतिही बलवान योगीयोमसों अवदात ॥ लोभादिबन्धन सहत दुःखद काटिकै ते सर्ब । है बिमल मार्गहि लहतजो आनन्द रूप अ·

खर्ब ॥ जिमि अबल फांसी माहिंपरि मृग जात है ह्वै नष्ट । तिमि भांतिही बलहीन योगी महत लहिकै कष्ट ॥ बध लहत जैसे जालमें परि मत्स्यजे बलहीन । तिहि भांतिही सों अबल योगी जानु भूप प्रबीन ॥ जिमि अलप पावक थूल इन्धनसों सुनो बुझिजात। तिहि भांति योगी अबल दीरघ किये साधन तात॥ जिमि भयेते सुकृशान सोई महतबर बलवन्त। करिजारि डारत भस्मसर्बो भूहितुर क्षितिकन्त ॥ सुनु तिमिहिं क्रमसों योग करिकै भयेते बलवान । मो जगहि अंत अनेह रविसम सोखिलेत महान ॥ जिमि अबल जनको लेत करिबश माहिं नीर प्रबाह । तिमि बिषय योगी अबलको करिलेत बश नर-नाह ॥ जिमिबली बारण नीर श्रोतहि रोकिहै सो देत । तिमि बिषयको योगी दुलहिकै योग बलहि सचेत ॥ बरयोगके लहि बलहि योगितिजसों अतिभात। ऋषि सुरनके अभिराम पद को प्राप्तते ह्वै जात॥ नृप सबल योगी पै चलो नहिं मृत्युहूको जोर । करि योगबलसों लेत योगी बलीभूत अथोर ॥ तिन साहित भूतन फिरत भूके बीच निर्भयहोय । नहिं जीति ताको सकत केहूं काहु कबहूं कोय ॥ बलयोग सोंजो होतप्रापत कह्यो तुमसों तौन। अबकार्य्य सूक्षम योगतेजो होत सुनि बलभौन ॥ जिमि हनत धन्वी लक्षको अति सावधान महान । तिमि करत योगहि सबिधि सों कैवल्य लहत सुजान ॥ जिमि स्नेहसेती पात्रपूरण धारि शिरपर ताहि । सो पानपै जन चढ़त करि एकाग्र मन अवगाहि ॥ एकाग्र करिकै चित्त त्योंहीं योगवान नरेश । है करत आत्महि अमल जैसो परम चण्ड दिनेश ॥ जिमि महाजलके माहिं गतजोनाव ताहिमलाह । अतिशीघ्र देत लगाय तटपै तिमिहिं बरनरनाह ॥ अतिश्रेष्ठ योगी योग करिकैकरि सुदूरि प्रमाद । सुनु लहत है परपदहि जाके नहीं निकट बिषाद ॥ जिमि सारथिवर हय युक्तरथसों रथीको निज

देश। पहुंचाय देत सुशीघ्रहीहै तिमिहिंवर अचलेश॥ जो धा-
रणामें युक्तयोगी योगको अभिराम। सोहोत प्रापत परमपद
कोतीरलौं बुधिधाम॥ परमात्मा में आत्माकोकै प्रवेश अनूप।
जोरहत योगी हनत सोअघ लहतपद सुखरूप॥ युधिष्ठिरउवाच॥
उक्ता॥ कैसेकरिआहार। योगी प्रज्ञसुठार॥ औकिनको नृपजीति।
बलको लहैसरीति॥ भीष्मउवाच॥ दोहा॥ मण्डल कणापिण्याक
कोभक्षण करै हमेश॥ तजिदुग्धादिकसोंलहत योगबलहि अच-
लेश॥ यवकी लपसी बिरचिकै ताहिखाय बहुकाल। एक बेर
सोहोतहै प्रापत बलहि बिशाल॥ अरुजो योगी पिवतहै दुग्ध
मिश्र कीलाल। बहुबर्षनसों होतहै प्रापत बलहि बिशाल॥
जोननिरन्तर करतनहिं योगी मांसअहार। तौनहोतहै योगके
बलको प्राप्त सुढार॥ कामक्रोध शीतोष्ण अरु वर्षाभय अरु
शोक। श्वास अरति तृष्णा महति औबिषयनको थोक॥ आ-
लस औनिद्रा परश जीते इन्हें सुजान। योगी ह्वैकै योगके
बलको परम महान॥ करत प्रकाशित आत्महि बिमलामतिसों
भूप। चंचल ताको चित्तको करिकै दूरि अनूप॥ यह मारग
अति वक्रहै यामें होत निबाह। काहू काहू कोसुनो बिज्ञबीर
नरनाह॥ छुरीधार अतिनिशितपै खरो रह्योहै जात। योगमार्ग
ऊपर नहीं चल्यो जातहै तात॥ नष्टाजाकी जातिहै योगधारणा
पर्म। सोयोगीनहिं लहतहै बर शुभ गतिहि सशर्म॥ जोयोगी
बिधिवत रहत योगधारणा माहिं। जननमरन केदुःखको फेरि
लहत सोनाहिं॥ यहिविधि योगी योगके बलसों परमअनूप।
सब भूतनकोछोड़िकै जात ब्रह्मह्वै भूप॥ रीतिसांख्य अरुयोग
की भिन्न भिन्न भूपाल। शास्त्रभेद याते भयोहै हेप्रज्ञाबिशाल॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेयोगबिधिर्नामशततमोऽध्यायः १००
युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ योग मार्गहमको कह्योआपुस विधि वि-
ख्यात। अबसम्पूरण सांख्यको कहुबिधान हेतात॥ भीष्मउवाच॥

कपिलआदिकन जोकह्योसूक्षम अति अभिराम। स्वच्छ परम मतसांख्यको सुनो तौन तुमआम॥ श्रमएको नहिंपरतहै देखि सांख्यमेंभूप। औदोषहु एको नहीं गुणबहु परम अनूप॥ सुर नर ऋषि राक्षसनकेंअरु असुरनके भूरि। बिषय जानिकेदोष सह परमज्ञानसोंपूरि॥और सबजे तिनहुंके जानिविषयभूपाल। औ सु अवधिको आयुकी गुणिकैंविज्ञबिशाल॥ सबबिषयिनको दुःख गुणिअनिश बिलंद नितान्त।योगमाहिं अरु दोषजे तिनको गुणि क्षितिकान्त॥ दशगुण गुणिके सत्वके रजकेनौअनुमानि। औतमके गुण आठगुणि तिनकेसुमतिमहानि॥ गुणनाम। दोहा॥ अनुद्वेग ऋजुता परम श्रद्धाप्रीतिप्रकाश। पुण्यत्याग सन्तोष औ दूतिदूष मतिराश॥ इतिसत्वनामानि॥ अनशनत्व मदपरुषता भेद औररुटकाम। दर्पद्वेष अरुकृपणताये रजगुण नवमाम॥ इतिरजोगुणनामानि॥ महामोह अरु मोहतम अरु तामिश्रनरेश। निद्राअन्ध प्रमाद औ आलसदायक क्लेश॥ इतितमोगुणनामानि॥ सत्व सगुणहै बुद्धिके इन्द्रिय सहमतजौन। ताकेषटगुणजानिके तिनकोनृप बुधिभौन॥ रूपादिक जेपंचअरु महत्तत्त्वअहँकार। येगुणसप्त सुबुद्धिके जानो बुद्धि अगार॥ मनन करन मनको सुगुण द्दष्टादिकजेतात। तेपांचोंइन्द्रियनके पंचसुगुणहैख्यात॥ जो बाधत इन सबनको मोक्षलहत सोस्वक्ष। होत प्राप्त जब ज्ञानको जानिपरत येदक्ष॥ रामगीती॥ नृपरूपसों युतदृष्टिहै अरु गन्धसों युतघ्रान। रसमाहिं जिह्वा युक्तहै अरुशब्दमेंहैं कान॥ अरुबायु युक्त स्पर्शमेंहै मोहसो तमबीच। युतअर्थ माहींलोभ है बरबदत विज्ञ निभीच॥ पदगमनमें आसक्तऔ करशक्त बलमें पर्म। हम कहत जोयह गुणोताको अतिहि सूक्षमपर्म॥ अरुउदरमें आसक्त शिखिहै भूमिजलमेंभूप। जलतेजमें आस-क्ततेजसवायुमाहँ अनूप॥ आसक्त नभमें बायुहै अरु महतमेंन-भतात। अरु महततत्त्वसुबुद्धिमेंआसक्तहैअवदात। आसक्ततम

में बुद्धिहै तम रजोगुणकेमाहिं । रजसत्वमें आसक्तहै हमसुन्यो बुधजन पाहिं ॥ अरुसत्वसों आसक्त है जीवातमा में स्वक्ष । जीवातमाआसक्तमाया सहितप्रभुमेंदक्ष॥कैवल्यमेंआसक्तमाया सहित प्रभुहै जौन । कैवल्यसो आसक्तहै नहिंकहूंनृपबलभौन॥ दोहा॥मनअरु उद्भवकारण धी अरुपूरब कर्म । आश्रित जानो देहके येसबभूप सुधर्म॥उदासीन मध्यस्थजो आत्मा परमअनूप। तामें है नहिं पापयह जानै गुणिकै भूप ॥ है आरोप इन्द्रियादि को आत्मामें जो तात । तौन अविद्या सेतीजानै दक्षपरम अव- दात ॥ स्वप्नमाहिं जिमि आतमा एकहि जगदाकार । देखिपरत है बासना बशतें सुमति अगार ॥ जानोतिमि जाग्रतहुमें देखि परत जो सर्व । सो भ्रम है यह सत्य नहिं धरिकैज्ञान अखर्व ॥ बिषय बासना महति जो दुखदा अतिहि बिशाल । तातें दुर्लभ मोक्षहै आत्माको महिपाल ॥ लगत बुद्धिमें मोक्षका सहसन में कोउएक । पूरब पुण्य प्रभावतें प्रापत भये बिबेक ॥ दुर्लभहै अ- तिमोक्ष जो जानो नृप सिद्धान्त । बिषय बासनातें करत मनुज कुकर्म नितान्त ॥ जन्म मरणको प्राप्तह्वै यातें बारंबार । लोक- नमाहीं दुःखको प्रापतहोत अपार ॥ पैदेही तव दोपजो तिन्हें जानिकै त्यागि । लागे मोक्ष उपायमें बर बिबेकमें पागि ॥ युधिष्ठिर- उवाच ॥ देहोद्भवहै दोष कहुं कौनअत्रहै तात । भिक्ता औरन आ- पसों कहूं लोकमें ख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ पंचदोषहैं देहके माहिं बदतहैं बिज्ञ । शिष्यकपिल मुनिके क्षितिप परमसांख्यसर्बज्ञ ॥ भयनिद्रा अरुश्वास औ काम क्रोध दुखरूप । सबदेहिनकी देह में पंचदोप ये भूप ॥ अप्रमादतासों भयहि छेदै अरु निद्राहि । सेवन करिकै सत्वको जीतेजन अवगाहि ॥ छेदै क्रो- धहि क्षमासों अरु जो है नृपकाम । करैतासु छेदनसुबुध सङ्क- ल्पहि तजिमाम ॥ अरुजो पंचम दोष है श्वासताहि आहार । करिसुअल्प छेदैसुबुध मनिको करिविस्तार ॥ दोष पांचहुनको

सुनो ऐसे छेद नृपाल। सांख्य मार्गमाहीं प्रवृत रहैं सुविज्ञ वि-
शाल॥ काटिशुभाशुभबासना ज्ञानशास्त्रसों चंड। सांख्यमार्ग
में प्रवृत जे धीरयवान अखंड॥ यह संसारसमुद्र जो अतिहि
बिशाल गँभीर। निश्चय ताको तरतहैं तेसुनु नृपवरबीर॥ यह
संसार समुद्र जो तरितिहि को नरनाह। सांख्यमारगी होत हैं
तदंनुप्रासनभमाह॥ प्रासहोतनभमाहिंतब-सूरयतिनकोस्वच्छ।
राखत अपने करण में भरे तेजसों स्वच्छ॥ पद्ममाहिं जिमि
तंतुहै तिमिरहि किरणनमाह। विषयसुचौदह भुवन के लखन
लगत नरनाह॥ तिनकोप्रापत होत है तत्रतहां सो वायु। सप्त
लोकको मरुत के जात जौननरराय॥ शीतलादि जे तीन
गुण तिनसों युक्त अनूप। जासु परशते होतसुख कुन्तीसुत
बरभूप॥ तमोगुणहि प्रापत करत तिनको सो पवमान। तम
रजको रज सत्यको प्रापत करत सुजान॥ शुद्ध प्रभुहि प्रापत
करत तिन्हें सत्य सुखदाय। परमात्माको करत हैं प्रापतप्रभु
नरराय॥ परमात्माको प्राप्त ह्वै तिनहीं में मिलिजात। लहत न
फिरि आगमनको सांख्यमती अवदात॥ युधिष्ठिरउवाच॥ परमा-
त्माको प्राप्त ह्वै जनमतिके अवदात। जनन मरणके समर
नहिं करतकीन फिरितात॥ पूछतहौं मैं आपसों सत्यकहौ तुम
अत्र। तुमसों और न बिज्ञ है गतिजाकीसर्वत्र॥ भीष्मउवाच॥
प्रश्न किये यह जौन तुम सो अति संकटवान। बुधजनको
नृप होत है ऐसे माहिं महान॥ कीन्हा शिष्य न कपिलके अत्र
परम सिद्धान्त। सोमैं ताको कहतहौं सुनु थिरह्वै क्षितिकान्त॥
मोक्ष अवस्था माहिंहू तात रहत है ज्ञान। हानि ज्ञानकी होत
नहिं कपिल मुनि कहत सुजान॥ इन्द्रियको सुअभाव है मोक्ष
अवस्था माहिं। तातेज्ञान घटादिको तत्ररहतहै नाहिं॥ निर्वि-
कार परमातमा प्राप्तभये तिहिबीच। होत न फिरि आगमनको
प्रापत रहत निभीच॥ यहहम जीवनमुक्तको कह्योताहिं वृत्ता-

न्त। अब विदेहकैवल्यहो कहत सुनो क्षितिकान्त ॥ मोक्षार्थी जनजौनहै युक्तज्ञानसों पर्म। सो थोरेही कालमें शांतिहि लहत सुधर्म ॥ तात श्रेष्ठनाहिं ज्ञानहै सांख्य ज्ञानसम और। सांख्य ज्ञानी लहत हैं जो अति उत्तम ठौर ॥ सांख्य परम निर्द्वन्द है अक्षर बर अवदात। निश्चयहै यह अत्रतू संशय करुमति तात ॥ सांख्यहिमें बलपर्महै सांख्यहिमें सुखपर्म। करत प्रशंसा सुबुध हैं सांख्यहि की गुणिमर्म ॥ परमात्मा में होत है प्राप्त त्यागिके देह। प्रवृत सांख्य में ते नहीं जात अनत बुधि गेह॥

श्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेसुसांख्यनिरूपणोनामैकाधिकशततमोऽध्यायः ॥

युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा ॥ सांख्य मार्गमें प्रवृत जे ते जिहि गति को जात। सो गति हम तुमसों सुनी तात परम अवदात ॥ पूछतहौं वृत्तान्तयक और आपुसोंअत्र। तुमहींकहिबे योग्यहो है तव गति सर्वत्र ॥ अक्षरहै बर कौननृप प्राप्त होयकै जाहि। फेरि न जन आगमनको लहत कहो अवगाहि ॥ अरु अक्षर है कौनकहुनृपजाको प्राप्त होय। फेरि आगमनको लहत प्राणी दुखसों भोय ॥ तत्त्व जानिबे कायशुभ अक्षर क्षरको रूप। पूछतहौं मैं जानिके तुमको बिज्ञ अनूप ॥ रामगीती ॥ नृप दक्षिणायन भानुके अबरहे दिन हैं थोर। यहि हेतुसे ममहिये भो उत्पन्न दुःख सुघोर ॥ जब परमगतिको प्राप्त ह्वैहौ त्यागिकै तुमदेह। तब पूछिहौं मैं होय किहिसों जगतमें मतिगेह ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणादोहा ॥ अत्र एक इतिहास कहतहौं सुनुनृप छोड़ि बिषाद। सुमुनि बशिष्ठ कराल जनकको तामेंहै संवाद ॥ मनोहर ॥ सुमुनि बशिष्ठ महामतिमान। अति तेजोमय भानु समान ॥ बैठेहुते सुऋषिगण माहिं। जाय जनक नृप तिनके पाहिं ॥ जो तुमपूछ्यो हमको अत्र। सोई भयो सु पूछत तत्र ॥ बशिष्ठउवाच ॥ नष्टहोत जिमि जगत अखर्व। काल व्यतीत भये ते सर्व ॥ औजिमि नष्ट न होत नृपाल। तिमिसुन अत्रसुबिज्ञ

बिशाल ॥ चारौ युगकी चारिहजार। आवृति भये सुबुद्धि अ-गार ॥ होतदिवस बिधिकेरो एक। औनिशिहू युगगये तितेक ॥ कल्पद्रुहिनके दिनको नाम। सहित निशा सुनुनृप मतिधाम ॥ कल्पषष्टि अरुनृप शततीन। बिधि बत्सरमें होत प्रबीन ॥ शत बत्सर जीवत लोकेश। तदनु होत बिधि अन्त नरेश ॥ अमूर्तात्मा शम्भु अनूप। सिरजतहैं बिधिको पुनिभूप। रहती हैं अणिमादिक सिद्धि। अनिश शंभुमें बरबुधि निद्धि ॥ जासु पाणि पदशिर सर्बत्र। हैजानो संशय मतिअत्र ॥ सुनतश्रेष्ठहै सो बिनकान। औ देखत बिनचक्षु मुठान ॥ बहुशास्त्रनमें जाके नाम। है बहु जानत बरमति धाम ॥ होत जगत ताहीते सर्ब। औ ताहीमें लीन अखर्ब ॥ अक्षर सोई आनँद रूप। और सर्बक्षर जानोभूप ॥ है अक्षर रूप चराचर जौन। पावत महत दुःखको तौन ॥ क्षर अरु अक्षरको वृत्तान्त। कह्यो तुम्हैं हम गुणि क्षितिकान्त ॥ जान्यो जात ज्ञानसो स्वक्ष। अक्षर जोहै अपरत्यक्ष ॥

इतिशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेबाशिष्ठकरालजनकसंबादेद्वयधिकशततमोध्यायः॥

बशिष्ठउवाच ॥दोहा॥ मायाके संयोगतेपुरुष होयकेअज्ञ। बहु देह-नको होतहै प्रापत नृपबर प्रज्ञ ॥ कबहूं तिर्य्यग योनि में प्राप्त होतहै जाय। कबहुं सत्य सामर्थ्यते सुरह्वै रहत सचाय ॥ मा-नुषता लहिजातहै कबहूं दिवमेंस्वक्ष। कबहूं दिवते गिरिलहत मानुषता पुनिदक्ष ॥ ऐसेमकरी फँसतिहै आपुहि तनिके जाल। तैसेही गुणयुक्तह्वै पुरुषहु जनक नृपाल ॥ आपु परम निर्द्वन्द्वपै भये गुणनसों युक्त। रोग ज्वरादिक को लहत होय सकत नहिं मुक्त ॥ धारि अहंता कहतहौं आधि ब्याधिसो ग्रस्त। मैं आ-नन्दित रहतहौं कारज करत प्रशस्त ॥ कबहूं भूमें करतहै कबहूं गृहमेंशयन। कबहूं प्रस्तरपैकरत कबहुं नदीतटऐन ॥ ब्याघ्रचर्म धारत कबहुंकबहुँ सिंहकोचर्म। मृगचर्महिधारणकरत कबहुंसगर्ब

सशर्म ॥ भोजनमधुरविचित्रबर वस्त्ररत्नद्युतिमान । तिनकोप्रापत होयकैकरत महतअभिमान॥ चान्द्रायन आदिककरत बिधिसेती उपवास । इच्छाहीमें राखिकैफलकीसाहितहुलास ॥ चारोहुंआश्रमनमें तत्पररहतनृपाल । बहुप्रकार के करन हैं बहु पाषण्ड बिशाल ॥ बहुप्रकारके करतहैं बहुमख औ बहुदान । करत चारिहूं बर्ण लहि चारिहुके सुबिधान ॥ बरवा दोहा ॥ आपुहि करत बिभाग आत्मा माया सेती माम । धर्म अर्थको कामसत्त्वको रजतम को बुधिधाम ॥ दोहा ॥ द्वंद्वअनेकनको लहतनित्यनित्य भूपाल । ममतामाहीं पागिकै आपुहि भूल बिशाल ॥ देवलोकमें प्राप्तह्वै मैं सुखलहिहौं भूरि । शुभ कर्मनको करिकहत ऐसो मुदसों पूरि ॥ कबहूं देवत्वहि लहत कबहूं मानुषताहि । निरयमाहिं परिकैलहत कबहूं दुःख महाहिं ॥ जनन मरन कोटिन लहत माया के बशहोय । घूमत तीनों लोकमें बहु कौतुकको जोय ॥ आपु अनिन्द्रियपै सुनो माया बशते भूप । सेन्द्रिय मानत आपुको ह्वैकै सगुणअनूप ॥ अक्षरहैपै आपुकोमानतहै क्षर आपु । परि प्रपंचमें प्रकृतिके हैन्टपबुद्धि कलापु ॥ रहति षोडशी है कला शशिकी यातेभूप । फेरिहु पंचदशो कला ह्वैहै जाति अनूप ॥ इमि सुप्रकृति आत्मा रहत याते पावत देह । बहु प्रकारकी फेरिहू जनकभूप मतिगेह ॥ माया को जब होतक्षय होततबै है मुक्त । तबलौं अबहि रहतहै जबलौं मायायुक्त ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्मेवशिष्ठकरालजनकसम्वादेत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ मायाके सुबियोगबिन होत मोक्षहै नाहिं । यह मुनिसुमुनि बशिष्ठसों मतिसों गुणिमनमाहिं ॥ पुरुष नित्यतिमिनित्यहै मायाह्वातिहितौन । ह्वैहैमोक्ष बिचारियहजनक भूपमतिभौन ॥ पूंछत सुमुनिबशिष्ठसों फेरिभयो भूपाल । नम्रहोय ऐसे परमतनिके बुद्धिविशाल ॥ जनकउवाच ॥ जैसेभार्य्या पुरुषकोहै संबन्ध अनूप । अक्षर क्षरसम्बन्धहै तद्वतहो मतिरूप ॥ गर्भधारि

नहिं सकलहै नारीसो बिनपीय। बिरचि सकलशिशुरूप नाहिंसु मुनिपुरुष बिनतीय ॥ दोउनके सम्बन्धते औगुणतेशिशुरूप। होत सुनो सबयोनि में निश्चय सुमुनि अनूप ॥ अस्थिस्नायु मज्जासुगुण ये सुपिताके तीन। माताके त्वचमांस औ शोणित येसुप्रबीन ॥ वेदशास्त्रके बीच है यहहम सुन्यो प्रमान। इमिहैं प्रकृति अरु पुरुषको है सम्बन्ध सुजान ॥ ताते जान्यो परत है मोक्ष मार्गसों व्यर्थ। जो तुम जानत होहुतौ कहिये मोहिं समर्थ ॥ मेरे महती मोक्षकी कांक्षा है अवदात। सबतत्त्वनको आपुहो जानत बरमुनि ख्यात ॥ बशिष्ठउवाच ॥ जानत हेतू बेद औ शास्त्रहि जनक नरेश। पैजानत तिनको नहीं सूक्षमतत्त्व बिशेश ॥ वेदशास्त्र धारण किये पैनभयो तत्त्वज्ञ। ताते सब धारण भयो तासव्यर्थ नृपप्रज्ञ ॥ ग्रन्थतत्त्व जानेबिना ग्रन्थ धारिबो भारि। ताहीकोहै सफलजो जानततत्त्व सुढारि ॥ जो जानत है तत्त्वकहि सकल यथोचित तौन। तत्त्व कहै किमि ग्रन्थको अर्थ न जानत जौन ॥ सांख्य माहिं अरु योगमें जैसो निर्णय स्वक्ष। देखियरत तैसो तुम्हैं अत्र कहत मुनि दक्ष ॥ योगमार्गसों लखत है योगी जाहि नृपाल। प्राप्त होत है ताहि बर सांख्यमतीहु बिशाल ॥ सांख्ययोग को एकही जानत सो मतिमान। ताकी गतिको और सो जाय न सकत सुजान ॥ नरनारी सम्बन्धते जिमि सु होति है देह। पुरुष प्रकृति सम्बन्धते तिमिहि जगत मतिगेह ॥ ऐसे तुम हमको कह्यो पूरब गुणि भूपाल। सो सुनु अत्र न लगत है यह दृष्टान्त बिशाल ॥ जैसे एक स्वभाव है नरनारी को भूप। पुरुष प्रकृतिको एक है तिमि न स्वभाव अनूप ॥ पुरुष अनिन्द्रिय औसुनो तुच्छप्रकृतिहै जौन। याते माया पुरुषको है सम्बन्ध कबौ न ॥ पुरुष भिन्नहै प्रकृति ते निश्चय नहिंसन्देह। सत्तासे तोपुरुषकी रचति जगहि मतिगेह ॥ मायाही ते होतहै आकाशादिक सर्व।

फेरिलीन ह्वैजातहैमायामेंहिं अखर्ब ॥ प्रकृतिअकेली रचित किमिजगतहिबिनासहाय। यहआशंका जोकरौमनमें तुमनर-राय॥तौतुमसुनिये देतहौंतुम्हैंअत्रदृष्टान्त। शुक्रसुमित्राबरुण कोगिरतभये क्षितिकान्त॥ देखेउरबशिही तदनु सोमित्राबरुण उठाय।शुक्रधरतभेकुम्भमेंयत्न सहितसकुचाय ॥हमऔहोतअगस्त्यभे कुम्भमाहिं अवदात। यकपुरुषहिकेसुगुणसों ऐसेही हेतात॥ यकप्रकृतिहि सोंहोतहै जगको सकलप्रपञ्च। पुरुष कछू नहिं करतहै अत्रन संशयरञ्च ॥ आपुनिरामय आत्मा नित्य अनादि अनन्त। देहादिकमें सर्बहौपै इहिभांतिभनन्त॥ देहादिक संघात कहावत याते आत्माभूप। अज्ञमहान जानते हैं यहबृत्तान्त अनूप॥ जब जानै इमिजीव येमायाके गुणसर्ब। तब परको देखनलखत जोहै नित्यअखर्ब ॥ जोगुणके सम्बन्ध सों रहित सो ईश्वर पर्म। बुध ताकोपर कहतहैं गुणाति जासु मति मर्म ॥ सांख्य माहिं अरुयोगमें जेहैं कुशलअनूप। जानत प्रकृतिहि को सबै हैं जेते गुणभूप॥ जबलौं जानत आपु नहिं आपुहि तबलौं जीव। जबजानैतब ब्रह्महै नित्यभूप मति सीव ॥ भिन्न भिन्न जानत सुनो जीवब्रह्म को अज्ञ। औजानत हैं एकही जेमहान हैं प्रज्ञ ॥ जीवब्रह्म के माहिं जो हेतुभावक्षर तौन। औ अद्वैत भावसों अक्षर नृपमति भौन ॥

श्रीशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेवशिष्ठकरालजनकसंबादेचतुरधिकशततमोध्यायः

जनकउवाच ॥ चरणादोहा ॥ जीवब्रह्म के एकत्वहि तुम अक्षरकहतसुजान। औनानात्वहि कहत आपहौ क्षरबरबिज्ञ महान ॥ दोहा ॥ सुनिमुनिइनदुहुमतन है हातमहतसन्देह। सो मैं प्रकटे कहतहौं तुमको अत्रअछेह ॥ होतनहीं एकत्व है बन्धमोक्ष को हेतु। औहैहेनानात्व में आतम नाशसचेतु। क्षरहै जो नानात्व सो यहि सुवचनसों दक्ष। याते फिरि हमको कहो करिकैकृपा प्रतक्ष॥ क्षरअक्षरको जो कह्यो हमको तुम वृत्तान्त। बुद्धिस्थिर

मम है नहीं याते रह्यो न दान्त ॥ बुद्धिमान है कौन अरु है अबुद्ध सो कौन । औ प्रबुद्धहै कौन तुम कहो हमैं बुधिभौन ॥ ज्ञान प्राप्तिको नाम है बिद्या सुखकी खानि । जासों ज्ञान ढँपो रहै ताहि अबिद्या जानि ॥ अक्षर कहत सुनित्यको क्षर अनित्य कोभूप । तत्त्वविवेकहि कहतहैं सांख्य सुप्रज्ञ अनूप ॥ चित्त वृत्तिके रोकको योग कहतहैं दक्ष । प्रवृतभये जन योगमें होत परम हैं स्वक्ष ॥ चरणादोहा ॥ बिद्या और अबिद्याको अरुक्षर अक्षरको तात । भिन्न अभिन्न भावकहु औ तिमि सांख्ययोग को ख्यात ॥ वशिष्ठउवाच ॥ सुनहुजनकनृप सांख्ययोगके चारु निरूपण बीच । सबप्रश्ननको उत्तर तुमको देहौंअत्र निभीच॥ दोहा ॥ योग सांख्यके माहिंमें प्रथम कहतहौं योग । जिहि बिधि सों पूरब कहत आये हैं बुधलोग ॥ सुनु नृप योगी जननको ध्यानहिहै बलपर्म । बिद्याबिदितहि ध्यानको द्विबिध कहतगुणि मर्म ॥ यक मनकी एकाग्रता दूजो प्राणायाम । प्राणायामहु होत हैद्वैबिधिको मतिधाम ॥ एकसगर्भ निगर्भ यकतिनदोउनमेंभूप । जो जपध्यान समेत हैं प्राणायाम अनूप ॥ सो सगर्भ है कहत बुध अगर्भ बिन जपध्यान । इनदोउन में श्रेष्ठहै सगर्भ जौनसु जान ॥ मूत्रपुरीष अनेह औ भोजनको सुअनेह । तामें प्राणायाम नहिं कीजै नृपमतिगेह ॥ शेषकालमें करतही रहैसुप्राणायाम । अब प्रत्याहाररहिसुनो तुम्हैं कहतहौं आम ॥ इन्द्रियकेरो रोक जो सोहै प्रत्याहार । सब इन्द्रियको विषयमें लगन न देय सुढार ॥ मनसों अथवा प्रेरणा द्वाबिंशन सों पर्म । रोककरै इन्द्रियनको योगीजन गुणिमर्म ॥ पंचबिंश औपुरुष जो नित्यानन्दअनूप । ताहिप्राप्त ह्वैसुनो जनकबिज्ञबरभूप ॥ द्वाबिंशति जे प्रेरणा तिनसों जान्योजात । ब्रह्मसनातन शुद्धजो परमनित्यअवदात ॥ कामादिक सों रहित है जाकोमन अति स्वक्ष । ताहीसों ह्वै सकत हैं योग सहित बिधि दक्ष ॥ ह्वै विमुक्त सब

संगसों अल्पअहारी होय । मनहि लगावै आत्मा में सुज्ञानसों जोय ॥ विषयमें नजाकी लगै इन्द्रियहवैके मुक्त । रहै काष्ठवत जानिये भयो योगमें युक्त ॥ जिमिस्थान निर्वातमें रहत प्रकाशितदीप । बुद्ध्यादिक सों हीनत्यों योगी जो अवनीप ॥ अनुभव बलतेजब कहै मैं हौंब्रह्मअनूप । देखिपरत परमात्मा आत्मा में तब भूप ॥ लघुहूते लघु औ महत महतहु ते है तात । सबभूतनमें रहतहै पै नहिं जान्यो जात ॥ ऐसे आत्महि जानिबो सोई योग नरेश । और न लक्षण योगको हैबर कहत बुधेश ॥ योग यथा बिधि हम कह्यो तोहिं अत्र अवगाहि । अब हौं सांख्य ज्ञानको कहत सुनो तुम ताहि ॥ चरणा दोहा ॥ भूप कहत अव्यक्त प्रकृति को जे जनहैं प्रकृतिज्ञ । महत्तत्त्व उत्पन्न होतहै तिहि सुप्रकृति तेप्रज्ञ ॥ दोहा ॥ अहङ्कार उत्पन्न नृप महत्तत्त्वते होत । पंचभूतको होत है तिहि ते तात उदोत ॥ अव्यक्तादिक आठये मूल प्रकृति सुठार । मन इन्द्रिय दश बिषय शर षोड़श ये सुबिकार ॥ होत जहांते सर्बये होत तत्रही लीन । जैसे सागर में लहरि तैसे भूप प्रवीन ॥ इन सबको लय होत तब रहत ब्रह्म है एक । औ उद्भव जब होततब आपुहि होत अनेक ॥ प्रकृतिहि करत चिदातमा बहुप्रकारकी दक्ष । मुख्य अधिष्ठातासुनो याते सोई स्वक्ष ॥ क्षेत्र बन्यो जो प्रकृति को रहत जबै तिहि बीच । होत अधिष्ठाता नृपति तब चैतन्य निमीच ॥ जानतहै सो क्षेत्र को याते भोक्षेत्रज्ञ । नामआत्माको परम जानतहै बरप्रज्ञ ॥ पंचविंश औ पुरुष जो सोई ईश्वर तत्त्व । और अनीश्वर सर्बजे हैं चौबीस अतत्त्व ॥ जानत जोयहि भेदको सोय सांख्यहै भूप । जे जानत यहि भेदनहिं सो घूमत दुखरूप ॥ बुद्धिमानहै नामजीव को प्रकृती नाम अबुद्ध । भिन्न प्रकृतिते जोहै आत्मा ताकोनाम प्रबुद्ध ॥ कह्यो तोहिं अवगाहि हम यहबरब्रह्म बिचार । ब्रह्मभावको लहत सो जोयह गुणत सुढार ॥ फेरि जन्म नाहिं लहत जे

पावत ब्रह्मज्ञान। जेनहिं पावतते लहत पुनिपुनि जन्म सुजान॥
शान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेबशिष्ठकरालजनकसंबादेपंचाधिकशततमोऽध्यायः॥
बशिष्ठउबाच॥ दोहा॥ जो अब्यक्त प्रकृतिहै ताको जन्म प्रलय हैधर्म। ताहि अबिद्या कहतहैं ज्ञानी गुणिके मर्म॥ जन्म मरण सों रहित जो ताको बिद्यानाम। पंचबिंश सुकहतहै जाहि मनीषा धाम॥ छूटत है अज्ञान नृप जैसे जैसे दक्ष। होत सुबिद्या भाव है तैसे तैसे स्वक्ष॥ विद्या कर्मेन्द्रियन की बुद्धीन्द्रिय मतिमान। विद्या बुद्धीन्द्रियन की पंचसुभूत महान॥ भूतनकी विद्या मनस औ रूपादिक तास। हैविद्या रूपादिकी अहङ्कार मतिरास॥ अहंकार कीबुद्धिसुविद्या तास प्रकृति अब्यक्त। परब्रह्महै ताकी विद्या जानत ज्ञानाशक्त॥ सर्वज्ञानको ज्ञेय है विद्याही भूपाल। नाम ज्ञानधी वृत्तिको कहत सुबुद्ध बिशाल॥ सोई है धीवृत्ति नृप निश्चय करिबो जौन। जौन जानिबो योग्यहै ज्ञेयकहावत तौन॥ विद्या और अविद्या तुमको कहीसुहम क्षितिकान्त। क्षरअक्षरको फेरि कहतहौं तुमकोमैं वृत्तान्त॥ दोऊ अक्षर अरुक्षरहु दोऊ निस्संदेह। कारण तुमको कहतहौं दोउनको मति गेह॥ आदि अन्तसों रहितहै औहै नित्य अमन्द। तत्त्व कहत दोऊनको प्रज्ञावान अमन्द॥ क्षरको अक्षर कहत किमि जो इमिकह्यो नृपाल। तोमैं तुमको कहत हौं याको हेतु बिशाल॥ सहगुण जो उत्पत्ति जगत की अक्षर ताके काज। फिरि फिरि लहत बिकार कहावत क्षर याते नरराज॥ गुण जालहि जब करत सुयोगी शुद्ध ब्रह्ममेंलीन। पंचबिंशकहु होयजात तबतबहींलीन प्रवीन॥ पंचबिंशकी लयभये रहिहै आत्मानाहिं। जो तुम इमि गुणिके कहौ तौ सुनिये मोपाहिं॥ महदादिककी लय भये प्रकृति माहिं जिमिभूप। रहत प्रकृति है शेषतिमि जानत प्रज्ञ अनूप॥ निज उत्पति स्थानजो षडबिंश और अमन्द। पंचबिंश ह्वैजात है तामेंलीन नरेन्द॥ लय सुभये आभासकी

होतमुख्य नहिंनष्ट । शुद्ध आत्मारहतहै ये ममबचन सपष्ट ॥ निर्गुणताको होतहै पुरुषप्राप्त जब स्वक्ष । तब बिनाश को होत है प्रकृतिहु आपत दक्ष ॥ पंचबिंश क्षेत्रज्ञ जब शुद्धात्मामेंलीन । होन लगत तब गुणवती प्रकृतिहु गुणत प्रवीन ॥ निर्गुण जानत आपुको नित्यानन्द अमन्द । बिशुद्धात्मा होतजब प्रज्ञ सुजनक नरेन्द ॥ जब इमि जानत अन्यहौं मैंऔ माया अन्य । तत्वताहि तब होतहै प्राप्तपुरुष नृपधन्य ॥ मिश्रित मायामें पुरुष होत नहींहै फेरि । कह्यो तुम्हैं अवगाहि यह ज्ञान चक्षुसों हेरि ॥ पुरुष कहत इहि भांति जब घूमि होतहै ज्ञान । जीवन अपनो समुझिकै जैसे मात्स्य सुजान ॥ ह्रदते ह्रदको होतहै प्रापत तैसी भांति।पावतहो अज्ञानते मैं देहनकी पांति ॥ मायाके बशमें भये बीतिगयो बहुकाल ।मैंआपुहि जानो नहीं भये अबुद्ध बिशाल ॥ सबिकारा जो प्रकृतिहै तासोंमैं अबिकार । ठगोगयो पैदोषनहिं याकोअत्र अपार ॥मेरोही अपराधहै भयेसुयामेंशक्त । बहुप्रकार केबिषयमें भयोरह्यो आशक्त ॥ अबमैं जाग्योभई अबिद्या निद्रा मेरीदूरि । देहौं छोड़ि प्रकृतिको अबमैं रहिहौं सुखसों पूरि ॥ अब रहिहौं षडबिंशके संग प्रकृति सँगमैन । ऐसे जानत ज्ञान सों पंचबिंशहै ऐन ॥ क्षरअक्षर को सबमैं तुम्हैं कह्यो वृत्तान्त । जैसे लिख्यो सुबेदमें तैसेबर क्षितिकान्त ॥

शान्तिपर्बणिमोक्षधर्म्मेवशिष्ठजनककरालसंबादेषडधिकशततमोऽध्यायः॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ अबमैं बुद्धअबुद्धको कहतबिभाग अनूप । वेद माहिं जैसो लिख्यो तैसो सुनु बरभूप ॥ बुद्ध ब्रह्मको कहत बुध जी वहि कहतअबुद्ध।गुणयुतभये अबुद्धहै होतबुद्धही शुद्ध ॥ गुणको धारण करतहै बुद्धिमान जोजीव । जानतहै नहिं बुद्धको यातेसुनु मतिसीव॥मैंकर्त्ता मैंभोगता बुद्धिमानअभिराम ।कहत करत क्रीड़ा महत लहि बिकार को माम ॥ निर्गुण पुरुष प्रधान को जानतहै नाहिं जीव । याते कहत अबुद्ध है ताहि प्रज्ञ मति-

सवि ॥ जो जानैतौ पंचविंशकहि षडविंशकहि नभूप । पंचबिंश संगात्मक यातेसुनु मतिरूप ॥ जानतनहिं षडविंशहि यातेजीव-हि कहत अबुद्ध । जानत पंचविंशकहि याते बुद्धिमान बुधशुद्ध ॥ पंचविंशक चतुरविंशकहि जानतहै षडबिंश । षडविंशहि जानत नहिंदोउयेनृप जनकअहिंस ॥ सोईदृश्य अदृश्यमें निज संज्ञासों छाय । रहोनित्यहै ब्रह्मबर निर्गुण सुनुनरराय ॥ सर्बब्यापकब्रह्म जोतौ क्यों देखत नाहिं । हमनहिं जो ऐसोकहो अत्रमोहिं अव-गाहि ॥ अब आनत हैं आपुको देहीनृप मतिऐन । चतुर्विंश औ पंचविंशकहि तबसो जानतहै न ॥ षडविंशककी कोकहै वहतो निर्गुण पर्म । जब जीतै प्रकृतिहि सुनो थिरह्वैके गुणिमर्म ॥ उत्कृष्टा अति निर्मला विद्या जो अति स्वक्ष । ताको जानत है महा सुखदा जनक सुदक्ष ॥ बोध होत षडबिंशको तिहि विद्या सों शुद्ध । बोधभये षडविंशको तजत प्रकृतिको उद्ध ॥ तदन-न्तर मैं कहतहौं निर्विकार षडविंश । प्रकृतिहि जानतगुणवती सुन्योभूप अवतंश ॥ सर्बगुणनसों रहितहौं मैं षडविंश प्रबुद्ध । जब इमि जानत होत तब अजर अमर अतिशुद्ध ॥ जबलौं ब्र-ह्मज्ञान नहिं तबलौं सर्बे प्रपंच । होत सुब्रह्म ज्ञानतब है प्रपंच नहिंरञ्च ॥ मैं आत्मा इमि बुद्धिसों जबनहिं जानोजाय । तब जानो षडविंशको अनुभव भो नरराय ॥ जब अभेद ताकेलहत षडविंशककी दक्ष । रहित सु पुण्यापुण्यसों होयजात तबस्व-क्ष ॥ जो प्रबुद्ध अरु बुद्धिमान जो अरु है जौन अबुद्ध । सोहम अत्र बखानिकै कह्योतुम्हें नृपशुद्ध ॥ तबलौंहै नानात्व सु जब लौं जानब नहिं षडविंश । जबजान्यो तब होतजातहै नृपएकत्व अविंश ॥ जानब जो एकत्वको सोय मोक्षहै भूप । कहत सुनोजे ज्ञानमें तत्पर रहत अनूप ॥ मोक्षतबैहीं होतजब छूटिजात अ-ज्ञान । औरउपाय न मोक्षकी हैहै भूप सुजान ॥ मोक्षमार्ग में प्रवृत्त जे क्षमावान धीमान । तिनको कहिबे योग्य है जो हम

कह्यो सुजान ॥ रत्नवती जो भूमिहै सो दीजै महिपाल । यहदीजै न अपात्रको कबहूं बिज्ञ बिशाल ॥ आदि अन्त अरु मध्यसों रहित ब्रह्मपर स्वक्ष । कह्यो तुम्हें हम डरहु मति अब कराल नृप दक्ष ॥ कह्यो ज्ञानको तत्त्व जो तुमको हम यहभूप । जनन मरन नहिं होतहै तामें पगे अनूप ॥ ताहि जानिकै देहतुम त्यागि मोहको सर्ब । ब्रह्मासों पायो हुतो मैं यहज्ञान अखर्ब ॥ कह्यो तुम्हें षडविंशहम तेहिको जाने दक्ष । होत न पुनरावृत्ति को प्रापत है जन स्वक्ष ॥ बिधिते सुन्यो बशिष्ठऋषि औ बशिष्ठ सें भूप । नारद सुन्यो प्रतक्ष यह बरसिद्धान्त अनूप । औ नारदसों हम सुन्यो कह्योतोहिं हमतात । शोचहि तजिद याहि गुणि तू मतिसों अवदात ॥ जानत जेक्षर अक्षरहि तेन रहत भय पूरि । औ नहिं जानतते सदालहत भीतिकोभूरि ॥ अबिज्ञानते मूढ़ते जन्म सहस्रन लेत । उपद्रवनको होत हैं प्रापत महत अचेत ॥ अज्ञानार्णव घोर अति तामें परिकै भूत । बहु प्रकारके लहत दुख बूड़त नित्य अकूत ॥ अज्ञानार्णवते तर्यो नाहिं रजतम तबमाहिं । याते तू आनन्दको लहिहै भूपसदाहिं ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्मेबशिष्ठकरालजनकसम्बादेसप्ताधिकशततमोऽध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ क्षरअक्षरको सर्बहमकह्योतुम्हें सिद्धान्त । जैसेपूरबहौं सुन्यो तैसे सुनुक्षितिकान्त ॥ योगीमनसह बायुको जिहि २ अँगमें स्वक्ष । राखत हैं देहान्तलौं तिहितिहि अँगके दक्ष ॥ देवनवारे लोकको ते योगीहैं जात । अब यह तुमको कहतहौं तातसुनो बिख्यात ॥ याज्ञवल्क्य अरुजनकको कहिकै बर सम्बाद । सुनो तौन एकाग्र करि मनको छोड़ि बिषाद ॥

जनकउवाच ॥ योगी करिकै योग बर किहि किहि लोकहि जात । याज्ञवल्क्य हमको कहो आपु बिज्ञहो ख्यात ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ रामगीतो ॥ मन सहित बायुहि धारिपदमें जौन छोड़त देह । सो बिष्णुवारे लोकमाहीं जातहै बुधिगेह ॥ अरु जंघमाहीं धारि

छोड़े बसुनको जोलोक। तिहिमाहिं प्रापतहोतयोगीयोगसों मति ओक ॥ अरु जानु माहीं धारि छोड़े साध्यलोकहि जात। धरि पायुमें जो तजत सो लहि मैत्रलोक बिभात ॥ अरु प्रजापतिको लहत है धरि उरूमें अवदात। तजि देहको मति गेहयोगी तेज को सरसात ॥ अरु धारि पाइर्वन माहिं छोड़े लहत आशुग लोक। बरजात सुरपति लोकको धरि नाभि में मति ओक॥बाहू नमेंहू धारि बायुहिसहितमनमहिपाल । तनुतजे सुरपति लोक माहीं जातसुखद बिशाल॥ उर माहिं धरि तनुतजे शिवके लोक को अभिराम । अरुधारि ग्रीवामाहिं उत्तमलोक लहतललाम॥ है होत बिश्वेदेव को नृप प्राप्त मुखमें धारि । अरु गन्धवह को प्राप्त नासा माहिं धारि सु टारि ॥ अरु श्रोत्रमें धरि तजेदिशि को प्राप्त योगी होत । भ्रूमाहिं धरिकै आश्विनेयनको लहै मतिपोत ॥ अरु होत अग्निहि प्राप्त लोचन माहिं धरिकै स्वक्ष। है पितृगण को प्राप्त होत ललाट में धरि दक्ष ॥ मन सहित बायुहि धारिकै योगी सु मूर्द्धा बीच । है होत प्रापत द्रुहिणगणको बर बदत विज्ञ निमींच ॥ धरि सहित मन जिमि अमंगमाहीं बायुको तजि देह। जन जात हैं जिहि लोकको ते कहे हम मतिगेह ॥ अब कहतहौं मैं तुम्हैं जे जन मरत बत्सर माहिं। ते होत प्राप्त अरिष्ट तिनको ते सुनो मम पाहिं ॥ जन लखै जौन अरुन्धतीको औ न पूरण चन्द्र। अरु दीप दक्षिण ओर देखै खण्ड प्रज्ञ नरेन्द्र ॥ अरु लखै जो नहिं ध्रुवहि जीवत तौन वत्सर एक। क्षितिकान्त सुनु सिद्धान्त करिकै कहत बुध सबिबेक ॥ अरु लखै जो नहिं आपु को पर चक्षु माहीं भूप । जन तौनहूं यकबर्ष जीवत बदत बिज्ञ अनूप ॥ छबि हीनको कैजाय महती अतिहि छबि अभिराम। अरु जाय कै छबिमान जनकी हीनछबि मतिधाम॥ अरु अल्पमति को जौन ताको जाय कै मति भूरि। अरु दीर्घमति को जौन ताको जाय

ह्वैमति दूरि ॥ अरु पूर्व प्रकृतिन रहै जाकी औरही ह्वैजाय । जो करै परिभव सुरनको अरुबिप्र को नरराय ॥ षटमास हीमें तौन प्रापत मृत्युको ह्वै जात । जो अंग देखै मध्यखाली सूरशशिको भात ॥ अरु सुरभि लागै जाहि नृप सब गन्ध ऐसी दक्ष । है सप्त निशिमें होत ताको मृत्यु आय प्रत्यक्ष ॥ अरु जासु चख अरु दृशन को जो रंगसो फिरिजाय । अरु कर्ण नासा जाय जा के बक्रह्वै नरराय ॥ ह्वैजाय संज्ञाहीन औ वररूप जाको भंग । अरुबाम चखते गिरै आकस्मात् जल सुनु स्वंग ॥ अरु मूर्द्धाते धूमनिकसै सद्यसो मरिजात । येजानि महत अरिष्ट मानव बुद्धिसों अवदात ॥ परमात्मामें आत्माको देलगाय अनूप । निशि दिवस गाफिल रहै नेकु नत्यागि सबको भूप ॥ देहान्त कोजो समय ताको रहै देखत दक्ष । परमात्मा में आत्माको लाय करिकै स्वक्ष ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेयाज्ञवल्क्यजनकसंवादेअष्टाधिकशततमोध्यायः ॥

याज्ञवल्क्यउवाच ॥ दोहा ॥ भिन्न प्रकृतिते ब्रह्महै ताहि जनावन काज । परम गुप्त यह कहतहौं सुनो तौन नरराज ॥ फिरत हुतो मैं वेद प्राप्तिकी इच्छाही में धारि । भासमान सों यजुर्वेद में लहतभयो शुकटारि ॥ बसुकला ॥ करत प्रसन्न भयोमैंभानुहि । तप करिकै बिधि सहित महानहि ॥ मोहिं इमि कह्यो चाहि भासकर । मांगु अत्र तू द्विज वांछित बर ॥ अति प्रसन्नता दुर्लभ हैं मम । भये प्रसन्न देत सब है हम ॥ तदनु नाइ करि कै मैं शीशहि । कहतभयों ऐसे अहनीशहि ॥ यजुर्वेदहम चाहत जानन । दीजै क्षिप्रहि कीजै आनन ॥ ये सुनि बैनकह्यो इमि दिनकर । यजुर्वेद देहै तोको बर ॥ बचन होय कै देवि सरस्वति । बसिहै तौ शरीर में बरमति ॥ दोहा ॥ तदनु कह्यो इमि मोहिं रबितू निज बदन पसारि । बदन पसारतमैं भई पैठति देवि सुढारि ॥ जब पैठी मम देह मेंबाणी रबिकी स्वक्ष । जरन लगो

तब नीरमें भयो पैठतोदक्ष ॥ कला ॥ मोहिं देखि रबिभे इमि बोलत। तूकाहेको ब्याकुल डोलत ॥ दाहरहैगी एक मुहूरत। शीतल तामेंह्वै हैतूरत॥ तदनु देखि मोको शीतल अति। कहत भये इमिरबि सुनु क्षितिपति ॥ यजुर्बेद ऐहैद्विज पूरण। याज्ञवल्क्य तोको अतितूरण ॥ तूबनाय हैशतपथ नामक। ब्राह्मणको सुबिप्र मति धामक॥ ह्वैहै तदनु मोक्षमें तव मति। सांख्ययोग में कीन्हे सोरति॥ जौन मिलत पदहै अति पावन। ताहि प्राप्त ह्वैहैसह चावन ॥ दोहा ॥ ऐसे कहि मोसों वचन अस्त होतभे भानु। तदनु गिराको गेहमें चिन्तन कियो सुजानु ॥ स्वर व्यंजन सों भूषिता प्रणव सहित अभिराम। कढ़ति भई मम बदनते बाणी बिमला माम॥ देवीको अरु भानुको अरपत भो मैंतास। पारायण करिकै परम सह बिधि सहित हुलास॥ बिरचतभो मैं तदनुनृप शतपथ ग्रन्थ अनूप। महत हर्षको प्राप्तह्वै सह रहस्य बरभूप ॥ चरणा दोहा ॥ अति उत्तमशत शिष्यनकोमैं भयो पढ़ावत स्वक्ष। अप्रियार्थ बैशम्पायनके शिष्यन सहित सुदक्ष॥ तदनु सुशिष्यन सहकरवायो तब सुपिताको यज्ञ। देवलमम मामाको पर्क्षीहुतो तत्रबर प्रज्ञ ॥ दोहा ॥ ताके देखत हमलई यज्ञ दक्षिणा तत्र। अरु नृपमम मामा हुतो बैशम्पायन यत्र॥ दक्षिणार्थ निज बेदकी तासोंकियो बिबाद। बेद दक्षिणा होतमैं सुनहु भूप अबिषाद॥ तबमोको तेरेपिता और मुनिन अभिराम। समुझायो इमिमति करै मातुलसों कहि आम॥ शाखा कीन्हीं पंचदश यजुर्बेद की पर्म। मैंलाहिकरिकै भानुसों करि प्रसन्न सहशर्म॥ परम कृपासों भानुकी यजुर्बेदको पाय। प्रवृत होतभो मैंसुनो प्रज्ञ जनक नरराय॥हमसुबनाई पंचदश शाखा तिनको जानि। चिन्तन करै सुब्रह्मको तदनन्तर अनुमानि॥ मनोहर॥ पूरब बिश्वाबसु गन्धर्ब। अतिही प्रज्ञावान अखर्ब॥ यहभो पूछत मोहिंप्रतक्ष। काहित ब्राह्मण कोहैस्वक्ष॥

दोहा ॥ जो बिचारहै युक्तिसों अन्वीक्षा तिहिनाम । सोप्रधान जिहिमाहिं है जनकभूप मतिधाम ॥ ताहि कहत आन्वीक्षिकी विद्याहै बरबुद्ध । सोविद्यापूछतभयो बिश्वाबसु अतिशुद्ध ॥ औ बिश्वादिक प्रश्नसो करतो भयो अनूप । ताको हमयह होकह्यो जनक बिज्ञवर भूप ॥ एक मुहूरत बैठुतू याकोकरि सुबिचार । विश्वाबसुसुनु तोहिमैं कहिहौं बुद्धि अगार॥ध्यानकरतमैं तदनु-भो देवीको सबिधान।ताते उत्तर प्रश्नको उपज्यो तुरहि सुजान॥ तौन सुनावत ताहिभो प्रतिसोंमैं अवगाहि । सोदे उतर अति अमल है बिश्वादिकको याहि ॥ बिश्वाबसु गन्धर्बको तदनु कह्योमैं भूप । अबतुम बिश्वादिकन को उत्तर सुनहु अनूप ॥ भूत सुभव्य भयंकरै बिश्व कहतहै दक्ष । भूतभव्य भयको करै तासु नाम सुनु स्वक्ष ॥ चरण दोहा ॥ भूतभव्य भयंकर जानो अरु भय जगको नाम । अब अबिश्वको सुनो रूप तुम तुम्हैं कहत हौं आम ॥ दोहा ॥ मौन अबिश्व कहावत आत्मा भिन्न बिश्वते जौन । ऐसेहीतुम श्वाश्वको जानोबर मतिभौन ॥ सुबुध कहत स्वप्रकृति को अश्व निर्गुणहि स्वक्ष । मित्र पुरुषको कहत अरु बारुण प्रकृतिहि दक्ष ॥ ज्ञानप्रकृतिको कहत अरु कहत ब्रह्मको ज्ञेय । ज्ञान प्रकृतिको नामभो जातसो मनदेय ॥ सुनो जौन जन्मादि को उपयोगी हैज्ञान । तौन प्रकृतिभो ज्ञानहैयाते नाम सुजान ॥ जौन ज्ञानसो जातहै जान्यो तासों ज्ञेय । कहत सुबुधसो पुरुषहै सुनोभूप मनदेय ॥ जासु ईश्वरको कहत अरु जीवहि अज्ञ नरेश । रहित सुभये उपाधिसों दुऔब्रह्म येदेश । ईश्वर कारण रूपहै जीव सुकारज रूप । कारण कार्य्य उपाधि जब छूटिजाय सुनुभूप ॥ निर्बिकार परब्रह्मतब येदोऊ ह्वै जात । याते तजन उपाधिको करैयत्नअवदात ॥ तथा प्रकृतिको कहत अरु पुरुषहि को सुकनाम । अतपा कहत सुब्रह्मको निर्बिकार मतिधाम ॥ तपानाम याते भयो प्रकृति लहत सन्ताप । हैकनाम

क्षिकी इमि बिचारिबो जौन । कह्यो तोहिं अवगाहिकै हमबर मेंअभौन ॥ चरणादोहा ॥ श्रवण मननमें ईश्वर वारेरहै युक्तनित-बुद्ध । सूक्षम मतिसों यह बिचारिकै बिद्याको अतिशुद्ध ॥ दोहा ॥ बेदमाहिं जाहैकह्यो बेद्य आत्मा ताहि । जानत नाहिं ते जनन औ मरणहि लहत सदाहि ॥ सांगोपांग सुबेदजे पढ़तसुनोगन्धर्व । कोजानत नाहिं बेद्यको नित्यानन्द अखर्ब ॥ वेदभारवे कहतहैं ताकेजे बेदज्ञ । याते बेद्यहि जानिबे करैयत्न बरप्रज्ञ ॥ पुरुष प्रकृति का नित्यही करतेरहैं बिचार । तासोंपुनि पुनि जन्मको लहैं नबुद्धिअगार ॥ जनन मरणको चिन्तिदुख कर्मकाण्डको त्यागि । नित्यहि जौतत्पररहै योगमाहिं जबपागि ॥ देखतहीषड बिंशको तबसो बरगन्धर्ब । कह्योतुम्हैं अबगाहिकै यहहमगुह्य अखर्व ॥ मानत षडबिंशकहिको सांख्य मार्गगतजौन । जन्म मृत्युके दुखहि गुणिपरम ज्ञानकेभौन ॥ विश्वावसुरुवाच ॥ रहित भयेते प्रकृतिसों पंचबिंश षडबिंश । होयजात यहहै कह्यो सों किमि बुध अवतंश ॥ पंचबिंश को जो कहौं याज्ञवल्क्य मुनि जीव। ईश्वरत्वताको नहींकैहैतोमतिसींव॥घटजो सोपटहोतनहिं कहैं शास्त्रकेदक्ष । इमिहि जीवनहिं होतहै ईश्वर कहत प्रत्यक्ष ॥ जीव नहीं है ईश्वरहि है जो कहु इमि आपु । कर्मकाण्ड तो व्यर्थ सब कै है बुद्धि कलापु ॥ कर्मकाण्ड सों होत है जीवहि केरअर्थ । याते तुम अवगाहिकै कहिये अत्रसमर्थ ॥ चरणादोहा ॥ जैगीषव्यादिक ऋषिनसों पूछो मैं बहुबार । पै कै है बिश्वास बचन तव सुनिकै बुद्धि अगार ॥ दोहा ॥ तुमसों अबिदित कछु नहीं जानत सब सिद्धान्त । यजुर्वेद को प्राप्त तुम भये भानुसों दान्त ॥ दान्त पूर्ण सांख्यज्ञानको जानत हौ मुनिआप । योग शास्त्रको तिमिहिं अरु जानत बुद्धिकलाप ॥ केवल घृतको मण्डते जैसे लेत निकारि । ऐसे तुम हमकोकहौ अतिबर ज्ञान बिचारि ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ जितनो जो जासों सुन्यो सो आवत

है सर्व । तोको तू गन्धर्व वर प्रज्ञावान अखर्व ॥ जोतैंपूंछो मोहिं
सों तोहि कहतहों दक्ष । मनको करि एकाग्रसुनु गंधर्वेद्रप्रत्यक्ष॥
जड़ा प्रकृतिसों पुरुषसो होत प्रकाशित पर्म । पुरुष प्रकाशित
प्रकृतिसोंहोत न सुनु सहमर्म ॥ पञ्चबिंशके बोधसों सांख्ययोग
तत्त्वज्ञ । प्रकृतिहिकहत प्रधान है हेगन्धर्व प्रतज्ञ ॥ प्रकृतिमाहिं
पंचबिंशकी धारणकीन्हींजाति । छायायाते भोप्रधानहै नामध्ये-
यसों ख्याति ॥ पंचाबिंशकी प्रकृतिमें परती छायामात्र । हैन लि
प्तजो आपुहै जानो संशयनात्र ॥ जबलौंसाक्षीभूत सुतबलौंपंच
बिंशहैनाम । साक्षीनाहिंतब षडबिंशहिनामतासमधिधाम ॥ सा-
क्षीतासोंकहतजोदेखतहै साक्षात । साक्षीभये सुजीव कहावतषड
बिंशहि अवदात ॥ सांख्यमती जन जौनअरुहैं बरयोगीजौन ।
जन्ममृत्युकी भूरिभय ताते मेधाभौन ॥ षडाबिंशहि को लखतहै
तत्परह्वैकैपर्म । निवृत धर्मके शास्त्रको गुणिकै मतिसों मर्म ॥ षड
बिंशहिको लखतजो होयजात सर्बज्ञ । जनन मरणको प्राप्तनहिं
फेरिहोतसों प्रज्ञ ॥ बिश्वावसुरुवाच ॥ नमस्कार मैं करतहौं तुमकोहै
बरदक्ष । दुर्लभ ब्रह्म बिचारयह हमको कह्योप्रत्यक्ष ॥ जैसीअब
तैसीरहो तव मतिबर सुसदाहिं । प्राप्तभयो बिश्वासको मैं सु
तुम्हारेपाहिं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ ऐसे कहिकै वचनमम करि प्रद-
क्षिणा तौन । अतिप्रसन्नह्वै स्वर्गको जातभयो मतिभौन ॥ होत
ज्ञानते मोक्षहै याते ज्ञानहिंकाज । यत्नकरे सब बासना छोड़ि
भूप शिरताज ॥ चारिहु बर्णन माहिंजो कहै ज्ञानकी बात । ताको
सुनि श्रद्धाकरै तेहि माहिं अवदात ॥ ज्ञान बार्ता माहिं जो नहीं
करत श्रद्धाहि । जनन मरणको प्राप्तसो निश्चयहोत सदाहि ॥
बरवा दोहा ॥ बिधिमुखते ब्राह्मणभये भुजते क्षत्रियभूप अखर्व ।
बैश्यनाभिते शूद्र चरणते याते ब्राह्मण सर्व ॥ दोहा ॥ लहत
महत अज्ञानते योनिजालको भूप । ज्ञानलहनको नृपकरै याते
यत्न अनूप ॥ पूछ्यो हमको जौनतुम कह्यो तुम्हैंहम तौन । यामें

तत्पर होहुतुम जनक भूप मतिभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनिकै जनक नरेशये याज्ञवल्क्यके बैन । अति प्रसन्न होतोभयो महत पायकै चैन ॥ याज्ञवल्क्य बर सुमुनिकी जनकजोरिकै पानि । करतोभयो प्रदक्षिणा धारिसुप्रीति महानि ॥ जातभये निजथानको मुनिवर बिज्ञ बिशाल । राखतभो निज हृदयमें जो मुनि कह्यो नृपाल ॥ वेदवानबर द्विजनको कोटिगऊभोदेत । औ अंजलिअंजलिरतनसादर प्रीतिसमेत॥तदनन्तर सुनुपुत्रको राज्य देयकै आप । संन्यासी कोब्रतधरत भयो सुबुद्धिकलाप ॥सांख्य शास्त्रके ज्ञानको भयो बिचारतभूप । औ संपूरण पढ़तभो योग शास्त्रमतिरूप॥आपुहिजानतभो जनकअच्युतनित्यअनन्त॥निर्बिकारआनंदमय सुनुपाण्डव क्षितिकन्त॥जन्मादिककी चिंतना छोंड़तभयो सुजान । करतप्रशंसाभे मनुज ज्ञानीतासु महान ॥ याज्ञवल्क्यसों ज्ञान यह पायो जनक नृपाल । अरुपायोहौंजनकसों हमयह सुखद बिशाल ॥ ज्ञानपोतसों जातहै यह भव सिंधु अखर्ब । तर्यो औनयज्ञादिसों कहत सुबुधहैंसर्ब ॥ तातेतूलगु ज्ञानके साधनमाहिं अनूप । भयेज्ञान कोप्रापततू श्रेष्ठहोयगोभूप॥
शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेजनकयाज्ञवल्क्यसंवादोनामनवाधिकशततमोध्यायः

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ कहीब्रह्म बिद्याहमैं तुम श्रुतियुक्तप्रधान । अब साधन सुप्रधान जो बिद्या पर्म सुजान ॥ ताकोसुनिबे काजहौं प्रश्न करत हेतात । कहौताहि अवगाहिकै मोहिं आपु बिख्यात ॥ ऐसोहैतप कौनसो अरुऐसो बरकर्म । अरुऐसोहै शास्त्रको पढ़ताहि गुणिमर्म ॥ जरा और अंतकहि नाहिं मानव प्रापत होय । कहौयोग्य कहिबे तुमहिं ज्ञान चक्षुसों जोय ॥ भीष्मउवाच ॥ अत्र कहत इतिहासहौं सोसुनुछोड़ि बिषाद । जनक भूप औ पंचाशिख को तामें सम्बाद ॥ मनोहर ॥ यती पंचशिख को भूपाल । ज्ञानवानबर जनक बिशाल ॥ यहतुम पूछ्यो हमको जौन । सोई पूछत भो मतिभौन ॥ जनकभूपके सुनि

के बैन । कहत पंचशिख भो मतिऐन ॥ मिथ्या समुझै सब संसार । जरामृत्यु सह रोग अपार ॥ मिथ्या सबै समुझिबो जौन । उत्तम साधन जानो तौन ॥ जरामृत्यु है जीते जात । याही साधन सों अवदात ॥ दोहा ॥ जरामृत्यु के जीतिबे को साधननहिंऔर । जानौतुमसिद्धान्तयह जनक भूप शिरमौर ॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेजनकपंचशिखसंवादोनामदिगधिकशततमोऽध्यायः

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ तात बिना गार्हस्थ्यके मोक्षतत्त्व कहु काहि । प्राप्तभयो हमकोकहौ तातआपु अवगाहि ॥भीष्मउवाच ॥ अत्र एकइतिहाससो तुम्हैंकहतहौंतात । सुलभानाम्नी ब्राह्मणी ज्ञानवती अवदात ॥ ताकोअरु नृपजनकको तामेंहै सम्बाद । मनकोकरि एकाग्रसुनु तजिकै सर्वबिषाद ॥ धर्मध्वजनामा जनक मैथिलपूर्व नृपाल । हुतोवेदकेमाहिं सो अतिही बिज्ञबिशाल॥ मोक्षशास्त्रके बीचअरु नीतिशास्त्रके बीच । प्रज्ञमहान हुतोपरम औबलवान निर्भीच ॥ निग्रहकै इन्द्रियनको पालतहुतोधराहि। ताकेसुनि आचरणको चाहत सुबुध सदाहि ॥ चरणाकुलक ॥ योगधर्मकी जाननवारी । सुलभा संन्यासिनी सुढारी ॥ महि में फिरत हुतीसोएका । महती ज्ञानवती साबिबेका ॥ जनकहिमोक्ष शास्त्रकेमाहीं । अतिहि प्रबीन सुनेसबपाहीं ॥ तापसदीक्षालीबे काजै । रूपधारिकै परमदराजै ॥ एकपलकमें सुलभाजाती । मिथिलामाहिं भईअतिभाती ॥ भिक्षामिसि मिथिलाधिपपासै । जातिभईकरिभूरि प्रकासै ॥ राजा तासु रूपको देखो । औसुकुमार ताहि अवरेखो ॥ कोहै यह कितते इतआई । बिमला सुंदर तासोंछाई॥ ऐसेमनमें नृपगुणतोभो । अरुअति बिस्मयको लहतो भो ॥ आदर करिकै अतिही ताको । भो बैठावत नृप मिथिलाको ॥ तदनु तासुपद धोयसुहायो । नृप तेहिको भोजन करवायो ॥ ज्ञानवान मंत्रिनकेमाहीं । बैठो जनकभूप तेहिपाहीं ॥ बैठि आयके भोजन करिकै । ज्ञानवती मतिको बिस्तरिकै ॥

नृप जगते छूटो है कीना । यह निश्चय करिबे सुप्रबीना ॥ सुलभा भई प्रेरणा करती । साध्वस धरत भई भरनरती ॥ ह्वै अनिमेष सामुहे ज्वैके । नृपके चारु चखनमें ह्वैके ॥ अपनी मतिको नृपकी मतिमें । करिप्रवेश पागि योगयुक्तिमें ॥ योगसुबंधन सेतीभूपे । सुलभा बांधातिभई अनूपै ॥ मूकजनक भूपहि कीबेको । ज्ञान परीक्षाका लीबेको ॥ योगरज्जुसो तासुमहानी । बांधेज्ञान जनक नृपज्ञानी ॥ दोहा ॥ रहितसदा अभिमानसों एक देहके माहें । दोऊजे सम्बादसुनि तिनको तू ममपाहिं ॥ चरणाकुलक ॥ जनकउवाच ॥ जनक कहत भो ऐसेताको । ज्ञानवती तनिकै मेधाको ॥ कोहैतू कितते इतआई । जैहै कहां तेजसों छाई ॥ औ आचार कहाहै तेरो । कहुतू शीघ्रप्रश्न सुनिमेरो ॥ मैंहाराजा पैहों मुक्के । हे अभिमानमें नहीयुक्कै ॥ जाननकी इच्छाहैताको । मेरेकहु संन्यासिनि मोको ॥ तूप्रतिष्ठिताहैमैं जानो । औप्रभाव तेरोअनुमानो ॥ हेतु मोक्षको ज्ञानसुढारो । अन्यनहीं है कहिबेवारो ॥ एकगुरूही है सुनुमेरे । हैं सुपराशरके कुलकेरे ॥ नाम पंचशिख हैं तिनकेरो । संशय किया दूरितिन मेरो ॥ तिनकेसांख्य योग के माहीं । सुलभ नेकहू संशय नाहीं ॥ मोक्षधर्म नीके तिनजानो । मैंयामें नहिं अधिकबखानो ॥ भ्रमतभ्रमत पृथ्वी में आये । मिथिलामाहिं ज्ञान सों छाये ॥ आषाढ़ादिक चारि महीना । रहतभये मम पास प्रबीना ॥ मोको मोक्ष तीन विधि केरी । कहतभये करि कृपाघनेरी ॥ एकसांख्य सेती तिनकूजी । विधिवत योगमार्गसो दूजी ॥ राज्यकेसु अभिमानै तजिकै । पालैप्रजा नीतिसों व्रजिकै ॥ तत्पर रहै ज्ञान के माहीं । तीजो को साधन ममपाहीं ॥ यह तिनकह्यो कृपाकरि चोखी । तिनके बुद्धि ज्ञानकी पोखी ॥ बिचलित राज्यतेन तिनकीन्हों । तिनको कह्यो ज्ञानमें चीन्हों ॥ तिनकीकही मोक्ष में सुनिकै । ताको अपने मनमें गुनिकै ॥ रहित रागसों ह्वै मैं एकै । रहतपरमपद

में सबिबेके ॥ हैसुमोक्ष की बिधिबरजानो ॥ बैराग्यहि और न अनुमानो ॥ गुरुतेज्ञानलहेजननीको। योगाभ्यासकियोसुविधी को ॥ ताते लहत सुआत्मा जानै। तातेबर बैराग्य महानै ॥ लहिवैराग्य द्वन्द्व ते न्यारो। जीवनमुक्त जातके भारो ॥ प्राप्त भयो यहि बुद्धिहि मैंहौं। ताते रहित मोहसों कैहौं॥ रहत मुक्त ह्वै करिकै सबसों। कृपापंचशिख कीन्हीं जबसों ॥ उत्तापित जे बीजन जैसे। उद्भवको पावतहेतैसे ॥ प्राप्तभये तेज्ञानसुढारो। होतनहीं फल कर्मनवारो ॥ चंदनसों दक्षिण करपाटै। अरुजो बाम करहि ममकाटै ॥ तिनदोउनको मैं सम जानो। हौं नहिं मित्र शत्रुतामानो ॥ सेवत गुणत लोष्ट्र औ हेमै। सुलभै नित्यहि रहत सक्षेमै ॥ दोहा ॥ बैठोहौं मैं राज्यपै रहितसंग सों होय। मैंभो संन्यासीन सम ज्ञानचक्षुसों जोय ॥ चरणाकुलक ॥ और मोक्षके जाननवारे। जेजनहैं जगमाहिं सुढारे ॥ थितिसु-चारि बिधिकेरोते हैं। मोक्षमार्ग माही कहतेहैं ॥ तत्परहोयज्ञान केमाहीं। करिबोजोहै कर्मसदाहीं ॥ एकाथिति यहअरुजोदूजी। ताकोतिन यहि बिधिसों कूजी ॥ तत्पररहै ज्ञानही बीचै। लागे अनत नहोय निभीचै॥ ज्ञानहि मुख्य गणै नहिं कर्मै। तीजी थिति यह जानो पर्मै ॥ मुख्यकर्म गुणिबो नहिं ज्ञानै। सो चौथी थिति बुद्ध बखानै॥ औसु पंचशिख गुरू हमारे। श्रेष्ठाज्ञानवती मतिवारे ॥ ऐसी थिति सुकही हैमोको। सोमैं अत्र कहत हौं तोको ॥ अन्तःकरण शुद्धबर कीबे। अतिही बिमल ज्ञानको लीबे ॥ कर्मकरतहै जनबिधिसेती। करिकै अपनी बुद्धिसचेती॥ प्रापतिहोय ज्ञान की तबहूं। कीजै कर्म नतजिये कबहूं॥कामा-दिकसों रहितगृही जो। है संन्यासी के समही जो ॥ कामादिक मेंतत्पर जोहै। संन्यासी सुगृहीसम सोहै ॥ येवर बैनहमारे सुनि कै। ऐसेकहै हमैंजो गुनिकै॥ कर्मपूर्ववतही अभिलाखो। क्षत्रा-दिकको क्योंहो राखो॥ तौ सुनुक्षत्रादिक हमऐसे। राखत दण्ड

त्रिदण्डी जैसे॥छोड़े ते अनुरागनहेंहैं ।होतमोक्षकोबाधकहोहैं॥ जो नेकहु अनुराग अराधै । तौसुनुहोयमोक्षको बाधै ॥ सुलभे सब आश्रमके माहीं । यामें संशय नेकहुनाहीं ॥ सुनु कमण्डला-दिकको धारे । होतमोक्ष नहिं कहत बिचारे ॥ स्वच्छमोक्षखर शरन सुनैना । त्यागखड्ग तापै करि पैना ॥ राज्यैश्वर्य्य पाशदु-खकारी । ताहिकाटि कीन्हींमैं न्यारी ॥ जैसोमैं तैसो तव आगे । सुलभाकह्यो सत्यमैंपागे॥अबसुनिबेकोबातैंतेरी ।सुलभेइच्छा भईसुमेरी ॥अतिहि सुन्दरीहै तूसुलभा ।अब्यामैंनलखी तवतु-लभा ॥ औतूयौबन सोहै छाई । ऋजुतासो तवकहीनजाई ॥औ ऐसोहैज्ञानसुढारो । बरणोजातनहींसोभारो॥ पूछतहौं मैंसुलभा ताते । कहुतूकोहै मोको स्याते ॥ ममशरीरमें धसिबुधिपागी । सुलभामोहिं दबावनलागी ॥ सोयहमैंन उचितहै कीन्हों । मेरे ज्ञाननहीं कीचीन्हों ॥ संन्यासीको योग्यनहींहै । छलकीबो हम सत्यकहीहै ॥ दोहा ॥ पैठेमेरी देहमें भयो बितिक्रम जौन । तेरे सुनुमैं कहतहौं सुलभातोको तौन ॥ चरणाकुलक ॥ दोषपराकिया नारी वारो । प्राप्तभयोहै तोकोभारो ॥ बैठीदूरि कहैजो मोको । तौसुनु अत्रकहतहौं तोको ॥ मनसों तौतूपैठी मोमें । यातेदोष सहीहै तोमें ॥ पैठीतू किहिकी पैठाई। ममहियमें सुन्दरताछाई ॥ हमक्षत्रिय तूबिप्रा बाला।ममतव संगमते अघजाला ॥ बर्णसं-करै सुक्कैहैसुनुहे । औरकहत ताहूको गुनुहे ॥ हमसुगृही संन्या-सिनितेहे । आश्रम संकरह्वैयातेहे ॥ अरुजोकहे क्षत्रियाहौहो । आई संन्यासिनि भिसिसौंहो ॥ तौसुनु हेतूधौं असगोत्रा । धौंहै सुलभा नारिसगोत्रा ॥ जोतूदारसगोत्राह्वैहै । तो सुगोत्रसंकर ह्वै जैहै ॥ औसुनुतौ भरतार बिदेशै । गयो होय यातेन कले-शै ॥ सहिनसकी मकरध्वजवारे । आईछलसों पासहमारे ॥ पर तिय होति अगम्याह्वैहै । होयधर्म संकरजे जैहै ॥ कियोयोग्य जो कारिबेनाहीं । तेयाते पूछत तवपाहीं ॥ ज्ञानकपटसों युतहै

तेरो । कीतोमें अज्ञानघनेरो ॥ पियको तियकोतियको पियको । रतिसोंलाभ सुधासों हियको॥जोअलाभ रोगीकोनारी। विषकी तहत सोदुखकारी ॥ तैं करिचुकी परीक्षामेरी। अबतू मोहिंछुवै मति येरी ॥ तूसंन्यास शास्त्रबिधि सेती। पालुहोयकै परमसचेती ॥ तूनिज कारज को इतआई । की काहू भूपाल पठाई ॥ कहिये झूठन नृपके सोंहे । औतिमिहीं द्विजके बगिचोहे ॥ याते तूकहुसत्यहि मोको । सुलभा पूछतहोंमें तोको ॥ दोहा ॥ जाति प्रकृति अरुआचरण अरुजो मनकी बात । अरुआगमकोहेतु निज तूकहु मोकोख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ सुलभाको भूपति जनक बहुतै कहे कुबैन । प्रापत भई विकारको नेकुनहीं मतिऐन ॥ चरणाकुलक ॥ सुलभासुनिभूपतिसोंबानी । कहतिभई इमिऋजुता सानी॥ सुलभोवाच ॥ मतिअरुबाणी केहैंदूषण। नवनव भूपकहत मति भूषण ॥ भिन्नसुतिन दूषण सोंजोहै । सुन्दर बाक्य कहावत सोहै ॥ सांख्यासौक्ष्म्य औरक्रम निर्णय । औ सुप्रयोजन पंचम मतिचय ॥ युक्तहोत इन पांचो सों है । बाक्य बुधन के पास सुनोहै ॥ रूपतुम्हें इनपांचहु बारे । कहती हौंसुनु भूप सुढारे ॥ शब्दोच्चारण कीन्हे पाछे । निर्णयको घेरे मतिआछे ॥ सहजहि अर्थ परेनाहिं जानो ॥ सौक्ष्म्य ताहि भूपअनुमानो ॥ गुणदोषनकी गणनाकोई । अर्थमाहिं संख्याहै सोई ॥ कहिबे योग्य पूर्वयहबानी । अरुयह पीछे योग्यसुठानी ॥ यह बिचार कीबो नृपजोहै ॥ ताहिकहत क्रम बुधबर सोहै ॥ बहुभाषण मों निश्चय करिकै। कहनो जो है मतिबिस्तरिकै ॥ निर्णय ताको प्राज्ञकहतहैं । ज्ञानमाहिं जेमतिहि सहतहैं ॥ मनमें कछूपदारथ वारी । भये कामना अतिहीभारी ॥ बहुबिधि यत्नकरै करवावै । तबहूंतासु सिद्धि नाहिंपावै ॥ ताते दुःखभये जो तजिबो । ताको फेरिन कबहूं सजिबो॥इतिनिश्चितरूपा यह ह्वापति। ताहिप्रयोजनकहत महामति ॥ और सुनोनृप काहूवारे।होतद्वेषते जेदुख

भारे॥तिनकोदूरि करनकेकाजै। करिबो जौनउपायदराजे॥ वृत्ति प्रवृतिरूपा यह जानो। याहिहु कहतप्रयोजन मानो॥ इनपांचहुसों युक्त सुढारे। बाक्य बदनते सुनोहमारे॥ दोहा ॥ उपेतार्थ भिन्नार्थ अरु न्याय वृत्तबर दक्ष। असंदिग्ध अनधिक तिमिहिंअरु श्लक्ष्मा स्वक्ष॥ ये षटगुणहैंबाकके तिन्हैं बिचारैभूप। मेधाको बिस्तारिकै बिमला परम अनूप॥ सम्पूरण वाक्यार्थ की जौन प्रगटताभूप। उपेतार्थ सो जानिये मतिबर भणतअनूप॥ भिन्नारथ की सूचना शब्द माहिं जोनाहिं। अभिन्नार्थ तिहिको कहत गुणिकै मति बुधमाहिं॥ बिशेषणनकी बाक्यके सुनो स्वच्छता जौन। न्यायवृत्त ताको सुनो जेहैं मेधाभौन॥ काढ़िबो जोहै अर्थको बोले अधिकबिनाहिं। अनधिक गुणताको कहत बुध गुणिकै मतिमाहिं॥ अष्टश्लेषादिक सुगुण तिनकी युतताजौन। ताहि श्लक्ष्मा कहतहैं सुमतिवानहैतौन॥ अक्षर धरिये वाक्यमें कबहूं नहींकठोर। नीचोच्चारित शब्दजे तेउ नत नृप शिरमौर॥ औजो अर्थपुराणसों रहित शब्दमेंजास। ताहूको नाहि राखिये सुनो भूपबुधिरास॥ दोहा ॥ औताको नराखिये जामेंहोय त्रिवर्ग बिरोध। अर्थ धर्म कामहिहै त्रिबर्ग कहत सुजौन सबोध॥ अरुकाहूको शब्दजोलगै न नीको भूप। काहूको नहिं राखिये बाक्यमाहिं मतिरूप॥ औन असंगत राखिये शब्द बाक्य हे माहिं। शुद्धछन्द व्याकरणसौं जो नहिं ताहिहु नाहिं॥ रम्भावारेनृत्य से अक्षर जेहि पद बीच। नहीं होहिं नाहि राखिये ताहिहु भूप निभीच॥ बिना हेतुपद जौन अरु जामें अध्याहार। ताहूको नहिंकीजिये बाक्य माहिं अधिकार॥ ये नव दूषण बाक्यके इनको जौन अभाव। सोईं गुणि ह्वै जात हैं सुनहु जनक नरराव॥ रामगीती ॥ मैं कामते अरु क्रोधते अरु दीनता ते भूरि॥ कादर्य्यता ते लोभताते औ त्रपासों पूरि॥ अभिमान ते कारुण्य ते नृप औ न भयते

छाय। मैंकहति कबहुं न कछू निर्भय रहतिहौं नरराय॥ कामा-
दिहैं नव बुद्धिवारे भूप दूषण पर्म। इन सबनके सुअभाव गुण
नव जानु तू गुणिमर्म॥ बरहोय सबही गुणन सेती बाक्य
युक्त अनूप। अरु होय बक्ता बिज्ञ औ श्री तासु तैसो भूप॥
जब बिज्ञ बक्ता कहे सादर सुनै श्री जन सर्ब। तब अर्थहोत
प्रकाशको है प्राप्त परम अखर्ब॥ अपमान श्रोताको सुकरिकै
कहतबक्ता जौन। हैहोत श्रोताकोन ताको बोधसुनु क्षितिरौन॥
जो छोड़ करिकै स्वार्थको जन कहत हैं परअर्थ। तिहि माहिं
शंका होति श्रोताके सुभूप समर्थ॥ हैं दोषवतयह हेतु ते सो
बाक्य निश्चय जानु। जिहिमें न शंका होब ऐसो कहे बाक्य
सुजानु॥ जो बदत शका रहित बाक्यहि जानु बक्तासोय। अव-
गाहि अविकल होयकै बरज्ञान•चखसों जोय॥ मैं अर्थवत्
अभिराम तोको बाक्य कहति अनूप। एकाग्र मनकरि श्रवण
करि तू जनक मिथिला भूप॥ तो माहिं अरु मोमाहिं है चित
अंश जोसो एक। यह हेतुतेका पूछनो है मोहिं सुनु सविवेक॥
देहादिको जो होयपूछत तो सुयेजड़सर्ब। जड़कोकहानृप पूछनो
है गुणोमर्म अखर्ब॥ जिमि धूरिमाहीं पर्‍यो जलसों मिल्यो
जान्यो जात। देहादि में तिहि भांतिही चित अंशसोंअवदात॥
दोहा॥ जानत जड़ तातेनहीं इन्द्रिय आपुहि आपु। औरन को
का जानिहैं ते सब बुद्धि कलापु॥ क्षमहैं मिली सु औरसों यह-
हू जानत नाहिं। यह सुनिकै ऐसे कहौ जो तुम मेरेपाहिं॥ होत
पदारथ ज्ञान है इन्द्रिय सेती सर्ब। तौसुनु तुमको कहतहौं
जनक सुप्रज्ञ अखर्ब॥ अपेक्षा इन्द्रिय करत सर्ब नेत्रादिक
वरभूप। बाह्यसगुण सौर्य्यादि की इच्छा करति अनूप। रूप
सुचक्षु प्रकाश ये देखनमें त्रयहेत। तिमिहिं और इन्द्रियनमें
जानो बुद्धि निकेत॥ एकादश हौसुगुण मन नानाकरत विचार।
साधु असाधु पदार्थको ह्वैकै निकट उदार॥ द्वादश हौ गुण

बुद्धि है करति सुनिश्चय तौन । सत्वनाम एक तेरहो है गुण नृप मतिभौन ॥ लघु दीरघ सामर्थके जासों जानोजात । जीव जगतके माहिं सुनु जनक भूप अवदात ॥ और अहंता ममता जोहै सुगुण चौदहो भूप । तौनहु सत्वहि बीचहै जानत प्रज्ञ अनूप ॥जोकलानको बटुरिबो पंदरहो गुणतौन । प्राणादिकको नाम है कलासुनो क्षितिरौन ॥ षोड़शहो गुण जौन है तासु अविद्यानाम । प्रकृति और नृप प्रगटता ये द्वैगुण मतिधाम ॥ जरा मृत्यु सुख दुःखअरु प्रिय अप्रिय ये द्वन्द । तौन सुगुण उनईस औ हैं सुनु जनक नरेन्द ॥ बिंशक औगुण काल है अरुहै सदसद भाव । पंच भूप बिधि शुक्रबल अष्टक ये नर-राव ॥ इन्द्रिय आदिक तीस ये गुण हैं कहत सुधीर । गुणिकै कहत समर्थ जो याको बुध रणधीर ॥ अस्ति नास्तिको कहत हैं सबद सुभाव बुधेश । कहत बासनाको सुबुधि प्रज्ञावान नरेश ॥ जौनकरावत वासना शुक्र कहतहै ताहि । जासु बासना काजातिहि यत्नकहत बलवाहि ॥ कारण प्रकृति प्रधानहै इनसब केरो ताहि ॥ किते कहत अव्यक्त है किते ब्यक्त अवगाहि ॥ ऐसी जो वह प्रकृति है ताते भई सुदेह । हमतुम यह ब्यवहार सो ताहीमें मतिगेह ॥ यातेजो तव प्रश्न यह हमको कहु तू कौन । उत्तरतासन तनुहु सों दियो जात क्षितिरौन ॥ रामगीती ॥ हो नृपति शोणित शुक्रसों उत्पन्न है सबदेह । यक रातिमाहीं मिलत शोणित शुक्रबर मतिगेह ॥ अरुपांच निशिमें होतबुद बुद सात निशिमें शक्त । तव मासमाहीं होतहै सबअंग भासों युक्त ॥ जब जन्म ताको होत प्रापत लहत तब अभिधान । फिरि उत्तरोत्तर रूप औरे होत जात सुजान ॥ हे होत प्रथम सुबाल रूप सुफेरि होत कुमारु । फिरि होत प्राप्त कुमारताते यौबनहिं अति चारु ॥ फिरि होत वृद्धाअवस्थाको प्राप्तहै भू-पाल । नहिं रहतयहि क्रमसों न पूरब अवस्था मतिजाल ॥ है

होत भेद सुरूप वारो नित्य क्षणक्षण माह । है अतिहि सूक्षम जात है आन्योनहीं नरनाह ॥ उत्पत्ति जो है अवस्था को औ सुनो जो आन्त । अतिसूक्ष्म तातेताहि जानत कोउनहिं क्षितिकान्त ॥ सम्बन्धजो निज रूपको सोतो सुनो रहतैन । है अन्य जो सम्बन्ध ताको कहै को नृप बैन ॥ तू कौनकी है प्रश्नपूछो हुतो जोयह मोहिं । यह हेतुते उत्तर न ताकोसकति हौं दै तोहिं ॥ जिमि गुणत निष्फल आतमा है आपुको तू भूप । तिमि गुणत क्योंनाहिं औरहू को प्रज्ञहोय अनूप ॥ अरु गुणत जो तू आपु को अरु अन्यको है एक । तो कौन की है कहा पूछत मोहिं इमि सबिबेक ॥ तू कौनहै अरु कौनकी यह पूछिबो हैजौन । जेछुटेहैं जनद्वंद्वसोंयह चाहिये तिनकौन ॥ जो शत्रुमें अरु मित्रमाहीं भेदसों है युक्त । संसारसो तिहि अनुज को किहिभांति कहिये मुक्त ॥ अरु रहत जौन त्रिबर्ग माहीं नित्यहो अनुरक्त । संसारसों तिहि मनुज को किमि भांति कहिये मुक्त ॥ तूमुक्तहै नहिं मुक्त ताको करतहै अभिमान । अभिमान कोनाहिं करतहैं जे मुक्तहैं लहिज्ञान ॥ हैसर्ब समता अहंता कोछोड़िबोजो भूप । हैसोय लक्षण मुक्तवारोभणत बिज्ञ अनूप ॥ नृपजौन पालत सबिधि सर्बाभूमिको बलवान । संहार करि सब अरिन केरो तेजसहित महान ॥ सो रहतहै इक नगरमें सर्बत्र नहिं नरनाह । औ नगरहूते रहतहै सो एकही गृहमाह ॥ गृह माहिंहू एक पलँगमें औपलँगहूके बीच । तिय अर्द्धमाहीं रहति अर्द्धहि आपु लहत निभीच ॥ मम राज्यमें अरुपुरीमें किहि दियोकरन प्रबेश । संन्यासिनी तब कह्यो सो इमिमोहिं जनक नरेश ॥ यहिहेतु काजे कह्योहै मैं तोहिं यह बृत्तान्त । तू याहि बिमला बुद्धिको बिस्तारि गुणि क्षितिकान्त ॥ सुनु औरहू उपभोगमें औतिमिहि भोजनमाह । आच्छादनहुमें रतरहत परतंत्रही नरनाह ॥ अरु दण्डदीबे माहिं अरुनृप कृपाकीबे माहिं ।

परतंत्रहीहै रहतराजा अत्रसंशयनाहिं ॥ हैमंत्रि आदिक बिना होतन कछू एकौकाल । है स्वबशतासों कहा हेनरराजको नरराज ॥ निज अंगलों जे रहत हैं जन सदा अपने पाहिं । महिपालजो सो तिनहुं सोंहै डरत रहत सदाहिं ॥ सुख अल्प जाके बीच है अरु दुःखपरम बिलन्द । है राज्य ऐसोहोत ताको प्राप्त होय नरेन्द ॥ नहिं कीजिये अभिमान नितही शान्ति रहिये धारि । जो धरत शान्ति न देततिनको सुखहि दुखसों टारि ॥ रत रहत क्षत्रिय धर्म माहीं जो नरेश नरेश । सो लेत दशवों भाग देत सुप्रजाकोन कलेश ॥ कछुन्यून क्षत्रिय धर्ममें सोभाग पंचम लेत । है कहा धर्मसु राज्य राजाबिना बुद्धि निकेत ॥ अरु मोक्ष सुखसो कहाहै बिन धर्मपर्म अनूप । है भूमि सर्बा दक्षिणा जिहिमाहिं ऐसो भूप ॥ जोअश्वमख नाहिं करत ताको कोउधरणिमाहिं । यह हिये गुणिबिन भूमि राजारहैंगे हम नाहिं ॥ है परम धर्मन और नृपको अश्वमेधसमान । जे अश्वमेधहि करत भुव देतेइधन्यसुजान ॥ मैं राज्यमाहीं और दूषण सकति देय हजार । यहिभांतिही अवगाहिके सुनु जनकभूप उदार ॥ दोहा ॥ चारि संकरनको भयो तोको प्रापत पाप । यहमोको पूरब कह्यो होते बुद्धि कलाप ॥ मैंजो अपनी देहहै राखति तासन साथ । संग राखिहौं औरको कैसेहे नरनाथ ॥ ऐसी जोमैं ताहि इमि कहिबो उचित नबैन।सुनीमोक्षते पंचशिख येसबनृप मति ऐन॥ मुक्त संगसो जनकतू ज्ञानीपरम उतंग । ताको फिरि कैसो भयो क्षत्रादिकको संग ॥ जौनपंचाशिख सोसुन्यो ब्यर्थ भयोतवसर्ब । कैझूठहितू कहतहै सुन्योन ज्ञानअखर्ब ॥ तेमें मम तव अबहिं यह छूटहिं होतो सौन । तोमैं कीन्हों सत्वसों मैं प्रबेश मतिभौन ॥ओजोतू ज्ञानी परम तजे देह अभिमान । तो प्रबेश कीन्हें कहा तोमैं भयो सुजान ॥ और सुनो जो लेतहै जन्म महत कुल माहिं । तौन सभामें सदअसद देत वचन कहिनाहिं ॥ जैसे

कमल दलस्थ जल छूवत दलको नाहिं । तिमिहि तोहिं छूवति नमैं करिप्रबेश तो माहिं ॥ और सुनोतो पंचशिख दयोन तोको ज्ञान । जानिपस्यो जो परश मम तोको भूप सुठान ॥ तून मुक्त हे मोक्षकी जानतहै कहिबात । तूगोदोऊओरसों ज्ञानबिना अवदात ॥ तुम्हें लोक व्यवहारसों कहतीहौं निजनाम । बिप्रावैश्या हौंनमैं औनहिं शूद्राबाम॥ हौंभूपति तवसबरणा सुलभाहै मम नाम । कुलमें नृपति प्रधानके उत्पन्ना मतिधाम ॥ ममसुपूर्बजी मखनमें भेहे चयनउतंग । चक्रद्वारगिरि द्रोणगिरि औ गिरिवर शतशृंग॥गरुड़ादिकको मखनको बिरचित जोआकार । इष्टका दिसोनामहै ताको चैनसुढार ॥ ऐसेकुलमें मैंभई उत्पन्नाहौं भूप। ममसम नहिं भर्तामिल्यो भूमेंकहुं न अनूप ॥ धारणमें यहहेतुते करति भई संन्यास । विना बिचारेमैं नहीं आईहौं तवपास ॥ मैं तव मति सुनिमोक्षमें ताहि जानिबे काज । निष्कपटा तव निकटहौं आई मिथिलाराज ॥ मैं स्वपक्ष परपक्षको कहति नहींहौं बात । नहिं स्वपक्ष परपक्षको जानतमुक्त ससात ॥ बसताभिक्षु यक राति जिमि शून्यसदन में भूप । तिमिहिं बसी यकराति मैं तवतनु माहिं अनूप ॥ उकछा ॥ अबमैं प्रातःकाल। जैहौं हेभूपाल ॥ भीष्मउवाच ॥ सुलभाके सुनिबैन । भूरिअर्थ के ऐन ॥ बोलो कछून फेरि । रह्यो तासु मुखहेरि ॥ यातेभो सिद्धान्त । यह पाण्डव क्षितिकान्त ॥ दुर्लभ गृहमें पर्म । हेसु मोक्षको शर्म ॥ हेतु मुक्तिको भूप । संन्यासही अनूप ॥

शांतिपर्वमोक्षधर्मेसुलभाजनकसंबादोनामएकादशाधिकशततमोध्यायः॥

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ कहि करिके संन्यासकी श्रेष्ठताहि अभिराम । सुलभाके इतिहासमें भीषम मेधा धाम ॥ तासु दिखावत धर्म अब शुकसु चरित कहि स्वक्ष । जनमेजय क्षितिपाल सुनु पाण्डवको परतक्ष ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ पुत्र व्यासको प्रज्ञ शुक किहि प्रकार सों तात । प्राप्तभयो निर्वेदको कहो आपु

बिख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणा दोहा ॥ औ अव्यक्त व्यक्तके तत्वहि कहिये आपु अमन्द । सगुणरूप नारायण केरो कहिये सोउ नरेन्द ॥ अपनी शाखा भये पढ़ावत शुकको सब मुनि ब्यास । औ अन्यहुको भये पढ़ावत कछुकछु सहित हुलास ॥ दोहा ॥ तदनु भये ऐसे कहत ताहि ब्यासमुनि बैन । हिमआतप सहु तात अरु निति करु धर्म सचैन ॥ क्षुधा पिपासा बायु अरु औ जे इन्द्रिय सर्ब । तिन सबकोतू जीति बर गहिके ज्ञान अखर्ब ॥ सत्य सुधाई अरु सुतप कोतू पालु सदाहिं । अनसूया अरु अहिंसा नित्य राखु मनमाहिं ॥ देवन सों अरु अतिथि सों अन्न रहोजो शेश । ताते रक्षा प्राणकी करुतू तात हमेश ॥ नीर फेणवत देहहै जीव बिहंग समान । ताते स्वारथ कार्य्य में तूलगु होय सुजान ॥ कामादिक सब शत्रु तव लखते रहत सदाहिं । करि हैं तोहिं खराब जो परिहै गफलत माहिं ॥ क्षीण होति निति जाति है आयुप याते तात । गुरूपास क्यों जात नाहिं ज्ञानकाज अवदात ॥ अज्ञ चहत इहिलोकही मांसबढ़ावन काज । परलोकारथ करतहै कारजकछुन दराज ॥ काव्य ॥ सुनहु तात नितिकरत धर्मको निन्दा जेजन । सर्ब कुमारग में चलत अन्धलों नित्यहि तेजन ॥ तिनके पीछे चलत तौनहूं लहत महादुख । जे सुधर्ममें प्रवृतहोत तिनपास गयेसुख ॥ दोहा ॥ याते जे तत्पर रहत जित सुधर्मके माहिं । जो है कीबे योग्य सो जाय पूछ तिनपाहिं ॥ जो न बतावै तोहिं कछु ताको हिये बिचारि । रहु ताहीके बीच नित तत्पर तात निहारि ॥ धर्म निशेनिहि प्राप्तके कछुकछु पढुतू तात । शुश्रूषाकरि गुरूकी बुद्धिपाय अवदात ॥ अन्धकार संसार यह महत दुःखको धाम । यामेंते सकिहै न कढ़ि ज्ञानदीप बिनमाम ॥ कामादिक के काजनहिं ब्राह्मणकी यहदेह । याते करु तू ज्ञानकेकाज यत्न मस्नेह ॥ अरु जो तेरेहृदयमें ज्ञानहोय अवदात । तौ आत्मा

को जानि करु धर्ममाहिं मन तात ॥ अज्ञानी है जौनजन तिन को यमके दूत । लेयजात यमपासहै देतेदुःख अकूत ॥ तस्करादि जाको नहीं लेयसके अरु भूप । मरेहुपीछे संगको जो नहिं तजे अनूप ॥ ऐसो जो धन परमहै ताको लहिबे काज । मेरी आज्ञामानिकै करि तू यत्न दराज ॥ कर्त्तासों नहिंरहतहै भिन्न कबहुं नहिं कर्म । छायालों सँग रहतहै नित्य कहत गुणिमर्म ॥ बीतत भये पचीस शुक तबऊमरिमें बर्ष। अबहूं तोलगु धर्ममें संचलमें उत्कर्ष ॥ डूबतिहै नहिं धर्ममें जासु बुद्धि अवदात । ताहीको बुध कहतहैं पुण्यवान अवदात ॥ दीन्हो जौन उदार है ता धनसों काहोत । अरु बल फलका जो नहीं जीते अरि के गोत ॥ औ काहे तिहि शास्त्रसो जिहिसों करै न धर्म । आत्मासो का जो नहींभयो जितेन्द्रिय पर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ द्वैपायन के बचनये सुनिकै शुक मतिधाम । छोड़ि पिताको जात भो लहे ज्ञान अभिराम ॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेव्यासशुकसम्बादेद्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२

युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ धर्मात्मा सुतव्यासको कैसेभो शुकतात । बड़ी सिद्धिको प्राप्तभो औ कैसे कहुख्यात ॥ कहां कियो उत्पन्न अरु शुकको व्यास बुधेश ॥ शुककी जननी औजनिहि जानतहम न नरेश ॥ बाल्य अवस्थामाहिं किमि शुककी प्रज्ञा पर्म । अतिही सूक्षम ज्ञानमें होति भई कहुमर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ वृद्धापनसों होत नाहिं औ न बित्तसोंज्ञान । केवल बिमलाबुद्धि सों प्रापत होत महान ॥ होति सु बिमला बुद्धिहै तपसों परम अनूप । निग्रहते इन्द्रियनके होत स्वच्छ तप भूप ॥ बाजपेय शत औ सहस अश्वमेध अभिराम । एक कलासम योगकी होत नहीं बलधाम ॥ मैं तुमको शुकदेवको कहतजन्मवृत्तान्त । औ जो शुकश्रेष्ठा लही गति सोऊ क्षितिकान्त ॥ काव्य ॥ च्युत कनेरिकी व्यूढ़बीसों बरभरी प्रभा अति । मेरुशृङ्गपै करतहुते

क्रीड़ा गौरीपति ॥ सबिधि तपस्या करनलगे तहँ व्याससुचा-
वन । पंचभूत सम धीर्य्यवान अतिमोद बढ़ावन ॥ दोहा ॥ ऐसो
बर सुत लहनको शिवसों अति अभिराम । मनको करिएका-
ग्रतामें सुनुनृप बलधाम ॥ आराधन शिवको करत रहत भये
शतबर्ष । तत्र सुबायु अहार कै सुमुनि व्यास उत्कर्ष ॥ नेकु न
श्रीमुनि व्यासको हीन होतभो प्रान । वासी तीनोंलोकके अ-
चरज गुण्यो महान ॥ बैश्वानरकी शिखासी जटा व्यासकी
चण्ड । भासतिभई सुतत्रनृप तेजसभरी अखण्ड ॥ कहीमार
कण्डेयही हमैं तात बहुबात । तामें यक यहहूकहीहुती परम
अवदात ॥ लहि तपके परभावसों अबउव्यासकी पर्म । वैसी
ये तेजो भई भासति जटा सुधर्म ॥ तपसेती मुनिव्यासके कै
प्रसन्न अति सर्ब । इच्छाकरि बरदेनकी बोलतभये अखर्ब ॥
जैसेधीरजमानहैं पंचभूत अतिशुद्ध । तैसोताको होयगो प्रापत
पुत्रप्रबुद्ध ॥ तिहुंलोकनमें छायहै ताको तेज महान । औ बर
यशको प्रापतव ह्वैहै पुत्र सुजान ॥ भीष्मउवाच ॥ पशुपतिसों बर
पायके परम व्यासमुनि प्रज्ञ । शिखि काजे अरणी मथन लगे
भूप धर्मज्ञ ॥ आवति ताहीसमयमें भई घृताची तत्र । भूषण
पेन्हि अनूप अति हुते व्यासमुनि यत्र ॥ देखि घृताचिहि काम
सोंमोहितभे मुनिव्यास । शुकीरूपको धारितब आवति भीतिन
पास ॥ शुकी सुरूपा घृताचिहि देखि व्यासको काम । जैसोको
तैसो रह्यो न्यूनभोन बुधिधाम ॥ रोकतभे बहुभांतिसों कन्दर्पहि
श्रीव्यास । पै न सक्यो रुकि करतभो औरहु महत प्रकास ॥
अरणीही में गिरत भो व्यास सु मुनि को बीर्य । रहे मथत
ग्लानिन लही नेकहु भूप सधीर्य ॥ मथतभयेते शुक्र को होत
भयो शुक तत्र । अति तेजोमय भानुसम गति जाकी सर्ब-
त्र ॥ व्यासहि को सो होतभो ताको रूपअनूप । गङ्गा ताको
आयकै भई न्हवाती भूप ॥ हरिगीती ॥ नृपचर्म कृष्ण कुरंग को

अरु दण्ड बर गिरतो भयो । शुकदेवके तट व्योमते तहँ अ-
तिहि तेजससों छयो ॥ सब अप्सरा नाचन लगीं गन्धर्बबर
गावनलगे । शुकदेवजूको देखिके आनन्दसों अतिही पगे ॥
सब इन्द्र आदिक लोकपालक तत्रनृप आवत भये। अरु देव-
ऋषि अरुदेव अरुबर ब्रह्मऋषि रतिसों रये॥ बरदिव्य पुष्पन
की सुवृष्टी तत्र मारुत करतभो । सब चराचरको वृन्दभूरि
प्रसन्नताको धरतभो॥ सुर दुन्दुभी बाजनलगी अरुगौरि सह
शिव प्रीतिसों । जन्मतहि शुकको देतभे उपनयन अतिबर
रीतिसों ॥ तिहिको कमण्डलु देतभो अतिशुभ अखण्डल
प्रेमसों । भेहंस सारस करततासु प्रदक्षिणा अतिक्षेमसों ॥ शुक
रहत तत्रहि भयो अतिबर ब्रह्मचारीहायकै । भेआपुहीसोंवेद
ताको प्राप्त अति शुभ जोयकै ॥ तउ वृहस्पतिको गुरू कीन्हों
चिन्तिकै शुभ धर्मको । सब वेदपढ़ि औशास्त्र सबपढ़ि धारिकै
बिधि पर्मको ॥ गुरु दक्षिणादै गुरूसोंकरजोरि आज्ञामांगिकै।
तपउग्रको आरम्भ करतोभयो विधिमें पागिकै ॥ शुकदेवतन
को ऋषिनको भो पूज्य बाल्यहिमें महा। बरज्ञानसों औतपस्या
सों अधिकअत्रनहैंकहा ॥ दोहा ॥ रततको मनरहतभो मोक्षहि
में अवदात। त्रिबर्गमें कबहूं नहीं लगतभयो सुनुतात ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकोत्पत्तिर्नामत्रयोदशाधिकशततमोध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ चरणादोहा ॥ लेबेको उपदेश मोक्षको जाय पिता
को पास । खरोहोयकै हाथजोरि इमिकहतभयो सहुलास॥परम
मोक्षके धर्ममाहिंतुम अतिहि कुशलहौ तात । शान्तिलहैं सो
मम जासों तुमऐसो कहिये ख्यात ॥ तोमर ॥ सुनि पुत्रके शुभ
बैन । लहिमोदको मतिऐन ॥ कहते भये इमिताहि । पढ़मोक्ष
शास्त्रहि चाहि ॥ दोहा ॥ आज्ञालहिके व्यासकी श्रीशुकदेव सु-
जात । योगशास्त्र औसांख्यको पढ़तभयो सविधान ॥ जबजा-
न्यो श्रीव्यासमुनिपुत्रभयोममपर्म । मोक्षधर्मविदकहततब ऐसे

भये सशर्म ॥ मिथिलाधिप नृपजनक के पास जाहुतू तात ।
सर्व मोक्षको अर्थसो कहिहै तोको ख्यात ॥ काव्य ॥ पाय पिता
की आज्ञाको शुकदेव प्रज्ञबर । गमन करतभो मिथिलाको मुद
लहि मेधाधर ॥ मोक्षधर्म की पूछनको बिधि अति सुखदायक ।
चलत समय मैंकह्यो शुकहि इमिमुनि महिनायक ॥ रामगीती ॥
ऋजु रीतिसों तू जाइयो हेतात मारग माहिं । आकाश ह्वैमति
जाइयो रहियोन काहू पाहिं ॥ अरु जायके मिथिलाधिपति तट
कीजियो मतिगर्ब । संदेह तेरोदूरि करिहैसर्ब जनक अखर्ब ॥
है धर्ममाहिं प्रबीण नृप औ मोक्षशास्त्रहु बीच । यजमान औहै
सो हमारो नीति निपुण निभीच ॥ नृपजनक जोई कहै सोई की-
जियो मति और । येबचन सुनिकै पिताके शुक चलतभो सह
गौर ॥ सामर्थ्य ताकी जायबेकी ब्योममें ह्वै भूप । सहसिन्धु भूके
पारसों पदसो चल्यो ऋजुरूप ॥ बर इलावृत शुभखण्डमाहीं
मेरुगिरिहै माम । शुक उतरि तातै तहां ह्वैके परम मेधाधाम ॥
हरिबर्ष नामा खण्ड माहीं भयो आवत दक्ष । फिरि आवतो
किम्पुरुषनामा खण्डमें भो स्वक्ष ॥ फिरि भरतको जोखण्ड
यह ह्वै प्राप्त ताकेबीच । बहुदेश देखन लगोसो शुकपरम प्रज्ञ.
निभीच ॥ नृप प्रथम चीनहिं लखतभो पुनिहूण देशहि तौन ।
पुनि लखत आर्य्यावर्त कोभो महामेधा भौन ॥ बहु लखत पत्तन
रत्न औ बहुभरेकान्ति अनूप । पैजानि तिनको तुच्छ तिनमें
मन न लावत भूप ॥ जिमि बिहँग बिहमें संगसों तिमि रहित
श्रीशुक पर्म । भोजनक रक्षित देशमाहीं आय प्राप्त सशर्म ॥
तिहि देशबारी लखतशोभा स्वच्छ मिथिलापास । भो बाटिकामें
आवतो नृपभरो परमप्रकास ॥ नरनारि तामें लखतभो औ बहुत
हयशुण्डाल । मनहे न लखते लगत तासन चित्तनेकु नृपाल ॥
ह्वै प्राप्तशुक पुरद्वारमाहीं भयो करत प्रबेश । कहि द्वारपालक
तिन्हें रोके उग्रबैन अशेश ॥ सुनिबैन तिनके क्रोधनेकुन कियो

शुकबर प्रज्ञ । भो रह्यो अतिबर ज्ञानगाढ़ो गहेसुनु धर्मज्ञ ॥ अतिमार्ग श्रमसों क्षुधासों औ प्याससों न मलीन । शुकभयो नेकहु रहीजैसी प्रभातैसी पीन ॥ जहँद्वारपालन रोककीन्हों खरेतहँ बिनग्लानि । बहु बारलौं अतिघाम माहीं भरेकांति महानि ॥ तिन सबनमें यकदेखि शुकको कहि सुकरुणा भूरि । करिदिये डयोढ़ी दूसरीपै पूजि ऋजुता पूरि ॥ सोतहांहूं बरमोक्षही को रह्यो करत बिचार । तहँभूपको मंत्रीसु आयो एकबुद्धि अगार ॥ नृपसुनो घटिका द्वैकमें शुकदेव को तिहिपर्म । करवायकै सुप्रबेश नृपके सौध माहिं सुधर्म ॥ दोहा ॥ आसनपै बैठायकै निंकरि गयोपुनि आप । जनक भूपके सदनते पाण्डव बुद्धि कलाप ॥ रामगीती ॥ पञ्चास आईं बामतहँ अभिराम छबिकी धाम । कटिछाम जिनकी मामकच अतिलोल नैन ललाम ॥बरकनक के अति वनक के पहिने सुभूषण स्वक्ष । तिनकी सुकरतो जनक आज्ञा जनककी तेदक्ष ॥ रतिमाहिं रतिसम अतिहि कुशला करे रतिमयनैन । तिनके सुकेश महान के सम शीसुकेशी हैन ॥ तनमें लगाय सुबास पहिनै बास अरुण अनूप । मुसकाय काय भुकाय चाहे भावकरि बहुभूप ॥ तिनधोय करिके पायँतिनके चाव सहित महान । शुभ चन्दनादि लगाय के पहिराय माल सुठान ॥ अति मधुर बाणी कूजि तिनकोपूजि सरति अखर्ब । करवावती तेभईं भोजन भावती अति सर्ब ॥ महिहाथ तिनके साथह्वैकै तदनु बाग अनूप । दिखवावती ते भईं सबकछु गावतो सुनुभूप ॥ अतिभईं लोल कलोल करती डोलि डोलि नगीच । शुकदेवजूको जानिबेको धीर्य्यभूप निभीच ॥ लगिरहीं सेवा माहिं औ पगिरहीं हांसीमाहिं । धर्मज्ञ सुनुशुक प्रज्ञ तिनसों भोबिकारित नाहिं ॥ तिनछयो छबिसो दयो शुकको तत्रपलँग बिछाय । करि साबिधि संध्याभयो तापै पौढ़तो शुकआय ॥ मनजास ब्रह्म बिचारहीमें रहोलगि भूपाल ।

नहिं भाव मनको और भो तियभाव चाहि बिशाल ॥ करिध्यान पूरब रैनिमेंअरु मध्यमें करिशैन । फिरि उठत मुनिबर भयो श्रीशुकदेव प्रज्ञाऐन ॥ करि प्रातकृत सबभये बैठत नारिहू उ-ठिसर्ब । जिमिकरतिहीं तिमि कौतुक करन फेरि अखर्ब ॥ दोहा ॥ ऐसे परनारीनकी लीलामाहिं अनूप । भयो बितावत दिवस निशि श्रीशुक मुनिबर भूप ॥

शांतिपर्वमोक्षधर्मेशुकस्यजनकपुरप्रवेशोनामचतुर्दशाधिकशततमोध्याय ॥

भीष्मउबाच ॥ दोहा ॥ तदनन्तर श्रीजनक ऋषि मंत्रिन सह मतिधाम । सामग्री शिरपै लिये पूजाकीअभिराम ॥ आगेकरि रनिवाससब आसनपरमअनूप । चारुरतन अरुकान्तिमयबहु बिधिके बरभूप ॥ लीबेको गुरुपुत्रको आगेभो नृपजात।अपने मनमें जानिकै ज्ञानीबर अवदात ॥ रत्नजटित आसनबिमललै सुपुरोहित पर्म । जनकभूपके पाणिमें देतभयो सहशर्म॥शुकको बैठनकाजनृप आसनसो भोदेत । अर्घ्यपाद्यदेकै करीपूजा बुद्धि निकेत ॥ देतभये सुरभी जनक शुद्धांगा अभिराम । पूछत भो शुक कुशललहि पूजाको मतिधाम ॥ आज्ञाबैठनको दईतदनु नृपहि शुक स्वक्ष । लहिआज्ञा बैठतभयो जनक भूमिपैदक्ष ॥ तदनु पूछिकै कुशल नृप बोलि सुकोमलबैन । फिरि आगमको हेतुभो पूछत प्रज्ञा ऐन ॥ शुकउबाच ॥ जयकरी ॥ मिथिलामें हैमम यजमान । जनक भूप बर मेधावान ॥ मोक्ष धर्ममें कोबिदपर्म । है अतिही निति रहत सशर्म ॥ प्रवृति निवृतिमें जो संदेह । दूरिकरैगो सब मति गेह ॥ यहस्वपिताकी आज्ञापाय । आयो हौं तवतट नरराय ॥ अत्रतुम्हें हम पूछैं जौन । कहिये आपु यथोचित तौन ॥ ब्राह्मण कहाकरै मतिरूप । सो अबकहौ हमैं तुम भूप ॥ औ सुमोक्ष किमि लहत सुजान । कीन्हें तपकीपाये ज्ञान ॥ जनकउवाच ॥ ब्राह्मणको सु प्रथम सुनुकाज । मुखते मेरे प्रज्ञदराज ॥ प्राप्तहोय उपनयनहिंबेद । साबिधिपढ़ै करिमनहि

अखेद ॥ तदनु दक्षिणा गुरुकोदेय। नरम बचन कहि आज्ञा लेय ॥ निजगृह माहिं आय सबिधान। करै समावर्तन मति-मान ॥ ब्रह्मचर्य्यको तजिबो जौन। परम समावर्तन है तौन ॥ तदनु गृही ह्वैके अभिराम। पुत्र पौत्रनके लखि आम ॥ पालै वानप्रस्थको धर्म। तजि प्रमादता होय सशर्म ॥ ह्वै संन्यासी ब्रह्म बिचार। करै फेरि सुनु बुद्धिअगार ॥ श्रीशुकउवाच ॥ हियके माहिं ज्ञान बिज्ञान। भये परम उत्पन्न सुजान ॥ जन्नतीनो आ-श्रमके बीच। रहै अवश्यहि कहां निभीच ॥ हमको कहो अत्र यह भूप। तुमहो ज्ञानी परमअनूप ॥ जनकउवाच ॥ बिना ज्ञान बिज्ञानमहान। मोक्ष प्राप्तनहिंहोत सुजान ॥ दोहा ॥ होतज्ञान बिज्ञानहै गुरु सम्बन्धबिना न। गुरुकीसेवा मुख्यहै यातेतात सुजान ॥ मैं आत्मा यह शब्दको अर्थ जानिबो ज्ञान। आत्मा को अनुभव परम तासुनाम बिज्ञान ॥ पहिलेही तत्परभये सं-न्यासाश्रम बीच। रहि है लोकन औ करम शुक सुनुपरम नि भीच ॥ जीवनमुक्त जितेभये पूरब ज्ञानीपर्म। सब आश्रमको तिनग्रहण कीन्हों हुतो सशर्म ॥ यहिक्रमसों बहुयोनि में तजे शुभाशुभ कर्म। होतमोक्षको प्राप्तहै ज्ञानी स्वच्छसशर्म ॥ की-न्हें जे बहु जन्ममें इन्द्रियसबही शुद्ध। मुक्तहोत तिनसोंपहिले ही आश्रममें वरबुद्ध ॥ आश्रममें पहिलेहि जो होयजाय जन मुक्त। अपराश्रममें हूजिये तौ काहेकोयुक्त ॥ भूतनमें आत्मा लखै अरु आत्मामें भूत। होत नहींसो लिप्तहै कहु जग बीच अकूत ॥ परमात्माको होत है प्राप्त छोड़ि के देह। गाथा अत्र ययातिकी कही सुनो मति गेह ॥ मोक्ष शास्त्रमें बिज्ञते धारत गाथा तौन। आत्माही में ज्योति है अन्यत्र न मतिभौन ॥ सब भूतनके बीचमें सोहै ज्योति समान। जानत है जिन जनन को प्राप्त भयो है ज्ञान ॥ जब सब भूतनमें करै नेकु नहीं दुर्भाव। तब आत्माको होतहै प्रापत जन बुधराव ॥ राखै जब समभाव

को सब भूतनके बीच । प्राप्त होत है ब्रह्मको तब जन होय निभीच ॥ जब निन्दा स्तुतिहै गुणै सम अरु काञ्चन लोह । लहि शत्रुहि कोपन करै औ न मित्र लखि छोह ॥ शीतोष्णहि सुख दुखहि अरु अर्थ अनर्थहि सर्व । जानै सम तब ब्रह्मको प्रापतहोत अखर्ब ॥ येसब्र तोमें लखतहौं व्यासपुत्र अवदात । और जानबे योग्यसो जानत तू हेतात ॥ आयो जब मम देश में तब मैं जान्यो तोहिं । तव सुपिताकी कृपाते ज्ञान भयो यह मोहिं ॥ तव गति है शुक अधिक अरु अधिकहि है विज्ञान । औ अधिकहि सामर्थ्य पै जानत तू न सुजान ॥ कैधों तू शुक बाल्यते कैसंशय ते तात । जानत नहिं बिज्ञानजो उतपन सो अवदात ॥ तट बैठे मोसेनके संशयसों ह्वै दूरि । शुद्ध ब्रह्मको प्राप्त तू ह्वैहै सुखसों पूरि ॥ तव हियमें उत्पन्नभो अति निर्मल बिज्ञान । थिर बुद्धी तेरी भई तजे रुटादि महान ॥ येउद्योगन करत है याते प्रापत भोन । ब्रह्महि जो उद्योग नहिं करत लहत है सोन ॥ सुख दुःखहि सम तू गुणत नृत्य गीतमें राग । होत नतोको औनकहुं भयहि लहतबड़भाग ॥ शत्रु मित्रताको नही राखत काहू माहिं । कनक लोहको सम गुणत देखि आपने पाहिं ॥ ऐसो देखत तोहिं हम और मनीषी जौन ॥ देखत तेऊ हैं सबै परम ज्ञानको भौन ॥ बिप्रहि कीबे योगजो सो तू करत सदैव । औ मोक्षहि में रत रहत नित्य और कहुनैव ॥ जोकछु पूछनयोग्यहैसोतोमेंहैसर्ब । पूछोचाहतऔरको प्रज्ञावानअखर्ब ॥

शान्तिपर्वमोक्षधर्म्मेशुकजनकसम्बादेपञ्चदशाधिकशततमोध्यायः ११५॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ भूप जनकके बचनये सुनि शुक प्रज्ञाबिशाल । उत्तर दिशि हिमवानको चलतोभयो नृपाल ॥ नारद तौनहिसमयमें देखनकाज अनूप । गिरि हिमवानहि आवते भये ज्ञानमय भूप ॥ राजतिहैं तहँ अप्सरा अरु किन्नर गन्धर्ब । बोलतहैं जहँमोर औ कोकिल समुद अखर्ब ॥ और बहुत बहु

रङ्ककेवर बिहँगनके जूह । बोलि रहेहैं डोलिकै धरैं सुमोद समूह ॥ पक्षिराजहू रहतहैं नित्यहि जिहि गिरि बीच । ऋषिगण सह देवत जहां आवत नित्य निभीच ॥ बिष्णु जहां तपहो कियो महतपुत्रके अर्थ । बाल्यअवस्था माहिंही तहांस्कंद समर्थ ॥ महाति शक्ति फेकीहुती तौन गड़ी लखिबैन । सेनानी कहतो भयो ऐसे बर बल ऐन ॥ सोई याहि हलायहै औ उपारिहैसोय । मोसमबलमें होयगो बिप्रभक्त बरकोय ॥ वासीतीनोंलोकके सेनानीकेवैन । सुनिये पीड़ितहोतभे अतिही नृपबलऐन ॥ सबको पीड़ित देखिकै दीन्हीं बिष्णुहलाय । ताकेहले बसुन्धरा कँपतिभई नरराय ॥ चरणा दोहा ॥ याहि उपारे सेनानी को ह्वैजैहै अपमान । यह बिचारिकै नहींउपारी शक्तिहि श्रीभगवान ॥ कहत भये प्रह्लादको हरिहमिशक्तिहलाय । अतिहि कियो स्कंदते पुरुषारथ दृढ़काय ॥ नहिं स्कंद पुरुषार्थ सम कोऊ करिहै और । सहिनसक्यो प्रहलादये बैन उग्र तिहिठौर ॥ शक्तिहि लग्यो उखारिबे तौन हलीहूनाहिं । महत नाद करिकै गिरो मूर्च्छित ह्वै भूमाहिं ॥ तासों उत्तर दिशाको तपहै करत महेश । अग्नि प्रकाश जहांकरत चारों ओरहमेश ॥ दश योजन बिस्तरित सो आदित्याचल नाम । जाय बसत तामें नहीं कोऊ अतिही माम ॥ औरपूर्बदिशि ब्यासमुनि हुते पढ़ावत वेद । पैलहि बैशम्पायनहि औ जैमिनहि अखेद ॥ चौथे तिनहिं सुमन्त को तिहि स्थानको स्वक्ष । देखत भो आकाशते मुनि शुकदेव प्रतक्ष ॥ औब्यासहु लखते भये शुकहि ब्योमके बीच । गुणसों छूटे बाणसम आवत उग्र निभीच ॥ आय पिताके पायँशुक धरतो भयो सप्रीति । पैलादिक चारिहुनसों मिलतो भयोसरीति ॥ तदनु जनकसम्बादसो कहतो भयो अनूप । क्रमसों सबमुनि ब्यासको शुकमुनि बर बरभूप ॥ सुत सहाशिष्यन को सुमुनि ब्यासपढ़ावत तत्र । रहतेहैं रबिउग्र सम गति जिनकी सर्बत्र ॥ पैलादिक सब शिष्यते

एकसमयके माहिं । प्रार्थना करतेभये आय गुरूके पाहिं ॥ शिष्या-
ऊचु ॥ चरणाकुलक ॥ आपुबढ़ायो तेजहमारो । महततिमिहिं यशलहत
सुढारो ॥ एक अनुग्रह मांगत अबहैं । जोरिपाणि तुमसों हम
सबहैं ॥ यह सुनिकै शिष्यनकी बानी । कहत ब्यास ऐसेभे
ज्ञानी ॥ करोंकहामें कार्य्यतुम्हारो । तुम्हैं होय प्रियतौन उचारो ॥
सबये बचन गुरूके सुनिकै । कहते भये शीशनत पुनिकै ॥ षष्ठ-
म शिष्य आपु मति कीजे । यहहम बर मांगत सो दीजे ॥ तात
सुनो पैलादिक चारो । हम औ पंचम पुत्रतुम्हारो ॥ शिष्यनकी
सुनिकैयहबानी । कहत ब्यासभेइमि बरज्ञानी ॥ ब्रह्मलोक लहि-
बे की इच्छा । करै जौन सो लैमन बाञ्छा ॥ बर ब्राह्मणको वेद
पढ़ावै । आलस कबहुंन मनमें लावै ॥ बहुत होहु तुम शिष्य
हमारे । परम उज्ज्वला मेधावारे ॥ दीजैवेद अशिष्यहि नाहीं ।
तिमि अब्रती कृतघ्नहु माहीं ॥ धरिये वेदहि नहिं नहिं कबही ।
सुनो हमारी शिक्षा सबही ॥ कनकहि बहुविधि सेकत जैसे ।
शिष्यहि शोधि लीजिये तैसे ॥ होय महत भय जिहिथल माहीं ।
तहां भेजिये शिष्यहि नाहीं ॥ मेधा बढ़ै शिष्य की जिमि जिमि ।
अधिक पढ़ावै ताको तिमि तिमि ॥ वेद पढ़नसो कार्य्य महा-
नो । यहतुम सबही निश्चय जानो ॥ देवनकी सुस्तुति केलीन्हें ।
ब्रह्मबेद प्रकटेहे कीन्हें ॥ दोहा ॥ बेदवान बर बिप्रको करत अना-
दरजौन । कहत तुम्हैंहों सत्ययह लहत पराभव तौन ॥ कहीवेद
अध्ययनकी उत्तम बिधि तुमपाहिं । शिष्यनके उपकारको राख्यो
तुम मनमाहिं ॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेवेदाध्ययनविधौषोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ सुनिकै गुरुके बैनये लहिकै मोद अखर्ब ।
आपुसमें मिलते भये पैलादिकते सर्ब ॥ मधुभार ॥ गुरु कह्योजौ-
न । बरज्ञान भौन ॥ करिहै सदाहि । बिधि सहित ताहि ॥ दोहा ॥
आपुस में ते बोलि कै चारों ऐसे भूप । इमि सुप्रार्थना करतभे

गुरुसों फेरि अनूप॥ हमसब शाखा भेदसों श्रुतिहि अनेक प्रकार। करिहैंभूमें जायके तात सुज्ञान अगार॥ उकछा॥ शिष्यनके सुनिबैन। परम ज्ञानकेऐन॥ कहत भयेइमिभाय। तिनको सुनु नरराय॥ दोहा॥ जहँ मन आवै जाहुतहँ तुम पैला दिक सर्ब। अप्रसादता राखियो श्रुतिमें सदा अखर्ब॥ उकछा॥ सुनिकै गुरूके बैन। पैलादिक मतिऐन॥ प्रदक्षिणा सबिधान। करिनत शीश सुजान॥ उतरतभूके बीच। चारोभये निभीच॥ दोहा॥ यज्ञ चारित्रऋत्विजन सों ह्वैबेकी बिधि स्वक्ष। भू मण्डल के बीचते प्रबृत करत भे दक्ष॥ बिप्रन सों क्षत्रियन सों बैश्यन सों अभिराम। करवावत भे यज्ञ नृप सहबिधान मतिधाम॥ बिदाभयेसबशिष्य जब तबबर मुनि श्रीब्यास। रतशुकसहित सुध्यानमें होतभये सहुलास॥ नारद ताहीसमयमें भूप आयकै तत्र। इमिबोलतभे ब्याससों गतिजिनकी सर्बत्र॥ सुनोबिज्ञबर ब्यास मुनि तवआश्रमके माहिं। शब्दवेद अध्ययनको होत कहोक्यों नाहिं॥ बेदघोषबिन लहत नहिं शोभा यहगिरिराज। यहसुनिकै इमिकहतभे ब्याससुमुनि शिरताज॥ नारद तुमयहहै कही मम मनही कीबात। हो सर्वज्ञ कछूनहीं तुमसों है आख्यात॥ करैं अत्रहम सुमुनि बर जोतव आज्ञा होय। यहबानी सुनि-कहतभे नारद ऐसे जोय॥ अपठन मल है बेदको अब्रत मलहै पर्म। ब्राह्मणको अरु चपलता तियको सुनहु सशर्म॥ भू कोमल बाही कहै देश म्लेच्छ स्थान। याते वेदाध्ययन तुम सुत सहकरो सुजान॥ भीष्मउवाच॥ चरणाकुलक॥ नारद की यह बाणी सुनिकै। ब्यास बिशारद ताको गुनिकै॥ पढ़त वेदभे ऊंचेबानी। करिकै अतिही सुतसह ज्ञानी॥ ताही समय सदागति आयो। अतिशय उग्र वेगसों छायो॥ तब गुणि अनाध्याय के भेदे। सुतसों कह्यो पढ़ै मतिवेदे॥ चुपह्वै शुक पूछत भो पितुसों। आयो उग्र बायुसह कितसों॥ सुनि यह स्वच्छ पुत्रकी बानी। कहत बचन

भे ऐसे ज्ञानी ॥ आयोकितते बायु महानो । तूहीनिज मतिसों अनुमानो ॥ सत मार्गहे मारुत वारे । क्रमसों सुनुतू तात हमारे॥ साध्यनाम सुरगण बरजोहो । तासों मरुतसमान भयोहो ॥दोहा ॥ भयो उदान समानते औ उदानते ब्यान । तासों भयो अपानहे औ अपानते प्रान ॥ प्राणबायु अनपत्य है यातेहोतन और । पृथक् पृथक् अब कहतहौं इनके कहत सगौर ॥ मारुतही है तात सुनु सब जीवनको प्रान । प्राण भयो यहि हेतुते मारुतको अभिधान ॥ देह जलद को चलनकी करत प्रेरणा तात । प्रवह नाम याते भयो मारुत को बिख्यात ॥ उदय अस्त सूर्य्यादिको औ जठरानल धाम । करत प्रकाशित हैभयो याते आवह नाम ॥ जलधिन सों जल लेयकै जो जलदनको देत । करत बर्षिबे योग्यहै करिकै परम सचेत॥तृतिय बायु शुकतौन है ताको उद्वह नाम । तनुमें कहत उदानहै ताहीको मतिधाम ॥ जौन चलावत बायुहै नभके बीच बिमान । पृथक् पृथक् अरु करतजो बरषन काज महान ॥ मेघनको सो बायुहै चतुरथ संवह नाम । महत गिरिनको देतहै सो गिराय बलधाम॥ पीड़ा जाके बेगसों पावत अचल बिभात । मेघकहावत बेगसह जासुबलाहक तात ॥ अ-तिही दारुण चलतजो नभते करतो ध्यान । निवह नामहे तासु शुक सो पञ्चम पवमान ॥ भूमें गिरन नदेतजो नभगंगाको बारि । औ बीचहिते देतजो किरण भानुकी टारि ॥ क्षीण शशिहि जो करतहै पूरण अति अभिराम । षष्ठमसो पवमानहै परिवह ताको नाम॥ नाशकरत प्राणीन को जो लहिकै कल्पान्त । अन्त-हु औ मृत्युहु रहत जाके बशमें दान्त ॥ आतम चिन्तक दक्षके पुत्र सुदशहज्जार । जोहै तिनके मोक्षको कारण उग्र सुढार ॥ ते ब्रह्माण्डहि फेरिकै जाके बेगहि पाय । जातभये अतिही प्रबल जौन बखानोजाय ॥जो जाके पीछे परत आवतहै फिरि सोन । होय उलंघन सकतहै काहूसों जिहिकोन ॥ सप्तमसो पवमानहै

तासु परावह नाम। चलत निरंतर रहतहैं ये सातौं बलधाम॥ कंपितभो यह बायुसों उत्तम अचल महान। है अतिही आश्चर्य्य यह अद्भुत अकथ महान॥ यहजोहै शुकबायुसो बिष्णु श्वासको भूरि। सर्बब्यथाको लहत जब जात जगतमें पूरि॥ पढ़त बेदबिद बेदनहि चलेमहत पवमान। निकसतहै सँगवायुके मुखसे बेदसुठान॥ दोऊ मारुतके भिरे खेदलहत हे बेद। मरुत चले नहिं पढ़नको कह्यो तुम्हैं हम भेद॥इमिकहि ऐसे फेरिकहि अबतू पढु हेतात। द्वैपायन मुनिबर भये ब्योमधुनीको जात॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः॥

भीष्मउवाच॥ दोहा॥ पितागये तब सुमुनिबर श्री शुकदेव-अनूप। पूछनकी बेदार्थ को इच्छा करिकै भूप॥ नारद मुनिकी करतभे पूजा सहित बिधान। तदनु कह्यो नारद सुमुनि ऐसे शुकहि सुजान॥ कहा श्रेयतेरो करैं कहुतू मोको ख्यात। नारद के सुनि बचन शुक कहत भये इमितात॥ मुनि बर जो यहि लोकमें हमको अतिहित होय। हमैं युक्त तासोंकरो कृपा दृष्टि सों जोय॥ नारदउवाच॥ऐसे सनत्कुमार भे पूर्ब ऋषिनसों बैन। कहत और तहँ उग्रहै सत्यसमानन ऐन॥ बिद्यासम नहिंचक्षुहै और अनूप अमन्द। और नहीं अनुरागके सम अति दुःख बिलन्द॥ अज्ञानी संसारमें दुःख श्रोतके बीच। परिकै जातेहै बहे नहिं सुख होत नगीच॥ कर्मनको फलदेख तू जगतबीच सबिबेक। मनुज उठावत पालकी एक चढ़त हैं एक॥ केते ऐसे पुरुषहैं जिनके नारिअनेक। औकेते हैं कर्मसों जिनको मिलत न एक॥ मनको करि एकाग्रये नारदके सुनिबैन। करत बिचार भयो परम यह श्रीशुकमति ऐन॥ क्लेशहोय जिहि माहिं लघु अरु फल उदय महान। कौनकर्म ऐसे परम हैं आनन्दस्थान॥ तदनन्तर गति उत्तमा ताको हिये बिचारि। मनहीं में इमि कहतभो महत शोकको धारि॥ कैसे ह्वैहौं

प्राप्त यह उत्तम गतिको पर्म ॥जैसो फेरि.न दुख लहौं नित्यहि रहौं सशर्म । उत्तम गति को लहन की इच्छा है अभिराम । मेरेमन में छोड़ि कै सर्व संग दुखधाम ॥ उत्तम गतिकी प्राप्ति नहिं होति योग बिन स्वक्ष । तातेह्वैकै योगको प्रापत परम प्रतक्ष ॥ छोड़ि देहको अति बिमल ह्वैके मारुत रूप । मैंप्रबेश दिननाहमें करि हौं उग्रअनूप ॥ घटत बढ़तही रहतहै पुनिपुनि सोम सदाहिं । तामें करन प्रबेशकी याते इच्छानाहिं ॥ औ शशि मेंह्वैजातजो आवतहै फिरितौन । रबिमें ह्वैकै जातसो आवतफेरि न जौन ॥ अक्षय मण्डल रहतहै मारतण्डको चण्ड । फैलावत संतापहै लोकनमाहिं अखण्ड ॥ याँते तजिकै देहको मैं सब ऋ-षिन समेत । सूर्य्य सदनमें होयकै जैहौं होय सचेत ॥ लखो योगको बीर्य्यमम नगनागादिक सर्ब । सब भूतनके माहिं । हम करत प्रबेश अखर्ब ॥ आज्ञा लैकै तदनु मुनि नारदसों अवदात। ज्ञानी श्री शुकदेव मुनि पितापास भो जात ॥ दरश पिताको पा-यकै हाथजोरि शिरनाय । मांगत भयो प्रदक्षिणा करिकै बिदा सचाय ॥ सुनिकैये शुकदेवके ब्याससुमुनि बरबैन । अतिप्रसन्न ह्वैकै कहत ऐसे भे मति ऐन ॥ भोभोसुत कछु बेर तू बैठिहमारे पास । जासों मैं शीतलकरौं लोचन सहित हुलास ॥ छुटोस्नेह संदेह सों शुकमुनिबर अभिरामं । पैठनको नहिं मनकियो गमन कियो मतिधाम ॥ जातभयो कैलासको छोड़ि पिताको पास । गिरिजा गिरिजा पतिहि जहँ सेवत गण सहुलास ॥

शान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेशुकोपाख्यानेअष्टदशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ स्वच्छशृंग कैलास को तृणसों रहित अनूप । सम अति उज्ज्वल बैठतो तामें भो शुकभूप ॥ पक्षिहु के संघातको है आराव जहान । तत्र चढ़ावत वायुभो क्रमसों सहित बिधान ॥ अतिहो उज्ज्वल आतमा सर्ब संगसों मुक्त । ताहि देखि हँसतो भयो अति मुदसों ह्वैयुक्त ॥ रामगोती ॥ सो

योगको पुनि प्राप्त ह्वै के मोक्ष मारग काज। चलत नभ को भयोउद्यत भरोतेज दराज॥ करिकै प्रदक्षिणा तदनु ऐसे नारदहि शुक बैन। भो कहत गिरि कैलाशऊपर महामेधा ऐन॥ शुकउवाच॥ मैं लख्यो मारग मोक्षको अरु प्रवृतभो तिहिबीच। तवहोहु नितकल्याण नारद ज्ञानवान निभीच॥ तव अनुग्रह ते प्राप्त ह्वैहों चहतजो गति ताहि। परणाम करिकै सुमुनिसों शुक तदनु पाय बिदाहि॥ फिरियोग कोसो प्राप्त ह्वै कैलाशते उठि पर्म। शुक बायु भूत अमन्द दिवमें भयो जात सशर्म॥ जब जासयन समभये ताको भूत देखत सर्ब। छबि बैनतेज समान जाकीउग्र अतिहि अखर्ब॥सब चराचरते भये पूजतताहि सहित बिधान। बरपुष्प बर्षणलगे सुरगण भरेतेज महान॥ सब अप्सरा गन्धर्बताको भये बिस्मित देखि। अरु सिद्ध ऋषिहू भये बिस्मित उग्रअति अवरेखि॥ इमि कहतभे यह तपस्यासों महत सिद्धिहि पाय। गतव्योम में रविमाहिं लाये नैन भीति विहाय॥ यह कौन है मुखऊर्ध्व कीन्हें लखत काहुहि नाहिं। है परमजाके तेजसम बरतेज भानुहिमाहिं॥ अति शीघ्र जाके गमनकोरव भरतभो नभबीच। भोजात मलयाचलहिसो शुकउग्रपरमनिभीच॥है उदच सोअरुपूर्ब चित्तीजहांरहति हमेश॥तेप्राप्तकैआश्चर्य्यको इमिभई कहतिनरेश॥यहपरम वेदाभ्या समें रतबिप्र तिहि में स्वक्ष। अतिलखो थिरता बुद्धि बीरी अत्र सबहि प्रतक्ष॥ यहअल्पकालहिमाहिंसिद्धिहि प्राप्तहै अवदात। करि सबिधि सेवा पिताचारी चल्यौ नभमें जात॥ यह पिताके हो अतिहि प्रियकिमि बिदा कीन्हों याहि। येउर्ब्बशी के बचन सुनि शुकरह्यो चहुंदिशिचाहि॥ नृप तदनु तहँ चहुंओर सों सुर जोरिकरिकै पानि। भे लखत शुककीप्रभा बिमला भरीतेज महानि॥ शुकदेव तिनको तबै ऐसो भयो कहतो बैन। जोपिता आवै अत्र ममआह्वान करतअचैन॥ तो श्रवण करिकै बचन

तिनके बोलियो तुमसर्ब । ये बचनसुनि शुकदेवजू के दिशाशैल अखर्ब ॥ अरु सरित त्योंहीं सरित्पति भे कहतऐसे तात । तुम कहत सोई कहैबेतव पितासों हमख्यात ॥ भीष्मउवाच ॥ तिन सब नके ये बचन सुनि शुकदेव ज्ञानीपर्ब । गुण छोड़ि कै सब भयो निर्गुण स्वच्छ दक्षअखर्ब ॥ जिहि समयमें शुकदेव मुनिवर भयो निर्गुण होत । भो होत उल्कापात औ दिगदाह कीन्ह उदोत ॥ अरु भई धरणी कम्पिता बहु भयो हाहाकार । उतपात येसब भयेतिनको सुनो हेतु उदार ॥ जब तजत है संसारको बर महा पुरुष अनूप । तब होतहै उत्पात बिश्व अभाग्य सूचक भूप ॥ भे शिषर गिरिते गिरन के ये तरुणवारी डार । सरितानको अरु सरित्पतिको भयो उछरतबार ॥ भो मन्दभानु प्रकाश अरुभो अग्निमें नहिंज्वाल। भूमें जलाशयभये सूखत सर्ब अल्प बिशाल ॥ अबसुनो तहँजे शकुनि भे शुकदेव जू को तीर । बरलगो बर्बसवारि बासव लगो बहन समीर ॥ शुकदेव गिरि हिमवान के बन शृङ्ग अतिही माम । भोलखतहै यक हेमको यकरजत को मतिधाम ॥ दो० ॥ शतशत योजन कोसुतिन्न दोउनको बिस्तारि। तितनेही उन्नत मिले दोऊ हुते सुढारि ॥ तिन दोउन शुकदेवकी मतिको रोधन कीन ॥ जुदेहोतभे यहसुनो तुमआश्चर्य्य प्रबीन॥ गामगीती ॥ तिन दुहुनके है बीचमें शुकदेव मुनिभो जात । भेशोर करते देवऋषि आश्चर्य्य यह लखि तात ॥ भे द्विधा गिरिके शानु शुकमुनि कढ़ोतिनमें होय । लखि साधुसाधु सुभये करते नाद सबतहँ जोय ॥ सो पूज्यमान ऋषीनसों अरु देवगणसों भूप । अरुयक्ष गन्धर्वादिकनसों पूज्यमान अनूप ॥ भो होततापै पुष्पबर्षा मयी नभते होत । शुक तदनु ऊपर जातभो मन्दाकिनी को सोत ॥ भो लखत तामें हुती क्रीड़ा करति नग्ना आम । बहु अप्सरा तो देखिके शुकदेवको मतिधाम॥जिमिरहीक्रीड़ा करति तिमिही रहीधारण बास । नहिंभई करती छई छबिसों धरेभूरि

हुलास ॥ गुणि शुकहि जातो ब्यासमुनि धरि हिये भूरि स्नेह। भे चलत पीछूते भये धरि योगगति मतिगेह ॥ शुकदेव मुनि बर प्रभंजनते ऊर्ध्व नभ के बीच । गतिके दिखाय प्रभाव अपनो परस उग्र निभीच ॥ भोब्रह्मभूत अमंद होतो द्वन्द्वरहित नरेन्द्र। गति धारि योग महान बारी ब्यास बुद्धि बिलन्द ॥ शुक गमन कीन्हों जहांतेहो तहांभे मुनिजात। क्षणमात्रहीमें लगो तिनको बहुतदेर न तात॥ शुकगयो हो जिहि द्विधा करिकै पर्बताग्रहि भूप। मुनि ब्यासताको भयेदेखत भरो ओज अनूप ॥ तहँ ब्याससों इमिभये कहते तत्र ऋषिबर दक्ष। यह फटोतव सुत तेजसोंहै पर्बताग्र प्रतक्ष॥ नृप तदनु हेशुकव्यासमुनि इमिकहतभे आह्वान। स्वदीर्घसों सो भरतभो तिहुंलोक माहिं सुजान॥ आह्वानकरिकै श्रवण बोलतभे चराचरसर्ब। हांतात ऐसीभांति सेती तदनु प्रश्न अखर्ब॥ दोहा ॥ तबसों लैकै आजुतक पर्वत गह्वर बीच। उच्चारण कीन्हें शबद दीरघतात निभीच ॥ हेशुक ऐसी कढ़तिहै प्रगट प्रातिध्वनि पर्म। भूतनमें शुकदेव छपि आपु प्रभावसशर्म ॥ अपनो प्रगट दिखायकै तातहि तजि शब्दादि। प्राप्त होतपर पदहि भो जोहै नित्य अनादि ॥ शुककी महिमा देखि कै अद्भुत श्रीमुनिब्यास। चिंतन करिकै शुकहि को बैठत भयेउदास॥ तहां सुनग्ना अप्सरा मन्दाकिनिकेतीर। देखि ब्यासको दौरिकै धारतिभई सुचीर॥ यहलखि निज आसक्तता पुत्र मुक्तता ताहि। लज्जित औहुलसित भये मनहींमें अवगाहि ॥ तदनन्तर शिव आयकै व्यास पास अवदात। बाणी नीकीकहि भये समुझावतहै तात॥ शिवउवाच ॥ परमस्वच्छ सामर्थ्यको पंचभूतकी व्यास। मांग्योहो सुत पूर्ब तुम करितप सहित हुलास ॥ तुम्हैंप्राप्त तैसोहिभो सोअब ज्ञानी पर्म। ब्रह्मतेजते तव सुअरु ममप्रसादते पर्म॥ जो पद दुर्लभ सुरनको प्राप्त ताहि भो होत। तुमकाहेको शोकको हियमें कियो उदोत॥ रहिहैपर्बत ओजलधि

जबलों तबलोंव्यास । रहिहै तेरीपुत्र सह कीरतिको सुप्रकास॥ ममप्रसादते देखिहै सबलोकनके माहिं । छायाको निजपुत्रकी सदाआपने पाहिं ॥ समुझाये श्रीशम्भुके अरुसुत छायापाय । हर्षितह्वै फिरतेभये व्यास सुमुनिनरराय ॥ कह्यो तुम्हें शुकको जनमत्योंहीं गमनअनूप। नारदमोसों यहकथापूर्बकहीही भूप॥ औ मुनिबर श्रीब्यास तौ कही अनेकनबार । हीहमको यह जो कथा महिमा भरी अपार ॥ धारण करिहै ताहिसो लहिहै गति निर्बान । जनन मरणके दुःखको लहिहै फिरि न सुजान ॥

शांतिपर्व्वमोक्षधर्मेशुकोपाख्यानसमाप्तिर्नामैकोनविंशाधिकशततमोऽध्यायः

वैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ जन्म गमन शुकदेवको सुनि हर्षित ह्वै भूप । तदनन्तर पूछतभयो इमि गुणिके मतिरूप ॥ होत भक्तिबिन ज्ञाननहिं अति उज्ज्वल अभिराम । फेरि प्रश्न गांगेय को पूछतभो यहआम ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ उकछा ॥ चारोआश्रम जौन । सिद्धि लहनको तौन ॥ इच्छा मनके बीच । जौ नृप करै निभीच ॥ दोहा ॥ कौनदेवकी तौ करै पूजासहित बिधान । कौन देवकी कृपाको प्रापतहोय सुजान ॥ ब्रह्मलोकको होतहै प्रापत मानव स्वक्ष । होत तहांते हैनहीं पुनरावृत्ति सुदक्ष ॥ किहि गतिको सो लहतहै मुक्तजगतते जौन । कहाकरै अरु प्राप्त जो स्वर्ग माहिं जनतौन ॥ जासों च्युतनाहिं स्वर्गते फेरिहोय अव-दात । कोपितरनको हैपिता अरु सुरनको सुरतात ॥ भीष्मउवाच ॥ जो यहपूछौ प्रश्नतुम तौन गूढ़हैपर्म । शतबर्षहुमें तर्कसों कहि नहिं सकिहैं मर्म ॥ याको कोऊदेवके बिनाप्रसाद न भूप । अत्र कहत इतिहासहौं तुमकोएक अनूप ॥ नारायणको अरु सुमुनि नारदको सम्बाद । तामेंसो एकाग्रकहि मनसुनुछोड़ि बिषाद ॥ होतधर्मको पुत्रभो नारायण भगवान । कह्योहुतो यह ममपिता मोको भूप सुजान ॥ स्वायम्भुव मन्वन्तरमें हे नृपसत[illegible]गबीच सुबेश । चारिमूर्ति भगवानकी होतीभई बिशेश ॥ नर नारायण

हरि कृष्ण इन चारिहुमें भूप । नर नारायण करतभे तप सबि-
धान अनूप ॥ मायामय तनु धारिके बदरी आश्रम बीच । कृश
अति तपके तेजसों लखे न जात निभीच ॥ जापैहोहिं प्रसन्न
अति नर नारायण धर्म । सोइ तिनको लखिसकै और न कोय
सुधर्म ॥ चरणाकुलक ॥ फिरत फिरत लोकनमें आये । बदरीआ-
श्रममें छबि छाये ॥ श्रीनारदमुनि अतिबर ज्ञानी । महिमाजाय
न जासु बखानी ॥ करतहुते तर्प्पण अरु पूजा । ते दोऊ तिन
सम नहिं दूजा ॥ तिहिपल माहिं देखिकै तिनको । अचरजप्राप्त
होतभो मुनिको ॥ तदनु गुणतभो ऐसे मनमें । श्रीनारद बर
मुनि तिहि क्षणमें ॥ एकहि मूर्ति बिष्णुकी भारी । भई चतुर्द्धा
परम सुढारी ॥ करी धर्म पै कृपा महानी । इन अतिही यहमन
में जानी ॥ ये हैं परम धाम सबकेरे । भूत चराचर जेबहुतेरे ॥
औ हैं पितर चराचर वारे । सब देवनके देव सुढारे ॥ किहि
देवहि अरुपितर हिये हैं । पूजत हिये धारिकै नेहै ॥ नारद यह
विचारि मनमाहीं । भयो पहुंचतो तिनके पाहीं ॥ देव पितृ का-
रज करि आछे । नारदको देखतभो पाछे ॥ नर नारायण तदनु
सुढारो । आदर करि मुनि नारद वारो ॥ बैठावतभे पूजा करि-
कै । बैठि सुमुनि नारद मुद धरिकै ॥ नमस्कारकरि ऐसेबानी ।
बोलत भये मधुरतासानी ॥ नारदउवाच ॥ आपुहि वेद पुराणन
माहीं । होजूगाये जात सदाहीं ॥ तुमहीं मूल चराचर वारे ।
सब देवन के देव सुढारे ॥ दोहा ॥ तुमकिहिकी पूजा करत मैं
नहिं जानत नाथ । नर नारायण कहतभे सुनि ऐसे नरनाथ ॥
चरणाकुलक ॥ कहिबे योग्य बात यह नाहीं । लखि तवभक्ति कहत
तव पाहीं ॥ अति सूक्षम जो जात न जानो । इन्द्रियादि सों
रहित बखानो ॥ मुनि क्षेत्रज्ञ कहावत सोई । अरु सबको अन्तर
तम ओई ॥ तातें सुनु अव्यक्त भयो है । तीनों गुणसों तौन
रयोहै ॥ व्यक्त भयेते प्रकृति कहावै । सोइ जोजगको सरसावै ॥

सो उत्पत्ति स्थान हमारो । नारदमुनि मनमाहिं बिचारो ॥ याते हम निर्गुणहि सदाहीं । पूजत हुओ कार्यके माहीं ॥ सोई पिता देवहै सोई । तासु समान और नहिं कोई ॥ सुर पितृ कार्य करन को जोहै । उनहींको शासन पुनि सोहै ॥ ब्रह्मादिक सुप्रजापति जेते । सोशासन गुणिके सब तेते ॥ देव पितर कारज बिधि सेती । करतेहैं करि बुद्धि सचेती ॥ देव पितर कारज सोजानो । ताहीको न अन्यको मानो ॥ प्रज्ञादिक सों जेहैं हीना । अरु गुणकर्मनसों सुप्रवीना ॥ तिनको मुक्ति जानु मुनिज्ञानी । पाय सिद्धि ते परम महानी ॥ जो क्षेत्रज्ञ ब्रह्मातिहि माहीं । प्राप्तहोत संशय है नाहीं ॥ ज्ञान योग सेती सो देख्यो । जात और सों नहिं अवरेख्यो ॥ दोहा ॥ ताहीते हमहैं कढ़े ऐसेजानि सदाहिं । ताकोपूजत सहित विधि भक्तिराखि मनमाहिं ॥ जोजन पूजा करतहै जासुभक्ति सहपर्म । ताहि देतहै इष्टगति ते सुनु सुमुनिसशर्म ॥ औ निष्केवल भजत जो उनहींको जनस्वक्ष । ताहि लीनकरि लेत है आपुमाहिं मुनिदक्ष ॥ गुप्तबारता है कही तुम को हम यहपर्म । तुमसुहमारे भक्तहौ याते सुमुनिसुधर्म ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेनारायणनारदसंबादेविंशाधिकशततमोध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ मुनिनारद येश्रवणकरि नारायणके बैन । कहत भयो ऐसे वचन नारायणहिं सचैन ॥ नारदउवाच ॥ रक्षण को ये धर्मके चारि धरेतुमरूप । कीजे आप बिधान सह रक्षण तासुअनूप ॥ मैं अब श्वेत द्वीप को जात तिहारो और । रूप लखनको तदनु इमि कह्यो सुमुनि शिरमौर ॥ कोऊश्वेत द्वीपमें जाय सकत मुनि हैन । जोऐसे हमको कहौ तो सुनिये ममबैन ॥ पूजागुरुकी करतहौं मैं सविधान सदाहिं । गुप्त अन्यकी बात मैं कही न काहूपाहिं ॥ वेद पढ़े मैं बिधि सहित कीन्हों तप सविधान । अनृत कबहुँ बोल्यों नहीं लोकनमें भगवान ॥ पाणि पाद अरु उदर अरु मेढ़ सुमम ये चारि । अंग सदा तिनको

करत रक्षणनाथ मुरारि ॥ राखत मैं समभावहौं शत्रु मित्र के माहिं । श्वेतद्वीप तिहिको सबिधि मैं हौं जपत सदाहिं ॥ याते मैं जैहौं न किमि श्वेतद्वीप के बीच । नारायण सुनि इमि कह्यो तू मुनि जाहु नभीच ॥ श्रीनारायणके बचन सुनिकै सुमुनि सहर्ष । पूजाकरि जातो भयो गिरिमेरुहि उत्कर्ष ॥ गिरि सुमेरु के शृंगपै बैठि सुघटिका दोय । उत्तर पश्चिमकोन में श्वेतद्वीप को जोय ॥ उत्तरक्षीर समुद्रके अतिउज्ज्वल अभिराम । द्वात्रिंशत योजन सहस दूरिमेरुते माम ॥ तेजोमय उज्ज्वल परम तजे देह अभिमान । देखिपरे अनशनव्रती वासी तत्रसुजान ॥ तिनके बज्रसमान तन अतिहीबर बलवान । मस्तक क्षत्राकार अरु घनसम तिनको ध्यान ॥ अष्टडाढ़ अति शुभ्रअरु षष्टि दन्त अभिराम । रसनासों चाटत रबिहि पायसइव बलधाम ॥ कालचक्रको लेतभो जौन देवते स्वक्ष । ध्यान योग्य सो तिन कियोहियमें ताहिप्रतक्ष ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ बासी श्वेतद्वीपके तेजोमय अवदात । कैसे मुक्तसमान भे कहोतात बिख्यात ॥ बासी श्वेतद्वीपके तिनको लक्षण जौन । अरु मुक्तनको एकही जानि परत मति भौन ॥ तिनको कैसी उत्तमा प्राप्त होति गतिपर्म । यह कहिकै सन्देह मम दूरि करहु गुणिमर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ हम स्वपितासों यह कथा सुनी पूर्बहीभूप । मनको करि एकाग्रसुनि है यह सार अनूप ॥ पूर्ब हुतोयक भूपबर तासु उपरिचरनाम । मित्रइन्द्रको भक्तबर नारायणको माम ॥ हुतो पिताको भक्तअरु धर्मी परम दराज । हरिबरते सो लहत भो सर्बाभूकोराज ॥ देव कार्य पितृकार्य को नित्य करत सबिधान । हुतो अधिक जासु यश फैलो हुतो महान ॥ यज्ञादिक जे करतहो तिनवारो फल सर्बै । नारायणको देतहौं अर्पि सप्रीति अखर्ब ॥ कीन्हों कबहूं हुतो नहिं जाने नेकहुपाप । जासु राज्य में दुष्टता होति न रही रसाप ॥ अत्रि मरीचि सु अंगिरस क्रतु पुलस्त्य मतिमान ।

पुलह बशिष्ठ सुसप्तऋषि तेजसभेरमहान ॥ अष्टम स्वायम्भुव सुमनु येसब एकहजार । सुरबत्सरलौं करि सुतप सहितविधान सुढार ॥ नारायणको करतभे आराधनबरसर्ब । ताते भयेप्रसन्न अति बिष्णुकृपालु अखर्ब ॥ शासनते श्रीविष्णुके सरस्वती अचलेश । इनआठहुके बदनमें करतीभई प्रबेश ॥ भयेबनावत शास्त्रये एकलक्ष अभिराम । हरिहि सुनावत सोभये ग्रन्थपरम मतिधाम ॥ तदनन्तर ऐसेकहत नारायण भगवान । भेऋषीन को बचनबर ह्वैके गुप्त सुजान ॥ विरच्यो जोयह शास्त्रतुम तामें लक्षश्लोक । याहीते ह्वैहैसुनो प्रवृति धर्मको थोक ॥ स्मृति विरचिहै देखिकैस्वायंभू मनुताहि । निवृतिहुमें ह्वैहैप्रवृति मानव ताको चाहि ॥ दैत्यगुरुहि अरु सुरगुरुहि यह उपनिषद अति स्वक्ष । देहै स्वायंभुव सुमनु ते दोऊ वरदक्ष ॥ करिहै यह बर शास्त्रको लोकन माहिं प्रचार । तदनन्तर श्रीवृहस्पति सुर गुरु ज्ञानअपार ॥ प्रज्ञउपरिचर वसुहि यह देहै शास्त्र अनूप । करि है यासों सो क्रिया बिधिवत भूमें भूप ॥ प्रवृति भये ते लोकमें यह सुशास्त्रकी पर्म । आचारजतुम प्रकृतिके ह्वैहौ सर्ब सशर्म ॥ नृपति उपरिचर होयगो सम्पतिवान अनूप । लुप्तहोयगो शास्त्रयह जबसों मरिहै भूप ॥ अरिल्ल ॥ ऐसे कहिकै बैन । नारायण बलऐन ॥ तजि ऋषीनको जात । भैये तहांते तात ॥ दोहा ॥ तदनन्तर सोशास्त्रबर कीन्हों प्रवृति ऋषीन । सुरगुरु भो तबदेतभे ताकोतौन प्रबीन ॥ तदनु जातभे तपकरन निज निज बांछित थान । मरीच्यादिबर सप्तऋषि महामनीषा वान ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मएकविंशाधिकशततमोध्यायः ॥

भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ यही कथाको कहतहौं मैंअबकरि बिस्तार । मनको करि एकाग्रसुनु पाण्डव बिज्ञ उदार ॥ त्रयलोकनकेनाश को महाकल्पहै नाम । महाकल्प बीतेभयो बाचस्पति मतिधाम ॥ देव पुरोहित आंगिरस जब उत्पन्न अनूप । भयो देवतब होतभे

नी ॥ यह सतयुगहै याके माहीं । करिबो क्रोध उचितहैनाहीं ॥ जाहि भाग दीन्हों सहरागे । नीकोताहि क्रोधनहिं लागे ॥ ह्वै प्रसन्न देखतहै जाको । दर्शनदेत बिष्णुहैताको ॥ हमतुमदेखि सकैंगे नाहीं । यहहम सत्य कहत सबपाहीं ॥ तदनु सुएकत द्वितबित ज्ञानी । तिनहिं सप्तऋषि ऐसेबानी ॥ कहतभये सुर-गुरुकेसोंहे । ह्वै करिकै अतिहीन निचोहे ॥ हम मानस सुत ब्रह्माकेरे । गुणिकै श्रेयसकाजघनेरे ॥ पावनउत्तरदिशिको जा-ते । एकसमयते भये बिभाते ॥ रत्नशानुके उत्तर भारे । क्षीर-सिन्धुके स्वच्छ किनारे ॥ अतिहिमहत धीरजसों ज्वैकै । सहस बर्षलों ठाढ़े ह्वैकै ॥ उत्तम तपहि भये हम करते । चलतामेंन भये मन धरते ॥ नारायणको कैसे देखैं । यहइच्छा मनमें अव-रेखैं ॥ पूर्ण तपस्याभई तुम्हारी । इमि हरिबाणी भईसुढारी ॥ तुम सु तपस्या कीन्हीं आछी । मनकी चंचलता करिपाछी ॥ प्रभुको देखनको होचाहो । पैदेखोगे किमि अवगाहो ॥ क्षीर-सिन्धुके उत्तर नीको । श्वेतद्वीप महाहै श्रीको ॥ नारायणकेभक्त सुढारे । चन्द्रसमान सुवर्चसवारे ॥ एक बिष्णुहीको तेजानै । औरन् कोहूमें मनआनै ॥ निराहार तेरहत सदाहीं । बिषय न चाहैं इन्द्रियपाहीं ॥ दोहा ॥ पुरुषोत्तमको होतहै प्राप्ततौन मति मान । उत्तम श्वेतद्वीप में याते सुनो सुजान ॥ जावो तुमसब तत्रबर लहिहौदर्शहमार । तहँहींहोत प्रतक्षहै मेरोरूपसुढार ॥ चरणाकुलक ॥ हमसब तिहि बाणी को सुनिकै । ह्वै अनमेष ताहि हिय गुनि कै ॥ भये सुश्वेत द्वीपको जाते । अतिही आनँद पाय बिभाते ॥ पहुँचे श्वेत द्वीप के माहीं । हमको देखि परचो कछु नाहीं ॥ ताके तेजससों अतिभारी । मन्दह्वै गई नजरि हमारी ॥ दर्शन पुरुषको न भो याते । नारायणकी तदन कृपाते ॥ प्रापत होतभये हमज्ञाने । बिना उग्रतप परम महानै ॥ नारायणको कोऊ नाहीं । देखतयह बिचारि मनमा-

हीं॥ फिरि शतबर्ष कियोतप हमजब। देखिपरे तिहिके बासी तब॥ भरी प्रकाश चन्द्रसम शोभा। तिनकी नित्य रहतहै लो-भा॥ जपमेंबर गायत्रीवारे। बिधिसोंली थिरतासों भारे॥ थिरता सों उज्ज्वल मनवारी। भयेप्रसन्न बिष्णु अघहारी॥ तत्र सुएक एक मुनिवारी। महाप्रलय के रबिसम भारी॥ अतिही उग्रका न्ति हमदेखी। तब हम जियमें यह अवरेखी॥ हैयह द्वीपधाम तेजसको। अरु तिमिहीं अति उज्ज्वल यशको॥ हैं सबजन समतासों पूरे। न्यूनाधिक्य नहीं हैंशूरे॥ एकसमय में तहँहम दीसी। उठतीप्रभा सहस रबिकीसी॥ ताको देखि तहांके बासी। भरे सुआँनदतासों खासी॥ नमस्कार करि तिहि दिशि दोरे। जिहि दिशि उठीपाणिको जोरे॥ उग्राउठी प्रभाहो जाकी। करत भयेते पूजाताकी॥ ताके तेजससों अतिभारे। मन्दह्वैगये नैन हमारे॥ याते देखिपरचोकछु नाहीं। औरबिचारभयोमनमाहीं॥ दोहा॥ तदनन्तर हे महापुरुष हे नित्यपुण्डरीकाक्ष। हृषीकेशहै नमस्कारहै तुमको नाथ महाक्ष॥ यहै एक सुनते भये तत्रध्यान. अभिराम। हम सबहैं सुरगुरुसुनो बाचस्पति मति धाम॥ चरणाकुलक॥ इतनेही में सौरभ पूरो। चलत सदा गतिभो-अति रूरो॥ जिहिजिहि कर्ममाहिं बरजेते। औषधि स्वच्छ चाहिये तेते॥ तहां सुतौन सदागति ल्यायो। तिमिहीं पुष्पसमूह सु-हायो॥ नमो नमः यहबोले बानी। जैसेही सुमधुरता सानी॥ तैसेहि तत्र प्रगटह्वै आये। श्रीभगवान कृपासों छाये॥ हमति-नकी मायासों मोहे। याते तिन्हैं नहीं हमजोहे॥ चितमेंचिन्ता भूरिहमारे। होतिभई प्रभुबिना निहारे॥ कोहैंये कितेइतआ-ये। इन हमको मनमेंहुनलाये॥ लखिकै श्वेतद्वीपके बासी। भरे परम परभासों खासी॥ ब्रह्मभावमें तेहैं पागे। याते हमसों नहिं अनुरागे॥ हमसे तदनु आपही बोले। बिष्णु महानकृपा जो शोले॥ देवउबाच॥ श्वेतद्वीप बासी तुम देखे। बिषयाबिवर्जित

आनँद भेखे ॥ है इन केरो दर्शन जोई । परमेश्वरको जानहुसो-
ई ॥ अब तुम अचिर यहांते जावो । और नही मनमें कछु
लावो ॥ कबहुं अभक्तनको यकबेरो । होतनहीं दर्शन प्रभुकेरो ॥
बिन दर्शन कीन्हें हम कैसे । जाय इहांते जो कहु ऐसे ॥ होतन
दरश कालमें थोरे । जानो अनृत बचन मतिमोरे ॥ महत काज
करनोहै आगे । त्रेता माहिं तुम्हें रति पागे ॥ देव कार्य्यकी सिधि
को लोने । परिहै तुम्हें सहायक होने ॥ सुनिकै ये बरबैन सुहाये ।
हम अपने सुधामको आये॥ दोहा ॥ सके नहम तपसादि सों परमे-
श्वर को देखि । तुम कैसे लखिहौ तिन्हें आनो तुमअवरेखि ॥
चरणाकुलक ॥ सर्वोपरि परमेश्वर स्वामी । आदि अन्तसोंरहितसुना-
मी ॥ ऐसे बहुबिधिसों समुझाये । गये बृहस्पति मति सों छाये ॥
सबिधि यज्ञबर पूरणकीन्हों । परमेश्वरहि पूजि मुद लीन्हों ॥
पूरणभये यज्ञ बर राजा । बिज्ञ उपरिचर बसु शुभसाजा ॥ करतो
भयो प्रजाको पालन । सहित बिबेकनीतिकी चालन ॥ बिधिको-
शाप पायहों आयो । दिविते भुव मण्डलको गायो ॥ पैठत भो
सो नृप धरणीमें । सौरभ मत्स्यवतो वरणीमें ॥ नारायणमें तत्पर
ह्वैकै । जपतो भयो भक्तिसों ज्वैकै ॥ तातेफेरि परमगतिपाइ नि
धिके निकटगयो नरराई ॥ तदनु मुक्ति तिहि लही सुढारी ॥ तिहिते
अन्यनपद सुखकारी ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ बृह्मलोकते क्योंसोराजा ।
गिरो धसोमहिमें केहिकाजा ॥ भीष्मउवाच ॥ यक इतिहास कहत
प्राचीना । इह सुप्रश्नमें भूप प्रवीना ॥ ऋषिऔ सुरगणकोतिहि
माहीं । है सम्बाद सुनो मम पाहीं ॥ ऐसे सुरनर कह्यो ऋषि
गणसों । कीजै मख सबिधान अगणसों ॥ ऋषयऊचुः ॥ अजसं-
ज्ञाबीजहुकी जानहु । छागहिको अजतुम मतिमानहु ॥ हिंसा
मख साधुनको नाहीं । करिबो उचित गुणो मनमाही ॥ दोहा ॥
यह सतयुग यहि माहिं नृप हिंसामख किमि होय । यह अहिंस
युग नित्यहै जानतहैं बुध लोय ॥ भीष्मउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ देवन

सोंऐसी बरबानी। कहतहुतेऋषि बहुबिज्ञानी॥ ताहीसमयउप-
रिचर नामा। आयो तहां भूप गुणधामा॥ कहुंते ब्योम मार्ग
मेंह्वैकै। कीन्हें बहुमख तिहि मुद ज्वैकै॥ ताहि देखि ऐसेसब
बोले। हरिहै यह संदेह अतोले॥ तदनु जाय सुर ऋषिगण
आगे। आदर करि नृप को अनुरागे॥ तिहिको पूछत भे ते
ऐसे। यहि युग माहिं होत मखकैसे॥ बीजनसों कीहों तपसुन
सों। कहहु भूपतुम युत बहुगुनसों॥ यहसुनिभूप जोरिकैपानी।
कहत भयोतुम सबबर ज्ञानी॥ तुम्हैंकौन मख लागत नीको।
कहिये मत तुम निज निज हीको॥ ऋषयऊचुः॥ पशु सुयज्ञमतमें
सुरवारे। बीजयज्ञ मतमाहिं हमारे॥ हैइतको तौन्नृप मतऐसो।
अबगुणि कहोहोय तव जैसो॥ भीष्मउवाच॥ पक्ष राखि बैठे उन
केरी। कह्यो देखिदिशि ऋषिगणकेरी॥ छागहिसों मत कीजै
बिधिसों। यहमैं जानत सुमति बुद्धिसों॥ बोले तासों ऋषिगण
ऐसे। महाक्रोध अरि अरिसों जैसे॥ दोहा॥ होहुभ्रष्ट तबस्वर्गते
तेरी गति अबतैन। नभमें कबहूंहोहु मति हेतू दुर्मति ऐन॥
चरणाकुलक॥ पैठि जायगो तूमहि माहीं। महाअधम तू सत नृप
नाहीं॥ सुनतहि शापऋषिनते ऐसो। भयोबिबर बसुधामेंतैसो॥
प्रभुप्रसादते अहिअनुकूलो। महि गत भोपै सुधि नहिंभूलो॥
सुमनस शापछुटनकी बिधिको। भयेबिचारत सकल सु सिधि
को॥ हेतुहमारे यहिन्नृपपायो। शापऋषिनसों अतिदुख छायो॥
तदनु सुरन यहबैनउचारो। प्रभु मेटोयहशाप तिहारो॥ ब्राह्मण
मान्यसदा जगमाहीं। तिनकोशाप मिटैगोनाहीं॥ जबलौं तूमहि
माहीं रहि है। तबलौं मखघृतधारा लहिहै॥ तृप्तरहैगो नितही
तासों। बिकल न ह्वैहै तृषा क्षुधासों॥ कछूकालमें तूको ईश्वर।
देहै ब्रह्मलोक धरणीश्वर॥ यह बरदै प्रभु दिवहि सिधारे। ऋ-
षिनहु लीन्हें पथ गहवारे॥ तदनु उपरिचर बसुसोराजा। प्रभुको
नाम जानि सुखस्राजा॥ भयो जपत धरिभक्ति महानी। मान्य

बिप्रहै यह हियआनी ॥ ह्वै प्रसन्न प्रभु तास भगतिसों । ऐसे कहतभये खगपतिसों ॥ भूप उपरिचर बसुलहि शापै । ऋषि वृन्दनको करि सहदापै ॥ प्राप्त भयोहै सो महिमाही । करौऊ-र्ध्वगति प्रापति ताही ॥ ऐसेबचन स्वप्रभुके सुनिकै । पक्षनको फरकाय सुधुनिकै ॥ पैठि भूमिमें भूपहि लैकै । दयो छोड़ि नभ में मुद भैकै ॥ सोरठा ॥ तहँते तदनु नृपाल ब्रह्मलोकको प्राप्त भो । देहसहित छबिजाल महामोदको धारिकै ॥

इतिश्रीशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेद्वाबिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

दोहा ॥ बिप्र शापते तिहि नृपति दुर्गति लही अनूप । प्रभु सुकृपाते ऊर्ध्वगति फिरि तिहिपाई भूप॥ भीष्मउबाच ॥श्वेत द्वीप कोप्राप्त ह्वै नारद मुनि तपधाम। तहँके बासिन को भये देखत अतिअभिराम ॥ नारद तिनकी करतभे पूजा सहित बिधान । नारदकी मनसों करी पूजा तिनहुँ सुजान॥ शमदम साधन करितहां नारायणको तत्र । स्तवन करत भे सबिधि मुनि गति जिनकी सरबत्र ॥ नारदउबाच ॥ नमस्तेदेव १ देवेश २ निष्क्रिय३ निर्गुण ४ लोकसाक्षिण ५ क्षेत्रज्ञ ६ अनन्त ७ पुरुष ८ महा-पुरुष ९ पुरुषोत्तम १० त्रिगुण ११ प्रधान १२ अमृत १३ अमृताख्य १४ व्योम १५ सनातन १६ सदसत् १७ व्यक्ता-व्यक्त १८ शतधामन १९ आदिदेव २०बसुप्रद २१ प्रजापते २२ सुप्रजापते २३ बनस्पते २४ महाप्रज्ञापते २५ उर्जस्पते २६ वाचस्पते २७ जगत्पते २८ मनस्पते २९ दिवस्पते ३० मरुत्पते ३१सलिलपते ३२ पृथिवीपते ३३ दिक्पते३४ पूर्व-निवास ३५ गुह्य ३६ ब्रह्मपुरोहित ३७ महाराजिक३८ चातु-र्महाराजिक ३९ आभासुर ४० महाभासुर ४१ सत्य सदाभाग ४२ जाम्य ४३ महाजाम्य ४४ संज्ञासंज्ञ४५ तुषित४६ महा-तुषित ४७ प्रमर्दन ४८ परिनिर्मित४९ अपरिनिंदित५०अप-रिमित ५१ अवशबर्तिन ५२ यज्ञ ५३ महायज्ञ ५४ यज्ञस-

म्भव ५५ यज्ञयोने ५६ यज्ञगर्भ ५७ यज्ञहृदय ५८ यज्ञकृत ५९
यज्ञभागहर ६० पञ्चयज्ञधर ६१ पञ्चकालतकृतपते ६२ प-
ञ्चरात्र ६३ बैकुण्ठ ६४ अपराजित ६५ मानसिक ६६ नाम-
नांमिक ६७ परस्वामिन ६८ सुस्नात ६९ हंस ७० परमहंस
७१ महाहंस ७२ परमयाज्ञिक ७३ सांख्ययोग ७४ सांख्यमूर्ते
७५ अमृतेशय ७६ हिरण्यशय ७७ देवेशय ७८ कुशेशय ७९
ब्रह्मेशय ८० पद्मेशय ८१ सर्बेश्वर ८२ बिष्वक्सेन ८३ त्व-
ज्जगदन्वय ८४ त्वज्जगत्प्रकृतिः ८५ त्वमसिराज्यं ८६ बडवा-
मुखोग्निः ८७ त्वमाहुतिः ८८ त्वंसाराथिः ८९ त्वदिङ्मणिः ९०
त्वम्बषट्कारः ९१ त्वमोङ्कारः ९२ त्वंमनः ९३ त्वंचंद्रमा ९४
त्वंचक्षुराज्यं ९५ त्वंदिशांगजः ९६ हयशिर ९७ प्रथमत्रिशौपर्ण
वर्णधरः ९८ पंचाग्ने ९९ त्रिणानितेक १०० षडंगबिधान १०१
प्राग्ज्योतिष १०२ ज्येष्ठामग १०३ मासिकब्रतधर १०४ अथर्ब-
शिर १०५ पंचमहाकल्प १०६ फेणपाचार्य १०७ बालखिल्य १०८
बैखानस १०९ अभग्नयोगं ११० अभग्न परिसंख्यान १११
युगादे ११२ युगमध्य ११३ युगनिधन ११४ आखंडलं ११५
प्राचीनगर्भ ११६ कौशिक ११७ प्ररष्टुत ११८ पुरुहूत ११९
बिश्वकृत १२० बिश्वरूप १२१ अनंतगते १२२ अनंत
भोग १२३ अनंत १२४ अबध्य १२५ अव्यक्तमध्य १२६ अ-
व्यक्त निधन १२७ ब्रतावास १२८ समुद्राधिवास १२९ य-
शोवास १३० तपोवास १३१ लक्ष्म्यावास १३२ बिद्यावास
१३३ कीर्त्यावास १३४ श्रीनिवास १३५ सर्बवास १३६ बासु-
देव १३७ सर्बछंदक १३८ हरिहय १३९ हरिमेध्य १४० महा-
यज्ञभागहर १४१ वरप्रद १४२ सुखप्रद १४३ धनप्रद १४४
हरिमेध्य १४५ यम १४६ नियम १४७ महानियम १४८ कृच्छ्र
१४९ अतिकृच्छ्र १५० महाकृच्छ्र १५१ सर्बकृच्छ्र १५२ नियमधर
१५३ निवर्त्तभ्रम १५४ प्रबचनग १५५ पृश्निगर्भ १५६ प्र-

कृति १५७ प्रवृतवेदक्रिय १५८ अज १५९ सर्बमते १६० सर्बदर्शिन १६१ अग्राह्य १६२ अचल १६३ पवित्र १६४ महापवित्र १६५ हिरण्मय १६६ बृहत् १६७ अप्रतर्क्य १६८ अविज्ञेय १६९ ब्रह्माग्रज १७० प्रजासर्गकर १७१ प्रजानिधनकर १७२ महामायाधर १७३ चित्रशिखंडिन १७४ बरप्रद १७५ पुरोडासभागहर १७६ गतस्वर १७७ छिन्नकृष्ण १७८ छिन्नसंशय १७९ सर्बतोवृत १८० निवृतरूप १८१ ब्राह्मणप्रिय १८२ विश्वमूर्ते १८३ महामूर्ते १८४ बान्धव १८५ भक्तबत्सल १८६ ब्रह्मण्य १८७ ॥ दोहा ॥ नारद कृतयह स्तव सुनि होय प्रसन्नरमेश । दर्शन श्रीप्रभु देतभे धरिके रूप विशेश ॥ शीश चक्षु अरुउदरपद धारण किये अनेक । जपतप्रणव वेदहि पढ़त तेजोमय सबिवेक ॥ चरणाकुलक ॥ नारद प्रभुको दर्शनकरिके । नमस्कार कीन्हेंमुद धरिके ॥ नारदसोंप्रभुऐसी बानी । कहतभये मधुराईसानी ॥ एकद्वित त्रित ऋषि मुदछाये । एकसमय में इत हे आये ॥ तिनहूं को न दरशभो मेरो । बिना भक्तिके भाव घनेरो ॥ ममपदमें मनरहत तिहारो । याते दर्शन भयो हमारो ॥यह सुद्दीपके बासी जेहैं । मेरेही बपुजानो तेहैं ॥ मनमें इन्हें हमेशे ध्यावहु । बहुबिधि इनके गुणको गावहु ॥ इच्छाहोय जौन बर मांगो । हौं प्रसन्न आनँद सों पागो ॥ नारदउवाच ॥ शम दम साधनादि को आछो । आजुहि भो फल दुखभो पाछो ॥ और कहा बर तव दर्शन शम । ताहिनाथ गुणि अब मांगें हम ॥ तदनु कहतभे इमि जग नायक । श्री परमेश्वर आनँद दायक ॥ इन्द्रियरोंकि मोहिं जे ध्यावें । तिनके निकट विघ्न नहिं आवें ॥ अब तुमजाहु इहांते नारद । मोसु भक्ततुम परम बिशारद ॥ भीष्मउवाच ॥ अब्यय अच्युतनिति बर नामी । सोईकृष्ण जानु जगस्वामी ॥ औरन कोऊ इनकेआगे । यहनिश्चय धारहु अनुरागे ॥ नारायणउवाच ॥ मैं माया बिरची तू

याते । मोहिं लखत तनु लखतो नाते ॥ नारद यह मनमें न बिचारो । मैंमाधवको रूप निहारों ॥ दोहा ॥ मोहींते ब्रह्मा भये रचत चराचर जौन । मम ललाटके क्रोधहे भये चन्द्रतप भौन ॥ दक्षिण पाश्र्वसे रहत तू मेरे अरुबाम । पाश्र्वमाहिं आदित्य हैं द्वादश रहतसधाम ॥ चरणाकुलक ॥ अष्टसुबसु रहत नितिआगे । पीछे रहत दश्र मुदपागे ॥ सर्बप्रजापति सप्तसुमुनि बर । बेद सर्ब अरु यज्ञसुमुद कर ॥ ओषधि तपयम नियम सुनेते । मेरे निकटदेखु सबतेते ॥ अष्टसिद्धि मेरेतट देखो । बेदमातु गायत्री पेखो ॥ रमासुबानीकीरतिनीकी । मेरे रहत सदाहि नजीकी ॥ सरितासरअरु सिन्धुसुढारे । चारि पितरगण निकट हमारे ॥ हमहिंपिता सुरदेवन केरे । मोहिं गुणतहैं सुमुनि बड़ेरे ॥ मम बिरधो ब्रह्मासोमेरी । पूजाकीन्हीं सबिधि घनेरी ॥ ह्वै प्रसन्न मैं येबर दीन्हें । ताके भक्तिभावको चीन्हें ॥ कल्पआदि में मोसुत ह्वैहौ । लोकाध्यक्ष होयमुद बैहौ ॥ तवकृत मर्य्यादामें चरिकै । सबहि बताश उलंघन करिकै ॥ बर लहिबेकी इच्छा जिनको । कैहै तुम बरदेहौ तिनको ॥ सुरअरु असुर पितर ऋषिजेते । तव उपासना करिहैं तेते ॥ सुर काजे अवतार धरैंगे । हमजब तिनमें दुःख परैंगे ॥ यह बरबर ब्रह्माको दैकै । रहते भये निवृत हमह्वैकै॥सर्वधर्मते पर अतिजानो । निवृतिहिऔर नहीं अनुमानो ॥ निवृत भयेते आनँद सेती । रहतनलहत खेदताजेती ॥ दोहा ॥ निवृति माहिं तत्परभये बर आचार्य्य अनेक । करत प्रशंसा कपिल की गुणतताहि सबिबेक ॥ प्राप्त निवृतिको होयकै ह्वैके मूर्त्ति अमान । यहि उत्तर दिशिमें रहत नारद सुऋषि सुजान ॥ योगशास्त्रमें योग सों प्राप्त होनकी जौन । गतिसो मैंहींहौं परम नारद मुनि तपभौन ॥ सहस चौकड़ी के उतै चराचरहि करिलीन । आत्मामें मैंरहौंगो एकाकी सुप्रवीन ॥ चरणाकुलक ॥ फिरि मायासों रचिहौं जगतै । विषयीगण जामें हैं पगतै ॥ जो

अनिरुद्ध नामहै मेरो । मूरतिनाभि तेसु तिहि केरो ॥ होत कमल है ब्रह्माताते । होतभूत सब भाषतभाते ॥ रवि जिमि उदय अस्तको पावै । जानो तिमिहिं जगत के भावै ॥ मैंबराह को रूप धरौंगो । जलते भूउद्धार करौंगो ॥ हिरण्याक्ष को बधिकै बलसों । देवहि भरिहौं मोद अचलसों ॥ धरिनृसिंह बपुहिरण्यकश्यपुहि । हरिहौं देवतानके रिपुहि ॥ बलिसु बिरोचनको सुत ह्वै है । छीनि राज्यसुरपति सुखगै है ॥ अदिति माहिं कश्यपसों ह्वैकै । मैं छलिताहि मोदसों भैकैं ॥ राज्यलेय सुरपतिको देहौं । वाको मैंपातालपठैहौं ॥ परशुरामह्वैकै त्रेता में । हरिहौं क्षत्रिन अरिजेतामें ॥ त्रेतायुग अरुयुग द्वापरकी । सन्धिमाहिं हनिबे सुरपरकी ॥ फिरि मैंजो दशरथसुत ह्वैहौं ॥ भालुकीश गणको सँगलैहौं ॥ सहसेना रावणको हनिहौं । लोक लोकमें निजयश तनिहौं ॥ द्वापरकलिकी सन्धीमाहीं । करिबे काज कंसकी नाहीं ॥ मथुरामें अवतारधरौंगो । दानवानके जूह दरौंगो ॥ द्वारावतिमें बास करौंगो । नरकासुरके प्राण हरौंगो ॥ तिमिहीं मुरपीठहि मारौंगो । देवनके दुखको टारौंगो ॥ दोहा ॥ प्राग्ज्योतिषपुरसों सुधनलै दानवगण भूरि । हतिकै द्वारावतीमें सोधन देहौंपूरि ॥ बलिसुत बाणासुरहि मैं हतिहौं करिसंग्राम॥ तदनु शौभवासीनको हतिहौं बलकै धाम ॥ चरणाकुलक ॥ कालयवन ह्वै है रणवाको ॥ ह्वैहै मोहीं सों बधताको ॥ जरासन्ध नृपगण बश करि है । सोऊ मोमतिहीसों मरिहै ॥ शिशुपालहि हनिहौं मखमाहीं । धर्म नृपति के नृपगण पाहीं ॥ अर्जुन एक सहाईह्वै है । मेरो सो भुवमेंयश गैहै ॥ धर्म नृपहि बहुभ्रातन श्रीकै । थपिहौं फेरि राज्य अपनी कै ॥ पार्थहि हमहिं कहैंगे ऐसे । जनइन सों जयलहि हैं कैसे ॥ नर नारायण वरु ऋषि येहैं । लोकनमें इनके समकै हैं ॥ दुष्ट क्षत्रियनको ये नाशैं । अर्थ साधु के सुयश प्रकाशैं ॥ हरिकै भार भूरिबसुधाको । या-

देव सहित द्वारिका ताको ॥ करिहों घोरप्रलय मैंनारद। कह्यो तुम्हें गुण भक्ति बिशारद ॥ हंसकूर्म अरुमत्स्यसुभावन। अरु बाराह नृसिंह सुबावन ॥ अरु भृगुराम रामदशरथसुत। बासुदेवकल्की बहुगुणयुत। ये दश हैं अवतार हमारे। भक्तनके भय भंजन वारे। लहि अवतार कार्यको करिके। रहत फेरि पूरबगति धरिके ॥ दर्शनभयो तोहिंमम जैसे। ब्रह्माकोहु भयो नहिंतैसे ॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ इमिकहि नारदको सुप्रभु परमेश्वर भगवान। नारदके देखतभये तहँहीं अंतर्द्धान ॥ बदरीआश्रम को गये नारदहू सानंद। भगवत कथिता कथामें मनलगाय निर्द्वंद ॥ चरणाकुलक ॥ जाय सुऋषि नारद ब्रह्मासों। कही कथा यह मोदमहासों ॥ सिद्धगणनसों कही बिधाता। सिद्धन सोय कथा अवदाता ॥ कहीभानुसों हर्षित ह्वैके। भानुकही बहुमुदसों भैके ॥ साठिसहस्र बाल्यखिल्यनकों। बाल्यखिल्य करि मोदित मनको ॥ कही सुरनसों सुरन सुठानी। कही पितर गणसों सुखसानी ॥ कहोसु पितरन मोसु पितासों। मोसों तिन यह मधुर सुधासों ॥ मैं तुमसों यह कही सुढारी। हरिकी कथा महा सुखकारी ॥ जिन जिन कथा सुनी यह नीकी। तेते पूजा करत हरीकी ॥ जो जन भक्त कृष्णको नाहीं। यह न कथा कहिये तिहिपाहीं ॥ पूरब उपाख्यान मैं जेते। कहे नहीं याकीसम तेते। सिन्धुहि सुमिलि सुरासुर जैसे। मथिके अमृत निकारौं तैसे ॥ यह इतिहास निकारों नीके। मथिपुराण सब सुमति घनीके ॥ पढ़िहैं सुनिहैं जोजन याको। करि मनथिर तनिकै मेधा को ॥ श्वेतद्वीप माहिंसो ह्वैके। प्रापत महामोदसों भैके ॥ लीनानित्य नारायण माहीं। ह्वैहै यामें संशय नाहीं ॥ शुद्ध ज्ञानकी इच्छा करिके। जो जन पढ़ि हैं मनको धरिके ॥ सोबर चारु ज्ञानको पैहैं। नहिं अज्ञान कबहुं नगिचैहैं ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ उकछा ॥ सुनिके यहआख्यान। धर्मराजमतिमान ॥ श्रीहरिमाहिं बिभात।

तत्पर भये सञ्जात ॥ सूतउवाच ॥ दोहा ॥ बैशम्पायनसों सुने यह इतिहास अनूप । सबिधि हरिहि पूजतभयो जनमेजयबरभूप ॥ फिरि मुनिसों ऐसे कह्यो परमेश्वरके नाम । फेरिकहौ तुम प्रीति सों सहनिरुक्ति अभिराम ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ अर्जुनसों निजनाम बर सहनिरुक्ति जिहिभाय । कहेपूर्व हरिकहतहौं तिमि सुनिये नरराय ॥ अर्जुनउवाच ॥कहुनिरुक्तनिज नामको मोकोआप मुरारि । और न कोऊ कहिसकत मति महानबिस्तारि ॥ भगवानुवाच ॥ श्रुति अरुशास्त्र पुराणमें मेरेनाम अनेक । कहे ऋषिन मतिबर महत तेजोमय सबिवेक ॥ तिनमें कर्मजहैं किते किते गौणहैं नाम । ते तुमसों मैं कहतहौं धीरपार्थ मति धाम ॥ नारायण परमातमा बिश्वयोनि भगवान । अच्युत अव्यय सगुण हरि निर्गुण आनँदवान ॥ इनआदिक बहु नामहैं करिकै तिनकोजाप । पाप रहितजन होतहै दूरिहोत त्रयताप ॥ मोसों अरु हरसों न कछु भेदजानु हेपार्थ । होयरहे हैं हमद्विधा एकहिजानुयथार्थ ॥ बरदीबेके योग्य सुनु हमैं न कोऊ और । बरलीबेको हम द्विधा भये शूर शिरमौर ॥ तुमसर्बोपरि प्रभुतुम्हैं है बरसों काकाम । जोकहु इमितो कहतहौ तुम्हैं अत्रबलधाम ॥ बरकी होतीप्रकृति किमि जो हमबर नाहिं लेत । द्विधा भये इहि हेतुहम जानौबुद्धिनिकेत ॥ बरवै ॥ नारानाम सलिलको सो मम ऐन । नारायण मोयाते नामसचैन॥तोमर ॥ सब जीवन में बास । है मेरोभतिरास॥ बासुदेवभो नाम । यातेमो अभिराम ॥ दोहा॥ सब जीवनमें व्याप्तिहै मेरी याते बिष्णु । नाम भयोबिख्यात है जगत माहिं सुनु कृष्णु ॥ प्रश्नकहावै श्रुति अमृत जलतै गर्भस्थान । हैमेरे याते भयो पृश्निगर्भ अभिधान ॥ त्रित ऋषिको यक समयमें एकत द्वितकरिक्रोध । हुतोगिरायो कूपमैं जैसेमहा अबोध ॥ पृश्निगर्भ को औरऋषि कियोजायसबिधान । ताते नष्टभयोत्रित निकसो समुद सुजान ॥ पृश्निगर्भ केनामको जैसोफल अभिराम । सब

नामनको जानुतू तैसोई फलमाम ॥ बरवै ॥ गईधरणिमें जानीयाते नाम ।भोगोविंद हमारोबरबलधाम ॥ दोहा ॥ भयेकर्मसंयोगते मेरे नाम अनेक । तिनके उत्तमफलनको जानतैह सबिबेक ॥ कही निरुक्ति स्वनामकी मैंतोसों हेपार्थ । कीर्त्तन किये ऋषीनके लखिके कर्म यथार्थ ॥ भूमिलोक गोलोक अरु ब्रह्मलोकमेंधीर । फिरत रहतहौं पार्थसुनु बहुबिधि धारि शरीर॥रुद्रचलतहैंसमर में तेरेरथके अग्र । मैंरक्षाहौं करततुम यातेमारि समग्र ॥ ब्र बैरिनके वृन्दसों पाईजीति अनूप । भोसब कौरवगणनको रुद्र कालके रूप ॥ तैने मारेरुद्रके मारे सुभट प्रचण्ड । यातेरुद्रहि पूजितू धरिकै भक्ति अखण्ड ॥

इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेत्रयोविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२३॥

शौनकउवाच ॥ दोहा ॥ कह्योमहतआख्यानते मोसोंसूतसुजान ।सो सुनिकै सब मुनिनको अचरज भयो महान ॥ नारायण की सुनि कथा जो जनको फलहोत । सब तीर्थनके स्नानते सोनहिं करत उद्योत ॥ दुखसों लखिबे योग्यजो देव ऋषिन सों सर्ब । नारद श्वेतद्वीप में सो हरि लख्यो अखर्ब ॥ देखिसकत नहिं नारदहु गयेहु अनेकन बर्ष । नारायणहीकरि कृपा दीन्हों अपनोदर्श ॥ बासी श्वेतद्वीपके तासु नाम अनिरुद्ध । ऐसे नारायणहि लखि नारद फेरि प्रबुद्ध ॥ नर नारायणको लखत बदरी बनहि पयान। कीन्होंकारण तासु तुम हमको कहोसुजान ॥ सूतउवाच ॥ रामगीती ॥ इमि पितामह के पितामहको भये बूझत भूप । बरयज्ञ थलमें प्रश्न जन्मेजय सुधीर अनूप॥ भगवानश्री अनिरुद्ध केरे गणत बचनहि तज्ञ । तिनकहा कीन्हों कहो आगे अहो ऋषिबर प्रज्ञ ॥ अरु किते बासर बसे बदरी बिपिन के अवदात । तुम धन्य मोको किमो यह सु अनन्य की कहिबात ॥ अति बर बिशारद कहेनारदसों कहा तिन बैन । नर औ सुनारायण महात्मा महा आनन्द ऐन ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारद

सों जिमि कहतभे नर नारायण अत्र । तिमि मैं तुम सों कहत हौं सुनिये भूपति अत्र ॥ व्यासउवाच ॥ अरिल ॥ चलिकै श्वेतद्वीपसों नारद । कथाधारि हिय माहिं बिशारद ॥ भये सुकंचन गिरिपै आवत । तदनु सुनरनारायण भावत ॥ गये परम आनँदसों पागत । कीर्त्तनमें हरिके अनुरागत ॥ नरनारायणको तहँ देखत । भयो आपनो भाग्य सुलेखत ॥ पूजाकीन्हीं नरनारायन । नारद कीसुप्रेम के भायन ॥ तिन्हें देखियह भयो बिचारत । नारदमुनि आनँद बिस्तारत ॥ दोहा ॥ जैसे श्वेतंद्वीपमें देखे हे अभिराम । तैसेहीयेहैं महा तेजोमय तपधाम ॥ अरिल ॥ यहबिचारिकै करि सुप्रदक्षिण । बैठेआसनपर सुबिचक्षण ॥ घृतकी आहुति पाय अग्नि जिमि । शोभित होतभये तिनहूं तिमि ॥ बोलतभे तहँ तदनु नरायण । नारद मुनिके प्रीति परायण ॥ देखी इत ये हमरी सूरति । श्वेतद्वीपमें तुम बर मूरति ॥ नारदउवाच ॥ देखे श्वेतद्वीपके भीतर । तुमकोमैं तुमहीं बासीबर॥ श्वेतद्वीपबासिहि अवरेखत । तुमको निरखि तिन्हेंहौं देखत ॥ दोहा ॥ तुम बिन तीनों लोकमें तेजस्वीको और । कीर्त्तिमान श्रीमानबर बीरधीर शिरमौर ॥ अरिल ॥ इन्द्रियबिन तहँके बासीबर । धरेभक्ति तब अति उत्तम तर ॥ तब अनिरुद्धनामजो मूरति । तासु हियेमें धरिकै धूरति ॥ सबिधि सुपूजन करत हमेशहि । तासों रहतप्रसन्न बिशेषहि ॥ एकपावँसों ह्वैकरि ठाढ़े । श्री अनिरुद्ध गहेपण गाढ़े॥ ऊर्द्ध्वबाहु वेदीपर वेदहि । पढ़त सहित अंगनके भेदहि॥ ब्रह्मादिक सब तिनको पूजत । चरणनके सुस्तब को कूजत ॥ दोहा ॥ पूजन भक्तनको कियो सोहै शिरसो लेत । ताको प्यारो भक्तसम और न जगत निकेत ॥ जयकरी ॥ तिनको भेज्यो मैंतव पास । आयोहौं धरिमोद प्रकास ॥ रहि हौं अत्रहि नाथसदेव । अबमोहिं और कामना नेव ॥

इतिशान्तिपर्व्वणिमोक्षधर्मेचतुर्विंशाधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

नारायणउवाच ॥ दोहा ॥ ब्रह्मा तिन्हैं न लखि सकैं तिन को दर्शन कौन। तुमयाते ऋषिधन्यहौ नारद परम प्रवीन॥ तिनको प्यारो भक्तसम दूजो कोऊ नाहिं। तुमसुभक्त याते दयोदर्शन तिनह्वै पाहिं ॥ जयकरी ॥ श्वेतद्वीप तपकेरो थान। तामें महातेज भगवान ॥ हमबिन ताहिजानौ और। धन्यसुनारद मुनि शिरमौर॥ सहस सूर्य्यकी शोभातत्र। श्रीअनिरुद्धरहतहैं यत्र ॥ भेउत्पन्न तिनहिंतेसर्ब। जातुयेच भूतादि अखर्ब ॥ प्रथमतेज देख्योहौ जौन। भक्तिपसारिसुऋषि तपभौन॥ ताहीते प्रगटे अनिरुद्ध। ताहीते प्रद्युम्न प्रबुद्ध ॥ संकर्षण ताहीते जानु। बासुदेव ताहीते मानु॥ हम उत्पन्न धर्मतेहोय। बदरीवनको उत्तमजोय ॥ करत तपस्या सहित बिधान। नारद मुनिबरबिज्ञ महान॥ दोहा ॥ हम तुमको देखेहुते श्वेतद्वीप के माहिं। जानतहौं संकल्प तव अरु आगमममपाहिं ॥ जानत भूत भविष्यअरु बर्त्तमान हमबिप्र। बदरीबनमें रहतहे होतिसिद्धि जहँ क्षिप्र॥ कह्यो जो श्वेतद्वीपमें देवदेव सोंसर्ब। जानतहैं हममुनि महातेज सुविज्ञअखर्ब॥ बैशम्पायनउवाच ॥ नारायणके बचन सुनियेनारद अभिराम। नारायणमें होतभे तत्पर गुरु गुणधाम॥ सहित बिधान सुमंत्र जपिकरि कैध्यानसुढार। बदरीबनमें रहतभो निर्जर बर्ष हजार ॥

इतिमहाभारतदर्पणेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेपंचविंशाधिकशततमोऽध्यायः ॥

बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ नारद कौनहुकालमें देव पितरके कार्य। करते हुते बिधानसह बदरीबनमें आर्य ॥ नारायण लखि कार्य सो कहतभये इमि बैन। नारद तुम कहु कौनकी पूजा करत सचैन॥ चरणाकुलक ॥ है फलको यहि पूजा केरो। करत सबिधि धरि प्रेम घनेरो॥ नारदउवाच ॥ देव पितर परमेश्वरहीहै। पूजत तिनही कीरतिही है॥ यहगुणि देव पितर मैं पूजत। सहित बिधान सुनामहि कूजत ॥ प्रथम सुकुशाबिछाय महीमें। तीनपिण्ड दीजे तिनहीमें ॥ तिनमें पूजा पितरन केरो। करत सबिधि धरि प्रीति

घनेरो ॥ पितर सुपिण्ड संज्ञभै कैसे । कहोनाथ पूरब भे जैसे ॥ नारायणउवाच ॥ एकसमयमें नष्ट भईहै । धरणिडूबि पातालगई है॥ दोहा ॥ कियो तासों उद्धार हौं परमेश्वर सुबिशेष ।.शूकर बपुको धारिकै तेजसभरो बिशेष ॥ पूर्वजहां धरणी हुती धरिदीन्हीं हरितत्र ॥ डाढ़माहिं लागेहुते पिण्डा तिनहिं पबित्र ॥ चरणाकुलक॥ तहां कालमध्याह्न निहारचो । पितरकार्य करनो सुबिचारचो ॥ कुशधरि तिनपै पिण्डा धरिकै । पितरकार्य कीन्हों बिधि करिकै ॥ गरमीभई सु तिनके तनमें । तिल उत्पन्नभये तिहि क्षनमें ॥ ते चढ़ाय पिण्डनपै दापी । लोकनमें मर्य्यादाथापी ॥ तदनु करत भे ऐसीबानी । श्रीबाराहरूप सुखदानी ॥ हमहींपिता बिधाता के हैं । तिनने रचे लोकसब जेहैं॥पितर सुकार्य होयगो कैसे । यहबिचार कीन्हों तिन जैसे ॥ तिनहीं चारु डाढ़ते भाई । तीनपिण्ड कढ़िथिरतापाई ॥ दक्षिण दिशि तातेतुमजानो । तेई पितर और न अनुमानो॥ दोहा ॥ मेरेबिरचे कव्यभुक पिण्डमूर्त्तिधर पर्म । लोकमाहिं ह्वैकै पितर पूजालहो सुधर्म ॥ बरवादोहा ॥ पिता पितामह अरु प्रपितामह तीनहुं पिण्डन माहिं । थिरते हमहीं हैं जानो तुम यामेंसंशय नाहिं ॥ मोते लोकअधिक नहिं याते पूजों काहि । कोममपिता सुलोकमें मोते होत सदाहि ॥ अरिल ॥ मैंहौंपितापितामहसबकर । ऐसे कहिकै शूकर बपुधर ॥ पिण्डदानदे बिधिको थापत । भये अदर्शन ताको प्रापत ॥ दोहा ॥ पितर पिण्डसंज्ञिकभये तिनके कीन्हेदक्ष । मर्यादा बाराहकी बांधी यह परतक्ष ॥ पितरदेव गुरु अतिथि गो द्विजहि सुपूजत जौन । पूजनते परमात्महि जानोतुम बुधिभौन ॥ चरणाकुलक ॥ नरनारायणकी यहबानी । सुनिकरिकै नारदबिज्ञानी ॥ भगवतकी सुनि कथा हुलासिकै । बर्षहजार तहांसो बसिकै ॥ गये हिमालय को ऋषि आयन । लगे करनतप नरनारायन॥ सुनिकै यह बरकथा रसाला । तुमहुं पवित्रभये भूपाला ॥ द्वेप

गावत हैं सबज्ञानी ।मैं नृप नीकी बिधिसों जानी ॥ ताके पितर नरकमें डूबैं । नाना बिधि लहि दुखसों ऊबैं ॥ व्यास सुऋषि बर गुरू हमारे । येसु महामति कहे सुढारे ॥ दोहा ॥ उनसों मैं यह श्रवण करि तुम्हैं सुनायों भूप । नारायण तुम व्यासको जानो प्रज्ञ अनूप॥ उन बिन भारतको रचै धर्म्मकहैको और । करहु यथा संकल्प तुम यज्ञ भूप शिरमौर ॥ शौतिरुवाच ॥ चरणाकुलक ॥ पारीक्षित यहकथा श्रवणके । मनको मखको और गमनके ॥ मख पूरणकी क्रिया सुढारी ।करतभये नृपशुभ मगचारी॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेषड्बिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२६॥

शौनकउवाच ॥दोहा ॥ यह उत्तम आख्यान हम तुमसों सुन्यो सनेह । हयग्रीवकी अब कथा कहिये तुम बरदेह ॥ शौतिरुवाच ॥ यहै कथापूछी हुती श्रीजन्मेजय भूप। व्यास बिशारद सुऋषि सों सुनी परम सुखरूप॥ जन्मेजयउवाच॥ धारयोबपु हयग्रीवको नारायण किहिकाज। तुम हमको समुझायकै कहिये बुध शिरताज ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ चरणाकुलक ॥ नृप जन्मेजयकी यहबानी । सुनि बोले द्वैपायन ज्ञानी ॥ महाप्रलय जब भो नरराई । तब श्रीनारायण जलशाई ॥ तासु नाभिते कमल सुढारो । होतो भयो सहस दलवारो ॥ ताते होतो भयो बिधाता। संपूरण वेदन को ज्ञाता ॥ कमल पत्रमें तिनतहँ देखी । दोयबुन्द तेजससों भेखी ॥ यक मधुरंग होतभो तासो । मधुभो भरो तेजमय भासो ॥ कठिनहुती तासों भो कैटभ । अतिहि कराल बिशाल महाप्रभ ॥ तिन सुवेदब्रह्मते छीने । उरदिखायकै व्याकुलकीने ॥ सबबिधि हरिकी सुस्तुति करिकै । कहत भये इमि दुखसों भरिकै ॥ बिन बेदन किमि सृष्टि बनाऊं । मैं हेनाथ परम दुख पाऊं ॥ तुम अभिमानिन केहो नाशक। दीननके हो मोद प्रकाशक ॥ तुमहि धर्मके थापनवारे । उत्थापन के अघको भारे ॥ दोहा ॥ नारायण यह स्तवन सुनि उठे नींदको त्यागि । बेदनको

ल्यावत भये उदित क्रुधसों पागि ॥ चरणाकुलक ॥ हयग्रीव बपु तिनकहँ धारयो । अपनो परम तेज बिस्तारयो ॥ करत प्रवेश भये महिमाहीं । पहुंचनको तिन दोउन पाहीं ॥ सुर उदगीथहि तहां उच्चरिकै । तिहिसों तिनते बेदहि हरिकै ॥ तिनहिं रसातल माहिं गिराये । बिधिहि वेददै मुदसों छाये ॥ तदनु धरतभे पूरब रूपै । करि यह उत्तमकार्य अनूपै ॥ प्रभु ईशान कोणमें राख्यो । तिहि बपुको द्वैपायन भाख्यो ॥ हयग्रीवभे बेद निकेता । करन बिधानहि मोद समेता ॥ फेरि शैनमें पागे स्वामी । लोकनके नायक खगगामी ॥ ते दोऊ अति क्रुधसोंपागे । आय बेदथल देखन लागे ॥ जब तिन बेद लखेतहँ नाहीं । खोजन तबलागे महिमाहीं ॥ तिन दोउन नारायण देखे । देखत महाहास्यसों भेखे ॥ दोहा ॥ तदनु कहत ऐसे भये बेद हमारे जौन । हरे होहिंगे इनहिं ने इन बिन है इत कौन ॥ कोहै यह है कौनको सोवै कितसोंआय । ऐसे कहिकै बैन बहु तिन प्रभुदिये जगाय ॥ चरणाकुलक ॥ रण अभिलाषी तिनको जाने । आपहु रण बिचार मन आने ॥ लरि तिनसों रणमें बधिडारे । ब्रह्माके सब शोच निकारे ॥ लोक रचनकी आज्ञा चायन । दैभे अन्तर्द्धान नरा-यन ॥ ब्रह्मा बेदहि प्रापत ह्वै कै । बिरचे लोक मोदसों भैकै ॥ श्री हरि प्रवृति धर्मके काजै । हयग्रीव बपु धारि दराजै ॥ दोऊ दानवको बध कीन्हों ब्रह्माको अति आनँद दीन्हों ॥ कथा सुनै यह आनँद मूलै । पढ़ोहोयसो कबहुं न भूलै ॥ दोहा ॥ हयग्रीव की जो कथा पूछी हो तुम भूप । सोहम तुमसों सब कही पावन करणि अनूप ॥ कार्य करनको बिष्णु प्रभु जैसो मनमें होय । तैसो वपुधारण करत नृप मायासों भोय ॥ वेदशास्त्र तप योग को है स्थान हयग्रीव । जानो पारीक्षित नृपति प्रवृत धर्मको नीव ॥ प्रवृत धर्म बिख्यात जो नारायण बपु जानि । नारायण के रूपही महाभूतहू मानि ॥ अरु शब्दादिकहू गुणो नारायण

के रूप । मन अरु दश इन्द्रियहु नृप सोई जानु अनूप ॥ कर्ता चेष्टा कर्म्म अरु कर्णदेव आधार । नारायणके रूपही जानो भू भर्तार ॥ चरणादोहा ॥ तत्त्व जानिबेकीहैंजिनकी इच्छाते जनसर्ब। नारायणही सबको जानै मति बिस्तारि अखर्ब ॥ बेदकार्य पितृ कार्य अरु परम तपस्या दान । परमेश्वरही जानुतू इन सबको सुस्थान ॥ जानत परम सुपुरुषको सुऋषि सुविज्ञमहान । वाके गमनागमनको औरन को नहिं ज्ञान ॥

इतिमहाभारतेशान्तिपर्बणिमोक्षधर्मेसप्तबिंशाधिकशततमोध्यायः १२७ ॥

जन्मेजयउवाच ॥ दोहा ॥ अति प्रसन्नता लहत हरि जाने तिनको एक । ग्रहण करत सोदान जो कीन्हींसहित विबेक ॥ पाप पुण्य सों रहित ते पावैं पद निर्बान । ऐसे तुम ऋषि कहतहो मति बिस्तारि महान ॥ जे त्रिबर्गको तजत ते हरिको प्रापतहोत । पढ़त वेद उपनिषद सह जे मति को करि द्योत ॥ तिनसों गतिजानत अधिक हरिभक्तन को प्रज्ञ । तिन सम कोउ न जगतमें स्वच्छ मोक्ष,धर्मज्ञ ॥ केवल हरिके भक्तको कैसोहै आचर्ण । कौन कालमें करतहै कहिये संशय हर्ण ॥ गति अरु अगति कहो हमैं ऋषिबर सहित बिधान । ज्ञाताहू जो आपनो और न लख्यो महान ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ रणमुख भीष्मादिकन को लखिभोपार्थ उदास । तबहरि गाईगति अगति करि बिस्तार प्रकास ॥ हरिकी गाई गति अगति कही पूर्ब भूपाल । तुमसों हम विस्तार करि तनिके बुद्धि बिशाल ॥ है गतिमान उपासना धर्म कहत हैबुद्ध । पावत किये उपासना हरिको दर्शन शुद्ध ॥ अगति मानहै ज्ञानसो याते सुनो नरेश । अन्त लगावै मनहिं नहिं ज्ञानी बुद्ध बिशेश ॥ जिनको मन एकत्र नहिं तेजन जानि सकैंन ॥ कही जौनयह गति अगति पारीक्षित मतिऐन ॥ यहहि धर्म पूछतभये नारद सों नृप पार्थ । सुनते भीषम कृष्णके सुनो

भूप ज्ञानार्थ ॥ मम गुरु द्वैपायन कह्यो हों यह मोहिं क्षितीश । हरिबेको अज्ञान तम जानो याहि तमीश ॥ नारायणके बदनते जब भे ब्रह्मा होत । देव पितरके कार्यको हरिने कियो उदोत ॥ याही अतिबर धर्मसों है यह धर्म अखण्ड । फेणि परिष यहधर्म को जानत भये प्रचण्ड ॥ बैखानश पावत भये तिनसों यहही धर्म । पावत बैखानशन सों सोम भयो सहशर्म ॥ तदनु अन्त द्धीन भो यह सुधर्म अवदात । तब श्रीहर के चक्षुते ब्रह्मा भयो बिभात ॥ सुनत पितामह सोमते भो यह धर्म सुढार । ब्रह्मा रुद्र हि देतभे अनुपम अमल उदार ॥ बालखिल्य गणको भये देत रुद्र यह स्वक्ष । हरि माया सों फेरिहू भोय यह अप्रतक्ष ॥ परमेश्वरके बचन ते फिरि भे ब्रह्मा होत । नारायणही तब कियो यह सुधर्मको द्योत ॥ नारायण सों लहत भे श्रीऋषि प्रज्ञ सुपर्ण । यह सुधर्मके ग्रन्थको सो ऋषि पावन कर्ण ॥ तीनबेर पढ़ते भयो याते तिनको नाम । होतभयो त्रिशुपर्ण नृप महातेजको धाम ॥ शुपर्ण ते यह धर्मको लहत भयो पवमान । तासों बिद्याशाशी ऋषी पावत भये सुजान ॥ बिद्याशाशिन को लहत भी यह न-दीश अवनीश । फेरिहु अन्तर्द्धान भो जैसे अमातमीश ॥ अब जिमि बिधिभे अवनिते तैसे सुनु भूपाल । मनमें यह भगवानके इच्छा भई बिशाल ॥ बहुबिधि की जो सृष्टिको बिरचे सहित बिलास । ऐसो यक उत्पन्न हम करैं पुरुष सहुलास ॥ ऐसे गुण-तहि श्रवणते एक पुरुषभो होत । नामतासु ब्रह्मा धरयो सर्ब गुणनको पोत ॥ ब्रह्मासों तहँ कहतभे इमि परमेश्वर बैन । प्रजा करौ बहुभांति की तुम उत्पन्न सचैन ॥ सात्वत धर्महि ग्रहण करि अतिबर मोसों तात । करु सतयुग की थापना तासों अति अवदात ॥ नमस्कार परमेश्वरहि करिकै ब्रह्मा तत्र । ग्रहणकि-यो अति हर्षसों धर्म सुपर्म पवित्र ॥ ब्रह्माको उपदेश करि तिहि सुधर्मको भूप । जातभये तम पारको जो अव्यक्त अनूप ॥ तदनु

सुथावर जंगमहि रचत भयो लोकेश । सतयुग की करिप्रवृति को थाप्यो धर्म बिशेश ॥ लोकन में सो प्रवृत भो सात्वत धर्म सुढार । पूजत भो तिहि धर्मसों हरिहि बिश्व करतार ॥ धर्म प्रतिष्ठाहेतु बिधि स्वारोचिष मनुताहि । सात्वतभयो पढ़ावतो सहविधान अवगाहि ॥ स्वारोचिष निज पुत्रको भयो पढ़ावत सोय । तासु शंखपद नामहो पढ़ो सुतिहि सुख भोय ॥ भयो पढ़ावत शंखपद निज पुत्रहि अभिराम । ताको सुबरण नाम हो महा तेजको धाम ॥ त्रेतायुगमें धर्मसों फिरिभो अन्तर्द्धान । बहुत काललौं ब्यक्त नहिं होतो भयो सुजान ॥ परम भागवत धर्ममें कह्यों पूर्व हो जौन । ताहीकी यहबारता जानु बिज्ञ क्षिति-रौन ॥ हरिनासा ते होतभो जब फिरि श्री लोकेश । तबब्रह्माके देखते आपुहि श्री कमलेश ॥ सनत्कुमारहि देतभे परम भाग-वतधर्म । पायो सनत्कुमारते बीरणप्रज्ञ सशर्म ॥ रैभ्यसुमुनि को देतभो बीरण बिज्ञ बिशाल । कुक्षिनाम सुतकोदयो रैभ्यसुमुनि महिपाल ॥ फिरिहू अन्तर्द्धानभो स्वच्छ भागवतधर्म । गुप्तभयो बहुकाललौं रह्यो तौन अतिपर्म ॥ फिरि हरि अण्डज बिधिभये तब फिरि सों बरधर्म । नारायणके बदनते भोउत्पन्न सुधर्म ॥ ग्रहणकियो बिधि तासु फिरि ताको सहित बिधान । ब्रह्मासों सो पढ़तभो बर्हीं सद्म सुजान ॥ बर्हिं सद्मसों प्राप्त भो ज्येष्ठनाम ऋषि प्रज्ञ । ज्येष्ठ सुऋषिसों लहतभो अबिकम्पन नृपतज्ञ ॥ फेरिहु अन्तर्द्धान भो तौन भागवत धर्म । रहत भयो बहुकाल लौं गुप्तहि सो अति पर्म ॥ जब यह पद्मज जन्म भो ब्रह्मा को भूपाल । सप्तम तबहूं हरिहि यह कीन्हों प्रगटबिशाल ॥ ब्रह्माको सोदेतभे ब्रह्मा दक्षहि दीन । दक्ष भानुको देतभे भूपति परम प्रबीन ॥ ज्येष्ठ सुवनके परमहित देतभानु यहधर्म । ज्येष्ठसुवन इक्ष्वाकुको देतभये मनुपर्म ॥ बैवस्वत इक्ष्वाकुने कियो जगत बिख्यात । क्षीण होयके फेरिहू यहसुधर्म अवदात ॥ नारायण

को होयगो प्राप्त कछूदिन माह । हरिसों पायो धर्म यह नारदने नरनाह ॥ धर्मसनातन परमयह है महानसुखदाय । शमदमवारे जननसों यह नृप कीन्होंजाय ॥ हरिहीहूवैक्षेत्रज्ञ नृप सबभूतन के माह । तैसीक्रीड़ा करतहै जैसीहोती चाह ॥ धर्मराज नृपको कह्यो यह सुधर्म श्रीब्यास । सुनत सुभीषमकृष्णके बहुऋषीन के पास ॥ नारदने श्रीब्यास सों कह्यो सु यह बरधर्म । यासों हरिब्रन्द्राभये प्राप्तहोत जनपर्म ॥ जन्मेजयउवाच ॥ ऐसो जो यह धर्म जो और ब्रतके माहिं । जे प्रापत द्विजतेकरैं यहसुधर्म क्यों नाहिं ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ होततीन बिधिकी प्रकृति देहिनकी भूपाल । सात्विकी राजसी तामसी कहत सुबुद्धि बिशाल ॥ जिन की सात्विक प्रकृतिहै ते सुकरत यह धर्म । प्रकृतिहि जानोहेतु हे क्रिया करनको पर्म ॥ सात्विकही जनलहतहैं यह सुधर्मअवदात । सात्विकजनको हरिहिमें प्रेमसदासरसात ॥ निजइच्छा की सिधिलहैं द्विज श्रीहरिको ध्याय । तृष्णा जिनकी छुटिगई तिनहिं देत हरिचाय ॥ परमेश्वरकी बिनकृपा सात्विक प्रकृति मिलैन । सात्विक प्रकृति बिना सुपथ और मोक्षको हैन ॥ जिनकी राजसी तामसी प्रकृति तिन्हैं भगवान । देखत नहिं तिन को लखै ब्रह्माभूप सुजान ॥ लोकान्तरको लहतहैं याते ते जन सर्ब । पुरुषोत्तम भगवान की कैसे लखै अखर्ब ॥ जन्मेजयउवाच ॥ सात्विक सों जे रहितहैं होय प्रकृति सों लीन । ते किमि हरिको होतहैं प्रापत कह्यो प्रबीन ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पंचरात्र अरु सांख्य अरु वेदारण्यक योग । यहहि धर्म भागवत को कहत पुराने लोग ॥ भक्ति मार्गको नामहै पंचरात्र अभिराम । जीवात्मा परमात्माको जिहि मेंहै मतिधाम ॥ बर बिबेक तासों सुबुध सांख्य कहत हैं पर्म । वेदारण्यककहत हैं ताकोबिज्ञसशर्म ॥ जीवात्मापरमात्मा तिनको जौन अभेद । तौनहोय जिहि ग्रन्थ में बिज्ञ नृपाल अखेद ॥ योग सुचित्त निरोध को नामकहत

बुध लोय। हरिहि लहनको मार्गहै इनबिन और न कोय॥
महाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेअष्टविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२८॥
जन्मेजय उवाच॥ दोहा॥ सांख्यादिक जे सर्व हैं तिनको जानो ज्ञान। होतहोत की एकहू जाने ऋषिमातिमान॥ बैशंपायन उवाच॥ नारायण के पुत्र अरु नारायणते षष्ठ। वेद निधान सुब्यासको ऋषिबर कहतसपष्ठ॥ जन्मेजय उवाच पहिले तो तुम यह कह्यो मोको सुऋषि अमन्द। भेवशिष्ठ के शक्तिसुत तासु पराशर नन्द॥ भयेपराशरके सुवन ब्याससुवेद निधान। नारायण केसुत कहतब्यासहि अवमातिमान॥ पूर्वहु भोकाजन्महोब्यास सुऋषिकोस्वच्छ। बैशम्पायनयहकहो मोको करिसुप्रतच्छ॥ बैशम्पायनउवाच॥ एकसमय में वेद को अरु भारतकोअर्थ। अरु नारायणसों जनमिजिमिभे भूपसमर्थ॥ममगुरु श्रीमुनिब्याससों पूछो मैंसहमोद।सुनिकै मेरेप्रश्नको कहतभये सबिनोद॥ आदि कालको जौन तुम पूछो यह आख्यान। तपसों जान्यो तोहिंमें कहततोन सविधान॥ नाभिकमलते जबभयोसप्तमजन्म नरेश। ब्रह्माको तबयों कह्यो ब्रह्मासों कमलेश॥ प्रजारचौ बहुभांतिकी लहि मेरीआज्ञाहिं। सुनिब्रह्माऐसोकह्यो बुद्धिहमारेनाहिं॥ तब प्रभुअन्तर्द्धान ह्वै मतिको कियो बिचार। करतबिचारहि सुमति सों आगेभई सुढार॥ तहँमतिसों ऐसेकह्यो नारायण भगवान। लोकरचनके हेतु तू बिधिमें करु स्वस्थान॥ हरिकी आज्ञापाय मति बिधिसे कियो प्रवेश। ब्रह्मासों फिरि इमिकह्यो ह्वैकै प्रगट रमेश॥ लोकनकी रचनाकरो अब तुमसहित बिधान। इमिकहि अन्तर्द्धान भे लोकनाथ भगवान॥ सृष्टि चराचर मय सुयह बिरची श्रीलोकेश। उत मनमाहिं बिचार नृप ऐसेकियो रमेश॥ राक्षस दानव सृष्टिसे ह्वैहै बहुबलवान। तिनसोंरक्षा सृष्टिकी कीबेकाज महान॥ बाराहादिक रूप कहु धरिकै महाप्रचण्ड। करने परिहै बध हमैं तिनको उग्रउदण्ड॥ बाणीको उच्चार तहँ

कीन्हों श्रीभगवान। ताते सारस्वत भयो होत कहामतिमान ॥ नामअपान्तर तमाभो तासु परीक्षित तात। ज्ञाता तीनहु कालको कीर्त्तिमान अवदात ॥ तासों नारायण भये ऐसे कहत सुजान। करु बिभाग तू वेदको तात महामतिमान ॥ स्वायम्भुव मनुने कियो वेदनको सु बिभाग। सो बिभागलखि हरि भये अति प्रसन्न बड़भाग ॥ तदनु सुऐसेकहतभे तासोंश्रीभगवान। और मनुनके माहिहूं इमिहीं तात सुजान ॥ कर्त्ता वेद बिभाग के हर्त्ता अघके वृन्द। भर्त्ता कीरति भुवनमें चरता ह्वैहो नन्द ॥ आगे कलियुग आइहै तब कुरुबंशीभूप। लहिहैं अतिबिस्तारको तुमसों तात अनूप ॥ प्रापत ह्वैहै भेदको ते बिनाशके हेत। वेद बिभागहि तबहुं तुम करिहो तात सचेत ॥ बीतराग तव सुवनसुत ह्वैहै बर मतिमान। लहिहैं पद निर्बाणसों प्राप्तभये बरज्ञान ॥ चरणाद्दोहा ॥ जन्म पराशर तेह्वैहै तव सत्यवतीके माहिं। ते सरिसम तिहुंलोकन माहीं ह्वैहै कोऊ नाहिं ॥ इमि कहि मोसों हरि कह्यो जाहु इहांते तात। हम तोसों दोऊ जनस कहे अत्र बिख्यात ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ सम्भव पूरब जनम को मेरे गुरुको भूप। कह्यो प्रथम अब प्रश्नको उत्तर सुनो अनूप ॥ सांख्यादिक सब ज्ञानके साधनहै भूपाल। पंचरात्र अति श्रेष्ठ है इनमें सुनु बर भाल ॥ भिन्न भिन्न आचार्य हैं सांख्यादिक के सर्बं। है बरवक्ता सांख्यको मुनि श्रीकपिल अखर्ब ॥ हिरण्यगर्भ सुयोगको है वेत्ता मतिमान। अपान्तर तमां बिज्ञबर त्रिकालज्ञ शुभज्ञान ॥ वेदारण्यक के परम ते आचार्य्य अमन्द। पंचरात्र ज्ञाता हरिहि हैहै जानु नरेन्द ॥ और पाशुपत नाम यक ज्ञाता ताके सर्ब। साधन सोऊ ज्ञानको जानो भूप अखर्ब ॥ पंचरात्र को गुणतते हरिको प्रापत होत। पंचरात्रसों होत है शीघ्र ज्ञानको योत ॥

महाभारतेशांतिपर्बणिमोक्षधर्मेएकोनत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२९ ॥

जन्मेजयउवाच ॥ दोहा ॥ बहुतपुरुष हैं की सु ऋषि एकहिपुरुष अनन्द । अब यहहमको गुणिकहो तुमहो बिज्ञ बिलन्द ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ पुरुष बहुत सांख्यादिके ज्ञाताहैं भूपाल । सब पुरुषनको थानइक पुरुष अनूप बिशाल ॥ नाश बार्त्ता तुम सुनो करिकै मन एकत्र । श्रवण तासु करिकै कथा कोनाहिंहोत पबित्र ॥ पुरुष सूक्त यह परम है वेदनमें बिख्यात । चिन्तन ताको बरऋषिन कीन्हों गुणि अवदात ॥ आपुहि जात अनेक ह्वै पुरुष किये बिस्तार । बहुरिजातहै एकह्वै पुरुषमही भर्त्तार ॥ नाशहि पाय प्रसाद हम तासु कहत ब्याख्यान । इहि प्रसंग में कहतहों एक इतिहास सुजान ॥ तामेंहै संबादनृप बिधिहर को अभिराम । क्षीरसिन्धुमें हेमछबि बैजयन्त है नाम ॥ पर्व्वत तामें लोकपति ब्रह्मा आपुहि एक । मन लगाय करतो हुतो थिरह्वै ब्रह्म बिबेक ॥ महादेव आवतभये अकस्मात् नृपतत्र । नभते गिरि शिरपैभये गति जिनकी सर्ब्बत्र ॥ गिरत भये बिधि पदनपै बिधितब लियोउठाय । अति आनँदसों छायकै लयो हियेसों लाय ॥ आयोजो बहुकालमें सुततासों लोकेश । अति प्रसन्न बोलत भये करिकै कृपा बिशेश ॥ आयोतू बहुकालमें याते पूछततोहिं । है सुकुशल स्वाध्यायको अरु तपकी कहु मोहिं ॥ रुद्रउवाच ॥ सर्ब्ब हमारे हैं कुशल तव प्रसादते तात । बहुदिनमें मोकोभयो तव दर्शन अवदात ॥ आयोमें यहि अचलमें तवदर्शनके हेत । तुम्हैं अकेले देखिभो अचरज जगत निकेत ॥ सेवित सुर अरु असुरसों ऐसो जोन स्थान । ताहि छोड़ि पर्व्वत कियो आलयक्यों भगवान ॥ ब्रह्मोवाच ॥ अच्युत अब्यय सर्ब्बगति स्वामीजगको तास । करिबेको सुबिचारइत आये हम सहुलास ॥ मोको तासु स्वरूप को है नहिं पूरण ज्ञान । जितनो है तितनो कहत तोकोकरि ब्याख्यान ॥ अनेकत्व एकत्व ये दोऊ उनहीं माहिं । महापुरुष तह एकही

और दूसरो नाहिं ॥ गुणधरिकै बहुहोत है निर्गुणह्वै कै एक । जानत है भगवानको इमि बुधकरि सुबिबेक ॥ जो अचिन्त्यको जानिकै भावसूक्ष्मजो चारि । तिनसे लाय समाधिको जौनरहै मुद्धारि ॥ परमपुरुषकोप्राप्तसो होत होयकोशान्तै । सो अचिन्त्य अव्ययनहीं मनमें जोबरदान्त ॥ अनिरुद्ध सुप्रद्युम्न अरु संकर्षण अभिराम । बासुदेव चौथेसुये भावसूक्ष्मतपधाम ॥ सत्ता जौन अचिन्त्यकी ताहि कहतहैं भाव । ताके सूक्षमरूपये चारोहैं नरराव ॥ योगमार्गसों गुणतहैं योगीइमि अति स्वक्ष । ज्ञानीते परमातमाहिं एकहि जानतदक्ष ॥ जोतुमपूछ्यो हौ हमें कह्योतुम्हैं हमतौन । योगसांख्यकीरीतिसों सुनोतात तपभौन॥
इतिमहाभारतशान्तिपर्वणिमोक्षधर्मेत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३० ॥
बैशंपायनउवाच ॥ दोहा ॥ शुलभाको अरु जनकको जो संबाद अनूप । अतिहि श्रेष्ठ संन्यासको तामें सुनिकेभूप ॥ महतदुःख संन्यास में गुणि करिकै मनबीच । सुखयामें अरुश्रेष्ठतर आश्रमकौन निभीच ॥ यहजाननकी लालसा करिकै बटधरणीप। पूछत ऐसीभांतिभो गंगानन्दसमीप ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ अबलौं हमसेतात बहु कहेमोक्षकेधर्म । आश्रमनिको अब कहो ससुख धर्मजो पर्म ॥ भीष्मउवाच ॥ धर्म सर्ब है श्रेष्ठ पै जाहि न्याय सों द्रब्य । प्राप्तभयो ताकोकियो धर्मपरमहै भव्य ॥ अत्र एक इतिहास हौं तुम्हैं कहतहौं भूप । इन्द्रहि पूरबजो कह्यो नारदहुतो अनूप ॥ नारदमुनि सुरराजके पासगये जबचाहि । पूछत भो तब नारदहि सों ऐसेअवगाहि ॥ तिहुंलोकनके बीचतुम घूमतहौ सर्बत्र । लख्योहोय आश्चर्य सो हमैंकहौतुमअत्र ॥ कथा सुनाई इन्द्रको ये नारदमुनि बैन । तुम्हैं सुनावत हौंकथा सोई नृप बलऐन ॥
इतिमहाभारतेशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेएकत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३१॥
भीष्मउवाच ॥ दोहा॥ गंगावारे कूलपै दक्षिणके अभिराम । महा-

पद्म पुरमें हुतो ब्राह्मण यक मतिधाम ॥ अत्रिबंश को सोहुतो धर्मी नृपबल गेह। बहुतपुत्र ताकेहुते श्रुतिमें किये सनेह ॥ श्रेष्ठनके आचारको करतो हुतोसदैव। निश्चय काहूधर्ममें जाहि होतहै नैव॥ कहाकरौं तौहोय शुभ प्राप्त मोहिं कल्यान। यह बिचारते हौं रहत लहिके खेद महान॥ तासपास आवत भयो ब्राह्मण यक अवदात। ताकोकरि सत्कार अति भोजन दीन्हों तात ॥ भोजन करिकै स्वस्थह्वै बैठो जब वह बिप्र। तब ताको पूछतभयो ऐसेजो द्विज क्षिप्र ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ सुतहि गृहाश्रम देयकै परमधर्म जो स्वक्ष। ताको करिबेकी भई भूरिलालसा दक्ष ॥ पैनेहादिकसों बँधो कीन्हे सकत यातेन। जन मन्दागिनि को चहे जिमि भोजन अतिऐन ॥ यहि भवसागर पारहौं भयो चहत बुधराय। धर्मनाव मिलिहै कबै कबै उतरिहौं धाय ॥ खेद लहत मम लगतनहिं भोगनमें मन ख्यात। मोपै कृपाबिशाल करि कहो धर्मकी बात ॥ बोलतभो सो द्विज अतिथिइमिताके सुनि बैन। बानी सानीमधुरता सों बर प्रज्ञाऐन ॥ अतिथिरुवाच ॥ है मेरेहू लालसा जो तेरे सबिबेक। मेरेहू निश्चयन हैं स्वर्ग द्वारअनेक ॥ किये प्रशंसा मोक्षकी किते यज्ञकी पर्म। किते गृहाश्रमकी करतप्रशंसाहि लहिशर्म ॥ चरणादोहा ॥ बानप्रस्थाश्रमकी केते करतप्रशंसा भूरि। राजधर्मकी करत प्रशंसा केते मुद सों पूरि ॥ गुरु सेवाकी करत हैं किते मौनब्रत तास। किते युद्धमें मरिलहत दिवमें मोद प्रकास ॥ माताको अरु पिताको पूजिलहत है स्वर्ग। उंछवृत्ति सो स्वर्गमें कितेलहत मुदवर्ग ॥ किते अहिंसा धर्मसों किते सत्यसोंपर्म। कितेबेद अध्ययनसों लहतस्वर्गमें शर्म ॥ लहतस्वर्गमें बासहैं किते जितेन्द्रियहोय। ऐसे दिवकी प्राप्तिके बहु द्वारनको जोय ॥ थिराबुद्धिममहैनहीं जैसेमेघ सवाय। कहैंतुम्हैं हमबैन ये धारिसत्य सुखदाय ॥

शांतिपर्वणिमोक्षधर्मेउंछवृत्त्युपाख्यानेद्वात्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३२

अतिथिरुवाच ॥ दोहा ॥ शास्त्ररीति सों हम सुन्यो जैसो गुरुके पास । तैसो मैं उपदेशहौं तोहिंकरत सहुलास ॥ तीर्थनैमिषारण्य में नदी गोमतीकूल । नामनामयक पुरपरम छबिको चारु अतूल ॥ पद्मनाभ नामातहां महत सर्प है एक । जनहि करतसो मुदित है बानीसो सविवेक ॥ जायतासु तटपूंछतू जौन पूछिबे होयं । परम मर्म कहि है तुम्हैं ज्ञानचक्षुसों जोय ॥ है अतिथिन को परम प्रिय शास्त्र बिशारद पर्म । अनुपम गुणसों युक्तहै शान्तिहि धरेसशर्म ॥ परमधर्मको सर्पसो जानत जलवतजास । हैस्वभाव अध्ययनमें नितहि रहत सहुलास ॥

इतिशांतिपर्वणिमोक्षधर्मेउंछवृत्त्युपाख्यानेत्रयस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः

ब्राह्मणउवाच ॥ दोहा ॥ भारउतारे होतहैं जैसे मनुज सचैन । तिमिसचैन मोमन भयो सुनिके तवये बैन ॥ उक्ता ॥ पथसोंहान्योजौन । लहि कै शय्यातौन ॥ भोजनपाय क्षुधार्त । अरुलहि अपहि तृषार्त ॥ जैसे होत सचैन । तिमिहेमुनितव बैन ॥ जौन कह्यो तुमअद्य । करिहौं सोमैंसद्य ॥ यह रजनीमें अत्र । रहुन जाहु अन्यत्र ॥ अतिथि सुनि सु यह बात । बसत भयोतहँ तात ॥ मोक्ष धर्मकी पर्म । कहतकथा सशर्म ॥ रजनीदई बिताय । तिनदोउन नरराय ॥ पूजित ह्वैके प्रात । अतिथि भयो सो जात ॥ दोहा ॥ तदनु अत्रिबंशज सुद्विज दूरि करन संदेह । पास जान को भुजगके गमनकियोमति गेह ॥ मारगमें यकमुनि मिल्यो तेज[illegible]य अभिराम । ताको पूछतभो सुद्विज पद्मनाभको धाम ॥ पद्म[illegible]ाभ नागेन्द्र को तिहिथल दयोबताय । सोसुनिकै प्रापतभयो नाग सदनतट आय ॥ तदनु कहत ऐसे भयो सो ब्राह्मण तहँबैन । हम ब्राह्मण आये इहां हैं नागेन्द्र सचैन ॥ ब्राह्मण केये बचन सुनि पतिब्रताअहिनारि । बिप्रहि सों देखत भई बाहर आय सुढारि ॥ तदनन्तर पूजासबिधि करिकै ऐसे बैन । कहतिभई अबजो कहौ करौंतौन अतिऐन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥

देखनको नागेन्द्रको ममइच्छाहैनारि । एतदर्थही आगमनमेरो भयो सुढारि ॥ नागभार्य्युवाच ॥ अत्रआयहै मम सुपति भयेएकगत पक्ष । बहनगये हैं रबि रथहि सुनु ब्राह्मण बरदक्ष ॥ पारीरबिरथ बहनकी है महिना की एक । तिनकहि तामें गयो है पक्ष एकसबिबेक ॥ मोको आज्ञाहोयजो अत्र करों मैं तौन । सुनिकै ताके बचन इमि कह्यो बिप्र मतिभौन ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ पद्मनाभसों मिलनको मैं आयोहों दार । जबलों ऐहैंअत्र नहिं.बनकेबीच सुढार ॥ करिहौं तबलौं बास मैं जबआवैं अहिराय । तबमेरो बृत्तान्त तू दीज्यो तिन्हें सुनाय ॥ ऐसे पन्नग नारिको कहिकै सो द्विजबैन । नदी गोमती कूलपै रहतभयो प्रतिऐन ॥ भीष्मउवाच ॥ निराहारह्वै बसतभो नदी गोमतीकूल । ताते पन्नग औरसब दुखको पाय अतूल ॥ तासपास जातेभये सर्ब कुटुम्ब समेत । नदी पुलिनमें देखते ताकोभये सचेत ॥ तास पास ते जायकै कहत भये इमिबैन । निराहार ह्वैकै रहत अत्रआपुमति ऐन॥ अतिही पीड़ितहैं भयेयातेहम अहिसर्ब ।करौआपु भोजन लहैं तब हममोदअखर्ब ॥ भोजनदेनो अतिथिको यहसुगृहीको धर्म । कन्दमूल फलजो कहौ ल्यावैंतौन सशर्म ॥ आय हमारो धामिपै भूखोरहो न कोय । अतिथि आजुलों ये वचन सुनि कै इमिसों जोय ॥ कहत भयो ऐसे वचन कीन्हों तुम सत्कार । याते भोजन करि चुके करहु न शोच अपार ॥ एक मास के बीच है बासरबाकी अष्ट । बहु बासर बाकी न अब यातेकरहु न कष्ट ॥ अष्टदिवसतक आइहै मैं नहिं सुनो अहार । करिहौं ब्रत तिमकाज यह जानो सबहि सुढार ॥ अपने अपने धाम को जावोपन्नग सर्ब । खेदकरो मति आपने मनकेबीच अखर्ब ॥ भीष्मउवाच ॥ पूर्णभयो जब मासतब आज्ञा रबिकी पाय । आवतभो निजधामको पद्मनाभ अहिराय ॥ पहुंचोजब निज धाम मैं तब लखि नारीतास । पद्मनाभ के धोवती भई चरण

सहुलास ॥ तदनन्तर पूंछत भयो नारीको अहिराय । अति-थिदेव पूजतिहुती सहित बिधान सचाय ॥ मम बियोगते पीड़िताह्वै करिकै तूनारि । धर्मनकी मर्य्यादतौ नहींतजी सुकुमारि ॥ नागभार्य्योवाच ॥ परमधर्म है नारिको पातिब्रत्य ललाम । जानति तव उपदेशते तत्त्वस्वच्छ अभिराम ॥ तुमही पालत धर्म में होय तुम्हारीनारि । कैसे तजिहौं धर्मको कहिये आपुबिचारि ॥ भयोपक्ष यक अत्रहै ब्राह्मण आयोएक । रहत गोमती तीरपै पढ़तबेद सबिबेक॥राहतुम्हारीलखतहै अनशन ब्रतगहितौन । मोहिंगयो है कहि बचन ऐसेसो मतिभौन ॥ जबआवैनिजधाम में नागराज तबपास । भेजि हमारे दीजियो याते सहित हुलास ॥ करौ ताहि तुम आजके शीघ्र गोमती कूल । दर्शन देकैआपनो दायक मोद अतूल ॥ नागउवाच ॥ चरणादोहा ॥ मोहिं बुलावन की सामर्थ्य न होति मनुजके बीच । सुरहै कीहै ऋषि उग्र यह ब्राह्मणरूप निभीच ॥ मानव ऐसोकोउ नहिं सके हमें जो जोय । नागराजके बचन ये सुनिकै बोलीजोय ॥ मानवहीहै वह नहीं परै देवता जानि । पै राखेहै आपुकी हियमें भक्तिमहानि ॥ कोप करो मति दरशकी तबवह सहितजलाश । धारेचातक जिमिसुनौ स्वाति बूंदकी आश ॥ बिघ्न न करिहै वह कछू दर्शन चहत तुम्हार । तासु आश मति छेदिये करिये कृपा सुढार ॥ तासु आश जो छेड़िहौ जरिहै तौ तव अंग । आशाछेदे भ्रूणहा भूपहु होत उतंग ॥होत दानते सुयश है सत्वबचन ते पर्म । स्वच्छ बोलिबो होतहै जनको प्राप्त समर्म ॥ मैं योगी तव पास मैं जब ऐहै अहिराज । याते ताके जाइये पास प्रश्न शिरताज॥ नागउवाच ॥ धारिहिये अभिमान नहिं क्रोध करतहौं नारि । क्रोध हमारी जातिको है स्वभाव निरधारि ॥ क्रोध सर्पमें अधिकहै याते प्राणी सर्ब । सर्पजाति की करतहैं निन्दा नित्य अखर्ब ॥ तव बाणी को श्रवण करि क्रोध दियो मैं त्यागि । धन्य आपुको

गुणतहौं तोहिं लखे अनुरागि ॥ अबमैं शीघ्रहि जातहौं तिहि ब्राह्मणके पास । ताके मैं सन्देह को मिलतहि करिहौं नास ॥
इतिश्रीमोक्षधर्म्मेपद्मनाभोपाख्यानेचतुस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३४
भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥ पद्मनाभनामा भुजग तिहिब्राह्मण तटजाय । मधुर बचन बोलतभयो ऐसेबिधि नरराय ॥ रामगीती ॥ कछु तोहिं पूछत बिप्र हमहैं कीजियो मति क्रोध । तू कहांते है अत्र आयो कौनकाज सबोध ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ ममनाम धर्मारण्यहै जो पद्मनाभा नाग । मैंतासु करन मिलाप आयो अत्रहौं बड़भाग ॥ तिहिको न गृहमें सुन्यो याते अत्र कीन्हे बास । पगिमिलनके उत्साह में भे येह देखत तास ॥ कल्याण काजे तासु बिधिवत् पढ़तहौं मैं वेद । ये बचन सुनिकै कहत भो इमि पद्मनाभ अखेद ॥ नागउवाच ॥ तू अनिंदित बिप्रहै बरसाधु परम अनूप । परजनहिं देखतस्नेह सों है धन्य है मतिरूप ॥ है लखत जाकीराह सोई नागहौं मैंबिप्र । प्रियकहातव में करौं कहु अब मित्रलौ तू क्षिप्र ॥ सुनितव हवाल स्वनारि सों हौं लखनआयों तोहिं । तिहिकार्य आयो अब तू कहुकार्य सोंअबमोहिं ॥ बिश्वासकरु ममबातमें निजकार्यकीलहिसिद्धि । सुनु बिप्र जेहै इहां ते कहुशीघ्रही मतिनिद्धि ॥ हितछोड़िकरि कै आपने सबभजतहै तू मोहिं । लैमोललीन्हों गुणनसों निज देउँका अब तोहिं ॥ ब्राह्मणउवाच ॥ मैं लखनआयों तोहिं अरु अहि कछूपूछत अर्थ । अर्थज्ञ जे हैं सुनेतिनमें तोहिंमहत समर्थ ॥ यक अतिथि द्विजने तब बतायो नाममोहिं अहीन्द्र । इमि बचनकहि द्विजप्रथम ऐसेकह्योफेरि महीन्द्र ॥ दोहा ॥ मारतण्ड रथबहनको जात स्व बारी पाय । तहाँ कछूआश्चर्य जो लख्योहोय अहिराय ॥ प्रथम तौन आश्चर्यकरि फिरिजो पूछौं तोहि । कहियो हेनागेशबर कृपादृष्टिसोंजोहि ॥ नागउवाच ॥ द्विज अनेक अचरजनमें सूर्यहि अचरज पर्म । जाके होत प्रकाश ते

लोकमाहिं बहुकर्म ॥ जिमि डारनमें बिहँग तिमि तासुकरणके बीच । देवनसह मुनिबसतहैं ब्राह्मण बिज्ञानिभीच ॥ जासु कराश्रितबायुजो निकरि ब्योममें धूरि। होतउग्रहै औरका अचरज याते भूरि ॥ अष्टमासलौं करषिजल बर्षतभूमें सर्व्व । कालपाय याते कहा अचरज और अखर्व्व ॥ पुरुषोत्तम जामें रहत शाश्वत श्रीभगवान। सुनो बिप्र याते कहा अचरज और महान॥ आश्चर्यनके बीच यक लख्यों आचरय और। अतिहि महतसों कहतहौं तुम्हें प्रज्ञशिरमौर ॥ पूर्व्व मोहिं यकसमय में बासरमध्य प्रचण्ड । रबिसम रबितट लखिपस्यो तेजस औरअखण्ड॥आवतभो रबिसामुहे चीरत इव आकाश । लोकनमें सो उग्रअति करतो भूरि प्रकाश ॥ भयोनिकट तब मिलनको भानु पसारेपानि। अरु दक्षिण करतिहिहु द्विज छबिसों भरो महानि ॥ जासुतेज हौ तौनसुनु एकक्षणकके माहिं । रबिमें मिलिगोफेरिसो भिन्न पस्यो लखि नाहिं ॥ तौन समय में यह भयो प्राप्त हमैं संदेह । यह रबिहै की जो हुतो आयो सो मतिगेह ॥ तब हमपूछ्यो रबिहिइमि तुमहिंसमान प्रचण्ड। कोहैजो तुममें मिल्यो तेजस भरो अखण्ड॥ सूर्य्य उवाच ॥ उंछवृत्तिधर एकबर बिप्र हुतो अभिराम। तौन गयो सुरलोकको भरो तेजसों माम ॥ यहसुमूलफल पर्णद्विज गिरेपरेहो खात। बायु भक्षिके रहतहो कबहूंअप अवदात ॥ काहूसों माँगत न हो अरु नहिं बैठत पाहि। हो सुउंछशील वृत्तिमें तत्पर रहत सदाहि ॥ उत्तमगतिको प्राप्त बर जौनहोतहैं भूत ॥ तिनकीगतिको जानत न सुर असुरादि अकूत॥ नागउवाच ॥ पूर्व्वलख्यो आश्चर्यहौं यहहम सूरजपास। सिद्धमनुजते भानुमें प्राप्तहोय सहुलास ॥ करत प्रदक्षिण मेरुकी याते धर्मारन्य। उंछवृत्तिमें रहतजे तत्परते जनधन्य ॥ब्राह्मणउवाच ॥ यहजो तुम हमको कह्यो सो आश्चर्यहि पर्म। प्रिय हमको अतिहीलग्यो यह भुजगेश सशर्म ॥ कह्यो यह सुभा-

श्चर्य नहिं हमैं बताईराह। नित्य होहु कल्याण तव पद्मनाभ अहिनाह॥ सुमिरण मम तुमराखियो अरु तुमनिजवृत्तान्त। जबतबहमको भेजियो कहि मतिबर अहिदान्त॥ नागउवाच॥ अबहिंकहां द्विजजात है कहेबिना निजकार्य। आगमभो जिहि अर्थ तव अबकहु सो द्विजआर्य॥ करिकै अपनोकाज अरु ममआज्ञाको पाय। धामआपने जाइयो संशय सर्व बिहाय॥ मनमेंगुण तू आपने ममजेते जनतौन। हमऐसे लहि मित्र तू करु न शोच मतिभौन॥ ब्राह्मणउवाच॥ ऐसेही जो कहतहै जैसे तूनागेश। देवतहीहैतू भुजग प्रज्ञावान बिशेश॥ कहाकरैकामहिंकरै धर्महुतो संदेह। उंछवृत्ति सुनिकैभयो तौनदूरिमतिगेह॥ आयो हौं जिहिअर्थ मैं तौनासिद्धिभोअर्थ। अबहमजैहैं धामको आज्ञादेव समर्थ॥ भीष्मउवाच॥ बिदाहोयकै भुजगसों धर्मारण्य सुबिप्र। दिक्षालीवे उंछकी जातभयो सो क्षिप्र॥ च्यवन सुऋषिके पास सब भयेदूरि संदेह। आदरसेती लेतभे ताहि च्यवन मतिगेह॥ जौन सुन्यो आश्चर्यहौ पद्मनाभसों स्वक्ष। तौन च्यवन सों है सरब कहतोभयो प्रतक्ष॥ सभाबीच नृप जनककी यह आश्चर्यहि भूप। कह्योहुतो मुनिनारदहि च्यवन सुविज्ञ अनूप॥ श्रीनारद सुरराजकी सभाबीच अभिराम। कह्यों हुतो तहँ सर्व हे देव वृन्द बलधाम॥ अति प्रशस्त ब्राह्मण को कह्यो हुतो सुर राज। परशुराम सों औ नृपति हमसों युद्ध दराज॥ भयोहुतो जिहि समय में तौन समय के माहिं। बसुन कह्यो हमको हुतो हम नृप तेरे पाहिं॥ आश्रमीनको जो हुतो पूछ्यो परम सुधर्म। सो नृप हम अवगाहि कै तोको कह्यो सुकर्म॥ नित्य जितेन्द्रिय होयकै छोड़ि कामना वृन्द। मोक्षप्रद है सोय जो कियो स्वधर्म नरेन्द॥ करिकै प्रायश्चित्त द्विज धर्मारण्य अनूप। लेय उंछशील वृत्ति की दीक्षा बिधिवत भूप॥ च्यवन सुऋषि सों ह्वै बिदा धर्मा-

रण्य सुधर्म । रहतो भयो अरण्य में होय अकाम सशर्म ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामि
नाश्रीबन्दीजनकाशिबासिरघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मज
गोपीनाथस्यशिष्येणमणिदेवेनकबिनाबिरचितेभाषायांमहाभारत
दर्पणेशान्तिपर्वणिमोक्षधर्म्मेउञ्छवृत्युपाख्यानसमाप्तिर्नाम
पंचत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३५ ॥

दोहा ॥ नभबसु बसुबिधुबर्षबर बिजयनामअभिराम । आश्विनशुक्लसुदशमिका तिथिलहिकै गुणधाम ॥ मोक्षधर्म दर्पण परम मोक्षप्रदअवदात । पूरभयोताकोसुने पढ़ेकलुषकटिजात॥ कवित्त ॥ केतेभूपदेखे महिमण्डलके बीचमें मैं ओजसों अखंडल के समजे बिख्यातहैं । दुबन कलापनीरशोषक अमायमहा भानु से प्रतापकोसदाही सरसातहैं ॥ मणिदेवभनैजौलौं रहतपरोक्ष तौलौं सानसों महानधारे तेजकोबिभातहैं । उदितनरेशकेनजी के भये श्रीके भूरि धोसके शशीकेसमफीके होयजातहैं ॥

इतिशान्तिपर्वणि मोक्षधर्मस्समाप्तः ॥

मुन्शी नवल किशोर (सी, आई, ई) के छापे खाने में छपा

अगस्त सन् १८९१ ई० ॥

नीति कहकर दुर्योधनको युद्धसे निषेध करना और उसे न मानना दोनों ओर युद्धका उद्योग होना ॥

भीष्मपर्व ॥

भूगोल खगोलादि सृष्टिविस्तार और नदी पर्वतादि संख्या व षट्ऋतु वर्णन अर्जुन व श्रीकृष्ण सम्बाद और भगवद्गीता वर्णन पश्चात् दशदिन भीष्मजीका पाण्डवोंसे युद्ध व बध ॥

द्रोणपर्व ॥

द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, दुश्शासन और दुर्योधनादि बीरोंसे पाण्डवों काघनघोरयुद्ध द्रोणाचार्य कृत चक्रव्यूह निर्माण व चक्रान्तर अभिमन्यु युद्ध व बध पश्चात् द्रोणाचार्य बधादि कथायें वर्णित हैं ॥

कर्णपर्व ॥

पाण्डवों प्रति कर्णका युद्ध व बध कथा है ॥

शल्य व गदापर्व ॥

राजा शल्यका सेनापति होकर दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्सेन, सुशर्मा शकुनि और उलूकादिकों समेत युद्ध व बध और दुर्योधन व भीमसेनका गदायुद्ध व दुर्योधनकी जंघभंगादि कथायें वर्णित हैं ॥

सौप्तिक व स्त्रीपर्व ॥

अश्वत्थामा करके पाण्डवोंके सुतपुत्रोंका नाश और कुरुक्षेत्र में कौरवादिकों की रानियोंका विलाप ॥

शान्तिपर्व ॥

इसमें चार प्रकारके धर्म अर्थात् राजधर्म आपद्धर्म दानधर्म और मोक्ष धर्मादिका सविस्तर वर्णन है सम्पूर्ण विषयबासनारहित शमदम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधानादि षट्सम्पत्ति साधन योगसमाधिकथन ईश्वराराधना सक्तसर्वाहंकार द्वेष ममतादि त्यक्त ध्यानधारणा अन्तरंग बहिरंग साधनादि अनेक मार्गसे मोक्षमार्ग प्राप्तोपाय वर्णन ॥

अश्वमेधपर्व ॥

श्रीकृष्णके उपदेश से अर्जुन भीमसेन नकुल और सहदेवादि चारों भाइयोंको चारों दिशाओं की विजय करके द्रव्योपार्ज्जन पश्चात् राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करना और जरासंधादि राजाओंका बध ॥

आश्रमवास मुशल महाप्रस्थान व स्वर्गारोहणपर्व ॥

युधिष्ठिरादि पांचोंभाइयोंको आश्रममें बास करना पश्चात् छत्तीसवां वर्ष वर्त्तमानहोनेपर अपशकुनदृष्टिआना व यदुवंशियोंको मदोन्मत्तहो परस्पर युद्धकर नाशहोना व श्रीकृष्णचन्द्रके पैरमें जरानाम व्याधाको बाण-मारना व श्रीकृष्ण बलदेवको परमधामजाना व युधिष्ठिरादि पांचोंपाण्डवोंको महाप्रस्थान यात्राकर स्वर्ग गमन ॥

अनुशासनपर्व ॥

सम्पूर्ण धर्म्म व दान व सम्पूर्ण व्रतोंका फल व सम्पूर्ण माहात्म्य व ग्राह्याग्राह्य वस्तुविचार व तपस्वी व धर्मात्माओं के लक्षण ॥

हरिवंशपर्व दो भाग ॥

इसके प्रथमभाग में दक्षोत्पत्ति, मारुतचरित्र, पृथूपाख्यान द्वादशादित्योंकी जन्मकथा श्राद्धफल और यदुवंशमें श्रीकृष्णजीकाउत्पन्नहोके बसुदेवजी के द्वारा मथुरासे गोकुलमें नन्दगृहगमन पश्चात् पूतना वत्सासुर बकासुर अघासुर प्रलम्बासुर और केशीआदिका बधकरना गोबर्द्धनोद्धारण व मथुरागमन कंसबध और द्वितीयभागमें ऊषाचरित्र कृष्णसे मधुदैत्यका बध वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुर संग्राम, कैलासयात्रा घण्टाकर्ण मोक्ष, पौण्ड्रक पृकलव्यबध, श्रीकृष्णजीका पुष्करागमन, विचिक्रबध, कृष्ण बलदेवसे नन्दादिका सम्मान सर्वानुकीर्त्तन व हरिवंश वृत्तान्तादि कथायें वर्णित हैं ॥

महाभारत सबलसिंह चौहानकृत ॥

तुलसीकृत रामायण की रीतिपर सुन्दर दोहा चौपाइयों में निर्मित है—जिसकेपर्व मुद्रितहोगई हैं निम्नलिखित हैं ॥

आदिपर्व, सभापर्व, बनपर्व, बिराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व कर्णपर्व, शल्यपर्व, गदापर्व, स्त्रीपर्व, मुशलपर्व, महाप्रस्थानपर्व ॥